साधनामयी सहर्कामिणी सुभद्रा जी ने अपनी तपस्या
के सम्बल से मेरी साधना को बल प्रदान किया,
उस साधना का यह प्रतिफल उनको सस्नेह समर्पित है ।

युग के धनी

"एक सौ पचास सहकर्मियों की अनुभूतिपूर्ण स्मृतियों से अलंकृत अनूठा श्रद्धांजलि स्मृति ग्रन्थ, जिसमें क्रान्तिदर्शी लोकनायक श्री जयनारायण व्यास के गौरवशाली जीवन और राजस्थान के गांधी युग तथा नेहरू युग के गर्वीले इतिहास का बहुरंगी चित्र उपस्थित किया गया है।

दो शब्द

"भारत में अंग्रेजी राज' के यशस्वी लेखक अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त राष्ट्रनेता तपस्वी पं० सुन्दरलाल जी

सम्पादक

श्री सत्यदेव विद्यालंकार

मूल्य बारह रुपया

डाक व्यय दो रुपया

दो शब्द

भाई सत्यदेव जी विद्यालंकार को मैं वर्धा और नागपुर से सन् १६२०-२१ से उस समय से अच्छी तरह जानता हूँ, जव महात्मा गांधी ने इस देश को स्वाधीनता दिलाने के लिए अपना अनोखा और अपूर्व अहिंसात्मक आन्दोलन आरम्भ किया था। तव से अव तक पिछले लगभग पैंतालीस वर्षों के अन्दर सत्यदेव जी के साथ मेरी घनिष्टता और आत्मीयता वढ़ती ही गई।

गांधी जी के स्वाधीनता आन्दोलन में सत्यदेव जी ने शुरू से आखीर तक भरपूर हिस्सा लिया। देश की स्वाधीनता के एक सच्चे शैदाई होने के साथ-साथ वह पक्के समाज सुधारक, धार्मिक मामलों में स्वतन्त्र विचारक, राष्ट्रीय एकता के व्यावहारिक और कट्टर समर्थक और हर तरह की सूवाई, भाषाई, जातिगत तथा अन्य संकीर्णताओं से वल्लियों ऊपर हैं। उनका एक विशेप गुण यह है कि जिस तरह शहद की मक्खी हर फूल के अन्दर से शहद चुन लेना जानती है उसी तरह सत्यदेव जी हर आदमी और विशेपकर हर देशसेवक के अन्दर से उसके उन गुणों को चुन लेना वहुत अच्छी तरह जानते हैं, जिनको सामने लाने से देशवासियों या आने वाली पीढ़ियों को उत्साह मिल सके। इसीलिए वड़े-वड़े देशभक्तों की जीवनियां लिखने का काम सत्यदेव जी को वहुत रुचिकर है और इसकी उनमें असाधारण योग्यता भी है।

इस पुस्तक के कथानायक भाई जयनारायण जी व्यास को भी मैं अच्छी तरह जानता था। इस देश को आज़ाद कराने और आजाद भारत के महल की रचना करने में जिन अनेकानेक लोगों ने क्रियात्मक हिस्सा लिया, उनमें भाई जयनारायण जी व्यास का वहुत ऊंचा स्थान है।

भारत की आजादी के लिए कोशिश करने वालों के सामने जो-जो समस्याएं आईं, उनमें शायद एक सवसे अधिक कठिन समस्या देश के अन्दर लगभग छः सौ छोटी-वड़ी देशी रियासतों की मौजूदगी थी। एक सौ वर्ष से ऊपर तक विदेशी अंग्रेज़ शासकों ने जिस तरह इन छः सौ देशी रियासतों और उनके नरेशों का स्वाधीनता के प्रयत्नों को असफल कराने में उपयोग किया उस लम्वी कहानी में जाने का यह स्थान नहीं है। यहां इतना कह देना काफी है कि राजस्थान के अन्दर और सारे देश के अन्दर जिन सुलझे हुए विचारकों और कर्मठ देशभक्तों ने इस

समस्या के हल करने में सबसे अधिक मदद दी और सबसे अधिक काम किया, उनमें चोटी के नामों में से एक नाम भाई जयनारायण जी व्यास का है।

भाई जयनारायण जी व्यास का विस्तृत जीवन वृतान्त और उनके विषय में देश के दूसरे सेवकों के विचार पाठकों को इस पुस्तक में पढ़ने को मिलेंगे। सारी पुस्तक में से यहां मैं केवल एक तपे हुए देशभक्त के कुछ वाक्य नीचे दे रहा हूं। इस समय के हमारे उपराष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन जैसे जिम्मेवार आदमी ने भाई जयनारायण जी व्यास के निधन पर राज्यसभा के अध्यक्ष की कुर्सी से जयनारायण जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए जो कहा उसमें से कुछ वाक्य हैं :—

"मुझे अचरज होता है कि क्या राजस्थान में उनकी ही तरह के और भी बहुत से राजनैतिक कार्यकर्त्ता हैं, जो सच्चाई के साथ यह विश्वास करते हैं कि किसी भी नेक उद्देश्य को पूरा करने के लिए उपाय भी केवल नेक ही होने चाहिए··· जयनारायण जी व्यास हरमानी में पूरे ईमानदार थे। इसीलिए वह शासन में या कांग्रेस संगठन में भी किसी तरह की बेईमानी या किसी तरह का भ्रष्टाचार सहन नहीं कर सकते थे।"

डा० जाकिर हुसैन ने कहा है कि : "अंग्रेज़ व्यास जी को राजस्थान का सबसे अधिक ईमानदार राजनीतिज्ञ मानते थे और यह मानते थे कि उन्हें यानी व्यास जी को किसी कीमत पर भी खरीदा नहीं जा सकता।" ये शब्द उस ज़माने के इतिहास को निगाह में रखते हुए, डा० जाकिर हुसैन जैसे ज़िम्मेदार आदमी के मुख से बहुत ही गहरा अर्थ रखते हैं।

आगे चलकर डा० जाकिर हुसैन ने व्यास जी के विषय में कहा है कि :—

"जहां तक मातृभूमि की निस्वार्थ सेवा का सम्बन्ध है व्यास जी एक भीमकाय देव के समान थे। राजस्थान सरकार में या कांग्रेस संगठन में मुश्किल से ही कोई नेता ऐसा होगा जो इस बारे में उनकी बराबरी का दावा कर सके।" व्यास जी के चरित्र के विषय में इससे अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। हां! एक बात कहने की धृष्टता अवश्य करूंगा और वह यह कि भाई जयनारायण जी व्यास के विषय में और देश के विषय में अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर मैं यह कह सकता हूं कि डा० जाकिर हुसैन के ये शब्द अक्षरशः सत्य हैं।

भाई सत्यदेव जी ने इस पुस्तक को लिखकर देश की और विशेषकर राजस्थान की सच्ची सेवा की है। मुझे विश्वास है कि जो लोग अपने देश के स्वाधीनता संग्राम के विविध पहलुओं के इतिहास की ठीक-ठीक जानकारी हासिल करना चाहें वह इस पुस्तक से बहुत लाभ उठा सकते हैं। मैं चाहता हूं कि यह पुस्तक देशभर में अधिक से अधिक पढ़ी जावे।

—सुन्दरलाल

नई दिल्ली
१४-११-६४

आत्म निवेदन

दधीचि व दुर्वासा और वशिष्ठ व विश्वमित्र आदि के अनेक रूपों में लोक-नायक श्री जयनारायण व्यास को देखने वाले भी उनके वास्तविक रूप को ठीक-ठीक आंक नहीं सके। मानव पर परिस्थितियों का अचूक प्रभाव पड़ता है और महा मानव भी उससे वंचित नहीं रह पाता। फिर भी महामानव परिस्थितियों से प्रभा-वित होने की अपेक्षा उनको कुछ अधिक ही प्रभावित करता है। इसी कारण उसकी गणना निर्माताओं में की जाती है। उसकी निर्माणात्मक अथवा रचनात्मक प्रवृ-त्तियों से ही उसकी महानता का मूल्यांकन किया जाता है। निस्सन्देह लोकनायक इसी कोटि के महामानव अथवा महापुरुष थे। उन्होंने अपनी रचनात्मक प्रतिभा का अपने जीवन की प्रायः हर दिशा में विस्मयजनक परिचय दिया। धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक क्षेत्र में भी उनकी रचनात्मक प्रतिभा ने अनेक चमत्कार कर दिखाये। सांकड़ा के डाकू-ग्रस्त क्षेत्र में गांधी जी के आदर्शों के अनुरूप उन्होंने जो सफल प्रयोग किया, वह उनकी रचनात्मक प्रतिभा तथा महानता का समुज्वल प्रमाण है। ऐसे अनेक उदाहरणों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ में पाठकों को पढ़ने को मिलेगा।

उनको केवल लोक व्यवहार की ही दृष्टि से 'लोकनायक' नहीं कहा गया; प्रत्युत वह शब्द उनको पाकर वैसे ही सार्थक हो गया था, जैसे बाल गंगाधर तिलक को पाकर 'लोकमान्य', सुभाषचन्द्र बोस को पाकर 'नेता जी' और मोहनदास कर्मचन्द गांधी को पाकर 'महात्मा' शब्द सार्थक हो गये। किसी भी महामानव की महानता बड़े-बड़े शब्दों से सार्थक नहीं होती; किन्तु बड़े-बड़े शब्दों की सार्थकता उनको पाकर निखर उठती है। सामान्य जन उनके विशेष गुणों पर मुग्ध होकर ही उनके प्रति अपनी भावना को विशिष्ट शब्दों में व्यक्त करते हैं। व्यास जी के गुणों पर मुग्ध श्रद्धालु जनता ने उनको 'शेरे राजस्थान' अथवा 'राजस्थान केसरी' और लोकनायक कहकर अपनी श्रद्धामयी भावना को ही मूर्तरूप दिया था। प्रस्तुत ग्रंथ उसी श्रद्धामयी भावना की एक मूर्त अभिव्यक्ति है।

व्यास जी के स्वतन्त्र तथा महान व्यक्तित्व का एक प्रबल प्रमाण यह भी है कि उन्होंने अपने युग के महान नेताओं की महानता को शिरोधार्य करते हुए भी उनके सम्मुख 'आत्मसमर्पण' नहीं किया। जैन मुनी श्री चुन्नीलाल जी महाराज

से राष्ट्रभिक्षुक श्री मणिलाल कोठारी ने व्यास जी को 'तरुण राजस्थान' के लिए भिक्षा के रूप में प्राप्त किया था। देशी राज्यों और राजस्थान के प्रति उनकी नीति से सहमत न होने पर उन्होंने उनको छोड़ दिया। गांधी जी का उनको आशीर्वाद प्राप्त था। देशी राज्यों के सम्बन्ध में उनकी नीति के विरुद्ध वह बराबर जूझते रहे। सरदार पटेल के वह ऐसे विश्वासपात्र थे कि मेवात में १९४६-४७ में उपद्रवों की जांच का काम उन्होंने उनके सुपुर्द किया था। जोधपुर में १९५० में जब वह सरदार के कोपभाजन बने तब प्रताप-प्रतिज्ञा के धनी ने उनके सामने सिर नहीं झुकाया। राष्ट्रनायक श्री जवाहरलाल नेहरू के वह अन्तरंग सहकर्मी रहे। अंतिम वर्षों में उनके विरोध में भी खड़ा होने में उनको कोई संकोच नहीं हुआ। यह थी लोकनायक की स्वतन्त्र निर्भीक वृत्ति। यही स्थिति रही उनकी राजस्थान के नेताओं के साथ।

जीवनी लिखने की अपेक्षा संस्मरणात्मक संग्रह विशेष श्रमसाध्य होता है। लेखक के लिए अपनी भावना को मूर्तरूप देना इतना कठिन नहीं, जितना चरित्र-नायक के संगी-साथियों, सहकर्मियों, स्नेहियों तथा प्रशंसकों से उनकी आपबीती घटनाओं का संग्रह एवं संकलन होता है। उनको लिखना, लिखवाना, उनका सम्पादन करना और उनको अन्तिम रूप देना कितने श्रम और समय की अपेक्षा रखता है, इसका अनुमान सहज में नहीं किया जा सकता। इसी कारण प्रस्तुत ग्रंथ के सम्पादन और प्रकाशन में इतना अधिक समय लग गया कि अनेक क्षेत्रों में सन्देह, अधीरता तथा अविश्वास तक प्रकट किया जाने लगा। यद्यपि प्रस्तुत संग्रह को भी संतोषजनक नहीं माना जा सकता और उसमें अनेक कमियां व त्रुटियां दिखाई जा सकती हैं; फिर भी उनके संकलन में यथासंभव व यथाशक्ति कोई कसर नहीं रहने दी गई। व्यास जी के व्यापक जीवन की चहुंमुखी प्रवृत्तियां मारवाड़ राज्य तथा अजमेर मेरवाड़ा और राजस्थान के देशी राज्यों में ही नहीं, प्रत्युत पांच-छः सौ देशी राज्यों तथा दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई एवं दक्षिण भारत के प्रमुख नगरों में भी जहां-तहां बिखरी थीं। आवश्यकता यह है कि स्थान-स्थान पर जाकर उनकी अनुभूतिपूर्ण स्मृतियों का संग्रह अथवा संकलन किया जाय। यह कार्य एक व्यक्ति की शक्ति, सामर्थ्य तथा साधनों से बाहर है। फिर भी पूरी सच्चाई व ईमानदारी से यह प्रयत्न किया गया है कि चरित्रनायक के व्यापक जीवन की कोई भी प्रवृत्ति प्रकाश में आए बिना न रह जाय। इसी कारण आदरणीय श्री हरिभाऊ जी उपाध्याय की सम्मति तो यह है कि इस ग्रन्थ का नाम 'व्यास जी का विराट दर्शन' रखा जाना चाहिए। यहां एक उदाहरण देना आवश्यक है। चण्डावल का क्रूर काण्ड मारवाड़ राज्य लोकपरिषद् के संघर्षशील जन आंदोलन की एक महत्त्वपूर्ण घटना है। मारवाड़ राज्य लोकपरिषद् के भूतपूर्व अध्यक्ष भाई मीठालाल काका का लेख मुद्रण के लिये देने के ठीक समय भाई हरिभाई किंकर का एक

लिफाफा मिला। उन्होंने लिखा कि उसमें भेजे गये कागज़ उनको अपने मकान के ओटले पर पड़े मिले। उनमें परिषद् के तत्कालीन अध्यक्ष श्री रणछोड़दास जी गट्टानी और व्यासजी के ऐसे महत्त्वपूर्ण पत्र भी थे जो उन दिनों की घटनाओं तथा चण्डावल काण्ड पर विस्तृत प्रकाश डालते थे। गांधी जी के नाम व्यास जी का एक महत्त्वपूर्ण पत्र भी उनमें था। उसका समावेश काका के लेख में उसी समय किया गया और उस को नया रूप देना आवश्यक हो गया। पाली (मारवाड़) के एक पत्रकार के घर में रखे व्यास जी के पत्र दीमकों ने चाट लिए, परन्तु वे उनको प्रयोग के लिए किसी को सौंप न सके। पाली की मेरी यात्रा और मित्रों से किया गया पत्र व्यवहार व्यर्थ सिद्ध हुआ। जोधपुर की अन्त:प्रांतीय कुमार साहित्य परिषद् के कार्यालय से न व्यास जी के भाषण और न उनके आधार पर कोई लेख ही प्राप्त हो सका। भिक्षा के रूप में की गई मेरी सारी प्रार्थनाएं बेकार गईं। श्री कन्हैया-लाल वैद्य और श्री सुमनेश जोशी सरीखे व्यास जी के अन्तरंग साथियों से वार-वार किया गया अनुनय-विनय बिलकुल वेकार गया। अनेक मित्रों के पास व्यासजी के महत्वपूर्ण पत्र, हस्तलिखित कविताएं, दुर्लभ चित्र तथा अन्य मामग्री विद्यमान है। मैं उनसे उनको प्राप्त करने में सर्वथा असफल रहा। यह सारी सामग्री और अनुभूतियां प्रयत्नपूर्वक जुटाई जानी चाहिए। यह कार्य भारी श्रम, लम्बे समय और विपुल व्यय की अपेक्षा रखता है।

अनुभूतिपूर्ण स्मृतियों व संस्मरणों की प्रमुख विशेषता यह है कि उनमें चरित्र-नायक के जीवन की व्यापकता सप्तरंगी इन्द्रधनुष की तरह विविध रंगों में चमक उठती है और पाठक का मनमयूर उस पर विभोर हुए विना नहीं रहता। अपनी कृत्ति के लिए किसी प्रकार का अभिमान या अहंकार करना लेखक व सम्पा-दक के लिए अशोभनीय है; परन्तु प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्वन्ध में अत्यन्त विनीत भाव से इतना कहा जा सकता है कि उसको पूर्ण प्रमाणिक और सर्वतोमुखी बनाने में कुछ उठा नहीं रखा गया। अपने श्रम का मूल्यांकन लेखक या सम्पादक स्वयं नहीं कर सकता। यह तो पाठकों को ही करना चाहिए।

अनुभूतिपूर्ण स्मृतियां अथवा संस्मरण मुख्यत: दो दृष्टियों से लिखे जाते हैं। एक तो यह कि लेखक अपनी पृष्ठभूमि पर चरित्रनायक को आंकता है। दूसरी यह कि वह चरित्रनायक को सामने रखकर कुछ आपबीती लिखता है। पहली में पाठक को लेखक का कुछ 'अहं' दीख सकता है। उसको दोष मानना लेखक के प्रति अन्याय होगा। उसकी भावना तो चरित्रनायक को ही उभारने की होती है। प्रस्तुत संग्रह को पाठक इसी भावना से देखेंगे, तो उनको किसी भी लेखक का व्यक्तित्व कहीं भी चरित्रनायक के व्यक्तित्व पर छाया दीख न पड़ेगा। उसका अपना व्यक्तित्व इन्द्रधनुष की छटा को ढांपने वाली घटा की तरह अस्थिर ही मालूम होगा।

प्रस्तुत 'श्रद्धांजलि स्मृति ग्रन्थ' का संकलन निस्सन्देह 'आत्मतुष्टि' के लिए

किया गया है। किसी के भी प्रति किसी की भावना दिखावे का विषय नहीं है। वह तो आन्तरिक श्रद्धाभक्ति प्रेरित अनुभूति है। अत्यन्त श्रद्धासम्पन्न भक्त भी भगवान के प्रति अपनी श्रद्धामयी भक्ति भावना को केवल साधना तक सीमित नहीं रख सकता। तभी तो आज तक अनादि काल से साहित्य सृजन की गंगा का अजस्र प्रवाह निरन्तर प्रवाहित है। वाल्मीकि की रामायण, वेदव्यास का महाभारत, कालीदास का रघुवंश और तुलसी का रामचरित मानस सरीखे महान् ग्रंथ उस प्रवाह के तीर्थस्थलों की तरह सामान्य जनता के लिए आकर्षण का केन्द्र बने हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ के संग्रह की अपनी ही कहानी है। लोकनायक के निधन पर उनकी पुनीत स्मृति-रक्षा के लिए स्थान-स्थान पर तरह-तरह के प्रयत्न किये गये। जनता ने आन्तरिक भावना से प्रेरित हो विविध कार्यक्रम बनाये। कुछ स्थानों पर अनेक संगठित प्रयत्न भी किये गये। जीवनी लिखने के उपक्रम भी हुए। मेरी तीव्र आकांक्षा चरित्रनायक की जीवनी लिखने की ही थी। वह महत्त्वपूर्ण कार्य अन्य साधनसम्पन्न विद्वान सज्जनों ने अपने पर ओढ़ लिया। तब कुछ महानुभावों से विचार विनिमय व परामर्श करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचा गया कि चरित्रनायक के संगी-साथियों व सहकर्मियों तथा प्रशंसकों की ओर से एक 'श्रद्धांजलि स्मृति ग्रन्थ' का संकलन सर्वथा उपयुक्त होगा। मुख्यमंत्री माननीय श्री मोहनलाल जी सुखाड़िया ने इसका सहर्ष समर्थन किया। वयोवृद्ध तपस्वी जनसेवक शिक्षामंत्री श्री हरिभाऊ जी उपाध्याय ने सहसा ही अपने आशीर्वाद से उपकृत किया। चरित्रनायक के सहकर्मी योजनामंत्री श्री मथुरादास जी माथुर ने सार्वजनिक रूप से स्वागत किया। अन्य क्षेत्रों में भी उसका समर्थन किया गया। संकल्प यह किया गया कि ग्रन्थ का संकलन, सम्पादन, मुद्रण तथा प्रकाशन आदि सर्वसाधारण के सहयोग से उसी रूप में किया जाए, जो चरित्रनायक के अनुरूप हो। वह सच्चे अर्थों में जननायक थे। इस दृष्टि से यह मर्यादा स्थिर की गई कि एक व्यक्ति से इक्यावन से कम और एक सौ एक रुपये से अधिक की प्रार्थना न की जाय। कुछ महानुभावों ने स्वेच्छा से अधिक भी प्रदान किया है। सभी महानुभाव के प्रति मैं अत्यन्त विनीतभाव से हार्दिक आभार प्रदर्शित करता हूं। इस स्वेच्छापूर्ण उदार सहयोग से प्रेरित व उत्साहित हो यह संकल्प किया गया है कि लोकनायक की पुनीत स्मृति को साहित्यिक दृष्टि से भी स्थायी रूप दिया जाय। साहित्य के क्षेत्र में व्यास जी की देन अपने ही ढंग की अनूठी है। साहित्य सृजन, पत्रकारिता, लेखनकला तथा काव्य रचना आदि की दृष्टि से भी उनका मूर्धन्य स्थान था। साहित्य, संगीत और कला के वह मर्मज्ञ थे। इसी हेतु साहित्यिक क्षेत्र में उनकी स्मृति को स्थायी रूप देना आवश्यक है। राजस्थान के सम्बन्ध में ऐसा साहित्य प्रकाशित किया जाना चाहिए, जो उनके असिद्ध स्वप्न को पूरा कर

सके। उनके अपने साहित्य का संग्रह भी विशेष उपयोगी हो सकता है।

ज्ञान-मन्दिर योजना व्यास जी की अपनी मौलिक सूझ थी। उसके द्वारा उनकी इच्छा राजस्थान के घर-घर में ज्ञान दीप जगाने की थी और स्थान-स्थान पर वाचनालय, पुस्तकालय तथा विचारगोष्ठियों का वह जाल बिछा देना चाहते थे। विचार यह है कि एक "राजस्थानज्ञान-मन्दिर साहित्य माला" का उपक्रम किया जाए। तीन और ग्रंथ उसके अन्तर्गत अविलम्ब प्रकाशित किये ही जाने चाहिए।

१. **क्रान्तिवीर बारहठ परिवार**—ठाकुर कृष्णसिंह जी, ठाकुर केशरीसिंह जी, ठाकुर जोरावरसिंह जी और वीर युवक प्रताप की गौरवशाली जीवनी कभी की प्रकाशित हो जानी चाहिए थी।

२. **आधुनिक राजस्थान के निर्माता**—महर्षि दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द और क्रान्ति उपासक श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा से लोकनायक श्री जयनारायण व्यास तक कितने ही ऐसे नेता व कार्यकर्त्ता हुए हैं, जिन्होंने अपने खून-पसीने से आधुनिक राजस्थान की नींव भरी। उनको भुलाना बहुत बड़ी कृतघ्नता होगी। इस ग्रन्थ में उन सबकी स्मृति को उजागर किया जाएगा।

३. **देश को राजस्थान की देन**—वैदिक तथा श्रमण संस्कृति के आदि काल से गांधी तथा नेहरू युग के वर्तमान काल तक राजस्थानियों ने स्वदेश के निर्माण तथा साज-संवार में जो गौरवशाली योग दिया है, उसका गर्वीला इतिहास इसमें प्रस्तुत किया जाएगा। ये ग्रन्थ लोकनायक की स्मृति को निश्चय ही स्थायी बना सकेंगे।

राजस्थान की आधुनिक जन-जागृति के लोकनायक वैसे ही पितामह थे जैसे कि "प्रजा सेवक" के संपादक मामा अचलेश्वर ने उनको "राजस्थान की पत्रकारिता का पितामह" कहा है। समूचे राष्ट्र की दृष्टि से राष्ट्रनायक श्री जवाहरलाल नेहरू, गुजरात की दृष्टि से सरदार पटेल, उत्तरप्रदेश की दृष्टि से श्री गोविन्द वल्लभ पन्त और बिहार की दृष्टि से डा० राजेन्द्र प्रसाद तथा अन्य राष्ट्र महापुरुषों का हमारे राष्ट्रीय इतिहास में जो महत्त्व है, वही राजस्थान की दृष्टि से लोकनायक का है। उनकी जीवनी लिखने के सम्बन्ध में वैसा ही कार्य किया जाना आवश्यक है, जैसा कि लोकमान्य बालगंगाधर तिलक की जीवनी के लिए "केसरी" के संपादक श्री नरसिंह चिन्तामण केलकर ने किया और जैसा कि सर्वश्री नेहरू, सरदार, पन्त और राजेन्द्र बाबू आदि की जीवनी के लिए किया जा रहा है। उनके लिए लाखों की निधि की व्यवस्था की गई है। जयपुर में १९६३ के नवम्बर मास में कांग्रेस महासमिति के अधिवेशन पर लोकनायक को मेजर शैतानसिंह की कोटि में उपस्थित करने का जो प्रयास किया गया वह राजस्थान की शोभा व प्रतिष्ठा के बिल्कुल प्रतिकूल था। मेजर शैतानसिंह का वीरतापूर्ण महान उत्सर्ग अपना विशिष्ट महत्त्व रखता है और उसकी जितनी सराहना

की जाय कम है। लोकनायक ऐसे नेता, निर्माता और प्रेरणापुंज थे, जिन्होंने दीन-हीन-पराधीन पीड़ित व शोषित मूक जनता की सूखी हड्डियों में दधीचि की हड्डियों जैसी तेजस्विता पैदा कर उसको क्रान्ति के पथ पर अग्रसर किया था। उनकी गणना स्वप्न-द्रष्टा महान् क्रान्तिदर्शियों में ही की जानी चाहिए।

अपनी अनुभूतिपूर्ण स्मृतियां लिख भेजने की कृपा करने वाले सहृदय साथियों के सहयोग के विना ग्रन्थ को प्रस्तुत रूप नहीं दिया जा सकता था। प्रयास यह किया गया है कि संस्मरण उन महानुभावों से ही प्राप्त किये जाँय, जो लोकनायक की किसी प्रवृत्तिविशेष में उनके सहकर्मी रहे हों और जो प्रत्यक्षदर्शी या भुक्त-भोगा के रूप में अधिकारपूर्ण शब्दों में उस पर कुछ प्रकाश डाल सकते हों। सम्भवत: एक भी संस्मरण ऐसा न होगा, जिसमें व्यक्तिगत अनुभूति का अभाव हो। इसीलिए प्रस्तुत ग्रन्थ लोकनायक की क्रमवद्ध जीवनी न होने पर भी उसमें ऐसी भरपूर सामग्री संकलित कर दी गई है कि उसके आधार पर सहज में क्रमवद्ध जावनी लिखी जा सकती है। ऐसी सामग्री जुटाने में जिन संगी साथियों का महत्व-पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ, उनका मैं हृदय से कृतज्ञ हूं।

प्रस्तुत ग्रन्थ के लिए किया गया श्रम साधना ही है। उसका मार्ग कठोर तपस्या का मार्ग है। उसकी लम्वी मंजिलें पार करते हुए पग-पग पर तरह-तरह की ठोकरें खानी पड़ती हैं। उनकी चर्चा यहाँ तव क्या की जाय, जव उसका प्रतिफल पाठकों के हाथों में समर्पित है। अपने साथियों व सहकर्मियों के प्रति आभार प्रदर्शित न करना अकृतज्ञता होगी। चिरंजीव ख्यालीराम पांडे ने शुरू से अन्त तक सच्चे साथी का तरह ग्रन्थ के सम्पूर्ण काम में वड़ी लगन व तत्परता से हाथ वंटाया और पांडु-लिपि वड़ी ही तन्मयता से तैयार की। इतिहास के विद्वान भाई पृथ्वीसिंह जी मेहता के सहयोग और सुझाव वड़े उपयोगी रहे। यशस्वी कवि भाई ईशकुमार 'ईश' ने पांडुलिपि के सम्पादन में सहायता प्रदान की। हिन्दी प्रिन्टिंग प्रेस के मालिक श्री श्यामसुन्दर जी गर्ग ने वड़े उत्साह से कलापूर्ण मुद्रणकार्य सम्पन्न किया। मैं सभी के प्रति हृदय से कृतज्ञ हूं। स्थान-स्थान के किन-किन सहृदय सहयोगियों व साथियों का नामोल्लेख किया जाय। फिर भी जयपुर के पोलोविक्ट्री के मालिक श्री केशोभाई, 'राजस्थान समाचार' सम्पादक भाई श्यामलाल जी वर्मा, जोधपुर के भाई तारक प्रसाद जी व्यास, 'प्रजासेवक' सम्पादक मामा अचलेश्वर प्रसाद जी शर्मा, तथा सेठ आनन्दसिंह जी कछवाहा, भालवाड़ा के संसद सदस्य भाई रमेशचन्द्र जी व्यास और डिव्रूगढ़ (असम) के कनाई कालेज के अर्थशास्त्र विभाग के अध्यक्ष भाई प्रेमचन्द जैन के नामों का उल्लेख उनके स्नेहपूर्ण सहयोग के लिए आवश्यक है। केशोभाई का सहयोग एवं प्रोत्साहन निरन्तर वना रहा। मुख पृष्ठ का आकर्षक चित्र उन्हीं की उदार भेंट है। उनकी स्नेह स्निग्ध कृपा भुलायी नहीं जा सकती।

लोकनायक के प्रस्तुत 'श्रद्धांजलि स्मति ग्रन्थ' को 'धुन के धनी' नाम दिया

गया है। पाठक स्वयं देखेंगे कि यह नाम लोकनायक के संघर्षशील कर्मठ चरित्र के सर्वथा अनुकूल है। हमारे देश को उन सरीखे धुन के धनियों की ही आवश्यकता है। यदि 'धुन के धनी' लोकनायक की स्मृति रक्षा के लिए की गई यह साधना देशवासियों के हृदय में उन सरीखा 'धुन के धनी' बनने की यत्किंचित भावना पैदा कर सकी, तो मैं अपने इस प्रयास को सफल समझूंगा।

राजस्थान और मारवाड़ी समाज का मुझ पर जो ऋण है, मुझे सन्तोष है कि उसका कुछ अंश मैंने एक महान् राजस्थानी किंवा महान् मारवाड़ी की पुनीत स्मृति रक्षा के लिए यह 'श्रद्धांजलि स्मृति ग्रन्थ' प्रस्तुत करके अदा कर दिया है। इससे भी अधिक सन्तोष यह है कि इस वर्ष में मुझे 'प्रताप-प्रतिज्ञा के धनी' दो महापुरुषों के स्मृति ग्रन्थ लिखने व संकलित करने का दुर्लभ अवसर प्राप्त हुआ है। एक हैं आधुनिक पंजाब के निर्माता, पंजाब की पत्रकारिता के पितामह और आर्य-समाज के आधार स्तम्भ महाशय कृष्ण। उन्होंने प्रणवीर महाराणा से प्रेरित होकर ही अपने सुप्रसिद्ध दैनिक का नाम 'प्रताप' रखा था। उस दैनिक का समस्त जीवन संघर्षों में ही बीता। जमानतों, सेंसरशिप, मुकदमों, नजरबन्दियों तथा विविध प्रकार के प्रतिबन्धों की नंगी तलवार सदा ही उनके सिर पर लटकी रही। इसी कारण उनके जीवन स्मृति ग्रन्थ को 'जीवन संघर्ष' नाम दिया गया। दूसरे हैं आधुनिक राजस्थान के निर्माता, राजस्थान की पत्रकारिता के पितामह और देशी राज्यों की जन-जागृति के आधार स्तम्भ लोकनायक। उन्होंने भी प्रताप-प्रतिज्ञा के लिए सर्वस्व वार दिया। उनकी स्मृति रक्षा के लिए प्रकाशित प्रस्तुत ग्रन्थ को 'धुन के धनी' नाम इसलिए दिया गया कि वह भी महाराणा के ही समान अपनी धुन के धनी थे। आँखों की दृष्टि न रहने के कारण कुछ भूलें होनी सम्भव है। उनके लिए विनीत भाव से क्षमा प्रार्थना है।

मारवाड़ी प्रकाशन ४० ए, हनुमान लेन
नई दिल्ली, १
दीपावली, ४ नवम्बर १९६४।

—सत्यदेव विद्यालंकार

एक दृष्टि में

दूसरा खण्ड — चित्र परिचय — १०३

१. मूर्धन्य व्यक्तित्व — उपराष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन,

२. अनुकरणीय व्यक्तित्व — मुख्य न्यायमूर्ति श्री दुर्गाशंकर जी दवे, वरिष्ठ न्यायालय, जोधपुर।

३. बेजोड़ व्यक्तित्व — श्री रामनिवास जी मिर्धा, अध्यक्ष : राजस्थान विधान सभा, जयपुर।

प्रेरणा स्त्रोत — रावसाहब श्री नारायणसिंह जी ससूदा उपाध्यक्ष : राजस्थान विधान सभा, जयपुर।

५. उन जैसा कोई दीख नहीं पड़ता	वनस्थली विद्यापीठ के संस्थापक, श्री हीरालाल जी शास्त्री, जयपुर।
६. बड़े भैया	सर्वोदय नेता श्री गोकुलभाई भट्ट, भूदान कुटीर, जयपुर।
७. व्यापक व्यक्तित्व	मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल जी सुखाड़िया, राजस्थान।
८. गुरु सदृश व्यक्तित्व	श्री मथुरादास जी माथुर, योजना मंत्री, जयपुर।
९. लोकप्रिय व्यक्तित्व	कृषि मंत्री श्री नाथूराम जी मिर्धा, जयपुर।
१०. निःस्वार्थ व्यक्त्वि	महाराजा हरिश्चन्द्र जी, विद्य ुतमन्त्री, जयपुर।
११. निष्ठावान व्यक्तित्व	महारावल श्री लक्ष्मणसिंह जी, नेता विरोधी दल, राजस्थान विधान सभा, जयपुर।
१२. चहुंमुखी व्यक्तित्व	संसद सदस्य वयोवृद्ध श्री प्रभुदयाल जी हिम्मतसिंहका, कलकत्ता।
१३. निर्माणकारी प्रभावी व्यक्तित्व	विदर्भकेसरी श्री ब्रिजलाल जी वियाणी, ५१-५२ जावरा कम्पाउण्ड, इन्दौर (म० प्र०)
१४. लोक सेवा के प्रतीक	आचार्य श्री चैनसुखदास जी न्यायतीर्थ, दिगम्बर जैन संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर।
१५. अनूठा व्यक्तित्व और लोकसेवा	केन्द्रीय शिक्षा उपमंत्री श्री भक्तदर्शन जी, १० हेंस्टिंग्ज रोड, नई दिल्ली।
१६. समवृत्ति के महाधनी	त्यागमूर्ति स्वामी केशवानन्द जी, ग्राम महाविद्यालय संगरिया मंडी (राजस्थान)।
१७. दधीचि और प्रोमेथियस सा व्यक्तित्व	संसद सदस्य डा० लक्ष्मीमल सिंघवी, जोधपुर।
१८. अविस्मरणीय व्यक्तित्व	लोकसेवक श्री भंवरमल जी सिंघी, कलकत्ता।
१९. व्यक्तित्व विश्लेपण	प्रोफेसर श्री प्रेमनारायण जी माथुर, वनस्थली विद्यापीठ, जयपुर (राजस्थान)
२०. जिसने झुकना नहीं सीखा	इतिहासज्ञ ठाकुर देशराज, भरतपुर (राजस्थान)
२१. अरावली के शिखर	श्री सत्यनारायण जी सराफ (भूतपूर्व वन्दी वीकानेर पड्यन्त्र केस) भादरा—वीकानेर।
२२. राष्ट्रज्योति	श्री कन्हैयाल जी सेठिया, सुजानगढ़।

श्री रामेश्वर जी टांटिया संसद सदस्य, गौरीशंकर जी आचार्य, श्री शान्तिलाल जी कोठारी संसद सदस्य, सेठ सदासुख जी कांवरा, सेठ अम्बिकाप्रसाद जी केड़िया डिब्रूगढ़, प्रो॰ प्रेमचन्द जी जैन डिब्रूगढ़, श्रीरामजी भाई काक, श्रीसम्पतराम जी, श्री रामकिशोर जी व्यास, श्री दामोदर जी व्यास, श्री भैरोंसिंह जी, श्री कृष्णचन्द जी अग्रवाल कलकत्ता, श्री श्यामलाल जी वर्मा, श्री कनक मधुकर, श्री चन्द्रेश व्यास, श्री मोहनराज जी भंडारी, सेठ भीकमचन्द जी छालानी, सेठ मोहनलाल जी बड़जात्या, आयुर्वेदाचार्य शिवकरण जी शर्मा।

लोकनायक श्री जयनारायण व्यास

श्रीमती गोरजादेवी व्यास

पहला खंड
जीवन दीप

प्रकरण १

प्रकाश किरण
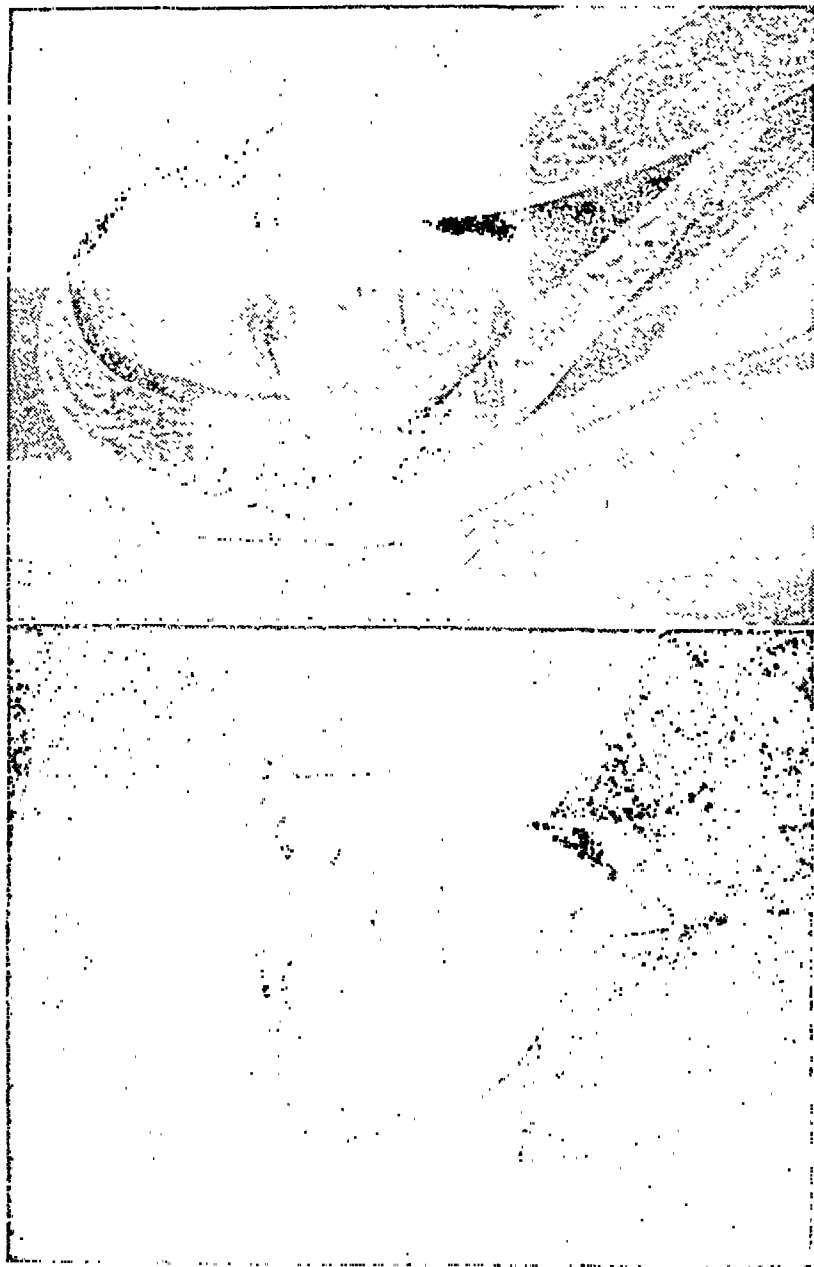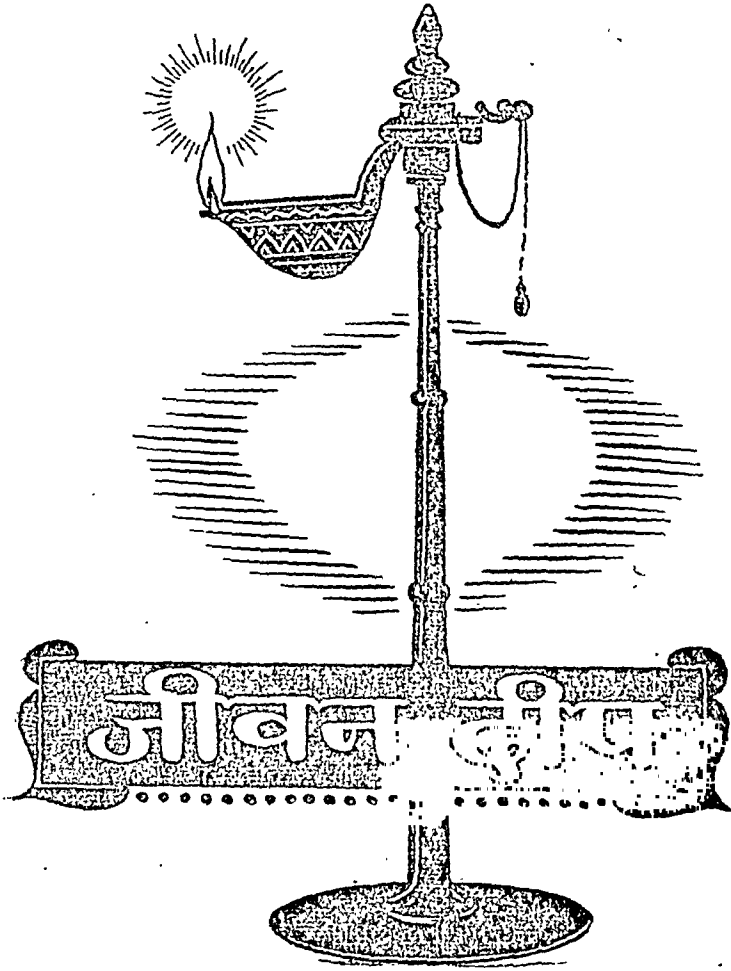
मानव के लिये मृत्यु अनिवार्य है। उसको 'मरणधर्मा' कहा गया है। नश्वर शरीर को जब मृत्यु हर लेती है, तब मानव उसके सामने घुटने टेक हार स्वीकार कर लेता है और अपने को मरणधर्मा मान उससे पराजित हो जाता है। लेकिन, कुछ ऐसे विलक्षण महापुरुष भी इस भूतल पर अवतरित होते हैं, जिनको अमर कहा जाता है। वे अपनी अमरता द्वारा मृत्यु पर ऐसी विजय प्राप्त करते हैं कि वह उनको हममें से उठा ही नहीं पाती। उनकी यह अमरता ही मृत्यु पर जीवन की विजय है।

उस दिन १९६३ की १५ मार्च को जोधपुर के नागरिकों ने अपने नगर में जो अभूतपूर्व दृश्य देखा, वह नश्वर शरीर की शव-यात्रा का नहीं था; प्रत्युत मृत्यु पर जीवन की विजय का महान् अभियान था। निस्सन्देह, नई दिल्ली में साउथ एवेन्यू के उनके निवासस्थान पर उनके नश्वर शरीर को एक दिन पूर्व १४ मार्च को मृत्यु ने हर लिया था और निश्चय ही यमराज ने उस दिन विजय महोत्सव मनाया होगा। लोकनायक श्री जयनारायण व्यास सरीखे राष्ट्र महापुरुष को परास्त करना सामान्य घटना न थी। मृत्यु की वह विजय और यमराज का वह विजय महोत्सव मानव की क्षणभंगुर काया से भी अधिक क्षणभंगुर सिद्ध हुए।

वह विजय अभियान

यशस्वी जीवन का वह महान् विजय अभियान जिस अपूर्व समारोह से प्रारंभ हुआ, वह लोकनायक की महानता के सर्वथा अनुरूप था। जोधपुर नगर के भीतरी भागों में राजपथ से किसी महाराजा की भी शव-यात्रा उससे पहले न निकल पाई थी। उसको पुरानी परम्परा के प्रतिकूल समझा जाता था। वह एक कर्मठ व लोकप्रिय जीवन की महान् विजय यात्रा थी। जिस विजय ने पग-पग पर जयमाल पहनाकर सदा ही उनका अभिनन्दन किया था, वह उस दिन भी उनको जयमाल पहनाने के लिये उपस्थित थी। इसी कारण तो पुरानी सब परम्पराओं को तिलांजलि देकर वह विजय यात्रा उनके निवासस्थान से शुरू हो उन मार्गों से आगे बढ़ी,

जो राजपथ का रूप त्यागकर जनपथ में परिणत हो गये थे। हज़ारों-लाखों नागरिकों ने अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित किये। निस्सन्देह लोकनायक श्री जयनारायण व्यास ने उस विजय यात्रा द्वारा मृत्यु के उपरान्त भी अमरत्व को प्राप्त किया। विलक्षण महापुरुषों की जीवन यात्रा प्रकाश किरण बन आने वाली पीढ़ियों के पथ को प्रशस्त एवं आलोकित करती रहती है।

लोकनायक श्री जयनारायण व्यास का समस्त जीवन उस कर्मठ राष्ट्र महापुरुष का जीवन था, जिसके शब्दकोष में थकान, निराशा और पराजय सरीखे शब्द लिखे न थे। उन्होंने जिस किसी क्षेत्र में पैर रखा उसमें उनके कदम हमेशा आगे ही बढ़ते गये। उनके कदम कभी रुके नहीं; कभी थके नहीं; कभी लड़खड़ाये नहीं; और कभी हारे नहीं। धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक सभी क्षेत्रों में उनके कदम अबाध गति से निरन्तर आगे ही बढ़ते चले गये। उन्होंने निर्दिष्ट मंज़िल पर पहुंचकर ही सांस ली और तुरन्त अगली मंज़िल की ओर बढ़ गये। कहते हैं कि नेपोलियन बोनापार्ट ऐसा महाप्रतापी सम्राट् था, जिसकी सेनाएं मोर्चों पर मोर्चे जीतती हुई केवल आगे ही बढ़ना जानती थीं और वह स्वयं उनका नेतृत्व करते हुए गरजती व आग बरसाती तोपों के मुंह पर जा खड़ा होता था। कुछ ऐसी ही अचरजभरी अपराजित वृत्ति व्यास जी के साहसी हृदय में समाई हुई थी। इसी कारण तो लोकनायक शब्द उनको पाकर धन्य हो गया था।

दिल्ली में

व्यास जी के कर्मठ क्रान्तिकारी सार्वजनिक जीवन का प्रारम्भ जिस प्रकार हुआ, उसकी चर्चा उन्होंने दिल्ली में कई बार स्वयं अपने भाषणों में की थी। अपने कुछ साथियों के साथ वे पंजाब विश्वविद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा देने के लिए दिल्ली आए थे। सदर बाज़ार में वह ठहरे थे। दिल्ली में अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वर्गीय जनाब हकीम अजमलखां और डाक्टर अंसारी के नेतृत्व में सत्याग्रह आन्दोलन जोरों पर था। सारे नगर में जनता का अपना राज्य 'रामराज्य' कायम था। १९१९ में महात्मा गांधी ने जिस सत्याग्रह का शंखनाद किया था, उसी के अनुसार दिल्ली में उस आन्दोलन का सूत्रपात किया गया था। मार्च महीने की ३० तारीख थी। रेलवे स्टेशन पर पुलिस ने एकत्रित जन-समुदाय पर गोली चला दी। एक मुसलमान और हिन्दू, दो युवक वहां ही शहीद हो गये। सारे शहर में गोली चलने और दो युवकों के शहीद होने का समाचार बिजली की तरह फैल गया। समाचार सुन व्यास जी अपने साथियों के साथ घटनास्थल की ओर चल दिये। उस दिन और दूसरे दिन भी नगर में अनेक ऐतिहासिक घटनाएं घटीं। उन सबके व्यास जी प्रत्यक्षदर्शी थे। उन्होंने देखा कि किस उत्साह व सम्मान से उन शहीदों की शवयात्रा निकाली गई। किस प्रकार हिन्दू और मुसलमान दोनों कन्धे से कन्धा भिड़ा सत्याग्रह आन्दोलन में शामिल थे। किस प्रकार स्वामी

श्रद्धानन्द जी ने एक सार्वजनिक सभा में अधिकारियों द्वारा मशीनगनों व पाशविक शक्ति का प्रदर्शन करने पर भी जनता को पूरी तरह नियंत्रण में रखा। उन्होंने उस अलौकिक दृश्य को भी देखा जब स्वामी जी निर्भय हो घंटाघर के नीचे गुरखों की नंगी किर्चों के सामने छाती तान खड़े हो गये थे। सिंह की तरह गरजते हुए उन्होंने कहा था कि खड़ा हूं। छेद डालो। उन सब घटनाओं का व्यास जी के युवक हृदय पर अचूक प्रभाव पड़ा।

व्यास जी ने अपनी इस दिल्ली यात्रा का जो विवरण लिखा, वह कैसा प्रभावोत्पादक है। उन्होंने लिखा था कि "सदर बाज़ार में किसी ने चिल्लाते हुए कहा कि चांदनी चौक में गोली चल गई। कइयों ने उसकी बात को दोहराया। उस मकान के नीचे भीड़ जमा हो गई, जिसमें जोधपुर से परीक्षा के लिये आये हुए लगभग आध दर्जन विद्यार्थी बैठे थे। मैं भी उनमें शामिल था। वह १९१९ की बात थी। हमने वास्तविक घटना जाननी चाही। परन्तु किसी की बात किसी के साथ मेल नहीं खा रही थी, सब अपनी-अपनी बात कहने में लगे थे। हममें से कुछ ने घटनास्थल पर जाकर वास्तविकता जानने का निश्चय किया। जैसे ही हम घंटाघर पर पहुंचे, वैसे ही क्वींस पार्क में एक बार फिर गोली चलने की आवाज़ सुन पड़ी। कुछ लोग मारे गये। उनमें हमारे ही समान एक मैट्रिक का भी विद्यार्थी था। इस पर हम बड़े उत्तेजित हो गये। मैं बहुत अधिक उत्तेजित हो उठा, परन्तु यह न जान सका कि करना क्या चाहिए। कुछ मिनट बाद हमने देखा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी एक बड़ी भीड़ के साथ घंटाघर की ओर आ रहे थे। जो गोरे सिपाही महारानी विक्टोरिया की मूर्ति के पास मशीनगनों के साथ खड़े थे, उन्होंने अपनी बयोनेट वाली बन्दूकें स्वामी जी की छाती पर तान दीं। वह उनके सामने छाती तानकर खड़े रहे। इतनी ही गनीमत हुई कि बाग के दरवाज़े के बाहर ऐसी कोई दुर्घटना नहीं घटी। उन्होंने भीड़ को अपने पीछे-पीछे आने को कहा। हम सब उनके पीछे-पीछे लालकिले के सामने के बड़े मैदान में जा पहुंचे। वहां अब दीवानहाल तथा अन्य बहुत-से मकान व दूकानें बन गई हैं। उस मैदान को उन दिनों में वहां कांग्रेस का एक विशेष अधिवेशन होने के कारण कांग्रेस मैदान कहा जाता था। वहां स्वामी श्रद्धानन्द जी, जनाब हकीम अजमलखां साहब और डाक्टर अंसारी आदि के भाषण हम लोगों ने सुने। स्वामी श्रद्धानन्द जी के वे शब्द आज भी मेरे कानों में गूंज रहे हैं, जिनमें उन्होंने लोगों से भगवान् राम और हज़रत इमाम के आदर्श को अपने सामने रखने की अपील की थी।"

क्रान्तिकारी परिवर्तन

अपनी इस दिल्ली यात्रा और उसकी प्रतिक्रिया के बारे में व्यास जी ने लिखा था कि, "दिल्ली यात्रा से मेरे जीवन को नया मोड़ मिल गया। मैट्रिक परीक्षा के लिये की गई दिल्ली की वह यात्रा वस्तुतः ज़िम्मेदार है मेरे भावी जीवन को

राजनीतिक सांचे में ढालने के लिये। वहां मुझे जो वास्तविक प्रोत्साहन मिला, उसको मैं कभी भूल नहीं सकता।" वहां जाने से पहले व्यास जी ने जोधपुर के सैनी स्कूल में १८ रुपये महीने पर सहायक अध्यापक का काम शुरू कर दिया था। यदि कहीं दिल्ली जाना न होता और वहां राजनीतिक प्रेरणा प्राप्त न हुई होती, तो आश्चर्य नहीं कि व्यास जी कोरे 'मास्टर' ही बने रह जाते।

उन्हीं दिनों में दिल्ली से स्वामी श्रद्धानन्द जी का तेजस्वी राष्ट्रीय दैनिक 'विजय' पंडित इन्द्र विद्यावाचस्पति के ओजस्वी सम्पादकत्व में निकलता था। व्यास जी में उसी से समाचार-पत्र पढ़ने की रुचि पैदा हुई और पत्रकार बनने के संस्कार भी जागृत हुए। वे प्रायः कहा करते थे कि एक ओर पुलिस की गोलियां दनदनाती थीं, तो दूसरी ओर नया बाज़ार से 'विजय' कार्यालय से उन राष्ट्रीय भावनाओं का संचार होता था, जो सत्याग्रह के राष्ट्रवादी मोर्चे को दृढ़ बनाती रहती थीं। उन भावनाओं ने निश्चित रूप से व्यास जी के हृदय में भी गहरा स्थान बना लिया था।

समाजसेवा के क्षेत्र में

जोधपुर लौटने पर उन्होंने समाचारपत्रों और राष्ट्रीय साहित्य की एक छोटी-सी दूकान खोली। दूकान का प्रमुख उद्देश्य धन्धा न था; परन्तु लोगों में राष्ट्रीय समाचार-पत्र और राष्ट्रीय साहित्य पढ़ने की अभिरुचि पैदा करना और एक ऐसा केन्द्र कायम करना था, जहां उस बहाने कुछ उत्साही युवक इकट्ठे हो जाते थे। जोधपुर पुलिस को वह केन्द्र भी सहन नहीं हुआ। तरह-तरह की चालें चलकर उसको बन्द करवा दिया गया। यह थी वह पृष्ठभूमि, जिसमें व्यास जी ने राजनीतिक भावना से प्रेरित हो सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया था।

निस्सन्देह सार्वजनिक जीवन का प्रारम्भिक क्षेत्र था उनका अपना पुष्करणा समाज और उसका माध्यम था समाज-सेवा। पुष्करणा समाज में समय-समय पर बड़े-बड़े जाति भोजों का आयोजन किया जाता था। उनमें सिवाय पुष्करणाओं के दूसरे किसी का प्रवेश या स्पर्श तक वर्जित था। इसलिए व्यास जी ने ऐसे अवसरों पर सेवा-कार्य के लिये उत्साही नवयुवकों का दल जुटाया और उनमें समाज-सेवा की भावना जागृत की। १९१८ में रायपुर के रायसाहब श्री गोविन्दलाल जी पुरोहित की अध्यक्षता में जोधपुर में अखिल भारतीय पुष्करणा महासभा का जो ऐतिहासिक अधिवेशन हुआ, उसमें व्यास जी ने एक सौ पुष्करणा नवयुवकों के साथ स्वयंसेवक का काम बड़ी मुस्तैदी से किया था। इसी प्रकार पुष्करणा युवक मंडल का गठन हुआ और समाज-सुधार आन्दोलन का मोर्चा तैयार किया गया। व्यास जी प्रायः यह कहा करते थे कि धर्म, कर्म और ईश्वर पूजा आदि में श्रद्धा निष्ठा न होने पर भी वे उनका उपयोग अपने सामाजिक एवं राजनीतिक हेतु के लिये किया करते थे। इसीलिए काफी समय तक मन्दिर उनके साथियों के इकट्ठा

होने के केन्द्र बने रहे। अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिये हर साधन का उपयोग करना वे खूब जानते थे।

राजनीतिक क्षेत्र में

दिल्ली की घटनाओं की जोधपुर लौटने पर जो प्रतिक्रिया हुई, उसके सम्बन्ध में व्यास जी ने फिर लिखा था कि "जोधपुर पहुंचते न पहुंचते मेरे दिल व दिमाग पूरी तरह राजनीति में रंगग ये; भले ही मैं अपने राजनीतिक विचारों को कोई व्यावहारिक रूप न दे सका। हम लोगों ने शहर के बाहर पुष्करणा नवयुवक मंडल की स्थापना की थी। उसके पुस्तकालय और वाचनालय को उठाकर हम शहर में एक घनी आबादी में ले आये। उसमें हमने गांधी जी का 'यंग इण्डिया' और पं० मोतीलाल जी नेहरू का 'इंडिपेंडेंट' आदि सब पत्र मंगाने शुरू कर दिये। वहां आने वाले लोगों को हिन्दी पत्र पढ़कर और अंग्रेज़ी पत्र अनुवाद करके सुनाये जाने लगे। हमारा वाचनालय लोकसम्पर्क के लिये एक बड़ा केन्द्र बन गया। यहीं से हमने समाज-सुधार और राष्ट्रीय विचारों के भजन व गीत तैयार करके प्रकाशित करने शुरू किये।"

व्यास जी ने मैट्रिक की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की थी और वे अपने विद्यार्थी जीवन में सुमेर पुष्टिकर हाईस्कूल की परीक्षाओं में अपनी कक्षा में सदा सर्वप्रथम रहा करते थे। कालेज की पढ़ाई जारी करने की बड़ी तीव्र इच्छा थी। पुस्तकें खरीदकर तैयारी भी कर ली थी। परन्तु दिल्ली की घटनाओं और गांधी जी के असहयोग आन्दोलन का उन पर कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने पढ़ाई जारी रखने का विचार छोड़ दिया और पाठ्य-पुस्तकें पुष्करणा नवयुवक मण्डल के पुस्तकालय को भेंट कर दीं। ऊंची पढ़ाई का विचार मन का मन में ही रह गया।

पुष्करणा नवयुवक मण्डल के वाचनालय तथा पुस्तकालय में इकट्ठा होने वाले नवयुवक परस्पर राजनीतिक घटनाओं के बारे में समाचार-पत्रों में समाचार पढ़ते हुए यह भी चर्चा करने लगे कि किस प्रकार देश के प्रति अपने कर्त्तव्य को पूरा किया जा सकता है। जोधपुर में शिक्षा के क्षेत्र में सार्वजनिक जीवन का प्रारम्भ सामाजिक अथवा जातीय शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से हुआ था। शहर की आबादी भी कुछ इस ढंग से बसी थी कि हर जाति के अपने-अपने मुहल्ले थे। उनमें जातीय आधार पर स्कूलों की स्थापना सहज में की जा सकती थी। उन्हीं के माध्यम से धीरे-धीरे अन्य क्षेत्रों में भी जीवन और जागृति के कुछ चिह्न दीख पड़ने लगे। १९१७ में मारवाड़ सेवा-संघ का गठन किया गया था। उन दिनों में मारवाड़ में एक सौ तोले का एक पक्का सेर चालू था, जबकि देश में एक सेर अस्सी तोले का होता था। १९२१ में राज्य सरकार ने अपने यहां भी अस्सी तोले का ही सेर चालू करने का निश्चय किया। व्यापारी उसके विरुद्ध थे। शहर में लोग जहां-तहां गलियों व बाज़ारों में दीवारों के आस-पास पेशाब आदि करने के आदी थे।

स्वास्थ्य और सफाई की दृष्टि से उसको वन्द करने के आदेश नगरपालिका की ओर से जारी किये गये। उनकी अवज्ञा करने वालों को पुलिस ने बुरी तरह पीटना शुरू किया। पुलिस की इस ज्यादती पर भी शहर में बड़ा रोष व असन्तोष फैल गया। उसके सम्बन्ध में भी एक आन्दोलन खड़ा हो गया। उन दोनों आन्दोलनों का संचालन मारवाड़-सेवा-संघ की ओर से किया गया। व्यासजी ने उनमें प्रमुख भाग लिया। राज्य सरकार को झुकना पड़ा। फिर १९२२ में राज्य में मादा पशुओं की निकासी पर जो प्रतिवन्ध था, उसको उठा दिया। उसके विरोध में भी शहर में प्रचंड आन्दोलन हुआ। १९१९ में स्थापित मारवाड़ हितकारिणी सभा ने उस आन्दोलन का सफलतापूर्वक संचालन किया। बाद में इसी संस्था की ओर से राज्य की नौकरियों का आन्दोलन उठाया गया। व्यास जी तव उसके मन्त्री थे और देश-भक्त सेठ आनन्दराज जी सुराणा के पिता सेठ चांदमल जी सुराणा उसके अध्यक्ष थे। तब व्यास जी पहले रेलवे में और बाद में पी० डब्ल्यू० डी० में क्लर्क थे। आन्दोलन ने ऐसा रूप धारण किया कि कौंसिल के सीनियर सदस्य सर सुखदेव-प्रसाद के साथ मारवाड़ हितकारिणी सभा की सीधी टक्कर हो गई। १९२५ में सर्वश्री चांदमल सुराणा, प्रतापचन्द सोनी एडवोकेट तथा शिवकरण जोशी राज्य से निर्वासित कर दिये गये और सर्वश्री जयनारायण व्यास, अब्दुल रहमान अंसारी, कस्तूरकरन जोशी, अमरचन्द मूथा तथा बूचराज व्यास को दस नम्बरी ठहरा दिया गया। उनको यह आदेश दिया गया कि वे मारवाड़ राज्य में जहां भी कहीं जाएं, वहां रात को पुलिस थाने में सोया करें और जोधपुर नगर से बाहर पुलिस को सूचना दिये बिना नहीं जाएं। इन सब घटनाओं तथा आन्दोलनों की चर्चा विस्तार से अनेक सज्जनों ने अपने संस्मरणों में की है। उस सबको यहां दोहराने की आव-श्यकता नहीं। व्यास जी राज्य की नौकरी छोड़कर खुले रूप में राजनीतिक मैदान में उतर पड़े। निर्वासन, नज़रबन्दी और जेल-जीवन का लम्बा सिलसिला शुरू हो गया।

मोर्चे पर मोर्चा

व्यास जी ने पहला मोर्चा सामाजिक क्षेत्र में लिया। उसी से उनके सार्वजनिक जीवन का श्रीगणेश हुआ। पुष्करणा समाज रूढ़ि, परम्परा, अन्धविश्वास, मिथ्या धारणा और मूढ़-श्रद्धा में कुछ ऐसा उलझा था कि उसके सम्मुख समाज-सुधार की बात करना असाधारण साहस का काम था। जोधपुर और बीकानेर में रहते हुए उन्होंने सचमुच ही समाज का कायाकल्प कर डाला। होली, शादी तथा अन्य ऐसे ही अवसरों पर जो अश्लील गीत गाये जाते थे उनके स्थान पर उन्होंने समाज सुधार सम्बन्धी उन गीतों की रचना की और उनका गली-गली घूमकर ऐसा प्रसार किया कि वे घर की चहारदीवारी में भी चूल्हे-चौके के धुएं भरे घोर अन्धकार में परदे में बन्दी रहने वाली महिलाओं के भी मुंह पर चढ़ गये और उन्होंने सहसा

ही अश्लील गीतों को हटाकर उनका स्थान ले लिया। पुष्करणा नवयुवक मंडल का मोर्चा उनके नेतृत्व में अखिल भारतीय पुष्करणा महासभा के मुकाबले में कुछ ऐसा जमा कि अन्त में अखिल भारतीय स्तर पर उनको अप्रत्याशित सफलता मिली और सबसे अधिक 'दकियानूसी' समझा जानेवाला समाज सामाजिक क्रान्ति के प्रगति के पथ पर पूरी तेजी से अग्रसर हो गया। समाज-सुधार-सम्बन्धी ध्येय की पूर्ति के लिये मासिक पत्र 'पुष्करणा ब्राह्मणोपकारक' जोधपुर, 'पुष्करणेन्दु' बीकानेर और 'पुष्करणा' जोधपुर का प्रकाशन किया गया। 'पुष्करणा' मासिक-पत्र पूरी तरह व्यास जी का अपना था। इस 'पुष्करणा' मासिक-पत्र से ही व्यास जी के सफल पत्रकार जीवन का श्रीगणेश हुआ समझना चाहिए। समाज-सुधार-सम्बन्धी विषयों को लेकर पुष्करणा समाज में काफी समय तक अन्तर्द्वन्द्व की-सी स्थिति बनी रही। अखिल भारतीय पुष्करणा महासभा में स्थितिपालक वृद्ध जनों का जोर था, तो राजपूताना पुष्करणा हितैषिणी सभा में प्रगतिशील विचारों के युवकों का। उन युवकों के प्रेरणा स्रोत थे व्यास जी। अन्त में बरार केसरी श्री पन्नालाल जी व्यास की मध्यस्थता से दोनों में समझौता हुआ। नैतिक दृष्टि से व्यास जी के पक्ष को इसलिए सफल मानना चाहिए कि उन्होंने जोधपुर में समाज-सुधार के लिये जो वातावरण पैदा किया था, उसी के रंग में सारा पुष्करणा समाज रंग गया।

समाज-सुधार का यह मोर्चा मुनिश्री चुन्नीलाल जी महाराज की सत्संगति से कुछ ऐसा व्यापक बना कि वह पुष्करणा समाज के दायरे से जैन समाज में और जैन समाज से अन्य समाजों में भी व्याप गया। होली पर नाथूराम जी की नंगी मूर्ति की पूजा की जो अन्ध परम्परा समूचे मारवाड़ी समाज में व्यापी हुई थी, उसके विरुद्ध मुनिश्री चुन्नीलाल जी महाराज ने तीव्र अभियान शुरू किया था। उन्होंने स्वयं अपने संस्मरण में उसका उल्लेख किया है और यह बताया है कि किस प्रकार उस अभियान में व्यास जी ने उनका हाथ बटाया। तब मुनि जी पाली मारवाड़ में अपने इस अभियान में संलग्न थे। व्यास जी जोधपुर से पाली आये और मुनि जी के साथ हो गये। बगड़ी में तो उन्होंने स्वयं उस मूर्ति को उखाड़ फेंका और उसके लिये वहां के ठाकुर का प्रकोप भाजन होना पड़ा। मुनि जी का उन्होंने यहां तक साथ दिया कि वे उनके साथ पग-यात्री और समाज-सुधार सम्बन्धी साहित्य के निर्माण तथा प्रकाशन के लिये उनके दाहिने हाथ बन गये। 'जैन पथ-प्रदर्शक' पत्र का भी उन्होंने उनके साथ मिलकर सम्पादन किया। वह पत्र समाज-सुधार सम्बन्धी ध्येय की पूर्ति के लिये ही निकाला गया था। मुनिजी ने लिखा है कि व्यास जी ने ऐसा तपस्वी जीवन बिताना शुरू किया कि तपस्या में उनको भी पराजित कर दिया।

दूसरा मोर्चा

व्यास जी ने दूसरा बड़ा मोर्चा अपने राज्य मारवाड़ में सामन्तशाही से लिया। उसने जनता को बिल्कुल निरीह एवं मूक बनाकर दीनता, हीनता तथा पराधीनता

की बेड़ियों में जकड़ रखा था। सामन्त उनके 'भाग्यविधाता' बने हुए थे और जनता भी उनको 'अन्नदाता भगवान्' ही मानकर पूजती थी। कैसी दयनीय थी वह स्थिति जब शोषक को ही पोषक मानकर पूजा जाता था। वह भी उस मूढ़-श्रद्धा तथा अन्ध-भावना का ही दूसरा रूप था, जिसमें सामाजिक दृष्टि से जनता बुरी तरह उलझी हुई थी। अन्य देशी राज्यों के समान मारवाड़ का राज्य भी जागीरों के अनन्त टुकड़ों में बंटा था। जागीरदारों को भी 'अन्नदाता भगवान्' का ही प्रतिरूप माना जाता था। इसीलिए तो व्यास जी को सामन्तशाही के विरोध में पहला मोर्चा जागीरों में लेना पड़ा। वह उस बड़े मोर्चे का ही मुख्य अंग था। उसी मोर्चे ने अन्त में उत्तरदायी शासन की मांग का रूप धारण कर लिया। कितनी ही जागीरों में व्यास जी के साथियों को निर्ममता, निर्दयता और हृदयहीनता का शिकार बनना पड़ा, उन्हें पीटा गया, उन पर घातक प्रहार किये गये और सशस्त्र ऊंट सवार उन पर छोड़ दिये गये। घायल होकर कितने ही अस्पतालों में पड़े रहे और कितनों के ही सदा के लिये अंग-भंग हो गये। परन्तु उन्होंने पीठ न दिखाई। चंडावल और डाबड़ा के निर्दय कांडों के रोमांचकारी विवरण संस्मरणों में पाठक पढ़ेंगे। उनसे पाठकों को मालूम होगा कि किस प्रकार व्यास जी ने मूक किसानों की सूखी हड्डियों में दधीचि की हड्डियों का-सा अदम्य तेज भर दिया था। इस सम्बन्ध में उनकी एक कविता का यहां उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है। यह वह कविता है, जो राजस्थान के सामन्तशाही विरोधी आन्दोलन के इतिहास में सदा ही स्वर्णाक्षरों में लिखी जानी चाहिए। वह ओजस्वी कविता निम्न प्रकार है:

भूखे की सूखी हड्डी से, वज्र बनेगा महा भयंकर।
ऋषि दधीचि को ईर्ष्या होगी, नेत्र नया खोलेंगे शंकर॥
अन्न विहीन उदर की आहें, दावानल-सी बनकर भीषण।
भस्मीभूत कर देंगी उनको, जो दीनों का करते शोषण॥
बाकी मत रख खूब सता ले, खूब दिखा दे अपना पशुबल।
निर्बल का बल देख रहा है, तेरे सब कुकृत्य को प्रतिपल॥
जी-भर आज सता ले मुझको, आज तुझे देता आजादी।
तेरे इन कृत्यों में सोई, छुपकर तेरी ही बरबादी॥
अन्न नहीं है, वस्त्र नहीं है, शक्ति नहीं है और न वाणी।
साहस हिम्मत तनिक नहीं है, निर्बल हूं, हूं पामर प्राणी॥
पर है हृदय अधमुए तन में, और जलन है भीतर भारी।
वह सुलगेगी, वह फैलेगी, जल जावेगी दुनिया सारी॥
नव प्रकाश तब जाग उठेगा, चामुंडा पकड़ेगी खप्पर।
देख-देख लपटों की झपटें, तांडव नृत्य करेंगे शंकर॥

तोड़ हड्डियां चीर कलेजा वहा रुधिर सव जी की करले ।
वीन-वीन हड्डी लोहू से, रक्तपात कर मन को भर ले ।।
कल ही तुझ पर गाज गिरेगा, तेरा सभी समाज गिरेगा ।
तख्त गिरेगा, ताज गिरेगा, महल गिरेगा, राज गिरेगा ।।
नहीं रहेगी सत्ता तेरी, वस्ती तो आवाद रहेगी ।
जालिम तेरे सव जुल्मों की, उसमें कायम याद रहेगी ।।

तपस्वी जीवन

व्यास जी को वर्षों किलों, जेलों, निर्वासन और नजरवन्दी में विताने पड़े । विभिन्न देशों के स्वतन्त्रता संग्रामों में घोर दमन की दारुण कहानी रोमांचकारी शब्दों में ही पढ़ने को मिलती है और स्वतन्त्रता का सन्देश सुनाने वालों के भाग्य में तो जेल, नजरवन्दी, निर्वासन तथा फांसी ही लिखी रहती है। इटली के मैजीनी, रूस के लेनिन और चीन के राष्ट्रपिता डा० सनयातसेन सरीखों को जो निर्वासन झेलना पड़ा और विदेशों में रह जिस प्रकार उन्होंने स्वदेश के स्वतन्त्रता संग्राम का संचालन किया, वह गौरवशाली कहानी व्यास जी पर भी चरितार्थ हुई । वार-वार मारवाड़ राज्य से निर्वासित रहकर व्यावर, अजमेर, दिल्ली और वम्वई आदि से उन्होंने मारवाड़ प्रजा मण्डल तथा मारवाड़ लोक परिषद् के जन-आन्दोलन का नेतृत्व एवं संचालन किया और उसको सफलता की चोटी पर पहुंचाया । पहली वार उनको राजद्रोह के अपराध में छह वर्ष व जुर्माने की सज़ा हुई और जेल जीवन का यह क्रम कुछ ऐसा चला कि उनका एक पैर सदा जेल में ही वना रहा । कुल मिलाकर १९४६ तक उन्होंने पांच वार जेल यात्रा की। ऐसा भी प्रसंग आया, जव उनका एक भी साथी जेल से वाहर न रह सका ।

यहां उनकी १९३२ की अजमेर जेल की आपवीती का उल्लेख करना अप्रासंगिक न होगा । वह उनकी दूसरी जेलयात्रा थी और पूरा एक वर्ष उन्होंने जेल में काटा था । उनके अनेक संगी-साथियों ने इस जेलयात्रा की अपनी अनुभूतिपूर्ण स्मृतियों में चर्चा की है । फिर भी उसका कुछ उल्लेख उनके अपने शब्दों में करना आवश्यक है। व्यास जी ने लिखा कि "६ जनवरी, १९३२ को अजमेर में श्री हरिभाऊजी उपाध्यायसहित तीन और व्यावर में श्री घीसूलाल जाजोदिया, स्वामी कुमारानन्द और मेरे सहित सात व्यक्ति गिरफ्तार हुए। इससे कुछ ही दिन पहले व्यावर के एक्स्ट्रा एसिस्टेंट कमिश्नर ने मेरे और कुछ दूसरे साथियों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई करने के लिये एक रिपोर्ट की थी, लेकिन उस पर कार्रवाई न की जाकर हमको सविनय अवज्ञा भंग आन्दोलन का भागीदार समझ उसी के मातहत गिरफ्तार कर लिया गया। पूरे आन्दोलन को मध्य भारत तथा राजपूताना के राज्यों के कार्यकर्त्ताओं का सहयोग प्राप्त था। जोधपुर के कार्यकर्त्ता व्यावर आये। इस तरह हम जो जोधपुर तक ही सीमित थे अव अखिल भारतीय आन्दोलन के

हिस्सेदार वन गये। हम सवको १० सेर गेहूं या १५ सेर चने प्रतिदिन पीसने का काम सौंपा गया। मैंने एक महीना चक्कीखाने में विताया।

"कुछ दिनों के वाद मुझे वावा नरसिंहदास आदि 'ए' श्रेणी वालों के रसोइए के रूप में रखा गया, श्री हरिभाऊ उपाध्याय आदि प्रथम श्रेणी के अलग वार्ड में रखे गये। मैंने काम करना ज़रूर मंजूर किया, लेकिन उनके साथ प्रथम श्रेणी की खुराक लेना मंजूर नहीं किया। वावाजी व अन्य साथी जो 'ए' क्लास में थे उनको मेरा 'सी' क्लास में खाना अच्छा नहीं लगा। करीव एक सप्ताह तक हम उनके और मेरे भोजन को मिलाकर साथ खाते थे, और वह इस शर्त पर, कि मैं एक सप्ताह के वाद प्रथम श्रेणी का भोजन नहीं करूंगा। अजमेर जेल के दौरान में मुझे दस-ग्यारह दिन तक भूख-हड़ताल करनी पड़ी और दो दिन तक मुझे पानी भी नहीं दिया गया। इसका कारण यह था कि जो अधिकारी जेल के वार्डों का निरीक्षण करता था, अन्य कैदियों की तरह राजनीतिक कैदियों को भी उसे सलामी देने के लिये वाध्य किया जाता था, उन्होंने वैसा करने से इनकार कर दिया। एक दिन जेलर एक वार्ड में गया और कुछ लड़कों को गालियां देने लगा। उन्होंने चूंकि उसका कहना नहीं माना, वे पीटे गये। दूसरे दिन एक चौकीदार ने मुझसे भी गाली-गलौज किया और मुझको इस वात के लिये जेलर के सामने जाना पड़ा। मैंने यह मांग की कि चौकीदार क्षमा मांगे लेकिन उसने क्षमा नहीं मांगी। मैंने यह घोपणा की कि यदि वह क्षमा याचना नहीं करेगा तो मुझे भूख हड़ताल करनी होगी और इसके परिणामस्वरूप मुझे एक एकांत कोने में भेज दिया गया। कई जेल के साथियों ने इसका विरोध किया। उनमें से कुछ और कैदियों ने भी भूख हड़ताल शुरू कर दी। जेल में वन्द छोटे लड़कों को डराना आसान समझकर उन्होंने उनको नंगा कर उनके चूतड़ों पर नौ-नौ वेंतें लगाईं, जो कि उन्होंने वड़ी हिम्मत से 'इन्कलाव जिन्दावाद' और 'भारत माता की जय' के नारे लगाते हुए हंसते-हंसते वर्दाश्त कर लीं।

"इससे जेलखाने के सभी कैदियों में प्रतिकूल प्रतिक्रिया हुई। रात-भर सव कैदी वही नारे लगाते रहे। अजमेर शहर में एक तहलका मच गया। भूख-हड़ताल में जिन लोगों ने हिस्सा लिया, उनमें सर्वश्री चुन्नीलाल, विहारीलाल, दुर्गाप्रसाद चौधरी, माणिकलाल, सदाशिव, नागनाथ, नारायणसिंह, प्यारचन्द, स्वामी कृष्णानन्द और स्वामी आत्मानन्द थे। उन्होंने चार दिन तक भूख हड़ताल की। वाद में उन्होंने मेरा तथा दूसरों का सन्देश पाकर हड़ताल तोड़ दी। दूसरे कैदियों ने भी लड़कों को पीटने के दिन उनकी सहानुभूति में एक दिन की हड़ताल रखी। उसमें महिला कैदी भी शामिल थीं। जेलर ने उनको एक दिन और भोजन नहीं देने के आदेश दिये और मुझे पानी देना भी वन्द कर दिया। मेरी भूख-हड़ताल के ग्यारहवें या वारहवें दिन जेलर मेरे वार्ड में आये। मुझसे मुंह जवानी मांफी मांगी, वे मुझे तव जनरल वार्ड में अन्य भूख-हड़तालिकों के पास ले गये। मैंने उनसे कहा कि जेलर ने मुझसे

क्षमा मांग ली है, इसलिए जो कदम हमने उठाया है उसे वापस ले लेना चाहिए। जेलर ने यह सोचा कि हमें दूसरे कैदियों से अलग कर देना चाहिए। हमको अलग-अलग पिंजरों में वन्द कर दिया गया। इस तरह की चार वैरकें थीं, जिनमें २०-२० पिंजड़े वने हुए थे। वहां दो ऐसे वार्ड भी थे जिनमें काल-कोठरियां थीं। हम सवको अलग-अलग उन पिंजड़ों और काल-कोठरियों में रखा गया। कुछ ही दिन तक हमें लम्बी जंजीर से भी वांधकर रखा गया।"

देशी राज्यों में उन दिनों का जेल-जीवन और भी अधिक कठोर था। व्यास जी ने तो १९३० से ही किलों की नज़रवन्दी भोगनी शुरू कर दी थी। किलों में मानवीय सुविधा का नितान्त अभाव था और जोधपुर सेन्ट्रल जेल में भी मानवीय सुविधाएं उपलब्ध न थीं। प्रायः सभी जेल यात्राओं अथवा किलों की नज़रवन्दी में व्यास जी को भूख-हड़ताल करनी पड़ी। १९४२ के आन्दोलन में नागौर किले में उनकी पीठ में कुछ ऐसा दर्द उठ खड़ा हुआ था कि किसी दवा-दारू के अभाव में वह गरम रेत पर लेटकर पीठ को सेंका करते थे और उनके एक-मात्र नज़रवन्द साथी सन्त लाडाराम जी जंगली जड़ी-वूटियां जुटाकर उनका उप-चार करने में लगे रहते थे। वे भीषण यातनाएं व्रिटिश भारत की जेलों की यात-नाओं से भी कहीं अधिक कठोर थीं। उनको सहन करना व्यास जी का तो स्वभाव ही वन गया।

पांच मोर्चों का सामना

वस्तुतः व्यास जी को अपने राजनीतिक जीवन में एकसाथ मुख्यतः पांच मोर्चों का सामना करना पड़ा। पहला मोर्चा था सामन्ती तत्त्वों का, जिसमें जागीर-दार, उनके छुटभैये और देशी नरेश सव शामिल थे, दूसरा था उन निहित स्वार्थों का, जो देशी राज्यों में अपनी जड़ें जमाये हुए थे, तीसरा था अंग्रेज़ सरकार के उस पोलिटिकल विभाग का, जो सामन्तशाही का अंधा पोषक था, चौथा था उन प्रति-क्रियावादियों का जो सामन्तशाही के हस्तक थे और पांचवां था, कांग्रेस के उन नेताओं का, जो देशी राज्यों में किसी भी प्रकार के आन्दोलन के पक्ष में नहीं थे। इस दृष्टि से उनकी स्थिति उस वीर अभिमन्यु के समान थी, जिसको चक्रव्यूह भेदने के लिये कौरव दल के समस्त महारथियों का एकाकी सामना करना पड़ा था। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के वाद भी राजनीतिक क्षेत्र में उनको जिन मोर्चों से लोहा लेना पड़ा, वे थे लौहपुरुष सरदार पटेल के प्रकोप और राष्ट्रनायक पं० जवाहरलाल नेहरू के विरोध के। अंतिम मोर्चे के लिये तो वह कांग्रेस हाईकमान के ही व्रिरोध में खम ठोककर खड़े हो गये थे। उपराष्ट्रपति डा० जाकिरहुसैन ने इस स्थिति का एक सुन्दर चित्र उपस्थित किया है।

देशी राज्यों की दमघोटू स्थिति

उन दिनों में देशी राज्यों में जिस दमघोटू वातावरण में कार्यकर्त्ताओं को काम

करना पड़ता था, उसका कुछ परिचय देने के लिये यहां बतौर उदाहरण के केवल तीन राज्यों का उल्लेख किया जा रहा है। इन तीनों का सम्बन्ध व्यास जी के उस समय के सार्वजनिक जीवन के साथ है। यह भी कहा जा सकता है कि इन राज्यों के कटु अनुभव के साथ व्यासजी की देशी राज्यों की व्यापक जनसेवा का महान् कार्य प्रारम्भ हुआ। जोधपुर राज्य में उन्होंने अपने को उस पक्षी की तरह अनुभव किया, जो उड़ने के लिये अपने पंख फड़फड़ाता है और पिंजड़े से टकराकर रह जाता है। तब उसको अपनी बेबसी का पता चलता है। उनकी उन दिनों की स्थिति को उस व्यक्ति से भी उपमा दी जा सकती है, जो अपने हृदय में जीवन-जागृति का संचार होने पर सहसा ही उठ खड़ा होता है और प्रगति के पथ पर पैर बढ़ाते ही यह देख चकित रह जाता है कि उसकी स्थिति उस बन्दी के समान है, जिसको ऊंची तंग दीवारों में बन्द कर दिया गया है। जोधपुर राज्य का लोकजीवन चारों ही ओर से दमनकारी कानूनों से जकड़ा था, मारवाड़-सेवा-संघ और मारवाड़ हितकारिणी सभा ने समय-समय पर १९२७ तक जिन स्थानीय आन्दोलनों को अपने हाथ में लिया, उनमें अप्रत्याशित सफलता प्राप्त होने पर भी उनके सम्मुख कोई ऐसा स्पष्ट राजनीतिक ध्येय न था, जिसके कारण तत्कालीन स्वेच्छाचारिता-पूर्ण एकतन्त्री सामन्तशाही पर कुछ आंच आती। परन्तु जब ऐसी परिस्थिति पैदा हुई, तब आंखें खोलते ही व्यास जी तथा उनके साथियों ने देखा कि उनके हाथ-पैर किस बुरी तरह दमनकारी कानूनों में जकड़े थे और उनके चारों ओर राजनीतिक दृष्टि से कैसा दमघोटू वातावरण विद्यमान् था। नागरिक जीवन और नागरिक अधिकारों का बड़ी निर्दयता से ऐसा दमन किया गया था कि आज उसको सुनकर उस पर विश्वास कर सकना भी कठिन है। १९०९ में मारवाड़ राजद्रोह कानून ज़ारी किया गया था। इस कानून के अनुसार राज्य में अशान्ति तथा असन्तोष पैदा करनेवालों को आजीवन कैद की सजा दी जा सकती थी। १९२२ में मारवाड़ प्रेस कानून ज़ारी किया गया था। इससे राजनीति से सम्बन्धित किसी भी पुस्तक व पैम्फलेट आदि को सरकारी आज्ञा के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता था। १९२३ में टाइपराइटर कानून ज़ारी किया गया था, जिससे टाइपराइटर को भी वैसे ही रजिस्टर्ड करवाना आवश्यक था, जैसे कि कभी अंग्रेजी राज्य में प्रेसों के लिए डिक्लेरेशन लेने पड़ते थे। इसी कानून के अनुसार सभी दरख्वास्तों पर, चाहे वे हाथ की लिखी हों या टाइप की हों, आवेदक, लेखक और वकील के हस्ताक्षर पूरे पते के साथ लिखे जाने अनिवार्य थे, साइक्लोस्टाइल पर भी प्रेस एक्ट लागू था। कानपुर के 'प्रताप' लाहौर के 'ज़मींदार' तथा दिल्ली के 'हकूमत' एवं 'वकील' आदि पत्रों का राज्य में प्रवेश निषिद्ध था। उन्हीं दिनों में जिनको राज्य से निर्वासित किया गया था और जिनको दस नम्बरी ठहराकर रात को पुलिस थाने में सोने के हुक्म दिये गये थे, उनके सम्बन्ध में भी मनमाने आदेश ज़ारी किये गये थे।

कौंसिल और महाराजा के नाम से राज्य में पूर्णतः स्वेच्छाचारिता छाई हुई थी। उसके विरुद्ध व्यास जी को १९२७ से १९४५ तक निरन्तर जूझना पड़ा और लंबा संघर्ष ज़ारी रखना पड़ा।

बीकानेर की स्थिति

बीकानेर राज्य की स्थिति जोधपुर राज्य से भी कहीं अधिक दमघोटू थी। १९३३ में अजमेर जेल में एक वर्ष की सज़ा काटने के वाद रिहा होते ही तुरन्त व्यास जी को उसके साथ लोहा लेने को वाध्य होना पड़ा। १९२७ में वम्वई में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् के वार्षिक अधिवेशन में व्यास जी को उसकी राजपूताना शाखा का मंत्री नियुक्त किया गया था और तभी से उन्होंने राजपूताना के समस्त देशी राज्यों के प्रति अपने कर्तव्य को निभाना शुरू कर दिया था। राजस्थान के अनेक राज्यों में परिषद् के कुछ सदस्य वनाये गये थे। वीकानेर के स्वामी गोपालदास जी, श्री खूवराम जी सराफ और श्री सत्यनारायण जी सराफ आदि ने बड़े उत्साह से इस काम में उनका हाथ वटाया था। इस कारण जेल से वाहर आते ही उनकी दृष्टि एकाएक वीकानेर की ओर जानी स्वाभाविक थी। वहां १९३२ की १४ जनवरी को वीकानेर राज्य के फौजदारी कानून की धारा १२० वी, १२४ ए तथा ३७७ सी के मातहत भादरा के श्री खूवराम जी सराफ तथा श्री सत्यनारायण जी सराफ, चूरू के स्वामी गोपालदास जी तथा श्री चन्दनमल जी वहड़ और श्री वद्रीप्रसाद जी, श्री प्यारेलाल जी व सोहनलाल जी पर संगीन मुकदमे चलाये गये थे। मुकदमे के दायर करने का मुख्य कारण यह था कि वीकानेर महाराजा गंगासिंह जी दूसरे गोलमेज सम्मेलन में शामिल होने के लिये जव लन्दन गये थे, तव अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् का एक विशेष शिष्टमण्डल भी लन्दन इस हेतु भेजा गया था कि वह राजाओं के मुकावले में जनता के दृष्टिकोण को सम्मेलन के सदस्यों के सम्मुख उपस्थित करे। 'जन्मभूमि' के यशस्वी सम्पादक श्री अमृतलाल सेठ, सौराष्ट्र के सुप्रसिद्ध वैरिस्टर श्री चूड़गर और पूना के प्रो० अभ्यंकर उस शिष्टमंडल में शामिल थे। उन्होंने वीकानेर और भोपाल राज्यों के सम्बन्ध में विशेष पैम्फलेट तैयार किये थे। महात्मा गांधी के परामर्श पर भोपाल सम्बन्धी पैम्फलेट को तो प्रकाशित नहीं किया गया; किन्तु वीकानेर सम्वन्धी पैम्फलेट को साइक्लोस्टाइल करके सम्मेलन के सदस्यों में वांटा गया। गोलमेज सम्मेलन के अध्यक्ष लार्ड सेंकी ने वह पैम्फलेट महाराजा गंगासिंह जी के सामने ठीक उस समय उपस्थित किया, जव वे देशी राज्यों के भारतीय संघ में शामिल होने की व्रिटिश सरकार की योजना के समर्थन और निजाम हैदरावाद के दीवान सर अकवर हैदरी के विरोध में जोशीला भाषण दे रहे थे। उसपर उन्होंने यह भी लिख दिया कि "वीकानेर महाराजा को इसका जवाव देना चाहिए।" उस पैम्फलेट में वीकानेर राज्य के शासन की तीव्र आलोचना देखकर महाराजा आपे से

बाहर हो गये और लन्दन से लौटते न लौटते उन्होंने इस संगीन मुकदमे की भूमिका तैयार कर ली। मुकदमे की प्रारम्भिक कार्रवाई एडिशनल डिस्ट्रिक्ट जज श्री वी० के० चतुर्वेदी की अदालत में हुई और बीकानेर हाईकोर्ट के जज रायबहादुर डी० एन० नानावटी की विशेष अदालत में उसका १५ जनवरी, १६३४ को अन्तिम पटा-क्षेप हुआ। इस अदालत की नियुक्ति विशेष रूप से सेशन अदालत के रूप में की गई थी। ६ मास से ५ वर्ष तक की सजाएं अभियुक्तों को दी गई। सेशन जज श्री नाना-वटी ने अढ़ाई सौ पृष्ठों में अपना फैसला लिखा था। राज्य के दमघोटू वातावरण की कुछ जानकारी नीचे की अदालत और सेशन अदालत के फैसलों से मिलती है। नीचे की अदालत के फैसले में कहा गया था कि "बीकानेर महाराजा और उनकी सरकार के विरुद्ध अभियुक्तों की राजद्रोही प्रवृत्तियों के लिये उनपर मुकदमा चलाया गया।" अभियुक्तों की जिन प्रवृत्तियों को राज्य के लिये 'खतरनाक' बताया गया था, वे विस्मयजनक थीं। चूरू में १६३० में राष्ट्रीय झंडे का फहराया जाना भी उनकी एक खतरनाक प्रवृत्ति बताई गई थी और वहां के एक बदनाम महन्त को मन्दिर से हटाकर उसको सार्वजनिक रूप देना भी खतरनाक ठहराया गया था। अजमेर से प्रकाशित 'त्यागभूमि' पत्र में राज्य के बजट पर जो एक विहं-गम दृष्टि डाली गई थी, उसको भयावह बताते हुए अभियुक्तों पर उसका उत्तर-दायित्व डाला गया था। बीकानेर के सम्बन्ध में अन्य समाचार-पत्रों में प्रकाशित लेखों व समाचारों को अभियुक्तों का षड्यंत्र कहा गया था। लन्दन में बांटे गये पेम्फलेट का उल्लेख करते हुए फैसले में कहा गया था कि "अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् एक क्रान्तिकारी संगठन है, जो कि राजाओं के खिलाफ और विशेषकर बीकानेर महाराजा के विरुद्ध भयंकर प्रचार कर रहा है।" उसके लिये भी अभियुक्त ही दोषी बताये गये थे। देशी राज्यों की जनता को नागरिक अधिकार और विधानसभाओं में प्रतिनिधित्व प्रदान करने आदि के सम्बन्ध में जो स्मरण-पत्र अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को दिया गया था, उसके बारे में फैसले में लिखा गया था कि श्री जयनारायण व्यास और भादरा के श्री खूबराम जी सराफ ने जो १२०० हस्ताक्षर उस पर लिये थे, उनमें बहुत से जाली थे और लोगों को बहका-कर जबरदस्ती लिये गये थे। उस स्मरण-पत्र द्वारा कांग्रेस की सहानुभूति और नैतिक बल प्राप्त करने का उद्देश्य यह बताया गया था कि कांग्रेस भी देशी नरेशों की वैधानिक सत्ता को नष्ट करना चाहती है। १० मार्च, १६३२ को नीचे की अदालत ने अभियुक्तों को दोषी ठहराकर मामला सेशन अदालत के सुपुर्द कर दिया था। सेशन अदालत में बाहर के वकील करने की अनुमति नहीं दी गई थी। इस कारण अभियुक्तों ने उसकी कार्रवाई में कोई हिस्सा नहीं लिया। सेशन जज की अदालत जेल के अहाते में ही कायम की गई थी। मानो, यह मुकदमा भी लाहौर में अमर शहीद सरदार भगतसिंह तथा उनके साथियों पर चलाये गये षडयंत्र के

मुकदमे के ही समान भयानक था। वह भी वहां की वोस्टल जेल में ही बनाई गई विशेष अदालत में चलाया गया था। लाहौर के उस मुकदमे का नाटक बीकानेर जेल में इस मुकदमे में रचा गया।

व्यास जी ने इस मुकदमे और उसके अभियुक्तों पर की जाने वाली सख्तियों के सम्बन्ध में जो कुछ किया, उसका उल्लेख मुकदमे के प्रमुख अभियुक्त श्री सत्यनारायण सराफ एडवोकेट ने अपने संस्मरण में किया है। व्यास जी स्वयं वहां गये। 'प्रजासेवक' के यशस्वी सम्पादक श्री अचलेश्वरप्रसाद जी शर्मा को विशेष संवाददाता नियुक्त करके वहां भेजा। शर्मा जी की मनोरंजक आपबीती उनके संस्मरणों में पाठक पढ़ेंगे। नागोर के अपने पुराने विश्वस्त साथी श्री शिवदयाल दवे को भी मुकदमे की देखरेख करने के लिये बीकानेर भेजा। श्री दवे जी ने वहां रहने के लिये बाबू मुक्ताप्रसाद जी वकील के मुंशी का छद्म रूप धारण किया और मुकदमे के दौरान में वह बीकानेर ही रहे। बीकानेर की जन-जागृति का श्री मुक्ताप्रसाद जी वकील को 'पितामह' कहना चाहिए। वह अत्यन्त साहसी, निर्भीक और स्पष्टवादी लोकनेता थे। सदा राज्य की आंखों में खटकते रहते थे। फैसला होते ही श्री शिवदयाल दवे को राज्य से निर्वासित कर दिया गया और कुछ समय बाद बाबू मुक्ताप्रसाद जी भी राज्य से निर्वासित कर दिये गये। अभियुक्तों, विशेषतः श्री खूबराम जी सराफ, स्वामी गोपालदास जी और श्री सत्यनारायण जी सराफ पर राज्य की वक्र दृष्टि इसलिए थी कि उन्होंने लोकनायक श्री जयनारायण व्यास का साथ देकर राज्य में स्थान-स्थान पर अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् के सदस्य बनाये थे और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को दिये गये स्मरणपत्र पर हस्ताक्षर करवाये। लन्दन में जो पैम्फलेट बांटा गया था, उसके लिये आवश्यक सामग्री व्यास जी ने अपने इन साथियों से जुटाई थी, और राजपूताना शाखा के मन्त्री के नाते अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् के प्रधानमन्त्री श्री अमृतलाल सेठ को भेजी थी। बीकानेर महाराजा तो अपने राज्य में एक पत्ते का भी हिलना सहन नहीं कर सकते थे, उनको ये 'भयावह' अथवा 'खतरनाक' प्रवृत्तियां कैसे सहन हो सकती थीं। यह मुकदमा बीकानेर राज्य की तत्कालीन दमघोंटू स्थिति पर पर्याप्त प्रकाश डालता है।

लोहारू गोलीकांड

लोहारू के सिघानी तथा आसपास के अन्य गांवों में १९३५ के अगस्त मास में निर्मम, नृशंस एवं हृदयहीन गोलीकांड व हत्याकांड आदि के जो भीषण कांड हुए, उन सरीखा दूसरा उदाहरण देशी राज्यों की जन-जागृति के इतिहास में मिलना दुर्लभ है। वह इस बात का द्योतक था कि देशी राज्यों में उन दिनों में मानव-जीवन को कैसा तुच्छ समझा जाता था और उस पर भीषण से भीषण अत्याचार कुछ भी बहाना बनाकर किये जा सकते थे। ऊंट टैक्स को उस गोलीकांड व हत्याकांड का

वहाना वनाया गया था। ३० जुलाई, १६३५ को नवाव ने अपने कुछ आदमियों को चेहड़कलां में ऊंट टैक्स वसूल करने के लिये भेजा। उन्होंने रिपोर्ट की कि लोग टैक्स देने को तैयार नहीं हैं। हालांकि लोगों ने टैक्स अदा करने के लिये कुछ मोहलत ही मांगी थी। इस जरा-सी वात पर नवाव ने अंग्रेज सरकार से फौज मंगा ली। चेहड़कलां में ए० जी० जी० के आगमन और उनके सामने अपनी शिकायतें पेश करने की अफवाह फैलाकर लोगों की एक वड़ी भीड़ जमा की गई। परन्तु ए० जी० जी० को यह वताया गया कि वह भीड़ विद्रोह करने के लिये जमा हुई है। उनके घरों से प्राप्त की गई लाठियों को उस विद्रोह के चिह्न के रूप में पेश किया गया। लोगों ने वे लाठियां इसलिए घरों में जमा कर दी थीं कि उन्होंने ए० जी० जी० के सामने लाठियों के साथ आना उनके सम्मान के प्रतिकूल समझा। उपस्थित लोगोंने ए० जी० जी० के मार्ग में भीड़ न जमा होने देने के लिये यह आवश्यक समझा कि जो जहां वैठा है, वहां ही शान्तभाव से वैठा रहे। नवाव ने इसको लोगों का ओछापन और अपमानजनक रवैया वताया। कुछ लोगों को वुलाकर गिरफ्तार कर लिया गया। जमा भीड़ पर वुरी तरह लाठी वर्षा की गई और ज़ंगल में धकेल दिया गया। गांव में घुसकर मन्दिर तोड़ा गया, स्त्रियों पर वलात्कार किया गया और गांव में घर-घर में लूट-खसोट मचाई गई। रात्रि-भर नवाव के कैम्प में विजय महोत्सव मनाकर नाच-गान व रंग-रेलियां की गईं। मानो गांव पर कोई वहुत वड़ी विजय हासिल की गई थी। दूसरे दिन ७ अगस्त को मंडोली, कसनी और गोकुलपुरा के गांवों में भी उसी प्रकार लूट-खसोट की गई। ८ अगस्त, को सिंघानी गांव पर वन्दूकोंसे लैस होकर चढ़ाई की गई। लोगों को हमलावर वताकर गोली चला दी गई। मृतकों व घायलों को वहां ही छोड़ आक्रमणकारी डाकुओं की तरह भाग खड़े हुए। वह गोलीकांड नितान्त पाशविक, निर्मम और सर्वथा अनावश्यक था। नवाव के कथन के अनुसार उस गोलीकांड में तीन हत्याएं हुईं और पैंतीस घायल हुए। परन्तु चौधरी छोटूराम जी ने यह वयान प्रकाशित किया था, "हमने जो गवाहियां दर्ज कीं, उनके अनुसार १७ जाट, २ खत्री, १ धाकड़ और २ अग्रवालों की गोलीकांड में मृत्यु हुई।" इस सारे कांड की व्यास जी ने स्वयं ही जांच की थी। उसके सम्वन्ध में व्यास जी ने लिखा था कि "तव पंडित नेकीराम जी और मैं भिवानी गये जहां कि मैंने उन १५ व्यक्तियों को देखा जो गोलीकांड में घायल हुए थे। उनमें १३ जाट और २ ब्राह्मण थे। मुझे वताया गया कि अगस्त १६३५ को सिंघानी में करीव-करीव २ दर्जन व्यक्ति गोली से मार दिये गये। मैं तव व्रिटिश पंजाव के एक गांव के लिये रवाना हुआ। लेकिन मुझे अपने लिवास को वदल लेना पड़ा। मैंने एक जाट की तरह के कपड़े पहन लिये और 'झूटा' स्टेशन पर उतर गया जहां से मुझे वीकानेर और लोहारू से घिरे हुए व्रिटिश भारत के एक गांव में ले जाया गया। मैं वहां करीवन २०० व्यक्तियों से मिला और उनकी गवाहियां लीं। उसके

वाद वहां से आधी रात को मैं अचानक खिसक आया। मैं रेल में बैठ गया और मुसलमानी कपड़े पहन लिये। कागजात मेरे रवाना होने से पूर्व ही भेज दिये गये। और लाला हरदेव सहाय द्वारा चलाये जाने वाले आश्रम में मुझको सुरक्षित मिल गये।"

बम्बई के 'सूकानी' नाम के गुजराती पत्र के सम्पादक श्री मोहनलाल मेहता उन दिनों में दैनिक 'जन्मभूमि' के सम्पादकीय विभाग में काम करते थे और व्यास जी के अत्यन्त निकट के सहवासी थे। उन्होंने अपने संस्मरण में लोहारू कांड की चर्चा करते हुए दैनिक 'जन्मभूमि' के रजत-जयन्ती अंक में से उस लेख के कुछ महत्त्वपूर्ण अंश उद्धृत किये हैं, जो व्यास जी ने अपने पत्रकार जीवन के सम्बन्ध में लिखे थे। वे उद्धरण उनके साहस, धीरता व वीरता के द्योतक हैं।

जोधपुर, बीकानेर और लोहारू राज्यों की उन दिनों की इस विस्तृत चर्चा से सहज में यह जाना जा सकता है कि देशी राज्यों में कैसा घोर अंधकार और कैसा दमघोटू वातावरण छाया हुआ था। व्यास जी ने उस अंधकार और दमघोटू वातावरण में जिस साहस, धैर्य और सूझ-बूझ से अपने मार्ग का निर्माण किया, उसकी कल्पना कर सकना इन पंक्तियों के पाठकों के लिये कठिन नहीं होना चाहिए। देश में सर्वत्र फैले हुए लगभग ६०० राज्यों की कम-अधिक प्रायः ऐसी ही स्थिति थी। उसका सामना करते हुए व्यास जी ने अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् को देशी राज्यों की जनता के लिये कांग्रेस सरीखी महत्त्वशाली संस्था बना दिया था। १९२७ में व्यास जी उसकी राजपूताना शाखा के मन्त्री नियुक्त किये गये थे। १९२८ में उसकी कार्य-समिति के सदस्य और १९३६ में उसके मन्त्री नियुक्त किये गये। महात्मा गांधी, राष्ट्रनायक पं० जवाहरलाल नेहरू, नेताजी सुभाष-चन्द्र बोस, 'लीडर' सम्पादक पत्रकार शिरोमणि श्री सी० वाई चिन्तामणि और डा० पट्टाभि सीतारमैया सरीखों की सहानुभूति और सहयोग परिषद् के माध्यम से देशी राज्यों की जनता के लिये प्राप्त करना व्यास जी के ही प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं अध्यवसाय का परिणाम था।

पुष्कर सम्मेलन में गुंडों का उत्पात

इसी प्रसंग में पुष्कर में आयोजित राजपूताना मध्यभारत राजनीतिक सम्मेलन का उल्लेख करना आवश्यक है। उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उन दिनों में देशी राज्यों के भाड़े के टट्टू किस प्रकार राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं पर कमीने आक्रमण किया करते थे, इसको स्पष्ट करने के लिये यहां व्यासजी की ही आपबीती का उल्लेख पर्याप्त होना चाहिए। १९३१ में बाबा नरसिंहदास जी के एकाकी प्रयत्न से पुष्कर के मेले पर राजपूताना मध्य भारत राजनीतिक सम्मेलन का विराट् आयोजन श्रीमती कस्तूरबा गांधी की अध्यक्षता में किया गया था। सम्मेलन बड़ा सफल रहा। उसी के साथ जोधपुर राज्य के लोगों का भी एक सम्मेलन किया

गया। उसका वर्णन व्यास जी ने इन शब्दों में किया था, "श्री जीतमल लूणिया स्वागत-समिति के अध्यक्ष थे और अजमेर के श्री चांदकरण शारदा ने अध्यक्षता की। काफी प्रतिनिधियों ने उस सम्मेलन में भाग लिया। विघ्नकारियों की पार्टी प्रतिनिधि वनकर सम्मेलन के काम में अड़चन पैदा करने के लिये भेजी गई। हकीम निसार अहमद इस पार्टी का नेता था जिसको कि राज्य के गुप्तफंड से आर्थिक मदद दी गई थी।"

श्री जीतमल लूणिया ने अपने भाषण में खादी के प्रचार के लिये निकाली जानेवाली प्रभात फेरियों पर पावन्दी का जिक्र किया और पुलिस के इन्स्पेक्टर ने जो आदेश दिया था उसके कुछ अंश उद्धृत किये, वे ये थे : "श्री फतहराज ने पिछली १०-५-३१ की सभा में यह वात प्रस्तावित की थी कि संगठन के स्वयंसेवक गली-गली जाएंगे और लोगों को हाथ कती खादी काम में लाने के लिये निवेदन करेंगे, यह वात सभा ने पास की। यह मामला राज्य परिषद् के उपाध्यक्ष के सामने आया, जिन्होंने कि ऐसे प्रदर्शन को रोकने के लिये आदेश जारी किये।" उन्होंने १९१९ के प्रेस एक्ट का भी हवाला दिया और राज्यों के, विशेषकर जोधपुर राज्य के मामलों का जिक्र किया।

श्री चांदकरण शारदा ने जव अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए नागरिक अधिकारों की वात कही तो श्री निसार अहमद खड़े हो गये और चिल्लाये, "यह विल्कुल झूठ है, आप झूठे हैं।" उनके वे शब्द अपने लोगों को हमला करने के लिये यह एक इशारा था। एक चारण ने जो कि सोजत जिले का रहनेवाला था, एक गैस को तोड़ डाला। उसका कांच का एक टुकड़ा माता कस्तूरवा गांधी के पास गिरा। मैं माता कस्तूरवा के पास वैठा था, फौरन कूदा और उस आदमी को रोका। इसपर उसके गैंग के लोग मुझपर टूट पड़े। मुझको खूव पीटा गया। स्वयंसेवकों ने जिनके हाथों में लाठियां थीं, उसको तथा उसके साथियों को अच्छी तरह पीटा। वे पंडाल छोड़कर भाग गये। वह व्यक्ति जिसने कि गैस को तोड़ा था, मेरा सिर चकनाचूर कर देना चाहता था लेकिन सफल इसलिए नहीं हो सका कि मैंने उसके हाथ की लाठी को जोरों से पकड़ लिया और जकड़ लिया। इसी वीच स्वयंसेवकों ने उस पर चारों ओर से खूव हमला किया। मुझे थोड़ी-सी कठिनाई हुई। फिर भी, मैंने उसे वाहर धकेल दिया। जव मैं वाहर से लौटा तो मैंने देखा कि जोधपुर के एक सी० आई० डी० को पीटा जा रहा था। कुछ कार्यकर्त्ताओं ने सभा की कार्रवाई नोट करते हुए उसे देख लिया था। वह जोर से चिल्लाया "व्यास जी, मुझे वचाओ मैं तुम्हारी गाय हूं।" मैंने उसको अपने नीचे ले लिया और वचा लिया। वैसा करने पर मुझे भी लाठियों की चोटें खानी पड़ीं। मेरे द्वारा की गई सुरक्षा की व्यवस्था में उसे वाहर पहुंचा दिया गया। इस सव कार्य में मुश्किल से १५ मिनट लगे होंगे और सभा की कार्रवाई फिर से चालू हो गई।

कस्तूरबा ने मेरे शरीर पर पड़ी लकड़ी की उन चोटों को देखा और सहानुभूति प्रदर्शित की। श्री वी० एस० देशपांडे ने सभा के बाद मुझे मेरे कैम्प पर नहीं जाने दिया। वे मुझे खादी प्रदर्शनी वाले स्थान पर ले गये जिसके कि वे इंचार्ज थे! दूसरे दिन सवेरे निसार अहमद और उसके साथी पुष्कर से चले गये। अजमेर पुलिस के अब्दुल कादिम नामक एक पुलिस इन्स्पेक्टर मुझे मिले। उन्होंने उन लोगों के प्रति गुस्सा ज़ाहिर करते हुए कहा, "वे जोधपुर के गुंडे थे, जिनको जोधपुर सरकार ने भेजा था।"

राज्य का कायाकल्प

इन सब विघ्न-बाधाओं और कठोरतम विषम परिस्थितियों का १६२० से १६४५ तक चौथाई सदी सामना करते हुए व्यास जी अन्त में ऐसे सफल हुए कि मारवाड़ राज्य के प्रधानमंत्री के पद पर प्रतिष्ठित किये गये। उनकी वह व्यक्तिगत सफलता नहीं थी, प्रत्युत प्रतीक थी उस परिवर्तन की, जिसका सूत्रपात सभी देशी राज्यों में बड़ी तेज़ी से हो रहा था। उनका शासनकाल लम्बा न चल सका; फिर भी सीमित अवधि में उन्होंने मारवाड़ राज्य का कायाकल्प ही कर डाला। राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष श्री रामनिवास जी मिर्धा ने स्वीकार किया है कि उस अवधि में जो कुछ उन्होंने कर दिखाया वह राजस्थान संघ के निर्माण के बाद पन्द्रह वर्षों में भी नहीं किया जा सका। उन्होंने दिखा दिया कि यदि वे आन्दोलनकर्त्ता और विरोधी नेता का पार्ट पूरी निर्भयता से अदाकर सकते थे तो शासनसूत्र हाथ में सम्हालने पर रचनात्मक दृष्टि से सफल शासक का पार्ट अदा करने में भी उनको कमाल हासिल था।

मारवाड़ अथवा जोधपुर राज्य राजस्थान का क्षेत्रफल तथा जनसंख्या दोनों ही दृष्टियों से प्रमुख राज्य था। जागीरों में विभक्त होने के कारण देहातों में कोई वैधानिक शासन-व्यवस्था नहीं थी। जागीरदारों को न्याय, पुलिस व माल सम्बन्धी जो अधिकार प्राप्त थे, उनका मनमाना दुरुपयोग किया जाता था और जनता को उत्पीड़न व शोषण की चक्की में बुरी तरह पीसा जाता था। व्यास जी ने सम्पूर्ण राज्य को ज़िलों में बांटकर वैधानिक शासन-व्यवस्था का सूत्रपात किया। शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी कदम उठाये। जनस्वास्थ्य विभाग को सुसंगठित किया। जोधपुर शहर का भी कायाकल्प कर डाला। सीमित अवधि में जो कुछ भी वे कर सके, उसमें कुछ बाकी न रखा। यह भुलाया नहीं जाना चाहिये कि राजपूत वर्ग में यह दुर्भावना पैदा कर दी गई थी कि शासनसूत्र उनके हाथों से निकलकर अवांछनीय लोगों के हाथों में जा रहे हैं। इसीलिए राजपूतों ने उनके शासन का सम्मिलित रूप में बहिष्कार किया और उसको असफल बनाने के लिये सामुदायिक 'सत्याग्रह' तक करने की धमकियां दीं। एक बार तो ऐसी विषम परिस्थिति पैदा हो गई कि राज्य की पुलिस व फौज़ ने विद्रोह का-सा रूप धारण कर लिया और शासन-व्यवस्था

कायम रखने के लिये नीमच छावनी से विशेष फौज बुलानी पड़ी। वह संक्रमण काल व्यास जी के लिये अग्नि-परीक्षा का था, जिसमें वह और उनके साथी पूरी तरह सफल हुए।

व्यापक नेतृत्व

अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् के मंत्री के नाते उनको भारतव्यापी देशी राज्यों के जन-आन्दोलन के सफल नेतृत्व का गौरव प्राप्त हुआ। पहले अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् का कार्यक्षेत्र मुख्यतः दक्षिणी भारत और कुछ अंशों में गुजरात और सौराष्ट्र तक सीमित था। राजस्थान, मध्य भारत, पंजाब और हिमाचल आदि उत्तरी भारत के देशी राज्य कहीं अधिक पिछड़े थे और उनकी जनता कहीं अधिक दीन-हीन दशा में जीवन यापन कर रही थी। व्यास जी को परिषद् के तत्कालीन नेतृत्व का ध्यान उत्तरी भारत के देशी राज्यों और उनकी जनता की ओर आकर्षित करने के लिये कुछ संघर्ष भी मोल लेना पड़ा। परिषद् के नवसारी अधिवेशन में सफल होने के वाद जव उसकी वागडोर उनके हाथ आई, तव जिस व्यापक दृष्टिकोण से उन्होंने उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक फैले हुए लगभग ६०० राज्यों की जनता के अभाव अभियोग पर ध्यान दिया, वह विस्मयजनक था। छोटी से छोटी घटना भी उनके ध्यान से ओझल नहीं हो सकी। जैसलमेर के शहीद सागरमल गोपा, टिहरी के शहीद श्री देवसुमन, लोहारू के गोलीकाड, वीकानेर के षड्यन्त्र के मुकदमे, शेखावाटी के किसान आन्दोलन, भरतपुर के दमन, नाभा की प्रतिकूल परिस्थिति, हिमाचल के एक छोटे से राज्य धामी के गोलीकांड और छोटे-वड़े किसी भी राज्य में जो कुछ भी घटना घटी, वहां व्यास जी पहुंचे विना नहीं रहे। इसीलिए तो वे देशी राज्यों की समस्त जनता की आशाओं तथा आकांक्षाओं के केन्द्र वन गये थे। पाठक पहले पढ़ आये हैं कि लोहारू गोलीकांड की जांच के लिये वे वहां जाट के वेष में गये और मुसलमान के वेष में वहां से लौटे। वीकानेर में वहां के षड्यन्त्र के मुकदमे की देख-रेख के लिये नागौर के श्री शिवदयाल जी दवे को और झावुआ के षड्यन्त्र के मुकदमे की देखभाल के लिये उज्जैन के श्री गोपीवल्लभ जी उपाध्याय को वहां के वकीलों के मुंशी के छद्म वेष में नियुक्त किया। तव देशी राज्यों पर ऐसा लौह आवरण छाया हुआ था कि आकाश में स्वच्छन्द उड़नेवाले पक्षी भी उनमें झांक न सकते थे। परन्तु व्यास जी की पहुंच से वह वाहर न रह सके। ग्रन्थ के तीसरे खंड की अनुभूतिपूर्ण स्मृतियों में व्यास जी की उन दिनों की गतिविधि पर जो प्रकाश डाला गया है, वह विशेष महत्त्वपूर्ण है। हैदरावाद के वयोवृद्ध नेता स्वामी रामानन्द जी तीर्थ की इस सम्बन्ध में अनुभूति उल्लेखनीय है।

अपने सहकर्मियों के प्रति

यहां संक्षेप में व्यास जी की लोकप्रियता के रहस्य पर भी कुछ प्रकाश डालना

आवश्यक है। अपने संगी-साथियों और सहकर्मियों के प्रति उनका बन्धु भाव का जो व्यवहार रहा, वह उनकी लोकप्रियता का प्रमुख कारण था। १९४२ के मार्च मास में मारवाड़-लोक-परिषद् द्वारा उत्तरदायी शासन के लिये आन्दोलन शुरू करने पर व्यास जी जब अपने सब साथियों-सहित गिरफ्तार कर लिये गये, तब उत्तर प्रदेश के प्रमुख कांग्रेसी नेता बाबू श्रीप्रकाश जी को महात्मा गांधी ने जोधपुर की स्थिति का अध्ययन करने के लिये विशेष रूप से भेजा था। वे तब दो बार जोधपुर गये थे। पहली बार व्यास जी जेल में थे। दूसरी बार अगस्त मास में जब वे जोधपुर गये, तब उनके ही अतिथि हुए। उनके घर के वातावरण का बाबू श्रीप्रकाश जी पर ऐसा प्रभाव पड़ा था कि उसका उल्लेख उन्होंने अपने उन दिनों के संस्मरणों में विशेष रूप से किया था। उन्होंने लिखा था : "इस बार मैं श्री जयनारायण व्यास का अतिथि था। वे जेल से छूटकर आ गये थे। वहां के कार्यकर्त्ताओं में परस्पर बड़ा प्रेम देखा। सब लोग एक कुटुम्ब की तरह रहते थे। श्री जयनारायण व्यास की माता सबकी माता थीं। बड़ी साहसी स्त्री थीं और सबको देशसेवा के लिये प्रेरित करती थीं।"

राजस्थान व्यापी दृष्टिकोण अपना लेने के बाद व्यास जी के परिवार का दायरा भी राजस्थान व्यापी बन गया। राजस्थान का हर कार्यकर्त्ता अपने को उनके परिवार का वैसे ही सदस्य मानता था, जैसे मारवाड़ राज्य के कार्यकर्त्ता मानते थे। उनकी माता जी का मातृ-वात्सल्य सबको समान रूप में उपलब्ध था। माता जी के देहान्त के बाद उनके अभाव की पूर्ति, उनकी पत्नी ने की, जिन्हें सब कार्यकर्त्ता 'भौजी जी' कहकर आज तक पुकारते हैं। अपने संगी-साथियों और सहकर्मियों के प्रति ऐसा भाईचारा प्रायः दुर्लभ है। इसका लाभ न केवल व्यास जी को अपनी लोकप्रियता के रूप में मिला; प्रत्युत राजस्थान के जन-आन्दोलन को बलशाली तथा प्रभावशाली बनाने के लिये, सार्वजनिक रूप में कहीं अधिक मिला। राजस्थान के किसी दूसरे नेता का व्यक्तित्व वैसा व्यापक, लोकप्रिय एवं आकर्षक नहीं बन सका।

वर्तमान राजस्थान के मंत्रद्रष्टा

राजस्थान संघ अथवा वर्तमान राजस्थान का निर्माण राजनीतिक दृष्टि से स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद मत्स्य संघ, छोटा राजस्थान संघ, जयपुर, बीकानेर, उदयपुर आदि के कई क्रमों में से गुजरते हुए तब ३१ मार्च, १९४९ को हुआ, जब देशी राज्यों के विलीनीकरण की 'रक्तहीन क्रान्ति' पूर्ण हुई। निस्सन्देह इस 'रक्तहीन क्रान्ति' का श्रेय लौहपुरुष सरदार पटेल को प्राप्त है। परन्तु इस क्रान्ति के मन्त्रद्रष्टा थे लोकनायक जयनारायण व्यास। १९३२ की जेल-यात्रा में उन्होंने पहली बार वृहत् राजस्थान के दर्शन किये थे और तब उनके हृदय में यह भावना उपजी थी कि अलवर से ईडर तक का सारा क्षेत्र 'वृहत् राजस्थान' की ही एक इकाई है। भले

ही वह दो दर्जन राज्यों और हज़ारों जागीरों में क्यों न बंटा था। यह अनुभूति उनके हृदय में तब जागृत हुई प्रतीत होती है, जब उनके साथ अजमेर जेल में राजस्थान के प्रायः सभी राज्यों के साथी जेल काट रहे थे। समान सुख-दुःख में ही ऐसी व्यापक प्रतीति व अनुभूति पनपती है। इसीलिए तो १९३२ की जेल-यात्रा के बाद उनकी दृष्टि केवल मारवाड़ राज्य तक सीमित न रहकर राजस्थान व्यापी बन गई और उनके व्यक्तित्व, नेतृत्व एवं कर्तृत्व का लाभ राजस्थान के समस्त राज्यों की जनता को समान रूप से मिलने लगा। यह निर्विवाद है कि वह इस व्यापक दृष्टि से काम करनेवाले पहले राजस्थानी नेता थे और इसी भावना से प्रेरित हो उन्होंने अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् के अन्तर्गत उसकी राजस्थान शाखा का गठन व संचालन किया था। राजस्थान के समस्त राज्यों को राजनीतिक आन्दोलन की दृष्टि से एक माला में गूंथनेवाला सबसे पहला संगठन यही था। देशभक्त सेठ जमनालाल जी बजाज ने जब १९३८ में जयपुर राज्य प्रजामंडल के गठन का कार्य शुरू किया था, तब व्यास जी ने उनको एक पत्र लिखकर यह अनुरोध किया कि वे देशी राज्यों की अखिल भारतीय केन्द्रीय संस्था को सुदृढ़ बनाने के लिये जयपुर राज्य प्रजामंडल का गठन उसकी राजस्थान शाखा के अन्तर्गत करें। उनकी दृष्टि देशी राज्यों के प्रादेशिक संगठनों को सुदृढ़ बनाने पर सदा लगी रहती थी और उसके लिये वह निरन्तर प्रयत्नशील रहते थे।

१९३२ में अजमेर जेल में उनके साथ मध्य भारत के देशी राज्यों के भी अनेक कार्यकर्त्ता बन्दी थे। मध्य भारत के प्रमुख नेता संसद् सदस्य श्री गोपीकृष्ण विजयवर्गीय, भीलवाड़ा के संसद् सदस्य श्री रमेशचन्द्र व्यास तथा कुछ अन्य साथियों ने भी अपने संस्मरणों में उस जेल जीवन का चित्र उपस्थित किया है। उन्होंने बताया है कि व्यास जी तब जेल में किस प्रकार सबके लिये आकर्षण बने हुए थे। जेल के कठोर और व्यस्त जीवन में भी उनका मनोरंजन और प्रशिक्षण बराबर चलता था। मनहूसियत से उनको घृणा थी। किसी को उदास वे देख न सकते थे। अपनी ज़िन्दादिली को उन्होंने कुछ ऐसा व्यापक बना दिया था कि जेल अधिकारियों के साथ संघर्परत रहते हुए भी वह सदैव प्रसन्न रहते थे। चारों ओर उल्लासमय वातावरण बनाये रखने में दत्तचित रहते थे। सबसे बड़ा काम उन्होंने यह किया कि एक अध्ययन केन्द्र कायम किया। उसमें विभिन्न राज्यों के साथी सत्याग्रही बन्दियों को पत्रकारिता की भी शिक्षा दी तथा समाचार संकलन, लेखन व रिपोर्टिंग आदि में दक्ष बना दिया। उनकी मान्यता यह थी कि प्रत्येक कार्यकर्त्ता को आन्दोलक के साथ-साथ प्रचारक भी बनना चाहिए और प्रचारक को संवाददाता के रूप में पत्रकार कला में प्रवीण होना चाहिए। राजस्थान और मध्य भारत के देशी राज्यों के अनेक कार्यकर्ताओं को उन्होंने जेल में ऐसा पत्रकार बना दिया कि वे बाहर आकर सफल संवाददाता बन गये। कितनों का ही सम्बन्ध उन्होंने

अनेक प्रमुख राष्ट्रीय समाचार-पत्रों के साथ संवाददाता के रूप में जोड़ दिया और उनको आर्थिक दृष्टि से भी स्वावलम्वी वना दिया। ऐसे अनेक साथी राजनीतिक क्षेत्र में उनके जीवन संगी वन गये और उनके देशी राज्य लोक परिषद् के आन्दोलन एवं प्रचार-सम्बन्धी कार्य को व्यापक वनाने में वे वड़े सहायक सिद्ध हुए। उनके माध्यम से उन्होंने देशी राज्यों के जन-स्वातन्त्र्य आन्दोलन को एकरूपता की श्रृंखला में पिरोकर अखिल भारतीय संगठन को ऐसा सुदृढ़ वनाया कि वह कांग्रेस के समानान्तर वन गया।

रक्तहीन क्रान्ति की भूमिका

परिषद् के १६३६ के लुधियाना अधिवेशन में छोटे-छोटे राज्यों को परस्पर या पड़ोसी राज्यों में मिलाकर उनको एक इकाई में गठित करने की अथवा पड़ोसी प्रान्तों में मिलाने की जो योजना श्री जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में प्रस्तुत की गई थी, वह देशी राज्यों के विलीनीकरण की भूमिका ही थी। उसको व्यास जी ने बड़ी दक्षता व बुद्धिमत्ता से तैयार किया था। इसीलिए तो उनको राजस्थान संघ के निर्माण और देशी राज्यों के विलीनीकरण की रक्तहीन क्रान्ति का मंत्रद्रष्टा कहना चाहिए।

महान् राजस्थान का स्वप्न

अपने अभिन्न साथी गुजराती दैनिक 'जन्मभूमि' के सम्पादक व संचालक 'सौराष्ट्र ट्रस्ट' के प्रवर्त्तक और देशी राज्यों की जागृति के अन्यतम पोषक श्री अमृतलाल सेठ के साथ मिलकर वह जिस 'महान् राजस्थान' का स्वप्न देखा करते थे, उसमें गुजरात का सौराष्ट्र प्रदेश भी शामिल था। राजस्थान और सौराष्ट्र दोनों ही जागीरों व सामन्तशाही के सुदृढ़ गढ़ थे। श्री सेठ का साप्ताहिक 'सौराष्ट्र' इसी स्वप्न का पोषक था और उसी से प्रेरित होकर उन्होंने राजस्थान के रियासती कार्यकर्त्ताओं के प्रति उसी आत्मीयता का परिचय दिया था, जो उनके हृदय में सौराष्ट्र के रियासती कार्यकर्त्ताओं के लिये समाई थी। 'जंन्मभूमि' के वम्वई कार्यालय से ही व्यास जी के हिन्दी दैनिक 'अखंड भारत' का प्रकाशन भी इसी वात का द्योतक था कि व्यास जी और श्री सेठ पर इसी उदात्त-भावना और महान् स्वप्न के कारण 'दो तन एक मन' की उक्ति चरितार्थ होती थी।

यदि कहीं व्यास जी और श्री सेठ का यह महान् स्वप्न असिद्ध न वना रहता और स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत के भाग्य विधाता उनके समान उदात्त-भावना से काम ले सकते तो वर्तमान राजस्थान का रूप उसके अतीत के समान व्यापक, गर्वीला एवं गौरवशाली वना होता। उसकी पूर्वीय सीमा राजधानी दिल्ली के साथ मिली होती तथा पश्चिमी सीमा पर कांदला का वन्दरगाह स्थित होता और उसके विकास का मार्ग अप्रत्याशित रूप में प्रशस्त बन जाता।

कांग्रेस के प्रति रोष

देशी राज्यों के जन-आन्दोलन के सम्बन्ध में व्यास जी की अपराजित वृत्ति ने गांधी जी तथा कांग्रेस के सामने भी कभी सिर नहीं झुकाया। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार का कोई समझौता करना वह जानते ही न थे। कांग्रेस की देशी राज्यों के प्रति उपेक्षा वृत्ति के लिये उनका हृदय कभी-कभी विद्रोह कर उठता था। अन्त तक वे इस विचार से सहमत नहीं हो सके कि कांग्रेस के आन्दोलन से देशी राज्यों को अछूता रखा जाय। देशभक्त सेठ जमनालाल जी बजाज के साथ भी उनकी इसी करण पट नहीं सकी और अन्त में सेठ जी को उन्होंने अपने विचार का बना लिया। जयपुर का १६३६ का सत्याग्रह इसका प्रवल साक्षी था। व्यास जी की प्रेरणा पर कराची कांग्रेस पर गांधी जी से देशी राज्यों के लोकनेताओं का एक शिष्ट-मंडल मिला था। उसने उनसे आग्रह किया था कि भारतीय शासन सम्बन्धी ऐसी कोई भी योजना स्वीकार नहीं की जानी चाहिए, जिसमें देशी राज्यों की जनता की उपेक्षा करके केवल नरेशों को प्रमुखता दी जाय। उस समय प्रस्तावित संघ शासन योजना में राजाओं को प्रमुखता दी जा रही थी और जनता की उपेक्षा यहां तक की गई थी कि उसका कोई भी प्रतिनिधि गोलमेज़ सम्मेलन के लिये निमंत्रित नहीं किया गया था। कराची में देशी राज्यों के लोकनेताओं के साथ गांधी जी की जो चर्चा हुई, उसका परिणाम यह हुआ कि गांधी जी ने अपने को देशी राज्यों की जनता का भी प्रतिनिधि मानकर गोलमेज सम्मेलन में उसकी भावना को भी व्यक्त किया और राजाओं को एक स्पष्ट चेतावनी दी।

महात्मा गांधी १६३३ में जब अपने हरिजन दौरे में अजमेर पधारे, तब व्यासजी ने उनके नाम खुले पत्र के रूप में एक विज्ञप्ति प्रकाशित करके अपना रोष व असन्तोष प्रकट किया था। परन्तु अजमेर में कट्टरपंथियों द्वारा महात्मा जी के साथ जो अशिष्ट व्यवहार किया गया, उसकी उनके हृदय पर कुछ ऐसी प्रतिक्रिया हुई कि उन्होंने उनकी मान-मर्यादा को सर्वोपरि सम्मान देते हुए उस विज्ञप्ति को जनता में बांटने की अपेक्षा नष्ट कर देना ही उचित समझा। फिर भी उसकी एक प्रति उन तक पहुंचा दी।

१६३८ में हरिपुरा कांग्रेस में नेता जी सुभाष वोस की अध्यक्षता में कांग्रेस ने देशी राज्यों के प्रति अपने रुख में जो परिवर्तन किया उसका अधिकांश श्रेय व्यास जी को ही प्राप्त था। उन्होंने 'अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद्' को कुछ ऐसा बलशाली, प्रभावशाली तथा कांग्रेस के समानान्तर बना दिया था कि उसकी सहज में उपेक्षा करना संभव न रहा। नवसारी में हरिपुरा कांग्रेस से ठीक पहले परिषद् के एक विशेष अधिवेशन का आयोजन इसी अभिप्राय से किया गया था कि कांग्रेस पर अपना रुख बदलने के लिये जोर डाला जाय। उसके बढ़ते हुए वेग को सन्तुलित करने के लिये ही कांग्रेस को अपने रुख में परिवर्तन करने के को

बाध्य होना पड़ा। हरिपुरा कांग्रेस में इस सम्बन्ध में जो प्रस्ताव उपस्थित किया गया उसके प्रस्तोता थे डा० पट्टाभि और अनुमोदक थे व्यास जी। डा० पट्टाभि सीतारमैया तथा पं० जवाहरलाल नेहरू सरीखे राष्ट्रनेताओं की सहानुभूति देशी राज्यों की निरीह जनता के लिये प्राप्त करके कांग्रेस के रुख में परिवर्तन लाना व्यास जी की असाधारण कार्यक्षमता का ही सूचक था।

अंग्रेज़ सरकार ने जब भी कभी देशी राज्यों की निरीह जनता की उपेक्षा कर केवल देशी नरेशों को प्रमुखता देने और शासन-सुधार योजनाएं बनाने या वैसी चालें चलने का प्रयास किया, तब सदा ही व्यास जी जनता की आवाज़ बुलन्द कर विरोध में डट गये। लन्दन में आयोजित गोलमेज सम्मेलनों के फलस्वरूप १९३५ में जो शासन-सुधार योजना प्रस्तुत की गई थी, उसमें पहली बार केवल देशी नरेशों को प्रमुखता दी गई थी। भारतीय संघ के निर्माण की जो रूपरेखा उस शासन योजना के लिये तैयार की गई थी, उसका जन्म नरेन्द्र मंडल के मायाजाल के गर्भ में से हुआ था। उसको मूर्तरूप देने का कार्य तत्कालीन वायसराय लार्ड लिनलिथगो को विशेषरूप से सौंपा गया था। तब ब्रिटिश भारत के प्रान्तों में प्रान्तीय स्वायत्त शासन योजना को लागू करके देशी राज्यों की जनता के भाग्य को नरेशों की एक-तन्त्रीय स्वेच्छाचारिता पर छोड़ दिया गया था। तब भी व्यास जी ने उसके विरोध में आवाज़ बुलन्द की थी और दिल्ली में देशी राज्यों की जनता के एक विराट् सम्मेलन का आयोजन किया था। १९४६-४७ में क्रिप्स योजना और मन्त्रिमण्डलीय मिशनयोजना में भी यही खेल खेला गया था। तब व्यास जी ने एक बार फिर देशी राज्योंकी जनता की आवाज़ को इस प्रकार बुलन्द किया था कि उसको अनसुना करना सम्भव न रहा था। तब भी व्यास जी ने दिल्ली में एक विराट् सम्मेलन का आयोजन करके ऐसा वातावरण पैदा किया था कि श्री जवाहरलाल नेहरू और सरदार पटेल को उसमें उपस्थित होकर यह आश्वासन देना पड़ा था कि कोई भी ऐसी योजना स्वीकार न की जाएगी, जिसमें देशी राज्यों की जनता उपेक्षित रहेगी। इस सम्बन्ध में देशभक्त सेठ आनन्दराज जी सुराणा और देशी राज्यों के वयोवृद्ध नेता स्वामी रामानन्द जी तीर्थ के संस्मरण विशेष महत्त्वपूर्ण हैं। स्वराज्य प्राप्ति पर जिस संविधान परिषद् का आयोजन किया गया था, उसमें देशी नरेशों के नहीं, प्रत्युत जनता के प्रतिनिधि शामिल किये गये थे और विलीनीकरण की रक्तहीन क्रान्ति से पहले उसकी भूमिका के रूप में सभी राज्यों में लोकप्रिय शासन कायम किये गये थे। तब लोकप्रिय शासन की बागडोर मुख्यत: जन प्रतिनिधियों के हाथों में सौंप दी गई थी। यह अन्तिम परिणति थी उस भारतव्यापी जन-आन्दोलन की, जिसका सफल सूत्र संचालन व्यास जी ने अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् के माध्यम से किया था और लोकनायक शब्द को सार्थक कर दिखाया था।

जोधपुर मुकदमे की नंगी तलवार

व्यास जी सरीखे मंत्रद्रष्टाओं को सुख की नींद प्रायः नसीव नहीं होती। देश की पराधीनता के दिनों में जो कठोर यातनाएं उन्होंने भोगीं, उनकी अपनी ही कहानी है। देश के स्वतन्त्र होते ही जव १९४९ में राजस्थान संघ का निर्माण हुआ, तव उनके सिर पर जोधपुर के उस मुकदमे की नंगी तलवार लटका दी गई, जिसके 'स्पेशल आर्डिनेन्स' जारी करके विशेष ट्रिब्युनल की वैसे ही नियुक्ति की गई थी, जैसे कि अंग्रेज़ी राज्य के दिनों में क्रान्तिकारी षड्यंत्रों के मुकदमों के लिये की जाती थी। १९२९-३० में जोधपुर राज्य में जव उनपर पहली वार राजद्रोह का मुकदमा चला था, तब भी नागौर किले में न्याय का वैसा ही नाटक रचा गया था और उसपर लाख-सवा लाख रुपया राज्य का फूंक दिया गया था। न्याय का यह नाटक भी उसका ही प्रतिरूप था। उस 'स्पेशल आर्डिनेंस' और ट्रिब्युनल की नियुक्ति की मीमांसा करने का यह प्रसंग नहीं है। इतना ही कहना पर्याप्त होना चाहिए कि सामान्य कानून की समस्त मर्यादाओं का उस मुकदमे के लिये उल्लंघन कर दिया गया था और उसको ऐसा संगीन रूप दे दिया गया था, जैसे कि व्यास जी और उनके साथी किसी भयानक अपराध के अभियुक्त हों। मुकदमा ४०६ और ४२० धाराओं के अनुसार चलाया गया था। इसमें सन्देह नहीं कि यदि कोई दूसरा उनके स्थान पर होता तो उसके राजनीतिक जीवन की समाधि बन गई होती। परन्तु, व्यास जी ने जिस असीम धैर्य, अपार साहस और अतुलनीय सन्तुलन का परिचय देते हुए उस भारी झोंकी को झेला, वह देखते ही बनता था। दूसरे साथियों की तरह सरदार की शरण जाकर वे उससे मुक्त हो सकते थे और लोगों की दृष्टि में अपने राजनीतिक जीवन एवं नेतृत्व को कहीं अधिक सुरक्षित एवं सुदृढ़ वना सकते थे। लेकिन, उनके भाग्य में तो तपकर ही कुन्दन वनना लिखा था। वैसा ही हुआ। व्यास जी उस अग्नि परीक्षा में भी सफल हुए। मुकदमा विना शर्त वापस लिया गया। उनको राजस्थान के मुख्यमंत्री के पद पर प्रतिष्ठित किया गया। इस प्रसंग की भी चर्चा अनेक संस्मरणों में की गई है।

स्वतन्त्रता व समाज की मुक्ति और अपने आदर्श एवं सिद्धान्तों के लिये तपनेवालों के जीवन में घटनाचक्र की यही अन्तिम परिणति होती है। लेकिन व्यास जी के लिये तो तव भी कांटों की ही सेज तैयार थी। साथियों के विश्वासघात और पारस्परिक मतभेद के कारण उन्हें मुख्यमंत्री के पद से अलग होने को वाध्य होना पड़ा। भाई मुरलीमनोहर जी व्यास ने अपने संस्मरण में इस घटना का उल्लेख करते हुए तुलसी के शब्दों में कितना सुन्दर भाव प्रकट किया है कि व्यास जी के लिये उस पद का त्याग वैसे ही था जैसे किसी हाथी के गले में पड़ी पुष्पमाला बिखर गई हो। उसको न तो माला के पहनने का कोई गौरव अनुभव होता है और न उसके विखरने का कोई विषाद।

जीवन की अन्तिम घड़ी में भी वे कांग्रेस में घर किये हुए भ्रष्टाचार के विरुद्ध मोर्चा लेते रहे। उसी मोर्चे पर एक वीर योद्धा की तरह उनके यशस्वी जीवन का अन्त हुआ। लेकिन वह उस प्रकाश किरण को जगमगा गये, जिसने आज भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन के रूप में देशव्यापी रूप धारण कर लिया है।

वीरगति को प्राप्त होनेवाले सैनिक या सेनापति के बारे में कहा गया है कि सदा उसकी छाती पर ही घाव होता है, पीठ पर नहीं। तात्पर्य यह कि वह छाती ताने हुए आगे ही बढ़ना जानता है, वह पीठ कभी नहीं दिखाता और ऐसा अवसर नहीं आने देता जब शत्रु उसकी पीठ पर वार कर सके। व्यास जी पर भी यह कथन अक्षरश: चरितार्थ होता है। अपने सार्वजनिक जीवन के प्रारम्भ में उन्होंने समाज के पंचों की तानाशाही से लोहा लिया, फिर जागीरशाही तथा सामन्तशाही की चुनौती स्वीकार की। देश स्वतन्त्र हुआ तो लौहपुरुष सरदार पटेल के प्रकोप का सामना किया, फिर अपने संगी-साथियों तथा सहकर्मियों के मित्रद्रोह तथा विश्वासघात से जूझे। अन्त में कांग्रेस तथा उनके नेतृत्व को रुष्ट व असन्तुष्ट करने की झोंकी फैली। कांग्रेस के चुनाव आन्दोलन में उस आंधी व तूफान का वेग होता है, जिसके सामने बड़े-बड़े महारथी भी सूखे पत्तों की तरह उड़ जाते हैं। श्री जवाहरलाल नेहरू के तेजस्वी व्यक्तित्व के सामने तो किसीका टिक सकना वैसे ही असम्भव था जैसे कि सूर्य के सामने अन्धकार नहीं टिक सकता। लेकिन कांग्रेस में व्यापी अनैतिकता, पक्षपात तथा भ्रष्टाचार के विरोध में व्यास जी अंगद की तरह पैर जमाकर ऐसे खड़े हुए कि कांग्रेस का सारा संगठन हिल गया। वे अविचलित भाव से अपने संकल्प पर डटे रहे। कांग्रेस के अनुशासन व नियन्त्रण की नंगी तलवार सिर पर लटकी होने पर भी उन्होंने यह कदम जिस साहस से उठाया, उसकी कल्पना कर सकना कुछ कठिन नहीं। कांग्रेस के सर्वोपरि महान् नेता श्री नेहरू के साथ उनकी वह सीधी टक्कर थी। नेहरू जी ने राजस्थान के विभिन्न स्थानों के अपने चुनाव भाषणों में व्यास जी की विशेष रूप से चर्चा की थी और उनके कदम को उनकी भूल बताया था। परन्तु कोटा में उन्हें भी स्वीकार करना पड़ा था कि कुछ कांग्रेसी उम्मीदवार अवांछनीय हो सकते हैं और उनको मत देने या न देने में मतदाता अपनी स्वतन्त्र बुद्धि से काम ले सकते हैं। सम्भवत: यही कारण था कि कांग्रेस की अनुशासन-समिति ने इस प्रकार अनुशासन भंग करने पर उनको छह वर्ष के लिये कांग्रेस मे निष्कासित करने का जो निर्णय किया था, वह कागज़ पर ही लिखा रह गया और उसको कार्य में परिणत नहीं किया गया। वह व्यास जी की नैतिक विजय थी।

उत्कृष्ट चरित्र

जीवन-भर कठोर से कठोर संघर्षो को स्वेच्छा से मोल लेते रहना और हर मोर्चे पर वीरता व धीरता से डटे रहना सामान्य साहस का काम नहीं था। यह

साहस किसी उत्कृष्ट चरित्रवान व्यक्ति में ही उपजता है। यह साहस ही व्यास जी के उज्ज्वल एवं उत्कृष्ट चरित्र का प्रवल प्रमाण है। वह किसी संस्कारी को ही प्राप्त होता है। गीता में संस्कारी को 'योगभ्रष्ट' कहा गया है। व्यास जी के वचपन के साथी श्री गंगादास जी व्यास ने इस सम्बन्ध में जो विचार प्रकट किये हैं, वे यथार्थ हैं। उन्होंने वताया है कि गीता की यह स्थापना व्यास जी पर पूरी तरह चरितार्थ होती है :

"शुचीनाम् श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोभिजायते"

अर्थात् योगभ्रष्ट अथवा संस्कारी का जन्म शुद्ध पवित्र आचार, विचार, व्यवहारवाले साधन सम्पन्न के ही घरमें होता हैं। धीमानों के लिये अत्यन्त दुर्लभ यह जन्म योगियों के ही कुल में होता है। गीता का योगी योगदर्शन के योगी से भिन्न है। गीता की योग की व्याख्या 'योग: कर्मसु कौशलं' है। समाज द्वारा सौंपे गये अथवा स्वयं स्वीकार किये गये कर्त्तव्य-कर्म को समाज हित के लिये योग्यतापूर्वक सच्चाई व ईमानदारी से सम्पन्न करना ही योग है और उसमें तन्मय हो जाना योगाभ्यास है। गुण, कर्म, स्वभावपरक वैदिक वर्णव्यवस्था अथवा समाजव्यवस्था का यही मूलमंत्र है। संसद् सदस्य श्री जसवन्तराय जी मेहता ने व्यास जी की जन्मकुंडलीकेआधार पर सर्पगति प्राप्त होने के वारे में भृगुसंहिता का जो अभिमत अपने संस्मरण में लिखा है, वह कैसा यथार्थ और मनोरंजक है। गम्भीर से गम्भीर स्थिति में भी उनकी लेखनी के साथ उनकी जिह्वा सांप की तरह निरन्तर चलती रहती थी।

जन्मसिद्ध संस्कार

व्यास जी के इस जीवन का सिंहावलोकन करते हुए एक संस्कारी कर्मनिष्ठ व्यक्ति का चित्र आंखों के सामने उपस्थित हो जाता है। गीता का योग भ्रष्ट उस महान् साधक के आदर्श उत्कृष्ट चरित्र का एक भव्यचित्र आंखों के सामने उपस्थित करता है जो पूर्व जन्म के संस्कारों से प्राप्त वर्तमान जीवन को भी संसारी लोगों के लिये अनुकरणीय वना देता है। व्यास जी को अपने ननिहाल से ऐसा अनुकरणीय जीवन उपलव्ध हुआ था।

व्यास जी के ननिहाल के सम्वन्ध में राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष माननीय श्री रामनिवास जी मिर्धा ने अपने संस्मरणों में लिखा है, "श्री जयनारायण व्यास का जन्म १८९८ में एक पुरातनपंथी ब्राह्मण कुल में हुआ था। वह जोधपुर रेलवे के दफ्तर में काम करनेवाले सेवाराम व्यास के इकलौते वेटे थे। उनकी माता जी का कुल तो और भी अधिक कट्टर पुरातनपंथी था, सुप्रसिद्ध 'चण्डू पंचांग' जंत्री के प्रवर्त्तक का वह कुल उत्तराधिकारी था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा अपनी विरादरी की एक पोशाला में हुई थी। मैं यह चर्चा यह दिखाने के लिये कर रहा हूं कि ऐसे नैष्ठिक कुल में जन्म लेने और ऐसी पोशाला में पलने व पढ़ने

वाला कैसा 'विद्रोही' बन गया। व्यास जी केवल राजनीतिक दृष्टि से ही क्रान्तिकारी न थे, प्रत्युत्त सामाजिक दृष्टि से भी बड़े 'विद्रोही' थे। सब नेताओं के सम्बन्ध में ऐसा नहीं कहा जा सकता। वे राजनीतिक दृष्टि से कैसे भी क्रान्तिकारी क्यों न थे, परन्तु वे अपने सामाजिक जीवन में वैसा क्रांतिकारी दृष्टिकोण नहीं अपना सके।"

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि राजस्थान और पश्चिमी भारत के मध्यकालीन अनेक राजाओं तथा विशिष्ट ऐतिहासिक व्यक्तियों, मेवाड़ के महाराणा सांगा, प्रताप, राजसिंह, दुर्गादास, छत्रपति शिवाजी आदि की जन्मपत्रियों का एक बड़ा संग्रह इसी कुल के संग्रहालय में उपलब्ध हुआ है, जो आधुनिक ऐतिहासिकों द्वारा भी बड़ा प्रामाणिक माना गया है।

ननिहाल से प्राप्त संस्कार

ननिहाल के जिस धार्मिक वातावरण से व्यास जी के जीवन में अध्यात्मवृत्ति का उदय हुआ, उन्होंने स्वयं उसका उल्लेख किया था। उन्होंने लिखा था, "मेरी नानी किसी भी भाषा की वर्णमाला से सर्वथा अपरिचित थीं। फिर भी वह सुशिक्षित थीं। अंग्रेज़ी में शिक्षित शब्द का अर्थ है वह पढ़ा-लिखा, जो पुस्तक ज्ञान रखता है। संस्कृत में सुशिक्षित के लिये 'बहुश्रुत' शब्द का प्रयोग किया जाता है। उसका अभिप्राय यह है कि मनुष्य सुनने मात्र से भी ज्ञान प्राप्त कर लेता है और विद्वान् बन जाता है। मेरी नानी जी कथा, भजन, कीर्तन आदि में नियम से शामिल हुआ करती थीं। भागवत और महाभारत की अनेक कथाएं उनको याद थीं। उन्हें भक्तिभावपरक और इतिहास सम्बन्धी कई भजन याद थे। अपने घर के पूजा के कमरे में जब वह देवी-देवताओं की छोटी-छोटी मूर्तियों की पूजा किया करती थीं, तब बड़े ही भक्तिभाव से भजन गाती रहती थीं। अपनी टूटी-फूटी संस्कृत में भी वह उनकी कथा के श्लोक बोल लेती थीं।

"मामूली तौर पर उनको छोटा डाक्टर भी कह जा सकता था। आंखों की बीमारियों के लिये वह एक अंजन बनाया करती थीं। शाम के समय दर्जनों बच्चे आंखों में अंजन लगवाने के लिये जमा हो जाते थे। बीमार के यहां जाकर सेवा करने में बड़ा सुख अनुभव करती थीं। नाड़ी ज्ञान उनको ऐसा था कि वह यह बता देती थीं कि बीमारी साध्य है अथवा असाध्य।

"धार्मिक कथाओं और साधुओं से उन्होंने यह शिक्षा ग्रहण की थी कि ज़रूरतमन्द को दिये बिना खाना पाप है। वह बर्तनों में आटा और अनाज ग़रीबों को बांटने के लिये रखा करती थीं। पास के मन्दिर में जाकर उसकी छत पर ज्वार या बाजरा कबूतरों तथा अन्य पक्षियों के लिये बखेर आती थीं।

"यह था मेरी नानी का तौर-तरीका। उनके संरक्षण को मैं अपने लिये अहोभाग्य मानता हूं उनकी दोनों लड़कियों के साथ मेरे पिता और चाचा का विवाह हुआ था। मेरे चाचा का छोटी अवस्था में ही देहान्त हो गया था। पिता जी

नौकरी पर जोधपुर से बाहर रहते थे। इसलिए मेरा लालन-पालन नानी के यहां हुआ। नानी का एकमात्र लड़का बचपन में ही गुजर गया था और दूसरी कोई सन्तान न थी। इसलिए दोनों घरों में मैं अकेला ही था। यह स्वाभाविक था कि मेरा लालन-पालन बड़े लाड़-प्यार से किया गया। कुछ समय बाद मेरी माता जी ने मेरी देख-भाल करनी शुरू कर दी थी। अपने मामा और मामी के देखा-देखी मैं भी उनको 'बहन' कहा करता था। बचपन में मेरा जो लालन-पालन हुआ और मुझपर जो संस्कार पड़े, उनका अधिकतर श्रेय नानी जी और उनके बाद मां को ही है। वह प्रायः कहा करती थीं कि देखो मैं तुम्हारी मां को, जब तुम उनकी गोदी में होते हो, प्रतिदिन भगवान् कृष्ण का चरणामृत यह कहकर देती हूं कि तुमको चिरायु दें। मेरी मां मुझे बताया करती थीं कि नानी जी बालकृष्ण के मन्दिर में कथा सुनने के बाद नियम से चरणामृत लाकर मुझे यह कहकर दिया करती थीं कि तुम्हारा यह बच्चा चिरायु हो। यह तो मैं नहीं जानता कि इस चरणामृत से मेरे जीवन में कुछ धार्मिक अथवा अध्यात्मवृत्ति पैदा हुई कि नहीं; किन्तु प्रतिदिन उस चरणामृत की स्मृति का मेरे जीवन पर अवश्य ही बहुत गहरा प्रभाव पड़ा।

"मेरे मामा श्यामदास जोधपुर सरकार के यहां रेवन्यू आफिसर थे। वे बड़े ही निष्ठावान् और श्रद्धासम्पन्न थे। मेरी नानी जी के प्रति उनकी बड़ी श्रद्धा थी। वह उनको 'देवी' ही मानते थे। अपनी बहन की स्वीकृति से पहले उन्होंने वानप्रस्थ स्वीकार किया और बाद में संन्यासी बन गये। उनकी त्याग भावना के लिये मेरे हृदय में सदा अभिमान बना रहा और आज भी बना है। वह मुझे खाने के बाद बाईं करवट ही सुलाती थीं और वर्षा या बिजली चमकने पर नंगे सिर बाहर यह कहते हुए नहीं जाने देती थीं कि बिजली काली चीज़ पर गिरती है। वह शाम को प्रतिदिन रामायण, महाभारत तथा भागवत की कथाएं सुनाया करती थीं। उनका जीवन आदर्श महिला का जीवन था। दिन-भर कड़ी मेहनत करते हुए भी सारे परिवार के लिये धार्मिक वातावरण पैदा कर उसको अपने धार्मिक प्रभाव में रखती थीं।

"सर्वव्यापक प्रभु के प्रति उनकी अनुभूति सदा जागृत रहती थी। वह जब भी कभी किसी गरीब को कुछ देतीं या ब्राह्मण को भोजन करातीं, तब यह कहा करती थीं कि यही हमारी ईश्वर पूजा है। जब कभी वह स्वयं कुछ खाती या पीती थीं, तब भी यही कहा करती थीं कि यह सब उसी 'आतमा' को भेंट है, जो परमात्मा की छाया है।" ये थे वे धार्मिक संस्कार, जिसके कारण व्यास जी में बचपन में ही आध्यात्म पृष्ठभूमि का निर्माण होना शुरू हुआ था और जो अनुकूलता पाकर अधिक से अधिक सुदृढ़ हुई।

मातृ कुल और पितृ कुल दोनों ही दृष्टियों से नैष्ठिक परिवारों में जन्म लेने, पलने-पुसने और खेलने-कूदने वाला बालक कैसे 'विद्रोही' बन गया, यह एक पहेली

है, जिसका स्पष्ट संकेत मिर्धा जी के शब्दों में मिल जाता है। मातृ कुल से प्राप्त संस्कारों के कारण बालक के पूर्वजन्म के संस्कार कुछ ऐसे प्रबल बन गये कि उनके ही सांचे में उसका सारा जीवन ढल गया। व्यास जी के नाना योगीदास जी में भी नानी जी की तरह उस कुल के समस्त संस्कार विद्यमान् थे, जो 'चण्डू पंचांग' का प्रवर्त्तक था। पंचांग 'प्रवर्त्तक कुल' के पांडित्य की धाक असाधारण रूप में समाज पर छाई हुई थी। नाना जी अपने शुद्ध पवित्र आचार-विचार के लिये अपनी विशेष प्रसिद्धि रखते थे, 'यथानाम् तथा गुण:' की कहावत उन पर चरितार्थ होती थी। पोशाला में गुरु जी बालक को 'जोगिया व्यास' कहकर पुकारा करते थे। गुरु जी को क्या कल्पना होगी कि उनका वह बालक शिष्य उन द्वारा दिये गये नाम को चरितार्थ कर दिखायगा। ऐसे संस्कारी बालक का जिस विस्मयजनक विद्रोही रूप में जीवन विकास हुआ, उसकी सारी कहानी अर्थ से इति तक अचरज भरी है।

आध्यात्मिक पृष्ठभूमि

राजनीति की घनघोर घटाएं मानव जीवन के अनेक सद्गुणों और सद्प्रवृत्तियों पर छा जाती और हावी हो जाती हैं। स्वतन्त्रता संग्राम में जूझने वाला सैनिक अपने सर्वस्व की बाजी लगा देता है। राजनीतिक क्षेत्र में क्रान्तिकारी भावना से प्रवेश करने वाले का लक्ष्य केवल एक बिन्दु पर वैसे ही केन्द्रित हो जाता है, जैसे कि लक्ष्य वेध के लिये अर्जुन की दृष्टि उस चिड़िया की आंख पर केन्द्रित हो गई थी। लोकमान्य तिलक के वैदिक साहित्य के गहन गम्भीर अनुशीलन, दार्शनिक तत्त्वज्ञान, ज्योतिषशास्त्र के पांडित्य तथा विधिशास्त्र की विद्वत्ता पर बड़े-बड़े धुरन्धर भी चकित थे। उनके लिये यह एक पहेली थी कि कैसे उन्होंने उस सबको देश के स्वतन्त्रता संग्राम पर वार दिया था। अपने राष्ट्र के लिये जो गोली खाने और फांसी पर झूल जाने के लिये तैयार हो जाते हैं, उनके लिये लोक में सब कुछ तुच्छ, नगण्य और हेय बन जाता है। उसी स्थिति में व्यास जी भी रम गये थे। सार्वजनिक जीवन के प्रारम्भ में ही उनमें श्रद्धा सम्पन्न की आध्यात्मिकता का प्रादुर्भाव होना सर्वथा स्वाभाविक था। इसी कारण जैन मुनियों व साधुओं के तपोमय व साधनामय जीवन की ओर उनका कुछ ऐसा झुकाव हुआ कि वह उनके साथ पद यात्री ही बन गये और उनके साथ रहकर उन्होंने अनेक जैन शास्त्रों व ग्रन्थों के लेखन तथा सम्पादन का कार्य सम्पन्न किया। सर्वोदयी कार्यकर्त्ता श्री चैतन्य जी ने अपने संस्मरणों में उन दिनों की एक उज्ज्वल झांकी उपस्थित की हैं; जब वे स्वयं मुनि चुन्नीलाल जी महाराज के नाम से जैन साधु की मर्यादा पालन करते हुए यती का तपोमय जीवन बिता रहे थे। और व्यासजी उनके अन्यतम साथी बन गये थे। तब अध्यात्म भावना से प्रेरित होकर उन्होंने ब्यावर के जैन गुरुकुल के प्रधानाध्यापाक का दायित्व भी स्वीकार किया था और एक आदर्श शिक्षक का उदाहरण उपस्थित कर दिखाया था। इस सम्बन्ध में उनके उन दिनों के सहकर्मी श्री

धीरजलाल के० तुरखिया और श्री मुन्नालाल वैद्य के संस्मरण पढ़ने योग्य हैं। विविध संस्मरणों में उत्कृष्ट समाज सुधारक, आदर्श शिक्षक, लेखक, प्रतिभाशाली कहानीकार, भावुक कवि, प्रवीण संगीतज्ञ, संमोहक नृत्य विशारद, सुदक्ष कलाकार, कुशल पत्रकार, कर्मठ कर्यकर्त्ता, लोकप्रिय नेता, चतुर राजनीतिज्ञ तथा सुदृढ़ शासक आदि के अनेक रूपों में व्यास जी के दर्शन मिलेंगे। परन्तु जब उन्होंने स्वातन्त्र्य संग्राम के सैनिक का बाना पहन लिया, तब उनके वे सब रूप राजनीति के आवरण से कुछ ऐसे ढक गये कि मुख्य रूप में उनका विकास न हो सका। फिर भी जीवन के प्रवाह में इन सब रूपों की सप्तरंगी लहरें तरंगित होती दीख पड़ती हैं।

व्यास जी के समस्त जीवन का यदि विलोडन अथवा सिंहावलोकन किया जाय तो उसकी पृष्ठभूमि में अध्यात्मवाद की छाया झलकती स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। यही कारण था कि वह पाली मारवाड़ में पहले ही दर्शन में जैन मुनि चुन्नीलाल जी महाराज की ओर ऐसे आकृष्ट हुए कि उनके जीवन-साथी बन गये उन दिनों में आध्यात्म तत्त्व प्रकाश के नाम से जो अध्यात्मवादी साहित्य प्रकाशित हुआ उसके कर्त्ता-धर्त्ता मुख्यतः व्यास जी ही थे। उससे उनके अध्यात्मवादी स्वरूप का उत्कृष्ट परिचय मिलता है।

व्यास जी राजनीतिज्ञ नहीं किन्तु वीर थे। वीर मरना तो जानता है और अपनी जान पर खेल भी जाता है। किन्तु राजनीतिक दांव-पेच खेलने का वह अभ्यासी नहीं होता। अध्यात्मवादी में आदर्शवाद उग्र रूप में पनपता है। व्यास जी को एक शब्द में 'आदर्शवादी' ही कहा जा सकता है। व्यवहारवाद का उनमें नितान्त अभाव था। इस आदर्शवाद की तन्मयता के अनेक अनुकरणीय उदाहरण पाठकों को अनुभूतिपूर्ण स्मृतियों के खंड में पढ़ने को मिलेंगे।

राजनीतिज्ञ को जिस रूप में देखा जाता है, उसका अर्थ है धर्म कर्म के प्रति श्रद्धा व निष्ठा से सर्वथारहित ऐसा व्यक्ति जो लोक-व्यवहार के लिये छल-कपट करने में संकोच नहीं करता। लेकिन व्यास जी ऐसे नहीं थे और कूटनीति से तो वे कोसों दूर थे। अध्यात्म पृष्ठभूमि में से ही उनके राजनीतिक सार्वजनिक जीवन का प्रादुर्भाव हुआ था। अपने प्रजातन्त्रीय राष्ट्र के लिये स्वीकृत सम्प्रदायातीत एवं धर्मनिरपेक्ष आदर्श में व्यास जी की अटूट निष्ठा थी। किसी भी प्रकार की संकीर्णता व साम्प्रदायिकता उनके व्यवहार में कभी भी पाई नहीं गई।

समाज का नवनिर्माण

संघर्ष का जो तारतम्य व्यास जी के जीवन में पाया जाता है, उसका मूलभूत लक्ष्य था 'समाज का नव-निर्माण'। दीनता, हीनता, पराधीनता एवं लांछित स्थिति में पड़े समाज को उन्होंने नया रूप देने के लिये जिस संघर्ष को सार्वजनिक जीवन में पहला ही पग बढ़ाते स्वेच्छा से अपनाया था, वह आजीवन उनका साथी बना रहा। रूढ़िवाद की परम्परागत मूढ़ता से उसको छुटकारा दिलाने, सामन्तशाही

के जुए को उसकी गर्दन से उतार फेंकने और जीवन के अन्तिम दिनों में कांग्रेस के संगठन व शासन में घर किये हुए भ्रष्टाचार का मुंह काला करने के लिये उन्होंने जो बीड़ा उठाया, उसका मूलभूत लक्ष्य समाज के गले-सड़े ढर्रे का अन्त कर उसमें नव जीवन का संचार करना ही था। आदर्शवाद से प्रेरित अपनी इस भावना को समाज में प्रतिष्ठित करने के लिये उन्होंने जो भारी कीमत चुकाई वह उन सरीखा आदर्शवादी ही चुका सकता था। बुराई से समझौता करना उनके स्वभाव के विपरीत था। वह बुराई चाहे धार्मिक, चाहे सामाजिक, चाहे आर्थिक और चाहे राजनीतिक किसी भी क्षेत्र में क्यों न हो, उसको मिटाने के लिये वे सतत जूझते रहे। आदर्शवादी स्वप्नद्रष्टा होता है। अपने स्वप्न को मूर्तरूप देने के लिये वह निरन्तर प्रयत्नशील रहता है और अपने असिद्ध स्वप्न की पूर्ति हेतु अपने पीछे आने वालों के लिये एक प्रकाश किरण छोड़ जाता है। व्यास जी भी एक ऐसी प्रकाश किरण अपने पीछे छोड़ गये हैं।

विशिष्ट व्यक्तित्व व नेतृत्व

लोकनायक श्री जयनारायण व्यास का विशिष्ट व्यक्तित्व व नेतृत्व उनके उत्कृष्ट चरित्र और चहुमुखी कर्तृत्व के सांचे में ढला था। उनका जीवन वैसा ही पवित्र और निष्कलंक था जैसे कि उनका व्यक्तित्व व चरित्र थे। १९४२ में महात्मा-गांधी ने काशी के ख्यातनामा कांग्रेसी नेता बाबू श्रीप्रकाश जी को जब वर्धा बुला-कर जोधपुर की स्थिति का अध्ययन करने और वहां के शासन तथा लोकपरिषद् में बीच-बचाव करने के लिये वहां भेजा था, तब उन्होंने उनके सम्बन्ध में उनको कहा था कि, "वहां के बड़े कर्यकर्त्ता श्री जयनारायण व्यास जेल में हैं और सर डोनाल्ड फील्ड दीवान हैं। वे तो मन्त्री होने योग्य पुरुष हैं और आज जेल में पड़े हुए हैं। तुम वहां जाकर सब हाल देखकर मुझे विवरण दो।" यह था वह प्रभाव जो गांधीजी के हृदय पर व्यास जी ने डाला हुआ था। इसका परिचय कई प्रसंगों पर मिला। सन्त लाडाराम जी ने अपने संस्मरणों में लिखा है कि वे प्रायः गुजराती ही बन गये थे। जब गांधी जी को यह पता चला कि वे मारवाड़ निवासी हैं, तब उन्होंने उनको परामर्श दिया कि वे मारवाड़ जाकर व्यास जी के साथ काम करें। उन्होंने उनसे उनके चरित्र एवं सत्यनिष्ठा की प्रशंसा की।

दैनिक 'जन्मभूमि' और व्यास जी

दैनिक 'जन्मभूमि' के श्री अमृतलाल सेठ के विरुद्ध प्राप्त हुई शिकायतों की जांच का काम गांधी जी ने व्यास जी को यह जानते हुए भी सौंपा था कि वे उनके अन्यतम साथी हैं और उनकी रिपोर्ट को ऐसा निष्पक्ष पाया था कि ज्यों का त्यों उसे स्वीकार कर लिया था।

व्यास जी के जीवनसंगी कलाकार श्री गणेशीलाल जी व्यास 'उस्ताद' ने इस प्रसंग का उल्लेख अपने एक संस्मरणात्मक लेख में इन शब्दों में किया है कि "सर-

दार ने बापू को श्री सेठ के विरुद्ध कर दिया। तथा व्यास जी को उनकी मित्रता छोड़ देने का आदेश उनके श्रीमुख से ही दिलवा दिया। साहसी मास्टर साहब ने इस अकारण आदेश को मानने से इन्कार कर दिया। इसपर बापू ने उनसे रुष्ट न होकर उनकी सच्चाई की प्रशंसा की। परन्तु एक अभियोग-पत्र देकर श्री अमृत-लाल सेठ के विरुद्ध जांच का कार्य उन्हीं को सौंप दिया। मास्टर साहब ने बिना आनाकानी इस कार्य का भार उठाना स्वीकार कर लिया और बम्बई गये। वहां 'जन्मभूमि' कार्यालय में डेरा जमाया। देश-भर में विशेषकर बम्बई में इस जांच की बड़ी चर्चा हुई। मित्रों ने सरदार के प्रति नाराजगी प्रकट की तथा श्री सेठ के शत्रुओं ने उसको लीपापोती की संज्ञा दी, परन्तु ज्यों ही व्यास जी ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की तो लोग स्तब्ध रह गये। आधा दर्जन अभियोगों में से चार सेठ ने स्वीकार कर लिये तथा उन्होंने अनिश्चित कार्य के लिये 'जन्मभूमि' संस्था से तथा सक्रिय राजनीति से दूर रहना स्वीकार कर लिया। इस रिपोर्ट को पढ़कर बापू अत्यन्त प्रसन्न हुए।"

महाराजा गंगासिंह जी का ऐतिहासिक पत्र

किसी भी व्यक्ति के चरित्र की जैसी ठीक-ठीक परीक्षा व मीमांसा उसका विरोधी कर सकता है वैसी उनके मित्र नहीं कर सकते, मित्र तो स्वभावतः उसके प्रशंसक होते हैं; किन्तु विरोधी उसका लोहा तभी मानता है, जब वह उससे प्रभावित होता है, बीकानेर राज्य के महाराजा सर गंगासिंह जी अपनी कठोर दमन नीति के कारण सबसे अधिक आलोचना के शिकार हुए थे। राजस्थान के सभी लोक-नेता उनके आलोचक थे। उन्होंने १९३२ में अपने यहां के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं पर बीकानेर षड्यंत्र का मुकदमा चलाकर राई का जो पर्वत बनाया था, उसकी विस्तृत चर्चा यथास्थान की जा चुकी है। व्यास जी ने उसमें जो दिलचस्पी ली थी उसका उल्लेख भी किया जा चुका है। उनके हृदय में व्यास जी के प्रति रोष व असन्तोष पैदा करने वाली एक घटना यह भी थी कि गोलमेज़ सम्मेलन के लिये जब महाराजा प्रतिनिधि चुने गये और उसमें भाग लेने के लिये वह लन्दन गये तब व्यास जी ने उनके शासन का कच्चा चिट्ठा तैयार किया। उसके आधार पर एक पेम्फलेट तैयार करके गोलमेज़ सम्मेलन में बांटा गया। उस पर महाराजा का उत्तेजित होना स्वाभाविक था। फिर भी उनके सम्बन्ध में महाराजा ने जो विचार प्रकट किये थे, उनका एक-एक शब्द व्यास जी के उत्कृष्ट, पवित्र, निर्मल एवं निष्कलंक चरित्र का परिचायक है। अपने वे विचार उन्होंने जोधपुर के तत्कालीन अंग्रेज़ दीवान सर डोनाल्ड एम० फील्ड को २१ फरवरी, १९३७ को एक पत्र लिखकर व्यक्त किये थे। वह पत्र ऐतिहासिक महत्त्व रखता है और राजस्थान के जन-आन्दोलन के इतिहास में सुनहरी अक्षरों में लिखा जाने योग्य है। महाराजा के उत्कृष्ट चरित्र और दूर-दर्शिता पर भी उससे बड़ा सुन्दर प्रकाश पड़ता है। इसीलिए उसको यहां अविकल

रूप में देने का लोभ संवरण नहीं किया जा सकता। यह भुलाया नहीं जाना चाहिए कि वह पत्र तब लिखा गया, जब व्यास जी व्यावर के बाद बम्बई में मारवाड़ से निर्वासित जीवन बिता रहे थे और दैनिक 'अखंड भारत' के प्रयोग के असफल हो जाने के बाद सिनेमा व्यवसाय में अभिनेता के रूप में प्रवेश करने का निश्चय कर चुके थे।

वह ऐतिहासिक पत्र इस प्रकार है :

"कुछ ऐसे व्यक्ति की ओर से जो कि देशी रियासतों और उनकी जनता के शुभचिन्तकों द्वारा हमेशा अव्यावहारिक और निरंकुश माना गया, तथा बुरा बताया गया है, यह पत्र प्राप्त कर आप आश्चर्य करेंगे। मैं इस पत्र से एक ऐसे व्यक्ति के बारे में जो कि देशी राजाओं के विरुद्ध जनमत तैयार करने में सबसे अधिक तेज़ और आग के शोले की तरह उदंड है, अपनी राय आप तक पहुंचाने का इरादा करता हूं, यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमारे यहां जनजीवन में असहिष्णुता की पराकाष्ठा हो चुकी है। ऐसी सूरत में सम्भवतः श्री जयनारायण व्यास इस बात पर यकीन नहीं करेंगे कि उनके विरोधियों में भी उन जैसी देशभक्ति और लगन हो सकती है। बहुत कम राजनीतिज्ञ मेरी इस बात पर विश्वास करेंगे कि जयनाराण जी व्यास और उनके साथियों के द्वारा आम तौर से राजाशाही और खासतौर से मुझपर अनर्गल तथा भावावेश से प्रभावित द्वेषपूर्ण प्रचार के बाद भी मैं लगातार व्यास जी के बारे में बहुत ऊंची राय रखता हूं। इन लोगों ने अक्सर राजाओं को विवेकहीन, हृदयहीन, निरंकुश और दमनकारी बताते हुए बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहने में पराकाष्ठा की है। यहां तक कि उन्होंने राजाओं को जनता का खून चूसने वाला, संसार के भी अपराधियों और दोषियों में सबसे अधिक गन्दा और बेईमान बताया है। कोई भी ऐसा व्यक्ति, जो कि रियासती हाल-चाल और यहां के वातावरण से अच्छी तरह परिचित है, वह इस तरह के घृणास्पद और अनर्गल प्रचार की सच्चाई में विश्वास नहीं करेगा। लेकिन वे जो संयुक्त विशाल भारत की तरक्की की ओर अपने उद्देश्यों की पूर्ति में अग्रसर होता हुआ देखना चाहते हैं, अनुभव करेंगे कि देशी रियासतों का भविष्य उन लोगों के चरित्र पर बहुत कुछ निर्भर करता है जो कि इन क्षेत्रों के राजनीतिक जन-जीवन पर आज हावी है। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि राजाशाही के ये शानदार सतून और साम्राज्यवादी शासन की ऊंची इमारत आज के जन-सेवकों को खत्म नहीं कर सकेगी, बल्कि सैकड़ों साल पुरानी ये सभी सरकारें उनके कन्धों पर आकर रुकेंगी और उनसे इन्साफ की भीख मांगेंगी। साम्यवादी रूप में हाल में घटित अराजकतापूर्ण भयानक घटनाएं दुनिया को चेतावनी देने के लिये काफी हैं और मैं यकीन करता हूं कि आप भी उन घटनाओं का देशी रियासतों में घटित होना पसन्द नहीं करेंगे। यह तभी संभव हो सकता है जबकि रजवाड़ों का जनमत देशभक्त और समझदार व्यक्तियों से

प्रभावित हो और वे आगे आकर शान्तिमय न्यायपूर्ण वैध उपायों से यहां की जनता के हितों को अग्रसर करें। यहां की प्रशासनिक जिम्मेदारियों को निभाने के लिये अभी से ऐसे व्यक्तियों का सहयोग लिया जाय। देशी राज्यों में जैसा आप भी जानते होंगे वहुत से अल्पस्वार्थी, असन्तुष्ट और असंगत नेता भी आगे आये हैं। ऐसे तथाकथित राजनीतिज्ञ अक्सर देशी रियासतों की राजनीति को अपने हाथ में लेने की कोशिश करते हुए रियासत से देश निकाले की सजा पाये हुए हैं अथवा जेल भी भेजे गये हैं और जो पूर्णतया नहीं तो खासतौर से राजाओं और उनके शासन के प्रति द्वेषपूर्ण भावना रखते हैं। निःसन्देह जयनारायण जी व्यास राजाशाही की आलोचना निर्दयतापूर्वक करने में किसी से पीछे नहीं रहे हैं। लेकिन वे पक्के ईमानदार हैं। उनको कोई भ्रष्ट नहीं कर सकता। वे अपनी राजनीतिक मान्यताओं और आत्मा के प्रति सत्यनिष्ठ हैं। हज़ारों धोखेवाज़, चरित्रहीन और वेईमानी किराये के ऐसे टट्टुओं के होते हुए जो कि अपने-आपको भले ही राजनीति विशारद कहते हों और देशी रजवाड़ों की भोली जनता को वहकाये रहते हों, आप मुश्किल से ही किसी को व्यास जी जैसा पवित्र पावेंगे। जो राजाओं के प्रति जन्मजात घृणा और दुर्भावना रखते हुए भी ईमानदार हो और देशी रियासतों का शासन ठीक तरह से चलाकर भलाई करने की क्षमता रखता हो। मैं आशा करता हूं कि आप मुझसे सहमत होंगे कि रियासतों की वे हुकूमतें जिनकी आज हम देखभाल करते हैं। अन्ततः हमारे इन्हीं दुश्मनों के हाथों में जाकर रुकेंगी। ऐसी स्थिति में हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम यह ध्यान रखें कि विरोधी खेमों में से भले आदमी *आगे आवें और जब हम हटें तो वे शासन की वागडोर संभाल लें। सिर्फ व्यास जयनाराण* जी ऐसे आदमी हैं जो अपने हज़ारों साथियों पर अपने उच्चादर्शों का असर रखते हैं और राजपूताना के सभी वर्गों में जिनका स्थान है। वे हमसे सहमत हों अथवा न हों लेकिन उनमें ज़िम्मेदारी का निश्चित माद्दा है, जिससे ऊपर उनकी न्यायप्रियता पर भरोसा किया जा सकता है। आप और आपके दूसरे साथी जो मारवाड़ राज्य को खतरनाक स्थिति में डालना नहीं चाहते होंगे, महसूस करेंगे कि व्यास जयनारायण जैसे व्यक्तियों की, वहां की जनता को संभालने की उस समय वहुत आवश्यकता होगी जव आप लोग प्रशासन में नहीं रहेंगे। उक्त तथ्यों के आधार पर मैं आपसे निवेदन करता हूं कि आप अपने वुरे से वुरे दुश्मन के प्रति भी न्याय भावना रखें। उस (दुश्मन) के प्रति नहीं और न ही उसके साथियों के प्रति किन्तु जिस क्षेत्र का आप आज शासन चला रहे हैं उसकी शान्ति और सुरक्षा के लिए आपको यह करना चाहिए।

"श्री जयनारायण व्यास जैसा आप भी जानते होंगे एक गरीव घर में पैदा हुए हैं और इसलिए हमेशा आर्थिक दिक्कत में से गुज़रते रहते हैं। अपने कई दूसरे साथियों और हमराहियों की तरह वे 'व्लैक मेलिंग' अथवा अनीति से आर्थिक लाभ

उठाने में विश्वास नहीं करते। उनका दुर्भाग्य है कि उनके अच्छे मित्र भी जिनका वे पूर्ण विश्वास कर लेते हैं, अक्सर उनके साथ धोखा कर जाते हैं और वे इतने सीधे हैं कि इन धोखों को अवश्यम्भावी मान लेते हैं और राजनीतिक दाव-पेच में विश्वास नहीं रखते। इसलिए उनको ऐसे लोगों से जो उनके मित्र होने का दावा करते हैं, बहुत कष्ट उठाना पड़ा है और कई बार के धोखों ने उन्हें 'अखंड भारत' बन्द कर देने को मजबूर कर दिया है। वे सम्भवत: लेखक अथवा एक्टर की हैसियत से सिनेमा में जाने की तैयारी में हैं। मुझे यह भी पता लगा है कि वे अच्छे नृत्यकार भी हैं।

"मैं जब सोचता हूं कि जयनारायण जी व्यास राजनीति छोड़कर सिनेमा में जाना चाहते हैं तो मेरा हृदय खून के आंसू रोता है। वे मेरे बड़े से बड़े दुश्मन रहे हैं। फिर भी मेरी मान्यता है कि वे पवित्र व्यक्ति हैं और उनके अथक परिश्रम से किसी न किसी दिन राजपूताना के इन रेगिस्तानी इलाकों में शान्ति और खुशहाली आयगी। आज उनकी असफलता पर सम्भवत: हम खुश हो लें, लेकिन वह दिन अधिक दूर नहीं है जब हम महसूस करेंगे कि हमारे हट जाने से रिक्त हुए स्थान की पूर्ति के लिये वे ही सबसे अधिक उपयुक्त व्यक्ति हैं।

"मैंने अपनी आन्तरिक प्रेरणा से फलोदी के रायसाहब की मार्फत जो हम दोनों के मित्र हैं, सिनेमा में भर्ती न होने का व्यास जयनारायण जी से आग्रह किया था। असहाय की तरह स्वयं निर्मित इस व्यक्ति के फिल्मी धनिकों के चक्कर में यों पड़ जाने के ख्याल मात्र से मेरा सिर चकरा जाता है। मैंने आर्थिक मदद भी देनी चाही थी, जिसे उन्होंने दृढ़ता से अस्वीकार कर दिया। मेरे पास इस पर आपको लिखने के सिवा कोई चारा नहीं रहा। मेरा ख्याल है कि व्यास जयनारायण जी जोधपुर में आकर अपने भावी कार्यक्रम में जुट सकते हैं, यदि उन्हें जोधपुर में प्रवेश करने दिया जाय बल्कि प्राशसकीय समस्याओं में उनका सहयोग लिया जाय तो और भी उत्तम हो।

"अपनी बात के स्पष्टीकरण के लिये थोड़ा और कहना ज़रूरी समझता हूं। मेरी इच्छा है कि एक आत्म-निर्भर, ईमानदार और सत्यनिष्ठ व्यक्ति को राजपूताना के साथ जोड़े रखने में सब तरह मदद करनी चाहिए ताकि ज़रूरत के समय वह काम आ सके। मेरी साध रही है कि मैं व्यास जयनारायण जी को साथ लेता और सिर्फ हम दोनों राजस्थान के उड़ते हुए बालू रेत के टीलों पर बैठ जाते। उन्होंने जो मुझे अक्सर प्रेस और प्लेटफार्म के ज़रिए बुरी-बुरी गालियां दी हैं उन पर उनसे वहां दिल खोलकर बात करता। हम असहमाति के लिये असहमत होते परन्तु जुदा होने वाली और विरोधी दिशा में बहने वाली दो लहरों पर खड़े होकर भी हम हमारे मस्तिष्क के भ्रम और गलतियों के बावजूद लाखों लोगों की भलाई व समाज की तरक्की के बारे में अपने-अपने दृष्टिकोण से ही सही, समानभाव

का अनुभव अवश्य करते। यह सही है कि हम दोनों भिन्न-भिन्न स्वार्थों का प्रतिनिधित्व करते हैं। फिर भी इस बात पर विश्वास करने का कोई कारण नहीं दीखता कि स्वार्थ यदि टकराते भी हों तो इसका यह अर्थ कदापि नहीं हो सकता कि एक पक्ष के हित कतई मिटा दिये जायं।"

इस पत्र में व्यास जी का व्यक्तित्व, चरित्र और कर्तृत्व जिस रूप में देदीप्यमान होता है, उसके सम्बन्ध में अधिक लिखना अनावश्यक है। व्यास जी की जोशीली कार्यशैली, अदम्य उत्साह, बेदाग़ चरित्र, समझौताहीन वृत्ति, एकमात्र जनहित की दृष्टि, घोरतम आर्थिक संकट में भी किसी भी कीमत पर भ्रष्ट न होने वाला निष्कलंक पवित्र जीवन, अपने एकाकी श्रम से आत्मनिर्माण की साधना, संकटों से जूझने का अभ्यासी हृदय और साथियों के विश्वासघात तथा मित्रद्रोह को क्षमाकर उदारता तथा सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति आदि विशिष्ट गुणों का इस पत्र में जो सजीव चित्र उपस्थिति किया गया है, उससे अधिक उत्कृष्ट चित्र कदाचित् उनका कोई परम स्नेही भी उपस्थित नहीं कर सकता। यह थी अमिट छाप जो उन्होंने अपने शत्रु माने गये कट्टर-से-कट्टर विरोधियों के हृदय पर अंकित की थी।

दैनिक 'अखंड भारत' की साधना

व्यास जी जन्मजात पत्रकार थे। पत्रकारिता उनके लिये जीवन निर्वाह का धंधा नहीं; प्रत्युत मिशनरी जीवन का ऐसा सत्य-संकल्प था, जिसकी पूर्ति में वे पूरी लगन, धुन, सच्चाई व ईमानदारी से आजीवन लगे रहे। १९२० में 'पुष्करणेन्दु', 'पुष्करणा ब्राह्मणोपकारक' और 'पुष्करणा' मासिक पत्रों के सम्पादक के रूप में उनके यशस्वी पत्रकार जीवन का आरम्भ हुआ। ब्यावर में रहते हुए 'तरुण राजस्थान' के संचालन व सम्पादन का दायित्व महात्मा गांधी के अत्यन्त विश्वस्त साथी राष्ट्रभिक्षु श्री मणिलाल जी कोठारी ने उनको सौंपा था।

उसके सम्पादन कार्य के लिये उन्होंने मुनिश्री चुन्नीलाल जी महाराज से व्यास जी को भिक्षा में मांगा था। तब वह जैन गुरुकुल तथा जैन समाज के सेवा कार्य में मुनिजी महाराज के निर्देशन में संलग्न थे। उस स्थिति में श्री मणिलाल कोठारी का ध्यान उनकी ओर जाना उनके विशिष्ट व्यक्तित्व एवं चरित्र का द्योतक है। राजस्थान सेवा-संघ के कार्य-कर्त्ताओं में परस्पर पैदा हुआ मतभेद गृह-कलह का रूप धारण कर चुका था और अजमेर का वातावरण भी विक्षुब्ध हो गया था। उसको सुधारने के लिये जो व्यवस्था उन्होंने की थी उसका दायित्व व्यासजी पर ही डाला गया था। व्यास जी का कार्य 'तरुण राजस्थान' के सम्पादन तक ही सीमित न था; प्रत्युत उनका प्रभाव समूचे अजमेर, मेरवाड़ा तथा राजस्थान पर छाया था। इस सम्बन्ध में व्यास जी के उन दिनों के सहायक श्री अचलेश्वरप्रसाद जी शर्मा का अनुभूतिपूर्ण संस्मरण उल्लेखनीय है। १९३५-३६ में बम्बई से दैनिक 'अखंड भारत' का प्रकाशन व सम्पादन किया। १९३६-३७ में ब्यावर से राजस्थानी भाषा का

'आगीवान' पाक्षिक निकाला। १९४७ में दिल्ली से 'लोकराज' और जीवन के अन्तिम दिनों में अंग्रेज़ी पाक्षिक 'पीप' का संचालन व सम्पादन किया। 'वीर दुर्गादास', 'प्रजा सेवक' और 'रियासती' आदि अनेक पत्र व्यासजी की प्रेरणा पर प्रकाशित किये गये। इन सभी पत्रों की अपनी कहानी है और अनेक संस्मरणों में उनका उल्लेख सगौरव किया गया है। सभी पत्रों की रीति-नीति सर्वथा स्पष्ट निर्भीक और निष्पक्ष थी। 'तरुण राजस्थान' के सम्पादन के समय ये जैन मुनियों के साथ जैन साहित्य के प्रकाशन का कार्य भी किया करते थे। दोनों स्थानों से पचास-पचास रुपया महीना देना तय था। परन्तु उनकी वृत्ति कुछ ऐसी निस्पृह थी कि जिस स्थान से पहले पचास रुपये मिल जाते, उस पर संतोष कर दूसरे स्थान से पचास रुपये नहीं लेते थे और उनमें से भी अधिकांश अपने सहकर्मियों पर खर्च कर डालते थे। दैनिक 'अखंड भारत' का संचालन व सम्पादन उनके लिये परम साधना तथा घोर तपस्या ही था। उनकी भी गौरवपूर्ण विस्तृत कहानी उनके भुक्त-भोगी अनेक साथियों ने लिखी है।

उन दिनों वे जैसा कठोर साधनामय जीवन विता रहे थे, उसका विवरण अत्यन्त रोमांचकारी है। उनके जीवन संगी 'पोलोविक्ट्री' के श्री केशोभाई ने उनके उन दिनों के बम्बई जीवन का जो चित्र उपस्थित किया है, उसकी कल्पना तक नहीं की जा सकती। उस साधनामय कठोर जीवन के तो वे अभ्यासी ही बन चुके थे। इसीलिए 'अखंड भारत' के दिनों में भी उनको वैसा ही कठोर जीवन विताना कुछ दूभर प्रतीत नहीं हुआ। परन्तु 'अखंड भारत' का बन्द होना उनके लिये मर्मान्तक वेदना का कारण केवल इसलिए बना कि उनके हृदय में उसके लिये अपनी सन्तान से भी कहीं अधिक स्नेह था। महाराजा सर गंगासिंह जी ने अपने पत्र में उसके बन्द होने पर उनकी मनःस्थिति का जो चित्र उपस्थित किया है, वह अक्षरशः यथार्थ है। फलोदी के राय साहब थानवी के द्वारा महाराज साहब ने उनको 'अखंड भारत' को चालू रखने के लिये एक लाख रुपये अर्पित करने का प्रस्ताव किया था। लेकिन, उन्होंने यह कहकह इन्कार कर दिया कि "अपने दुश्मन की तलवार हाथ में ले उससे लड़ने की अपेक्षा अपनी टूटी तलवार से लड़ना मुझको कहीं अधिक पसन्द है।" यह था उनका दृढ़ संकल्प जिस पर वे सत्य हरिश्चन्द्र की तरह अडिग रहे। 'अखंड भारत' के डेढ़ वर्ष के जीवन की एक गर्वीली घटना चिरस्मरणीय रहेगी। वह यह कि उसके कारण चार राज्यों के राजाओं के सिंहासन डोल गये थे। उनको राज्य से अलग कर दिया गया था। अन्त में उसका प्रकाशन चालीस हजार का घाटा उठाकर बन्द कर देना पड़ा। प्रेस आदि सब सामान नीलाम कर दिया गया। व्यास जी ने सब हिसाब देखा तो बोले कि चालीस हज़ार में चार राजाओं का गद्दीच्युत होना कोई घाटे का सौदा नहीं है। दस हज़ार में एक राजा गद्दीच्युत होने का हिसाब बिल्कुल ठीक है।

उन्होंने तुरन्त एक कविता लिख डाली। उसकी पहली पंक्तियां ये थीं :

"मैंने अपने हाथों ही जब अपनी चिता जलाई,
देख-देख लपटें मैं हंसता तू क्यों रोता भाई।"

यह थी सत्य संकल्पी और दृढ़व्रती व्यास जी की अडिग वृत्ति। उस पर वे आजीवन कायम रहे। राजस्थान के मुख्यमन्त्री के पद को त्यागते हुए भी उन्होंने यही कविता पढ़ी थी। यह भी एक संयोग ही था कि महाराजा सर गंगासिंह जी के शब्दों में यदि 'अखंड भारत' साथियों के मित्रद्रोह तथा विश्वासघात के कारण बन्द हुआ था, तो वैसे ही मित्रद्रोह व विश्वासघात राजस्थान के मुख्यमन्त्री के पद से अलग होने का निमित्त बना।

व्यास जी ने राजस्थान को जितने संवाददाता, पत्रकार, राजनीतिक कार्यकर्त्ता और रचनात्मक कार्य में अपने को खपा देने वाले प्रदान किये उतने कोई दूसरा नहीं दे सदा। वस्तुत: उन्होंने अपने विशिष्ट सार्वजनिक पत्रकार जीवन का प्रारम्भ अनेक पत्रों के संवाददाता के रूप में किया था। उनसे प्रेरणा प्राप्त कर कितने ही संवाददाता जहां-तहां पनप उठे। उनके प्रशिक्षण की अजमेर जेल में जो व्यवस्था उन्होंने की थी, उसका उल्लेख पहले किया जा चुका है। अपने संवाददाता के कर्त्तव्य के प्रति वे जैसे जागरूक थे, उसका विवरण गुजराती दैनिक पत्र के सम्पादक श्री मोहनलाल मेहता ने अपने संस्मरणों में दिया है। अपने साथियों से भी वह उसी रूप में काम लिया करते थे। बीकानेर के यशस्वी नेता श्री रघुवरदयाल जी जब लूणकरणसर में नज़रबन्द किये गये थे, तब वहां करौली के श्री चिरंजीलाल जी शर्मा को जाट के छद्म वेश में उनके समाचार जानने के लिये भेजा गया था। यह थी व्यास जी की जागरूक कार्यशैली अपने साथियों से काम लेने की।

अत्यन्त कटु अनुभव

'अखंड भारत' के सम्पादन व संचालन में जो उतार-चढ़ाव आये उनकी भी चर्चा कुछ साथियों ने अपने संस्मरणों में की है। व्यास जी ने एक अत्यन्त कटु अनुभव का उल्लेख इन शब्दों में किया था कि "हम सफलता के करीब किनारे पर थे और ज़्यादा सुरक्षित होने के लिये हमने एक-दूसरे मित्र से आठ हज़ार रुपये और कर्ज लिये। यह रुपये मेरे बैंक एकाउंट में जमा होने वाले थे। लेकिन मेरे एक मित्र के कहने पर जिनके जिम्मे व्यवस्था थी और चूंकि मेरे एक साथी के उनके साथ व्यावसायिक सम्बन्ध थे, उनके इस विश्वास और शर्त पर रुपये उनके पास रहने दिये गये कि कर्मचारियों के वेतन का भुगतान यथासमय होता रहेगा। न तो वह रुपया और न कभी उसका हिसाब ही मुझे दिया गया। सारे स्टाफ ने हड़ताल कर दी और कम्पनी को समाप्त कर देना पड़ा। उस व्यक्ति से जिसके साथ मेरे बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध थे इस प्रकार के व्यवहार की आशा नहीं थी। इससे मुझे बहुत धक्का लगा। समाचार-पत्र का काम बन्द कर दिया गया, जो छापाखाना चालीस

या पैंतालीस हज़ार की कीमत का था वह सिर्फ आठ हज़ार या उसके करीव में नीलाम हुआ।"

अपने अत्यन्त विश्वसनीय मित्रों से भी व्यास जी को पग-पग पर जो विश्वास-घात भोगना पड़ा, उसका यह एक ज्वलन्त उदाहरण है। महाराजा गंगासिंह जी ने इस सम्बन्ध में अपने ऐतिहासिक पत्र में जो पंक्तियां लिखी हैं, उनका समर्थन व्यास जी के इस कटु अनुभव से हो जाता है।

सिनेमा व्यवसाय को अपनाने की तैयारी

दैनिक 'अखंड भारत' के साहित्यिक जीवन का अंत अत्यन्त दुःखपूर्ण होने पर भी व्यास जी न तों निराश हुए और न उन्होंने हिम्मत हारी। महाराजा गंगासिंह जी ने लिखा था कि राजनीति को तिलांजलि देकर व्यास जी सरीखे पवित्र व्यक्ति के सिनेमा में जाने की वात सुनते ही 'मेरा हृदय खून के आंसू रोता है।' परन्तु व्यास जी का हृदय इतना कठोर था अथवा साहित्य के साथ-साथ संगीत व कला में उनका इतना अनुराग था कि सिनेमा जगत् में प्रवेश करने में उनको किसी प्रकार का संकोच अनुभव नहीं हुआ। जीवन के विषम से विषम उतार-चढ़ाव को भी अनिवार्य मानकर वे हंसते-खेलते झेल लेते थे। वैसा ही विषम उतार उनके जीवन में तव उपस्थित हुआ था। उसके सम्बन्ध में भी उन्होंने लिखा है कि "मेरा एक मित्र पहले ही फिल्म व्यवसाय में गया हुआ था। मैं स्वयं भी जाने को इच्छुक था, अतः मैंने फिल्म पत्रिकाओं के लिये कुछ लिखना शुरू किया। मेरी रचनाएं पसंद की गईं। कुछ समय वाद अजमेर का एक परिचित मित्र मेरे पास आया जो जवलपुर के एक स्टूडियो का डाइरेक्टर था। मैंने अभिनेता बनने का फैसला कर लिया और उसके बुलाने की राह देखने लगा। पर स्टूडियो के मालिकों के घरेलू मुकदमों के कारण बुलावे में देरी हो गई। इस वीच में मुझे जोधपुर जाना पड़ा। उसी समय मुझे रायसाहव सांगीदास जी मिले। वे यह सुनकर वहुत दुःखी हुए कि मैंने अभिनेता वनने के लिये फिल्म कम्पनी का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है, यह वात सब जगह प्रकट भी हो गई थी। अतः मेरे जोधपुर रवाना होने के पूर्व उन्होंने मुझसे यह वचन मांगा कि मैं इस व्यवसाय में जाने का विचार छोड़ दूं। मैंने उनसे कहा यदि वुलावा एक महीने के भीतर नहीं आया तो मैं अपने मित्र को हमारा समझौता रद्द करने के लिये लिख दूंगा। पर दरअसल हुआ यह कि जव मैं जोधपुर पहुंचा तो मुझे पाली में ही राज्य से निर्वासित होने का आदेश दिया गया। परन्तु मैंने जोधपुर में ही रहकर कार्य करने का फैसला किया। श्री हरिभाऊ उपाध्याय सिवड़ी में मेरी चाल में आये थे। उन्होंने भी मुझे सिनेमा व्यवसाय में न जाने का परामर्श दिया था। मैं उनकी इस राय से सहमत नहीं हुआ। उन्होंने एक जन कार्यकर्त्ता के फिल्म में उतरने के विरुद्ध एक लेख लिखकर प्रकाशित करवाया और उसमें यह सुझाव दिया कि एक जन-कार्यकर्त्ता को चौबीस घण्टे का कार्यकर्त्ता होना चाहिए तव मैंने भी उसके उत्तर

में एक करारा जवाव छपवाया। यह विवाद भी वड़ा दिलचस्प था। 'जन्मभूमि' पत्र ने भी सिनेमा व्यवसाय में मेरे प्रविष्ट होने के विचार को पसन्द नहीं किया था। चाहे उपर्युक्त विरोध के कारण, चाहे जोधपुर सरकार के अधिकारियों द्वारा मेरे प्रति कठोर व्यवहार के कारण, कुछ भी समझा जाय, मैंने अपनी पूरी शक्ति को राजस्थान में ही रहकर देशी रियासतों के काम में लगा देने का फैसला कर लिया। इस तरह फिल्म अभिनेता वनने की मेरी अभिलापा और मेरे प्रयत्न कारगर न हो सके।"

कहना यह चाहिए कि व्यास जी के व्यक्तिगत भाग्य की अपेक्षा राजस्थान तथा समूचे देशी राज्योंकी जनता का भाग्य कुछ अधिक उज्ज्वल था और अभिनेता वनने की अपेक्षा उनकी भाग्य रेखा में लोक नेता वनने का भविष्य ही अंकित था। अभिनेता वनकर व्यास जी सिने जगत् में निश्चय ही चमक सकते थे और कदाचित् लखपति भी वन सकते थे; परन्तु राजस्थान तथा देशी राज्यों की जनता के भाग्य विधाता बनकर उन्होंने जिस अमर पद को प्राप्त किया, वह उन्हें तव प्राप्त न हुआ होता। कुल मिलाकर वह घाटे में नहीं रहे और श्री हरिभाऊ जी उपाध्याय की प्रकारान्तर से उनके सम्बन्ध में प्रकट की गई भविष्यवाणी सत्य-सिद्ध हुई। व्यासजी आजीवन चौवीसों घण्टे 'जनसेवक' ही वने रहे। अखण्ड सेवा-व्रत की धूनी रमाकर उन्होंने जिस अखंड महायज्ञ का अनुष्ठान किया, उसका गौरवशाली विवरण पाठकों को प्रस्तुत ग्रन्थ में यत्र-तत्र पढ़ने को मिलेगा।

राजस्थानी जीवन और भारतीय राष्ट्रीयता के प्रतीक

उत्कट हिन्दी प्रेमी और हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन देखने के लिये उत्सुक होते हुए भी व्यासजी प्रादेशिक भाषाओं को अपने क्षेत्र में पूरी तरह फलता-फूलता देखना चाहते थे। इसी कारण राजस्थानी भाषा, राजस्थानी साहित्य, राजस्थानी कला और राजस्थानी संस्कृति की पृथक् व स्वतंत्र सत्ता को स्वीकार करते हुए उनके प्रवल समर्थक थे। राजस्थानी भाषा में उन्होंने जितना लिखा इतना वहुत कम लोगों ने लिखा होगा। जनता के साथ उसी की भाषा में वात करने के वे अभ्यासी थे। समाज-सुधार और राजनीतिक जागृति के अपने कार्य का माध्यम उन्होंने मुख्यत: राजस्थानी को वनाया था। उन द्वारा रचित सम्पूर्ण साहित्य की प्रेरक अंतर्भावना समाज-सुधार और राजनीतिक जागृति ही थी। मारवाड़ लोक-परिषद् के प्रचार का माध्यम भी उन्होंने राजस्थानी को ही वनाया था। उन दिनों के उनके गीत, कविताएं, लेख छोटी-वड़ी पुस्तकें और कहानियां, नाटक व उपन्यास प्राय: सव राजस्थानी में ही लिखे गये थे। राजस्थानी कला के तो वे मर्मज्ञ ही थे। उनके संगीत व नृत्य की पृष्ठभूमि पूर्णत: राजस्थानी थी और राजस्थानी जनता के भाव अभियोग एवं दीन-हीन तथा पराधीन स्थिति की उनकी कला उपासना में स्पष्ट झांकी मिलती थी। उनका वेगार नृत्य समस्त राजस्थान में प्रचलित वेगार

प्रथा का कैसा मर्मस्पर्शी दृश्य उपस्थित करता था। वह उनकी अपनी ही मौलिक सूझ थी। जब वे 'तांडव नृत्य का' प्रदर्शन करते थे, तब शिव लीला का विराट् दृश्य उपस्थित कर देते थे। उनका हिटलर नृत्य एकतंत्री सामन्तवाद का रूपक था। अनेक प्रसंगों पर उन्होंने अपने शासकीय नेतापन की पद प्रतिष्ठा की तनिक भी परवाह न कर नृत्यकार के जिस कौशल का प्रदर्शन किया उस पर दर्शक दांतों तले अंगुली दबा रह जाते थे। चंबल योजना के संबंध में जो नृत्य नाटिका उन्होंने तैयार कराई थी, वह उनके कलात्मक सूझ-बूझ का ज्वलन्त उदाहरण थी। उनका प्रदर्शन जयपुर के बाद समस्त राजस्थान और मध्य भारत में व्यापक रूप में किया गया था। लोक-कला-मण्डल के प्रवर्त्तक श्री देवीलालजी सामर और राजस्थानी पुरातत्त्व के शोधकार्य में संलग्न श्री पुरुषोत्तम लाल मेनारिया ने उनके कलाकार रूप का बड़ा ही सुन्दर एवं आकर्षक चित्र उपस्थित किया है। मुख्यतः राष्ट्रवादी होने के कारण उनकी रचनाएं वीर रस प्रधान हैं; परन्तु उनमें हास्य रस का भी अद्भुत पुट विद्यमान् है। वे स्वभावतः विनोदप्रिय थे, मनहूसियत उनको कभी स्पर्श ही न कर पाई थी। 'पोपाबाई की पोल' उनकी उत्कृष्ट हास्य प्रधान रचना थी, जो गम्भीर व गूढ़ राजनीतिक अभिप्राय से लिखी गई थी। इसी प्रकार के अनेक गीत व कविताएं उन्होंने मारवाड़-लोक-परिषद् के प्रचार कार्य के लिये लिखी थीं और वे घर-घर में जनता की ज़बान पर आंदोलन के नारों के रूप में चढ़ गई थीं। उनमें उत्तरदायी शासन, प्रजातन्त्र तथा समाजवाद का आदर्श अत्यन्त स्पष्ट तथा उत्कृष्ट रूप में विद्यमान् है। उनकी रचनाएं व्यंग्य और विनोद से ओत-प्रोत हैं। राजस्थानी भाषा, राजस्थानी साहित्य, राजस्थानी संस्कृति तथा राजस्थानी जीवन अथवा मारवाड़ी जीवन का गौरवशाली परम्परागत दैवी सम्पदा के व्यास जी अत्यन्त उत्कृष्ट उदाहरण थे। उनमें वह संकीर्णता, अनुदारता अथवा असहिष्णुता या पक्षपात का लवलेश भी नहीं था, जो आज जन्म जाति, धर्म सम्प्रदाय भाषावाद, जातिवाद, प्रदेशवाद अथवा क्षेत्रवाद आदि के नाम से हमारे राष्ट्रीय जीवन के लिये भीषण अभिशाप सिद्ध हो रहे हैं। उनके हृदय में उदारता, विशालता और सहिष्णुता आदर्श रूप में व्यापी हुई थी। इसी कारण वह भारतीय जीवन और भारतीय राष्ट्रवाद के भी ज्वलन्त प्रतीक थे।

व्यास जी रचित राजस्थानी साहित्य का कोई संग्रह नहीं किया जा सका और वह ऐसा बिखरा हुआ है कि उसका संग्रह करना बड़ा ही श्रमसाध्य हो गया है। उनके सुयोग्य पुत्र श्री देवनारायण व्यास ने अपने मासिक पत्र 'प्रेरणा' के अगस्त १९६३ के विशेषांक में उनकी कविताओं, गीतों तथा कुछ अन्य रचनाओं का संग्रह प्रकाशित करने का सराहनीय प्रयत्न किया था। किसी साहित्य-सेवी को व्यास जी के साहित्यिक जीवन और रचनाओं का विश्लेषणात्मक संग्रह तैयार करने का प्रयत्न करना चाहिए। सागर विश्वविद्यालय के श्री लक्ष्मीनारायण दुबे ने स्वर्गीय संसद् सदस्य

यशस्वी हिन्दी-सेवी पं० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के व्यक्तित्व और रचनाओं की एक सुन्दर मीमांसा लिखी है, जिसको हिन्दुस्तानी अकादमी इलाहाबाद ने प्रकाशित किया है। वैसा ही उद्योग राजस्थान विश्वविद्यालय या जोधपुर विश्वविद्यालय अथवा राजस्थान साहित्य अकादमी के किसी हिन्दी-प्रेमी को करना चाहिए। व्यास जी का साहित्यिक जीवन भी राजनीतिक जीवन के समान ही प्रेरक, आकर्षक और महत्त्वपूर्ण है। उनका साहित्य 'स्थायी महत्त्व रखता है। उनकी अनेक कविताएं तथा कहानियां और नाटक पाठ्य-पुस्तकों के लिये उपयोगी हो सकती हैं। नृत्य नाटिकाएं राजनीतिक जागृति का साधन बन सकती हैं। उनके कुछ अधिक गीत रिकार्डों में संगृहीत नहीं किये जा सके, जो भी किये जा सके हैं; वे राजनीतिक एवं सामाजिक दृष्टि से विशेष महत्त्व रखते हैं। उनका घर-घर में प्रचार व प्रसार होना चाहिए।

राजस्थान के प्रति उनकी जो मोहमाया और ममता थी उसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि राजस्थान के मुख्य मंत्री के पद त्यागने के बाद उनसे हिमाचल प्रदेश के उप-राज्यपाल का पद स्वीकार करने का प्रस्ताव किया गया। परन्तु उन्होंने उसको यह कह स्वीकार नहीं किया कि किसी भी ऐसे ऊंचे पद को स्वीकार करने की अपेक्षा वे राजस्थान के किसी नगर के चौराहे पर झाड़ू देना अधिक पसन्द करेंगे। तात्पर्य यह कि उनके सार्वजनिक जीवन का लक्ष्य लोकसेवा था, न कि कोई ऊंचा पद व प्रतिष्ठा हस्तगत करना। जब भी कभी किसी ऊंचे पद पर वह आसीन हुए, तब उनकी दृष्टि लोकसेवा पर ही लगी रही।

हिन्दी की सेवा

'राजस्थानी' के पोषक होते हुए भी उन्होंने भारतीय संविधान परिषद् में हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन करने के लिये अन्त तक राजर्षि श्री पुरुषोत्तमदास जी टण्डन का पूरी श्रद्धा व निष्ठा से साथ दिया। राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त पहले राजभाषा आयोग के सदस्य के नाते उन्होंने हिन्दी के सम्बन्ध में जो कार्य किया उसका विवरण केन्द्रीय उपशिक्षा मंत्री श्री भक्तदर्शन जी ने अपने प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर उपस्थित किया है।

अपने व्यापक राष्ट्रवादी जीवन व्यवहार और दृष्टिकोण के ही कारण उन्होंने राजस्थान के बाहर अखिल भारतीय कांग्रेसी क्षेत्रों में भी अपना विशिष्ट स्थान बना लिया था। अनेक बार अनेक राज्यों की गम्भीर स्थिति तथा समस्याओं को हल करने का उत्तरदायित्व उनको सौंपा गया। उसको उन्होंने पूरी जिम्मेवारी से निभाया। कांग्रेस के संगठन में आजकल जो यादवी छाई हुई है, उसके कारण सभी राज्यों में कम-अधिक कुछ ऐसी विषम स्थिति पैदा हो गई है कि कोई भी चुनाव बिना मतभेद व संघर्ष के सम्पन्न होने सम्भव नहीं रहे। बिहार में मतभेद और संघर्ष ने बड़ा ही उग्र रूप धारण कर लिया था। वहां का जांच कार्य उनको सौंपा

गया था। उसको उन्होंने जिस तत्परता से सम्पन्न किया और सन्देह का कोई अवसर पैदा न होने के लिये जिस सावधानी से काम लिया, उसका सुन्दर चित्र कलकत्ता के सामाजिक कार्यकर्ता बाबू बजरंगलाल जी लाठ ने उपस्थित किया है।

रचनात्मक दृष्टिकोण

अपने सार्वजनिक जीवन और शासन में भी उन्होंने जिस व्यापक रचनात्मक दृष्टिकोण को अपनाया, उसकी भी सराहना अनेक संस्मरणों में एकमत से की गई है। पहले जोधपुर और बाद में राजस्थान के शासन की बागडोर उनके हाथों में कुछ अधिक समय नही रह सकी। जोधपुर राज्य में थोड़े ही समय में उन्होंने जो चमत्कार कर दिखाया, उसका उल्लेख गौरवपूर्ण शब्दों में माननीय श्री रामनिवास जी मिर्धा ने किया है। जोधपुर राज्य के शासन-सूत्र अपने हाथ में संभालते ही उन्होंने एक साहसपूर्ण कदम यह उठाया था कि राज्य पर केन्द्र द्वारा बाहर से थोपे गये अधिकारियों को उन्होंने यह नोटिस दे दिया था कि उन्हें नियत अवधि में स्थानीय अधिकारियों को शासन कार्य में दक्ष बना देना चाहिए। उसके बाद उनको वहां लौट जाना होगा, जहां से वे भेजे गये हैं। उनके ऐसे ही कार्यों पर कुपित होकर बाहर के अधिकारियों ने उनके विरुद्ध वह षड्यंत्र रचा था, जिसने जोधपुर मुकदमे का रूप धारण किया था। उनके ऐसे कार्यों में निहित भावना यह थी कि वह जोधपुर के लोगों को दूसरों के मुकाबले में हीन नहीं समझते थे और न दूसरों को भी उन्हें हीन समझने का अवसर देना चाहते थे। यही भावना उनकी तब रही, जब वे राजस्थान के मुख्यमंत्री के पद पर प्रतिष्ठित किये गये। जोधपुर अथवा राजस्थान की पक्षपात-जन्य कोई संकीर्ण भावना उनके हृदय में कभी नही रही। ऐसा एक भी उदाहरण मिलना मुश्किल है, जब उन्होंने ऐसी किसी संकीर्णता के वशीभूत हो कोई कदम उठाया हो।

कांग्रेस की रचनात्मक आर्थिक योजनाओं, विशेषतः कुटीर ग्रामोद्योगों पर उनकी दृष्टि सदा लगी रही। शासकीय आधार पर उन्होंने जिस खादी बोर्ड के संगठन का शुभारम्भ किया था। वह बड़ा तपयोगी सिद्ध हुआ है। राजस्थान की रचनात्मक प्रवृत्तियों में संलग्न संस्थाओं का एक केन्द्रीय संगठन संस्था संघ के नाम से गठित किया गया है। उसके अध्यक्ष श्री रामेश्वर जी आग्रवाल ने यह स्वीवार किया है कि उसको प्राणवान बनाने में व्यास जी का सहयोग बहुमूल्य सिद्ध हुआ। टेढ़ी से टेढ़ी समस्या और उग्र से उग्र मतभेद को सरलता और विनोदभाव से हल करने में उनको कमाल हासिल था।

जोधपुर जैसलमेर का क्षेत्र अधिकतर दुर्भिक्ष पीड़ित रहता है और उस क्षेत्र में उद्योग-धन्धों के विकास के लिये भी कुछ अधिक अनुकूलता नहीं है। इसी कारण व्यास जी ने मारवाड़-खादी मंडल का गठन करके उस क्षेत्र में खादी उत्पादन के कार्य को विशेष प्रोत्साहन दिया। रचनात्मक दृष्टि से गठित 'सांकड़ा केन्द्र' का कार्य

तथा उसका परिणाम चिरकाल तक उनकी रचनात्मक क्षमता की साक्षी देते रहेंगे। उस क्षेत्र का इस केन्द्र द्वारा उन्होंने चमत्कारपूर्ण जो कायाकल्प किया और जन्म-जात डाकुओं को डकैती आदि से अलग करके उनको नागरिक जीवन का जिस प्रकार अभ्यासी बनाया, उसकी सराहना वहां के अनेक निवासियों ने अपने संस्मरणों में मुक्तकंठ से की है। जिस क्षेत्र में दिन में भी आना-जाना संकट से रहित न था, उसमें अब मध्यरात्रि में भी निर्भयतापूर्वक सुरक्षित आना-जाना सम्भव हो गया है। नौकरशाही शासन के कुचक्र के कारण सन्त विनोबा मध्यप्रदेश की चम्बलघाटी की जिस डाकू समस्या को हल नहीं कर सके उसको सांकड़ा क्षेत्र में व्यास जी ने अपनी सेवा साधना से सफल कर दिखाया। वहां प्रति वर्ष ३० जनवरी को आयोजित गांधी मेला उनकी मौलिक रचनात्मक प्रतिभा का द्योतक था। इसी रचनात्मक दृष्टि से उनकी ज्ञानमन्दिर योजना के महत्त्व को आंका जाना चाहिए। संसद् सदस्य डा० लक्ष्मीमल सिंघवी ने अपनी व्यक्तिगत अनुभूति के आधार पर उसका यथार्थ चित्र उपस्थित किया है। व्यास जी का यह निश्चित मत था कि जनता को सज्ञान, सजग और सचेत किये बिना प्रजातन्त्र का प्रयोग सफल नहीं हो सकता। अज्ञान के अन्धकार में पड़ी जनता उसके लिये हमेशा खतरा ही बनी रहेगी। अपनी ज्ञानमान्दिर योजना द्वारा व्यास जी घर-घर में ज्ञानदीप उजागर कर देना चाहते थे। यह ज्ञानमन्दिर योजना उनकी रचनात्मक प्रतिभा से प्रेरित सबसे बड़ा ठोस कदम था।

प्रथम दर्शन की अमिट छाप

महाराष्ट्र के पुण्य तीर्थ पंढरपुर में सन् १९२६ में उनका मैंने जो प्रथम दर्शन किया था, उसकी अमिट छाप मेरे हृदय पर सदा बनी रही। निधन से कुछ ही समय पहले १ सितम्बर, १९६२ को दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की ओर से आयोजित अभिनन्दन समारोह में उन्होंने मेरे सम्बन्ध में जो भाव प्रकट किये थे, वे उनकी उस महानता के ही सूचक थे, जिसका परिचय मुझे पहले ही दर्शन में मिला था। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के तूफानी अधिवेशन पर उसके अध्यक्ष मनीषी श्री रामगोपाल जी मोहता के साथ वह वहां पधारे थे। वह अधि-वेशन 'तूफानी' इसलिए था कि माहेश्वरी समाज में कोलवार माहेश्वरी आन्दोलन के नाम से एक ऐसा सामाजिक तूफान उठ खड़ा हुआ था, जिसमें उसका सारा ही ढांचा हिल गया था। कुछ वर्षों तक उसमें गृह कलह की ऐसी स्थिति बनी रही, जिसमें अति निकटस्थ सगे-सम्बन्धियों के सब पारस्परिक सम्बन्ध प्रायः छूट से गये थे और एक-दूसरे के यहां आना-जाना भी बन्द हो गया था। माहेश्वरी महासभा के अस्तित्व के लिये भी एक खतरा पैदा हो गया था। उस तूफान की सान्ध्य वेला में पंढरपुर में उस अधिवेशन का आयोजन किया गया था। व्यास जी तब 'मास्टर जी' के नाम से पुकारे जाते थे और इसी रूप में वे मोहता जी के साथ पंढरपुर पधारे थे।

'मास्टर जी' नाम उनको जोधपुर में ही प्राप्त हो गया था। बीकानेर में उनके उस नाम पर एक और छाप लग गई थी। व्यास जी के अन्यतम साथी सेठ आनन्द-राज जी सुराणा उन दिनों बहुत मामूली स्थिति में जीवन यापन कर रहे थे। बारह रुपये मासिक पर बीकानेर रेलवे स्टेशन पर वे बुकिंग क्लर्क नियुक्त किये गये थे। उन्हीं की प्रेरणा से व्यास जी सेठ चांदमलजी के यहां बच्चों के शिक्षक नियुक्त होकर बीकानेर चले आये थे। कुछ समय बाद उन्होंने बीकानेर के सुप्रसिद्ध मोहता परिवार में शिक्षक का कार्य संभाल लिया। मोहता जी के छोटे भाई रायबहादुर सेठ शिवरतन जी मोहता के बड़े पुत्र श्री गिरधरलाल मोहता का उनको शिक्षक नियुक्त किया गया। व्यास जी और मोहता जी दोनों के लिये इस प्रकार जो अनुकूलता पैदा हुई, उस पर 'सोने में सुहागा' की कहावत चरितार्थ हो गई। दोनों स्वभावतः जन्मसिद्ध समाज-सुधारक और स्वतन्त्र विचारक थे। मोहता जी ने माहेश्वरी समाज में और व्यास जी ने पुष्करणा समाज में चहुंमुखी सामाजिक क्रान्ति की अलख जगाई थी। इसी दृष्टि से मोहता परिवार को व्यास जी सरीखे का शिक्षक के रूप में मिलना गंगा-जमुना के संगम का-सा महत्त्व रखता था।

एक और दृष्टि से भी यह मिलन महत्त्वपूर्ण था। सामाजिक दृष्टि से पुष्करणा और माहेश्वरी समाज में चोली-दामन का-सा सम्बन्ध सदियों से चला आता हैं। दोनों समाज कभी समाज-सुधार के कट्टर विरोधी, दकियानूसी और पुरातनपंथी थे। मोहता जी ने जब समाज-सुधार के क्षेत्र में प्रवेश किया था, तब उनको सबसे अधिक विरोध का सामना बीकानेर में पुष्करणा समाज का ही करना पड़ा था।

पंढरपुर की दो घटनाएं

मास्टर जी के विशिष्ट व्यक्तित्व और चहुंमुखी कर्तृत्व से सम्पन्न उत्कृष्ट चरित्र को प्रकट करने वाली पंढरपुर की दो घटनाओं को मैं कभी नहीं भूलता। उन घटनाओं में संगठन तथा आन्दोलन के सम्बन्ध में उनके स्वभावसिद्ध नेतृत्व की एक स्पष्ट झांकी हम सबको वहां देखने को मिली। उनके व्यक्तिगत जीवन की सरलता, सहृदयता तथा आत्मीयता के भी दर्शन करने को मिले। उनमें एक यह थी कि कुछ पुरातन पंथियों ने विधवा विवाह के प्रश्न पर समाज-सुधारकों को शास्त्रार्थ करने की खुली चुनौती दी थी। उस चुनौती के सैकड़ों हैंडबिल महासभा के पंडाल और प्रतिनिधियों के निवास-स्थान में बांटे गये थे। स्वर्गीय देशभक्त कुंवर चांदकरण जी शारदा ऐसी चुनौती का जवाब दिये बिना रह ही न सकते थे। उन्होंने कुछ साथियों को इकट्ठा किया और पुरातनपंथियों की सभा में उपस्थित हो उस चुनौती का मुंह तोड़ उत्तर देने का निश्चय किया। हम कुछ साथी व्यास जी के नेतृत्व में पुरातनपंथियों की सभा में उपस्थित होने के लिये अपने स्थान से विदा हुए। व्यास जी ने उस सभा में पहुंचकर जिस प्रकार अपने पक्ष की विधवा-विवाह के समर्थन के लिये व्यूह रचना की, उससे चुनौती देने वालों के

हौसले पस्त हो गये। अपने पक्ष के चार-पांच वक्ताओं को व्यास जी ने अलग-अलग धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक तथा व्यावहारिक आदि दृष्टियों से विधवा-विवाह के पक्ष में बोलने को तैयार किया और सभा के संयोजकों पर कुछ ऐसा रौब जमा दिया कि वे उनके वक्ताओं की सूची में से एक नाम भी कम नहीं कर सके। विधवा-विवाह-विरोधी सभा विधवा-विवाह-सम्मेलन के रूप में बदल गई। बड़ा भारी मोर्चा जीतने वाले विजयी सेनापति के रूप में व्यास जी साथियों सहित अपने स्थान को लौटे। चारों ओर हर किसी के मुंह पर विजयी सेनापति व्यास जी की ही चर्चा थी। मोहता जी उस विजय अभियान का समाचार सुन गद्गद हो गये। हममें से कोई भी यह नहीं जानता था कि व्यास जी के जिस रूप की उस दिन एक स्पष्ट झांकी दीख पड़ी थी, उसका विराट् रूप किसी दिन 'राजस्थान केसरी' या 'शेरे राजस्थान' के रूप में दीख पड़ेगा।

दूसरी घटना

दूसरी घटना का सम्बन्ध मेरे साथ व्यक्तिगत है। मैं पंजाबी हूं या राजस्थानी। यह प्रश्न प्रायः विवादास्पद बन जाता है। निःसन्देह जन्म से पंजाबी होते हुए भी मैं गुण-कर्म-स्वभाव से राजस्थानी ही हूं। पंढरपुर में भी साथियों में इसकी बड़ी चर्चा रही। एक दिन मज़ाक-मज़ाक में व्यास जी ने मुझे मारवाड़ी होने की दीक्षा देने की घोषणा कर दी। मित्रमंडली इकट्ठी हुई। मास्टर जी ने 'पुरोहित' का काम किया। मुझे विधिवत 'मारवाड़ी' होने की व्यवस्था दी गई। मारवाड़ी समाज की माहेश्वरी शाखा में मुझे शामिल किया गया और भाई कन्हैयालाल जी कलयंत्री के प्रस्ताव पर मुझे कलयंत्री बिरादरी का सदस्य बनाया गया। इस सारे सामाजिक नाटक के मुख्य सूत्रधार थे मास्टर जी। उनकी स्वभावसिद्ध सरलता, सहृदयता तथा आत्मीयता से मैं कुछ ऐसा प्रभावित हुआ कि उसी दिन उनके साथ स्नेह डोरी में बंधा गया। यह मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूं कि वह डोरी आजीवन निरन्तर सुदृढ़ ही हुई है। इस प्रकार व्यक्तिगत रूप में भी उनके जो दर्शन मैंने पहली बार पंढरपुर में किये थे, उनकी छाया भी सिने चित्र की तरह मेरे सामने बराबर बनी रहती है। यह प्रायः एक मत से स्वीकार किया जाता है कि अपने व्यक्तिगत व्यवहार में उन सरीखा स्नेही, सरल, निष्कपट और निःस्वार्थ साथी मिलना दुर्लभ है। इसका स्वाभाविक अनुभव प्राप्त करने का जैसा दावा मैं कर सकता हूं, वैसा बहुत ही कम कर सकेंगे। लगभग चालीस वर्ष का उनका परिचय मेरे जीवन का सबसे अधिक गर्वीला और गौरवशाली अध्याय है। उनके द्वारा मारवाड़ी की दीक्षा प्राप्त करना मैं अपना सबसे बड़ा सौभाग्य मानता हूं। उन सरीखा साथी, मास्टर और पुरोहित या 'गुरु' मिलना दुर्लभ है।

राजस्थान की अपार क्षति

वर्ष १९६३ समूचे देश और राजस्थान के लिये भी अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण सिद्ध

हुआ। देश ने राजेन्द्र बाबू सरीखे राष्ट्रनेता, राहुल जी सरीखे साहित्य-साधक, श्री शिवपूजनसहाय सरीखे कुशल शिक्षक, श्री सियारामशरण गुप्त सरीखे प्रतिभासम्पन्न साहित्यकार, महाशय कृष्ण सरीखे निर्भय पत्रकार, बाबू गुलाबराय सरीखे निष्पक्ष समीक्षक, श्री गोपालसिंह नेपाली सरीखे भावुक कवि और सुशीला दीदी सरीखी वीरांगना को खो दिया। राजस्थान को अपने तीन क्रान्तिकारी राष्ट्र महापुरुषों से वंचित होना पड़ा। लोकनायक श्री जयनारायण व्यास का दुःखद निधन १९६३ के पूर्व भाग में १४ मार्च को हुआ। भीलनायक श्री मोतीलाल तेजावत का ५ दिसम्बर और मनीषी मोहता जी का २८ दिसम्बर को। राजस्थान की क्रान्तिकारी वृत्ति जिन तीन राष्ट्र महापुरुषों में इस अदम्य रूप में प्रकट हुई थी। उनके निधन से कुछ ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे कि उसका सर्वस्व ही लुट गया हो। 'महान राजस्थान' के स्वप्नद्रष्टा लोकनायक ने अपने स्वप्न को मूर्तरूप में परिणत होते तो देख लिया किन्तु उसको सुसंगठित, विकसित और प्रगति के पथ पर द्रुतगति से अग्रसर होते देखना उनके भाग्य में बदा न था। यह कहा नहीं जा सकता कि राजस्थान की इस अपार क्षति की पूर्ति कब और कैसे होगी।

मनीषी मोहता जी

आधुनिक राजस्थान विशेषतः आधुनिक बीकानेर के निर्माताओं में मनीषी मोहता जी की गणना मुख्यरूप से की जानी चाहिए। उन्होंने मूक भाव से धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, विधवा-उद्धार, हरिजन सेवा एवं आध्यात्मिक साहित्य प्रकाशन आदि क्षेत्रों में जो ठोस कार्य किया उसका अपना ही इतिहास है। गीता संबंधी उनका मौलिक दृष्टिकोण और उसका स्पष्टीकरण लोकमान्यतिलक के गीता रहस्य की कोटि का है। मूक जीवन की तरह उनका महाप्रयाण भी मूक निधन से ही हुआ। अपने परिजनों को एक वसीयत द्वारा वह यह आदेश दे गये थे कि उनका कोई मूर्त स्मारक न बनाया जाये। फिर भी उनकी स्मृति आधुनिक राजस्थान के इतिहास में सदा अमिट रहेगी।

भीलनायक श्री तेजावत

भीलनायक तेजावत वैसे ही तेजस्वी थे जैसे कि लोकनायक व्यास और मनीषी मोहता जी। व्यास जी ने पुष्करणा समाज में और मोहता जी ने माहेश्वरी समाज में जिस राजनीतिक चेतना एवं सामाजिक जागृति का संचार किया था, उन्हीं का सूत्रपात तेजावत जी ने भीलों में व्यापक रूप में किया था। उनका जीवन भी वैसा ही तपस्वी, त्यागी व निस्पृह था जैसा कि व्यास जी का। उन्होंने भी उनके ही समान सामन्तशाही के हाथों घोर कष्ट-क्लेश सहन किये थे। इसी कारण उनका पुनीत स्मरण भी यहां किया जाना आवश्यक है।

ऐसे तेजस्वी भीलनायक का जन्म सम्भ्रान्त ओसवाल कुल में संवत् १९४४ में मेवाड़ के भौमट इलाके के कोलियारी गांव में हुआ। अपनी प्रारम्भिक आयु में

ही श्री तेजावत का साहसी स्वभाव व स्वाभिमान प्रकट होने लग गया था। मामूली-सी शिक्षा प्राप्त कर वह झाड़ोल गांव में एक दूकान पर मुनीम का कार्य करने लग गये। भौमट भीलों का इलाका है। मुनीमी करते-करते वह भीलों के सम्पर्क में आये, भीलों पर भौमट के जागीरदारों के अत्याचारों को देखकर वे संतप्त हो गये। जागीरदार भीलों के साथ पशु से भी बदतर व्यवहार करते थे। उन परिस्थितियों में भीतर ही भीतर विद्रोह उठना तो स्वाभाविक था। महाजन पुत्र युवक मुनीम ने विद्रोह का शंख फूंका और देखते ही देखते हजारों भील उसके झण्डे के नीचे आ गये। 'हासिल और हुक्म नहीं' के गगन भेदी नारों से भौमट का इलाका गूंज उठा। आसपास की पहड़ी रियासतों व जागीरदारों में भी वह आग तेज़ी से फैली। मेवाड़, सिरोही, ईडर, दांता, पालनपुर आदि के लाखों भील उनके नेतृत्व में विद्रोही बन गये।

अंग्रेज़ी राज्य के प्रतिनिधि को भी जब तेज़ी से सुलगती उस आग की आंच लगी, तब ईडर के पास स्थित ढडवाणा गांव में ७ मार्च सन् १६२२ को रेजीडेन्सी की भीलकोर ने भीलों की एक सभा पर गोलीवार किया। १२०० आदमी गोलियों से भून दिये गये, लाशें कुओं में डाल दी गई, ४-५ तो उनमें जिन्दा भी थीं। वह पंजाब के फौजी शासन के दिनों के जलियानवाला बाग के हत्याकांड की निर्मम पुनरावृत्ति ही थी। भीलों ने अपने नेता को किसी तरह बचा लिया तब श्री तेजावत फरार हो गये। श्री तेजावत की खोज प्रारम्भ हुई। सिरोही, दांता, रामगढ़ व मेवाड़ के सैकड़ों गांव जला डाले गये। प्रारम्भ में ज्ञानजी राजपूत का सिर काटकर प्रचार किया गया कि मोतीलाल मारा गया, परन्तु पता चला कि मोतीलाल जीवित हैं तो एक और मोतीलाल को गोली का निशाना बना घोषित किया गया कि मोतीलाल मारा गया है।

लगभग साढ़े सात वर्ष तक फरार रहने के बाद श्री मणिलाल कोठारी के परामर्श पर तेजावत गांधी जी से मिले और उनके आदेश पर खेड़ब्रह्म में अपने को ईडर की पुलिस के हवाले कर दिया। इस बीच श्री तेजावत ने भीलों में से चोरी तथा शराबखोरी आदि कई कुरीतियों को समाप्त करने में काफी सफलता प्राप्त की।

खेड़ब्रह्म में आत्मसमर्पण करने के बाद उनपर मुकदमा चला। अपराधी सिद्ध नहीं हुए। अन्य रियासतों ने भी उनको निरपराध पाया। परन्तु मेवाड़ रियासत ने उन्हें गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया। १६२६ से १६३६ तक उदयपुर की जेल में रहने के बाद वह छोड़ दिये गये, पर उनके पीछे गुप्तचर विभाग के सिपाही तैनात कर दिये गये और उदयपुर शहर में एक घर में उन्हें नज़रबन्द कर दिया गया।

मेवाड़ प्रजामंडल की स्थापना होने पर उनको पुनः जेल में डाल दिया गया।

१६४६ में जब पंडित नेहरू अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद् के अधिवेशन के अध्यक्ष होकर उदयपुर पधारे, तब वे जेल से मुक्त कर दिये गये। परन्तु भील क्षेत्र में गो-हत्या विरोधी आन्दोलन करने पर उन्हें पुनः गिरफ्तार कर लिया गया। कुछ समय बाद जेल से मुक्त कर दिया गया, परन्तु १४ अगस्त, सन् ४७ तक उनको शहर में एक मकान में नज़रबन्द रखा गया।

मामूली शिक्षा, महाजन का घर, भीलों का भयानक कार्यक्षेत्र, क्रान्तिकारी कारनामे, समाज-सुधार की ज्योति सदा जलाये रखना, निरन्तर कारावास तथा नज़र कैद, यही है उनके जीवन की व्यास जी ही सरीखी अमिट और अमर कहानी। भीलों में प्रख्यात 'मोता बावजी' प्रचार व प्रकाशन की आंधी से कोसों दूर, एक सच्चे सेनानी की तरह कार्य करते हुए दिसम्बर के पहले सप्ताह में ५ तारीख को स्वर्ग सिधार गये। यह एक सुयोग ही था कि तब अपने साथी उस वयोवृद्ध तपस्वी भीलनायक को अन्तिम विदाई देने के लिये राजस्थान के प्रमुख कांग्रेसी नेता व कार्यकर्त्ता उदयपुर में प्रदेश कांग्रेस कमेटी की बैठक के लिये उपस्थित थे। उनके प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिये बैठक स्थगित कर दी गई और वहां उपस्थित नेताओं व कार्यकर्त्ताओं ने शवयात्रा व शव-दाह में सम्मिलित होकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर स्वयं को धन्य किया। आधुनिक राजस्थान उनके नाम व काम को भी लोकनायक के नाम व काम की तरह चिरकाल तक स्मरण रखेगा।

दमघोटू स्थिति

व्यास जी के महान् यशस्वी और प्रतापी जीवन का अन्त भी जिन परिस्थितियों में हुआ उनको 'दमघोटू' ही कहना चाहिए। दमघोटू वातावरण में उन्होंने अपने सार्वजनिक जीवन की पहली सांस ली थी और उसी में अन्तिम सांस ली। तब पराधीनता के दिन थे और अब स्वाधीनता का सूर्य अपने पूर्ण प्रकाश में चमक रहा था। लेकिन व्यास जी के लिये उसमें भी सुख सन्तोष की प्रतीति या अनुभूति न थी। कांग्रेस के संगठन और शासन में व्यापी आपाधापी, भाई भतीजावाद, पक्षपात और भ्रष्टाचार उनको रात-दिन खलता रहता था। उसकी घुटन उनके लिये दमघोटू ही थी। स्वामी विवेकानन्द ने बिल्कुल ठीक ही कहा था कि समाज को दमघोटू वातावरण से मुक्त करने के लिये जूझने वालों का जीवन दोनों ओर से जलनेवाली मोमबत्ती जैसा होता है। इसी कारण तो ऐसे वीर व सन्त महापुरुष कुछ दीर्घ जीवन नहीं पाते। व्यास जी के लिये बसियां का 'टाइगर एक्शन' जले पर नमक सिद्ध हुआ। वे ऐसे उठ गये जैसे कोई स्वप्न ही भंग हुआ हो और हम देखते ही देखते रह गये।

ऐसा प्रतीत होता है जिस प्रकार उन्होंने दमघोटू वातावरण में अपनी इहलीला समाप्त की, उसका आभास उनको काफी पहले हो गया था। बात-बात में वह अपने जीवन से निराशा इसलिए प्रकट करने लग गये थे कि उन्हें वर्तमान वातावरण

में अपने लिये वैसी अनुकूलता नहीं दीख पड़ती थी, जिसमें वह अपने आदर्शवाद पर कायम रह जीवन यापन कर पाते। सांकड़ा का केन्द्र उनके लिये सर्वाधिक आकर्षण रखता था और प्रति वर्ष ३० जनवरी को महात्मा गांधी के बलिदान दिवस पर आयोजित गांधी मेले पर वहां पधारने में वे नहीं चूकते थे। १९६३ के मेले पर रास्ते में गाड़ी खराब हो जाने से वे ठीक समय पर नहीं पहुंच सके। तब उन्होंने वेदनाभरी वाणी से जो उद्‌गार प्रकट किये थे, उनमें उन्होंने अपनी वहां की उस यात्रा को अन्तिम बताकर एक स्पष्ट संकेत कर दिया था कि उनकी इच्छा अब और अधिक जीवित रहने की नहीं है। पोकरण के ज्ञान मन्दिर के अध्यक्ष श्री राजाराम जी व्यास ने अपने संस्मरणों में उनके उस मार्मिक भाषण का उल्लेख किया है। उनका वह भाषण बड़े गौर से पढ़ा जाना चाहिए। 'गांधी मार्ग' के सुयोग्य सम्पादक वयोवृद्ध हिन्दी पत्रकार और उनके पुराने साथी ठाकुर राजबहादुरसिंह जी ने भी इस सम्बन्ध में अपनी अनुभूति का उल्लेख मर्मस्पर्शी शब्दों में किया है। उनके जीवन को हर ले जाने वाली बीमारी का दौर अजमेर में ही शुरू हो गया था। उसका वेदनापूर्ण मर्मान्तक विवरण वहां के राष्ट्रसेवी श्री कृष्ण गोपाल गर्ग ने अपने संस्मरणों में दिया है। उस बीमारी का पहला आक्रमण उनके ही घर पर हुआ था। उन्होंने उसके बाद जो दो-एक पत्र लिखे थे उसमें अपनी टिमटिमाती जीवन दीपशिखा की ओर स्पष्ट संकेत किया था। इसी प्रकार वह अपने अन्य अनेक मित्रों से भी महीनों पहले अन्तिम विदाई की बात कहने लग गये थे। वह सब लक्षण उस मानसिक घुटन के ही सूचक थे, जिसमें उनकी आत्मा को अपने आदर्श से विचलित हो जीवित रहने की आकांक्षा न रही थी। विलक्षण महापुरुष ऐसे लक्षणों का ठीक-ठीक अर्थ जान लेते हैं। परन्तु उसको समझने में लोक व्यवहार के माया जाल में उलझे संसारी प्राणी समर्थ नहीं होते। वे तब हाथ मलते रह जाते हैं, जब वे उनसे सदा के लिये बिछुड़ जाते हैं।

प्रताप प्रतिज्ञा

व्यास जी में अपने संकल्प के लिये जो दृढ़ता और अपने व्रत के लिये जो निष्ठा पैदा हुई, उसका भी अपना ही गौरवशाली इतिहास है। एक बार कुछ कार्यकर्त्ताओं ने एक गोष्ठी में उनसे पूछा कि आपमें जो दृढ़ता, लगन व धुन पाई जाती है उसका कारण क्या है। उन्होंने विनम्र शब्दों में कहा कि यह लगन व धुन और दृढ़ता व निष्ठा किसी संकल्प के बिना पैदा नहीं हो सकती। संकल्प ऐसा सत्य होना चाहिए कि उस पर से विश्वास और श्रद्धा डगमगाये नहीं। अपना उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उन्होंने बताया कि १९२३ में हल्दीघाटी की यात्रा में वहां खड़े हो मैंने महाराणा प्रताप को साक्षी रख यह प्रतिज्ञा की थी कि मैं भी अपना सारा जीवन उनकी ही तरह देश के लिये अर्पित करूंगा और कोई कष्ट, क्लेश, विघ्न बाधा और अभावजन्य पीड़ा मुझे विचलित न कर सकेगी। कहना न होगा कि

व्यास जी अपनी इस प्रतिज्ञा पर चट्टान की तरह दृढ़ रहे और सर्वस्व होम कर भी उससे विचलित नहीं हुए। व्यास जी की यशस्वी जीवन गाथा को विना किसी सन्देह के प्रणवीर महाराणा प्रताप की यशोगाथा का ही प्रतिबिम्ब कहना चाहिए। वह घटना उनके उज्ज्वल चरित्र पर कैसा सुन्दर प्रकाश डालती है, जब उन्होंने सरदार पटेल की चेतावनी का सर्वथा उपयुक्त उत्तर दिया था। जोधपुर में १९५० में जो संगीन मुकदमा उन पर चलाया गया था, उसके परिणाम की कल्पना उनके राजनीतिक जीवन की समाधि के रूप में की जा रही थी। उनको जब यह कहा गया कि सरदार पटेल के प्रकोप का दुष्परिणाम यह हो सकता है कि आपको सदा के लिये पटक दिया जायगा, तब उन्होंने कहा था कि मैं तो जमीन पर सोता हूं। जमीन पर सोने वाले को क्या कभी पटका जा सकता है। यह थी उनकी जागरूक दृष्टि अपने प्रति, जिसने उनको अपने जीवन में कभी पराजित नहीं होने दिया और वह प्रणवीर प्रताप की ही तरह 'अजेय' बने रहे।

एक कसक

लोकननायक के आकस्मिक और अप्रत्याशित निधन से एक दर्दभरी कसक मेरे हृदय में सहसा ही घर कर गई। वर्ष-डेढ़-वर्ष पहले कलकत्ता के कुछ मित्रों ने उनका सार्वजनिक अभिनन्दन करने का निश्चय किया था। उनमें भाई श्री राधा-कृष्ण जी नेवटिया और भाई श्री बजरंगलाल जी लाठ मुख्य थे। दानवीर सेठ सोहनलाल जी दूगड़ का उनको पूर्ण सहयोग प्राप्त था। विचार यह था कि उनको एक अभिनन्दन ग्रन्थ और एक अच्छी थैली भेंट की जाय। मुझे अभिनन्दन ग्रन्थ के कार्य में सहयोग देने के लिये लिखा गया। मेरा प्रस्ताव यह था कि अभिनन्दन ग्रंथ के स्थान में व्यास जी की जीवनी अथवा आत्मकथा तैयार की जाय और उसका प्रकाशन करके उस अवसर पर उनको भेंट की जाय। मेरा यह निश्चित मत था कि जीवनी अथवा आत्मकथा अभिनन्दन ग्रन्थ की अपेक्षा कहीं अधिक उपयोगी और महत्त्वपूर्ण होगी। कलकत्ता के मित्र मेरे विचार से सहमत हो गये और उन्होंने व्यास जी को जीवनी लिखवाने अथवा आत्मकथा लिखने के लिये तैयार करने का काम मुझे सौंपा। व्यास जी से वातचीत हुई और वे आत्मकथा लिखने को सहमत हो गये। अपने अंग्रेजी पाक्षिक 'पीप' में उन्होंने अंग्रेज़ी में आत्मकथा लिखनी शुरू कर दी थी, परन्तु वे उसको पूरा नहीं कर सके और क़लकत्ता के आयोजन का विचार भी मूर्तरूप धारण नहीं कर सका। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे कि उस आयोजन के न हो सकने के लिये मैं भी कुछ दोषी हूं। यदि आत्मकथा के बजाय अभिनन्दन ग्रंथ के माध्यम से वह आयोजन किया जा सकता, तो लोकनायक का उपयुक्त अभि-नन्दन समारोह तो हो ही जाता। उसका न हो सकना मुझे कुछ ऐसा अखरा कि उसकी पूर्ति के लिये ही मैं प्रस्तुत 'श्रद्धांजलि स्मृति ग्रंथ' के संकलन का निश्चय करके उसमें लग गया। यह स्वीकार करने में कोई हानि नहीं है कि प्रस्तुत ग्रंथ

के संकलन का मूलभूत हेतु 'स्वान्तः सुखाय' है अर्थात् आत्मसन्तुष्टि या प्रायश्चित्त की भावना से प्रेरित होकर ही प्रस्तुत ग्रंथ का संकलन किया गया है। एक लेखक अथवा पत्रकार साथी अपने चिरसाथी की पुनीत स्मृति में सिवाय 'श्रद्धांजलि' के और क्या प्रस्तुत कर सकता है।

लोकनायक श्री जयनारायण व्यास केवल एक व्यक्ति ही नहीं; प्रत्युत एक महान् संस्था थे, उस संस्था के रूप में वह देशव्यापी राष्ट्रीय आन्दोलन के समुज्ज्वल प्रतीक थे। जोधपुर मारवाड़ राज्य में जिस सेवा यज्ञ का उन्होंने अनुष्ठान किया था, वह समस्त राजस्थान और देश के एक तिहाई भाग को घेरे हुए लगभग छह सौ देशी राज्यों के कायाकल्प का निमित्त बन गया। 'दासता' 'दीनता', व 'हीनता' सबसे अधिक जघन्य अभिशाप हैं। परायों की अपेक्षा अपनों की 'दासता' और उससे पैदा हुई 'दीनता' व 'हीतना' और अधिक जघन्य हैं। देशी राज्यों की निरीह व मूक जनता परायों और अपनों, दोनों की दासता में बुरी तरह जकड़ी हुई थी। जागीरों की जनता तो तिहरी दासता का शिकार थी। लोकनायक व्यास जी ने अपने जीवन का सबसे पहला दाव जागीरदारी अत्याचारों के उन्मूलन में लगाया था और उसकी दासता में जकड़ी हुई जनता को मुक्ति दिलाने का दृढ़ संकल्प किया था। उसको उन्होंने जिस प्रकार पूरा किया, उसकी साहसपूर्ण कहानी राजस्थान के स्वतन्त्रता संघर्ष के इतिहास का अत्यन्त गौरवशाली एवं गर्वीला अध्याय है। इससे भी कहीं अधिक बड़ा जो स्वप्न व्यास जी देखा करते थे, वह था समाज की गली-सड़ी वर्तमान व्यवस्था को जड़मूल से मिटाकर उसके नवनिर्माण का। समाज-सुधार के आन्दोलन में इसी हेतु वे सदा अगुआ रहे। जो राजनीतिक संघर्ष उनके जीवन में उग्ररूप में व्यापक दीख पड़ता है, उसका मूल उद्देश्य भी समाज को शोषण, उत्पीड़न तथा दासता से मुक्ति दिलाना ही था; क्योंकि उस मुक्ति के बिना समाज का नवनिर्माण सम्भव ही न था। 'धुन के धनी' महान् स्वप्नद्रष्टा के प्रति विनीति भाव से श्रद्धांजलि अर्पित करना हम सबका पुनीत कर्त्तव्य है और उसी का प्रतीक प्रस्तुत ग्रंथ है।

प्रकाश किरण

अपने संगी-साथियों और सहकर्मियों के लिये व्यासजी का महान् जीवन सदा ही प्रेरणापुंज रहा। प्रेरणापुंज प्रकाश किरण की अमर यशोगाथा का जितना भी गुणगान किया जाय, कम है। उसकी विविध रंग-बिरंगी झांकियां प्रस्तुत करने का यह श्रद्धासम्पन्न विनीत प्रयास है। अपने जीवन संगी-साथियों और सहकर्मियों की अनुभूतिपूर्ण स्मृतियों में चरित्रनायक का जीवन सप्तरंगी इन्द्रधनुप की तरह चमक उठता है और वह ऐसा आकर्षक बन जाता है कि पाठक का मनमयूर आनन्द विभोर हो नाच उठता है। प्रस्तुत ग्रंथ लोकनायक की जीवनी नहीं; यह उस महान् यशस्वी जीवन के सप्तरंगी चित्र के रूप में उस राजस्थानी जनता

की सेवा में एक भेंट हैं, जिसके उत्कर्ष के लिये उस संस्कारी राष्ट्र महापुरुष ने तन मन धन सर्वस्व वार दिया।

उस 'धुन के धनी' के अपने स्वीकृत सिद्धान्तों व आदर्श की नींव पर अपने जीवन शिखर का निर्माण किया। उस महान् साधक ने उसकी एक-एक ईंट अपने त्याग तपस्या व खून-पसीने से चुनी। आजीवन उसकी चोटी पर बैठा वह सजग प्रहरी उन सिद्धांतों व आदर्शों का बिगुल बजाता निरन्तर चुनौती और चेतावनी देता रहा। सहसा ही एक दिन वह आवाज़ मन्द पड़ गई और उस पर से एकाएक एक प्रकाश किरण चमक उठी। लोग यह कहते सुने गये कि उस तपस्वी ने जिन सिद्धान्तों और आदर्शों की भित्ति पर उस गगनचुम्बी शिखर का निर्माण किया था, उन्हीं के लिये वह निर्वाण-पद को प्राप्त हुआ और अमर हो गया। हमारा जीवनपथ प्रशस्त बनाने के लिये वह यह प्रकाश किरण अपने पीछे छोड़ गया है।
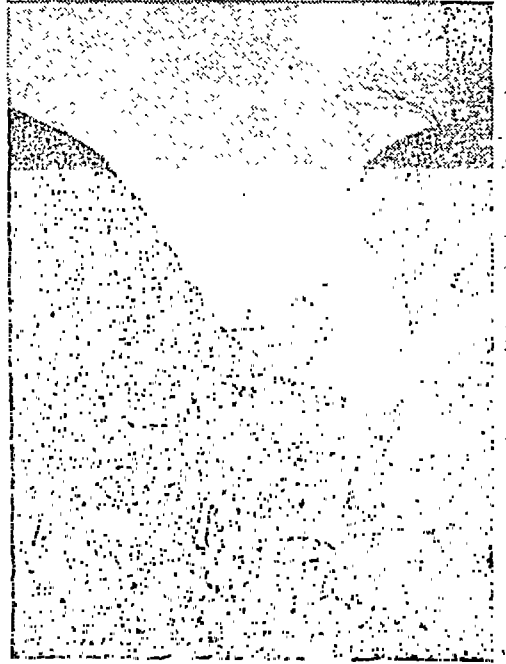
सिवाणा का ऐतिहासिक दुर्ग। इसमें मारवाड़ लोक-परिषद् के कार्यकर्त्ता नजरबन्द किये गये थे।

प्रकरण २

जोधपुर का दुःखपूर्ण नाटक

लेखक—महात्मा गांधी

मुझे जो भय था वह सत्य सिद्ध हुआ। जोधपुर सत्याग्रह ने एक गम्भीर और भद्दा रूप धारण कर लिया है। मेरे पास ढेरों कागज़ भेजे गये हैं। उनसे मुझे मालूम हुआ है कि धड़ाधड़ गिरफ्तारियां की जा रही हैं। लाठी-वर्षा रोज़ की घटना है। सरकारी आदेश ज़ारी करके सत्याग्रहियों के लिये निजी इमारतों को काम में लाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। ब्रिटिश भारत में सत्याग्रह के दिनों में जो ज़्यादतियां की जाती हैं, वे जोधपुर में दोहरायी जा रही हैं। जोधपुर में जो कुछ हो रहा है, वह जनता की आंखों से छिपाकर किया जा रहा है। वहां किसी भी समय कोई भी दुर्घटना घट सकती है। उसपर वैसे ही परदा डाला जा सकता है जैसे कि अनेक दुर्घटनाओं पर डाला गया और डाला जा रहा है। सारे संकट का केवल एक ही कारण है और उसकी दवा भी एक ही है। उसका प्रयोग जब तक कि सफलतापूर्वक नहीं किया जायगा तब तक यह दुःखपूर्ण नाटक इसी प्रकार होता रहेगा। देशी राज्यों में जो कुछ भी होता या हो रहा है, उसकी ज़िम्मेवारी और दोष से ब्रिटिश सरकार बच नहीं सकती। जोधपुर में कानून और व्यवस्था के नाम पर जो अमानुषिकता हो रही है, उससे जनता की रक्षा करने को ब्रिटिश सरकार उन संधियों और सुलहनामों से बंधी है, जो उसने देशी राजाओं के साथ की हैं। जेल के सींकचों में कैदियों के साथ सम्मानास्पद व्यवहार नहीं किया जा रहा। खाना खराब दिया जाता है। सामान्य सुविधाएं भी उन्हें प्राप्त नहीं हैं। विरोधस्वरूप श्री जयनारायण व्यास ने तब तक के लिये अनशन शुरू कर दिया है जब तक कि ये सब शिकायतें दूर नहीं कर दी जातीं। यह अनशन आमरण भी हो सकता है। यदि कहीं उनका प्राणान्त हो गया तो ज़िम्मेवारी उनकी होगी, जिन पर उन शिकायतों का दायित्व है, जिनके विरोध में बाध्य होकर उन्होंने भूख हड़ताल की है।

श्री द्वारकानाथ कचरू ने मेरे पास जोधपुर से एक महत्त्वपूर्ण रिपोर्ट भेजी है, जिसमें से कुछ अंश मैं जनता की जानकारी के लिये यहां प्रकाशित कर रहा हूं :

"राज्य के केवल १७ प्रतिशत भाग पर जोधपुर सरकार का सीधा नियंत्रण है। बाकी ८३ प्रतिशत पर जागीरदारों का अधिकार है। उनकी संख्या १३०० है। जागीरदार आन्तरिक दृष्टि से सर्वथा स्वतन्त्र हैं। वे महाराजा को केवल निश्चित खिराज भेंट करते हैं।

"जोधपुर में काफी समय से शासन का संचालन पोलिटिकल विभाग के हाथ में है। वर्तमान सदी में तीन बार राज्य का शासन, नियन्त्रण व निरीक्षण पोलिटिकल विभाग अपने हाथ में ले चुका है। इस समय राज्य के अनेक पद पर बहुत से अंग्रेज़ नियुक्त हैं। दीवान के पद पर भी एक अवकाशप्राप्त अंग्रेज़ अधिकारी नियुक्त है। इन अंग्रेज़ अफसरों के अलावा राज्य के ऊंचे शासकीय पदों पर बाहर के ही लोग नियुक्त हैं। इसलिये राज्य में 'मुल्की-आन्दोलन' चल रहा है। वह प्रतिदिन ज़ोर पकड़ता जा रहा है। राजपूत और ब्राह्मण आदि जाति-बिरादरियों में भी बड़ी तीव्र प्रतिस्पर्द्धा चल रही है। इस प्रतिस्पर्द्धा से राज्य सरकार अनुचित लाभ उठाकर एक-दूसरे को आपस में लड़ाती रहती है। उसका ध्येय यह है कि मारवाड़ लोक-परिषद् राज्य में प्रभावशाली न बन सके।

मारवाड़-लोक-परिषद् की स्थापना १९३८ में की गई थी। पिछले चार वर्षों में वह एक शक्तिशाली संस्था बन गई है। राजपूताना के देशी राज्य राजनीतिक जागृति की दृष्टि से बहुत पिछड़े हुए हैं। इसलिए जोधपुर में शुरू हुए इस आन्दोलन का सारे ही राजपूताना पर प्रभाव पड़ना निश्चित है। यह आन्दोलन राजपूताना के लिये मार्गदर्शक बन सकता है। मार्च १९४० में जोधपुर में सारे राजपूताना का एक राजनीतिक सम्मेलन करने की घोषणा की गई थी। राजपूताना की जनता में इस प्रकार जागृति पैदा होना पोलिटिकल विभाग के लिये चिन्ता का विषय बन गया और जोधपुर सरकार को तुरन्त उचित कार्रवाई करने का आदेश दिया गया। जोधपुर सरकार ने मारवाड़ लोक-परिषद् को गैर-कानूनी ठहराकर उसके सभी कार्यकर्त्ताओं को जेलों में बन्द कर दिया। बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियां की गईं और भयानक दमन किया गया। अन्त में समझौता हुआ। मारवाड़ लोक-परिषद् ने अपने को तुरन्त रचनात्मक प्रवृत्तियों में लगा दिया। मारवाड़ में वह लोकप्रिय संस्था बन गई। खालसा और जागीरदारी दोनों ही क्षेत्रों में उसका प्रभाव और शक्ति छा गई। परिषद् ने म्यूनिसपैलिटी के चुनाव लड़े। उनमें उसको बहुमत प्राप्त हुआ। परिषद् का नेता ही उसका अध्यक्ष चुना गया।

"दूसरा महायुद्ध शुरू होते ही देशी राज्यों में जन-आन्दोलन के प्रति राज्य सरकारों का रुख पलट गया। युद्ध का बहाना बनाकर नागरिक अधिकारों को कुचला गया और लोकप्रिय संस्थाओं को प्रभावशाली बनने से रोका गया। जोधपुर राज्य में राज्य-सरकार की नीति स्थिर करने का काम पोलिटिकल विभाग के हाथ में था। राज्य के दीवान सर डोनाल फील्ड ऊपर से मिलने वाले आदेशों का पालन

करने में लग गये। युद्ध के लिये रुपया जमा किया जाने लगा और सारे ही राज्य में युद्ध का-सा वातावरण पैदा कर दिया गया। यह रुपया अधिकतर जागीरदारों के माध्यम से जमा किया गया। इसी कारण उनको लोक-परिषद् के जन-आन्दोलन से सुरक्षित रखने के लिये संरक्षण दिये गये। राज्य सरकार ने जागीरदारों के प्रति उपेक्षापूर्ण रुख अपना लिया। उनको जनता के खून की अन्तिम बूंद तक चूसने की खुली छूट दे दी। परन्तु मारवाड़ लोक-परिषद् के लिये जागीरों में रहनेवाली जनता की शिकायतों और मांगों की उपेक्षा करना संभव ही न था। परिषद् का उद्देश्य उस समय जागीरों का अंत करना न था वह जनता के साथ किये जानेवाले व्यवहार में सुधार चाहती थी। राज्य-सरकार से हस्तक्षेप करने के लिये बार-बार कहा गया, जिससे जागीरों में, रहनेवाले किसानों के साथ मानवोचित और न्याय-पूर्ण व्यवहार किया जा सके, परन्तु राज्य सरकार ने दुर्भाग्यवश दूसरा ही मार्ग अपनाना अधिक उचित समझा। इससे परिषद् के कार्यकर्त्ताओं को दबाने के लिये जागीरदारों को प्रोत्साहन मिला। जागीरी क्षत्रों में जो स्थिति पैदा हुई वह संक्षेप में इस प्रकार है :

(क) किसान नियमित लटाई (जागीरदारों और किसानों के बीच उपज के हिस्से का निर्धारण) की मांग करते हैं। किन्तु जागीरदार इसको नियमित रूप नहीं देना चाहते और टालमटोल करते हैं। फलतः किसानों को नुकसान उठाना पड़ता है।

(ख) किसान उन लाग-बाग को भी समाप्त करना चाहते हैं, जिन्हें राज्य की अदालतों ने गैर-कानूनी ठहरा दिया है।

"जोधपुर सरकार किसानों की सहायता करने से बराबर इन्कार कर रही है। जिन लाग-बाग को उसकी खुद की अदालतों ने गैर कानूनी ठहरा दिया है, उनका उगाहना बन्द करने से इन्कार कर रही है। राज्य सरकार एक कदम और आगे बढ़ गई है। वह लोक-परिषद् को कुचलने के लिये जागीरदारों को बढ़ावा दे रही है। इस प्रकार जब जागीरदार मार-पीट करते, बदला लेते और परिषद् के कार्य-कर्त्ताओं के घरों तक को जला देते हैं। तब भी सरकार हस्तक्षेप करने से इन्कार कर देती है।"

'हरिजन' सेवाग्राम
२१ जून, १९४२ १४ जून, १९४२

बालमुकुन्द बिस्सा का बलिदान

श्री श्रीप्रकाश जी मेरी प्रार्थना पर जोधपुर वहां की हालत सुधारने के लिये गये थे। वह वहां अधिकारियों से मिले और उनका दृष्टिकोण जाना। वहां से लौट-कर उन्होंने मुझे जो रिपोर्ट दी उससे इसमें कोई सन्देह नहीं रहा कि अधिकारियों ने जनता को दबाने के लिये लाठियों का अन्धाधुन्ध प्रयोग किया। उन्होंने मुझे यह

भी बताया कि परिषद् के कार्यकर्त्ता अपनी वाणी पर संयम नहीं रख सके। अधिकारियों का कहना है कि उन्हें इसमें कोई आपत्ति नहीं है कि लोक परिषद् सार्वजनिक सभाएं करे और उत्तरदायी शासन की मांग करे; बशर्ते कि उनकी भाषा संयत हो।

उन्होंने मुझे यह भी बताया कि जोधपुर सरकार हर हालत में कानून व व्यवस्था कायम रखने के लिये चिन्तित है और वह यह भी स्वीकार करती है कि जागीरदार अपने क्षेत्रों में गैर-जिम्मेवाराना हरकतें करते हैं। उसका यह भी कहना है कि सामन्तवादी जागीरी व्यवस्था को हटाकर कानूनी व्यवस्था कायम-करने में कुछ समय तो लगेगा ही। जहां तक राजनीतिक बन्दियों के साथ सद्व्यवहार का प्रश्न है श्री श्रीप्रकाश जी को भरोसा है कि उसमें सुधार किया जायेगा। उन्हें यह भी भरोसा है कि यदि कार्यकर्त्ताओं की ओर से थोड़ा-सा भी सहयोगपूर्ण रुख अपनाया जा सके तो किसी भी राजनीतिक कार्यकर्त्ता को बन्दी बनाने की आवश्यकता ही न पड़ेगी।

यदि उनकी ये आशाएं पूरी हो जायं तो उनकी यह जोधपुर यात्रा जो अचानक ही हुई है पर्याप्त रूप में लाभदायक हो सकेगी और कार्यकर्त्ताओं की भूख-हड़ताल तथा बालमुकन्द बिस्सा की शोकपूर्ण मृत्यु व्यर्थ नहीं जायेगी।

श्री श्रीप्रकाश जी ने मुझे यह भी बताया कि इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि बिस्सा की मृत्यु जेल की बदइन्तजामी के कारण हुई; किन्तु जेल के अधिकारियों की ओर से उपेक्षा नहीं बरती गई। मृत्यु तो अच्छी से अच्छी परिस्थिति में भी हो सकती है, परन्तु जब कभी जेल में को कोई मृत्यु हो जाय तो हमें उसके लिये सदा अधिकारियों को ही दोषी नहीं ठहराना चाहिए। मृत्यु की हर घटना पर अलग-अलग स्वतन्त्र दृष्टि से विचार किया जाना चाहिए।

मुझे मालूम हुआ कि बालमुकन्द बिस्सा बहुत अच्छे कार्यकर्त्ता थे। वह अपने पीछे एक बड़ा शोक संतप्त परिवार छोड़ गये हैं। मुझे आशा है कि जोधपुर के लोग उनकी विधवा पत्नी व बच्चों को देख-भाल के दायित्व को निभायेंगे उनके प्रति मैं अपनी संवेदना प्रकट करता हूं।

श्री श्रीप्रकाश जी ब्यावर से मेरे पास एक पुस्तिका लाये हैं। उसकी भाषा ऐसी है कि जिसका प्रयोग किसी भी सत्याग्रही को नहीं करना चाहिये। मुझे आशा है कि सत्याग्रही भाषा के मामले में बहुत संयम से काम लेंगे। मैं उनसे अनुरोध करूंगा कि वे श्री द्वारकानाथ कचरू के साथ सम्पर्क कायम रखें, जो आन्दोलन जारी रहने तक जोधपुर में ही रहेंगे।

'हरिजन'	सेवाग्राम
५ जुलाई, १९४२	२९ जून, १९४२

ये दोनों लेख महात्मा गांधी ने अपने साप्ताहिक पत्र 'हरिजन' में उन दिनों में

लिखे थे, जब मार्च १९४२ में उत्तरदायी शासन के लिये जोधपुर राज्य में मारवाड़ लोक परिषद् ने सत्याग्रह का शंख फूंका था। महात्मा जी ने बाबू श्रीप्रकाश जी को विशेष रूप से जोधपुर भेजा और श्री द्वारका-नाथ कचरू वहां अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् की ओर से पं० जवाहरलाल जी नेहरू द्वारा भेजे गये थे। जोधपुर में वह सत्याग्रह १९४२ की भारत व्यापी अगस्त क्रान्ति से ठीक पहले शुरू किया गया था। बाबू श्रीप्रकाश जी तब दो बार जोधपुर गये थे। उनकी मध्यस्थता से जो समझौता हुआ राज्य सरकार ने उसका यथा-वत पालन नहीं किया। इसलिए जोधपुर में भी अगस्त क्रान्ति की लहरें फैल गईं। वहां मारवाड़ लोक-परिषद् के कार्य-कर्त्ता व नेता दुवारा जेलों तथा किलों में बन्द कर दिये गये। १९४५ में उनको रिहा किया गया।

उस नागौर किले का प्रवेश द्वार, जिसका नाम राज-स्थान के आधुनिक इतिहास में भी उल्लेखनीय बन गया है। १९२९ में इसी किले में व्यास जी और उनके साथियों पर षड्यंत्र का मुकदमा चला था। १९४०, ४२ और ४३-४४ में भी व्यास जी को इस किले में रखा गया था। राष्ट्रनायक पं० जवाहरलाल नेहरू ने राजस्थान में पंचायती राज का श्रीगणेश इसी किले पर किया था।

प्रकरण ३

आग और आंसू

श्री जनार्दनराय जी नागर, उपकुलपति—राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर

सुना करता था, मेवाड़ में वर्मा जी हैं, जयपुर में शास्त्री जी हैं, अजमेर में हरिभाऊ जी हैं और जोधपुर में श्री जयनारायण व्यास हैं। सन् १९३५ से लगाकर १९४७ तक ये नाम मेरे जैसे भावुक सामाजिक कार्यकर्त्ता के लिये बड़े प्रेरणादायक रहे हैं। मेरा खेवा नामों, नारों और अखबारों के शीर्षकों से बहुत शीघ्र प्रभावित होने वाला खेवा रहा है। चाहे देखा हो या न देखा हो, मिले हों या न मिले हों जयनारायण व्यास मेरे लिये हमेशा एक प्रेरणादायी नाम रहा है। व्यास जी से मेरा साक्षात्कार बड़ी देर बाद हुआ, परन्तु 'शेरे राजस्थान' की जयकार मुझे सदैव ठिठका दिया करती और जैसे व्यास जी की मानसिक कल्पना करने के लिये मजबूर कर दिया करती थी। एक युग ऐसा भी बीता है जिसमें उथल-पुथल करने के लिये आमादा नेताओं को 'शेर' कहा जाता रहा और उनकी वन्दना की जाती रही। 'पंजाब केसरी', 'शेरे काश्मीर' और 'शेरे राजस्थान' इस हिलते और हिलाने वाले ज़माने के नारे हैं, जो आज अपील नहीं करते। आज हम नेताओं को शेर के रूप में नहीं मानव-महामानव के रूप में देखना चाहते हैं। अतः जब मैंने उदयपुर में मेवाड़ राज्य के नव-निर्मित महकमा खास की सड़क पर पहली बार खद्दरधारियों के आदमकद अलमस्त झुंड में देखा, तो मैं उनको खड़ा देखता रह गया। शायद वे श्री भूरेलाल जी बया थे, जिन्होंने व्यास जी से मेरा परिचय करवाया। आंखों में हँसते हुए व्यास जी बोले, "तो तुम जनार्दनराय नागर हो। देखो, शिक्षा और साहित्य में लगे रहो, राजनीति तो यों ही है। घुसोगे तो हमारी तरह उखड़े-उखड़े रहोगे।" चन्द मिनटों का यह संयोग था, एक कार्यकर्त्ता का एक नेता से; पर आज भी मुझे व्यास जी के ये प्रथम बोल याद हैं। कभी-कभी जीवन का सत्य यों अनायास ही कानों में पड़ जाता है। प्रेमचन्द जी ने भी मुझे यों ही कहा था, "लिखना, और किसी संस्था आदि के चक्कर में पड़ना मत।" परन्तु व्यासजी और प्रेमचन्द जी के ये बोल मेरे लिये जैसे वृद्धावस्था के लिये कथन हैं। मैं राजनीति के

चक्कर में पड़ा और संस्थाएं भी ढेर-सी खड़ी कीं, और आज जब व्यास जी और प्रेमचन्द जी संसार में नहीं रहे, मुझे उनके कथन याद आ रहे हैं। यह नहीं है कि राजनीति में घुसकर और संस्थाएं आरम्भ कर मैं पछता रहा हूं; कतई नहीं। आज मैं गम्भीरतापूर्वक विचार करने लगा हूं; अपने लिये—अपने शेषजीवन के सार और सन्तोष के लिये ! राजनीतिक में जो जाय वह पागल; और जाकर पीछे जो पछताय, वह अहमक है मेरी नज़र में। संस्था आरम्भ करने के बाद सोच करना आत्म विश्वास की कमी ही कहा जायगा। जयनारायण व्यास संस्थाएं आरम्भ करवाते थे; स्वयं तो राजनीति के मंच पर खेला करते थे और अखबार निकाला करते थे। सार्वजनिक कार्यकर्त्ता के साथ व्यास जी की सच्ची और गहरी सहानुभूति थी; अधिकांश सत्ता परस्त राजनीतिज्ञों की तरह वह संस्थाओं के लिये मगरमच्छ के आंसू नहीं बहाते थे। राजस्थान की पहली असेम्बली की एक घटना याद आती है। उदयपुर डिवीजन की सार्वजनिक संस्थाओं पर विरोधी दल के सामन्त सदस्य प्रहार कर अपनी सीट पर बैठ गये। व्यास जी—सदन के नेता—चट उठे और सार्वजनिक संस्थाओं के बचाव में उन्होंने सदन को जैसे हिला दिया; बोले, उदयपुर डिवीजन की सार्वजनिक संस्थाएं जाकर देखते ही बनती हैं। उनमें सारी ज़िन्दगी को हथेली पर लेकर काम करने वाले वे कार्यकर्त्ता हैं, जिनकी आंखों में महान् सपने भरे हैं, उनकी निष्ठा, साधना और सहृदयता का मुकाबला इन भाषण देने और आन्दोलन करने वाले कर नहीं सकते। उन दिनों कांग्रेस के कुछ मन्त्री गुपचुप हम संस्थाओं वालों को पांडे कहा करते थे। पता नहीं कांग्रेस के इन सत्ता के तिकड़मियों के पुरखों का हमने किस पूर्व जन्म में श्राद्ध करवाया था। उन दिनों हम संस्थाओं में काम करने वालों को विरोधियों की आलोचना इतनी बुरी नहीं लगती थी, जितने कांग्रेस के इन अवसरवादी नेताओं के व्यंग्य लगते थे। व्यास जी समाज के प्रत्येक पुरुषार्थ का मूल्य जानते थे और कर सकते थे। मुख्य मन्त्री हो जाने पर भी व्यास जी ने मानव जीवन के मूल्यों से मुंह नहीं मोड़ा। जीवन की गहराइयों के प्रति उनके हृदय की थाह बराबर बनी रही। अक्सर सत्ता की कुर्सी पर बैठने वाले कांग्रेसमैन का गांधी जी के विपरीत हृदय परिवर्तन हो जाता है। एक आश्चर्यजनक बेफिक्री उसमें आ जाती है; और महीन अहंकार से वह भरने लगता है। सचिवों की औपचारिक टिप्पणियों पर हस्ताक्षर कर वह अपने मंत्रित्व के कर्त्तव्य की इतिश्री मानता है और यह हस्ताक्षर भी वह महीनों में करता है। व्यास जी सार्वजनिक कार्य को, विशेषकर साहित्य, शिक्षा और संस्कृति तथा समाजोत्थान के कार्यों को मानव की दृष्टि से देखते और हार्दिक ईमानदारी से महसूस करते थे। स्वयं एक सहृदय और संघर्षों में पले सार्वजनिक कार्यकर्त्ता होने के नाते व्यासजी को कार्यकर्ता की पहिचान थी, वे उसकी वेदना को जान जाते थे। मैं कई बार राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर के संघर्षों को लेकर उनके पास गया हूं। राज-

नीतिक क्षेत्र में मुझसे नाराज़ होते हुए भी विद्यापीठ के मामलों में व्यास जी ने सदैव सहायता ही की। जब सन् १९५५ ई० में श्री मोहनलाल सुखाड़िया ने व्यास जी के समानान्तर नेतृत्व की ठानी, तब व्यास जी ने अपने समर्थकों की सूची से यह कहकर मुझे अलग रख दिया कि वह संस्था का भार उठाये हुए हैं, उसे इस झगड़े से दूर ही रखो। उन्होंने मुझे कभी भी अपने पक्ष में प्रलोभित नहीं किया। यद्यपि मैंने श्री सुखाड़िया का खुला साथ दिया, तथापि व्यास जी ने मुझ से स्नेह का नाता कभी नहीं तोड़ा। सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं के प्रति उनकी जैसे एक प्रकार की मोहब्बत थी। उनकी अल्हड़ प्रकृति कार्यकर्त्ता को देखकर मानो उमंगित हो जाती थी। मुझे याद आता है, मतदान हो रहा था; सुखाड़िया जी, पालीवाल जी, मैं और व्यास जी पास-पास बैठे थे। वातावरण में तनाव और आतुरता का साम्राज्य था। हर कांग्रेसी का चेहरा गम्भीरता से हँसता था या अपनी हँसी को गम्भीरता से दबाता था। एक-एक सदस्य मानो सबकी निगाह बचाकर मत देने सरक जाता था। श्री सुखाड़िया की चारित्रिक मुस्कान वैसी ही थी; परन्तु उनकी आंखों में जैसे मत देने के लिये जाता हुआ सदस्य ही भरा हुआ था। न मालूम सुखाड़िया कितनी आंखों से सदस्यों को घेर रहे थे—बैठे-बैठे; परन्तु व्यास जी ने जैसे आंखें बन्द कर ली थीं। निश्चिन्त मगन और हल्के व्यास जी एकाएक मुझे इशारा कर बोले, "ज़िन्दगी हो तो चले आओ, रुकना कैसा। मौत हो तो चले आओ, बुलाना कैसा।" एक-एक मत पर धर्म, ईमान और ईश्वर जब कुर्बान किया जा रहा था और वातावरण में केवल वोट देने वाले की ही गरिमा भरी हुई थी—या तो राग ही था अथवा द्वेष ही था। व्यास जी की यह चिहुंक मुझे जैसे जगा गई। घने मानसिक तनाव में व्यास जी अनायास जैसे शान्त और प्रसन्न हो जाते थे; सम्पूर्ण लगाव होते हुए भी वह एकाएक उपरत हो जाते थे। निरन्तर संघर्षों में चीरे जाते व्यास जी की अन्तरात्मा देवाधीन निश्चिन्तता से परिपूर्ण मिलती थी। सुखाड़िया घुटता है; और मुस्कराता है; व्यास हिलता था और हँसता था!

राजस्थान के कांग्रेसी नेताओं में व्यक्तित्व की दृष्टि से व्यास जी ही एक आकर्षक व्यक्तित्व थे। शास्त्री जी, गोकुलभाई, हरिभाऊ जी, वर्मा जी में मुझे व्यक्तित्व कम दीखता है; उनमें अपने व्यक्ति का वाद अधिक दीखता है; परन्तु जयनारायण व्यास में अथ से इति तक व्यक्तित्व स्पष्ट प्रतीत होता था। स्वभाव की विशिष्टता और अपने विचारों के हठी आग्रह से 'व्यक्तित्व' नहीं झलकता। व्यक्तित्व अपने स्वभाव की अनासक्त अभिव्यक्ति होता है। व्यास जी में कुछ ऐसा ही अनासक्त अनोखापन था, जो उनके सर्वतोमुखी व्यक्तित्व का समूचा आधार था। व्यास जी को आप गिना नहीं सकते; उनको समग्र रूप से कूंता जा सकता था। शास्त्री जी हेतु वादों की गिनती हैं; गिनाये जा सकते हैं। गोकुलभाई तो स्पष्ट शिष्य हैं; आप उनके शिष्यत्व से एक क्षण में परिचित हो जाते हैं। दा' साहब एक

अच्छे मेज़वान हैं; भले आगन्तुक हैं; और वर्मा जी राजनीति के सर्कस के रिंग मास्टर दूर से मालूम होते हैं। परन्तु व्यास जी को हम न तो वोटों की गिनती मान सकते थे, न किसी का शिष्य ही मान सकते थे, व्यास जी रिंग मास्टर न थे और न उनमें किसी तरह की विचारों की हठ ही थी। व्यास जी जीवन के तूफानों में डोलता हुआ एक सदाशय का मेघ था; जिसे तोला जा सकता था, गिनाया नहीं जा सकता था। अतः मैं व्यास जी में व्यक्तित्व देखता था। उनके अन्य समकालीन साथियों में मुझ को बहुत कम व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं। हम चाल-ढाल, वोलचाल और वाद-विवाद करने में पटुता को व्यक्तित्व मान बैठते हैं। परन्तु सोलह श्रृंगार करनेवाली ही सुन्दरी नहीं होती। इसी प्रकार रात-दिन काम करते रहने वाले पटु, चुस्त और होशियार को हम व्यक्तित्व मंडित नहीं मान सकते। व्यक्तित्व अन्तरात्मा की सुन्दर और सुघड़ अभिव्यंजना है और वह मुझे जयनारायण व्यास में कूट-कूटकर भरी मिलती थी। यों मैं शास्त्री जी के भारी भरकम अहम से अभिभूत हुआ हूं; गोकुलभाई के गांधी वादी मनसुखापन से प्रसन्न हुआ हूं; दा साहब के गहरे गांधीवादी चातुर्य की मैंने सदैव दाद दी है; और वर्मा जी के सत्य और अहिंसा के जरासंध से मैं हमेशा डरता रहा हूं। परन्तु व्यास जी से मैं कभी अभिभूत नहीं हुआ; प्रसन्न-अप्रसन्न नहीं हुआ; आश्चर्यचकित या भयभीत नहीं हुआ। व्यास जी से मेरी एक संगति बनी रही। कांग्रेस के किसी नेता का जब नाम लिया जाता है, तो उस नाम के साथ कुछ याद आ ही जाता है। परन्तु जयनारायण व्यास का नाम लेने पर केवल श्रद्धा और आदर ही याद आता है। बात यह है कि कांग्रेस के और लोग तो अभ्यासकृत लीडर हैं; और उनका प्रतिपल स्वयं को लीडर बनाये रखना और मनाना होता है। व्यास जी जन्मजात नेता थे और अत्यन्त सहज थे। नेतृत्व के बारे में जब हम कल्पना करते हैं तो हमें एक प्रकार के बज़रंगबली की धारणा हो चलती है। एक ऐसी मीनार की हम कल्पना करने लगते हैं, जिसकी ऊंचाई को हम देखते भर हैं। नेतृत्व को हम अपने अचेतन में भय, आशा और प्राप्ति के अपने परिपार्श्वों से देखते हैं। नेता की हमारी व्यापक भावना से स्वयं सेवक की ही है। व्यास जी एक गति, स्फूर्ति, साहस और कर्म देने वाले बड़े साथी थे। जनतांत्रिक नेतृत्व का व्यास जी में सम्पूर्ण प्रतिविम्व नज़र आता था। सन् १९५५ ई० में आठ वोटों से हार कर राजस्थान का राज्य श्री सुखाड़िया जी को सौंपकर व्यास जी जलेवी चौक में असेम्वली के मुख्य द्वार पर सवसे पहले दीखे और वोले, "जल जलों का पला हूं। यह भी जलजला है। आ गया है, चला जायगा।" उस समय व्यास जी के चेहरे पर वही अनासक्त खालीपन था, जिसमें उनके मन की मस्ती सदैव उभरा करती थी। अवश्य, सुखाड़िया से हारकर व्यास जी अपना अमर्ष मिटा न सके। इसका कारण था। सुखड़िया जी आपको आप ही के प्रिय और विश्वास पात्र मित्रों, शिष्यों और कार्यकर्त्ताओं से हरवाते हैं। श्री सुखाड़िया आपको सदैव अपनी मुस्कराहट से छलते रहेंगे; आपके बनते

रहेंगे; और अन्त में आपका आपके ही इष्ट-मित्र विरोध करते नज़र आयेंगे। तब श्री सुखाड़िया, मुझे बहुत अफसोस है; कहकर आपको अकेला वीरान छोड़कर आप ही के लोगों के साथ चल देंगे। शास्त्री जी का नेतृत्व तो एक पुराने पंडित या महन्त का नेतृत्व है। दा साहब और गोकुलभाई का नेतृत्व करने में आग्रह भूत विश्वास ही नहीं है। वर्मा जी कूटनीति और आतप से नेतृत्व करते हैं। श्री सुखाड़िया का नेतृत्व सत्ता की हाथिनी से लहलट प्यार करने वाले में कमलवन में मन्थर गति से घूमने वाले कुंजर का नेतृत्व है, जो ताकत की सूंड से ही समझ में आता है। जब स्वर्गीय जयनारायण व्यास का नेतृत्व कभी सड़क पर, कभी चौराहे पर, कभी मुख्यमंत्री की कुर्सी पर, कभी थियेटर में, महफिल में, मजलिस में, कान्फ्रेन्स में, मीटिंग में, सब जगह, सर्वत्र और सभी स्तरों पर स्वाभाविक रूप से मिलता था। जो सच्चा मानव है, वही सच्चा नेता होता है। पद, प्रतिष्ठा, सत्ता और करतब एवं हिकमत के ज़ोर से बढ़े हुए लोगों का 'इज़ाफा' होता है, नेतृत्व नहीं। नेतृत्व को पद और सत्ता से, साहस के साथ कार्य करने की सुविधा मिलती है, परन्तु पद और सत्ता नेतृत्व का विकास नहीं कर सकते। कभी-कभी तो पद और सत्ता प्राप्त होने पर योग्य नेतृत्व पथभ्रष्ट होकर दूषित हो जाता है। राजस्थान में सन् १९४९ से लेकर आज दिन तक कांग्रेस के नेतृत्व का यही हाल हुआ है, और इसका परिणाम यह हो रहा है कि सारा संगठन टाउटों से भर गया है; सत्ता के इन्द्रजाल ने कांग्रेस का जीवन ही समाप्त कर दिया है। श्री जयनारायण व्यास को सर्वप्रथम श्री हीरालाल शास्त्री द्वारा सरदार पटेल की नाराजगी उठानी पड़ी और राजस्थान में फूट का वह दौर आरम्भ हुआ, जो आज थामे नहीं थमता है। शास्त्री सरकार से भी व्यास जी का संघर्ष, सारी राजस्थान कांग्रेस और स्वयं व्यास जी के लिये भी, एक मोड़ का चौराहा था। शास्त्री जी को अपदस्थ कर जब व्यास जी ने राजस्थान की सत्ता हाथ में ली, उस दिन से राजस्थान में सत्ता हथियाने के संघर्ष का संघर्ष घर कर गया है। कांग्रेस में बहुमत गुणों और कार्यकर्त्ताओं की साधना और देन से नहीं बनता। वह हर साधनों से साध्य का विचार ताक में रखकर बनाया जाता है। व्यास जी से सत्ता छीनने का जो संघर्ष हुआ उसमें इन्सानियत की चुपचाप बलि दी गई। व्यास जी ने जिनको बनाया और गड़ा, पाला और पोसा उन्हींके द्वारा यह संघर्ष आयोजित किया गया। परिणाम यह हुआ कि यह कटु और नीच अनुभव आज हम सबको हो रहा है। उन दिनों व्यास जी की त्योरियां चढ़ी रहती थीं; परन्तु इन त्योरियों में मुझे विषाद ही अधिक मिलता था क्रोध कम। व्यास जी शायद यही महसूस करते थे कि जिस सत्ता के लिये बेटा बाप से अदावत करने लगे, शिष्य गुरु की पीठ में छुरा मारे और भाई भाई को धोखा दे; उस सत्ता का नैतिक आधार ही नहीं होता। उन दिनों व्यास जी अपने प्रियजनों पर बड़े नाराज हुआ करते थे। मुझ पर भी वे एक बार बड़े बिगड़े। मुझसे कहने लगे तुम मेरी हुकूमत के खिलाफ बगावत करवा रहे

हो, उदयपुर में। कांग्रेसमैन यह नहीं कर सकता। तुमको इसके लिये मांफी मांगनी होगी। वात कोई वड़ी नहीं थी। उदयपुर वासियों ने विजलीघर राज्य का हो, वाटर वर्क्स के लिये कर्ज दिया जाय आदि मांगों को लेकर कांग्रेस के नेतृत्व में आन्दोलन किया। जव व्यास सरकार कांग्रेस के लिये राजस्थान का राज्य प्रवन्ध कर रही थी, औपचारिक दृष्टि से व्यास जी की वात सही थी; परन्तु दलगत राजनीति औपचारिक अनुशासन से ही नहीं चलती। देश, काल और स्थिति का उस पर वड़ा व्यावहारिक असर पड़ा करता है। उन दिनों व्यास जी सुखाड़िया जी एवं वर्मा जी में मत-भेद आरम्भ हो चुका था और आपसी खुली लड़ाई के लिये सेनाएं सजाई जा रही थीं। इस वातावरण में कांग्रेस यदि उदयपुर आन्दोलन को छेड़तीतो उसके वाद घुटने नहीं टेक सकती थी। व्यास जी को मैंने उनके दफ्तर में मुलाकात के लिये चिट भेजी। करीव तीन घण्टे मुझे व्यास जी ने वाहर विठाये रखा। मैं नेताओं द्वारा इस प्रकार की सजा पाने का आदी हो गया हूं। श्री सुखाड़िया के वाहरी कक्ष में मुझे कभी-कभी तीन-चार घण्टों तक इन्तजारी में बैठना पड़ा है। कांग्रेस में कार्यकर्त्ताओं को मिनिस्टरों के वंगलों पर रात-दिन पनहियां तोड़नी ही पड़ती हैं। व्यास जी ने एक वार मुझसे पूछा, "जयपुर नहीं आते हो?" मैंने तपाक से उत्तर दिया, "जयपुर सौं हमें का काम। आवत जात पनिहां टूटे, विसरि जात निज काम।" व्यास जी आँखों में हँसकर रहगये। उस दिन भी तीन घण्टे विठा रखने के वाद व्यासजी वंगले जाते हुए मुझसे सेक्रेटेरियेट की सीढ़ियां उतरते हुए मिले। वोले, "तुम्हारी वगावत कोई भी सरकार सहन नहीं कर सकती। तुम मेरी सत्ता को उलटना चाहते हो।" मैंने कहा, "जी नहीं।" व्यास जी ने झिल्लाकर वीच ही में कहा "जी नहीं?" अच्छा! उस दिन व्यास जी का रोप मैंने देखा और उस रोष में उनका पवित्र अमर्ष भी मुझे सहने को मिला। वड़ी वात यह थी कि व्यास जी के रौद्र रूप से भी मुझे डर नहीं लगा। एक मुकाविले का मज़ा आया। ऐसा नहीं प्रतीत हुआ कि व्यास जी पीस देंगे। उल्टा यह विचार आया कि जयनारायण व्यास देखें, क्रोध को कहां तक पी जाता है। व्यास जी ने वह सारा क्रोध पी लिया। व्यास जी सच्चे व्राह्मण थे; उनके हृदय में क्रोध के तूफान तो आते थे, परन्तु उनके दिल में गांठ वंधती न थी। वर्मा जी वड़ी फूर्ति से कार्यकर्त्ताओं को वचाव का मौका दिये वगैर गांठ वांध लेते हैं—फिर वह कार्यकर्त्ता की मृत्यु के वाद ही ढीली होती है। सुखाड़िया जी नाराज़ नहीं होते; परन्तु अप्रसन्न होने पर किसी को वकसते कदापि नहीं। वर्मा जी मोटे रस्से की गांठ दिल में वांध लेते हैं; सुखाड़िया जी महीन जनेऊ की गांठ वांध लेते हैं। वही मुस्कान, वही आवभगत, वही नमस्कार, वही अपनत्व; परन्तु कार्यकर्त्ता को हर दिन लगने लगता है, वह खिसकाया जा रहा है, हटाया जा रहा है, घेरा जा रहा है। अभागे कार्यकर्त्ता को टूट जाने पर ही पता चलता है कि वह टूट गया है। श्री सुखाड़िया विश्वास में रखकर काटते हैं; वर्मा जी तो दुर्भागी कार्यकर्त्ता पर सीधा अक्रमण ही

करते हैं, शास्त्री जी अंधेरे में हमला बोलते हैं, पालीवाल जी की नाराजगी इतनी वेशर्म थी कि एक फेरे में ही घूंघट खोल देती थी। पर व्यास जी की नाराजगी गरम अंगीठी की तरह थी। यह रफ्ता-रफ्ता ठंडी हुआ करती थी। और जब वे समझ लेते थे, तब कार्यकर्ता ने जैसे कुछ किया ही नहीं ऐसा लेकर वे चलते थे। व्यास जी कार्यकर्त्ता के लड़ने-झगड़ने, बहस-मुबाहिसा करने और आन्दोलन चलाने तक के अधिकार मान कर चलते थे। वे कार्यकर्त्ता को बचाव का, समझाने का और समझने का अवसर देते थे। व्यास जी का नेतृत्व औरंगजेबी नहीं अकबरी था। उस दिन इतना रुष्ट होने पर दूसरे दिन व्यास जी मुझसे मिले—अपनी चेम्बर में, शान्ति से पर कुछ खिन्न और तनिक खिंचे हुए। व्यास जी, मुख्यमन्त्री ने घूर कर मुझे देखा और कहा, "तुमको मुझसे क्या शिकायत है! कह दो। पर यह समझ लेना मैं आन्दोलन नहीं चलने दूंगा।" 'मैंने व्यास जी को कहा, "हमसे आप नाराज़ क्यों होते हो! हम तो आपके पट्ठे हैं, जिसके पीछे लगा देते हो हम लग जाते हैं।" आपने और वर्मा जी ने कहा, "शास्त्री जी के पीछे पड़ो। हम पड़ गये। फिर आप सबने हमको पालीवाल के पीछे 'छू' किया। हमने पालीवाल जी की पिंडली पकड़ ली। आज सुखाड़िया जी ने आदेश दिया है कि व्यास जी के पीछे लगो। सो अपने नेता का आदेश पालन कर रहे हैं।" व्यास जी ने कहा, "यही तुम्हारी कांग्रेस की सदस्यता की स्पिरिट है क्या?" मैंने कहा, "जी हां, उसके उपरान्त भी बातें हैं।" व्यास जी ने कहा, वे क्या हैं, मैं भी तो सुनूं।" मैंने कहा "आप बड़े कवि हैं, मुख्यमन्त्री हैं। मैं छोटा कवि हूं, पर कवि हूं और अब कवि सत्ताधीश से पाला पड़ा है।" व्यास जी सीधे बैठ गये बोले, "सुनाइये भूषण जी, औरंगजेब को कविता सुनाइये।" मैंने कहा, "ज़िला कांग्रेस का अध्यक्ष माफी नहीं मांगेगा। वह संगठन का अध्यक्ष है और कांग्रेस सत्ता को उसके मार्ग दर्शन में रहना होगा। व्यास जी ने गुर्राकर कहा, "गुलामी में।" मैंने हँसकर कहा, "मार्ग-दर्शन में।" व्यास जी ने मुझे जैसे सिर से पैर तक देखा और कुछ भी नहीं बोले। मैंने कहा, "शासन भार संभारि है क्यों यह मति सुकुमार? जागीरदार निबाजिबै कांग्रेस दुसवार।" व्यास जी हिले, मानो तिलमिला गये। मैंने कहा, "मिनिस्टर घूमत फिरत, पी० ए० कलम घिसे; एम० एल० ए० टी० ए० गिने, जनता डी० ए० भरै।" व्यास जी ने गम्भीर स्वर में कहा, "जनार्दन!" मैंने कहा, 'इतिहासाँ सुणता रह्या, ईस भगत ढिग आय, व्यास देव अब को भयो डाकू निक ढिग जाय।" व्यास जी कुर्सी छोड़कर खड़े हो गये जैसे मेरी ओर लपके। मैंने कमरे से त्वरापूर्वक बाहर निकलते हुए "इस गुस्से पर प्यार आता है, व्यास जी।" उस बरामदे के क्षुभित वातावरण में मुझे मुख्यमन्त्री की चेम्बर से गुर्राई हुई प्रतिध्वनि-सी सुनाई दी 'नालायक'।

निश्चय, नालायक! व्यास जी द्वारा दिये गये इस विशेषण से मैं तब भी नहीं नाराज़ हुआ और आज मैं मानता हूं राजनीति में मेरे जैसा दूसरा नालायक नहीं

है। यानी बिना मशरफ का। व्यास जी का मुझे नालायक कहना उनके प्यार का गुस्सा खा जाने का परिणाम था; परन्तु गुटबाजी की इस कसमसाती हुई राजनीति में मैं वाकई अयोग्य हूं। वोट प्राप्त करने, उसका संयोजन करने, सत्ता को दसों हाथों से कलेजे से चिपकाये रखने के भारी सामर्थ्य के अर्थ में तथा सब्ज बाग दिखाने के जादू में मथुरादास जी माथुर के रोम से और सुखाड़िया जी के पांव के नाखून से मैं कम उतरता हूं! हम तो हरिकीर्तन किया करते थे। "भट्ट, शास्त्री वर्मा, व्यास, रघुपति राघव राजा राम। माथुर, सुखाड़िया कुम्भाराम, पतीत पावन सीताराम।"

मुझे संतोष है कि राजस्थान की कांग्रेस राजनीति की यह गुटबाजी की धुन सही निकल गई। भट्ट, शास्त्री, वर्मा और व्यास की लड़ाई कुछ तो सत्ता के लिये थी; कुछ नेतृत्व के लिये भी थी। अतः एक प्रकार से यह संघर्ष राजस्थान का रघुपति राघव राजाराम ही कहा जा सकता था, क्योंकि ये चारों नेता (हरिभाऊ जी के शब्दों में राजस्थान का ब्रह्मा) नेतृत्व और राजगद्दी के हकदार नेता थे; क्योंकि राजपूताने के सदियों के सामन्तवाद के विरुद्ध ये जिहाद बोलने वाले मुरब्बी थे। शास्त्री जी का नेतृत्व सामन्तवाद के विरुद्ध मुसद्दी का नेतृत्व था। गोकुलभाई का एक संताई का नेतृत्व था; और वर्मा जी की लोकनायकी एक अखाड़ेबाज का नेतृत्व थी। व्यास जी का नेतृत्व युधिष्ठिर का-सा नेतृत्व था। शास्त्री धृतराष्ट्र, गोकुलभाई विदुर, वर्मा जी द्रोण और व्यास का कर्ण के समान नेतृत्व था। पर वह नेतृत्व था। मैं नेतृत्व को रघुपति राघव राजाराम कहता हूं। माथुर, सुखाड़िया और कुम्भाराम का नेतृत्व नहीं है। वह तो सत्ता के चरण लग जाने पर पतित पावन करने वाली तपस्या है। प्रजामंडल लोकपरिषद् से कांग्रेस के रूप में ढलने तक राजस्थान के राष्ट्रीय आकाश में व्यास जी तेजस्वी सूर्य की तरह तपते रहे। सत्ता में जाने के बाद व्यास जी का नेतृत्व चन्द्रमा की तरह होने लगा। परन्तु फिर भी राजस्थान की प्रजा के संघर्षों के मोर्चों पर व्यास जी का सर्वत्र नाम सुनाई पड़ता और मोर्चे की हर खाई में उनका दर्शन हुआ करता था। व्यास जी का राजनीतिक नेतृत्व चतुर्मुखी प्रवृत्तियों को लेकर चलता रहा। शास्त्री की तरह सत्ता और तंत्र-मंत्र को लिये ही वह नहीं बैठा रहा और तीसरी श्रेणी की डिप्लोमेसी होकर वह मर नहीं गया। गोकुलभाई की भांति गांधी जी के चप्पल में व्यावहारिकता के कांटे चुभते रहने में वह समाप्त नहीं हो गया। वर्मा जी की भांति वह सहज ही बाबा ब्रह्मचारी होकर सत्ता से नहीं हटा और न वर्मा जी की भांति लोकनायकत्व के मलखम वरने में ही रहा। व्यास जी का नेतृत्व स्थिति और परिस्थितियों का वायु था। उतार-चढ़ाव की गति था। वर्मा जी के प्रति आदर सहज होता है; पर वर्मा जी का नेतृत्व सहन करना पड़ता है। वह पीड़ित करते रहने का नेतृत्व है, जो शत्रु को खत्म कर पैशाचिक सन्तोष प्राप्त करता और मित्र को अथवा इष्ट को मिनिस्टर बनाकर मूंछों पर ताव दिया करता है। व्यासजी का

नेतृत्व तीर्थयात्रा का एक मार्ग था; ऊबड़-खावड़, सपाट, सरपट, टेढ़ा-मेढ़ा, विश्रामों और सरायों से समृद्ध; परन्तु आंधियों तथा तूफानों से घहरा हुआ वह नेतृत्व मार्ग था। जुलूस में यह नेतृत्व 'शेरे राजस्थान' के रूप में सुनाई पड़ता था; कांग्रेस की बैठकों में वह घुटता, जिद करता और छटपटाता हुआ नेतृत्व दीखता था। सभाओं में व्यास नेतृत्व एक समझदार और सावधान करनेवाली आवाज़ था, जिसे आवाम सुनता था। आन्दोलनों में वह एक बाहोश सिपाही की लीडरशिप थी और सत्ता की कुर्सी पर वह एक शासक का नेतृत्व हो जाता था जो प्रेरित होता था; पर मन्द पड़ जाता था। सोचता था परन्तु रुकता भी जाता था। वारा-न्यारा करना चाहता; परन्तु अग्रसोच में डूबा रहता था। व्यास जी शासन के नेता बहुत कम थे, ऐसा मैं मानता हूं। व्यास जी का नेतृत्व शासन को मार्गदर्शन दे सकता था; पर शासन का संयोजन और संचालन करना व्यास जी के नेतृत्व के वस की बात न थी। सच तो यह है, वर्मा जी और व्यास जी शासन के नेता नहीं थे। ये जनता की प्रेरणाओंऔर आन्दोलनों के नेता थे। संघर्षों में और जुलूसों में ये फबते थे। महकमाखास में अपनी चेम्बरों में बैठकर ये फाइलों के बजाय संघर्षों की कविताएं ही लिखना अधिक पसन्द करते थे। शासनसूत्र के संचालल के अर्थ में वर्मा जी और व्यास जी अराजक़ रहे हैं। वर्मा जी तन्त्र पर हावी रहते थे, व्यास जी तंत्र से उपरत होकर शासन की फिलासफी पर अधिक विचार किया करते थे। एक प्रहार करता और हुकुम देता था, दूसरा नोट लिखता, सफाई पूछता, सावधानी देता, समझता और समझाता था। हुकुम देकर हुकुम वापस ले लेने में उसको संकोच नहीं था। वर्मा जी और व्यास जी शासक नहीं थे, शासन के सूत्र संचालक थे। शास्त्री और सुखाड़िया को मैं नेता नहीं मानता, उस अर्थ में मैं वर्मा जी और व्यास जी को नेता मानता हूं। शास्त्री जी तो तीसरी श्रेणी का कीनाखोर अनुशासक था, जो साम दाम दंड भेद को लेकर चलता था और यह तीसरे दर्जे की कटु नीति चरखा चलाते हुए सजीव हुआ करती थी। शास्त्री जी का प्रशासन एक कामुक का प्रशासन था। सत्ता के अबाधित भोग में शास्त्री जी विश्वास रखते थे और वनस्थली तथा स्वयं के मरजीदानों के अभ्युदय के लिये उनकी सत्ता थी। हां, मैं शास्त्री जी को इस बात की बधाई दूंगा कि उन्होंने सत्ता पाने पर अपने इष्ट-मित्रों, संगी-साथियों को खूब आगे बढ़ाया और उनको आत्म-सम्मानपूर्वक बसा दिया। सुखाड़िया शासन की तरह नहीं, जिसमें मित्र मारे जाते हैं और विरोधी पनपा करते हैं। इस दृष्टि से सुखाड़िया जी का शासन सच्चे माने में शासन है। व्यासजी का शासन एक मनुष्य था, जिसमें अच्छाइयां और खराबियां दोनों स्पष्ट दिखाई देती थीं। सुखाड़िया-शासन की तरह वह विलक्षण नहीं था। व्यास जी सत्ता को हाथों में रखकर चलते थे। शास्त्री जी की तरह कमर में बांधकर और सुखाड़िया जी की तरह पैरों में लपेटकर नहीं चलते थे, मुख्य मन्त्री जयनारायण व्यास।

कुछ भी हो, मेरी मान्यता है व्यासजी शासन में उतने सफल नहीं हुए, जितने श्री सुखाड़िया हो रहे हैं। श्री सुखाड़िया ने शासन का प्रेरणा पक्ष व्यास जी से ही लिया है, इसमें मुझे संदेह नहीं है। वर्मा जी से तो श्री सुखाड़िया ने कुछ अगुआ कार्यक्रम ही लिये हैं और वे भी वर्मा जी को संतुष्ट और प्रसन्न रखने के लिये। श्री सुखाड़िया ने अपने शासन के लिये न तो शास्त्री जी से कुछ लिया है, न पालीवाल जी की डायरी के कुछ पन्ने उन्होंने पढ़े हैं और न व्यास जी की विरासत से ही कुछ लिया है। श्री सुखाड़िया जन्मना राजनीतिज्ञ हैं और राजतंत्र को चलाने की खूब सामान्य बुद्धि उनमें है। यद्यपि श्री सुखाड़िया जी को मैं राजस्थान के पंचवर्षीय विकास युग का प्रवर्तक शासक मानता हूं तथापि मुझे श्री सुखाड़िया के शासन में व्यावहारिकता और लेन-देन की समझ ही अधिक मिलती है। श्री सुखाड़िया के शासन के कुछ अच्छे कार्यक्रम हैं, जो पंचवर्षीय योजनाओं के अंतर्गत अनिवार्यत: करने पड़ते हैं। सुखाड़िया के पास शासन की कोई फिलासफी नहीं है। सुखाड़िया का शासनतंत्र जोड़-तोड़, समझौतों और संतुष्ट रखने का हिकमती-तंत्र है अवश्य। सुखाड़िया-तंत्र शास्त्री की तरह कीनाखोर तन्त्र नहीं है। सुखाड़िया बने वहां तक विरोधी और अभागों का नुकसान नहीं करता। सुखाड़िया के शासन में न राग है और न द्वेष है। वह उपरत शासन भी नहीं है। सुखाड़िया सरकार जनता की मांगों को और आवश्यकताओं को हिकमत और परस्ती के साथ पूरा करने का स्वकेन्द्रित प्रयास मात्र है। सुखाड़िया सौम्य अधिनायक है, जो स्वयं के अलावा किसी को भी बढ़ने नहीं देता। व्यास का शासन एक हलचल, एक कम्पन, एक हिलोर जैसा था। बद्धमूल आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये व्यास-शासन एक मौन विश्लेषण था। उसमें इरादा था, प्रेरणा थी, उमंग थी; परन्तु संकल्प और प्रयास की कमी थी। व्यास जी के मन में राजस्थान का बड़ा विस्तृत समाजवादी सपना रमा रहता था। परन्तु वह स्वप्न व्यास जी में दर्द पैदाकर वापस जैसे खो जाता था। राजस्थान का पहला पंचवर्षीय आयोजन केवल ४५-४८ करोड़ का ही बने और उसमें से भी बहुत कम खर्च हो—यह इस बात का प्रमाण है कि व्यास स्वप्न-वेत्ता अधिक थे, स्वप्नद्रष्टा अधिक थे। श्री सुखाड़िया स्वप्नवेत्ता और द्रष्टा तो हैं ही, परन्तु बड़े कुशल कर्त्ता भी हैं। व्यास जी ने अपने शासन काल में अपने नाम से कितने शिलान्यास किये और सुखाड़िया ने अपने शासन काल में अपने नाम से कितने शिलान्यास किये और सुखाड़िया ने अपने नाम की प्रशस्तियों के कितने संग-मरमर खुदवाये इसे जानने पर संख्या में १:१० का अनुपात मिलेगा। अच्छे स्थायी कार्य आरम्भ करने पर शुद्ध और निष्पाप कीर्ति लेनी चाहिए, कर्त्ता को मिलनी चाहिए। जनतन्त्रीय समाज की अच्छी और निष्कलंक कीर्ति देने और व्यक्ति की स्थायी समाज को देन की दृष्टि से प्रतिष्ठा की मूल्यांकित प्रणाली होनी चाहिए। कीर्ति को आज की तरह खरीदकर अपना नाम समाज की आंखों के सामने रखने

और सदैव गूंजता हुआ बनाने में आत्मा की सच्ची प्रतिष्ठा नहीं होती। व्यास जी इस तथ्य को समझते थे। आंग्ल लेखक नेल्सन के इस अजर वाक्य का सत्य उनको ज्ञात था। नेल्सन ने कहा कि उदात्त मस्तिष्कों की एक कमज़ोरी कीर्ति की लालसा होती है। हमारा दुर्भाग्य यह है कि जनतन्त्रीय सामाजिक-राजनीतिक प्रणालियों में कीर्ति की यह स्वाभाविक लालसा उदात्त कार्यों के साथ न जुड़कर उनके स्वयं के लिये ढोल पीटने के साथ लग गई है। राजनीतिक क्षेत्र में सदैव संघर्ष करने वाले व्यास जी इस सत्य को सम्पूर्णतः आत्मसात नहीं कर सके। 'शेरे राजस्थान' के उनके लिये सभा के आरम्भ और अंत में लगाये जाने वाले नारे, व्यास जी के व्यक्तित्व से जैसे मेल नहीं खाते थे। मुझे यह नारे कतई पसंद नहीं थे और व्यास जी के प्रति मेरी अपनी श्रद्धा को यह ठेस पहुंचाते थे। एक बार मैंने व्यास जी से बातों ही बातों में कह दिया, "शेरे राजस्थान तो आप हैं; परन्तु राजस्थान में चीतए राज-राजस्थान, भालुए राजस्थान कौन है?" व्यास जी की आंखें हँसी और उन्होंने मुझे छूटते ही कहा, "तू चाहे उसे यह खिताब अदा कर दे मुझे शेर नहीं मानता हो तो गीदड़ ही मान ले। पर मैं तुझे झुंझलाया हुआ चीता मानता हूं।" मैं हँस पड़ा। इस चुभते हुए परिहास के अन्तराल में इस प्रकार के नारों के लिये जो कचोट व्यास जी के अंतराल में थी, उसका मुझे पता चल गया। यह तो उत्तम जीवन की शोभा है; वह आत्मा की सुगन्ध है और उसके लिये समाज के उत्तमोत्तम श्रेय भावी विचारकों को विचार कर अभिनिश्चित संहिता ही बनानी चाहिए। व्यास जी निस्संदेह इस अर्थ में राजनीति की स्वीकृत परिपाटी में रहते थे, परन्तु स्वयं को अमर करने को हठी और आग्रहभूत कोशिश शायद व्यास जी ने नहीं की। राज्य के ज़न सम्पर्क विभाग द्वारा कीर्ति खरीदने का यह व्यवस्थित उपक्रम मुझे अनैतिक लगता है और जनतन्त्रीय जीवन के स्वाभाविक घर्षण से उत्पन्न होनेवाले जीवन के मानदंडों और मूल्यों का उत्तरदाया स्वीकृति के लिये अत्यन्त चिन्ता पैदा करता है।

भारतीय स्वतन्त्रता और पंचायती राज्य और जनतन्त्रीय प्रगतिशील समाज की चेतना का आग्रह और मूल्यों का स्थापना के लिये अनवरत संघर्ष यही जय-नारायण व्यास के व्यक्तित्व का आग थी, जो उनकी चिता की आग के साथ बुझ गई है। मुख्य मन्त्री जयनारायण व्यास और लोकनायक व्यास मुझे रह-रहकर दो सामानान्तर व्यक्तित्व प्रतीत होते थे। मुझे कभी-कभी आश्चर्य होता था, इन दो उभरते एवं उमड़ते हुए प्रवाहों का व्यास जी स्वयं में समन्वय कैसे करते थे! यह समन्वय अत्यन्त कठिन है; या तो पत्थर या परम हंस ही ऐसी उपरति प्राप्त कर सकता है। मन को मारकर मूल्यों को विकृत कर अथवा अन्तरात्मा का समाधान कर यह समन्वय हो नहीं सकता; और होने पर केवल एक आत्मसन्तोष करने वाला ख्याल भर रह सकता है। एकबार मैंने व्यास जी से पूछा, "इतने उतार-चढ़ाव क्यों हैं आपमें और मुझमें व्याज जी।" व्यास जी ने मुझसे कहा, "सुखाड़िया की

तरह हम-तुम सौभाग्यशाली नहीं हैं। उसके समान तुम समन्वयशील और शान्त गुणन करने वाले हो नहीं सकते। हमें प्रेम नहीं मिला, हमने सच्चे अर्थ में स्वयं के अलावा किसी से प्रेम ही नहीं किया। सुखाड़िया ने प्रेम का अपना घर बसाया है, तुमने-हमने दफ्तरी—औपचारिक घर बसाया है।" रात्रि का समय था और उनके बरामदे की लाइट अंधेरे को काटकर जैसे व्यास जी की भौओं पर फिसल जाती थी। मैं चुप रहा, व्यास जी चुप रहे। परन्तु जैसे भी रोककर, स्थापित कर, ढकेल कर एक सत्य हम दोनों के सामने खड़ा हो गया। तब क्या राजनीतिक जीवन के लिये समग्र सार्वजनिक जीवन के लिये, प्रेम का घर, प्रेम की सगाई अनिवार्य है? व्यास के राजनीतिक सामाजिक जीवन की आग प्रेम का स्नेहरम्य आंसू होकर चिर-काल तक किसी की आंख में बसा रहना चाहती थी। चलते हुए मैंने कहा, "व्यास जी, मैं समझ गया। "तू बसे मेरे हृदय में आग बनकर, मैं बसूं तेरे नयन में अश्रु होकर।" व्यास जी हिले, बोले, "यह दर्द तूने कहां से पाया है?" मैंने कहा "यह मैं स्वयं नहीं जानता। जानता होता तो···" व्यास जी बीच में बोल पड़े। "तो ज़िंदगी के इस झमेले में पड़ता ही नहीं।" प्रेम का अत्यन्त प्यासा जयनारायण व्यास, जीवन के इन सांसारिक पुरुषार्थों को 'झमेला' मानता था! तब क्या सार्वजनिक जीवन की यह सारी शहीदी, यह समग्र सर्व हारी तपस्या, यह तथाकथित त्याग, यह सब कुछ जो अमरता के लिये पूर्व ग्रह हैं, प्रेम की प्यास न बुझने से ही हैं? समाज का कल्याण करने की यह आग किसी प्रिय के चिर विरह का आंसू है? व्यास जी और मुझमें जो मन का मेल था, वह शायद व्यास जी के आंसू का भार भीगापन था और तब से व्यासजी नई कविता बनाते, तो मुझे सुनाते और मैं बनाता तो उनको सुनाता। कांग्रेस की राजनीति में मैं अन्धा होकर वर्मा जी और सुखाड़िया जी के साथ रहा हूं; इतनी अन्ध श्रद्धा मुझमें इन दोनों नेताओं के प्रति रही है कि मुझमें एक प्रकार का विवेक ही नहीं रह गया, और मैं इन दोनों की प्रसन्नता के लिये ही जैसे कांग्रेस में बना रहा हूं। मुझे वर्मा जी और सुखाड़िया जी के प्रति अपनी इस अन्ध श्रद्धा के लिये अफसोस नहीं, एक दर्द है कि इस अन्धश्रद्धा का इनको मूल्य मालूम ही नहीं है। व्यास जी के प्रति मेरी श्रद्धा जागृत थी। मैं उनके प्रति उनके गुणों के कारण, उनकी आग और उनके आंसू की वजह से खिचा रहा और आज जब वह इस असार संसार के नहीं रहे, तब मैं उनकी याद मन में समाये हुए हूं।

जननायक की भांति जयनारायण व्यास एक ठण्डी क्रान्ति की आग ही आग थे। उनकी चाल में अल्हड़ मस्ती थी, उनकी भंगिमा में एक निराली बेफिक्री थी, उनकी मुद्राओं में एक सांकेतिक अभिव्यक्ति थी। व्यास स्वयं में नेतृत्व की वह्नि ज्वाला थे, जो विचारों को रूप देती और भावनाओं को तपाती है। व्यास का जन नेतृत्व उनका खुद का ही था, किसी की अनुकृति नहीं था। राजस्थान के चोटी के नेताओं में अधिकांश अखिल भारतीय कांग्रेस व्यक्तित्वों की अनुकृतियां हैं, विकृत प्रतिबिम्ब

हैं। श्री वर्मा कभी सरदार पटेल बनते नज़र आते हैं, तो कभी जवाहरलाल नेहरू जैसे बनने की कोशिश करते हैं। श्री हीरालाल शास्त्री तो नेतृत्व के दर्पण में स्वयं की छवि देखते रहते हैं और केवल वेश बदलने में विश्वास करते हैं। श्री गोकुल-भाई भट्ट कांग्रेस के गांधी जीके मन्दिर के पुजारी हैं और हमारे दा.साहब नेतृत्व के अमूल्य स्टाम्पों का खद्दर मढ़ा अलबम हैं। श्री कुम्भाराम सिवाय स्वयं के और किसी के नेतृत्व को मानते ही नहीं। पर व्यास जी का नेतृत्व श्री जवाहरलाल नेहरू से अनुप्राणित होते हुए भी वह जयनारायण व्यास की आत्म वेदना का तकाजा था। आज सत्ता प्राप्ति के बाद कांग्रेसमैन जनता से बुद्धि से सम्बन्ध रखने लगा है और कदम पर जनता के हिताहित कार्य कर वोट की आशा लगाये हुए है। व्यास जनता से आत्म संवेदना का नाता रखते थे, अतः उनके नेतृत्व के उत्तर दक्षिण के उतार-चढ़ावों के बावजूद व्यास जी आम लोगों के दिलों में जगह किये हुए थे; और हर स्थिति में आदर के पात्र बने हुए थे। व्यास जीको मैंने झोंपड़ी से महल में रहते और ऊंट से लगाकर हवाई जहाज़ में सफर करते हुए देखा है। खपरैल में व्यास 'खपरैल' से दीखते थे और महल में सुसंस्कृत सज्जन की भांति कलात्मक रुचियों से मण्डित प्रतीत होते थे। ऊंट परव्यास जी राजस्थान की गतिके आरोह-अवरोह मालूम होते थे और हवाई जहाज में देश के दूत की तरह संजिदा लगते थे। परन्तु व्यास की यह बहुरूपता उनके नेतृत्व की आग की तपिश ही थी। संघर्ष की राजनीति और रचनात्मक क्षेत्रों में व्यास विचारोत्तेजकता, पैठती हुई दृष्टि और आग्रह से भरी मान्यता थे। सिद्धान्तों को समझने में व्यास जी ने कभी समझौता नहीं किया। व्यास की मानसिक ईमानदारी दीपक की लौ के समान थी और अंधेरे में एक रस प्रदीप्त रहती थी। सत्ता प्राप्ति के परिणामस्वरूप अवश्यंभावी अवसरपरस्ती की वारांगनावृत्ति व्यास जी की मानसिकता में, जहां तकसोच-विचार का सवाल है, नहीं थी। सभाओं में व्यास जी विचारों के प्रपात की तरह झरते थे और संघर्षों के व्यूह में वे एक निष्णात सेनानी थे। व्यास के नेतृत्व की अग्नि अन्तरात्मा की संवेद-नाओं में सदैव जला करती थी। जब श्री हीरालाल जी शास्त्री ने व्यास के हाथों में हथकड़ियां डालीं, तब श्री व्यास के नेतृत्व की आग मानो आंसू बन गई। शास्त्री जी के प्रति उनके मन में वैर न बंधा, परन्तु अपना बचाव करने का दुराग्रह भी उनमें घर नहीं कर सका। व्यास का मुकद्दमा वृहत् राजस्थान की कांग्रेस हुकूमत का विष वृक्ष है, जिसकी आज लम्बी-चौड़ी डालियां हो गई हैं और जिसके पत्ते एक घनी घटा में मरमराया करते हैं। गोडसे ने गांधी का शरीर गोलियों से बेधकर मिटा दिया; परन्तु हम सत्ता के इकबाली भ्रष्टों ने गांधी जी की आत्मा को लील लिया है। कांग्रेस संगठन में मठों और विहारों की-सी अदृश्य हिंसा फैल गई है; जो आपस में लड़ते-झगड़ते आपसी गुटों और रात-दिन एक-दूसरे के प्रति किये जाते अन्याय के मनसूबों में दिखाई देती है। व्यास जी कांग्रेस संगठनकी इस सभ्य हिंसा

को अच्छी तरह जानते थे। कभी-कभी वे स्वयं भी प्रतिक्रिया में यह हिंसा वरत जाया करते थे। परन्तु कुल मिलाकर व्यास के नेतृत्व की आग व्यक्ति और समाज के सहाय एवं प्रामाणिक उत्कर्ष के लिये जलती रही। सत्ता की राजनीति आवश्यकता के छद्म किन्तु एकमात्र प्रमाण को मानकर ही चलती है। व्यास जी इस आवश्यकता को भी खूब समझते थे। इस पाषाण की-सी आवश्यकता की पूर्ति उनको करनी पड़ती थी। परन्तु उनका मन कचोटता था और अपनी अन्तरात्मा की इस पवित्र अपराध वृत्ति के शमन के लिये व्यास जी राजनीति से इतर प्रवृत्तियों से घिरे रहते थे। संगीत, काव्य और नृत्य कलात्मक ऊहापोह व्यास जी के चतुर्मुखी व्यक्तित्व का मनोरंजन पक्ष थे और इनमें वह तभी सरकते थे, जब राजनीतिक क्षेत्र में उनको अपना मन मारना पड़ता था। सरदार पटेल का सदैव यह आग्रह रहा कि व्यास जयनारायण उनको नेता माने और उसका प्रत्यक्षप्रमाण भी दिया जाता रहे। कांग्रेस ही नहीं सभी राजनीतिक दलों के नेताओं में यह हठ सृष्टि के आदि से मिलती है। कांग्रेस के नेता कार्यकर्त्ताओं को मछलियों की तरह हुक्म में अटकाये रखते हैं। क्षेत्र में जय जयकार के नारे लगाने और खैरियत बोलने वाले कार्यकर्त्ताओं को वह आत्मा से दीन और आर्थिक दृष्टि से पंगु बनाकर रखता है ताकि 'नेता नहीं मानने' का खतरा पहले तो पैदा हो ही न और हो भी तो वह कम-से-कम हो। सरदार पटेल सत्ता के जोर से व्यास जी से अपने नेतृत्व का इजहार कराना चाहते थे और व्यास जी को ऐसा इज़हार करना पड़ा था। कांग्रेस के अध्यक्ष का चुनाव था। पुरुषोत्तमदास टण्डन के विरुद्ध आचार्य कृपलानी। दोनों ही वरेण्य नेता थे। परन्तु दोनों की दो विचारधाराएं थीं। व्यास जी तब राजस्थान प्रदेश कांग्रेस के एक-छत्र नेता थे और उनकी दिली इच्छा थी कि कृपलानी कांग्रेस के अध्यक्ष बनें। पर सरदार ने इशारा किया कि राजर्षि टण्डन को ही कांग्रेस का अध्यक्ष बनना है। लोह पुरुष की विलक्षण आंखों ने मानो व्यास जी से पूछा, 'मुझे नेता मानते हो तो प्रमाण दो। टण्डन जी को राजस्थान कांग्रेस के वोट दिलवाओ।' मुझे अच्छी तरह याद है जयपुर में कांग्रेस बैरकों में व्यास जी, वर्मा जी और सभी मान्य 'जी' लपके हुए आये। राजनीतिक आवश्यकता की राम नाम की-सी दुहाई दी गई और सबने टण्डन जी को मत दिया। व्यास जी जब तक सिद्धान्तों पर टिक कर लड़ते रहे। उनको राजस्थान की कांग्रेस की गद्दी नहीं दी गई। शास्त्री और व्यास का संघर्ष सरदार पटेल की मनःस्थिति का झगड़ा था। वर्मा-व्यास का विस्तृत बहुमत होते हुए भी लघुमत शास्त्री की सरकार बरकरार बनाये रखना कांग्रेस की नेताशाही का ज्वलन्त प्रमाण है। ऐसी अनेक घटनाएं मिल जावेंगी, जो व्यास जी के राजनीतिक जीवन की लोच व्यक्त करती हैं, परन्तु इस लचकीलेपन के होते हुए भी व्यास जी में राजनीतिक विचार और दृष्टि का एक अमिट अंकन बराबर बना रहा। राजनीतिक नेतृत्व की वह आग कभी नहीं बुझी। कभी-न-कभी किसी-न-किसी रूप में वह

फूटती ही रही। सच तो यह है कि जयनारायण व्यास भारतीय संघर्ष की उदात्त पैदायश थे और मरते दम तक वे मोर्चे पर ही रहे। संघर्ष के बिना व्यास जैसे जिन्दा ही नहीं रह सकते थे। कर्म निष्कासन मिलने पर वह विचारों के तीर चलाया करते थे। उनका अन्तिम अखबार 'पीप' इसका अनुकरणीय उदाहरण है।

राजस्थान के कांग्रेसी व्यक्तियों की आपसी टक्कर ही स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद राजस्थान कांग्रेस की दुर्भाग्यपूर्ण कहानी है और इस कहानी का अन्त कांग्रेस के समूचे अन्त में ही होगा। व्यासजी की टक्कर इन टक्करों में हमें निरन्तर और धारावाहिक मिलेगी।। व्यास जी स्वयं को जलजलों का पला मानते थे और जल-जले में ही उनका अन्त हुआ। जब-जब व्यास जी सत्ता की कुर्सी पर बैठे, तब-तब कुर्सी उनको हिलाती रही और वे उस कुर्सी को हिलाते रहे। जिन्दगी में खुलकर खेलने वाला व्यास राजनीति में भी खुल कर खेला और सत्ताधीश तथा सत्ता लोलुप कांग्रेसी से लड़ता रहा। सत्ताधीश होने पर व्यास जी स्वयं से भी लड़ते रहे। परन्तु उनकी यह लड़ाई गैर सत्ताधारी कांग्रेस जन से नहीं हुई। उनका संघर्ष सत्ता के लिये आतुर महत्त्वाकांक्षियों से होता रहा। शास्त्री-व्यास संघर्ष के पीछे कांग्रेस के बहुमत एवं अल्पमत के आग्रह और नेतृत्व के पूर्वाग्रह लड़े और न्यूनतम भी सिद्धान्तों की भूमि पर यह संघर्ष न हुआ। शास्त्री गुट निस्सन्देह अल्पमत में था। और एक ऐसा गुट था जो सत्ता को अपने गुट के लिये ही रखना चाहता। वह एक प्रकार का फासिस्टी गुट था। शास्त्री गुट ने सत्ता और प्रहार द्वारा स्वयं को बहुमत में विस्तार करना चाहा और अपने इस प्रयत्न में वृहत् राजस्थान की प्रारम्भिक अव-स्थाओं को विकृत कर स्वयं समाप्त हो गया। इस जिद्दी और कीनाखोर गुट के मुकाबले में वर्मा व्यास दल निस्सन्देह अधिक जनतंत्रीय प्रतीत होता था। यद्यपि मैं आज कांग्रेस में जनतंत्र की स्थिति मानता ही नहीं हूं, तथापि तुलनात्मक दृष्टि से वर्मा-व्यास दल का रुझान जनतंत्र की ओर अधिक मानने में मुझे आपत्ति नहीं है। कुल मिलाकर कांग्रेस एक नेताशाही है। सामन्तवाद के विरुद्ध लड़ती हुई भी कांग्रेस स्वयं में सामन्तवादी प्रकृति की रही है। पुराने और बहुपरिचित सामन्त-वाद को सम्पूर्णतः नेताशाही में ढालने का बारीक काम श्री सुखाड़िया जी ने कर दिया है। सच तो यह है कि नेताशाही सामन्तवाद से भी कई अर्थों में सड़ी हुई चीज़ है। नेताशाही जनतन्त्र को अपनी सुविधा और स्वेच्छा का उपक्रम मात्र मानकर चलती है। सामन्त अन्य सामन्तों और छुटभैयों की कशिशों में बंधा चलता था। नेता तो पट्ठों और पिछलगुओं के बल पर ही चलता है। कांग्रेस में आज चारों ओर 'टाउट' और 'टोटम' फैला हुआ हमें इसीलिए मिलता है कि नेताशाही ने कांग्रेस के दिल और दिमाग को खरीद लिया है। राजनीति में खरीद फरोख्त का बाज़ार आज जितना गरम है, उतना पहले कभी न था। व्यास जी इसे 'टेकनिक' कहते थे, परन्तु मैं इसको नेताशाही ही कहता हूं। सत्ता में रहते हुए भी व्यास इस

नेताशाही की बू से बचे नहीं रह सके। परन्तु सत्ता की कुर्सी से ढकेलकर विधाता ने व्यास जी की राजनीतिक आग को जलाये रखा। व्यास जी की राजनीतिक आग सुखाड़िया, व्यास संघर्ष में और तेजी से जली; और जलती ही रही। हाथ से छीन ली गई सत्ता को पुनः प्राप्त करने का व्यास जी का संघर्षरत प्रयास अत्यन्त स्वाभाविक था। परन्तु ज्यों-ज्यों श्री सुखाड़िया सत्ता को अपने हाथ में करते गये, त्यों-त्यों यह संघर्ष पुनः सत्ता प्राप्त करने के दुराग्रह से बदलकर कांग्रेस को शुद्ध और बुद्ध करने के आग्रह में बदलता गया। सामान्यतः राजनीतिक नेतृत्व की प्रकृति ही ऐसी दीखती है कि सत्ताधीश जब तक सत्ता में है, येन-केन-प्रकारेण सत्ता को बनाये रखने के लिये अन्दर-ही-अन्दर संघर्ष करता रहेगा और सत्ता से बाहर आने पर या अपदस्थ होने पर वह सत्ता की आलोचना करता हुआ संगठन के उसूलों की व्याख्या करने लग जायगा; और अन्त में निरुपाय होकर सत्ता की गन्दगी एवं अनैतिकता को दूर करने के भगीरथ प्रयत्न में जुट जायगा। इस प्रकृति को मैं औसत दर्जे की राजनीतिक ईमानदारी मानता हूं। व्यास जी में यह कूट-कूटकर भरी थी। व्यास जी में इस औसत राजनीतिक ईमानदारी से बढ़कर एक बात और थी और वह यह कि व्यास जी राजनीतिक जीवन की आधारभूत सामाजिक प्रामाणिकता को जानते थे और अपनी सीमाओं में उसके पालन की भी वे कोशिश करते थे। व्यास जी को सत्ता से हटाने के लिये उन पर जो वजनी दोषारोपण किया गया, वह यह था कि 'प्रो जागीरदार' हो गये थे। जागीरदारों और सामन्तों से व्यावहारिक समझौता कर व्यास जी कांग्रेस की सत्ता अपने लिये बनाये रखना चाहते थे; और इसीलिए वे मुख्यमंत्री होते हुए भी पांच हज़ार के नीचे की जागीरें अभी खत्म नहीं करना चाहते थे। यह वह दोषारोपण था जो कुम्भाराम, सुखाड़िया माथुर वादियों ने व्यास जी पर खुलेआम लगाया। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस की अभिनिश्चित और घोषित नीति के विरुद्ध निस्सन्देह व्यास जी का यह दृष्टिकोण था और इनमें से कई उनके इस दृष्टिकोण से सर्वथा असहमत थे। परन्तु अब ऐसा मालूम होता है कि व्यास जी का यह दृष्टिकोण तात्कालिक ही था, क्योंकि श्री सुखाड़िया ने ठीक भिन्न प्रकार के ऐसे ही वजनी समझौते किये हैं। अखिल भारतीय स्तर पर ऐसे व्यावहारिक और तात्कालिक समझौते आज बदस्तूर चल रहे हैं। राजशाही की भारतीय संविधान में औपचारिक मान्यता, निजी व्यापारिक क्षेत्र को सार्वजनिक क्षेत्र के साथ निभाये रखना तथा लाइसेंस, परमिट और मोनोपोली की प्रथाएं, जंगल और खानों के ठेके, भूमि पर व्यक्तिगत मिल्कियत आदि पचीसों बातें हैं, जिनका समाजवादी सामाजिक एवं आर्थिक उद्घोषित नीतियों से मेल नहीं खाता। भारत जनतंत्रीय राज द्वारा देश, काल और परिस्थिति को लेकर जो समझौते बरदाश्त किये जा रहे हैं, उनसे कांग्रेस के गत्यात्मक उद्देश्यों में स्वविरोध उत्पन्न नहीं होता; देश, काल और स्थिति की विवेक सम्मत पूर्ति ही इनसे नज़र

आती है। परन्तु यदि ये समझौते सत्ता को टिकाये रखने और स्वयं को सत्ता की कुर्सी पर चिपकाये रखने के लिये उद्देश्य बन जायं, तब उद्देश्यों के प्रति बेवफाई का मसला पैदा होता है। व्यास जी के व्यक्तित्व में मुझे उद्देश्यों से समझौता नज़र नहीं आता। कांग्रेस के प्रति उनकी श्रद्धा और ईमानदारी उनके संक्रान्त व्यक्तित्व का प्राण थी। व्यास जी की राजनीतिक आग उनको देश की जनता के जीवन के अंधेरे, उनकी गरीबी, उसकी मानसिक कंगालियां और असमानताओं तथा विषमता के ज़हर से मानो तपाती रहती थी। यह आग उनका देश-प्रेम थी और उनको रात-दिन जलाये रखती थी। सच तो यह है जयनारायण व्यास ब्यूरोक्रेसी, अज्ञान, दीनता, असमानता और विषमता के प्रति एक सिपाही और सेनापति की भांति लड़ता ही रहा और जब सब संगी-साथियों ने उसको त्याग दिया, हरा दिया, ढकेल दिया—तब भी व्यास अकेला ही मोर्चे पर डटा रहा। व्यास जी के स्तर और स्थिति पर बहुत कम लोग सत्ता के छिन जाने के बाद उद्देश्यों के लिये संघर्ष करते रहते हैं। यह संघर्ष वही कर सकते हैं, जो सच्चे माने में जनकल्याण के लिये ही ज़िन्दगी जीते और सत्ता को साध्य नहीं साधन मानकर चलते हैं। अवश्य सत्ता-हीन होकर कुछ लोग थोड़े दिनों तक शुद्ध बुद्ध की तरह बातें करते, भाषण देते और इधर-उधर के बिखरे प्रयास करते हैं, परन्तु अन्त में जब सत्ता पुनः पाने की आशा विला जाती और कोई भी हिकमत काम नहीं करती तब चुपचाप हो जाते हैं। वे सन्त महात्मा की तरह हो जाते हैं। अधिकांश ऐसे ही व्यक्तियों से हमारा राष्ट्रीय राजनीतिक वातावरण भरता चला जा रहा है। परन्तु जिनको देश के और देश की जनता के प्रति सच्चा प्यार होता है, जिनमें जनमंगल के लिये लगन होती है, वे सत्ता के मोह से स्वयं ऊपर उठ जाते हैं। राजस्थान के कांग्रेसी नेताओं में यह गुण श्री माणिकलाल वर्मा और स्वर्गीय व्यास जी में ही मिलता है। सच्चा लोक नेतृत्व दृढ़ सत्ता पर नैतिक और चामत्कारिक प्रभाव रखने और योग्य नीतियों के निर्माण में ही होता है। व्यास इस मंत्र से परिचित थे। व्यास जी वर्मा जी की भांति सत्ता के लोकोपयोग में विश्वास करते थे। यद्यपि वर्माजी की तरह व्यास जी ने सत्ताधीश होने में अपनी मजबूरी जाहिर कभी नहीं की, तथापि व्यासजी ने सत्ता विहीन होने पर राजनीतिक शक्ति को लोकोपयोग के लिये प्राप्त करने में सदैव ज़मीन-आसमान को एक करने का यत्न किया। ऐसा यत्न करना व्यास जी की प्रकृति में था। जनता के शुभ और श्रेय के लिये रात-दिन जो आग उनके मन में जला करती थी, वह उनको सदैव विकल रखती थी। वर्मा जी सत्तारूढ़ तो होना नहीं चाहते परन्तु सत्ता पर व्यूह बद्ध परोक्ष वश बनाये रखने की उनकी नीति स्पष्ट है। व्यास सत्ता चाहते थे; परन्तु सत्ताहीन होने पर जनमत के द्वारा सत्ता पर स्ववश उत्पन्न करने का प्रयत्न करते थे। सत्ता पर कूटनीति द्वारा परोक्ष वश बनाये रखना व्यास जी की स्वच्छ मानवीय प्रकृति में न था। मुझे पी० सी० सी० की एक मीटिंग याद

आती है, जिसमें व्यास जी की हठ, उनकी बगावत सहने और करने की उग्रता हर भविष्य के लिये उनकी मानसिक तैयारी और विरोधी के सामने न झुकने का संकल्प, कांच की तरह स्पष्ट हो जाता है। पी० सी० सी० की उस जयपुर की खचाखच भरी हुई सभा में वर्मा जी ने एकाएक उठकर कहा, "आज से व्यास जी मैं आपकी हुकूमत के खिलाफ विद्रोह करता हूं। आप भी शास्त्री जी के रास्ते जा रहे हैं। कांग्रेस की बात आप मानना नहीं चाहते, यह चल नहीं सकता। आपका नेतृत्व कांग्रेस की हथेलियों पर है।" श्री व्यास जी चुप रहे और अन्त में मुख्य मंत्री व्यास उठे और बोले, "मैं मुख्य मंत्री हूं तो मुख्य मंत्री हूं। धमकियों से मैं डरता नहीं और किसी के झुकाने से झुक सकता नहीं। मैं अपना कार्यक्रम बदल नहीं सकता।" तमतमाया हुआ व्यास पी० सी० सी० की भरी सभा से यह कह कर चल दिया। मैंने उनका रास्ता रोककर कहा, "सत्ता जो आपके पास है वह कांग्रेस की जमानत और जनता का ट्रस्ट है। व्यास जी, बात मान लीजिये और लौट आइये।" व्यास जी ने मुझे जैसे सिर से पैर तक देखा और बोले, "तो ले लो तुम लोग अपनी मिनिस्ट्री। मैं भी देखता हूं मुझे कौन झुकाता है। व्यास जी चल दिये भूकम्प के एक धक्के की तरह। एक सन्नाटा छा गया और मुझे तभी जैसे दीख गया कि व्यास अब जम कर लड़ेंगे। व्यास जी उस सीमा तक खिंच चुके थे, जब व्यक्ति सब कुछ झोंक कर भी बगावत करता या बगावत का दमन करता है। हँसमुख और सौम्य कवि और कलाकार व्यास जी की वह उग्र राजनीतिक मुद्रा मुझे आज भी याद है। उनकी आंखों में उनके दिल की आग भरी थी जो स्वयं को और आस-पास को जला देना चाहती थी। यह वही आग थी जो अपनी चिता स्वयं जलाती है, दूसरे रोते हैं और स्वयं हँसती रहती है। मानव जयनारायण व्यास राग या द्वेष से लबरेज राजनीति में एक जिद्दी संकल्प थे, जो निर्वीर्य होना नहीं जानता था।

कुम्भाराम-सुखाड़िया-माथुर विरुद्ध जयनारायण व्यास का सत्ता का संघर्ष राजस्थान की राजनीति के एक युग का अन्त और दूसरे एक वास्तविक युग का आरम्भ था। शिष्यों का गुरुओं के विरुद्ध, छोटों का बड़ों के खिलाफ, यह संघर्ष था; जिसने राजनीतिकता के मान और मूल्य अन्त में बदल दिये हैं। सिद्धान्तों का आश्रय लेकर वृहत् राजस्थान के आरम्भ के दिन से सत्ता का जो संघर्ष आरम्भ हुआ, उसका नग्न चित्र इस संघर्ष से सामने आ जाता है। शास्त्री से लगाकर वर्मा व्यास की राजनीति का, यह संघर्ष, पटाक्षेप कर गया और राजस्थान में सुखाड़िया राजनीति का आरम्भ कर गया। व्यास के राजस्थान की सत्ता से अस्त होने के साथ ही कांग्रेस सत्ता की रही-सही नैतिक भावुकता भी समाप्त हो गई। व्यास शासन के कुछ अभाव या कुछ कार्यक्रमों को पूरा न कर सकने की स्थिति ने श्री सुखाड़िया को एक मनोवैज्ञानिक अवसर दिया, जिससे वह व्यास जी से सत्ता छीन सकते थे। परन्तु श्री सुखाड़िया के मुख्यमंत्री होने के साथ ही राजस्थान की कांग्रेस राजनीति में 'व्यवहार

'और आवश्यकता' की नीति का भी श्रीगणेश हुआ। व्यास जी समझौता करते थे परंतु समझौतों की राजनीति उनकी आधारभूत नीति न थी। श्री सुखाड़िया जी आदर्श की बात करते ही नहीं। कार्यक्रम और उसके लिये आवश्यक परिस्थिति उत्पन्न करने की टेकनिक कोई सुखाड़िया जी से सीखे! व्यास एक राजनीतिक विचारक थे; सुखाड़िया राजनीतिक विचारक नहीं हैं। सुखाड़िया जी एक कुशल मित भाषी शान्त और गम्भीर कार्यकर्त्ता हैं और अवसर परखने की अपनी सामान्य सूझबूझ से हिकमत और हकीकत से चलते हैं। व्यास एक आग थे, सुखाड़िया एक चूल्हा हैं। व्यास कवि थे; कलाकार थे, समाजसेवी थे, राजनीतिक नेता थे; जलजलों और तूफानों से भरा एक इंसान था जयनारायण व्यास। श्री सुखाड़िया न कवि हैं, न कलाकार हैं, न विचारक हैं और न क्रान्तिकारी राजनीतिक नेता ही हैं। श्री सुखाड़िया राजनीतिक व्यापार के बहुत बड़ा थोक व्यापारी हैं और अपने पेशे को खूब जानते हैं। सच तो यह है व्यास जी की तूफानी आग को श्री सुखाड़िया या हम अपने दिल की आग से ही माप सकते हैं। सुखाड़िया जी तो राजनीति का मायाजाल हैं, जब कि श्री जयनारायण व्यास राजनीति की माया चाहते हुए भी उसका जाल न थे। व्यास सत्ता में, सत्ता के बाहर रहकर भी जीते रहे। व्यास सत्ता के आदर में और सत्ताधीश के तिरस्कार में भी सिर ऊंचा कर चलते रहे। सत्ता व्यास जी के लिये लाटरी थी; खुली और भाग्य में हुई तो मिल गई। पर श्री सुखाड़िया के लिये तो सत्ता ही राजनीतिक जीवन और नेतृत्व का सम्पूर्ण आधार है। सत्ता से विहीन श्री सुखाड़िया व्यास के समान कितने दिनों तक 'नेता' बने रहेंगे, यह भविष्य ही बता सकता है। मेरा मत है श्री सुखाड़िया सत्ता से विहीन नेतृत्व में विश्वास ही नहीं करते। उनको व्यास के उतार-चढ़ावों से पूर्ण धारा प्रवाही जन नेतृत्व का कयास हो ही नहीं सकता। व्यास जी को सत्ता उनके तप से मिली थी; सुखाड़िया जी को तो सत्ता भाग्य और वरदान से मिली है। अतः श्री सुखाड़िया ने कांग्रेस के पुराने नेतृत्व को समाप्त कर स्वयं के नेतृत्व का सावधानी के साथ आरम्भ किया है। व्यास जी इस नेतृत्व की चिकनाहट को जानते थे; तभी उन्होंने पहली बार इसे 'सुखाड़िया टेकनिक' कहा है। कुछ भी हो, जयनारायण व्यास कांग्रेस की शहीदी राजनीतिकता की अन्तिम लपट थे, इसमें मुझे सन्देह नहीं है। कांग्रेस की अन्तरात्मा की रही-सही आग श्री जयनारायण व्यास थे। व्यास जी कांग्रेस की एक जानीमानी परम्परा थे; गतिविधि थे; हकीकत और हरकत थे। देश के राजनीतिक गगन में व्यास कांग्रेस का एक सितारा थे। जयनारायण व्यास महात्मा गांधी और अन्य महान् देश-भक्तों की राष्ट्रीयता और उनके गहन देश प्रेम की संस्कृति की एक अविभाज्य कड़ी थे। व्यास राजस्थान और भारत के देशी राज्यों के जन संघर्ष की अभिव्यक्ति थे। व्यास मानव थे; नेता थे।

श्री जयनारायण व्यास को केवल राजनीतिक नेता के रूप में देखेंगे तो हमें

जयनारायण व्यास समझ में नहीं आयेगा। कितना ही बड़ा वरेण्य और श्रद्धेय राज-नीतिक नेता हो, वह समझा नहीं जा सकता, जब तक उसके आंसू भी हम न देखें। राजनीतिज्ञों का 'मानव' हमें सर्वप्रथम निहारना चाहिये। मानव को देखलो और उसकी राजनीतिक कीमत कर लो। 'मानवता हीन' राजनीतिक नेता एक किस्म का सामाजिक डकैत भर होता है। जिस नेता में मानवीय गुणों और उनकी सुगन्धों का विकास नहीं हुआ है, उसे हम नेता क्यों कहें। रोवोर ही न कह दें। जनता के नेता डकैत या राक्षस नहीं हुआ करते; वे महामानव हुआ करते हैं। जिस शक्ति का समाज में उद्भव केवल लोक मंगल के लिये ही होता है, उस शक्ति के नायक में मानवीय सहृदयता और सरसता भी पूरी मिलनी चाहिए। श्री जयनारायण व्यास राजनीतिक आग थे, तो वह जीवन का बड़ा प्यारा आंसू भी थे। राजनीति की आंख में व्यास प्रेम और सौन्दर्य की प्यास का आंसू थे। जनता के कल्याण और श्रेय के लिये जो दर्द व्यास के राजनीतिक कलेजे में जलता था, वही एक मस्त आंसू बनकर उनकी आंखों में झलका करता था। जीवन के प्रति श्री व्यास में छका हुआ अनुराग था। व्यास जीवन का एक मुसाफिर था, जो जिन्दगी को खोजने की यात्रा करता है और मंजिल तक पहुंचने के पूर्व ही विरह की अनजानी नदी में डूब जाता है। श्री व्यास के जीवन की इस संवेद्यता के बिना राजनीतिक नेतृत्व की प्रामाणिकता प्राप्त नहीं हो सकती। जनता के कल्याण के लिये प्रज्वलित आग को जीवन के लिये आंसू बनना पड़ता है, तभी सामाजिक क्रान्ति और मानवोत्थान के कार्य सम्भव हो सकते हैं। संसार के महान् फिलोसोफर और महान् राजनीतिज्ञ जिन्दगी के दर्द से छटपटाते रहते थे और विधाता की आंख के आंसू बने हुए थे। इतिहास आज उनको उनके आंसुओं के लिये याद करता है। मानव जीवन के दर्द का एक आंसू जब उमड़ता है तब शोषकों और अन्यायियों के रक्त की वर्षा करता है। व्यास अपने प्रभाव क्षेत्र में ऐसा ही आंसू थे। उन्होंने रक्त की वर्षा नहीं की, केवल दुखियारों और शोषितों के दर्द को शक्ति में परिणत करने की कोशिश की। जयपुर में एक दिन व्यास जी ने मुझसे पूछा, "तुम कल शाम को कहां रह गये?" मैंने कहा, "क्या कहूं व्यास जी! झनक झनक पायल बाजे!" व्यास जी ने पास ही खड़े हुए श्री सुखाड़िया की ओर देखा, बोले, "शान्ताराम ने अच्छी फिल्म बनाई है। मन तो मेरा भी होता है कि राजनीति की मीटिंगों की बजाय इस फिल्म को देखूं।" राजनीति के दुरावों और प्रपंचों से पूर्ण मीटिंगों में व्यास का अन्तरंग चैतन्य जीवन सरस और सुन्दर 'राहत' के लिये तरसा करता था। राजनीति के जलजलेबाज़ व्यास जी सौन्दर्य के मर्मज्ञ थे और जीवन के रूपों में उनकी पारखी आंखें जीवन की अभिव्यक्तियों के सौन्दर्य को खोजा करती थीं। मुख्यमन्त्री व्यास एक बार उदयपुर आये। हम सबको लेकर फतहसागर की पाल के पहाड़ी अन्चल में एक चट्टान पर बैठ गये। एक ने कहा, "सीनरयरी लिस्ट में उदयपुर डिवीजन के

कम लोग आ पाये हैं।" व्यास जी ने तपाक से कहा, "यह सन्ध्या काल का सूर्य क्या उदयपुर डिवीजन का है ? ये तारे क्या उदयपुर के हैं ?" लोग तो मुख्यमन्त्री के साथ आये थे। जयनारायण व्यास के साथ तो केवल मैं ही गया था। मैंने व्यास जी के अन्तरंग को भांप लिया और कहा, "आजकल मैं सूखे पत्ते और शिलालेख लिख रहा हूं।एक सूखा पता सुनिये।" व्यास जी ने मुझे देखा और मुस्करा दिये। मैंने सुनाया, "मन के ये सूखे पत्ते, मन-ही-मन में गल जाते ! मन के विषाद घुट-घुटकर मन के हुल्लास वन जाते।" व्यास जी आंखों से जैसे मेरे पास सरक आये। मैंने सुनाया, "मिटती लकीर पत्थर की मिटती नहीं आश मिलन की ! मिट जाये लिखा करम का; मिटती नहीं स्मृति मिलन की!" व्यास जी चिहक उठे, "इस दर्द का पता तो बताओ !" जिन्दगी के दर्द का पता व्यास जी राजनीति की आग की लपटों में जलते हुए यों पूछा करते थे ! व्यास जी की तराशी हुई वातें इधर राजनीति घाघ चेहरा देखा करती थी; और उधर उसके दिल में दर्द को खोजती रहती थीं ! कभी-कभी वह मुझसे मन के निरालेपन में कह देते थे। "तुम राजनीति के कीचड़ में कहां फंसे ! इसमें डूब गये तो फिर कीचड़ हो जावोगे !" एक जमाना आता है प्रत्येक राष्ट्र के जीवन में जब स्वप्न द्रष्टा लिखता कम है और समाज को वदल देने के लिये आंधियों और तूफानों को निमंत्रण दिया करता है। देश की गुलामी व्यक्ति के हर स्वप्न के आस-पास घिरा हुआ अंधेरा है। व्यास का स्वप्न द्रष्टा मानव इन अंधेरों से घिरा हुआ था। यही वजह है पराधीन देश की गुलामी की जंजीरें तोड़ने के लिये सभी को लगना पड़ता है। व्यास भारतवर्ष के इस छटपटाते हुए खेमे की पैदाइश थे। प्राण और दर्द से भरी हुई वे प्यार और आदर के काविल मूरत थे। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी में मुझे भेजने के लिये पहले दो बार प्रयत्न हुए—मुझे आखिरी वक्त नहीं भेजा गया। तीसरी वार सरदार शहर में चुनाव हुआ, मेरा फिर नम्बर आया।पर अन्त में मुझे अपना नाम वापस लेना पड़ा। कांग्रेस में मेरे जैसे लोग अपना नाम वापस लेकर नेता और संगठन के वफादार सिद्ध होते हैं; कुछ लोग झगड़कर गुटवाजी कर वफादार होते हैं और कुछेक मिनिस्टर वनकर ही कांग्रेस और देश की सेवा करने का अहसान किया करते हैं। व्यास जी जैसे कटकर रह गये। रतनगढ़ स्टेशन पर वह मेरे थर्ड क्लास की खिड़की के पास आकर वोले, "नीचे उतर। आज तो तेरी बलि चढ़ा दी गई !" मैं नीचे उतरा, वोला, "क्या वताएं, इश्क हमको इस विधाता से हुआ है; और इस विधि को हमी से रश्क जीवन का हुआ है!" सुखाड़िया जी पास आकर खड़े हो गये थे। व्यास जी ने श्री सुखाड़िया की ओर मुखातिब होकर कहा, "मैंने अपने हाथों अपनी चिता जलाई।" सुखाड़िया जी ने बीच ही में कहा, "व्यास जी !" व्यास जी चुप हो गये। मैं पुनः अपने थर्ड क्लास में जा बैठा। सुखाड़िया जी अपने फर्स्ट क्लास की ओर चले गये। व्यास के दिल में कांग्रेसमैन के प्रति मानव की एक हमदर्दी थी; शिष्टाचार मात्र न था। आज कांग्रेस में

न तो शिष्टचार ही रह गया है और न हमदर्दी ही। आज तो कांग्रेस किसी वादशाह के विस्तृत दरवार की-सी हो गई है। सत्ता ने कांग्रेस का मानव मार दिया है और उसकी आत्मा को घोंट दिया है। कांग्रेस में आज रतनगढ़ प्लेटफार्म पर कोई किसी के प्रति व्यास जी की-सी हमदर्दी वताने नहीं जायगा। आज तो कांग्रेस में सत्ता और वोट का नाता रह गया है ! तव व्यास जी याद आते हैं; और मन के गहन में दर्द वनकर समा जाते हैं। व्यास जी ने अपने पुत्र से भी अधिक माने हुए शिष्यों का विश्वासघात सहा था; भाइयों से भी अधिक प्रिय अपने साथियों की छुरियां पीठ में खाई थीं। आदर के साथ दिया गया जहर व्यास जी ने पीया था। व्यास के आंसू जीवन के विश्वासघात और ज़हर पर दया करने वाले आंसू थे, इसमें मुझे सन्देह नहीं। व्यास जी राजनीति में सम्मोहित हुए; उन्होंने उखाड़-पछाड़ की। व्यास जी ने राजनीति के प्रहारों का प्रतिकार भी किया। परन्तु अपनी इन्सानियत से वे चिपके रहे। राजनीति के प्रतिकार के व्यूह रचते हुए व्यास जी इस बात का ख्याल रखते थे कि किसी को मजबूर न करें। किसी का ईमान न खरीदें। प्रलोभन भी यह उसी को देते थे, जो प्रलोभन का पात्र हो। व्यास जी ने मुझसे कभी नहीं कहा कि मैं सुखाड़िया जी का साथ छोड़ दूं या वर्मा जी के विरुद्ध हो जाऊं—जव मेरा और व्यास जी का व्यक्तिगत मन का सम्वन्ध था। व्यास जी का श्री सुखाड़िया के साथ मैंने राजनीतिक विरोध किया; परन्तु हमारे व्यक्तिगत सम्वन्ध पर आंच न आई। उल्टा मैं उनके व्यक्ति के प्रति अधिक आकर्षित होता चला गया। श्री सुखाड़िया के मुख्यमंत्री बनने के वाद 'पीप' के सम्पादक, व्यास जी उदयपुर आये; तव मैं असेम्वली का माननीय सदस्य था और व्यास दल को उत्तर देने की मेरी ड्यूटी थी। परन्तु व्यास जी मेरे घर पर आये और प्रेम से घर भर से मिले। व्यास जी और मैं जव मिलते थे, तव हमारी बातचीत दो लेखकों की, दो कवियों की, दो मानवों की वातचीत हुआ करती थी। राजनीति के कभी परस्पर साथी और कभी परस्पर विरोधी हम दोनों की नामराशि एक ही थी। अन्तर केवल इतना ही था कि व्यास जी हमारे श्रद्धेय नेताओं में से थे और मैं कांग्रेस का भृत्य–कार्यकर्त्ता ! व्यासजी कांग्रेस के राजस्थानी वंशधरों में थे और मैं कांग्रेस का खिदमतगार था। व्यास जी मुख्यमंत्री और एम० पी० तक पहुंचे। मैं एक वार एम० एल० ए० वनकर रह गया। परन्तु राजनीति के हमारे मार्गों में एक प्रकार की समान दिशा रही। आज व्यास जी संसार में नहीं हैं। पर जव वे संसार से चले गये, तो एक त्यक्त ठुकराये हुए असन्तुष्ट कांग्रेसी ही वे रह गये थे। उनके अधिकांश समर्थक श्री सुखाड़िया की मधुर मुस्कान के प्रेमी वन चुके थे और सुखाड़िया-सत्ता में उनका योग्य स्थान हो चुका था। पगडंडियों पर मारे-मारे फिरने वाले कुछ कांग्रेसी कार्यकर्त्ता व्यास जी के साथ भिन्न-भिन्न हेतुओं को लिये लगे हुए थे। व्यास जी सुखाड़िया-सत्ता को समाप्त करने और कांग्रेस को शुद्ध करने के अपने आन्दोलन में स्पष्टतः असफल

हो गये थे—यहां तक कि उनको ६ वर्ष के लिये कांग्रेस से निकालने का भी निश्चय हो गया था। देशी राज्यों की दुहरी गुलामी और राजस्थान के वद्धमूल ऐतिहासिक सामन्तवाद के विरुद्ध निरन्तर संघर्ष करने वाला जयनारायण व्यास इस संसार से 'तनहा और वागी कांग्रेसमैन' होकर चला गया। व्यास जी की यह तनहाई, उनका यह अकेलापन, उनके जीवन के अन्तिम वर्षों की यह संघर्षरत उदासीनता, स्वयं में आंसुओं की सरिता है; जो राजनीतिक सत्ता के रत्नमंडित घाटों से दूर सदैव वहती रहेगी। व्यास जी एक अनवरत संघर्ष के समान जन्मे; अविराम तूफान वनकर जीवित रहे; और दर्द भरा आंसू वनकर अनन्त काल में विला गये। व्यास जी का जीवन राजनीति और नैतिकता, आदर्श और व्यवहार के चिरन्तन विरोध को व्यक्त करता है, इस पृथ्वी पर मानव संस्सृति की उस वेवफाई को सावित करता है, जो आदर्श और व्यवहार में परस्पर वनी रही है कई प्रश्न उठते हैं; जो आज की राजनीतिक परिस्थिति में वेकार हो जाते हैं। आज की राजनीतिक मनोवृत्ति और सत्ता तथा पद की अंधी लोलुपता को देखकर किसी प्रकार का प्रश्न उठता ही नहीं। हमें विधि के इस विधान को स्वीकार कर चलना होगा कि राजनीति में अब वोट और व्यवहार ही चलेगा। सीधे, सरल, सहानुभूति से पूर्ण सौम्य और सज्जनों की नहीं; राजनीति में अवसर परस्त, चालाक और घाघों की वन आयेगी। आज हमारे देश में राजनीतिक क्षेत्र में कार्यकर्त्ताओं और सच्चे नेताओं के निष्कासन का जमाना आ गया है। व्यास जी राजस्थान में इस वात का अकाट्य प्रमाण हो गये हैं। यही कारण है कि मुझे मुख्यमंत्री व्यास आज याद नहीं आता; कांग्रेस अध्यक्ष व्यास जी सिर पर वैठते नहीं। यही कारण है कि एम० पी० और एम० एल० ए० व्यास तुलता नहीं। मुझे वह जयनारायण व्यास याद आ रहा है, जो गुलामी और गरीबी के विरुद्ध जिहाद वोलता रहा। इस रहस्यमय अदृश्य में मैं आज व्यास जी की सूरत को पुनः बुलाना इसलिए चाहता हूं कि मैं अज्ञान और मानसिक दीनता के खिलाफ व्यास जी की आवाज़ फिर से सुनूं। मैं उस आग को पुनः जलाना चाहता हूं जो व्यास जी थे और उस आंसू से अपनी आंखें भरना चाहता हूं, जो जयनारायण व्यास की पलकों में बिधे रहते थे।

ब्यास जी की एक रचना

पंछी से

यह तेरा संसार नहीं है।

क्यों गन्दे पिंजड़े में डोले,
साफ हवा के पंछी भोले।
जो तुझ से यों मीठा बोले,
उनका तुझ से प्यार नहीं है।

यह तेरा संसार नहीं है।

कैद हुआ मीठे फल खाकर,
पंछी फंसा लोभ में आकर।
अब क्यों उलझ रहा चिल्लाकर,
बिना यत्न निस्तार नहीं है।

यह तेरा संसार नहीं है।

नित्य भाग्य डुलता है तेरा,
सदा द्वार खुलता है तेरा।
रोते बीता सांझ सवेरा,
तेरे दुःख का पार नहीं है।

यह तेरा संसार नहीं है।

अपनों ने है तुझको रोसा,
दुनिया ने है तुझको कोसा।
तुझको अपने में न भरोसा,
फिर भी तू बेकार नहीं है।

यह तेरा संसार नहीं है।

भीतर बन्धन मय जीवन है,
बाहर शुद्ध वायु का वन है।
निर्बल पंख भरोसा मन है,
अंतर्द्वन्द्व अपार यही है।

यह तेरा संसार नहीं है।

निर्बल मन को सबल बनाना,
मुक्ति हेतु कुछ करो बहाना।
किसी तरह भाई छुट जाना,
इस बन्धन में सार नहीं है।

यह तेरा संसार नहीं है।

दूसरा खंड

मातु श्री गोपीवाई।

(देखिए खण्ड १ : प्रकरण १)

युवावस्था में
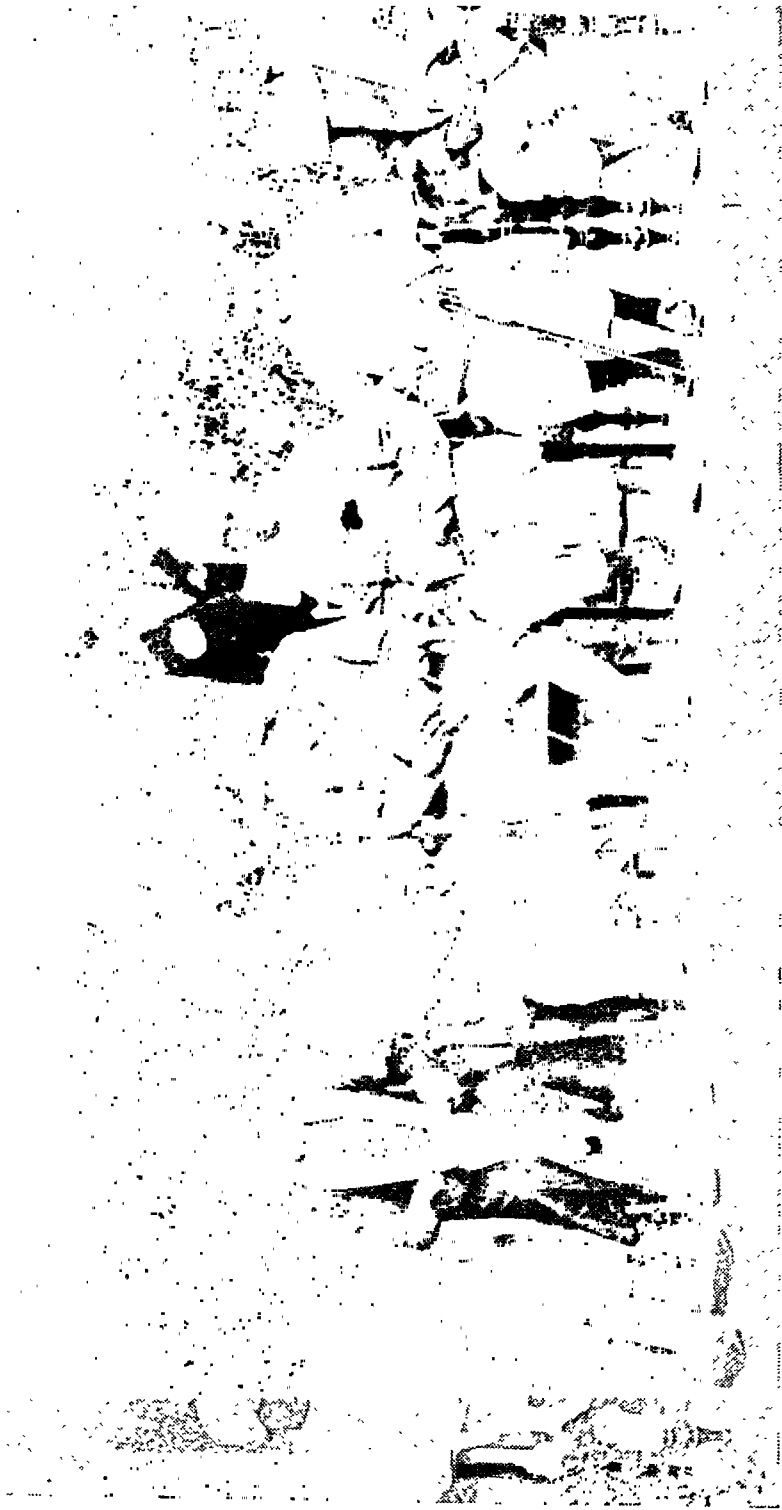
अखिल भारतीय पुष्करणा महासभा प्रधान कार्यालय जोधपुर में सर्वश्री जयनारायण व्यास, दाउदास बोहरा, शंकरलाल बोहरा, श्रीचन्द जोशी महामन्त्री, रामरतन पुरोहित, शंकरलाल जोशी, गणेशचन्द जोशी ।

अखिल भारतीय पुष्करणा महासभा के नवम् अधिवेशन पर उसके अध्यक्ष वरारकेसरी पन्नालाल जी व्यास, आयुर्वेद मार्तंड पं० गोवर्धन जी छांगाणी तथा अन्य प्रमुख सज्जनों के साथ व्यास जी नीचे मध्य में बैठे हैं।
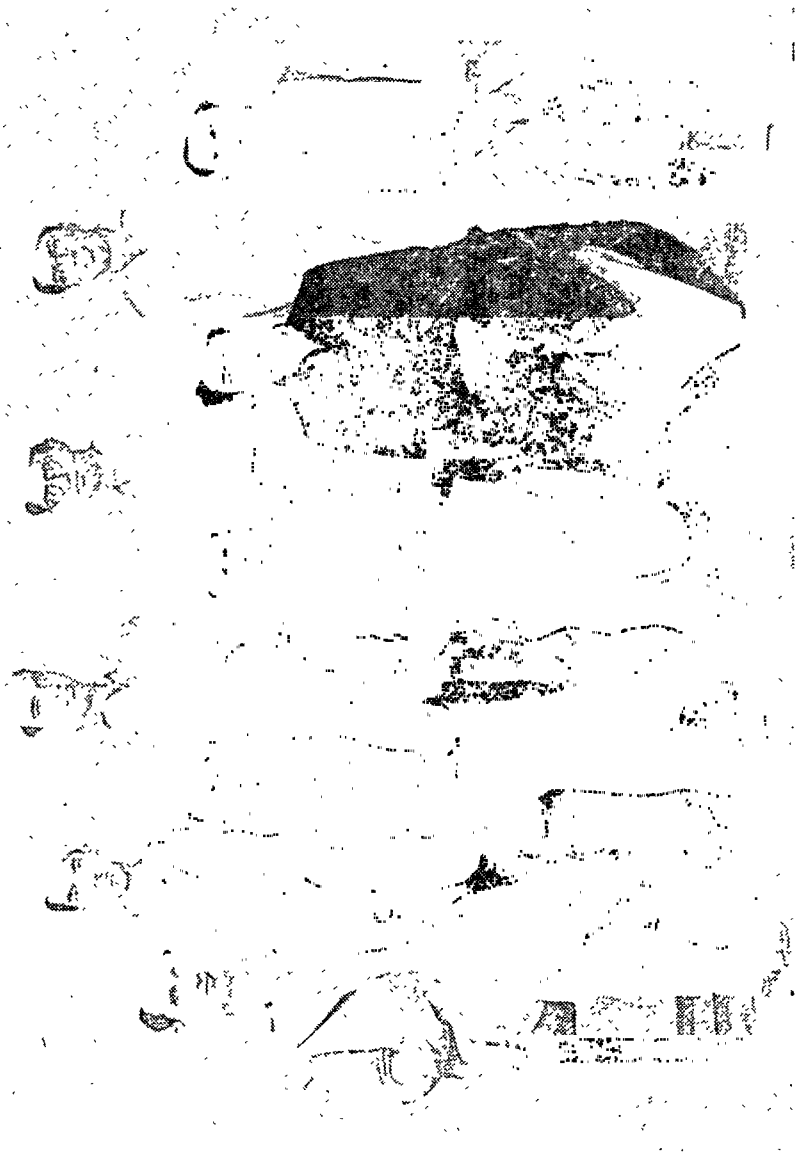
१९४० में मारवाड़ राज्य लोकपरिषद के साथियों के साथ बैठे बायें से दायें : बालकिशन बोहरा (भाया जी) फतहराज जोशी, लोकनायक, मथुरादास माथुर, छगनलाल चौपासनीवाला।
खड़े : तारकप्रसाद व्यास, राधाकिशन 'तात', सुमनेश जोशी, नटराजन।
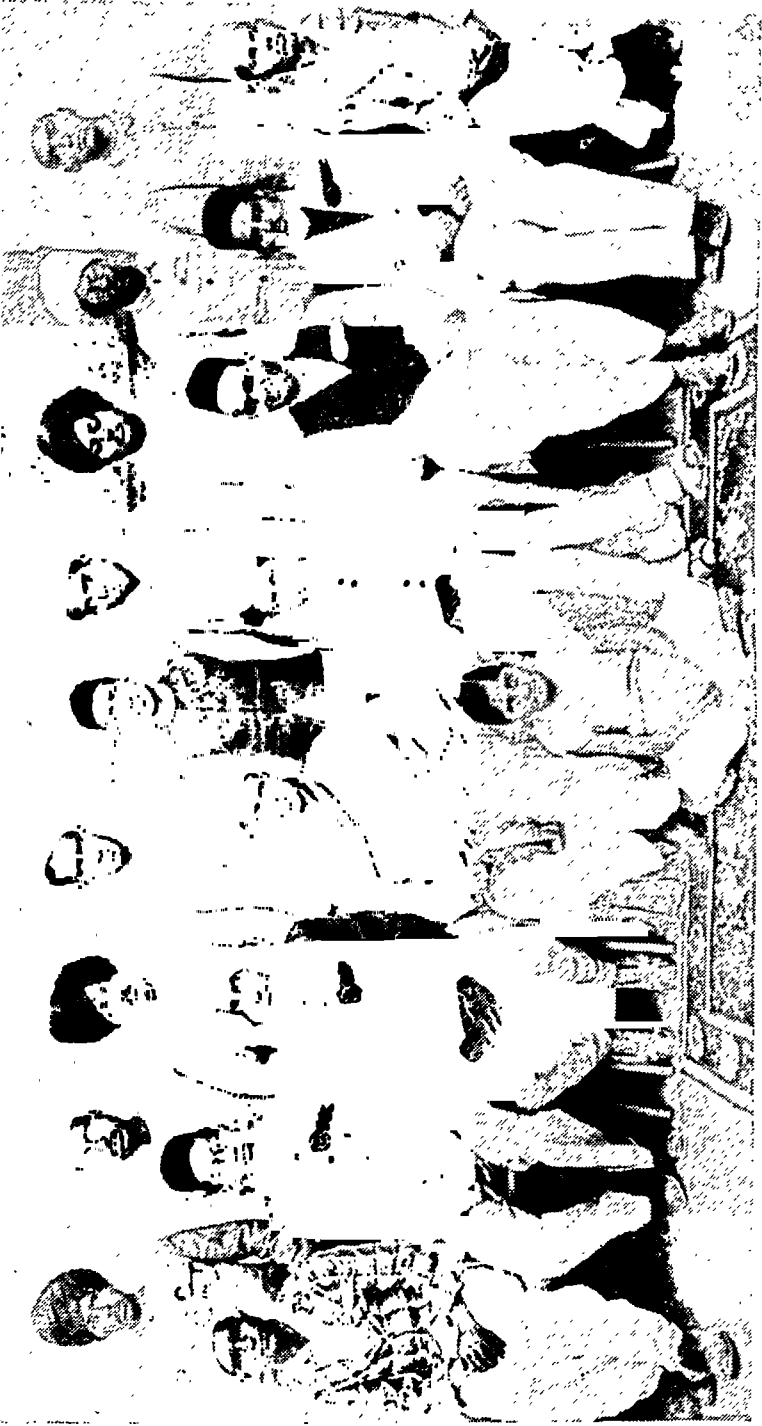
मारवाड़ राज्य लोकपरिषद के १९४० के नागोर अधिवेशन में कुर्सी पर बायें से : शिवदयाल दवे नागोर, जोरावरमल मेहता वकील नागोर, हस्तीमल बोथरा अध्यक्ष, लोकनायक जयनारायण व्यास, मथुरादास माथुर, मुरलीमनोहर व्यास वकील, मुरलीधर पुरोहित, खड़े बायें से : भंवरलाल जी फतेहलाल बाफना, मगनलाल ओझा, फतेहराज जोशी, तुलसीदास राठी, छगनलाल चौपासनीवाला, घनश्यामदास ज्योतिषी, गंगादास कौशिक बीकानेर ।

सन् १९४४ में जोधपुर जेल छूटने के पश्चात् ब्यावर से में स्वागत; महिमादेवी किंकर, मौलाना अत्तरमोहम्मद, जयनारायण व्यास, राधाकिशन बोहरा, 'तात जी'

(खण्ड ३ : प्रकरण २)
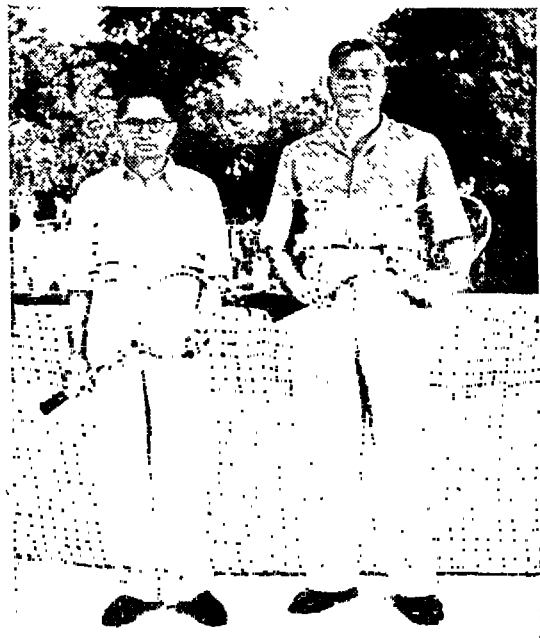
जोधपुर सर्कट हाउस में १९४८ में वैड-मिंटन कोर्ट का उद्‌घाटन करते हुए मारवाड़ राज्य के प्रधानमन्त्री व्यास जी वित्तमन्त्री द्वारिकादास पुरोहित के साथ।

अपने साधना क्षेत्र सांकड़ा में वहां के निवासियों के साथ फुटवाल खेल में भाग लेने के वाद मुख्यमन्त्री व्यासजी
(खण्ड ३ : प्रकरण ८)

सांकड़ा में अधिकारियों के साथ मंत्रणा करते हुए। (खण्ड ३ : प्रकरण ८)

'नवभारत टाइम्स' बम्बई के कार्यालय में बायें से : सेठ चिरंजीलालजी लोयलका, मुख्यमन्त्री लोकनायक, सम्पादक ठाकुर राजबहादुरसिंह जी।
(खण्ड ३ : प्रकरण ९)

अपने साधना क्षेत्र सांकड़ा में पत्रकारों के साथ।
(खण्ड ३ : प्रकरण ८)
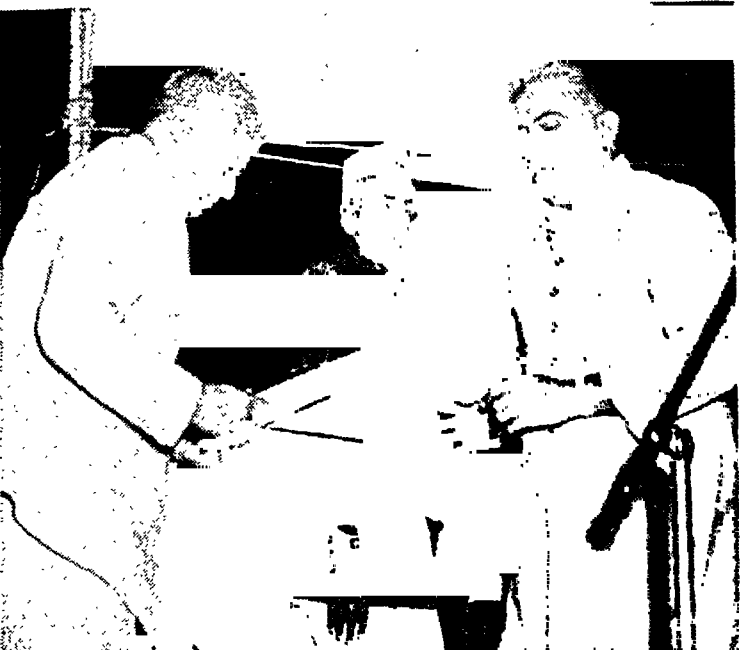
जोधपुर नगरपालिका
अभिनन्दन समारोह
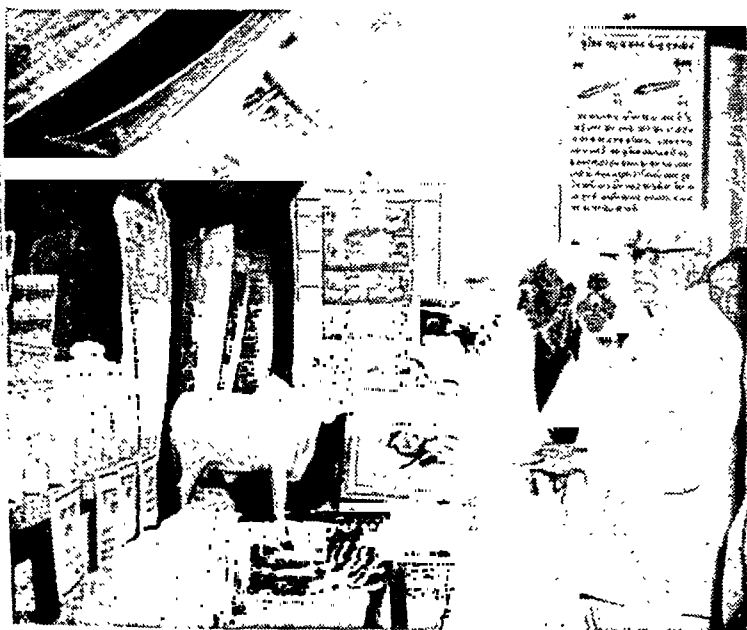
सांकड़ा के गांधी मे
पशु प्रदर्शनी में
(खण्ड ३ : प्रकर

शेरगढ़ में कुछ ग्रामीणों के वीच मुख्यमन्त्री व्यास जी।

जोधपुर सर्कट हाउस में श्री द्वारिकादास पुरोहित, श्री कृष्णगोपाल गर्ग, वैद्य सन्त लाडाराम श्र
मुख्यमन्त्री व्यास जी।

जयपुर म्युजियम में एक समारोह में भाषण देते हुए मुख्यमन्त्री व्यास जी।
पीछे आपकी पत्नी श्रीमती गोरजादेवी जी भी बैठी हैं।

किशनगढ़ में अपने बंगले के वाहर एक वट वृक्ष के नीचे गम्भीर मुद्रा में।

झूंझनू में राजस्थान विधानसभा के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री नरोत्तम जोशी के साथ ऊंट पर सवार।

जयपुर में मुख्यमन्त्री के बंगले पर प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू के साथ मन्त्रणा करते हुए।

सिरोही के महाराज। और श्री गोकुलभाई भट्ट के साथ।

टोंक में महात्मा गांधी की प्रतिमा का उद्‌घाटन करते हुए।

श्री हीरालाल जी शास्त्री और मोहनलाल जी सुखाड़िया के साथ पत्रकारों के बीच व्यास जी।

राजस्थान के मुख्यमंत्री के कार्यालय में कार्यव्यस्त व्यास जी।

वीकानेर के जगजीवन हरिजन आश्रम में केन्द्रीय रेलवेमन्त्री श्री जगजीवनराम जी के साथ उद्‌घाटन समारोह में मुख्यमन्त्री व्यास जी ।

ताजसर (फतेहपुर सीकर) में सितम्बर १९५३ को स्वागत समारोह, बीच में साफा पहने हुए सीकर के रावराजा कल्याणसिंह जी बहादुर, बायीं ओर मुख्यमंत्री व्यास और दायीं ओर पुरोहित स्वरूपनारायण जी एम० एल० ए०।

अमरशहीद श्री. सागरमलजी गोपा
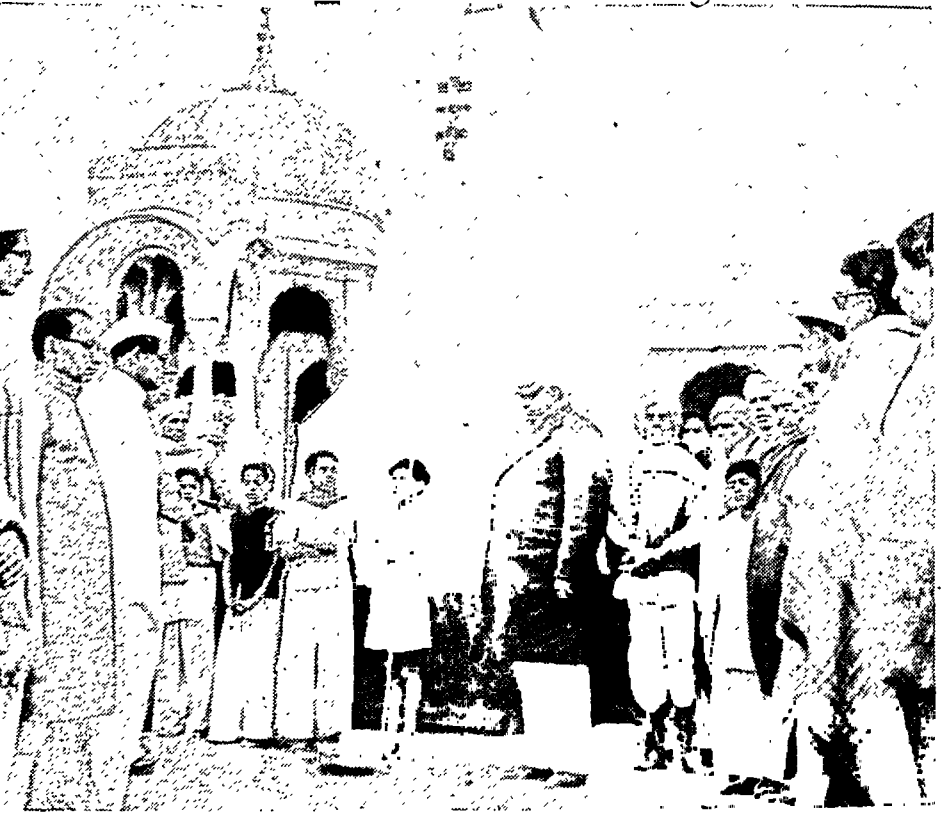
जेसलमेर में शहीद सागरमल गोपा की समाधि पर स्मारक का उद्घाटन

पूज्या माता जी के देहावसान के उपरान्त व्यास जी।

प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू के साथ भोजन करते हुए, पण्डित जी के बायीं ओर मुख्यमन्त्री व्यास जी, दायीं ओर श्रीमती गोरजादेवी व्यास और पोलोविक्ट्री के मालिक केशोभाई।

कांग्रेस के अध्यक्ष श्री ढेवरभाई और विदर्भकेसरी श्री ब्रिजलाल जी बियाणी के साथ।

जोधपुर स्थित ज्ञानमन्दिर के केन्द्रीय कार्यालय में।
(खण्ड ३ : प्रकरण १)

सांकड़ा में वीणावादन करते हुए।
(खण्ड ३ : प्रकरण ८)

चम्बल नृत्य नाटिका (खण्ड ३ : प्रकरण १०)

जोधपुर की सुप्रसिद्ध रेकार्ड कम्पनी श्री दुर्गासिंह एण्ड सन्स के यहां अपने गीतों का रेकार्डिंग करते हुए कला-प्रेमी संगीतज्ञ व्यास जी, कम्पनी के मालिक श्री रामेश्वरसिंह सामने खड़े हैं और अन्य कलाकार भी उपस्थित हैं।
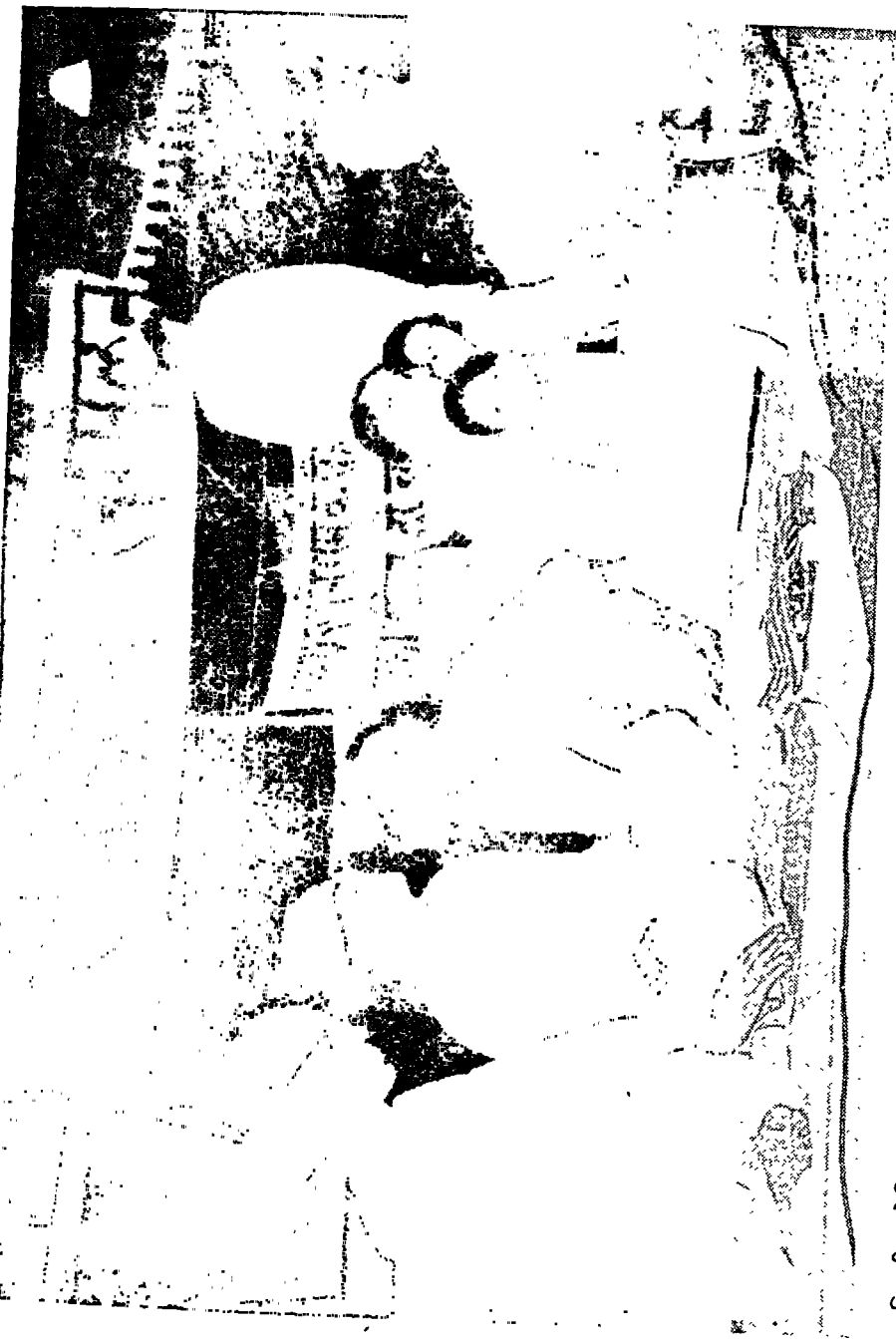
दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से १ सितम्बर १९६२ को राष्ट्रभाषा विषयक सेवाओं के लिए सुप्रसिद्ध साहित्यकार, यशस्वी लेखक और सम्पादकाचार्य श्री सत्यदेव विद्यालंकार को ताम्रपत्र भेंट करने के विशेष समारोह पर उनका परिचय देने के लिए लोकनायक श्री जयनारायण व्यास विशेषरूप से उपस्थित हुए थे। आप दोनों के अलावा चित्र में श्रीमती सुभद्रादेवी और परिवार के अन्य सदस्य उपस्थित हैं।

जयपुर में असन्तुष्ट कांग्रेसियों की एक बैठक में भाषण देते हुए।

१९६३ में राजस्थान की दिवंगत तीन विभूतियां, बायीं ओर मनीषी श्री रामगोपाल जी मोहता, दायीं ओर लोकनायक व्यास जी और नीचे भीलनायक मोतीलाल तेजावत।
(खण्ड १ : प्रकरण १)

वायीं ओर : नीमज ठिकाने में जनता की विजय का स्मारक (खण्ड ३ : प्रकरण ६)

नीचे : अन्तिम समाधिस्थल, यहां व्यास जी के नश्वर शरीर का दाह संस्कार किया गया। इस स्थल को स्मारक के रूप में सुरक्षित रखा जा रहा है।
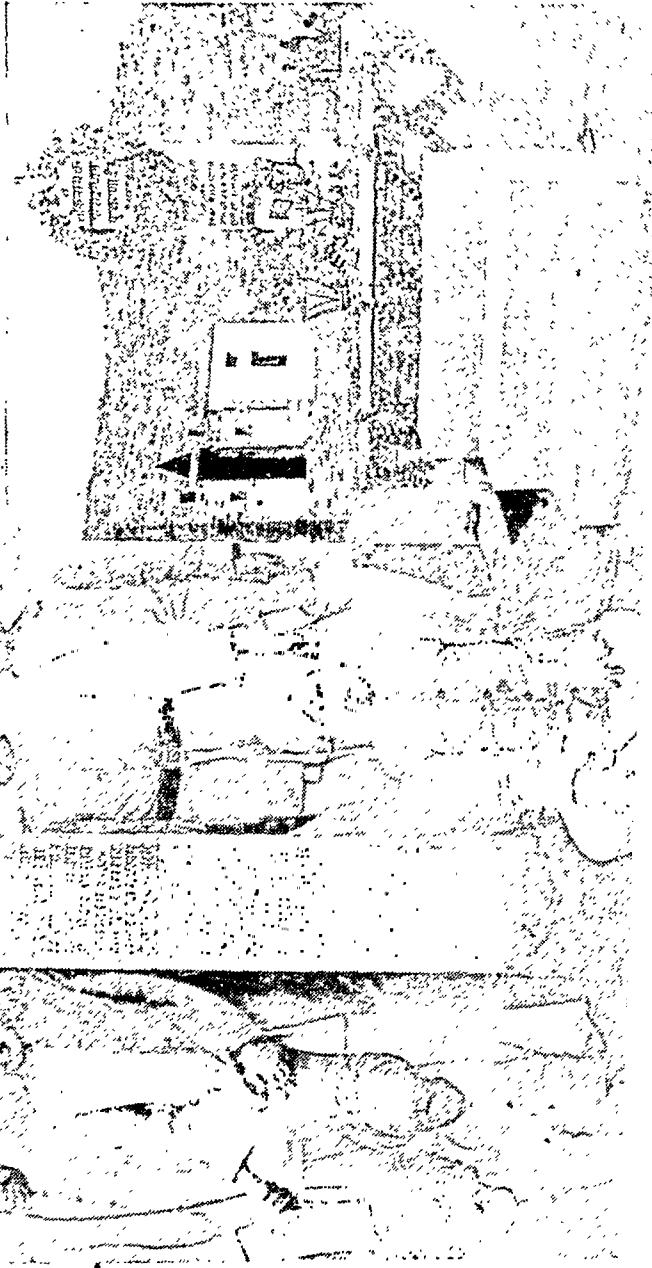
तीसरा खंड
अनुभूतिपूर्ण
स्मृतियां

प्रकरण १

व्यक्तित्व व चरित्र

१

मूर्धन्य व्यक्तित्व

उपराष्ट्रपति डा० जाकिर हुसेन

वे विशिष्ट नेता, देशभक्त और भारत माता की श्रद्धालु सम्पन्न संतान थे। भूतपूर्व देशी राज्यों की जनता के स्वतन्त्रता संघर्ष के वह एक वीर योद्धा और महान् सेनानी थे।

व्यास जी जब देशी राज्यों के जन-आन्दोलन में संलग्न थे, तब उनकी प्रवृत्तियों के साथ मेरा अत्यन्त निकट का सम्पर्क था। वह मुझे 'बी बी' कहकर बड़े प्रेम से बुलाया करते थे। अनेक विषयों पर उनके साथ विस्तार से विचार विनिमय करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त था। पिछले आम चुनाव में, राजस्थान में जिन भ्रष्टाचारी उम्मीदवारों को कांग्रेसी उम्मीवार के रूप में खड़ा किया गया था, उनका उन्होंने खुला विरोध किया था। बहुतों का यह ख्याल है कि ऐसा करने में उन्होंने राजनीतिक दूरदर्शिता से काम नहीं लिया। परन्तु वह बड़े साहसी, निर्भीक और अपनी भूल के प्रति भी बड़े ईमानदार थे। उन्होंने एक बार मुझे विश्वास में लेकर यह बताने में भी संकोच नहीं किया था कि उन्होंने राजस्थान के मुख्य मन्त्री रहते हुए मारवाड़ के पूंजीपतियों की आर्थिक सहायता इसलिए स्वीकार नहीं की थी कि उससे उनके लिये ईमानदारी के साथ स्वतन्त्रतापूर्वक अपने शासन का संचालन करना असम्भव हो जाता।

यह आर्थिक सहायता देने का प्रस्ताव तब प्रस्तुत किया गया था जब उनके सामने राजस्थान के मुख्य मंत्री के पद को छोड़ने का प्रसंग उपस्थित हुआ था। मुझे इसमें संदेह है कि राजस्थान में ऐसे कितने राजनीतिक नेता हैं, जो किसी उच्च ध्येय की पूर्ति के लिये साधनों की पवित्रता में उन सरीखा विश्वास रखते हों। धनिकों के पैसे के बलपर सत्ता हथियाने की अपेक्षा उन्होंने पद से अलग रहना अधिक उचित समझा। इसीलिए तो उन्होंने अपनी निजी सम्पत्ति का संग्रह नहीं किया।

एक बार उन्होंने मुझे बताया कि उनकी निजी सम्पत्ति किशनगढ़ में केवल एक छोटा-सा मकान है, जो कि राजस्थान विधान सभा के सदस्य चुने जाने के लिये उनका निर्वाचन क्षेत्र है। निहित स्वार्थ के भ्रष्टाचारी सरकारी अधिकारियों के वह कट्टर दुश्मन थे। इसी कारण निजी स्वार्थ वाले उनको घृणा की दृष्टि से देखते थे। वह असंदग्धि रूप में ऐसे ईमानदार थे कि उनके लिये शासन अथवा कांग्रेस संगठन में भ्रष्टाचार को सहन कर सकना सम्भव ही न था। जयपुर में पिछले चुनाव के दिनों में एक पुराने क्रान्तिकारी नेता ने मुझे बताया था कि व्यास जी को अंग्रेज़ भी ऐसा ईमानदार मानते थे कि उनको किसी भी कीमत पर उनके लिये 'खरीदना' सम्भव न हो सका। इस क्रान्तिकारी नेता ने मुझे कई राजस्थानी नेताओं के नाम बताये, जिनको अंग्रेजों ने राजस्थान के राजनीतिक स्वतन्त्रता के संघर्ष को कुचलने के लिये अपना हस्तक बना रखा था। अपने प्रारम्भिक जीवन में उन्होंने रेलवे में नौकरी की और बाद में अध्यापक कार्य शुरू किया। १९२७ में, २८ वर्ष की आयु में उन्होंने कांग्रेस में प्रवेश किया। १९२१ में उन्होंने मारवाड़ हितकारिणी सभा का गठन किया। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वह दो बार अध्यक्ष रहे। १९२८ से १९३६ तक वह अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद् की प्रादेशिक शाखा के मन्त्री और १९३६ से १९४७ तक उसके महा मंत्री रहे।

१९२९ से १९३१ तक वह जोधपुर में पहली बार जेल में बन्दी रखे गये। बाद में भी तीन बार १९३२, १९४१ और १९४२ में उन्होंने जेलयात्राएं कीं। पत्रकारिता में उनकी विशेष दिलचस्पी थी। १९३६ में वह बम्बई के 'अखण्ड भारत' दैनिक पत्र के सम्पादक रहे। अपने निधन से एक वर्ष पहले उन्होंने अंग्रेज़ी पाक्षिक 'पीप' का संचालन एवं सम्पादन किया। उन्होंने उपन्यास और बहुत-सी कविताएं भी लिखीं। वह अपना खाली समय नृत्य व संगीत में विताया करते थे। लोक गीतों और लोक नृत्यों में उनकी विशेष रुचि थी। समाज-सुधार में भी उनकी कुछ कम रुचि न थी। उन्होंने मुझे पिछले ही वर्ष यह बताया था कि 'पुष्करणा' समाज में से, जो कि मुख्यतः राजस्थान में केन्द्रित है, बाल-विवाह आदि बन्द कराने के लिये कैसा कठोर श्रम किया था। १९४०-४१ में वह जोधपुर नगरपालिका के अध्यक्ष और १९४८-४९ में जोधपुर राज्य के मुख्य मंत्री रहे। पहली बार अप्रैल, १९५१ से मार्च, १९५२ तक और दूसरी बार नवम्बर, १९५२ से नवम्बर, १९५४ तक वह राजस्थान के मुख्य मन्त्री थे। १९३२ से ५३ तक वह जयपुर क्लब के अध्यक्ष रहे। १९५७ में पहली बार और १९६० में फिर दूसरी बार राज्य सभा के सदस्य चुने गये। राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त पहले हिन्दी आयोग के वह सदस्य थे। वह सार्वजनिक लेखा उपसमित के भी सदस्य थे।

सबसे बड़ी बात यह है कि वह एक मानव थे और कभी भी किसी ने उनको उदास न देखा होगा। ३३ कैनिंग लेन में 'कॉमन किचन' के सदस्य रहे। एक बार

सारी शाक-भाजी दूसरे सदस्य उड़ा गये। जब वह भोजन पर बैठे, तब उनके लिये केवल रोटियां बची थीं। रसोइये पर नाराज़ न होकर उन्होंने बड़े ही सहज भाव से लाल मिर्च, नीबू के रस और नमक के साथ अपना भोजन कर लिया।

अपने मित्रों के साथ बातचीत और व्यवहार में बहुत खुले थे, हालांकि उनके लंगोटिये यार भी उनसे अपना स्वार्थ पूरा होता न देख उनको अकेला छोड़ अलग हो गये। जब उनको और उनके साथी श्रीमथुरादास माथुर और श्री द्वारकादास पुरोहित को सरदार पटेल के प्रकोप का शिकार होना पड़ा, तब प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने भी उनका साथ देने में अपने को सर्वथा असमर्थ पाया। उनको प्रधान मन्त्री नेहरू से सबसे बड़ी शिकायत यह थी कि उन्होंने राजस्थान के वर्तमान शासकों पर भ्रष्टाचार के जो आरोप लगाये, उनके बारे में उन्होंने कोई जांच नहीं की। इसी कारण तो उन्हें खुले मैदान में आकर मतदाताओं से यह अपील करने को बाध्य होना पड़ा कि उन्हें भ्रष्टाचारी कांग्रेसी उम्मीदवारों को अपना मत नहीं देना चाहिए।

इसमें कोई अत्युक्ति नहीं कि उनके निधन से राजस्थान के नेतृत्व में बड़ा अभाव पैदा हो गया। जहां तक भारत माता की निःसवार्थ सेवा का सम्बन्ध है, उनका मूर्धन्य स्थान था। राजस्थान के शासन अथवा वहां की कांग्रेस में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है, जिसको उनके पाये का कहा जा सके। ये भ्रष्ट और तुच्छ राजनीतिक छुटभइये बड़े-बड़े पूंजीपतियों के साथ गांधी और नेहरू के नाम पर अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिये सौदेबाज़ी करने में लगे हैं।

मेरे शब्द ये कुछ कठोर हो सकते हैं, किन्तु राजस्थान में जो परिस्थिति पैदा कर दी गई है, उसकी वास्तविकता को स्पष्ट करने के लिये वे बिल्कुल यथार्थ हैं।

मैं चाहता हूं कि श्री जयनारायण व्यास सरीखे दो-चार तो निःस्वार्थ देशभक्त ऐसे हों, जो हमारी स्वतन्त्रता तथा लोकतन्त्र को सुदृढ़ बनाते हुए देश को समाजवाद की ओर अग्रसर करने के लिये अपने को न्योछावर कर सकें।

('पार्लियामेण्टरी टाइम्स' से अनूदित)

२
अनुकरणीय व्यक्तित्व

मुख्य न्यायमूर्ति, श्री दुर्गाशंकर दवे, वरिष्ठ न्यायालय, जोधपुर (राजस्थान)

नई पीढ़ी व्यास जी के राजनीतिक जीवन से ही अधिकतर परिचित है, परन्तु उन्होंने समाज-सुधारक, साहित्यिक तथा शिक्षक के रूप में जो कार्य किया, उसका कहीं अधिक महत्त्व है। सच्ची राजनीति की इमारत तो समाज के सामाजिक जीवन की ठोस गहरी नींव पर ही निर्मित होती हैं। व्यास जी ने इस सत्य का प्रारम्भ से ही सही रूप में मूल्यांकन कर लिया था। इसीलिए उन्होंने लोक गीतों के प्रणयन, कुप्रथाओं के उन्मूलन, शिक्षा के प्रसार आदि अनेक सामाजिक एवं सांस्कृतिक उद्‌बोधन के कार्यों द्वारा समाज के सामाजिक जीवन का पथ प्रशस्त किया। उनके इसी पथ का अनुसरण हमें करना चाहिए।

◇ ◇ ◇

अपनी उसी यात्रा के एक मोड़ पर वे राजनीति की पगडण्डी के भी पथिक बन गये। समाज की प्रगति, समृद्धिएवं समुन्नति में वे सतत प्रयत्नशील रहे। उनके दु:खद निधन से राजस्थान के एक अनुकरणीय व्यक्तित्व खो दिया।

३
बेजोड़ व्यक्तित्व

श्री रामनिवास जी मिर्धा, अध्यक्ष राजस्थान विधान सभा, जयपुर

व्यास जी अब नहीं रहे। यह विश्वास करना कठिन है कि उनका हास्य विनोदमय व्यंग्य और लोट-पोट कर देने वाला मनोरंजन भविष्य में कभी सुनने को नहीं मिलेगा। उनके निधन से एक बड़ा देशभक्त और विशिष्ट व्यक्तित्व हममें से उठ गया। इस प्रकार जो अभाव पैदा हो गया है, उसकी पूर्ति असम्भव है।

राज्य सरकार ने उनके निधन पर जो शोक विज्ञप्ति प्रकाशित की, उसमें कहा गया कि राजस्थान को उनके निधन से कभी न पूरी होने वाली क्षति सहन करनी पड़ी है। ऐसे ऊंचे चरित्र के व्यक्ति के उठ जाने से न केवल राजस्थान, अपितु सारा ही देश दरिद्र हो गया है। रियासती जन-आन्दोलन का अत्यधिक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हमने खो दिया।

एक-एक करके महारथी हमको छोड़कर चले जा रहे हैं। सम्भव है कि अब उनकी आवश्यकता न महसूस की जाती रही हो अथवा देश ने उनसे पूरी तरह लाभ उठाना बन्द कर दिया हो। परन्तु उनकी उपस्थिति हममें से अनेकों को नव स्फूर्ति प्रदान करती थी और आजकल की उस जोड़-तोड़ की राजनीति पर से जिसमें संख्या वल और वहुमत का ही महत्त्व रह गया है, एक आशापूर्ण अंकुश उठ गया है। संख्या-वल अस्थायी है और बहुमत भी समय के उतार-चढ़ाव के साथ वदलता रहता है। किसी भी देश या राष्ट्र को स्थिरता और सजीवता तो चरित्र-वान नेताओं से ही प्राप्त होती है। जब ऐसे नेताओं का अभाव होने लगता है, तो उनके पीछे रहने वालों का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वे अपने विचारों और प्रवृत्तियों को उनके आदर्शों के अनुरूप बनाएं। यही वह मार्ग है जिसका अवलम्वन करके कोई भी देश अथवा राष्ट्र स्थिर गति से प्रगति एवं विकास के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है।

◇ ◇ ◇

श्री जयनारायण व्यास का जन्म १८९८ में एक पुरातनपंथी ब्राह्मण कुल में हुआ था। वह जोधपुर रेलवे के दफ्तर में काम करने वाले श्री सेवाराम जी व्यास के इकलौते वेटे थे। उनकी माता जी का कुल तो और भी अधिक कट्टर पुरातन-पंथी था। सुप्रसिद्ध 'चण्डू पंचांग' जंत्री के प्रवर्त्तक का वह कुल उत्तराधिकरी था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा अपनी विरादरी की एक पोशाला में हुई थी। मैं यह सव चर्चा यह दिखाने के लिये कर रहा हूं कि ऐसे नैष्ठिक कुल में जन्म लेने और ऐसी पोशाला में पलने व पढ़ने वाला कैसा 'विद्रोही' वन गया! व्यास जी केवल राजनीतिक दृष्टि से ही क्रान्तिकारी न थे, प्रत्युत सामाजिक दृष्टि से भी वड़े 'विद्रोही' थे। सब नेताओं के सम्वन्ध में ऐसा नहीं कहा जा सकता। वे राजनीतिक दृष्टि से कैसे भी क्रान्तिकारी क्यों न थे; परन्तु वे अपने सामाजिक जीवन में वैसा क्रान्तिकारी दृष्टिकोण नहीं अपना सके।

◇ ◇ ◇

मैट्रिक की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के वाद व्यास जी ने जोधपुर रेलवे में नौकरी कर ली। उसको छोड़कर वह अध्यापक वन गये। अध्यापन का पेशा अपनाने से वह 'मास्टर साव' कहलाने लगे। प्रथम विश्व-युद्ध (१९१४-१८) के वाद भारत और बाहर के देशों में जो राजनीतिक और सामाजिक उथल-पुथल हुई; उसका व्यास जी पर गहरा असर पड़ा। उनकी अपनी विरादरी और समाज की धार्मिक कट्टरता ने उन्हें विद्रोही वना दिया। वह समाज का पूरी तरह काया पलट करना चाहते थे, जिसमें सामाजिक सुधार के लिये आन्दोलन के अतिरिक्त राजनीतिक परिवर्तन की भी ज़रूरत थी और इसी उद्देश्य से उन्होंने १९२१ में 'श्री मारवाड़ हितकारिणी-सभा' की स्थापना की।

इस तरह मारवाड़ राज्य में राजनीतिक ग्रान्दोलन का बीजारोपण हुग्रा। व्यासजी ने व्यावर से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक पत्र 'तरुण राजस्थान' का सम्पादन किया। वह उनके निर्भीक सम्पादकीय लेखों के कारण शीघ्र ही लोकप्रिय वन गया। १९२७ में शुरू किये गये ग्रान्दोलन के दौरान में ऐसे ही एक निर्भीक सम्पादकीय लेख के कारण उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। ग्रपने दो साथियों देशभक्त सेठ ग्रानन्दराज जी सुराणा ग्रौर श्री भंवरलाल जी सराफ के साथ ग्रदालत ने उन्हें छह वर्ष की कड़ी कैद की सजा दी, जिसको ग्रपील में चीफ कोर्ट ने घटाकर ढाई वर्ष कर दिया। ग्रपने जीवन-काल में उन्होंने जो पांच वार जेल यात्राएं की, उनमें यह पहली ग्रौर लम्वी थी।

◇ ◇ ◇

१९३० में गांधी इरविन समझौते के फलस्वरूप व्यास जी को सजा की ग्रवधि पूरी होने से पहले ही साथियों सहित रिहा कर दिया गया। लेकिन १९३२ में समझौता टूट जाने पर सत्याग्रह फिर शुरू हो गया। व्यास जी व्यावर में गिरफ्तार कर लिये गये ग्रौर उनको एक वर्ष की कड़ी कैद की सजा दे दी गई। उसको उन्होंने ग्रजमेर सेण्ट्रल जेल में विताया। १९३३ में ग्रपनी रिहाई के वाद वह दिल्ली चले गये। कुछ समय वहां रहे। वाद में उन्होंने ग्रपनी गतिविधियों का केन्द्र वम्वई वनाया। १९३५-३६ में उन्होंने वम्वई से 'ग्रखंड भारत' नाम का हिन्दी दैनिक पत्र निकाला उनके ज़ोरदार जोशीले ग्रौर निर्भीक सम्पादन के कारण शीघ्र ही पत्र रियासती जन-ग्रान्दोलन की ग्रावाज़ वन गया। उसके महत्त्वपूर्ण प्रभाव तथा लोकप्रियता का पता इसी से लग जाता है कि राजस्थान की प्राय: सभी रियासतों में उसके प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था।

◇ ◇ ◇

१९३६ में मारवाड़-लोक-परिषद् की स्थापना हुई ग्रौर जव व्यास जी १९३८ में जोधपुर लौटे तो उन्होंने उसका नेतृत्व ग्रपने हाथ में ले लिया। १९४० में जोधपुर राज्य में एक केन्द्रीय सलाहकार वोर्ड की स्थापना हुई, जिसमें व्यास जी को सरकार की ग्रोर से नामजद किया गया। उन्होंने वोर्ड की सदस्यता यह सोचकर स्वीकार की थी कि वह राज्य को कुछ रचनात्मक सहयोग दे सकेंगे। लेकिन उन्होंने जव सारी योजना को खोखला पाया, तो वह उसको छोड़कर चले गये।

जोधपुर सरकार ने व्यास जी ग्रौर उनके ६ साथियों को गिरफ्तार करके वस्तियों से दूर जंगली किलों में नज़रवन्द कर दिया। दरवार के इस काले कारनामे की जनता में प्रतिकूल प्रतिक्रिया हुई ग्रौर उनकी रिहाई के लिये ग्रान्दोलन छिड़ गया। तीन मास की नज़रवन्दी के वाद उन्हें रिहा कर दिया गया। रिहा होते ही रियासत के ग्रंग्रेज़ दीवान के साथ समझौता वार्ता शुरू हो गई। समझौता वार्ता ग्रसफल रहने पर १९४२ में उत्तरदायी शासन के लिये सत्याग्रह फिर शुरू कर

दिया गया। व्यास जी और उनके साथी फिर गिरफ्तार कर लिये गये और १९४५ तक जेल में रहे।

◇ ◇ ◇

स्वतन्त्रता प्राप्ति के वाद व्यास जी को १९४८ में रियासत का प्रधानमंत्री बना दिया गया। १९४९ में राजस्थान संघ के निर्माण तक वह इस पद पर रहे। इस अल्प अवधि में उन्होंने रियासत में अनेक जन हितकारी ठोस कदम उठाये और सुधार की दिशा में रचनात्मक काम किये।

◇ ◇ ◇

लोगों के दिमाग में यह वात विठा दी गई थी कि व्यास जी अच्छे आन्दोलनकारी तो हैं, परन्तु प्रशासक की दृष्टि से सफल नहीं हो सकते। इतनी अल्प अवधि में उन्होंने और उनकी सरकार ने जो महत्त्वपूर्ण कार्य किये उनसे इस भ्रम का स्वतः ही निराकरण हो गया। अत्यन्त आवश्यक भूमि-सुधार के साथ-साथ व्यास जी ने शिक्षा के विस्तार पर विशेष जोर दिया और ६ से ११ वर्ष की आयु के वच्चों के लिये अनिवार्य शिक्षा की योजना भी चालू की। एक इंजीनियरिंग कालेज कायम करने की योजना तैयार की गई और एक नई रेलवे लाइन के निर्माण का भी कार्यक्रम बनाया गया। आयकर चालू किया गया और नियमित रूप से काम करने वाला आकाशवाणी केन्द्र भी स्थापित गया। जिलों की शासन प्रणाली में परिवर्तन करके उसको आधुनिक ढांचे में ढाला गया। व्यास जी ने इस प्रकार जिस तेज़ी और लोकप्रियता से सुधार के जो काम किये और जिस रीति-नीति का अवलम्वन किया उसमें कोई भी भावी सरकार विशेष प्रगति या विकास नहीं कर सकी।

◇ ◇ ◇

राजस्थान संघ के निर्माण के वाद राज्य के इतिहास में एक नया अध्याय शुरू हुआ। यदि केवल कुर्वानी और लोकप्रियता ही किसी उच्च पद की प्राप्ति की कसौटी होती तो व्यास जी निश्चय ही राजस्थान के मुख्यमंत्री वने होते। इस तथ्य को रहस्यमय वनाये रखने का कोई मतलव नहीं है कि उनकी लोहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की आपस में नहीं पटी। सरदार पटेल और उन दिनों में केन्द्रीय गृह मंत्री और रियासत विभाग के भी कर्त्ता-धर्त्ता थे। व्यास जी और उनके साथियों के विरुद्ध जोधपुर में फौजदारी के मामले चलाये गये। वे मिथ्या, निराधार और द्वेषपूर्ण थे। वह दो विशिष्ट विभूतियों के वीच का संघर्ष था। दोनों की अपनी-अपनी विशेषताएं थीं। परस्पर विरोधी, निम्न स्तर और जोड़-तोड़ की राजनीति पर निर्भर रहनेवाला व्यक्ति सरदार पटेल के साथ समझौता या जी हजूरी करके राजनीतिक क्षेत्र में अपना स्थान सहज में सुरक्षित रख सकता था। लेकिन व्यास जी वैसे नहीं थे। वह वहुत साहसी और गम्भीर थे। उनमें अपने उद्देश्य की सच्चाई के प्रति वड़ी गहरी आस्था थी। उनका परिणाम और उसके वाद जो कुछ

हुआ वह सर्वविदित है।

◇ ◇ ◇

परिणामस्वरूप व्यास जी राजस्थान के मुख्यमंत्री वने। पहले आम चुनावों में हारे, उपचुनाव में जीते, फिर राजस्थान के मुख्यमंत्री वने। १९५४ में दलगत संघर्ष में मुख्यमंत्री पद खो वैठे। फिर संसद् सदस्य वने यह सव सर्वविदित इतिहास है और उस पर विस्तार से प्रकाश डालने की आवश्यकता नहीं।

राजस्थान में वार-वार मंत्रिमंडल वदलते रहने से बड़ी संख्या में मुख्यमंत्रियों और मंत्रिमंडल वनने का अपना ही लेखा-जोखा है। व्यास जी उनमें अकेले ही ऐसे हैं जो पद छोड़ने के वाद भी लोकप्रिय वने रहे और उन्होंने अपने महत्त्व को नहीं खोया। व्यास जी के व्यक्तित्व की एक विशेषता यह थी कि देश के राजनीतिक जीवन में उनका महत्त्व प्रशासन और कांग्रेस संगठन में उच्च पद पर वने रहने पर निर्भर न था। वह ऐसी आकस्मिक घटना न थी जो क्षणभंगुर होती है। इस दृष्टि से वह वेजोड़ और अपने ढंग के अकेले ही थे। यह भी सर्वविदित है कि उन्होंने १९६१-६२ के आम चुनावों में कुछ कांग्रेसी उम्मीदवारों का खुलकर विरोध किया था। इसमें सन्देह नहीं कि उन्होंने अनुशासन भंग किया, जिसकी अपेक्षा किसी सामान्य कांग्रेसी से नहीं की जा सकती। लेकिन उन्होंने ऐसा अपने आदर्श और सिद्धान्त की रक्षा के लिये ही किया था। इसी कारण छोटे-वड़े सभी कांग्रेसियों और यहां तक कि कांग्रेस उच्च सत्ता के कुछ सदस्यों ने भी उनकी प्रशंसा ही की थी।

कांग्रेस सही माने में एक राजनीतिक दल नहीं है। वह एक विशाल व व्यापक आन्दोलन है। उसमें वे सभी तत्त्व शामिल हैं, जो राष्ट्रीय जीवन में असन्तुष्ट अथवा एक दूसरे से भिन्न मत रखने वाले कहे जा सकते हैं। इसी में उसकी शक्ति और कमजोरी निहित है। कांग्रेस सरीखी संस्थाओं को वल या शक्ति ऐसे लोगों से नहीं मिलती जो उसमें सामान्य संगति विठाने में लगे रहते हैं; प्रत्युत उनसे मिलती है जो सारी स्थिति पर नैतिक एवं व्यापक दृष्टि से विचार करके अपना कर्त्तव्य-कर्म निश्चित करते हैं।

◇ ◇ ◇

व्यास जी हममें से उठ गये, परन्तु उनका आदर्श और व्यक्तित्व हममें विद्यमान् है। भविष्य में सदा ही उनकी असंदिग्ध ईमानदारी और सच्चाई हमें निरन्तर प्रेरणा देती रहेगी। उनकी ईमानदारी केवल वाहरी दिखावे और व्यवहार की नहीं थी; प्रत्युत वह उनके दिल और दिमाग में ऐसी व्यापी थी कि किसी भी ज़्यादती के सामने झुकना और जोड़-तोड़ विठाकर जैसे-तैसे अपना मतलव साधना वह जानते ही न थे। हमें अपने चारों ओर ज़रा दृष्टिपात करके यह देखना चाहिए कि क्या किसी भी राजनीतिक दल में ऐसा कोई राजनीतिज्ञ है, जो उनकी

इस कसौटी पर पूरा उतर सकता है ?

४

प्रेरणा स्रोत

रावसाहव श्री नारायण सिंह जी, मसूदा, उपाध्यक्ष राजस्थान विधान-सभा, जयपुर

स्वर्गीय श्री जयनारायण व्यास का जीवन-इतिहास तो इतिहासज्ञों को लिखना है, लेकिन हमें जो सोचना है वह तो यही कि किस प्रकार से लड़ते हुए स्वतन्त्रता संग्राम का वह सिपाही आखिर तक डटा रहा और सम्मानपूर्वक चला गया। हम सब यही आकांक्षा करें कि उन से प्रेरणा लेकर इसी प्रकार अपनी-अपनी लगन में मस्त कार्य करते हुए उसी सम्मान के साथ जा सकें।

हम कभी-कभी किसी सिद्धान्त पर अड़ जाते हैं। कहते हैं कि यह हमारा सिद्धान्त है। लेकिन सिद्धान्त, विचार, विवेक और व्यवहार से ही सिद्ध होता है। वह तो स्वयं सिद्ध अंत है। वह तो अपने ही सारे कार्य से, अपने ही सारे जीवन के अनुभव से उसी प्रकार सिद्ध होता है, जिस प्रकार व्यास जी ने सिद्ध किया अथवा अन्य महापुरुषों ने सिद्ध किया। सिद्धान्त की हठधर्मी के साथ हम न वहें; वल्कि सिद्धान्त को टोहने की कोशिश करें। कहने के लिये व्यास जी यहां नहीं हैं, पर उनका प्रेरणा स्रोत त्यागमय जीवन अविरल वह रहा है, जिससे हम हमेशा प्रेरणा ले सकते हैं।

५

उन जैसा कोई नहीं दीख पड़ता

वनस्थली विद्यापीठ के संस्थापक, श्री हीरालाल जी शास्त्री, जयपुर (राजस्थान)

लगभग पैंतीस वर्षों तक भाई श्री जयनारायण जी से मेरा सम्पर्क-संसर्ग-सम्वंध रहा।

कला में उनकी जो स्वाभाविक रुचि थी वह मुझे कईवार मुग्ध कर लेती थी।

वे वच्चों के साथ खुद वच्चा वनकर जो व्यवहार कर सकते थे उसे देखकर अधिकतर मुझे खुशी होती, पर कभी-कभी मेरे भीतर ईर्ष्या का-सा भाव पैदा होने लगता

था, वह इसलिए कि मुझसे वैसा नहीं हो पाता था।

जो कुछ लिखना होता था उसे वे बड़ी आसानी से और मिनटों में लिख डालते थे। जयपुर प्रजामंडल के प्रथम अधिवेशन के प्रायः सभी प्रस्ताव उनके लिखे हुए थे।

भाई व्यास जी का परिश्रम गज़ब का था। केवल चाय के आधार पर वे रात-दिन काम में पिले रह सकते थे। ऐसे दृश्य मैंने बम्बई में देखे, जयपुर में देखे।

मैं मानता हूं कि भाई व्यास जी का मुझपर वैसा ही स्नेह था जैसा किसी बड़े का छोटे पर होना चाहिए। अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद् में मुझे बड़े प्रेम से आगे लाने वाले व्यास जी ही थे।

हमारे सम्बन्धों में जो विघ्न आया उसके विषय में इस समय कुछ कहना अनुपयुक्त होगा। केवल इतना-सा कह दूं कि वह हम दोनों के लिये तीव्र वेदना का दौर था।

उपर्युक्त विघ्न समाप्त होकर पुराना पड़ गया तब व्यास जी का पहले से भी अधिक स्नेह मुझे मिला और वैसे ही उनके प्रति मेरा आदर भाव पहले से कई गुना बढ़ गया। दिल्ली में हमें एक-दूसरे से मिले बिना और अपने दिल की बात कहे बिना चैन नहीं पड़ता था। उनसे दिल्ली में मिलकर बिहार के दौरे पर निकला तब मैं कहां जानता था कि मेरा उनसे वह मिलना अंतिम था और जब रांची में एक मित्र ने व्यास जी के स्वर्गवास का समाचार सुनाया तो मुझे लगा कि मैं पत्थर हो गया।

भाई व्यास जी सच्चे अर्थ में त्यागी थे। वे बहुत भले और कुछ भोले थे। देश के लिये और राजस्थान के लिये जो कुछ उन्होंने किया वह अनुपम था। मुझे उन जैसा कोई दीख नहीं पड़ता। पिछले कुछ वर्षों में आन्तरिक वेदना उन्हें हुई वह न होती तो कितना अच्छा होता। निष्पक्ष भाव के साथ बुराई से टक्कर लेने की जो उन्होंने अंत में ठानी उसे सफलता की ओर ले जाने की दृष्टि से वे हमारे बीच में बने ही रहते तो हम कितने भाग्यशाली होते। पर भगवान् को वह कब मंजूर था।

६

बड़े भैया

सर्वोदय नेता श्री गोकुलभाई दौलतराम भट्ट, भूदान कुटीर, जयपुर (राजस्थान)

वह वीर था, रणधीर था; वह व्यास मर्द सरदार था......।

"उन दिनों में अपनी पहचान नहीं थी। गोकुलभाई, जब हम बम्बई में 'जन्म-भूमि' के मेडोस स्ट्रीट कार्यालय में रहते थे। रात को नाटक देखकर कार्यालय में

टेबलों के नीचे अखबारों का विस्तर विछाकर गुपचुप सो जाते थे। स्वर्गीय अमृत-लाल सेठ के उपालम्भ भी सुनते रहते थे। हँसी-मजाक चलता रहता था। चाय-देवी का आवाहन करते रहते थे और 'अखंड भारत' कई कठिनाइयों के वावजूद भी निकालने में लगे रहते थे। उन दिनों की मस्ती अनूठी थी। आज भी वही मस्ती है और सदा वनी रहेगी।" वड़े भैया व्यास जी ने कभी इन शब्दों में अपनी वह जीवन कहानी सुनाई थी, जो राजस्थान के रियासती कार्यकर्त्ताओं के लिये सदा स्फूर्ति व प्रेरणा का स्रोत वनी रही।

◇ ◇ ◇

१६३६ तक मेरा कार्यक्षेत्र विशेषतः वम्वई, महाराष्ट्र था। रियासती जनता के दुःख-दर्दों की आवाज़ सुनाने वाले दो दैनिक वम्वई से निकलते थे। गुजराती में 'जन्मभूमि' तथा हिन्दी में 'अखंड भारत'। उनको मैं ध्यानपूर्वक पढ़ता रहता था। मैं भी तो राजस्थान की एक छोटी ऐतिहासिक रियासत सिरोही का निवासी था। इसलिए रियासती मसलों में सार्वजनिक कार्यकर्त्ता के नाते भी दिलचस्पी रखता था।

व्यास जी ने अपने अखवार का नाम 'अखंड भारत' रखा था यह वड़ा ही अर्थसूचक था। वे रियासती भारत और खालसा (ब्रिटिश) भारत को एक वनाना चाहते थे। उनका उन जैसे कई रियासती कार्यकर्त्ताओं का शुभ मनोरथ सरदार पटेल की विस्मयजनक शक्ति ने पूर्ण किया।

एक वार हम राजस्थान के प्रमुख कार्यकर्त्ता दिल्ली में सन् १९४६ में एकत्र हुए थे। दीवानहाल में हमारी मंत्रणा होने के वाद व्यास जी, मैं और दूसरे साथी दीवान हाल की छत पर गये। सामने लालकिला दीख रहा था। उस पर अंग्रेज़ी हकूमत का झंडा फहरा रहा था। स्वाभाविक उद्‌गार निकला "इस किले पर हमारा तिरंगा कव फहरायेगा? कल नहीं तो परसों, नरसों पर हम फहरा कर रहेंगे, अंग्रेज़ी हकूमत को भारत से हटना ही होगा और राजाओं को भी प्रजा के हाथों में राज्यशासन सौंपना होगा।" यह था, स्वर, हमारे स्वर्गीय जयनारायणजी व्यास का तार सप्तक स्वर। वे नेता इसीलिए थे; क्योंकि सच्चे कार्यकर्त्ता थे, जनता के सेवक थे।

◇ ◇ ◇

सिरोही राज्य में चहल-पहल शुरू हुई तव से व्यास जी के साथ सम्पर्क वढ़ने लगा। अनेक वार मिलते रहे, गपशप लगाते रहे। वे किस्से-कहानियां प्रयोजन-पूर्वक सुनाया करते थे और प्रसंगवश रंग-विरंगी दिलचस्प वातें करते-करते मूल विषय पर चोट करते रहते थे।

आज का राजस्थान जव राजपूताना था तव पालनपुर, विजयनगर, दांता, ईडर, लोहारू के कर्यकर्त्ता साथ में काम करते थे। एक-दूसरे को सहारा दिया करते थे

ऐसा एक कार्यकर्त्ता संगठन भी बना और अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् की राजस्थान शाखा जब तक नहीं बनी तब तक उस कार्यकर्त्ता संगठन ने आज के राजस्थान के एकीकरण की बुनियाद डाली। उन दिनों में डूंगरपुर, बीकानेर और गोपाकांड की वजह से जैसलमेर विशेष मसले बन गये थे। खतरे के काम में व्यास जी सबसे पहले कूदते थे। परिणाम की परवाह किये बिना 'कार्यम् साधयामि वा देहम् पातयामि' इस नीति वाक्य को चरितार्थ करने वालों में व्यास जी अगुआ थे।

◇ ◇ ◇

बीकानेर का एक प्रसंग उल्लेखनीय है। वहां सभाबन्दी थी। प्रजाजागरण की चिनगारी को राज्य शासक बुझाना चाहते थे। इसलिए वहां अनेक प्रकार के दमन चक्र चलते रहते थे। हमारे आपस के निश्चय के अनुसार सब रियासतों के खास-खास कार्यकर्त्ता बीकानेर पहुंचे। वातावरण प्रतिकूल दीखा। बाहर से आने वाले उत्तेजित थे और मोर्चा लेने की तैयारी से पहुंचे थे। व्यूह रचना हुई। निश्चय हुआ कि सभा बन्दी हुकम को तोड़ना है और जो परिणाम हो, सो भुगतना है। इस निश्चय की भित्ति पर दिन-भर का कार्यक्रम आंका गया। शासन के प्रतिनिधियों को उसकी सूचना दे दी गई। बीकानेर शहर में चहल-पहल मच गई कि कुछ नया ही दर्शन होने वाला है। सबकी ऐसी ही धारणा बन गई। स्थानीय कार्यकर्त्ताओं में भी जोश और हिम्मत की लहर दौड़ गई। हमें बताया गया कि आमसभा बन्दी है। व्यक्तिगत निमन्त्रण से सभा की जा सकती है। हमने इसका फायदा उठाया और आम सभा में शामिल हो सकें ऐसे सैकड़ों लोगों को लिखित व्यक्तिगत निमंत्रण दिया।

सभा हुई, पुलिस हमें घेर कर इर्द-गिर्द गश्त लगा रही थी। सभा में शामिल होने वालों पर उसका ध्यान था। हमने सभा की कार्रवाई शुरू कर दी। बीकानेर की स्थिति पर प्रकाश डाला तथा दमन का मुकाबला कैसे किया जाय, उसकी भूमिका बांधी। हमारा ख्याल यह था कि एक के बाद एक को गिरफ्तार किया जायगा। लेकिन बीकानेर के सयाने अफसर स्थिति को ज्यादा उलझाना नहीं चाहते थे। वे बीकानेर में राजस्थान का एक बड़ा मोर्चा तैयार होने देना नहीं चाहते थे। आम सभा जैसे ही निमंत्रित व्यक्तियों की सभा बन गई, वैसे ही जनता का हौसला बढ़ा और हम लोगों की हिम्मत भी बढ़ी।

◇ ◇ ◇

उसी रात को जिस बड़े मकान में हमें ठहराया गया था वहां राष्ट्रीय गान, धुन व प्रार्थना हुई। संगीत का भी कार्यक्रम था। व्यास जी एकदम जोश में आ गये और अपनी प्रिय नृत्यकला का एक दर्शन करवाने की मन में आई। सब ओर आनन्द मच गया। व्यास जी ने प्रसंगानुकूल बेगारनृत्य दिखाया। यह नृत्य पहली ही

वार वहां दिखाया गया था। उसकी योजना उन्होंने बनाई थी। उसकी भी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि मैंने समय-समय पर अनेक स्थानों पर कई तरह के नृत्य दिखलाये हैं, पर आज का वेगार नृत्य शिरमौर है। नृत्य के बाद शारीरिक थकावट तो आती थी; परन्तु आनन्द के वातावरण में वे आधि-व्याधि-उपाधि आदि सब भूल जाते थे। ऐसे थे वे मुक्त और सदा मस्त।

"सदा मगन में रहना मनड़ा
सदा मगन में रहना…"

उनकी यह मानसिक मस्ती उनको सब मुसीबतों से सदा मुक्त रखती थी।

◇ ◇ ◇

रियासती प्रश्नों व समस्याओं का उनका अध्ययन बड़ा गहरा था। देशी राज्यों के जुल्मों का मुकावला करना चाहिए और कांग्रेस को भी उन में सक्रिय भाग लेना चाहिए। इस आशय का प्रस्ताव हरिपुरा कांग्रेस में डा० पट्टाभि ने रखा था। उसका पुरजोर समर्थन व्यास जी ने किया था। व्यास जी उन दिनों में भी रियासती प्रजा के नेता माने जाते थे और संकट के समय सदा अग्रसर रहते थे। रियासती विषयों में वे पं० जवाहरलाल जी नेहरू के निकटतम विश्वासपात्र साथी बन गये थे।

◇ ◇ ◇

व्यास जी सदा आनन्द प्रसन्न रहते थे। बड़ी-से-बड़ी उथल-पुथल में भी वे घबराते नहीं थे। साहित्य, संगीत और कला के उपासक थे। ज्ञान-प्रसार उन्होंने अपने जीवन का एक विशिष्ट कार्य बना लिया था। गांवों का उत्थान कार्य उनके मन में जम गया। सन्त विनोबा जी की राजस्थान की पदयात्रा में झुझुनू जिले में उनके अन्तर की भावनाएं उमड़ आई थीं। खादी ग्रामोद्योगों द्वारा गांवों को सक्षम बनाने के लिये वे प्रयत्नशील रहते थे। 'भूखे भजन न होय गोपाला' के सिद्धान्त को कार्यान्वित करने में उनकी गहरी दिलचस्पी थी। राज्य के कार्यभार से मुक्त होने के बाद वे अपना समय ज़्यादातर रचनात्मक कार्यों में लगाते थे। परन्तु अपनी प्रिय संस्था कांग्रेस में जो गर्हित रीतियां प्रविष्ट होने लगी थीं, उनसे उन्हें दुःख होता था और उनके निराकरण के लिये मार्ग भी ढूंढ़ते रहते थे। साथियों से झगड़ा भी मोल ले लेते थे। अपने काम में वे डटे रहते थे। ये चाहे निन्दा करें, चाहे बदनाम; पर व्यास जी अपने मत पर दृढ़ रहते थे। अनादर भाव उनके मन में किसी के प्रति नहीं रहता था। प्रिय साथियों के गलत कार्यों की वे खुलेआम भर्त्सना करने में हिचकिचाते नहीं थे। निर्भीक थे, जनसेवक थे, मास्टर थे, कवि थे, लेखक थे, वक्ता थे, नेता थे और दोस्ती का नाता निभाने वाले सच्चे साथी थे।

इसीलिए जब उनका शरीर गिरा तब सारा राजस्थान रोया। उनकी स्मृति-ऊष्मा हमें सदा प्रेरित करती रहे।

७

व्यापक व्यक्तित्व

मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल जी सुखाड़िया, राजस्थान

श्री जयनारायण जी व्यास से मेरा करीब सन् १९४५ से निकट का सम्पर्क रहा है। जब हम आजाद नहीं हुए थे तब और उसके बाद भी, जब कभी उनसे बात करने का, अवसर प्राप्त हुआ तब उनमें देश प्रेम की ही भावना प्रज्वलित दीख पड़ती थी। श्री व्यास जी अखिल भारतीय स्टेट्स पीपुल्स कान्फ्रेन्स के जनरल सेक्रेटरी रहे। न सिर्फ जोधपुर में, न राजस्थान में, बल्कि सारे भारतवर्ष में उन्होंने रियासती जनता की जन-जागृति में विशेष तौर पर अपना हिस्सा दिया। राजस्थान बनने के पूर्व जोधपुर में वे प्रधान मंत्री के पद पर थे। राजस्थान के मुख्य-मंत्री के पद पर रहकर उन्होंने राजस्थान की सेवा की और उसके बाद राज्य सभा के अन्दर वे लगातार भारतवर्ष की सेवा में लगे हुए थे। व्यास जी की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे चाहे कैसी परिस्थिति में हों, लेकिन वे हँसमुख रहने का और विनोद करने का बराबर प्रयत्न करते थे। यहां तक कि अपनी आखिरी बीमारी में भी, होली के दिनों में जब वे वहां बीमार थे, बोलना भी मुश्किल था, तो हाथ से लिखकर भी बराबर लोगों से विनोद किया करते थे। वे कहा करते थे कि हमेशा रंग से होली खेलता रहा इस बार दवाइयों से होली खेल रहा हूं और इस अस्पताल में होली की मेरी रातें बीत रही हैं। इससे अन्दाज होता है कि वे संघर्ष में भी अपने को तन्मय करने की कोशिश किया करते थे। हमेशा यह देखने में आया है कि जिस बात को उचित समझते थे, उस पर अपने जीवन में निर्भीकतापूर्वक कायम रहने का ज़्यादा-से-ज़्यादा श्रम किया करते थे।

यह दुर्भाग्य की बात है कि वे नहीं रहे और उनके द्वारा जो राजस्थान को और देश को प्रेरणा मिल सकती थी, सेवा हो सकती थी, उससे राजस्थान वंचित हो गया और राजस्थान की बहुत बड़ी हानि हो गई। उसकी क्षतिपूर्ति किसी प्रकार नहीं हो सकती। पुराने व्यक्तियों का अनुभव, उनका जीवन, उनका त्याग वह सब दूसरों के लिये एक प्रेरणा वस्तु है। उनका व्यक्तिगत जीवन खुद का न रह सारे देश का बन गया था।

व्यास जी लेखक थे। सांस्कृतिक क्षेत्र में रुचि लेने वाले थे। उनका जीवन व्यापक था। हर क्षेत्र में वे अपने विचारों से और अनुभवों से हमेशा ज़्यादा-से-ज़्यादा लोगों को लाभ पहुंचाया करते थे। राजस्थान में उनका अभाव खटकने वाला है। मैं दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

८

गुरु सदृश व्यक्तित्व

श्री मथुरादास जी माथुर, योजनामंत्री, जयपुर (राजस्थान)

स्वभावतः धर्म कर्म में मेरी अंध श्रद्धा नहीं है और मैं सम्प्रदायातीत किंवा धर्म निरपेक्ष आदर्श को मानता हूं। इसी कारण मेरे हृदय में किसी के भी प्रति अंध श्रद्धा प्रेरित धर्म गुरु की भावना पैदा नहीं हुई। फिर भी मैंने श्रद्धेय लोकनायक श्री जयनारायण व्यास में जिस गुरु सदृश व्यक्तित्व के दर्शन किये, उसकी कुछ ऐसी गहरी छाप मेरे हृदय पर बचपन में ही जम गई थी, जो आयु तथा अनुभव की वृद्धि और राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश के बाद भी निरन्तर कर्मठ जीवन बिताते हुए उत्तरोतर गहरी ही होती गई। यह कैसा संयोग था कि दोनों जोधपुर में एक ही वीर मुहल्ले के निवासी थे और उनके पिता श्री सेवाराम जी व्यास और मेरे पिता श्री ज्वालाप्रसाद जी माथुर दोनों सरकारी नौकरी में थे। उन दोनों में परस्पर गहरा स्नेह सम्बन्ध था। आश्चर्य नहीं कि मेरा व्यास जी के साथ जो घनिष्ट आत्मीय सम्बन्ध कायम हुआ, वह हम दोनों को अपने पिताओं से विरासत में मिला।

◇ ◇ ◇

मैं जब अपने जीवन का सिंहालोकन करता हूं, तब मुझे सहसा ही १९२९ की घटना याद आती है, जब व्यास जी को पहली बार गिरफ्तार किया गया था और उन पर नागौर किले में षड्यंत्र व राजद्रोह का पहला ऐतिहासिक मुकदमा चलाया गया था। मैं सातवीं कक्षा का विद्यार्थी था। व्यास जी अपने घर से गिरफ्तार करके जेल ले जाये गये थे। कुछ लोग उनके साथ-साथ 'जयनारायण व्यास जिन्दाबाद' तथा अन्य राष्ट्रीय नारे लगाते हुए जेल तक गये। मैं नंगे पैर ही उन लोगों के साथ हो लिया और जेल के दरवाजे तक नारे लगाता हुआ गया। मुझे अच्छी तरह याद है कि मैं घर से नंगे पैर इसलिए निकला था कि कहीं जूता पहनने की आवाज़ सुन माता जी मुझे बाहर उस भीड़ के साथ जाने से रोक न लें। मैं बड़े लाड़-प्यार और दुलार में पाला-पोसा गया। माता-पिता का ऐसा बेटा था, जिस पर उनकी चौबीसों घंटे नज़र रहती थी। मुझे यह भी याद है कि तब मेरे हृदय में यह भावना पहली बार पैदा हुई थी कि मुझे भी अपने को व्यास जी की ही तरह देश सेवा में लगा देना है। यह भी कहा जा सकता है कि देश सेवा का पहला क्रियात्मक पाठ मैंने तब व्यास जी से ही सीखा था। वे जब जेल से छूटे, तब भी मैं उनके स्वागत समारोह में बड़े उत्साह से सम्मिलित हुआ था।

◇ ◇ ◇

न केवल जोधपुर; अपितु समूचे राजस्थान के और बहुत सम्भव समस्त देशी राज्यों के जन-जागृति के इतिहास में वह अपने ढंग का पहला ही संगीन मुकदमा

था। उसकी कुछ जानकारी देनी आवश्यक प्रतीत होती है। २३ अक्टूबर, १६२६ को व्यास जी को अपने दो साथियों सेठ आनन्दराज जी सुराणा और श्री भंवरलाल सर्राफ के साथ विना किसी लिखित आदेश या वारंट के गिरफ्तार करके विभिन्न किलों में रखा गया था। वाद में नागौर ज़िले में वह संगीन मुकदमा चलाया गया था। उस किले में मुकदमे के लिये स्पेशल ट्रिब्युनल विठाया गया था। २६ अक्टूवर, को मुकदमा नाटक की तरह शुरू हुआ। व्यास जी को छह वर्ष और उनके साथियों को पांच-पांच वर्ष की सजा दी गई। गांधी-इरविन-समझौते के अनुसार मार्च, १६३१ में उनको छोड़ दिया गया। उस मुकदमे का इतना लाभ अवश्य हुआ कि व्यास जी का व्यक्तित्व व नेतृत्व अखिल राजस्थानी ही नहीं; प्रत्युत अखिल भारतीय वन गया। उस मुकदमे पर राज्य का लाख-सवालाख रुपया खर्च हुआ था।

◇ ◇ ◇

जीवन के घटनाचक्र ने कुछ ऐसा रुख पकड़ा कि व्यास जी जोधपुर से निर्वासित होकर व्यावर चले गये और मैं अपनी पढ़ाई के लिये १६३५ में लखनऊ चला गया। वहां मैंने वी० एस-सी० और एल-एल० वी० की परीक्षाएं पास कीं। लखनऊ रहते हुए मैं कांग्रेस की गतिविधि में वड़े उत्साह से भाग लेता था। १६३६ के लखनऊ कांग्रेस के ऐतिहासिक अधिवेशन में मैंने वतौर स्वयंसेवक के काम किया था। उसके वाद चुनाव में कांग्रेस का प्रचार कार्य मेंभी मैंने भाग लिया था। इस प्रकार लखनऊ में अपनी शिक्षा समाप्त करके राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत होकर मैं अप्रैल, १६३६ में जोधपुर लौटा। व्यास जी भी १६२८ में अपने पिताजी की वीमारी के कारण जोधपुर चले आये थे और वह वीमारी उनके निधन का कारण वन गई थी। इसी वीच जून १६३८ में मारवाड़ लोक-परिषद् का गठन हो गया था। व्यास जी की प्रेरणा पर उसमें काम करने वाले मेरे सरीखे युवकों ने खादी की सफेद टोपी व कपड़े पहनने शुरू कर दिये थे। उन दिनोंमें यह वेश-भूषा राष्ट्रीयता की निशानी मानी जाती थी और देशी राज्यों की पुलिस तथा अधिकारियों की आंखों में बुरी तरह खटकती थी। व्यास जी के प्रति हम कुछ युवक इतना अधिक आकर्षित थे कि उनकी हर वात को अपने लिये 'आदेश' मानकर स्वीकार किया करते थे और उनको पूरा करने में अपने प्राणों की वाजी तक लगाने को तैयार रहते थे। उनके प्रति हमारी निष्ठा ने धार्मिक श्रद्धा का-सा रूप धारण कर लिया और हम उनको अपना गुरु मानने लग गये थे। हम लोग दिनभर उनके साथ चर्चा, वार्ता और विचार-विनिमय में लगे रहते थे। उसके फलस्वरूप जिस निर्णय पर पहुंचते, उसको उनके आदेश के रूप में स्वीकार किया करते थे। उनके प्रति हमारी गुरु सदृश इस श्रद्धा का ही परिणाम था कि हम नवयुवक गुरु पूर्णिमा के दिन उनके पैरों में माथा टेककर उनके प्रति अपनी गुरु-भक्ति भावना प्रकट किया करते थे और वह हमें अपनी छाती से लगाकर अपना वात्सल्य भाव इस रूप में

प्रकट करते थे कि उसकी अनुभूति से हम आनन्दविभोर हो जाते थे। गुरु पूर्णिमा के दिन का वह दृश्य और वह अनुभूति मैं कभी भूल नहीं सकता।

◇ ◇ ◇

इसी तरह मार्च, १९४० की गिरफ्तारी के समय श्रद्धेय व्यास जी ने जो संदेश या आदेश मुझे व्यक्तिगत रूप में दिया था, उसको भी मैं नहीं भुला सकता। उन्होंने गिफ्तारी के समय मुझसे कहा था कि "देखो, अपने मुहल्ले के नाम को बट्टा न लगने देना और जैसा कि अधिकारियों ने समझ रखा है, आन्दोलन को दबने नहीं देना।" मैंने उनको विश्वास दिलाया कि जब तक जान में जान रहेगी, तब तक आन्दोलन जारी रखा जायगा। अपने इस वचन को हम लोगों ने पूरी सच्चाई व ईमानदारी से निभाया। व्यास जी के बाद सात और प्रमुख कार्यकर्त्ता गिरफ्तार किये गये। उनमें सर्व श्री अभयमल जैन, छगनलाल चौपासनीवाला और भंवरलाल सराफ मुख्य थे। मुझे सत्याग्रह का प्रथम अधिनायक नियुक्त किया गया था। मैं भी १६ मार्च को गिरफ्तार कर लिया गया। जुलाई में समझौता हुआ और हम सब छोड़ दिये गये। लेकिन समझौता कुछ अधिक समय नहीं निभ सका। हम लोगों ने व्यास जी के नेतृत्व में यह निर्णय किया कि अपने आन्दोलन को जोधपुर नगर के बाहर छोटे नगरों और देहातों में भी फैलाना चाहिए। सोजत, नागौर, पाली आदि के अलावा जागीरी देहातों में भी लोक-परिषद् का संदेश पहुंचाने में हम सब लग गये। मार्च, १९४२ में राज्य सरकार के साथ उत्तरदायी शासन के प्रश्न पर भी सीधी टक्कर हुई। व्यास जी की गिरफ्तारी हुई और अन्य कार्यकर्त्ताओं की गिरफ्तारी का भी सिल-सिला शुरू हो गया। इस बार का आन्दोलन और गिरफ्तारियां इस ढंग से हुईं कि महात्मा गांधी का ध्यान भी जोधपुर की ओर आकर्षित हुआ और उन्होंने मध्यस्थता करने के लिये उत्तरप्रदेश के प्रमुख कांग्रेसी नेता बाबू श्रीप्रकाश जी को विशेषरूप से जोधपुर भेजा। वह दो बार जोधपुर आये। महात्मा जी के ध्यान आकर्षित होने का एक मुख्य कारण नज़रबन्दी में की गई हम लोगों की सामूहिक भूख हड़ताल भी थी। इसी भूख हड़ताल में हमारे वीर साथी श्री बालमुकन्द बिस्सा शहीद हुए थे और उनकी शवयात्रा पर पुलिस ने जो नीचतापूर्ण लाठी चार्ज किया था, उसके कारण समाचार-पत्रों में हमारे उस आन्दोलन की विशेष चर्चा हुई थी। अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद् के तत्कालीन अध्यक्ष पं० जवाहरलाल नेहरू ने अपने प्रतिनिधि स्वर्गीय श्री द्वारकानाथ कचरू को विशेषरूप से जोधपुर भेजा था। तब आन्दोलन की दृष्टि से भारत के मानचित्र पर जोधपुर का नाम चमक उठा था और व्यास जी की अखिल भारतीय प्रतिष्ठा में चार चांद लग गये। हमारा वह आन्दोलन और सत्याग्रह 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' का १९४२ की अगस्त क्रान्ति से लगभग ५-६ महीने पहले शुरू हो चुका था। घटनाक्रम की दृष्टि से हमारा वह स्थानीय सत्याग्रह अखिल भारतीय सत्याग्रह की भूमिका ही था और बाद में अखिल

भारतीय सत्याग्रह का एक अंग बन गया था। जून-जुलाई १९४५ में व्यास जी और हम सब जेलों से छोड़े गये। व्यास जी को जालौर और हम लोगों को सिवाणा किलों में रखा गया।

◇ ◇ ◇

५ मार्च, १९४८ को जोधपुर में लोकप्रिय मंत्रिमंडल कायम हुआ। व्यास जी को मुख्य मन्त्री पद सौंपा गया। मुझे और श्री द्वारकादास पुरोहित को लोकप्रिय मंत्रिमण्डल में शामिल नहीं किया गया था। इसी कारण जून मास तक संघर्ष की-सी स्थिति बनी रही। अन्त में हम दोनों को मंत्रिमण्डल में लेने के लिये महाराजा साहब को सहमत होना पड़ा। ३१ मार्च, १९४९ को राजस्थान संघ के निर्माण, जोधपुर में ४०६ और ४२० धाराओं के अन्तर्गत चलाये गये संगीन मुकदमे और उसके वापस लिये जाने के बाद व्यास जी के राजस्थान राज्य के मुख्यमंत्री के पद पर प्रतिष्ठित किये जाने आदि की समस्त घटनाएं खुली पुस्तक के समान हैं। मुझे बड़ा सन्तोष, प्रसन्नता तथा गौरव है कि मैं इस घटनाचक्र में उनका एक साथी रहा हूं। मन्त्रिमण्डल में यदि उनका साथी था, तो जोधपुर में स्पेशल ट्रिब्युनल के सामने चलाये गये मुकदमे में भी मैं उनके साथ एक अभियुक्त-साथी के रूप में उपस्थित था। मैं यदि उनकी अथवा अपनी आपबीती या जगबीती लिख सकूं, तो वह एक ऐसी कहानी होगी, जिसमें व्यास जी के साथ उनकी छाया के रूप में मैं अपने को सगौरव उपस्थित कर सकूंगा। दो साथियों की वह एक लम्बी यात्रा है। उसकी वह गौरवपूर्ण कहानी होगी।

मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया व्यास जी की उस मौलिक विचारधारा ने, जिससे वह समाज के गले-सड़े समूचे ढांचे को झकझोरकर बिल्कुल नया रूप-रंग दे देना चाहते थे। उनकी मौलिक विचारधारा, उनकी कविताओं, कहानियों और छोटे-बड़े नाटकों तथा प्रहसनों में प्रकट हुई है, उसमें लोकतन्त्री समाजवाद की स्पष्ट छाया दीख पड़ती है, जिसके द्वारा आज कांग्रेस ने समूचे समाज का कायाकल्प करने का सुदृढ़ संकल्प किया है। ऐसे गुरु सदृश महान् व्यक्तित्व के प्रति मेरे शत्-शत् प्रणाम हैं।

६

लोकप्रिय व्यक्तित्व

कृषि मंत्री श्री नाथूराम जी मिरधा, जयपुर (राजस्थान)

लोकनायक श्री जयनारायण व्यास का जीवन ऐसा आदर्शमय रहा कि उसके प्रत्येक पहलू पर वहुत कुछ लिखा जा सकता है। मुझे सवसे अधिक आकर्षित किया उनकी लोकप्रियता ने। वे सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं व सर्वसाधारण में तो लोकप्रिय थे ही; प्रत्युत उनके राजनीतिक प्रतिद्वन्द्वी भी उन्हें आदर की दृष्टि से देखते थे। जो वर्तमान स्थिति है, उसमें यह कुछ कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। यह उनकी सैद्धान्तिक निष्ठा और त्यागमय जीवन का ही परिणाम कहा जा सकता है। उनकी त्याग तपस्या से लोग स्वयंमेव प्रभावित होकर उन्हें श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे। किसी के प्रति आदर की भावना हृदय से उत्पन्न होती है और वह किसी के कहने-सुनने पर आश्रित न होकर आन्तरिक भावना से सम्वन्ध रखती है। उसको कोरे तर्क की कसौटी पर नहीं कसा जा सकता।। उसके पीछे होता है त्यागमय जीवन, जो अपने आप दूसरों के मन में श्रद्धा उत्पन्न कर देता है। यही तथ्य लोकनायक के जीवन पर लागू होता है। इसी से लोग उनकी ओर आकर्षित हुए और उनके पद चिह्नों पर चलने के लिये प्रयत्नशील हुए।

स्वर्गीय व्यास जी वड़े कुशल संगठक थे। उनके आदर्शमय जीवन से मिलकर उनका यह गुण ज्यादा आकर्षित वन गया था। अगर कोई नेता कोरा कुशल संग-ठक ही हो और उसके पास त्याग की पूंजी न हो तो वह भले ही कोई संगठन वना ले पर कार्यकर्त्ताओं को भावनात्मक दृष्टि से एक सूत्र में वांधने में ज़्यादा सफल नहीं हो सकता। कार्यकर्त्ताओं व द्वितीय पंक्ति के नेताओं के सामने वह कोई आदर्श नहीं रख पाता, जिसको कार्यकर्त्ता अपना लक्ष्य मानकर आगे वढ़ सके। विना किसी मूर्तिमान आदर्श के किसी संगठन के कार्यकर्त्ताओं को ज़्यादा दिन एक सूत्र में वांध कर रखा नहीं जा सकता। व्यास जी के इन दोनों गुणों के कारण उनके नेतृत्व में राजस्थान के अनेक देशी राज्यों में राजनीतिक संस्थाओं का न केवल प्रादुर्भाव सम्भव हो सका; अपितु वे स्थायी वन गई। उस समय सामन्ती शासकों के सामने राजनीति की वात करना हँसी खेल न था। उनका सीधा-साधा अर्थ अत्याचार और दमन को निमंत्रण देना था। अंग्रेज़ों के गुलाम वने राजा-महाराजा व नवाव भला देश की स्वतन्त्रता की कल्पना कैसे कर सकते थे। अत: ज्योंही किसी देशी-राज्य में जन-जागरण का कार्य शुरू होता त्योंही वहां का शासन दमन पर उतारू हो जाता। व्यास जी ने ऐसी विषम परिस्थिति में राजनीतिक जागरण का कार्य किया और जनता को अत्याचार तथा दमन के विरुद्ध न केवल खड़े होने की हिम्मत दी; अपितु उसे उन्हें सहन करने योग्य वनाया। उनकी संगठन शक्ति

ने राजस्थान में स्वतन्त्रता संग्राम के राष्ट्रीय यज्ञ की अग्नि को ज्वलित रखा, उसी से प्रेरित हो नये-नये कार्यकर्त्ता आगे आये और अपने समय की पराधीनता के विरुद्ध डटकर लोहा लिया।

जोधपुर राज्य व्यास जी का प्रधान कार्य क्षेत्र रहा। वह राजस्थान का सबसे बड़ा राज्य था। वहां का किसान अन्य देशी राज्यों की तरह जागीरदारों और राजाओं की दोहरी-तिहरी पराधीनता में सिसक रहा था। संगठन की कमी व योग्य नेतृत्व के अभाव में वह बेबस था। वास्तविक अन्नदाता की वह विवशता और उसकी दयनीय स्थिति के अन्त की सम्भावना उस समय दृष्टिगोचर हुई, जब व्यास जी ने किसानों पर होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध आवाज़ बुलन्द की। उनके नेतृत्व में राज्य के किसानों ने करवट ली। उसकी सूखी हड्डियों में दधीचि की हड्डियों की-सी तेजस्विता जाग उठी। जागीरी निरंकुशता को उसने चुनौती दे डाली। वे संगठित होने लगे। उनमें कई अच्छे कार्यकर्त्ता पनपे। इस तरह राज्य में किसान आन्दोलन को शुरू करने और उसको आगे बढ़ाने में व्यास जी से प्रेरणा व नेतृत्व मिला।

व्यास जी के नेतृत्व में दो बातें विशेष महत्त्वपूर्ण हुईं। एक तो राजस्थान के सबसे बड़े राज्य में राजनीतिक चेतना की नींव पड़कर जन-जागृति का श्रीगणेश हुआ और दूसरा उनके त्याग पूत जीवन से आकर्षित होकर कार्यकर्त्ताओं का समूह उनको केन्द्र मानकर उनके चारों तरफ एकत्र हो गया। राजस्थान के राजनीतिक सार्वजनिक जीवन में जितने कार्यकर्त्ता दीख पड़ते हैं, उनमें से अधिकांश ने उसी समय अपना राजनीतिक जीवन प्रारम्भ किया था। यह अलग पहलू है कि बाद में कांग्रेस जनों के आपसी मतभेद ने कार्यकर्त्ताओं के इस विशाल समूह को धीरे-धीरे छिन्न-भिन्न कर दिया और उन्हीं में से काफी विरोधी दलों के कार्यकर्त्ता बन गये।

मैंने भी अपना राजनीतिक जीवन उस समय शुरू किया था, जब जोधपुर में व्यास जी का एकछत्र नेतृत्व चमक रहा था। उनकी सैद्धान्तिक निष्ठा, राजनीतिक ईमानदारी और कार्यकर्त्ताओं के प्रति स्नेहमय व्यवहार ने मुझे भी विशेष प्रभावित किया। मेरे लिये यह बड़े संतोष का विषय है कि मुझे उनके सहकर्मी होने का अवसर मिला। इस राजनीतिक साहचर्य के समय कई बार मतभेद के अवसर भी आये पर उनके प्रति मेरी श्रद्धा में कभी कोई अन्तर नहीं आया। वह श्रद्धा ज्यों की त्यों अप्रभावित और अडिग बनी रही। राजनीतिक मतभेद तो होते ही रहते हैं और किसी भी राजनीतिक दल के लिये यह कोई नई बात नहीं है, अपितु वह उसकी प्रगति का ही चिह्न माना जाता है। पर वही राजनीतिक मतभेद जब मतभेद का स्थान ले लेते हैं तो पारस्परिक सद्भावना नष्ट हो जाती है और वातावरण दूषित बन जाता है। मेरे और व्यास जी के बीच मतभेद ज़रूर रहे, पर

उन्होंने मतभेद का स्थान नहीं लिया। यह मेरे लिये विशेष संतोष का विषय है।

१०

निःस्वार्थ व्यक्तित्व

महाराजा हरिश्चन्द्र जी विद्युत् मंत्री, जयपुर (राजस्थान)

आधुनिक राजस्थान के निर्माता लोकनायक श्री जयनारायण जी व्यास के निकट सम्पर्क में मैं काफी समय बाद आया। परन्तु उनके निःस्वार्थ जीवन की मुझ पर थोड़े ही समय में जो छाप पड़ी, वह सहज में ही अमिट बन गई। छल-कपट और मिथ्या व्यवहार उनको स्पर्श तक न कर सके थे। वह जिस किसी से भी मिलते थे, दिल खोलकर मिलते थे और कभी-कभी तो अपने प्रशासकीय रूप को भी भूल जाते थे। सरलता, सहृदयता और मिलनसारिता उनमें कूट-कूटकर भरी थी। मानवता उनका सर्वोपरि रूप था।

न केवल राजस्थान; अपितु देशव्यापी लम्बे स्वतन्त्रता संघर्ष में उन्होंने जिस असीम साहस का परिचय दिया, उससे वह उसके इतिहास में अपना नाम सदा के लिये अमर कर गये। आधुनिक राजस्थान का तो उनको निर्माता ही कहना चाहिए। देशी राज्यों के भारत में विलीनीकरण की प्रक्रिया को राजस्थान में सफल बनाने में उन्होंने ठोस तथा सक्रिय भूमिका अदा की और जागीरों की पेचीदी समस्या हल करने में बड़ी ही बुद्धिमत्ता तथा दूरदर्शिता का परिचय दिया।

मेरी यह मान्यता है कि उनका जीवन राजस्थान की वर्तमान तथा भावी पीढ़ियों के लिये प्रेरणा-स्रोत अन्तकाल तक बना रहेगा। मेरा यह विश्वास है कि उनकी स्मृति में 'धुन के धनी' नाम से प्रकाशित यह 'श्रद्धांजलि स्मृति ग्रंथ' उनके जीवन आदर्श को जनता के सम्मुख उपस्थित करने में विशेष सहायक सिद्ध होगा। मैं उनके प्रति कृतज्ञभाव से अपना आदर प्रकट करता हूं।

११
निष्ठावान व्यक्तित्व

महरावल श्री लक्ष्मणसिंह जी, नेता-विरोधी दल राजस्थान विधान-सभा, जयपुर

श्री जयनारायण जी व्यास राजस्थान में कांग्रेस के पुराने कर्णधारों में अग्रगण्य थे। उन्होंने राजस्थान में कांग्रेस की उस समय स्थापना की, जब देश का विभाजन तथा भारत की आजादी की कल्पना-मात्र बहुत कम लोग कर सकते थे। वे उदात्त सिद्धान्तवादी और परम निष्ठावान सुप्रसिद्ध कांग्रेस जन थे। कांग्रेस में व्याप्त भ्रष्टाचार को देखकर वे दुःखी थे। उन्होंने भ्रष्टाचार के विरोध में अपनी आवाज़ निर्भीकता से उठाई। वे राजस्थान के सफल मुख्य मंत्री रह चुके थे और अपने निधन के समय वे राज्य सभा के सदस्य थे।

मैं दिवंगत आत्मा की चिर शांति के लिये ईश्वर से प्रार्थना करता हूं।

१२
चहुंमुखी व्यक्तित्व

संसद सदस्य वयोवृद्ध श्री प्रभुदयाल जी हिम्मतसिंहका, कलकत्ता

कलकत्ता के मारवाड़ी समाज में व्यास जी वैसे ही लोकप्रिय थे जैसे कि मारवाड़ अथवा राजस्थान में। यद्यपि उनका कार्य क्षेत्र कलकत्ता नहीं था, फिर भी वहां का मारवाड़ी समाज उनकी गतिविधि से परिचित रहता था और उनके कार्यों में हाथ बंटाने के लिये तत्पर रहता था। मेरा उनका प्रथम परिचय स्वर्गीय भाई बसन्तलाल जी मुरारका के माध्यम से हुआ था। मुरारका जी राजस्थान की समाज सुधार सम्बन्धी प्रवृत्तियों में विशेष रुचि लिया करते थे और व्यास जी सार्वजनिक जीवन का प्रारम्भ समाज-सुधार सम्बन्धी प्रवृत्तियों से ही हुआ था। इसी कारण व्यास जी उनके सम्पर्क में आये और उन्होंने उनका परिचय अपनी मित्र-मण्डली से समाज-सुधारक के रूप में करवाया। कलकत्ता के माहेश्वरी समाज के कोलवार आन्दोलन और अग्रवाल समाज में विधवा-विवाह आंदोलन के कारण विशेष उथल-पुथल पैदा हुई। उन आंदोलनों के साथ व्यास जी का विशेष सम्पर्क रहा और वे विशेष लोकप्रिय हुए। कलकत्ता के नवयुवकों में वे विशेष लोकप्रिय थे।

व्यास जी धीरे-धीरे मेरे बहुत अधिक सम्पर्क में आते गये और उनके साथ घनिष्टता बढ़ती ही गई। अन्तिम दिनों में तो संसद सदस्य होने के नाते साउथ

एवेन्यू में मेरे पड़ोसी ही रहे। जो व्यक्ति जितना अधिक अपने सम्पर्क में रहा हो उसके विषय में जो कुछ भी लिखा जाय वह कम ही लगता है।

व्यास जी उच्चकोटि के लेखक तथा कलाकार थे। रंगमंच पर वे स्वयं भी अभिनय किया करते थे। हर क्षेत्र में उनका उत्साह देखते ही बनता था। जब भी वे कलकत्ता आते थे वहां के जन-जीवन में एक नई उमंग दौड़ जाती थी। लोक-कल्याण के लिये समाज-सेवा ही उनके जीवन का परम अनुष्ठान था। यद्यपि उनका कार्यक्षेत्र मूलरूप में राजस्थान ही था; फिर भी देशवासियों के हृदय में उन्होंने अपना विशिष्ट स्थान बना लिया था, उनकी लोकप्रियता ने भारत स्वतंत्र होने के बाद उनको राजस्थान का मुख्य मंत्री बना दिया था। अपने कार्यालय में उन्होंने अत्यन्त ही परिश्रम और निःस्वार्थ भाव से काम करनेकी चेष्टा की। किंतु उनके रास्ते में अनेक कठिनाइयां आईं और सबसे बड़ी मार्ग की बाधा थी उनकी ईमानदारी। अन्ततः वे मुख्य मंत्री के पद पर कार्य करने में अपने-आपको असमर्थ पाने लगे और वे उस पद से अलग हो गये। उनकी यह महानता ही थी कि उन्होंने पद का लाभ न करके अपने सिद्धांतों को मुख्यता दी।

ऐसी महान् विभूति के आज हमारे बीच से हट जाने के कारण हर क्षेत्र में हमें उनकी कमी अनुभव होती है। उनके छोड़े हुए अधूरे कामों का हम सब पूरा कर सकें यही प्रभु से प्रार्थना है।

१३

निर्माणकारी प्रभावी व्यक्तित्व

विदर्भकेसरी श्री ब्रजलाल जी बियाणी, ५१-५२ जावरा कम्पाउंड, इंदौर (म० प्र०)

भारत के इतिहास में गांधी-युग का अत्यन्त ही महत्त्व का उज्ज्वल स्थान है। इस युग ने देशव्यापी क्रियात्मक शक्ति का निर्माण किया। राष्ट्र प्रेम की प्रभावी लहर देश में बह निकली; जिससे शहर, ग्राम, तहसील हर क्षेत्र प्रभावित हुआ।

इस युग के प्रभाव में आधुनिक भारत के निर्माण में देशव्यापी व्यक्तियों ने योग दिया। सारे देश में प्रभावी व्यक्तियों का निर्माण हुआ। हर प्रदेश में प्रभावी व्यक्ति पैदा हुए। जिन्होंने देश के साथ उस प्रदेश के निर्माण का कार्य किया। समस्त भारत का नव निर्माण हुआ। इस नव निर्माण में स्वर्गीय जयनारायण जी व्यास का अपना व्यक्तितव है और है स्थान। राजस्थान में जिन प्रभावी व्यक्तियों

का निर्माण हुआ उनमें श्रीयुत व्यास जी का प्रथम स्थान है। श्रीयुत व्यास जी राजस्थान की क्रियात्मक शक्ति के आरम्भ के प्रतीक हैं।

◇ ◇ ◇

उनका व्यक्तित्व व्यापक और बहुरंगी था। उनके जीवन में त्याग था, निर्भयता थी, साहित्य था, संगीत था, वक्तृत्व था, बेफिक्री थी, अत्याचार से घृणा थी, साधारण मानव से प्यार था; साथियों के मित्र थे, ऊंच-नीच के भेद-भाव से परे थे और जनता के दिलों को आकर्षित करने का उनमें जादू था। उनका जीवन सतत् संघर्ष था और थी संघर्ष के साथ शान्ति।

जिन-जिन का व्यास जी से सम्पर्क था, उनके लिये व्यास जी स्थायी स्मृति छोड़ गये हैं। मेरा और उनका इतना व्यापक सम्पर्क रहा कि मेरा जीवन उनकी अनेक मधुर स्मृतियों व अनुभूतियों से व्याप्त है। समग्र स्मृतियों की यादगार कठिन कार्य है और विस्तृत भी है। अतः संक्षेप में कुछ का ही उल्लेख कर श्रीयुत व्यास जी के प्रति अपना कर्त्तव्य पालन कर रहा हूं।

◇ ◇ ◇

श्रीयुत व्यास जी का और मेरा प्रथम मिलन १९२० में नागपुर कांग्रेस के समय हुआ। नागपुर में मारवाड़-सेवा-संघ की स्थापना हुई। अध्यक्ष के नाते कार्य मेरी ओर रहा। मारवाड़-सेवा-संघ की ओर से कांग्रेस में आने वाले राजस्थानियों के निवास का प्रबन्ध किया गया। इस प्रबन्ध में समस्त भारत से करीब १५०० राजस्थानी आये, जिन्होंने इस प्रबन्ध का लाभ उठाया। श्री जयनारायण जी व्यास भी आये, मारवाड़-सेवा-संघ की व्यवस्था में ठहरे। उस समय मैं अनेक व्यक्तियों के सम्पर्क में आया, उनमें से एक व्यक्तित्व श्रीयुत व्यास जी का है, जिसका स्थायी प्रभाव मुझ पर हुआ। उसी अवसर पर उनका मेरा ममत्व पैदा हुआ और उनके वहां के उस समय के कार्य का मुझ पर प्रभाव पड़ा। सारे कैम्पों में वे जाते, सबसे मिलते और सत्याग्रह के प्रतिकूल जो थोड़ा-बहुत वातावरण था, उसे दूर करने का प्रयत्न करते। यह आरम्भिक सम्पर्क जीवन का स्थायी सम्पर्क बन गया।

◇ ◇ ◇

नागपुर कांग्रेस के पश्चात् सारे देश में एक नई शक्ति का संचार हुआ। क्या ब्रिटिश राज्य में और क्या रियासतों में स्वतन्त्रता की भावना सर्वव्यापी बनने लगी। भारत के अंग्रेज़ी विभाग में इस आन्दोलन ने एक प्रकार का रूप लिया तो रियासतों में उसी प्रक्रिया का दूसरा रूप उनके अपने विभिन्न संगठनों में निर्मित हुआ। प्रजामण्डल बने। राजस्थान के प्रजामण्डल का निर्माण हुआ और व्यास जी का कार्य राजस्थान और देशी राज्यों के व्यापक क्षेत्र में प्रभावी बनता गया। उनके इसी कार्य के भ्रमण के सिलसिले में देशी राज्य प्रजा मण्डलों के आर्थिक कार्य-संचालन के लिये राज्यों के बाहर के व्यक्तियों से सम्पर्क और सहायता आवश्यक

थी। राजस्थान का सारे देश में विपुल सम्पर्क था और है। इसी सिलसिले में बम्बई से होते हुए व्यास जी अकोला भी आये। मेरे पास ठहरे। मेरे सारे कुटुम्बियों से उनका निकटता का सम्पर्क पैदा हुआ और दो या तीन दिन उनके निवास में जो हँसने का, खेलने का, गाने का उनका जीवन मैंने देखा, तब नेतृत्व की और त्याग की शक्ति के साथ उनके जीवन में कलात्मक और ममत्व की गहरी भावना का भी मैं अवलोकन कर सका। मेरा उनका सम्बन्ध दृढ़ होता गया और वह मैत्री में परिणत होने लगा। कांग्रेस के कार्य के सिलसिले में अनेक बार अनेक स्थानों में और वर्धा में भी उनसे मिलने का मौका आया। हम एक-दूसरे के निकट आते गये।

◇ ◇ ◇

राजस्थान में जो जन-आन्दोलन आरम्भ हुआ और प्रगति करता गया, उसका केन्द्रीय स्थान व्यास जी थे। वे राजस्थान की चेतना थे। १९३९ में इधर व्यक्तिगत सत्याग्रह आरम्भ हुआ, उधर जोधपुर में प्रजामण्डल में और राज्यसत्ता में संघर्ष आरम्भ हो गया। देश का सारा राजकीय और संघर्षमय वातावरण गांधी जी की प्रेरणा और मार्गदर्शन में चलता था। सारे देश की क्रियात्मक शक्ति की नाड़ी पर उनका हाथ था और सारी घटनाओं का संकेत और सन्देश उनके पास पहुंचता था। जोधपुर में १९४२ में आरम्भ हुए संघर्ष की सूचना बापू को मिली। राजस्थान के बाहर का कोई व्यक्ति इस संघर्ष में मध्यस्थता करे, यह आवश्यकता वहां के कार्यकर्त्ताओं को महसूस हुई। व्यास जी जेल में थे, उनसे सलाह-मशबिरा हुआ। मैं राजस्थान का निवासी, राजस्थान से मेरा सम्बन्ध, राजस्थान के कार्यकर्त्ताओं से भी मेरा सम्पर्क, इस नाते इस कार्य के लिये मेरा उन्हें स्मरण आया। मध्यस्थता के लिये मेरी सूचना बापू के पास की गई। मुझे बापू ने बुलाया और जोधपुर जानेके विषय में उनकी आज्ञा हुई। मैंने उसे स्वीकार किया। जाने का कार्यक्रम बना। वहां के कार्य के विषय में उनका मार्गदर्शन मैंने लिया और जोधपुर जाने की तैयारी से वापस अकोला गया। बापू के निर्णय में बदल हुआ। मुझे तार या टेलीफोन मिला। वापस वर्धा बुलाया। मैं गया। बापू की आज्ञा हुई कि मुझे जोधपुर न जाकर विधान सभाओं में और संसद में कार्य करने वाले सदस्यों का प्रतिनिधि, इस नाते मैं व्यक्तिगत सत्याग्रह करूं।

मैं उस समय काउंसिल आफ स्टेट का सदस्य था। बापू की इस नई आज्ञा का पालन हुआ। मैंने सत्याग्रह किया। जेल गया और जोधपुर की मध्यस्थता का काम करने के लिये, जहां तक मुझे स्मरण है, श्रीयुत श्रीप्रकाश जी गये। इसके पश्चात् बम्बई के १९४२ के आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन में व्यास जी मिले, तब उन्होंने सारी घटना की मुझसे चर्चा की और मैं जोधपुर आऊं, उनकी तथा अन्य कार्यकर्त्ताओं की हार्दिक इच्छा की जानकारी मुझे दी। उनका ममत्व

दिन-दिन बढ़ता ही गया। साथ में मेरा भी।

◇ ◇ ◇

स्वराज्य की प्राप्ति हुई। देश का वातावरण बदला। रियासतें समाप्त हुई और सारे भारतवर्ष में नई राज्य व्यवस्था बनी। इस व्यवस्था में राजस्थान प्रदेश का मुख्यमन्त्रित्व व्यास जी की ओर आने की आशा थी और था उनका अधिकार भी। पर वैसा न होकर मुख्यमंत्रित्व श्रीयुत हीरालाल जी शास्त्री की ओर गया। व्यास जी प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष थे। नई व्यवस्था को लेकर प्रदेश में मत भिन्नता हुई। व्यास जी और उनके साथी और कांग्रेस का बड़ा दल इस व्यवस्था से प्रसन्न नहीं हुआ। शासन और संगठन में बाह्य और अन्तस्थ संघर्ष पैदा हुआ। मेरा श्रीयुत हीरालाल जी शास्त्री से भी निकट का सम्बन्ध था। परन्तु राजस्थान की उस समय की परिस्थिति को देखते हुए मेरी यह राय रही कि व्यास जी के साथ न्याय नहीं हुआ है। प्रदेश कांग्रेस कमेटी की मांग उचित है। इस संघर्ष में मैंने व्यास जी को अपना सहयोग दिया। राजस्थान के कार्यकर्त्ताओं से मेरा सम्बन्ध था ही। व्यास जी ने राजस्थान के मेरे भ्रमण की व्यापक योजना बनाई। मैं उनके साथ राजस्थान के भ्रमण के लिये गया और मेरी शक्ति के अनुसार व्यास जी के अनुकूल वातावरण निर्माण करने का कार्य कार्यकर्त्ताओं के बीच और आम सभाओं में मैंने किया। मेरा यह भ्रमण व्यास जी की दृष्टि से और कार्यकर्त्ताओं की दृष्टि से काफी लाभदायक हुआ, यह उनकी मान्यता है। अपने मित्र के प्रति और संगठन के प्रति मैंने अपना कर्त्तव्य पालन किया, इससे मुझे भी सन्तोष हुआ।

◇ ◇ ◇

व्यास जी के जीवन में स्वराज्य के पश्चात् अनेक परिवर्तन हुए। उथल-पुथल हुए। परिस्थिति बदली। वे राजस्थान के मुख्यमंत्री बने। फिर परिस्थिति बदली। व्यास जी से कुछ अंश में हाईकमांड के प्रधान व्यक्तियों की कुछ नाराज़ी तो थी ही, किसी एक मामूली प्रश्न को लेकर शासन की ओर से उन पर केस चलाया गया। राजस्थान के जन-जीवन में इस घटना ने कुछ आश्चर्यजनक तहलका पैदा किया। सम्भवत: यह मंशा थी कि व्यास जी के राजकीय जीवन को सदा के लिये समाप्त किया जाय। व्यास जी का अपनी सचाई पर अटल विश्वास था। उनके दिल पर ज़रा भी असर मैंने नहीं देखा अपने मुकदमे का निर्भयता के साथ वे बचाव करते रहे। अपना सार्वजनिक कार्य भी वे करते रहे। किसी भी परिस्थिति में हतोत्साह नहीं होना, यही उनकी मानसिक वृत्ति मैं निकट से देख सका। उनका स्मित और हास्य वैसा ही बना रहा, जैसा मुकदमे के पूर्व था। मुकदमा चलता रहा। निर्णय लम्बा होता गया।

◇ ◇ ◇

फिर परिस्थिति बदली। व्यास जी को मुख्यमंत्री बनाना आवश्यक हुआ।

शासन में ऐसे उदाहरण देखे गये हैं कि जब किसी दोषी व्यक्ति को अदालत में पेश करने के पश्चात् भी न्याय का निर्णय होने के पूर्व यदि शासन को उसकी सेवाओं की आवश्यकता हुई तो उस पर का मुकदमा उठा लिया गया और उससे कार्य करवाया गया। न्याय शक्ति की अपेक्षा शासन शक्ति श्रेष्ठ है, इस मान्यता के ये कुछ उदाहरण हैं।

व्यास जी के प्रतिकूल मुकदमा चला। उठाया गया। व्यास जी निर्दोष हुए और राज्य का शासन उन्होंने अपने हाथों में लिया। शासन का कार्य उन्होंने अत्यन्त दृढ़ता के साथ किया। खूब मेहनत के साथ किया। राजस्थान में नवजागृति निर्माण करने का यथाशक्य कार्य किया। व्यास जी की प्रतिष्ठा राजस्थान में और बाहर पुनरपि प्रभावी हुई।

◇ ◇ ◇

चुनाव आये। चुनाव में श्रीयुत व्यास जी निर्वाचन के लिये खड़े हुए। संघर्षमय चुनाव था। प्रतिस्पर्धी के रूप में प्रभावी शक्ति सम्पन्न व्यक्ति था। व्यास जी पराजित हुए। उनका मंत्रित्व काल एक बार समाप्त हुआ।

कुछ समय के पश्चात् किशनगढ़ मतदान संघ का उप-निर्वाचन आया। उस में व्यास जी उम्मीदवार खड़े हुए। संघर्षमय चुनाव हुआ। इस समय मैं मध्यप्रदेश के मंत्रिमंडल में था। व्यास जी के चुनाव में आने का अत्यन्त आग्रह हुआ; व्यास जी का स्वयं का, उनके साथियों का और मेरे अन्य परिचितों का। मैंने समय निकाला। किशनगढ़ चुनाव के लिये गया। तीन-चार दिन सम्पूर्ण मतदान संघ में मैंने भ्रमण किया। मुझसे जो हो सकता था, वह प्रचार कार्य मैंने किया। उस भ्रमण में व्यास जी के प्रति जनता में कितनी ममत्व की भावना थी, इसका मैं अवलोकन अति निकट से कर सका। व्यास जी विजयी हुए। इस विजय में मित्र इस नाते मैंने भी स्वल्प हिस्सा लिया। चुनाव की सफलता से चारों ओर प्रसन्नता हुई।

◇ ◇ ◇

परिस्थिति बदली। व्यास जी के अभाव में जो मुख्यमंत्री थे, उन्हें हटना पड़ा। कुछ मनोमालिन्य हुआ, पर अन्त में फिर से व्यास जी मुख्यमंत्रित्व के पद पर आये। उनका कार्य चला। फिर परिवर्तन हुआ। व्यास जी सत्ता से हटे और अन्य व्यक्ति राजस्थान के मुख्यमंत्री बने।

◇ ◇ ◇

मुझसे सम्बन्धित इन राजकीय घटनाओं के स्मरण के पश्चात् कुछ व्यक्तिगत घटनाएं भी मेरी स्मृति से अलिप्त नहीं हो सकतीं। जब वे राजस्थान के मुख्यमंत्री नहीं थे, तब संविधान परिषद् के सदस्य थे। मैं भी संविधान परिषद् का सदस्य था। उनका मेरा सम्बन्ध था ही। खूब आना-जाना था। हास्य विनोद था। कई

वार साथ भोजन के कर्यक्रम भी होते। एक दिन की घटना है जिस दिन श्रीयुत व्यास जी और श्रीयुत हीरालाल जी शास्त्री दोनों ही मेरे यहां भोजन के लिये पधारे। और कुछ साथी भी थे। भोजन आरम्भ हुआ। साधारण भोजन समाप्त होने को आया। आपस में खाने की होड़ आरम्भ हुई। व्यास जी, हीरालाल जी और मेरे एक अन्य साथी इस होड़ में सम्मिलित हुए। हम अन्य साथी टेवल पर उनकी भोजन शक्ति का दर्शन करने बैठे रहे। भोजन की महत्त्व की चीजें समाप्त हो गईं। मेरे दिल पर ज़रा विचार पैदा हुआ, पर प्रतिस्पर्धियों के दिल पर ज़रा भी असर नहीं हुआ। उन्होंने हँसते हुए कहा, फुलका और साग तो है, वही आने दो। यह कार्य आरम्भ हुआ। फुलके खतम हुए, जो आटा था वह खतम हुआ। मेरा रसोइया कुछ होशियार था। वह वहुत शीघ्रता के साथ नया आटा तैयार करता गया और परोसगारी चलती गई। फिर आटा समाप्त हुआ। फिर रसोइये ने वही कार्य किया। हमारा आश्चर्य बढ़ता गया। एक मित्र इस स्पर्धा में से हटे, वे टिक न सके। व्यास जी का और हीरालाल जी का संघर्ष चलता रहा। फुलके समाप्त होते गये। आटा तैयार होता गया और उनकी होड़ चलती गई। दोनों में से कौन हारे यह प्रश्न गम्भीर होता गया। दोनों ही शरीर में सम समान थे। अन्त में उनकी वह होड़ घुड़दौड़ बन गई। मुझसे रहा नहीं गया। मैंने सोचा इन दोनों मित्रों ने कुछ भांग तो नहीं पीली है और वे नशे में तो यह सब नहीं कर रहे ! मुझे भय हुआ कि उनकी प्रकृति इसके पश्चात् कुछ खराब हो जायेगी। अतः मैंने घोषणा की कि हमारे यहां का आटा समाप्त हो गया। आप दोनों की मैंच ड्रा हो गई। अव इच्छा यही है कि आप दोनों की तबीयत खराब न हो। व्यास जी और हीरालाल जी खूब हँसते-हँसते उठे और हम सबको यह प्रतीत हुआ कि उस महान् विराट् भोजन का उनके शरीर पर कोई असर नहीं था। इसके वाद जब-जब व्यास जी मिल जाते और कहीं खाने का काम पड़ता, तो मैं इस घटना का उल्लेख किया करता था। जब कभी दिल्ली या कांग्रेस में तीनों के एकत्र होने का अवसर मिला तो हम तीनों को इस भोजन प्रतिस्पर्धा का स्मरण आये विना नहीं रहा।

◇ ◇ ◇

मैं अपनी प्रादेशिक राजनीति में विशेष संलग्न हो गया। व्यासजी राजस्थान की सत्ता का क्षेत्र छोड़ संसद् में आ गये और उनका भावी जीवन उसी क्षेत्र में सेवा करने में गुज़रा। मेरा उनका सम्पर्क कम हुआ। पर कांग्रेस के अधिवेशनों में मिलने का अवसर आ जाता। जयपुर कांग्रेस में व्यासजी ने जो कार्य किया था, उसका भी स्मरण आ जाता है। राजकीय परिस्थिति की चर्चा भी हो जाती है और राजस्थान की सारी परिस्थिति से वे कितने असन्तुष्ट थे, इसकी चर्चा भी वे करते। इस असन्तोष को ध्वनित करने के लिये उन्होंने एक समाचार-पत्र भी निकाला। उसके

प्रकाशन के पश्चात् उनसे मिलने का अवसर आया, तब पत्र की नीति और कार्य के विषय में अपनी राय भी मैंने उनसे कही और कुछ अंश में अपनी असहमति भी प्रकट की। उसका कारण भी मैंने निवेदन किया, पर वे अपने कार्य में जुटे रहे।

◇ ◇ ◇

व्यास जी का और मेरा अंतिम मिलन कलकत्ता में १९६० में अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के रजत जयन्ती समारोह पर हुआ। मैं भी कलकत्ता गया था। वे भी कलकत्ता आये थे। कलकत्ता के राजस्थानी मित्रों द्वारा एक क्लब में हमारा और अन्य साथियों का स्वागत हुआ। अंतिम बार उनके विचारों को उस समारोह में मैंने सुना। कुछ चर्चा भी उनसे हुई। फिर कभी मिलने की आशा से हम अलग हुए।

◇ ◇ ◇

फिर मिलना न हुआ। इस प्रकार जीवन के विविध क्षेत्रों में, विविध कार्यों को करते हुए व्यासजी के प्रभावी और क्रियात्मक जीवन का अन्त हुआ। एक दिन समाचार-पत्र में व्यासजी के निधन की बात पढ़ी। धक्का लगा। चालीस वर्षों की पुरानी स्मृतियां सम्मुख आईं। व्यासजी चले गये। अपने कार्यों को छोड़ गये। यही उनके जीवन की महानता है। उनके स्मृति-ग्रन्थ में मेरी भी श्रद्धांजलि अर्पित हो। साथी की मृत्यु के पश्चात् जीवित साथी यही कर सकते हैं।

१४

लोकसेवा के प्रतीक

आचार्य श्री चैनसुखदास जी, न्यायतीर्थ दिगम्बर जैन संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

मैं लोकनायक श्री जयनारायण जी व्यास के सम्पर्क में जहां तक मुझे याद है, दस-बारह बार से अधिक नहीं आया हूं। एक बार मैं लगातार दो दिन उनके साथ रहा। लोकसभा के चुनाव में उन्हीं के आग्रह से एक कांग्रेसी प्रत्याशी का समर्थन करने के लिये मुझे भी जाना पड़ा। हम लोग बरसते हुए पानी में जयपुर से निकले। जीप में सवार होते ही उन्होंने मुझसे कुछ प्रश्न किये। उनमें एक यह था कि हमारे देश के अनेक मंदिरों में पाषाणों की उत्कीर्ण अश्लील मूर्तियां क्यों हैं। मैंने इसका उत्तर दिया और एक लम्बे समय तक चर्चा चलती रही। उनकी जिज्ञासा से मुझे पता चला कि वे किसी भी विषय में बहुत गहरे घुसते थे।

मेरी जन्मभूमि 'भादवा' ग्राम पहुंचते-पहुंचते हमें काफी रात हो गई। मेंह त

बरस ही रहा था। रास्ते में कई बार जीप रुकी। एक बार तो उसे आगे बढ़ाने के लिये पास की ढाणी के किसानों को फावड़ा लेकर बुलाना पड़ा। मैंने कहा यह तो बड़ी परेशानी है आप अच्छे शकुन से नहीं निकले। उत्तर में उस समय व्यास जी ने जो शब्द कहे वे मुझे आज भी याद हैं। संसार का अर्थ ही खुशी में रंज और रंज में खुशी है। इसमें परेशानी की क्या बात है। उनकी बातों से मैंने यह अनुभव किया कि वे विपत्तियों के बहुत अभ्यस्त थे और उन्हें वे जीतने की आवश्यक घटना समझते थे।

दूसरे आम चुनाव में अपने शिष्यों के अनुरोध से मुझे लोकसभा के लिये चुनाव-पत्र भरना पड़ा। कांग्रेस की ओर से इसी सीट के लिये श्री सादिक़अली ने भी फार्म भरा था और भी अनेक प्रत्याशी थे, पर औरों का उतना भय न था। श्री हरिश्चन्द्र जी शर्मा जो उस चुनाव में विजयी हुए थे; के पिता मेरे पास आये। उन्होंने कहा कि अगर आप चुनाव लड़ें तो मेरा पुत्र बैठ जायगा अन्यथा वह चुनाव अवश्य लड़ेगा और सादिक़अली को न जीतने देगा। मैंने कहा सोचूंगा।

इसके बाद मुझे समझाने के लिये श्री सादिक़अली भी आये कि मैं बैठ जाऊं। अन्त में श्री जयनारायण व्यास और राजस्थान के भूतपूर्व गृहमंत्री श्री रामकिशोर व्यास आये। लोकनायक व्यास जी के प्रभाव के कारण मुझे चुनाव से हटना पड़ा। उस समय चुनाव जीतने के लिये परिस्थितियां मेरे बहुत अनुकूल थीं, पर व्यासजी का अनुरोध मैं नहीं टाल सका।

व्यास जी में अनेक विशेषताएं थीं। वे अपनी गलती को तत्काल स्वीकार कर लेते थे। यह गुण वास्तव में बहुत दुर्लभ है। अनेक बार हमारे सांस्कृतिक आयोजनों में अध्यक्ष बनकर या उद्‌घाटनकर्त्ता की हैसियत से आये। एक बार वे क्षमापन पर्व के उपलक्ष्य में अध्यक्ष बनकर आये; पर उन्हें बहुत विलम्ब हो गया। आते ही उन्होंने अत्यन्त विनम्र भाव से उसके लिये क्षमा मांगी। ऐसी गलती उनसे फिर कभी नहीं हुई। वे आते ही मुझे कहते कि आज तो मैं ठीक समय पर आ गया हूं न।

व्यास जी की प्रकृति में जो सरलता और शुचिता थी, वह हरएक के लिये अनुकरणीय है। वस्तुत: वे राजनीतिज्ञ नहीं, प्रत्युत लोक सेवक थे। वे अपार कष्ट सहिष्णु थे। जीवन भर के कष्टों से संघर्ष करते रहे और उन्होंने विपत्तियों से कभी हार नहीं मानी। व्यास जी देश के सच्चे सेवक थे। स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ने वाले राजस्थान के योद्धाओं में सदा ही उनका नाम सर्वप्रथम लिया जायगा। इसमें कोई शक नहीं कि वे सच्चे अर्थों में राजस्थान के लोकनायक थे। उन्हें श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता है।

१५

अनूठा व्यक्तित्व और लोकसेवा

केन्द्रीय शिक्षा उपमंत्री, श्री भक्त दर्शन, १० हेस्टिंग्स् रोड, नई दिल्ली

लोकनायक श्री जयनारायण व्यास का स्मरण करते ही एक कर्मनिष्ठ सेवा-व्रती, हँसमुख, विनोदप्रिय संगठनकर्त्ता का चित्र उपस्थित हो जाता है। मैंने दूर से उनकी प्रशंसा ही सुनी थी। उनसे मिलने का सौभाग्य श्री सुमन की अनुपम शहादत ने प्रदान कर दिया।

२५ जुलाई, १९४४ को टिहरी की नारकीय जेल में बहुत ही दर्दनाक परिस्थितियों में अमर शहीद श्री सुमन जी का बलिदान हुआ था और उसके कारण सारे देश में रोष तथा असंतोष की लहर फैल गई थी। मैं भी उन युवकों में से एक था जो उनके अनुपम बलिदान से बहुत ही प्रभावित हुआ था। लेकिन उन्हें कोई मार्ग सूझ नहीं पड़ता था। उन्हीं दिनों व्यास जी ने जिस साहस के साथ उस मामले में कदम बढ़ाया और उस घटना की छानबीन की, उससे मैं अत्यधिक प्रभावित हुआ। जून, १९४५ में मुझे उसी मामले में पहली बार ऋषिकेश में उनसे मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ और उसी प्रथम मिलन से मेरे हृदय में यह भावना अंकित हो गई कि उनके लिये 'लोकनायक' की जो उपाधि प्रयुक्त की जा रही है, वह सर्वथा उपयुक्त है।

◇ ◇ ◇

मैंने तब देखा कि उनमें कितना धीरज और आत्मविश्वास था। टिहरी राज्य की सभा के अन्दर वे प्रविष्ट हो नहीं सकते थे और स्वर्गीय सुमन जी के परिवार की सहायता करना तथा उनके मामले की जांच कराना वे अपना परम कर्त्तव्य समझते थे। इसीलिए उन दिनों टिहरी राज्य के अधिकारियों से जो पत्र-व्यवहार किया और टेलीफोन पर बातें कीं, उसके कारण मुझे यह अनुभव हुआ कि वे जटिल परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल करने में कैसे सिद्धहस्त थे। यह उन्हीं के व्यक्तित्व और बुद्धिमत्तापूर्ण अध्यवसाय का परिणाम था कि टिहरी सरकार को झुकना पड़ा और जांच का उपक्रम करना पड़ा। यद्यपि वह एक लीपापोती मात्र थी। फिर भी यह व्यास जी का ही साहस था कि शहीद सुमन जी का मामला सारे देश के रंगमंच पर पूरी तरह से प्रकट हुआ तथा व्यापक रूप में प्रकाश में आया। साथ ही सुमन जी के परिवार को भी तत्काल तथा आगे बहुत देर तक सहायता मिलती रही और वे उनके बहुत अनुगृहीत हैं।

सुमन जी की स्मृति

उस प्रथम परिचय के बाद उनके निरभिमान स्वभाव से आकर्षित हो तथा उत्साही युवकों को आगे बढ़ाने की उनके अन्दर जो अद्भुत प्रेरक शक्ति थी, उससे

प्रभावित हो मैंने शहीद सुमन जी की स्मृति में एक ग्रंथ प्रकाशित करने का संकल्प किया। उस कार्य में मुझे उनसे जो सत्परामर्श व सहयोग प्राप्त हुआ, उसका उल्लेख यहां क्या किया जाय। उन्होंने उनके सम्बन्ध में जितनी भी जानकारी थी तथा जो भी उनके पास कागज-पत्र अथवा अन्य सामग्री थी, वह सब मेरे सुपुर्द कर दी और साथ ही देश-भर के चोटी के नेताओं से संदेश तथा संस्मरण दिलाने में भी मेरी सहायता की। उन्हीं के निमंत्रण पर मुझे नवम्बर १९४५ में अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा-परिषद् के उदयपुर अधिवेशन में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। वह अधिवेशन 'भारत छोड़ो आंदोलन' के दमनकारी युग के बाद उसका पहला अधिवेशन था और उसका सभापतित्व हमारे देश के वरेण्य नेता स्वर्गीय श्री नेहरू जी कर रहे थे। वहां मुझे स्वर्गीय व्यास जी की संगठन शक्ति की झांकी देखने का अच्छा अवसर मिला था और साथ ही श्री नेहरू जी से लेकर शेख अब्दुल्ला, श्री बलवन्त मेहता, श्री हीरालाल शास्त्री, श्री कन्हैयालाल वैद्य आदि अनेक नेताओं से सम्पर्क स्थापित करने में भी सफलता मिली। उन्हीं के संदेशों तथा संस्मरणों के कारण मेरे द्वारा प्रकाशित 'सुमन स्मृति ग्रंथ' एक संग्रहणीय वस्तु बन सकी और अपने संकल्प को पूरा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

शहीद सुमन जी की मूर्ति स्थापना

जुलाई, १९४७ में बड़ी कठिनाई के बाद मैं उस स्मृति ग्रंथ को प्रकाशित कर पाया था। फिर व्यास जी के साथ मेरा सम्पर्क कुछ कम हो गया। जहां वे देशी राज्यों की अखिल भारतीय गतिविधि में आकण्ठ निमग्न हो गये थे, वहां मैं भी अपने क्षेत्र के सार्वजनिक जीवन में मुख्यतः संलग्न रहा। लेकिन सन् १९५२ में जब मुझे प्रथम बार लोक-सभा के सदस्य की हैसियत से दिल्ली आने का अवसर मिला, तब फिर उस पुराने सम्पर्क में वृद्धि होती चली गई। विशेषकर राजस्थान के राजनीतिक उलट-पुलट के फलस्वरूप व्यास जी को राज्यसभा की सदस्यता प्राप्त हुई। तब तो मुझे उनके साथ अपने पुराने परिचय को और भी घनिष्ट बनाने का अनुकूल अवसर प्राप्त हुआ। उन दिनों मेरी तथा अनेक मित्रों की आकांक्षा थी कि 'सुमनस्मृति ग्रंथ' की बिक्री से जो धन प्राप्त हुआ है, उसकी सहायता से उनकी एक प्रस्तर मूर्ति टिहरी के उस नगर में स्थापित की जाय, जहां उन्होंने शहादत प्राप्त की थी। उस मूर्ति का निर्माण कराने में व्यास जी ने मेरी बड़ी सहायता की। मुझे कितनी ही बार जयपुर जाना पड़ा और हर बार उनके ही सहयोग से मैं वहां कुछ कार्य कर पाया।

अन्त में जब वह मूर्ति तैयार हो गई, तब मेरी तीव्र आकांक्षा थी और स्वयं व्यास जी की भी यह इच्छा थी कि नेहरू जी के कर-कमलों से उस मूर्ति का अनावरण कराया जाय। हम दोनों ने इसके लिये सम्मिलित उद्योग किया और आदरणीय नेहरू जी ने इसे स्वीकार भी कर लिया था। लेकिन धीरे-धीरे परिस्थितियां ऐसी

होती चली गईं कि उन्हें अवकाश नहीं मिल पाया। तब हमको माननीय श्री लालबहादुर शास्त्री जी से प्रार्थना करनी पड़ी। उन्होंने बड़ी उदारता और सहानुभूति के साथ हम लोगों के अनुरोध को स्वीकार किया। फलस्वरूप सन् १९५८ की गर्मियों में शास्त्री जी ने टिहरी जाने की की कृपा और उस मूर्ति का अनावरण संस्कार सम्पन्न किया। उस अवसर पर व्यास जी स्वयं उपस्थित हुए। उन्होंने उस विशाल समारोह के समक्ष जिस गहरी सद्भावना से सुमन जी की स्मृति में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा टिहरी की जनता की सहानुभूति में जिन शब्दों का प्रयोग किया, वे आज भी मेरे कानों में गूंज रहे हैं।

उन्होंने उस दिन कहा था कि "सुमन जी की मूर्ति के अनावरण से उनके जीवन का एक महान् संकल्प पूरा हो रहा है और उन्हें यह पूरा विश्वास है कि सुमन जी के बलिदान से टिहरी की स्वाधीनता की जो नींव रखी गई है, वह सदैव अक्षुण्ण रहेगी। उनकी स्मृति से प्रेरणा पाकर टिहरी गढ़वाल की जनता अपने कर्त्तव्य के पालन में उत्साहपूर्वक अग्रसर होती रहेगी।

राजभाषा आयोग की सदस्यता

यहां राज्य सभा की सदस्यता के कार्यकाल में मुझे दो विशेष मामलों में उनके और भी निकट आने का अवसर प्राप्त हुआ था। पहला अवसर तब मिला था, जब कि उन्होंने स्वर्गीय श्री बाला जी खेर की अध्यक्षता में नियुक्त राजभाषा आयोग के एक सदस्य के रूप में कार्य किया था। व्यास जी को यह मालूम था कि मैं संसद में प्रारम्भ से ही हिन्दी का एक विनम्र सेवक रहा हूं। वे उस आयोग की सदस्यता के कार्यकाल में समय-समय पर मुझसे विचार-विनिमय करते रहते थे। इसमें संदेह नहीं कि उन्होंने उस आयोग के काम में बड़ी लगन व अनुभूति से भाग लिया था। उसके प्रतिवेदन में जो सिफारिशें की गई हैं, उनका अन्तिम स्वरूप दिलाने में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान था। कुछ समय बाद जब उस आयोग की रिपोर्ट पर विचार करने के लिये संसद के दोनों सदनों की एक समिति नियुक्त की गई, तब उसका एक सदस्य मनोनीति होने का मुझे सुअवसर प्राप्त हुआ था। तब व्यास जी को बड़ी प्रसन्नता हुई थी। उन्होंने उन दिनों भी हिन्दी के उत्थान तथा विकास के बारे में मुझसे कई बार चर्चा की थी।

संसदीय लोक लेखा समिति में

उनसे मेरा अन्तिम सम्पर्क संसदीय लोक लेखा समिति (पब्लिक अकाउण्ट्स कमेटी) की सदस्यता के रूप में हुआ था। यह समिति संसद की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण समिति मानी जाती है। प्रतिवर्ष केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक विभाग के बारे में कन्ट्रोलर तथा औडीटर जनरल महोदय जो छानबीन करते हैं, उसकी रिपोर्ट इस समिति के समक्ष प्रस्तुत होती है। फिर यह समिति विभिन्न मंत्रालयों के अधिकारियों को बुलाकर उनसे जिरह करती है तथा उनके मामलों की गहराई

के अधिकारी अगर किसी समिति से भयभीत होते हैं तो इस समिति से। इसी विवरण से इस समिति का महत्त्व स्पष्ट हो जाता है। व्यास जी सन् १६६१ में राज्यसभा की ओर से उस समिति के सदस्य नियुक्त किये गये थे और मैं सन् १६६२ में लोकसभा की ओर से मनोनीति किया गया था। इस प्रकार लोक लेखा समिति के कार्य में उन्हें मुझसे एक वर्ष का अधिक अनुभव था। वर्तमान पुनर्वास मंत्री श्री महावीरत्यागी तब उस समिति के अध्यक्ष थे। उनके अनोखे व्यक्तित्व के कारण उस समिति को संविधान में दिये गये महत्त्व से भी अधिक प्रभाव प्राप्त हो गया था।

उस समिति के एक अनुभवी तथा प्रतिभाशाली सदस्य के रूप में व्यास जी ने बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। वे प्रत्येक मामले के बारे में बहुत ही बारीकी से प्रश्न पूछा करते थे। विशेषकर जहां कहीं उन्हें भ्रष्टाचार की गन्ध नज़र आती थी, वहां वे बड़ी गहराई से उसके पीछे पड़ जाते थे। समिति की ओर से जो उप समितियां नियुक्त की गई थीं, उनमें से एक महत्त्वपूर्ण उप-समिति का संयोजक उन्हें नियुक्त किया गया था और उस हैसियत से भी उन्होंने बड़ी लगन और गम्भीरता से अपने कर्त्तव्य का पालन किया था।

सन् १६६२ के अक्तूबर मास में लोक लेखा समिति का एक अध्ययन दल विभिन्न संस्थाओं का निरीक्षण करने के लिये दिल्ली से रवाना हुआ। व्यास जी उसके संयोजक व नेता थे। मैं उसका साधारण सदस्य था। उन लगभग आठ-दस दिनों के भ्रमण के दौरान में मुझे सबसे पहली बार और सबसे अन्तिम बार उनके बहुत ही निकट में आने का अवसार प्राप्त हुआ था। मैंने यह अनुभव किया कि वे यद्यपि वयोवृद्ध थे और अनेक महत्त्वपूर्ण पदों पर आसीन रह चुके थे, तथापि उनका विनोदप्रिय स्वभाव सदैव नवयुवकों को आकर्षित करता रहता था। इसीलिए मुझ सरीखे नाचीज व्यक्ति से वे कदम-कदम पर परामर्श कर लेते थे। सारी यात्रा में हम लोगों के समक्ष एक भी क्षण ऐसा नहीं आया जब कि वे व्यग्र व उत्तेजित हुए हों। कहीं पर यदि परिस्थिति जटिल भी हो गई अथवा किसी संस्था के अधिकारी ने यदि सहयोगपूर्ण रुख नहीं अपनाया, तब भी वे विचलित नहीं हुए और उन्होंने बड़े धैर्य व संयम से उस दल का नेतृत्व किया था। उस दौरे की जो रिपोर्ट उन्होंने लोक लेखा समिति के कार्यालय को प्रस्तुत की थी, वह भी एक संग्रहणीय वस्तु है। उस वर्ष की जो वार्षिक रिपोर्ट तैयार की गई थी, उसमें भी उनकी अनेक सिफा-रिशों का समावेश किया गया था।

विशिष्ट व्यक्तित्व

व्यास जी ने यद्यपि एक देशी रजवाड़े में अपने सार्वजनिक जीवन का प्रारम्भ किया था, तथापि अपनी प्रतिभा और अध्यवसाय के द्वारा उन्होंने अखिल भारतीय क्षेत्र में भी अपना विशिष्ट स्थान बना लिया था। देश के किसी भी कोने में रिया-सती जनता पर आघात होता था तो वे सब काम छोड़कर वहां पहुंच जाते थे।

चाहे टिहरी गढ़वाल में भारत के मेक्स्विनी शहीद स्वर्गीय सुमन का बलिदान हो, चाहे शिमला के नज़दीक धामी के छोटे रजवाड़े में गोली-काण्ड हो और चाहे सौराष्ट्र अथवा हैदराबाद अथवा ट्रावनकोर सरीखे देशी राज्यों में जन-आन्दोलन हो; उनकी सब ओर समान सहानुभूति रहती थी। उन दिनों देशी राज्यों की जनता दोहरी चक्की के पाटों के नीचे पिसती रहती थी। उन्होंने उस निरीह जनता की मुक्ति तथा उद्धार के लिये देश के एक कोने से जो आवाज़ उठाई थी, वह धीरे-धीरे चारों ओर सब कोनों में व्याप गई थी और उसका बल ऐसा बढ़ा कि देशी राज्यों की जनता को भी अन्त में वास्तविक स्वाधीनता के वायुमण्डल में सांस लेने का अवसर प्राप्त हुआ। उनका नाम देशी राज्यों की जनता सदैव याद रखेगी। विशेषकर हम जो टिहरी तथा गढ़वाल के निवासी हैं, वे उनकी उदारता तथा सहायता के लिये उन्हें कभी नहीं भूल सकेंगे। उनकी उस पवित्र स्मृति के लिये मैं अपनी भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

१६
समवृत्ति के महाधनी

त्यागमूर्ति स्वामी केशवानंद जी, ग्राम महाविद्यालय, संगरिया मंडी (राजस्थान)

देहाती लोग और साधारण जीवन व्यतीत करने वाले फिर अनपढ़ एवं समाचार-पत्रों से अनभिज्ञ दूसरे व्यक्ति भी उन्हें और उनके कामों को खूब जानते थे। पर मेरे जैसे व्यापक जीवन और समाचार-पत्रों के पढ़ने वाले उन्हें और उनकी प्रवृत्तियों को भली प्रकार जानते तथा पूरी तरह पहचानते थे। रियासती प्रजा ऐसे राजनीतिक व्यक्ति को जानते हुए भी उसके पास जाने में डरती व घबराती थी। जहां ब्रिटिश हकूमत में राजनीतिक काम करने वाले कांग्रेस की शरण लेते थे, वहां रियासतों में शायद देशी राज्य प्रजापरिषद् के नाम से जो संस्था स्थापित थी, उसकी शरण में जाते थे। व्यास जी उसके वर्षों महामंत्री रहे। परिचय तो नहीं परन्तु प्रथम दर्शन व्यास जी का उनके ४-५ साथियों सहित हरिपुरा कांग्रेस सूरत ज़िला गुजरात में १९३८ में हुआ। वह अधिवेशन ताप्ती नदी के किनारे पर हुआ था और सरदार वल्लभभाई पटेल ने जंगल में मंगल उपस्थित कर दिया। वहां दूध वाली गायों का भारी जमाव था और दूध तथा उससे बने विविध खाद्य भी सस्ते और सुलभ थे। अधिवेशन के पंडाल के साथ ही जहां प्रदर्शनी थी, वहां ही आज का अशोक चिह्न भी बहुत बड़ी ऊंचाई में बना हुआ था।

सर्वप्रथम मैंने उसको वहां ही देखा था। वह बड़ा ही शोभायमान, आकर्षक और विशाल था जो कि प्रदर्शनी या झंडा समारोह के मैदान के साथ था।

बाहर से आने वाले सदस्यों के लिये फूस के छप्पर बने थे। उनका शुल्क प्रति व्यक्ति पांच रुपया था, पर मेरे सरीखे साधारण व्यक्तियों के लिये जो किसान की गरीबी के प्रतीक थे, अलग मैदान में बड़े-बड़े फूस के छप्पर डाले गये थे, जहां चार आना शुल्क था। मैं वहां कुछ पहले पहुंच गया था। मैंने चारों ओर से खुले शामियाने की तरह बनाये गये छप्परों में डेरा डाल दिया था। उसी कैम्प के मेरुदंड के साथ व्यास जी ने भी अपना डेरा अपने साथियों के साथ जमाया था। व्यास जी उन दिनों इतने तो नहीं फिर भी पतले-दुबले और लम्बे दिखाई देते थे। हमारा यह शाही निवास-स्थान बड़ा खुला, ऊंचा और बिना किसी संरक्षण के था। हम लोग अपनी प्रवृत्ति व रुचि के अनुसार वहां की विभिन्न कांफ्रेंसों एवं सम्मेलनों में व्यस्त रहते थे। 'नमेस्ते यो जनपदे' अर्थात् मेरे राज्य में कोई तस्कर नहीं है। यह उक्ति वहां चरितार्थ होती थी। मैंने बड़े-बड़े सम्मेलन देखे, पर हरिपुरा जैसा प्रबन्ध और जंगल में मंगल जैसा ताप्ती नदी का तट कहीं नहीं देखा। वह सरदार वल्लभभाई पटेल का ही चमत्कार था। व्यास जी की चर्चा और उनके कार्यों का वर्णन तब तक हम पत्रों में पढ़ते रहते थे, पर प्रथम दर्शन उनका इस किसान कैम्प में हुआ। इसके बहुत समय और परिवर्तनों के बाद व्यास जी का परिचय रियासत बीकानेर वासियों को तब मिला जब चौधरी कुम्भाराम जी के प्रयत्नों से एक बड़ी कांफ्रेन्स बीकानेर में सेठ मेरुदान सेठिया की बाहर बगीची में की गई थी, तब उन्हें २० हज़ार रुपया की थैली भेंट करके उनका सम्मान किया गया था। इसी सम्मेलन के बाद व्यास जी का इधर सर्वसाधारण के साथ परिचय और सम्पर्क स्थापित हुआ। परिचय का तीसरा दौर श्री गंगानगर में तब हुआ, जब किशनगढ़ में श्री चांदमल जी एम० एल० ए० के त्याग-पत्र देने से श्री व्यास जी का चुनाव लड़ा गया, उसके लिए चौधरी कुम्भाराम जी आर्य ने वहां एक मास पहले डेरा जमा लिया था। मेरा अपना ख्याल है कि उस समय अनुमानतः ३० हज़ार रुपया गंगानगर से लोगों ने जिनकी संख्या बहुत बड़ी थी, अपनी जेब से व्यय किया होगा। मैं तब राज्यसभा का सदस्य था। डाक्टर गणपतिसिंह वर्मा, चौ० देवीलाल और चौ० राला आदि मेरे पास आये। मुझे प्रेरणा देने लगे कि उनके साथ मैं भी चुनाव क्षेत्र का दौरा करूं। बाद में जनाब बरकतउल्ला खां मेरे पीछे पड़े और कहा कि मैं भी व्यास जी के चुनाव क्षेत्र किशनगढ़ में चलूं। मैंने उन्हें कह दिया कि अभी 'तार' दे दो कि व्यास जी जीत गये हैं। मैं वहां बिना प्रयोजन जाने का श्रेय नहीं लेना चाहता। लोगों के भाव, विचार, प्रयत्न, हिम्मत और उत्साह ऐसा था कि व्यास जी की विजय निश्चित दीख रही थी। बाद में जो इतिहास राजस्थान का है और उसमें व्यास जी का जो हिस्सा है, वह सब प्रत्यक्ष ही है। अन्त में

'सुख दु:खे समेकृत्वा लाभा लाभो जयाजयो, ततो युद्धाय पुजस्व' का सिद्धान्त श्री व्यास जी के सामने सदा रहा।

१७

दधीचि और प्रोमेथियस सा व्यक्तित्व

संसद सदस्य, डा० लक्ष्मीमल सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)

स्वर्गीय जयनारायण जी व्यास के बहुमुखी व्यक्तित्व के अगणित संस्मरण मेरे स्मृति पटल पर सजीव हैं। उनके जीवन के पिछले वर्षों में उनके विपुल स्नेह और सान्निध्य का अविरल सौभाग्य मुझे मिला और इस सान्निध्य के संस्मरण में उस ओजस्वी व्यक्तित्व की विशालता, ऊष्मा और अप्रतिहत निर्भीकता उनकी लोक-निष्ठा के विपुल आलोक में निखरती और चमकती हुई बरबस सामने आ जाती है।

स्वर्गीय व्यास जी के जीवन के पिछले वर्षों में ग्रीक ट्रेजिडी का सम्पुट-सा मिलता है। पुनीत संघर्ष में दत्तचित्त 'मास्टर साहब' की याद आती है तो कभी अदम्य विद्रोही प्रोमेथियस के रूप की; जिसने देवताओं का वैमनस्य मोल लेकर भी मानव जाति को सम्यता और परम्परा की 'अग्नि' का अनमोल उपहार दिया।

स्वर्गीय व्यास जी के इन पिछले वर्षों की पृष्ठभूमि में भारतीय पौराणिक परम्परा के महर्षि दधीचि के उदाहरण का भी स्मरण आता है। महर्षि दधीचि ने देवासुर संग्राम में अपने प्राणों की आहुति देकर अपनी अस्थियों के वज्र का उपहार देकर देवताओं की विजय की वरमाला प्रदान की। महर्षि दधीचि की कथा एक प्रतीकात्मक कथा है, जिसमें आत्मोत्सर्ग और त्याग की महिमा का सन्देश अन्तर्निहित है। हमारी राजनीति के प्रसंग में स्वर्गीय व्यास जी ने रवीन्द्र के प्रेरणाप्रद 'एकला चलो रे' आह्वान को मूर्तिमान करते हुए जिस संघर्ष का शंखनाद किया था और उस संघर्ष में क्षत-विक्षत होकर भी उस आत्मविशिष्ट दधीचि ने प्रोमेथियस की तरह राजनीति को एक नई अन्तर्दृष्टि, एक नया मोड़ देने का यत्न किया था; वह वस्तुत: अविस्मरणीय है।

ज्ञानमन्दिर का प्रकाश

हमारे समकालीन लोकजीवन में जो गिरावट और आपा-धापी घर कर गई है, उससे जो अन्तर्वेदना और जो घुटन स्वर्गीय व्यास जी के मन प्राण पर छाई हुई थी, उससे उनको एक रचनात्मक दृष्टि मिली और उस रचनात्मक दृष्टि का, अपने

उस मानस शिशु का नाम उन्होंने रखा 'ज्ञान मन्दिर'। स्वर्गीय व्यास जी की लोकनिष्ठा ने अपने चारों ओर फैले हुए अंधकार से पराजय स्वीकार नहीं की। क्षोभ और ग्लानि के झंझावात से उन्होंने अपनी आशावादिता और अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा की लौ को बुझने नहीं दिया। वे बराबर राजनीति के इस पतनशील सोपान से मुक्ति के लिये चिन्तन करते रहे, प्रयत्न करते रहे, रास्ता खोजते रहे। उन्हें लगा कि स्वतन्त्र चिन्तन और स्वस्थ विचारों के अभाव में लोकतन्त्र का स्वस्थ विकास सुलभ नहीं हो सकता। उन्होंने पाया कि पूर्वाग्रह और दुराग्रह स्वस्थ चिन्तन के राह की सबसे बड़ी बाधा हैं। उनके इस चिन्तन की निष्पत्ति यह हुई कि उन्होंने लोकतांत्रिक जीवन-पद्धत्ति की बुनियाद को सबल और सफल बनाने के लिये, लोकशिक्षण के लिये एक अभियान का सूत्रपात किया और अपने राजनीतिक जीवन के उपसंहार में उन्होंने लोकशिक्षण के अभियान का नारा देकर अपना कर्त्तव्य निभाया। अपने कर्त्तव्य की इस कर्मभूमि का नाम उन्होंने रखा 'ज्ञान मन्दिर'।

'ज्ञान मन्दिर' की कल्पना व्यास जी ने सुविस्तृत और सर्वव्यापी आधार पर की थी। मेरे घर पर जब ज्ञान मन्दिर की केन्द्रीय व्यवस्थापिका की पहली बैठक हुई, तो उन्होंने कहा कि, ज्ञान मन्दिर किसी वर्ग, पक्ष या सम्प्रदाय का नहीं होगा। ज्ञान मन्दिर विचार और गत्यात्मक चिन्तन के लिये मुक्त वातावरण और सहिष्णुता का संस्कार विकसित करेगा। ज्ञान मन्दिर जागरूक समन्वय का अग्रदूत सिद्ध होगा। ज्ञान मन्दिर की स्थापना करते हुए स्वर्गीय व्यास जी ने इस संस्था का अध्यक्ष मुझे मनोनीत किया और कहा कि मुझे विश्वास है कि व्यक्तिशः ज्ञान मन्दिर को इससे अधिक उपयुक्त अध्यक्ष उपलब्ध नहीं हो सकता। उनका यह वाक्य मेरे लिये उनके पितृतुल्य स्नेह का और उनके गहरे विश्वास का परिचायक था और वह आज भी मेरे मन-मन्दिर में एक अमूल्य थाती की तरह सुरक्षित है। मैं आशा करता हूं कि शायद आने वाले वर्षों में स्वर्गीय व्यास जी की यह विरासत यदि संजोई जा सके और ज्ञान-मन्दिर यदि हमारे जन-जीवन के लिये पौष्टिक पथ्य दे सका तो उनकी एक अन्तिम कामना पल्लवित व फलित हो जायेगी।

उनका सबसे बड़ा स्मारक

ज्ञान मन्दिर स्वर्गीय व्यास जी के ओजस्वी व्यक्तित्व की जागरूक और चिंतनशील परिणति है। ज्ञान मन्दिर व्यास जी की आत्मिक विरासत है। ज्ञान मन्दिर एक प्रदीप है, जिससे कई दीपक जन-जीवन में आलोकित हो सकते हैं। ज्ञान मन्दिर एक मशाल है, जिसका प्रसव स्व० व्यास जी की लोकनिष्ठा से हुआ और जो अपने कर्तृत्व से उनका सबसे बड़ा स्मारक बन सकता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यही स्मारक व्यास जी को सबसे अधिक श्रेष्ठ और अभीष्ट होगा।

१८

अविस्मरणीय व्यक्तित्व

लोक सेवक श्री भंवरमल सिंघी, कलकत्ता

श्री जयनारायण व्यास उस समय भी राजस्थान के दिग्गज राज नेताओं में माने जाते थे, जब मैंने सार्वजनिक जीवन में अभी प्रवेश ही किया था। लगभग २५ वर्ष पहले की बात कर रहा हूं। कैसा संयोग हुआ कि उनको देखा बाद में, पर उनके कार्य में सहयोगी पहले ही बन गया। जोधपुर में सत्याग्रह आंदोलन का प्रारम्भ होते ही स्वर्गीय व्यास जी गिरफ्तार करके जेल में बन्द कर दिये गये और सत्याग्रह को चालू रखने का भार उनके साथियों पर पड़ा। उस वक्त उस आंदोलन को कलकत्ता से धन-जन की सहायता पहुंचाने के लिये जो जोधपुर सत्याग्रह सहायक समिति बनी, उसका मंत्री नियुक्त होने का मुझे सौभाग्य मिला। व्यास जी जेल में थे और जोधपुर के मित्रों से पता चला कि उनका परिवार काफी आर्थिक कष्ट में है। हमने समिति की ओर से उनके परिवार के लिये भी मदद भेजने का निर्णय किया। जब व्यास जी को इसका पता चला तो उन्होंने सन्देश भेजा कि उनके परिवार की चिन्ता न की जाय। हमें आंदोलन की ही चिन्ता करनी चाहिए। आन्दोलन को बलशाली बनाने की दृष्टि से जिन कार्यकर्त्ताओं का सहयोग आवश्यक है; पर जिनकी आर्थिक स्थिति उन्हें इसमें सम्मिलित नहीं होने देती, उनकी ओर हमें पहले ध्यान देना चाहिए। इस घटना ने व्यास जी का जो व्यक्तित्व मेरे दिल में बसा दिया, उसे मैं न कभी भूल सका और न भूल सकूंगा। वे बहादुर योद्धा थे। अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिये वे कठोर से कठोर साधना करने में एक ही थे। कोई प्रभाव, प्रलोभन या भय उन्हें लक्ष्य से विचलित नहीं कर सकता था। यह उनकी टेक अन्त तक निभ गई।

सन् १९४५ में कलकत्ता की जेल से चन्द दिनों में ही मुझे जोधपुर से महावीर जयन्ती का निमंत्रण मिला। उस अवसर पर जहां तक मुझे याद है मैं २४ या ३६ घंटा ही जोधपुर रहा; फिर भी करीब ४-५ घंटे व्यास जी के साथ बिताये। जोधपुर सत्याग्रह के नेता और सत्याग्रह की सहायता के लिये कलकत्ता में बनी समिति के मंत्री की पहली भेंट थी। मैंने उनका जैसा व्यक्तित्व समझ रखा था, वैसा ही पाया। जिन लोगों को उस ज़माने के रियासती दमन की नृशंसता मालूम है। वे सहज में समझ सकते हैं कि किस तरह उन्हें पग-पग पर दमन का सामना करना पड़ता था। एक ओर जितना दमन था, दूसरी ओर उतनी ही दिलेरी थी। दिलेरी के सामने दमन के छक्के छूट गये। व्यास जी की दिलेरी ने उन्हें जोधपुर से खींचकर सारी देशी रियासतों के रणांगन का बहादुर योद्धा और क्षमता पर पंडित जवाहरलाल जी का भरोसा देखा। मैं उस समय स्वास्थ्य लाभ के लिये कुछ

महीनों के लिये कश्मीर में था। बंगाल से मैं निष्कासित कर दिया गया था। व्यास जी अपने कतिपय अन्य रियासती आन्दोलनों के कार्यकर्त्ताओं के साथ मेरे पास ठहरे थे। देशी राज्य प्रजा परिषद् की कार्यसमिति की बैठक में सम्मिलित होने वहां गये थे। उनकी लगन और कार्य तत्परता का जो रूप मैंने वहां देखा, वह अविस्मरणीय है।

व्यास जी ने समाज-सुधारक के रूप में ही सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया था। उनका वह रूप राजनीतिक जीवन में पूरी तरह रम जाने पर भी फीका नहीं पड़ा, प्रत्युत निखरता ही गया। उन्होंने जिस विद्रोहात्मक उत्कृष्ट भावना का राजनीति में परिचय दिया, उसका परिचय वे सामाजिक जीवन में भी दे चुके थे। इसी कारण समाज-सुधार का भी उनको मुख्य स्तम्भ माना जाता था।

देश के विभिन्न भागों में सामाजिक क्रान्ति के क्षेत्र में अग्रसर व्यक्तियों के साथ उनका घनिष्ट सम्पर्क रहता था। जब कभी सामाजिक क्रान्ति के अगुआओं के बीच बातचीत होती, तो सहज ही व्यास जी का उल्लेख आ जाता था। अक्टूबर १९५६ में जब हमने सुप्रसिद्ध समाज-सुधारक और राजनीतिक नेता भाई बसन्त-लाल जी मुरारका के अभिनन्दन की योजना बनाई और समारोह करने का निश्चय किया तो सभापतित्व करने के लिये व्यास जी के नाम का प्रस्ताव हुआ और वह सर्वानुमति से स्वीकार किया गया। यह ध्यान में रहे कि उस समय वे मुख्यमंत्री नहीं थे। उनका चुनाव किसी राजनीतिक हेतु से नहीं, किन्तु सामाजिक क्रान्तिकारी होने से ही किया गया था। मुझे इस प्रसंग में उनके समाज-सुधार सम्बन्धी विषयों का वह विश्लेषण खूब याद आ रहा है, जो उन्होंने उस समय किया था। उन्होंने कहा था कि देश के लिये जेल जाना उतना कष्टकर नहीं, क्योंकि उससे बाद में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। लेकिन भाई बसन्तलालजी ने वह क्षेत्र भी अपनाया, जिसमें कोरा धिक्कार ही नहीं, घरवालों से लांछना और जात-बिरादरी तथा समाज से बहिष्कार भी मिलता है। व्यास जी ने भी अपने जीवन में समाज-सुधार के लिये लांछना, धिक्कार तथा बहिष्कार खुशी-खुशी स्वीकार किया और निरुत्साहित न होकर सदा अग्रसर होते रहे। संयोगवश अभिनन्दन के दो दिन बाद ही भाई बसन्तलाल जी का स्वर्गवास हो गया और जो व्यास जी उनके अभि-नन्दन के समारोह की अध्यक्षता करने आये थे, वे उनकी इहलीला समाप्ति के जुलूस का भी नेतृत्व कर गये। जिस समय मुरारका जी ने शरीर त्याग किया, व्यास जी उनके निवास स्थान पर उनके पास ही थे। कैसा अभिनन्दन, कैसा अभिवादन!

वे जोधपुर के मुख्यमंत्री बने, पर बाद में वर्तमान राजस्थान का निर्माण होने पर वे सत्तारूढ़ नहीं रहे तो उनमें कोई फर्क नहीं आया। जब उन पर तत्कालीन राजस्थान सरकार ने भ्रष्टाचार के कतिपय आरोप लगाकर उनपर मुकदमा चलाया, तब भी व्यास जी की दिलेरी और ज़िन्दादिली में कोई अन्तर नहीं आया।

वे अपनी नेकदिली के आधार पर अग्नि-परीक्षा में वेदाग निकल गये और मुक-दमा चलानेवालों को ही उपनी भूल स्वीकार करनी पड़ी। वे ही व्यास जी तदन्तर राजस्थान के मुख्यमंत्री बनाये गये। राजनीति में उलट-फेर होते हैं और जनतन्त्र में दलबन्दी का बोलबाला होता है। व्यास जी दलबन्दी के खेल में असफल सिद्ध हुए। उन्होंने पद छोड़ दिया पर अपने विश्वास और निष्ठा की भूमि से पग नहीं हटाया। उन्होंने अपनी अडिग आस्था और दृढ़ निष्ठा को कायम रखते हुए अन्याय, अनीति और भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ते हुए सारी यंत्रणाओं व प्रता-रणाओं को हँसते-हँसते सहा, जिस खुशी और निश्चिन्तता के साथ हर संघर्ष को झेला उसी के साथ मौत को भी झेल गये। कोई शक्ति उनको अपने पथ से मोड़ नहीं सकी और अपने ध्येय से नहीं डिगा सकी। मौत ने भी उनको तोड़कर जीवन का सेहरा बांध दिया। जिन विश्वासों और संकल्पों की नींव पर व्यास जी ने जीवन का निर्माण प्रारम्भ किया था, उनके शिखर पर ही उन्होंने जीवन का निर्माण पाया। यही उनके व्यक्तित्व की सुवास है जो संघर्ष के इतिहास के हर पन्ने को सुवासित करती हुई अनुकरणीय उदाहरण के रूप में उनको जीवित रखे हुए है।

१९
व्यक्तित्व विश्लेषण

प्रोफेसर श्री प्रेमनारायण जी माथुर, वनस्थली विद्यापीठ, जयपुर (राजस्थान)

व्यास जी से मेरा परिचय १९३४ के आसपास हुआ था। मैं उस समय व्यावर के सनातन धर्म प्रकाशक कालेज में अध्यापक था और व्यास जी कांग्रेस तथा तत्का-लीन देशी राज्यों के एक प्रमुख कार्यकर्त्ता के रूप में समय-समय पर व्यावर आया करते थे। उनसे मेरी अंतिम भेंट १९६२ के जून में हुई। लगभग ३० वर्ष के इस लम्बे अर्से में मैंने व्यास जी को अनेक रूपों में देखा। एक राजनीतिक कार्यकर्त्ता और साथी के रूप में देखा, एक प्रशासक के रूप में देखा और एक राजनीतिक विरोधी के रूप में देखा; पर उनको मैंने हर अवस्था में सहृदय मानव के रूप में पाया। जब व्यास जी के देहान्त का समाचार अचानक मिला, तो मैंने सचमुच ऐसा अनुभव किया कि राजस्थान ने सच्चे अर्थ में एक कार्यकर्त्ता खो दिया। जो पीढ़ी समाप्त होती जा रही है, जो चरित्र दुर्लभ होते जा रहे हैं; उनका एक अच्छा उदाहरण हमारे बीच से उठ गया।

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का वास्तविक अध्ययन तब तक नहीं किया जा

सकता जब तक उसके आंतरिक रूप को देखने का अवसर न मिले। व्यास जी से एक लम्बे अर्से तक मेरा परिचय रहा पर उनके आंतरिक व्यक्तित्व को देखने का अवसर वास्तव में मुझे अधिक नहीं मिला। इसलिए उनके व्यक्तित्व के विषय में बहुत अधिकार पूर्वक कुछ कहने की स्थिति में मैं अपने-आपको नहीं पाता; फिर भी जो कुछ मैंने देखा और मित्रों से उनके बारे में सुना, उसके आधार पर उनके व्यक्तित्व की एक छाप रही। उनकी सरलता और सहृदयता, उनका मस्ताना-पन, उनका विनोद और एक साधारण कार्यकर्त्ता के रूप में किसी भी काम में उनका लग जाना मैंने सबसे पहले तब देखा था, जब १९३४ में ब्यावर में उन्होंने एक राजनीतिक सम्मेलन और एक विद्यार्थी सम्मेलन के आयोजन किये थे। राज-नीतिक सम्मेलन में स्वर्गीय श्री मूलाभाई देसाई और विद्यार्थी सम्मेलन में स्वर्गीय श्री नरीमन को बुलाया गया था। मैं यद्यपि स्थानीय कालेज में अध्यापक था पर अपनी राजनीतिक रुचि के कारण दोनों ही सम्मेलनों में मैंने भाग लिया था और तब मुझे व्यास जी को कुछ नज़दीक से देखने का मौका मिला था।

व्यास जी के व्यक्तित्व का दूसरा पहलू मैंने तब देखा जब सरदार पटेल के नेतृत्व में राजस्थान के तत्कालीन देशी राज्यों के विलीनीकरण की प्रक्रिया चल रही थी। देश के एकीकरण के इतिहास में सरदार पटेल का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा, पर संयोग कहें या राजस्थान का दुर्भाग्य; राजस्थान के राज्यों के विलीनीकरण के बाद जो नई रचना बनी उसके निर्माण में सरदार जैसे दूर दृष्टि वाले महापुरुष ने भी मनुष्य की सामान्य कमजोरियों का जितना लिहाज़ रखना चाहिए था उतना नहीं रखा। अपनी व्यक्तिगत पसन्द-नापसन्द और राय को जहां महत्त्व नहीं देना था, वहां दिया और फलस्वरूप राज्य में एक ऐसी उथल-पुथल का प्रारम्भ हुआ जो उसके लिये अत्यधिक अहितकारी साबित हुई। इस सारे घटना-चक्र में व्यास जी ने विनय भाव के स्थान पर कार्यकर्त्ता को नहीं शोभा देनेवाले अहं का, सीधी स्पष्टवादिता के मुकाबले में कूटनीतिक दाव-पेंच का, सेवावृत्ति के स्थान पर सत्ता के मोह का और सार्वजनिक जीवन की पवित्रता कायम रखने की चिन्ता के मुकाबले में राजनीतिक गुटबन्दी के द्वारा अपनी इच्छानुसार प्रयोजन सिद्ध करने का ऐसा उदाहरण पेश किया, जो उनके जैसे पुराने कष्ट सहने और त्याग करनेवाले कार्यकर्त्ता के लायक नहीं था। पर उन दिनों भी व्यास जी की पुरानी सहृदयता में मैंने कोई कमी नहीं देखी। व्यास जी भावुक व्यक्ति थे। शायद अपनी भावना के प्रभाव में घटनाओं और व्यक्तियों का सही मूल्यांकन करने में वे कई बार असमर्थ रहते थे। इसका बुरा असर उनके राजनीतिक जीवन पर और राजस्थान के सार्वजनिक जीवन पर भी पड़ा।

प्रशासक की हैसियत से व्यास जी को मैंने नज़दीक से नहीं देखा। सम्पूर्ण राजस्थान के प्रथम मंत्रिमंडल में, जिसका मैं भी एक सदस्य था, व्यास ज़ी शरीक

नहीं हुए। जब व्यास जी स्वयं मुख्यमंत्री रहे तो मेरा उनसे कोई खास सम्पर्क नहीं रह सका। मुख्यमंत्री के पद से जिस प्रकार व्यासजी को हटना पड़ा वह राजनीतिक जीवन की दोषपूर्ण निर्बलता, कांग्रेस संगठन की आन्तरिक रुग्णता और अनुशासन हीनता का एक दुःखद उदाहरण था।

उसके बाद व्यास जी ने बराबर अपनी मान्यताओं के अनुसार बहादुरी और दृढ़ता का ही परिचय दिया। १९६२ के आम चुनावों में कांग्रेस के अन्दर रहते हुए जो रुख व्यास जी ने अपनाया और जिस बहादुरी तथा निर्भीकता से अपनी दृष्टि में अवांछनीय कांग्रेस के उम्मीदवारों का खुले आम विरोध किया, उसने मेरे मन में व्यास जी के प्रति जो सराहना और आदरभाव था उसको बहुत बढ़ा दिया। व्यासजी की राजनीति और उनके राजनीतिक कार्यों के बारे में दो राय हो सकती हैं, जैसा कि हर राजनीतिज्ञ के बारे में होता है; पर उनकी सहृदयता, उनके त्याग और उनकी कष्ट सहिष्णुता के विषय में दो राय नहीं हो सकतीं। जोधपुर और राजस्थान की राजनीतिक जागृति को उत्पन्न करने और उसे बलवती बनाने में व्यास जी का अग्रणी स्थान था। वे जीवन पर्यन्त अपने आदर्शों के लिये संघर्ष करते रहे और नवयुवकों के लिये सदा ही एक प्रेरणा के स्रोत रहे। राजस्थान के इतिहास में व्यास जी का नाम सदा आदर सहित याद किया जायेगा, यह निःसन्देह है।

२०

जिसने झुकना नहीं सीखा

इतिहासज्ञ ठाकुर देशराज, भरतपुर (राजस्थान)

राणा प्रताप के चार सौ वर्ष बाद राजस्थान में दो ऐसी विभूतियां पैदा हुई जो अपने स्वाभिमान पर अटल रहीं और किसी के सामने झुकी नहीं। एक थे श्री विजयसिंह जी पथिक, जिन्होंने साधनों के पूर्ण अभावों में राजस्थान में संघर्ष छेड़ा और ज़िन्दगी भर साधनों का अभाव रहते हुए सामान्तशाही तथा पूंजीवाद से संघर्ष जारी रखा। उनके लिये सहायता के हाथ भी आये किन्तु उन्होंने अपनी विचारधारा के विपरीत चलनेवालों का ऐहसानमन्द होना कभी स्वीकार नहीं किया। राजस्थान का वह अद्वितीय सेनानी अकेला रहते हुए भी क़भी मार्ग से हटा नहीं।

कुछ अन्तर के साथ व्यास जी भी स्वतन्त्र व्यक्तित्व में पथिक जी का ही द्वितीय संस्करण थे। कई बातों में वे अनुभवी थे। पूंजीपतियों के सम्पर्क में रहे।

उन्होंने पूंजीपतियों की श्रद्धा भी अर्जित की। परन्तु उन्हें भी सदा पूंजी का अभाव अभाव ही रहा। देश के बड़े से बड़े नेता यहां तक कि पं० जवाहरलाल के साथ उन्होंने लेफ्टीनेण्ट की हैसियत से काम किया, किन्तु उनका व्यक्तित्व किसी के भी व्यक्तित्व में खो नहीं गया। उनका अपना रंग-ढंग पृथक् ही रहा। उन्होंने अपने से बड़ों का आदर अवश्य किया। किन्तु वे आंख मूंदकर किसी के दास नहीं बने।

उनका अधिकांश समय राजस्थान की सामन्तशाही से जूझने में व्यतीत हुआ। किन्तु उत्तर भारत की तो ऐसी कोई रियासत न थी, जिसके कार्यकर्त्ताओं को उनका पथ-प्रदर्शन न मिला; वैसे वे अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् के प्रधानमंत्री भी रहे। राजस्थान के वे मुख्यमंत्री हुए। उनसे पहले श्री हीरालालजी शास्त्री मुख्यमंत्री थे। अब श्री मोहनलाल जी सुखाड़िया मुख्यमंत्री हैं। आगे कोई और भी मुख्यमंत्री हो जायगा। प्रश्न यह है कि क्या कोई लोकनायक भी बन सकेगा। हम तो समझते हैं कि इस बीसवीं सदी में एक ही लोकमान्य पैदा हुआ था महाराष्ट्र में और एक ही लोकनायक पैदा हो सका राजस्थान में।

श्री जयनारायण जी व्यास का और मेरा जन्म राजनीति में एक ही वर्ष में एक साथ हुआ। इसलिए उनकी राजनीतिक गतिविधियों का मुझे अच्छा-खासा ज्ञान है, संभवतः सबसे अधिक। धारा १२४ 'अ' के अन्तर्गत मेरी पहली गिरफ्तारी के समय सन् १९३० में उन्होंने 'तरुण राजस्थान' में चन्द पंक्तियों द्वारा हर राजस्थानी को भरतपुर में सत्याग्रह करने के लिये आह्वान किया था। कुछ ही दिन बाद उनकी भी गिरफ्तारी हो गई और वे उसी धारा के अनुसार जोधपुर में एक निर्जन किले में मुझसे भी कहीं अधिक कठोर कष्ट झेलते रहे। उनको सज़ा भी पांच-छह वर्ष की हुई। वे सन् १९३२-३३ के जिन दिनों में अजमेर गये थे, मैं भी वहां पहुंच गया था। उन दिनों हमारे दोनों के कमांडर अलग-अलग थे। मैं श्री विजयसिंहजी पथिक के कैम्प में था और व्यास जी थे श्री हरिभाऊ जी उपाध्याय के कैम्प में। यह आश्चर्य की बात है कि व्यास जी में पथिक जी का जैसा तेज था और मेरे पर हावी होती जा रही थी उपाध्यायजी की वृत्ति।

मेरे और व्यास जी के कार्यक्षेत्र भी कुछ अलग-अलग पड़ गये थे। मैं केवल किसानों के एक वर्ग और एक क्षेत्र के काम में फंस गया और वे सार्वजनिक सम्पत्ति रहे। पंडित जवाहरलाल नेहरू जी के शब्दों में, जो आदमी छोटा क्षेत्र और छोटा काम सेवा के लिये चुनता है वह छोटा रह जाता है। यही मुझमें और व्यास जी में अन्तर रहा।

व्यास जी में बहुत गुण थे, किन्तु कुछ कमियां भी थीं। उन्हें आदमी की परख बहुत कम थी। इसलिए वह ऐसे आदमियों को भी बढ़ाते रहे जो अन्त में अपने स्वार्थ के लिये उनके भी शत्रु बन गये। दूसरी यह कि उनमें बांस की जैसी लचक नहीं थी, फरास की जैसी कड़क थी। आज की राजनीति में लोच आवश्यक हो गई

है। अच्छे को अच्छा कहने और बुरे को बुरा कहने की जो उनकी जन्मजात आदत थी, उसे उन्होंने बिना किसी परवाह किये अन्त तक निभाया। इस प्रकार के वे राजस्थान में एकमात्र व्यक्ति थे। और जब तक पौरुष, साहस तथा सत्य की कद्र रहेगी लोग उनको आदर और श्रद्धा के साथ याद करते रहेंगे।

२१
अरावली के शिखर

श्री सत्यनारायण जी सराफ, (भूतपूर्व बंदी बीकानेर षड्यंत्र केस) भादरा—बीकानेर

व्यास जी से मेरा सर्वप्रथम परिचय १९३२ में सेण्ट्रल जेल में हुआ। तब मैं बीकानेर के राजद्रोह षड्यन्त्र केस में वहां बन्दी था। मेरे सहबन्दियों में मेरे पूज्य चाचा स्वर्गीय श्री खूबराम सराफ, चुरू के स्वामी गोपालदास जी तथा पंडित चंदन-मल जी बहड़ भी थे। उन दिनों जो यातनाएं हमें जेल में दी जा रही थीं, उनकी गाथा किसी प्रकार व्यास जी के कानों तक पहुंच गई। यह उनका स्वभाव व परम्परा थी कि जहां राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं को पीड़ा होती थी वहां वे अपने सौहार्द के कारण तुरन्त दौड़ पड़ते और उसके निवारण में जुट जाते थे। हमारे पास भी वे बीकानेर अपने उस स्वभाव से प्रेरित होकर ही आये थे। जेल में हम राजनीतिक बन्दियों से भेंट प्राप्त करने में उनको बहुत कष्ट झेलना पड़ा। वे हमसे जेल में मिले। हम लोगों के साथ उनका यह प्रथम मिलन था। उस समय हमारे मस्तिष्क पर उनके लिये जो रेखाएं खिचीं वे आज तक अमिट हैं। जब भी कभी मैं व्यास जी के सम्बन्ध में सोचता हूं तो वे रेखाएं फिर उभर उठती हैं। उस समय हमारे मन में बनी हुई व्यास जी की तस्वीर क्या थी? एक पतला-दुबला अत्यन्त ही सादा लिबास केवल एक धोती-कुर्ता पहने और हाथ में झोला लिये जिसमें उनके आवश्यक कागज़ात थे। उस समय का वहां का वातावरण भी अत्यन्त गंभीर व कठोर था। खुफिया विभाग के कितने ही पुलिस कर्मचारी व अधिकारी उनके दायें-बायें व आगे-पीछे थे। हकूमत की कितनी ही आंखें उन पर गड़ी थीं। कैसी भया-नक थी वह स्थिति! परन्तु व्यास जी को उन सब की तनिक भी परवाह न थी। वे युवा थे। उनके हृदय में देशी राज्यों के निरंकुश शासन एवं निर्मम दमन के विरुद्ध जो तड़पन विद्यमान थी, वह उनके सुन्दर चेहरे पर साफ झलक रही थी। और जिस संघर्षमय तपस्या का जीवन वे व्यतीत कर रहे थे, उसकी प्रतीति उनकी भाव भंगिमा में स्पष्ट दीख पड़ती थी। वे राजस्थान में स्वतन्त्रता संग्राम के

पहले वीर, साहसी व निर्भीक योद्धा थे। उसके लिये उन्होंने लम्बी जेल यातनाएं भी भोगीं। हम भी उस संग्राम के वन्दी सैनिक थे। इस नाते उनका हमारे प्रति सहोदर भ्राता का-सा प्रेम होना स्वाभाविक था। उनसे मिलकर अपनी जेल यातनाओं का कष्ट हम भूल-से गये।

उन्होंने वीकानेर षड्यन्त्र केस की तमाम जानकारी प्राप्त की। जो सम्भव अमानुषिक यातनाएं स्वेच्छाचारी शासक के हाथों हमें दी जा रही थीं, उनका वर्णन ज्यों-ज्यों वे सुनते जा रहे थे, उनके चेहरे पर रोष छाता जा रहा था। उन्होंने षड्यन्त्र केस की जानकारी जनता को देने के लिये एक पुस्तक 'वीकानेर षड्यन्त्र केस' के नाम से प्रकाशित की। वह पुस्तक भारतवर्ष के वड़े-वड़े समाचार-पत्रों और अखिल भारतवर्षीय देशी राज्य प्रजा-परिषद् तथा कांग्रेस के नेताओं के पास भेजी। इसी के साथ उन्होंने तन-मन से अपने को हमारे प्रति होने वाले अमानुपिक व्यवहार के प्रतिकार में लगा दिया। उनके आन्दोलन के ही फलस्वरूप 'वाम्बे सैन्टिनल' के सम्पादक पत्रकार शिरोमणि श्री बी० जी० होरनिमैन, 'ट्रिव्यून' लाहौर के सुप्रसिद्ध सम्पादक श्री कालीनाथ राय और वम्बई के प्रसिद्ध गुजराती दैनिक 'जन्मभूमि' के यशस्वी सम्पादक श्री अमृतलाल सेठ ने हमारे मुकदमे को विशेष प्रकाशन दिया तथा हमारे कष्टों की गाथा अपने पत्रों में प्रकाशित की। महात्मा गांधी, श्री जवाहरलाल नेहरू तथा अन्य नेताओं को भी व्यास जी ने मुकदमे की पूरी जानकारी दी। इस प्रकार हमारे लिये पत्रों व सम्मेलनों में जो आन्दोलन हुआ उससे निरंकुश शासक को वहुत कुछ झुक जाना पड़ा और हमारी यातनाओं में भी कुछ कमी हुई। यद्यपि फेयर ट्रायल तो न हुई, फिर भी उसका नाटक ज़रूर खेला गया, जिससे यह दिखावा किया गया कि वीकानेर के निरंकुश शासक कैसे न्यायप्रिय हैं। इसका सारा श्रेय व्यास जी को ही था। हमें पहली वार व्यास जी का सफल सहृदय आन्दोलक के रूप में परिचय मिला।

व्यास जी केवल विशेष व्यक्ति ही न थे, प्रत्युत एक मानवीय शक्तिपुंज अर्थात् ह्यूमन डायनमो थे। वे अथक श्रम करते हुए भी कभी थकान अनुभव न करते थे। अन्याय से लड़ना और दरिद्रनारायण की सेवा करना उनका स्वभाव वन गया था। १९३६ में जेल से छूटने और रियासत वीकानेर से निर्वासित किये जाने के वाद मुझे उनके साथ अखिल भारतवर्षीय देशी राज्य प्रजा-परिषद् में कन्धे से कंधा मिलाकर कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। लुधियाना में अखिल भारतवर्षीय देशी राज्य प्रजा-परिषद् का जो वार्षिक अधिवेशन पंडित जवाहरलाल जी नेहरू की अध्यक्षता में १९३९ में हुआ, उसमें मैं भी उसकी स्टैंडिंग कमेटी का सदस्य चुना गया था। इस नाते भी मुझे उनके अतिनिकट सम्पर्क में रहने का अवसर मिला। वहुत समीप से मैंने उनके विशिष्ट सद्गुण, अद्भुत कार्यप्रणाली, अथक परिश्रम और विस्मयजनक व्यक्तित्व का विशेष अध्ययन किया। उनके हृदय में

केवल एक ही आग थी। वह यह कि देशी राज्यों में राजाओं का निरंकुश स्वेच्छा-चारी शासन समाप्त हो और उनमें प्रजातांत्रिक शासन स्थापित हो।

मेरे स्वर्गीय चाचा श्री खूबराम जी से उनका निरन्तर पत्र-व्यवहार चलता रहा और व्यास जी को जब तब उनसे आर्थिक सहायता प्राप्त होती रहती थी। वे अपने लिये उस सहायता में से कभी कुछ भी नहीं लेते थे। उनका खाना-पीना व रहना अत्यन्त सादा था। जहां-कहीं से भी उनको जो कुछ सहायता मिलती, वह देशी राज्यों के काम में ही लगा देते थे। अपनी या अपने परिवार से अधिक वे अपने साथियों और अपने परिवारों की अहर्निश चिन्ता किया करते थे। किसी को दुःखी या अभावग्रस्त वे देख न सकते थे। अपने परिजनों के लिये उन्होंने कभी एक पैसा तक जमा नहीं किया। वे स्वयं दरिद्र और दरिद्रनारायण के सेवक बने रहे।

उनका व्यक्तित्व अपनी ही विशेषता रखता था। जोधपुर के प्रधानमंत्री अथवा राजस्थान के मुख्यमंत्री बनने से उनके व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा न तो कुछ बढ़ी और उससे अलग होने पर न वह घटी। उनको पाकर पद की प्रतिष्ठा बढ़ती थी और खोकर पद अपनी प्रतिष्ठा खो बैठता था। श्री व्यास जी राजस्थान में अरावली के शिखर के समान थे। अपने लक्ष्य से विचलित होना उन्होंने सीखा ही न था। जब शासन में भ्रष्टाचार समा गया और अवांछनीय तत्त्वों को चुनाव के लिये खड़ा किया जाने लगा, तब उन्होंने अपना विरोध कांग्रेस महासमिति तक ही सीमित नहीं रखा; अपितु चुनाव क्षत्र में भी उनका विरोध किया। उन्होंने वैसा करना महासमिति व पार्लियामेण्टरी बोर्ड के सामने भी स्वीकार किया; परन्तु उस महान् पुरुष के विरुद्ध अनुशासन भंग की कार्रवाई करने के बावजूद उसको मूर्तरूप नहीं दिया जा सका, क्योंकि सत्य उनकी तरफ था। राजस्थान में कांग्रेसी क्षेत्र में जो भारी भ्रष्टाचार व अवसरवादिता छाई है, उसके विरुद्ध अकेले लड़ने का श्रेय उनको ही प्राप्त है। उनके साहस के प्रति हमारा माथा श्रद्धा से आज भी झुक जाता है।

२२

राष्ट्रज्योति

श्री कन्हैयालाल जी सेठिया, सुजानगढ़

लोकनायक श्री जयनारायण जी व्यास पहले राजस्थानी नेता थे, जिनका व्यवितत्व अखिल भारतीय स्तर का था। उनके निधन से राष्ट्रीय जीवन की जो

अपार क्षति हुई है, उसे उप-राष्ट्रपति श्री जाकिर हुसैन साहब से लेकर साधारण जन तक ने अनुभव किया है। लोकनायक व्यास जी जैसे महान् पुरुष का मुझे विश्वास और सान्निध्य प्राप्त था, यह मेरे लिये विशेष गौरव की बात है। सन् १९५० में जब मुख्यमन्त्री के नाते स्वर्गीय व्यास जी ने राजस्थान की बागडोर अपने हाथों में ली तो उन्होंने अपने मंत्रिमण्डल में मुझे भी सम्मिलित करने की इच्छा व्यक्त की थी, पर विशेष परिस्थितियों के कारण मेरा मन्त्रिमण्डल में आना सम्भव न हो सका। राजनीतिक जीवन की इस आत्मीयता और विश्वस्तता से भी अधिक मूल्यवान उनका व्यक्तिगत स्नेह था, जो मुझे अबाध रूप से उनके जीवनपर्यन्त मिलता रहा। अपने निधन से कुछ ही महीनों पहले वे मेरे व्यक्तिगत निमन्त्रण पर सुजानगढ़ पधारे थे और राजस्थान की समस्याओं के बारे में, जिनमें सीमा पर चलने वाला तस्कर व्यापार और डाकू समस्या मुख्य थी; देर तक विस्तृत चर्चा करते रहे। कांग्रेस की गिरती हुई प्रतिष्ठा, कार्यकर्त्ताओं का पारस्परिक वैमनस्य और जन-जीवन में फैले हुए भ्रष्टाचार से वे दुःखी थे। पूज्य बापू की तरह ही वे भी अपने जीवन के अन्तिम दिनों कांग्रेस संगठन के शुद्धिकरण के लिये कुछ ठोस कदम उठाने के लिये व्यग्र थे। उनका सा तपस्वी जीवन और फक्कड़ स्वभाव दुर्लभ है। वे धोती कुर्ते में ही जिये और धोती कुर्ते में ही मर गये। ऐसा अपरिग्रही भाव उनकी अपनी विशेषता थी। सत्य में उनकी अपार निष्ठा थी। लोह पुरुष सरदार पटेल जैसी हस्ती का भी रौब उन पर गालिब नहीं हो सका। आबू के प्रश्न को लेकर वे संसद् में खुलकर बोले और राजस्थानी जनता के दावे को निडर होकर पेश किया। मेरे आबू सम्बन्धी लेखों और कविताओं के लिये वे बराबर साधुवाद भेजते रहे। इसी तरह जब-जब भी राजस्थानी भाषा को मान्यता देने का सवाल उठा, उन्होंने अपने तौर-तरीके से उस पर बराबर बल दिया। प्रान्त के राजस्थानी भाषा के लेखकों और पत्रकारों का वे सदैव मार्ग दर्शन करते रहे और आधुनिक राजस्थानी भाषा के विकास में उन्होंने जो योग दिया वह चिरस्मरणीय रहेगा। ज्ञान का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं था, जिसमें उनकी रुचि और गति न रही हो। क्या साहित्य, क्या संगीत, क्या नृत्य सभी में उन्हें रस था। सन् १९५१ के आम चुनावों में व्यास जी जोधपुर से खड़े हुए थे। जिस दिन उन्हें चुनाव में हार का समाचार मिला उसी रात को उनके निवास स्थान पर नृत्य विशारदों का जमघट लगा। जब सब उपस्थित नृत्यकार अपना कौशल दिखा चुके, तब लोकनायक ने मुस्करा-कर मुझसे पूछा कि बोलो, मैं कौन-सा नृत्य दिखाऊं। मैंने परिहास में कहा कि आप पराजय नृत्य दिखावें और उपस्थित लोग ठहाका मारकर हँसने लगे और हमारे लोकनायक सचमुच ही पैरों पर घुंघरू बांधकर नृत्य की मुद्रा में जा खड़े हुए। ऐसे निष्कपट हृदय और मुक्तहास के धनी थे लोकनायक जयनारायण व्यास।

२३
विद्रोह के प्रकाशपुंज

श्री श्रीचंद जैसलमेरिया, वीर मुहल्ला, जोधपुर (राजस्थान)

मैं जब-जब अपने अग्रज स्वर्गीय 'माड़सा' के बारे में सोचता हूं, तब मुझे कार्ल मार्क्स की यह उक्ति याद आती है कि समाज का नेतृत्व हमेशा निम्न मध्य श्रेणी के अदम्य उत्साह, असाधारण प्रत्युत्पन्नमति और अपार साहस से ओत-प्रोत मनीषी ही करते आये हैं। मुझे कार्ल मार्क्स की यह उक्ति इस वास्ते तथ्यपूर्ण प्रतीत होती है, क्योंकि जोधपुर में हमारा एक सामान्य मध्य श्रेणी का कट्टर धर्मान्ध ब्राह्मण परिवार था। उसी में लोकनायक जयनारायण व्यास सरीखे विशिष्ट व्यक्ति ने जन्म लिया।

उनके जीवन को दृष्टि में रखते हुए कल का हमारा बचपन—काल की परिधि से दूर, बहुत दूर स्थिति और स्थिर था। उन्होंने अन्ततः अपने व्यष्टि को समष्टि में इस तरह तिरोहित कर दिया कि दोनों में कोई अन्तर नहीं रह गया था। वे समष्टि की असहाय व पीड़ित अवस्था से व्यथित थे। धर्मान्धता के पोषक परिवार में जन्म लेकर और पलकर भी उन्होंने विद्रोह और विपदा का स्वेच्छा से वरण किया। यह तथ्य स्वयं एक विरोधाभास है और यह विरोधाभास व्यास जी की ही प्रक्रिया और हर कर्तृत्व में परिलक्षित हुआ।

मैं बहुत छोटा था। व्यास जी तब मोहल्ले में ब्राह्मण जाति में और सम्भवतः जोधपुर शहर में सबसे अधिक किशोरावस्था के व्यक्ति थे, जिन्होंने होली की अश्लीलता के विरुद्ध अभियान प्रारम्भ किया और अपने आदरणीय व प्रिय बुजुर्गों के कटुतम कोप के भागी बने। बस, उनके भावनाशील प्राणों में विद्रोह का ज्वालामुखी इसी आयु में फूटा और वे जब तक जीवित रहे, तब तक विद्रोही ही बने रहे और उनके हृदय में विद्रोह की आग निरन्तर भीषणतम होती गई। उनके अन्तराल में प्रज्ज्वलित हुई उस विद्रोहाग्नि के प्रकाश से समष्टि का पथ आलोकित हुआ।

धार्मिक व सामाजिक कुरीतियों पर भिन्न-भिन्न प्रकार से चोट करने में न चूकने वाला किशोर ही आगे चलकर राजनयिक और नेता बना। वैचारिक दृढ़ता तार्किक वाक्चातुर्य तथा अविकल श्रम की साधना ने उन्हें जीवन के उच्चतम शिखर पर पहुंचाया। वे कभी थके नहीं, कभी झुके नहीं और कभी हारे नहीं। सार्वजनिक जीवन में उनका अवतरण ऐसे काल में हुआ, जबकि समाज की सारी व्यवस्था पर मूढ़ सामन्तीपन छाया हुआ था। दूसरे शब्दों में उनके चारों ओर जो कुछ भी था, वह सब भस्म और नष्ट करने के योग्य था। इन विपरीत व प्रतिकूल परिस्थितियों के साथ उन्हें आजीवन जूझते रहना पड़ा। वे जूझते रहने के लिये और जीना चाहते थे, परन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त बढ़ते हुए भ्रष्टाचार ने

उन्हें अन्ततोगत्वा अपना ग्रास बना ही लिया। वे नेता होकर भी कार्यकर्त्ता ही रहे।

उनके भावुक मन ने जब दिल्ली के एक अखबार में पढ़ा कि वहां लोगों की भीड़ पर पुलिस ने गोली चलाई और दो युवक धराशायी हो गये, तब विद्रोही युवक कुंवर जयनारायण व्यास 'नवीन' के हृदय में विद्रोह की आग धधक उठी और उसने सार्वजनिक रूप में देश-सेवा का व्रत अंगीकार कर लिया। यह घटना १९१९ की है। उन दिनों अखबार का पढ़ना तक राजद्रोह माना जाता था। उनको अपनी विद्रोही प्रकृति के कारण हमेशा संघर्षरत रहना पड़ा। हर प्रकार की आपदाओं का वीभत्स नर्तन उनके सामने होता रहा। तब भी वे हर क्षण मुस्कराते ही दृष्टिगत होते थे। सामन्तयुगीन पुलिस ने उन्हें दस नम्बरी बदमाशों की श्रेणी में पंजीकृत कर रखा था और नियमतः उन्हें तब तक, जब तक कि जेल में या किसी किले में कैद नहीं हुए, रात्रि में साढ़े नौ बजे सिटी पुलिस में जाकर सोना पड़ता था। मुख्यमन्त्री के उच्चासन पर आसीन होकर भी वे सरकारी दफ्तर की नौकरशाही सत्ता और भ्रष्टचार के समक्ष नहीं झुके। अपने जीवन के प्रारम्भ काल में जब तक कि वे समाज व सरकार में व्याप्त भ्रष्टाचार की घोर प्रताड़ना करते रहे, तब वे शासक होकर उसे कैसे सहन करते व कैसे प्रश्रय देते।

मैं उनके समूचे जीवन की अत्यन्त बारीकी से जब गवेषणा करता हूं, तो मेरी बुद्धि की पकड़ में केवल एक ही तथ्य आता और वह है 'अत्यन्त लोकतांत्रिकता' सर्वांग में उनके जीवन में यही एकमात्र सर्वोत्कृष्ट गुण है, जिसे हर व्यक्ति अपनाने का साहस नहीं कर सकता। उनकी प्रशस्ति में जितना लिखा जाय, अल्प है। वे एक योद्धा थे, संगठक थे, सम्पादक और साहित्यकार थे। वे कभी अपने लिये चिन्तित नहीं रहे।

श्रद्धेय व्यास जी के जीवन के अन्तिम दिनों में उनकी ज्ञान मन्दिर की योजना को लेकर मुझे उनके कुछ अधिक निकट सम्पर्क में आने का अवसर मिला था। मैं प्रजा समाजवादी दल के विचारों का हूं और उसी में रहकर कुछ लोक सेवा का काम करता हूं। वे थे कांग्रेस दल के एक विशिष्ट नेता। इस विचार-भेद के उपरान्त भी उन्होंने जोधपुर शहर में ज्ञान मन्दिर योजना को चालू करने के लिये सम्भवतः सबसे पहले मुझसे ही परामर्श किया और उसके संचालन का कार्य-भार भी मुझको सौंपा। ज्ञान मन्दिर योजना दलगत राजनीति से सर्वथा रहित थी। उसका मुख्य उद्देश्य लोकतन्त्र के प्रति लोगों को अपने कर्त्तव्यपालन के लिये सचेत, सावधान, सजग एवं सज्ञान करना ही था। दूसरे शब्दों में यह कहना चाहिए कि वे व्यष्टि में कर्त्तव्य भावना जागृत कर उसको समष्टि के प्रति अपने उत्तरदायित्व को पूरा करने में संलग्न देखना चाहते थे। इसमें भी मुझे उनकी लोकतांत्रिकता के ही दर्शन हुए। इसी कारण परस्पर राजनीतिक मतभेद होते हुए भी हर किसी

से उसकी शक्ति तथा योग्यता के अनुसार काम लेने की कला में भी वे बड़े चतुर थे। उनके इस अपूर्व चातुर्य को याद कर मेरे मुख से एकाएक अपने सार्वजनिक जीवन की एक बड़ी कमज़ोरी इस उक्ति में निकल पड़ती कि 'योजकस्तत्रदुर्लभः'।

२४

विशाल हृदय

संसद् सदस्य श्री पन्नालाल जी वारुपाल बीकानेर, (राजस्थान)

मैं व्यास जी के सम्पर्क में पहली बार १९४८ में आया। तब वे जोधपुर के मुख्यमन्त्री थे। उस समय बीकानेर रियासत में हरिजन समाज में केवल मात्र हम दो व्यक्ति ही—मैं और धर्मपाल वाल्मीकि कार्यकर्त्ता थे। समय-समय पर अक्सर श्री व्यास जी से मुलाकात हो जाती थी। श्री हीरालाल जी शास्त्री के मंत्रिमण्डल के बाद जब श्री व्यास जी राजस्थान के मुख्य मन्त्री बने, तब उनके कार्यकाल में हरिजनों के कल्याण-कार्य में आशातीत प्रगति हुई। परन्तु श्री मिर्धा, श्री माथुर, श्री कुम्भाराम और श्री सुखाड़िया जी से कुछ बातों को लेकर मतभेद हुए तब राजस्थान में राजनीति ने पलटा खाया और वह मुख्यमन्त्री नहीं रहे। वे आदर्शवादी एवं सिद्धान्तवादी थे। राजनीति में उन्होंने कभी भी सौदेबाज़ी नहीं की। अगर वह भी सौदेबाज़ी करते तो जीवनपर्यन्त उनको मुख्यमन्त्री पद से पृथक् करने की शक्ति किसी में नहीं होती। श्री व्यास जी जैसे कर्मयोगी और आदर्श नेता को मुख्य मन्त्री पद से हटाने के लिये दलगत राजनीति में पड़कर कुछ पाप मैंने भी किया था। परन्तु उनका स्नेह मेरे और मेरे परिवार के प्रति वैसा ही बना रहा जैसा पहले था।

१९५७ के आम चुनाव में लोक सभा के लिये कांग्रेस टिकट से खड़ा होना मैं चाहता था। श्री व्यास जी कांग्रेस अध्यक्ष थे। वह मुझे टिकट नहीं दिलाना चाहते थे। कांग्रेस हाई कमान ने राजस्थान का मामला श्री लाल बहादुर शास्त्री के सुपुर्द कर दिया। उनका निर्णय मेरे पक्ष में हुआ। मैंने अनुभव किया कि इस पर श्री व्यास जी के हृदय में मेरे प्रति कोई प्रतिकूल भावना नहीं रही। उनकी इस विशाल हृदयता ने मुझे मोह लिया। व्यास जी राजनीतिक नेता के अतिरिक्त कलाकार और विनोदी भी थे। उनके द्वारा रचित लोक गीत राजस्थान में प्रसिद्ध हैं। समय-समय पर श्री व्यास जी पैरों में घुंघरू बांध नृत्य द्वारा अपने साथियों का मनोरंजन कर खूब हँसते और हँसाया करते थे। वे विनोदी थे, क्रोध उनको नहीं आता था।

सदैव हँसमुख फूल के समान कोमल परन्तु वज्र की तरह कठोर भी थे। गत वर्ष उन्होंने भ्रष्टाचार के विरोध में कुछ कांग्रेसजनों और राजस्थान के नेताओं को आड़े हाथों लिया था तो हाई कमान उनसे नाराज़ हो गया। उनको कांग्रेस के अनुशासन भंग के आरोप में कांग्रेस से छह वर्ष के लिये पृथक् करने का निर्णय किया। परन्तु उन्होंने इसकी परवाह नहीं की। और दृढ़ता के साथ प्रधान मन्त्री नेहरू से भी कह दिया कि मेरा विरोध सैद्धान्तिक है, राजनीतिक नहीं। मैं भ्रष्टाचारियों का विरोध करूंगा।

वे मानव के रूप में देवता थे। वे आज हमारे बीच में नहीं हैं। उनके चले जाने से राजस्थान की राजनीति में से मानवता भी चली गई।

२५
वीर योद्धा

पत्रकार श्री एस० एन० शास्त्री, हैदराबाद, (आंध्रप्रदेश)

श्री जयनारयण जी व्यास स्वतन्त्रता संग्राम के विशिष्ट योद्धा और चोटी के देशभक्त थे। उन्होंने राजनीति में सामन्तशाही के विरोध में ऐसे समय प्रवेश किया था, जबकि राजनीति को हीन और सामाजिक दृष्टि से निन्दनीय समझा जाता था।

अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् के महामन्त्री के नाते उन्होंने सारे देश का दौरा किया था और इसी हैसियत में उनसे मेरा परिचय हुआ था।

उनकी स्पष्टवादिता, सूझ-बूझ और सबसे अधिक उनके सौहार्द तथा मानवीय दृष्टिकोण ने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया। उन्हें एकसाथ पांच मोर्चों पर जूझना पड़ा। पहला, देशी नरेशों; दूसरा, शासन में पूरी गहराई से जमे हुए प्रतिक्रियावादियों; तीसरा, अपने आलोचकों; चौथा, भारतीय राजनीतिज्ञों और पांचवां पोलिटिकल विभाग का मोर्चा था। उन दिनों कांग्रेस के नेता भारतीय राजनीतिज्ञ देशी राज्यों में किसी भी प्रकार की राजनीतिक हलचल अथवा आन्दोलन करने के पक्ष में नहीं थे।

उन्होंने विरोधियों के प्रति हाज़िरजवाबी से काम लेने और जैसे को तैसा जवाब देने में कभी कमज़ोरी या संकोच नहीं दिखाया। वह बड़े ही प्रभावशाली वक्ता, प्रतिभा सम्पन्न लेखक और चलते-फिरते प्रचार केन्द्र थे। वह बड़े ही सरल सीधे-सादे स्वभाव के थे। उनमें कोई दिखावा या आडम्बर नहीं था। उन्होंने बड़े-

से-बड़े कष्ट-क्लेश और मुसीबतें पूरे धैर्य से झेलीं। जब कभी उनको कठोर-से-कठोर कसौटी पर कसा गया, तब वह सदा ही पूरे उतरे। पद प्रतिष्ठा का प्रलोभन उनको कभी विचलित नहीं कर सका और न गरीबी ही उनको अपने निर्दिष्ट ध्येय से डिगा सकी। सुख-दुःख, हानि-लाभ और जय-पराजय उनके लिये समान थे।

उनके विरुद्ध उन लोगों ने जो उनकी राजनीतिक हत्या कर राजनीतिक क्षेत्र से उनका सफाया कर देना चाहते थे, एक षड्यन्त्र रचा था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उन्होंने कई भूलें कीं। अपने मित्रों को भी अपना विरोधी बना दिया और अन्त तक उनके साथ संघर्षरत रहे। उन्होंने जिसको बुरा मान लिया, उससे कभी समझौता नहीं किया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद राजस्थान में जो नई परिस्थितियां पैदा हुईं, उनको वह ठीक तरह नहीं समझ पाये। उनको इस बात से बड़ी चिढ़ थी कि उनके साथी सत्ता के पीछे पागल हो गये। जब उन्होंने मुख्यमन्त्री पद का त्याग किया, तब ऐसा अनुभव किया जैसे कि उनके साथियों ने उनकी उपेक्षा कर दी हो। परन्तु उनकी अन्तरात्मा ने झुकना स्वीकार नहीं किया और विद्रोह कर दिया। जीवन की अन्तिम सांस तक वह वीर योद्धा की तरह डटे रहे।

मुझे उनके निधन से कुछ ही महीने पहले मिलने और बातचीत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। वह अतीत में ही डूबे रहे। परिवर्तित राजनीतिक परिस्थितियों को अंगीकार करने में असमर्थ रहे और अपने ही राज्य में जो राजनीतिक जोड़-तोड़ चला उसके प्रति वह बेखबर रहे। अनिवार्य घटना-चक्र की तेज़ गति ने उन्हें एक कोने में धकेल दिया। यह उनके लिये एक चेतावनी होनी चाहिए थी। जब समय हाथ से निकल चुका, तब उन्होंने सोचा कि मैं वापस राजनीति में आ सकता हूं। तब उनका न स्वास्थ्य ठीक था, न उनके पास साधन रहे थे और सबसे बड़ी बात यह कि वह कांग्रेस उच्च सत्ता के प्रभाव-शाली सदस्यों की सहानुभूति खो चुके थे। निराश हृदय के साथ उनका निधन हुआ। फिर भी स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में उनका नाम वीर योद्धा के रूप में सदा स्मरण रहेगा। उन्होंने निजी स्वार्थ के बिना ही राजनीति में प्रवेश किया था और आजीवन उससे ऊपर उठे रहे।

स्वतन्त्रता संग्राम में उनका जो ठोस और सक्रिय योगदान रहा, उसका ठीक-ठीक मूल्यांकन समय आने पर अवश्य होगा। देशी राज्यों की जनता के हृदय में उनका नाम सदा अंकित रहेगा।

उनकी सच्चाई, ईमानदारी, दृढ़ विश्वास और सबसे अधिक उनके सौजन्य के लिये मैं उनके प्रति नतमस्तक हूं।

२६
हठयोगी

चौधरी कुम्भाराम जी आर्य, संसद् सदस्य, जयपुर (राजस्थान)

मैं लोकनायक श्री जयनारायण जी व्यास को हठयोगी मानता हूं। हठयोगी से मेरा अभिप्राय: यह है कि वे जिस हठ पर डट जाते थे, उस पर से उनको हटाना असम्भव हो जाता था। साहस व साधना द्वारा उनमें हठयोग की जो धारा प्रवाहित हुई, वह उनके लिये नैसर्गिक बन गई और वह समस्त जीवन व्यवहार में स्पष्ट झलकती रहती थी। इसका लाभ उनको यह मिला कि विपरीत स्थितियों का सामना करने, संघर्षों से जूझने और संकटों को झेलने पर भी वे सदा प्रसन्न मुद्रा में ही रहते थे। यह गुण अत्यन्त दुर्लभ है। यही कारण था कि बड़ी-से-बड़ी असफलता भी उनको निराश नहीं कर सकती थी और सफलता प्राप्त होने पर वे अपना सन्तुलन नहीं खोते थे। इस प्रकार उनके जीवन का जो विकास हुआ और उन्होंने जो यज्ञ सम्पादन किया, उससे वह हम सबके लिये अनुकरणीय बन गये। इस हठयोगी के ही कारण वह अत्यन्त विपरीत स्थितियों में भी एक चुनौती ही बने रहे और उनको हम हर कदम पर चुनौती के ही रूप में देखते हैं। वह अपनी बात और हठ के धनी रहे। स्थितियां बदल गईं, पर वे नहीं बदले। उन्होंने जिस नवीन इतिहास का निर्माण किया, वह सदैव हमको आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहेगा। उनका व्यक्तित्व अपने ही ढंग का निराला था। उसकी किसी के साथ तुलना नहीं की जा सकती।

उनका नाम तो बहुत पहले ही सुन रखा था और समाचार-पत्रों से उनकी गतिविधि की भी कुछ जानकारी मिलती रहती थी। आर्यसमाजी संस्कारों के कारण मुझमें जो सामाजिक भावना पैदा हुई, उसीसे मेरा झुकाव राजनीति की ओर हुआ। देशी राज्यों का वातावरण कुछ ऐसा दमघोटू था कि उसके प्रति मन में रोष व असन्तोष बना रहता था। बीकानेर राज्य का वातावरण और भी अधिक दमघोटू था। जब अलग-अलग राज्यों में प्रजा के राजनीतिक संगठन अलग-अलग नामों से बनने शुरू हुए, तब बीकानेर में भी उसके लिये प्रयत्न किये गये। परन्तु बीकानेर में महाराजा गंगासिंह जी की नीति तो कुछ ऐसी कठोर थी कि उन्हें पुस्तकालय तथा वाचनालय तक का स्थापित किया जाना सहन न होता था। उनमें भी उनको राजद्रोह दीख पड़ता था। इस दमघोटू वातावरण के ही कारण राज्य में खादी और गांधी टोपी तक पहनना पुलिस को अखरता था। कोई खादीधारी राज्य में किसी भी स्टेशन पर उतरता, तो पुलिस उसके पीछे लग जाती। साधारण-सी बात पर निर्वासन या नजरबन्दी मामूली बात थी। दो बार राज्य प्रजामण्डल कायम करने के प्रयत्न किये गये, परन्तु उनको गैर-कानूनी ठहरा दिया गया।

अन्त में १९४५ में हम लोगों ने पूरी दृढ़ता के साथ राज्य प्रजामण्डल की

स्थापना करके उनके प्रतिनिधि के रूप में हम १४ साथी उदयपुर में अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् के अधिवेशन में सम्मिलित हुए, उस अधिवेशन पर व्यास जी के साथ मेरा राजनीतिक क्षेत्र में पहला सार्वजनिक परिचय हुआ। राज्य सरकार को हम लोगों का उदयपुर जाना ऐसा अखरा कि श्री रघुवरदयाल जी को हमारे नेता मानकर लूणकरणसर में एक मकान में नज़रबन्द कर दिया गया और बाद में राज्य से निर्वासित कर दिया गया।

दूसरे जो सज्जन उस समय राज्य से निर्वासित किये गये, वे थे राव माधोसिंह जी। माधोसिंह जी आर्यसमाजी विचारों के थे और गोगामंडी में कस्टम विभाग में थानेथार के पद पर नियुक्त थे। गोगामंडी में एक हिन्दू देवता स्थापित था; किन्तु उस पर कब्ज़ा था मुसलमानों का। गोकशी के मामले पर वहां कुछ ऐसी परिस्थिति पैदा हुई कि राज्य सरकार ने मुसलमानों का पक्ष लिया और उसके विरोध में राव माधोसिंह ने सरकारी नौकरी छोड़ दी। उन्होंने गंगानगर में राज्य प्रजामण्डल की शाखा स्थापित करके बड़े उत्साह से सदस्य बनाये और उसका काम शुरू कर दिया। वे हमारे साथ प्रतिनिधि के रूप में उदयपुर गये और लौटने पर उनको गंगानगर से निर्वासित कर दिया गया।

नव स्थापित राज्य प्रजामण्डल को भी गैर-कानूनी ठहरा दिया गया। तब संघर्ष की-सी जो स्थिति पैदा हुई, उसमें व्यास जी ने हमको बड़ा सहारा दिया और उन्हीं के प्रोत्साहन से हम लोग कुछ-न-कुछ करने में लगे रहे।

दूसरी जिस घटना के कारण हम लोग व्यास जी के अति निकट सम्पर्क में आये और जिसके कारण व्यास जी के प्रति बीकानेर के कार्यकर्त्ताओं का आकर्षण बढ़ा, वह थी लोकप्रिय मंत्रिमण्डल कायम होने पर पैदा हुई संकटापन्न स्थिति। उसमें व्यास जी ने हमको बड़ा सहारा दिया। लोकप्रिय मंत्रिमण्डल के आपसी मतभेद के कारण श्री रघुवरदयाल जी को मंत्रिमण्डल में शामिल नहीं किया गया था। अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् के अन्तर्गत राजस्थान के लिये जिस रीजनल कौंसिल का गठन किया गया था, उसके मन्त्री उन दिनों में पण्डित हीरालाल जी शास्त्री थे। उन्होंने और कौंसिल के अन्य कुछ सदस्यों ने श्री रघुबरदयाल जी का पक्ष लिया। उस समय के मतभेद से महाराजा सारदूलसिंह जी ने लाभ उठाना चाहा और लोगों पर दबाव डाला कि लोकप्रिय मन्त्रिमण्डल के सभी सदस्य इस्तीफा दे दें। हम लोगों ने इस्तीफा देने से इन्कार कर दिया। महाराजा साहब ने यहां तक आश्वासन दिया कि वे पुनः इस्तीफा देने वाले मन्त्रियों को ही दुबारा नियुक्त कर देंगे और इस्तीफा देने से मन्त्रिमण्डल में वे कोई हेर-फेर नहीं करेंगे। लेकिन, हम लोगों ने स्पष्ट कह दिया कि लोगों से छिपकर अंधेरे में ऐसा कोई गुप-चुप समझौता करना हमें स्वीकार नहीं है। तब महाराजा साहब और हम लोग आबू गये हुए थे। वहां ही यह सब चर्चा चल रही थी। व्यास जी वहां पहुंचे और महा-

राजा साहब से मिलकर उन्होंने उस संकट को इस ढंग से दूर किया कि इस्तीफा देने का सवाल ही पैदा नहीं हुआ। उन्होंने पूरी दृढ़ता व बुद्धिमत्ता से उस संकट को दूर करते हुए हम लोगों के प्रति जिस आत्मीयता का परिचय दिया, उससे उनके साथ हमारे पारस्परिक सम्बन्ध और अधिक मधुर व दृढ़ बन गये।

१९४९ में राजस्थान संघ बनने पर मन्त्रिमण्डल के निर्माण के सम्बन्ध में प्रदेश कांग्रेस के संगठन व शासन में जो संघर्ष शुरू हुआ, उसमें हम बीकानेर के कांग्रेस-जनों की सहानुभूति व्यास जी के साथ होनी स्वाभाविक थी। उन्होंने १९३२ के षड्यंत्र के मुकदमे के समय से ही हर मामले में हमारा साथ दिया। उस संघर्ष में सबसे पहला कदम यह उठाया गया था कि प्रदेश कांग्रेस में उसके तत्कालीन अध्यक्ष श्री गोकुलभाई भट्ट के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव लाया जाय। उनके त्यागपत्र देने पर व्यास जी उसके अध्यक्ष चुने गये। तब प्रदेश कांग्रेस कमेटी की आर्थिक स्थिति इतनी अधिक चिन्ताजनक थी कि उस पर ११ हज़ार रुपयेका कर्ज़ था और कार्यालय के नाम पर केवल एक फटी-सटी चटाई व टूटी-फूटी टेबल व्यास जी के सुपुर्द की गई थी। प्रश्न यह था कि प्रदेश कांग्रेस का काम कैसे चलाया जाय और कैसे उसका कर्ज़ चुकाया जाय। हम बीकानेर के कांग्रेसजनों ने व्यास जी को अपने यहां निमंत्रित किया और विराट् सार्वजनिक अभिनन्दन समारोह में २१ हज़ार रुपये की थैली भेंट की। बीकानेर पर उनका जो ऋण था, उसके प्रति हमारी यह एक छोटी-सी कृतज्ञताभरी श्रद्धांजलि ही थी। इस समारोह का परिणाम यह हुआ कि बीकानेर डिवीजन में सर्वत्र व्यास जी का नाम गूंजने लगा। उन पर जनवरी, १९५० में जो मुकदमा चला, उसमें भी बीकानेर वालों ने व्यास जी का पूरी तरह हाथ बंटाया। किशनगढ़ के उपचुनाव में उनके लिये बीकानेर के छोटे-बड़े सभी कार्यकर्त्ताओं ने लगभग एक मास का समय मेरे साथ किशनगढ़ में ही बिताया। हम लोगों ने अपने खर्च का भार व्यास जी पर नहीं पड़ने दिया। हम सब की भावना यह थी, जैसे कि वह उप-चुनाव बीकानेर का ही था।

राजस्थान के मुख्यमन्त्रीकाल में मैं उनका एक सहोयोगी था और मैंने कितनी ही बार यह अनुभव किया कि वह नौकरशाही ढांचे में पले हुए और केन्द्र से राज-स्थान पर थोपे गये पुराने आई० सी० एस० तथा नये आई० ए० एस० के साहबों के रौब को सहन नहीं करते थे। वे उनकी धौंस नहीं चलने देते थे। इसी कारण उनके साथ उनका संघर्ष बराबर बना रहता था। केन्द्र में प्रधान मंत्री पं० जवाहर-लाल जी नेहरू के साथ भी कभी-कभी उनकी झपट हो जाती थी। एक बार तो उन्होंने पण्डित जी से त्यागपत्र देने की भी बात कह डाली थी। केन्द्र से भेजे गये 'एडवाइजरों' के साथ उनकी कभी न पटती थी और झुंझलाकर वे यह कहते सुने जाते थे कि यह क्या शासन है। शासन में रहते हुए भी उन्होंने अपने हठयोगी स्वभाव का ही परिचय दिया और अन्त में उससे अलग हो गये; झुके नहीं। यही

स्थिति तब पैदा हुई, जब उन्होंने कांग्रेस में व्याप्त भ्रष्टाचार के विरुद्ध अभियान शुरू किया।

२७

जय व्यास जी

समाज सेवी श्री बजरंगलाल जी लाठ, १०/१/२ सैयद साली लेन, कलकत्ता

१९४२ के लगभग व्यास जी के प्रथम दर्शन उत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के अवसर पर काशी में हुए थे। उसके बाद वे कलकत्ता आये और संयोगवश भाई इन्द्रचन्द्र जी केजड़ीवाल के यहां ५२ जकरिया स्ट्रीट में ठहरे। तब उनसे बातचीत का अवसर मिला। फिर तो उनके साथ ऐसा निकट का सम्बन्ध हो गया कि मैं उनके कलकत्ता स्थित मंत्री का काम करने लग गया। वे ५२ जकरिया स्ट्रीट में ही ठहरने लग गये। कलकत्ता में उनका जैसा कार्यक्रम मैं तैयार करता, वैसा ही करते। जयपुर या दिल्ली जाने पर जहां वे होते वहां उनका ही सबसे अधिक आकर्षण रहता। मैं उनके ही यहां सबसे पहले पहुंचता। मेरे राजनीतिक विचार भी बहुत कुछ उनके जैसे ही हो गये थे। इस तरह उनके साथ बहुत समीप का सम्बन्ध हो गया था और वह सम्बन्ध चला २० वर्ष से भी अधिक। राजस्थान की राजनीति के बारे में वे खुलकर बातचीत किया करते थे। सार्वजनिक सभाओं में कलकत्ता आगमन पर मित्रों को बुलाकर अपने विचार स्पष्ट शब्दों में प्रकट किया करते थे। इस तरह व्यास जी भीतर-बाहर एक से ही थे और अपने विचारों तथा भावनाओं को प्रकट करने में कभी कोई आनाकानी नहीं करते थे। चाहे राजस्थान के मुख्यमंत्री हों या राजस्थान कांग्रेस के अध्यक्ष; उनके मन में यह कभी नहीं आया कि मुझे ऐसे ऊंचे पदों पर हमेशा बने रहना है। अवांछनीय मित्रों को भी निभाने में उन्हें कुछ संकोच या भय न होता था। वे प्राय: कहा करते थे कि मैं जानता हूं कि मेरे घर में चोर घुसा हुआ है, परन्तु मुझसे यह नहीं हो सकता कि मैं शोर करूं और उसे पकड़वा दूं। जब नेहरू जी ने दिल्ली बुलाकर उनसे यह कहा कि आपका हमारा इतना पुराना सम्बन्ध है, फिर भी आप मुझसे बिना शिकायत किये कांग्रेस के विरुद्ध बोलते हैं, तब उन्होंने उत्तर दिया कि मैं अपनी प्यारी कांग्रेस को भ्रष्ट होने से बचाने की चेष्टा में हूं। अयोग्य लोग कांग्रेस में आकर संस्था को खराब करने में लगे हुए हैं और मैं चुप बैठा रहूं, यह कैसे हो सकता है? पंडित जी ने निरुत्तर होकर कह दिया कि आप ठीक ही कह रहे हैं। कांग्रेस में

रहते हुए भी एसेम्बली तथा लोकसभा के लिये खड़े किये गये उन उम्मीदवारों का उन्होंने जमकर विरोध किया, जो उनकी सम्मति में अयोग्य थे। कांग्रेस हाईकमान ने उन पर नियंत्रण एवं अनुशासन भंग करने की कार्रवाई करने का निश्चय किया। कांग्रेस में व्याप्त भ्रष्टाचार के विरुद्ध जो अभियान उन्होंने शुरू किया था, यदि उसको स्वीकार कर लिया होता तो कांग्रेस में भ्रष्टाचार की समस्या ने ऐसा विकट रूप धारण न किया होता। आज श्री गुलजारीलाल नन्दा दो वर्ष में भ्रष्टाचार दूर करने और न कर सकने की स्थिति में सार्वजनिक जीवन से संन्यास लेने की जो बात कह रहे हैं, वह बहुत अटपटी-सी मालूम होती है। यदि कांग्रेसी नेताओं ने व्यास जी की चेतावनी पर समय रहते ध्यान दिया होता तो इस बुराई ने आज असाध्य प्रतीत होनेवाला रूप धारण न किया होता।

◇ ◇ ◇

दीखने में व्यास जी कुछ ऐसे कठोर जान पड़ते थे कि कांग्रेस के श्री नेहरू सरीखे बड़े से बड़े नेता भी उनको अयोग्य उम्मीदवारों का विरोध करने में रोक न सके; परन्तु मुलायम ऐसे थे कि कोई बात समझ में आ जाने पर उसको स्वीकार करने में उनको एक क्षण भी न लगता था। 'वज्रादपि कठोराणि मृदुनि कुसुमादपि' की उक्ति उनपर सोलह आने चरितार्थ होती थी। उनके मुलायम स्वभाव को प्रकट करने वाली एक आपबीती घटना मैं यहां देना चाहता हूं। सांकड़ा केन्द्र का काम सम्भवत: उनका सर्वाधिक प्रिय था और इसमें सन्देह नहीं कि वह कार्य उनके सार्वजनिक जीवन की सबसे बड़ी सफलता थी। वहां उन्होंने मानव के हृदय परिवर्तन का वह महान् व अद्‌भुत प्रयोग सफल कर दिखाया था, जिसमें आचार्य विनोबा भी मध्यप्रदेश में सफल न हो सके थे। वहां के डाकू क्षेत्र में उन्होंने मानव सेवा की वह धूनी रमाई थी, जिससे पुराने खूंखार डाकुओं ने भी उनके सामने आत्मसमर्पण कर दिया था। जिस क्षेत्र में दिन के उजाले में भी यात्रा करना सुरक्षित नहीं था उसमें उनकी साधना के फलस्वरूप रात्रि के घोर अन्धकार में अकेले जाने पर भी किसी प्रकार के संकट की अब कोई संभावना नहीं रही। वहां के उस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिये व्यास जी कलकत्ता में एक बार चन्दा करने आये थे और चन्दा करना था केवल दस हज़ार रुपये का। कांग्रेस महासमिति ने उन्हीं दिनों उनको बिहार कांग्रेस के सम्बन्ध में एक गम्भीर उत्तरदायित्व सौंपा हुआ था। बिहार कांग्रेस की समस्या भी उत्तर प्रदेश कांग्रेस की पेचीदी समस्या से कुछ कम पेचीदी न थी। १९५७ के आम चुनावों में कांग्रेसी उम्मीदवारों का चयन करने के लिये उनकी सिफारिश करने का गुरुतर और गम्भीरतर कार्य उनको सौंपा गया था। मेरे मन में यह विचार पैदा हुआ कि कहीं चन्दा देने वाले सज्जन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में उन पर अपने मन चाहे लोगों की सिफारिश करने के लिये ज़ोर न डालें और वे किसी के भुलावे में न आ जायें। मैं यह नहीं चाहता था कि ऐसे

गम्भीर दायित्व को निभाने में उन पर कोई निराधार सन्देह में भी उंगली उठा पाये। मैंने उनको फोन किया, तो वे दोपहर की भरी गर्मी में ही मेरे यहां आ पहुंचे और फर्श पर ही यह कहते हुए बैठ गये कि गर्मी में यहीं अच्छा है, कुछ बिछाने की आवश्यकता नहीं है। हम दोनों फर्श पर बैठ गये।

मैंने बिना किसी संकोच के अपने मन के भाव उन पर प्रकट कर दिये। मैं चकित रह गया कि वे एकाएक मेरी बात से सहमत हो गये। उन्होंने कहा कि तुम ठीक कह रहे हो। मुझे इस समय चन्दा जमा नहीं करना चाहिए। फिर उन्होंने यह भी कहा कि मेरे सरीखे व्यक्ति के लिये इतना बड़ा कार्य चला सकना बड़ा दुष्कर है। मेरी कठिनाई यह भी है कि चन्दा देनेवालों के साथ मेरे मनोभाव नहीं मिलते। चन्दा मांगने से कुछ न कुछ तो संकोच खाना ही पड़ता है और हीन भावना पैदा हुए बिना नहीं रहती। इसमें संदेह नहीं कि सांकड़े के डाकुओं को डकैती से हटाकर मानवोचित तरीके से जीवन-यापन के काम में लगाना बहुत बड़ी देशसेवा है और मैं उनके भाव बदलने में कुछ सफल भी हुआ हूं; परन्तु चन्दा मांगने के धन्धे में सिद्धहस्त न होने के कारण मैं धीरे-धीरे इस कार्य को गवर्नमेंट के सुपुर्द कर देना चाहता हूं।

दस हज़ार कोई बहुत बड़ी रकम न थी और उसके लिये व्यास जी कुछ राजस्थानी सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं के निमंत्रण पर ही कलकत्ता आये थे; बात की बात में वह रकम जमा की जा सकती थी; फिर भी बिना चन्दा किये कलकत्ता से बिहार लौट गये। ऐसी विशालता तथा महानता मुझे फिर दुबारा कहीं और दीख नहीं पड़ी। मेरे हृदय में यह जम गया कि व्यास जी अपने को संदेह से सर्वथा दूर रखने के लिये कितने जागरूक अथवा सावधान हैं। फिर कुछ दिनों बाद उनके कलकत्ता आगमन पर अकेले दानवीर श्री सोहनलाल जी दुगड़ ने दस हज़ार रुपयों की राशि उन्हें उस सांकड़े के कार्य के लिये अपने घर पर बुलाकर प्रदान की। उस अवसर पर उन्होंने व्यास जी तथा उनके कुछ मित्रों को बुलाकर एक भोज भी दिया।

◇ ◇ ◇

अपने दीर्घकालीन सार्वजनिक जीवन में मुझे न केवल राजस्थान, अपितु अन्य राज्यों के अनेक नेताओं के भी कम अधिक सम्पर्क में आने का सुअवसर प्राप्त हुआ है, मैं यह बिना किसी सन्देह और संकोच के कह सकता हूं कि मुझे व्यास जी सरीखा, सच्चरित्र, निर्मोही तथा निर्भीक दूसरा कोई दीख नहीं पड़ा। वे अहोरात्र केवल देश के ही बारे में चिन्तन किया करते थे। उस फक्कड़ ने अपने या अपने परिवार के बारे में कभी सोचा हो; ऐसा मुझे एक बार भी मालूम नहीं हुआ। उनकी घरेलू आर्थिक स्थिति शायद ही कभी संतोषजनक व चिन्तारहित रही होगी, इस पर भी कलकत्ता आकर उन्होंने कभी किसी से उसके बारे में चर्चा

तक नहीं की। मैंने राजस्थान के नेताओं से भी यह वात कभी छिपाई नहीं कि मुझे राजस्थान में यदि किसी विशिष्ट व्यक्ति के दर्शन हुए तो वे हैं एकमात्र श्री जयनारायण व्यास। दूसरा कोई उनके पाये तक नहीं पहुंच सका। भले ही कोई राजस्थानी नेता मेरी इस बात से सहमत हो या न हो अथवा मुझपर विक्षुब्ध ही क्यों न हो; मैंने अपनी अन्तरात्मा की इस निश्चित धारणा को प्रकट करने में कभी संकोच नहीं किया और भविष्य में भी उसको प्रकट करने में मुझे संकोच न होगा। मुझे उनकी एक और जिस विशेषता ने उनकी ओर इतना अधिक आकृष्ट किया; वह यह थी कि वे ऊपर से नीचे तक सच्चे मारवाड़ी थे और अपने को मारवाड़ी कहने में वे कोई हीनता या दीनता अनुभव न करते थे। मारवाड़ी चरित्र और उसके गुणों एवं विशेपताओं के वे ज्वलन्त प्रतीक थे।

◇ ◇ ◇

व्यास जी के कलकत्ता के मित्रों व प्रशंसकों की एक वात मन-ही-मन में रह गई। हमारी यह प्रवल अभिलापा थी कि कलकत्ता में निमंत्रित करके उनके अनुकूल उनका विराट् सार्वजनिक अभिनन्दन किया जाय और उनको एक अभिनन्दन ग्रन्थ तथा थैली भेंट की जाय। कुछ मित्रों का परामर्श यह हुआ कि अभिनन्दन ग्रन्थ के स्थान पर उनकी आत्मकथा प्रकाशित करके इस अवसर पर उनको भेंट की जाय और उनसे आत्मकथा लिखने के लिये अनुरोध किया जाय। उन्होंने उसको लिखना भी शुरू कर दिया था। विधि का विधान कैसा कठोर है कि हम योजना वनाते ही रह गये और वे एकाएक चल वसे।

जव भी कभी उनकी याद आती है तव जी भर आता है और हृदय कुछ वैंठने-सा लगता है, मन ही मन यह सोचता रह जाता हूं कि कैसा विलक्षण था उनका व्यक्तित्व और कैसे विस्मयजनक थे उनमें समाये हुए सद्‌गुण...जय व्यास जी!

प्रकरण २

जीवन झांकी

१

अनमोल रत्न

देशभक्त सेठ आनन्दराज जी सुराणा, इंडो यूरोपा ट्रेडिंग कम्पनी, चांदनी चौक दिल्ली

भाई जयनारायण जी के साथ मेरा सम्बन्ध पचास वर्ष पुराना था। वह मेरे छोटे भाई बच्छराज सुराणा के बचपन के साथी थे। व्यक्तिगत सम्बन्ध के अलावा उनका मेरा सार्वजनिक जीवन में भी बड़ा गहरा सम्बन्ध रहा। हम दोनों की सार्वजनिक जीवनधारा प्रायः संयुक्त रूप में आजीवन प्रवाहित होती रही है। मेरे स्वर्गीय पूज्य पिता सेठ चांदमल जी सुराणा को जोधपुर में सार्वजनिक जागृति एवं आन्दोलन के सूत्रपात करने का श्रेय प्राप्त है। उन्होंने 'श्री मारवाड़ हितकारिणी सभा' की स्थापना १६२१ में की। स्थापना के बाद १६२५ में जब उसका पुनर्गठन किया गया, तब व्यास जी उनके दाहिने हाथ थे। वर्षों पिताजी उसके अध्यक्ष और व्यास जी मंत्री रहे। पिताजी स्वभावतः सेवाभावी, दयालु और श्रद्धालु थे। दीन-दुखियों और संकटापन्न स्त्री-पुरुषों की तो क्या, पशु-पक्षियों तथा जीवमात्र के प्रति उनका हृदय दया से पसीजा रहता था। सम्भवतः इसी कारण उनमें सार्वजनिक लोकसेवा की भावना भी इस रूप में जागृत हुई कि उन्होंने मारवाड़ अथवा जोधपुर राज्य में सेवा की धूनी ही रमाई और उसी का परिणाम था 'श्री मारवाड़ हितकारिणी सभा' की स्थापना। व्यास जी पुष्करणा समाज में समाज-सुधारक युवकों की एक टोली बनाकर समाज-सेवा के काम में जुटे थे। इसी उद्देश्य से उन्होंने 'पुष्करणा युवक मण्डल' का गठन किया था। दोनों की सेवा भावना का 'श्री मारवाड़ हितकारिणी सभा' को संगम ही कहना चाहिए। उसने अपने स्थापना काल से ही लोक सेवा के जो महत्त्वपूर्ण उल्लेखनीय काम किये, उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं :

१. तौल के सम्बन्ध में आन्दोलन और फिर से पक्का तौल जारी करवाना।

२. मादा पशुओं की निकासी पर से राज्य की आमदनी को बढ़ाने के लिये रोक हटा दी गई थी। हज़ारों गाय, बकरी, भेड़ आदि मादा पशु अजमेर, नसीरा-

वाद, पालमपुर तथा वोड़ीसा आदि छावनियों और अन्य स्थानों पर कसाईखानों के लिये ले जाये जाने लगे। उन पर निकासी टैक्स वसूल किया जाता था। उस रोक को फिर से लगवाने के लिये जवरदस्त आंदोलन किया गया और महाराज के महल पर धरना दिया गया। तीन दिन में ही वह आंदोलन सफल हो गया। फिर से रोक लगा दी गई।

३. धान की निकासी वन्द करवाई गई। और जनता को ठीक भाव में धान उपलब्ध होने लगा।

४. राज्य में शासन सुधारों और उत्तरदायी शासन कायम करने के लिये आंदोलन भी किया गया, जिसने जल्दी ही राजव्यापी आन्दोलन का रूप धारण कर लिया।

◇ ◇ ◇

वाइसराय के आगमन से पूर्व महाराज को इस वहकावे में डाल दिया गया कि आन्दोलन करने वाले गांधीजी के साथ हैं। इस कारण सर्व श्री चांदमल जी सुराणा, प्रतापचन्द सोनी एडवोकेट और शिवकरण जी जोशी को राज्य से निर्वासित कर दिया गया। १३ मास वाद निर्वासन का हुक्म रद्द किया गया और जव वे वापस आये, तो जनता ने वड़ा ही शानदार हार्दिक स्वागत किया। सर्वश्री जयनारायण व्यास, अव्दुल रहमान, भंवरलाल सराफ, मुझे व कुछ अन्य साथियों को दस नम्वर में दर्ज किया गया कि वे रात को अपने घरों में नहीं सो सकते। उनको रात को साढ़े नौ वजे पुलिस थाने में आकर सोना होगा अथवा म्युनिसिपल सीमा से वाहर जाना होगा। दिनभर खुफिया पुलिस पीछे लगी रहती।

◇ ◇ ◇

कुछ समय वाद १९२७-२८ में भाई श्री जयनारायण व्यास, श्री भंवरलाल सराफ और मुझे गिरफ्तार करके शहर से दूर जंगली किलों में अलग-अलग वन्द कर दिया गया। फिर तीनों को नागौर के किले में लाकर १२४ (अ) की धारा में राजद्रोह व षड्यन्त्र का मुकदमा चलाया गया। मुकदमे के लिये एक स्पेशल ट्रिव्यूनल की नियुक्ति की गई। उस पर लाख-सवा लाख रुपया खर्च किया गया होगा। पूज्य वापू ने अपने विश्वस्त साथी राष्ट्रीय भिक्षुक श्री मणिलाल जी कोठारी को भेजकर यह परामर्श दिया कि हमें मुकदमे में अपनी सफाई पेश नहीं करनी चाहिए और जो सजा दी जाय, वह सहर्ष स्वीकार कर लेनी चाहिए। इसलिए हमारी ओर से कोई सफाई पेश नहीं की गई। हम तीनों ने कह दिया कि न्याय के नाटक में हमें कोई हिस्सा नहीं लेना है, जो सजा देनी हो दे दी जाय। तीनों को पांच-पांच साल की सजा, जुर्माना और जुर्माना न देने पर और कुछ सजा का हुक्म सुनाकर जोधपुर सेण्ट्रल जेल में भेज दिया गया। तीनों को डण्डा-वेड़ी पहना दी गई। अलग-अलग कोठरियों में वन्द कर दिया गया। वड़ी सख्तियां इसलिए की गईं कि हम

घबराकर माफी मांग लें। एक मास बाद हमें 'ए' क्लास दे दी गई और सख्तियां बन्द कर दी गईं। तीनों का खाना व्यास जी स्वयं बनाते और बड़े प्रेम व आग्रह से खिलाते। खाना बनाने में व्यास जी बड़े दक्ष थे। सरल, स्नेही, मिलनसार और ऐसे सेवा-भावी थे कि हम उनके व्यवहार में यह भूल ही गये कि हम लोग जेल में सजा काट रहे थे।

हमें पढ़ने के लिये केवल धार्मिक पुस्तकें दी जाती थीं। व्यास जी ने कुरान शरीफ पढ़ने को मांगा। इनकार करने पर हम तीनों ने भूख-हड़ताल कर दी। तिरेसठ घण्टे की भूख-हड़ताल के बाद कुरानशरीफ दिया गया। सब धर्मों के प्रति व्यास जी की समदृष्टि प्रकट करने के लिये यह छोटी-सी घटना विशेष महत्त्व रखती है। गांधी इरविन समझौता होने पर हमें भी डेढ़ वर्ष बाद छोड़ दिया गया। सम्भवतः राजस्थान की जन-जागृति और जन-आन्दोलन के इतिहास में अपने ढंग का यह पहला ही संगीन मुकदमा था और इस मुकदमे के बाद ही बीकानेर में राजद्रोह व षड्यंत्र का वैसा दूसरा मुकदमा चलाया गया था। मारवाड़ जोधपुर में इस मुकदमे की प्रतिक्रिया यह हुई कि राजनीतिक आन्दोलन की जड़ें जम गईं और राजनीतिक जागृति का संदेश दूर-दूर तक पहुंच गया। यह प्रमाणित हो गया कि निर्दोष व्यक्तियों का त्याग तपस्या तथा कष्ट सहन व्यर्थ नहीं जा सकता। जेल से छूटने पर जनता ने बड़ा ही शानदार स्वागत किया और हम लोग राजनीतिक आन्दोलन में प्राणपन से जुट गये।

◇ ◇ ◇

जेल से छूटने के बाद हम तीनों कुछ अन्य साथियों के साथ कराची कांग्रेस के अधिवेशन में शामिल हुए। वहां रायबहादुर सेठ शिवरतन जी मोहता के अतिथि रहे। मारवाड़ में राजनीतिक आन्दोलन चलाने के सम्बन्ध में रात-दिन विचार होता और तरह-तरह की योजनाएं बनाई जातीं। व्यास जी और मुझको कराची से लौटने पर जोधपुर से फिर निर्वासित कर दिया गया। अजमेर और ब्यावर रहकर हम लोगों ने मारवाड़ तथा राजस्थान के अन्य देशी राज्यों में राजनीतिक जागृति पैदा करने का काम किया। जयपुर, बीकानेर तथा अन्य स्थानों के आंदोलनों में विशेष दिलचस्पी ली। जयपुर में प्रजामण्डल की स्थापना की गई। बीकानेर के षड्यन्त्र की देख-रेख की गई। व्यास जी अजमेर मेरवाड़ा के कांग्रेस के काम में पूरी तरह रम गये। राजस्थान में केवल अजमेर मेरवाड़ का ही क्षेत्र सीधा अंग्रेज़ी राज के अन्तर्गत था। इसलिए कांग्रेस के निश्चय के अनुसार केवल उसी क्षेत्र में कांग्रेस कमेटी का गठन किया जा सकता था। व्यास जी उसमें इतना रम गये कि १९३२ में महात्मा जी के दूसरी गोलमेज़ परिषद् से लन्दन से लौटने पर नमक सत्याग्रह का जो दूसरा दौर शुरू हुआ, उसमें वे एक बार फिर जेल चले गये। मैं अपने व्यापार व्यवसाय का संचालन करने के लिये दिल्ली चला आया था और व्यास

जी के काम-काज में पूरा हाथ बंटाते हुए आर्थिक सहायता की व्यवस्था मुख्य रूप से किया करता था।

◇ ◇ ◇

कराची कांग्रेस पर हम लोगों ने देशी रियासतों के जन आन्दोलन के लिये बम्बई से दैनिक पत्र शुरू करने का विचार किया। व्यास जी कुछ अजीब धुन, लगन व संकल्प के कार्यकर्त्ता थे। जो सूझ जाता, उसको मूर्तरूप देने में सर्वस्व होम देते थे। बम्बई जाकर उन्होंने दैनिक पत्र के प्रकाशन के विचार को बिना पूरी तैयारी के ही मूर्तरूप दे दिया और 'अखंड भारत' नाम से १९३५ में दैनिक पत्र निकालना शुरू कर दिया। बीकानेर से 'पुष्करणेन्दु' और ब्यावर से 'तरुण राजस्थान' के नाम से निकलने वाले पत्रों का सम्पादन वे पहले कर चुके थे। दैनिक 'अखंड भारत' के लिये व्यास जी ने जो त्याग, तपस्या व साधना की और जैसा कष्टमय जीवन बिताया, वैसा कोई दूसरा उदाहरण पत्रकार जगत में मिलना मुश्किल है। व्यास जी की कठोरतम साधना के बावजूद पहले छह मास और दुबारा एक वर्ष चलकर 'अखंड भारत' बन्द हो गया। व्यास जी के सभी साथियों ने तन मन धन से उसमें सहयोग दिया। परन्तु इसका अनुभव किसी को न था कि दैनिक पत्र का निकालना सफेद हाथी को पालने के समान है।

◇ ◇ ◇

व्यास जी को उसके बन्द होने से बहुत बड़ी चोट लगी, परन्तु वे हार मानना जानते ही न थे। उन्होंने ब्यावर और दिल्ली को फिर से अपना मुख्य कार्य क्षेत्र बना लिया। ब्यावर से मारवाड़ी भाषा में पाक्षिक 'आगीवाण' प्रकाशित करना शुरू किया और मारवाड़ के जन आन्दोलन का वहां से ही पथ-प्रदर्शन करते रहे।

दिल्ली में उन्होंने अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् का कार्यालय मेरे चांदनी चौक के कार्यालय में ही कायम कर दिया। वे उसके वर्षों प्रधान मंत्री रहे और पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा डा० पट्टाभि सीतारमैया सरीखे नेताओं ने उसके अध्यक्ष पद को सुशोभित किया। मुझे कोषाध्यक्ष का कार्यभार सौंपा गया। व्यास जी के ही कारण मेरे यहां देशी राज्यों के कार्यकर्त्ताओं का सदा जमघट लगा रहता था। पीड़ित और निर्वासित कार्यकर्त्ताओं के लिये तो व्यास जी शरण व सहारा बने हुए थे और ऐसे लोग बिना संकोच के सीधे उनके पास दिल्ली चले आते थे। कितनी ही बार श्री नेहरू भी काम-काज की देख-रेख और उचित पथ-प्रदर्शन करने के लिये उन दिनों में परिषद् के कार्यालय में पधारे होंगे। व्यास जी का जैसा स्वभाव था, उनके कार्यालय में कोई दिखावा टीप-टाप या बनावट नहीं थी और वे किसी के स्वागत के लिये भी कोई आडम्बर नहीं रचते थे। नेहरू जी भी बड़े सरल भाव से पधारते और पूरी आत्मीयता से व्यास जी को उनके काम में सहयोग देते। दिल्ली में कुछ ही वर्ष रहकर व्यास जी ने सबसे बड़ा काम यह किया

कि प्रायः सभी रियासतों, विशेषतः राजस्थान, मध्यभारत तथा पंजाब और कश्मीर में लोकपरिषदों का जाल अनेक नामों से फैला दिया। सबको जन आन्दोलन की दृष्टि से एक सूत्र में पिरो दिया। देशी राज्यों की जो सेवा उन्होंने की वह कभी भी भुलाई नहीं जा सकती।

◇ ◇ ◇

दिल्ली में १९३५ में और उसके बाद १९४६ में उन्होंने दो बार देशी राज्य लोकपरिषद की ओर से अखिल भारतीय आधार पर विराट् सम्मेलन किये। १९३५ में किये गये सम्मेलन का उद्देश्य यह था कि अंग्रेज़ सरकार ने उस समय शासन सुधारों का जो मसविदा तैयार किया था, उसमें अंग्रेज़ी इलाकों में प्रान्तीय स्वायत्त शासन लागू किया गया था और देशी नरेशों का एक संघ बनाकर उनको प्रस्तावित भारतीय संघ में शामिल करने की भूमिका तैयार की गई। देशी राज्यों की जनता की इस प्रकार उपेक्षा कर दी गई कि जैसे उसका अपना अस्तित्व ही न था। इस स्थिति पर विचार करने के लिये १९३५ में वह सम्मेलन किया गया। १९४६ में भी देशी राज्यों की जनता के लिये वैसी ही उपेक्षापूर्ण स्थिति एक बार फिर पैदा कर दी गई थी। पाकिस्तान के निर्माण के साथ देश का विभाजन करके भारत को जो स्वराज्य दिया जा रहा था, उसमें देशी राज्यों के राजाओं की सर्वतंत्र स्वतंत्रसत्ता स्वीकार की गई थी और उनको यह अधिकार दिया गया था कि वे चाहें भारत में शामिल हों या पकिस्तान में; अथवा अपने राज्य को स्वतन्त्र राज्य घोषित कर दें। एक बार फिर देशी राज्यों की जनता का भाग्य निरंकुश राजाओं के स्वेच्छापूर्ण निर्णय पर छोड़ दिया गया था। वस्तुतः जनता के अस्तित्व एवं आत्म निर्णय के अधिकार को स्वीकार ही नहीं किया गया था। इस चिन्तापूर्ण स्थिति पर विचार करने के लिये १९४६ में आयोजित सम्मेलन का विशेष महत्त्व था। दोनों के मुख्य संयोजक अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् के प्रधान मंत्री के नाते व्यास जी ही थे और मुझे दोनों में उनके सहयोगी के नाते सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। ये दोनों सम्मेलन व्यास जी की सूझ-बूझ, जागरूकता, दृढ़ता और संगठन शक्ति के द्योतक थे। १९४६ के सम्मेलन में कश्मीर, बिलोचिस्तान तथा वहावलपुर आदि के प्रतिनिधि भी विशेषरूप में सम्मिलित हुए थे।

◇ ◇ ◇

व्यास जी जोधपुर के दीवान नियुक्त किये गये, राजस्थान संघ के मुख्यमंत्री पद पर आसीन हुए और दिल्ली में राज्यसभा के भी वर्षों सदस्य रहे। उस सबकी कहानी खुली पुस्तक की तरह सर्व विदित है। व्यास जी ऐसे मिलनसार थे कि जो कोई भी उनसे एक बार मिल लिया, वह उनके हँसमुख चेहरे को कभी भूल न सकता था। इसी कारण उन्होंने भारत के कोने-कोने में अपने हजारों दोस्त व

प्रशंसक वना लिये थे।

◇ ◇ ◇

मैं तो उनको विनोद में हमेशा गाड़िया लोहार ही कहा करता था। राजस्थान के गाड़िया लोहार तो वैलगाड़ियों पर अपनी घर-गृहस्थी और परिवार लिये जहां-तहां घूमते रहते हैं। परन्तु व्यास जी का तो 'उठाऊ डेरा ऐसा था कि वे अपनी सारी घर-गृहस्थी सिर पर उठाये फिरा करते थे। व्यास जी का कहीं कोई स्थिर ठिकाना न था। किसी गांव, शहर या मकान में टिककर रहना वे जानते ही न थे। हाथ व लंगोटी के सच्चे, निडर, निःस्वार्थ और निरभिमानी वे ऐसे थे कि उनकी जितनी प्रशंसा की जाय, कम है। अपरिग्रही भी वे कमाल के थे। संग्रह करना कुछ जानते ही न थे। राजस्थान मुख्यमंत्री के पद से हटने के कुछ ही दिन वाद उनकी आर्थिक स्थिति मैंने ऐसी देखी कि उनके पास रेल-भाड़ा तक न होता था।

◇ ◇ ◇

एक वात और लिख दूं कि उनको अधिकतर अपने निकट के ही साथियों से धोखा उठाना पड़ता था। मैंने वहुत दिन पहले उनको उनके ९ मित्रों की एक सूची वनाकर दी थी और कहा था कि उनसे उन्हें विशेष सावधान रहना चाहिए। वे ही कभी उनको धोखा देंगे। एक वार उस लिस्ट के वारे में उन्होंने मज़ाक में कहा कि उसमें एक नाम छूट गया है और वह नाम है 'जयनारायण व्यास'। यह था उनका भोलापन। अपने सच्चे हितैषियों की चेतावनी को भी वे इस प्रकार टाल देते थे और धोखा उठा लेने पर भी विश्वास नहीं खोते थे। विश्वासघात उनके स्वभाव से कोसों दूर था।

उनके निधन पर मुझे तो ऐसा लगा, जैसे कि मैंने अपना सव कुछ खो दिया हो। सचमुच ही हमने अनमोल नर रत्न खो दिया। वे सारे ही देश के ऐसे अमूल्य रत्न थे, जिन सरीखा दूसरा मिलना सम्भव ही नहीं है। अपने से नौ-दस वर्ष छोटे भाई से भी वढ़कर मित्र को खोकर मुझे जो सूनापन अनुभव होता है, उसकी व्यथा वेदना और पीड़ा को सहन करना मेरे लिये वड़ा ही कठिन है। ऐसा कोई साथी सौभाग्य से ही नसीव होता है।

२

दो भाइयों के स्नेह सम्बन्ध की कहानी

श्री कृष्ण गोपाल जी गर्ग, अजमेर (राजस्थान)

भाई श्री जयनारायण जी व्यास के साथ मेरा परिचय लगभग ३५ वर्ष पहले हुआ था। वह परिचय कुछ ऐसे घनिष्ट स्नेह सम्बन्ध में बदल गया कि हम दोनों के व्यक्तिगत ही नहीं; प्रत्युत पारिवारिक सम्बन्ध भी ऐसे बन गये कि हम दोनों को जानने वाले अधिकतर हमको एक ही परिवार का समझते थे। परन्तु जो लोग यह जानते थे कि 'व्यास' और 'गर्ग' एक परिवार के नहीं हो सकते, वे हमारे स्नेह सम्बन्ध को देख चकित रह जाते थे। इस घनिष्ट स्नेह सम्बन्ध की लम्बी कहानी कुछ ऐसी विस्तृत, व्यापक और घटनापूर्ण है कि मेरे लिये यह बड़ा मुश्किल है कि उसको मैं कहां से शुरू करूं और किस घटना को लिखूं, किसको न लिखूं।

'बामण' और 'बाणया'

इन पंक्तियों के पाठकों के लिये यह भी कुछ विस्मयजनक न होगा कि हम एक-दूसरे को व्यक्तिगत और अधिकतर सार्वजनिक रूप में भी 'बामण' और 'बाणया' शब्दों से ही पुकारा करते थे। यहां तक कि पत्र व्यवहार में भी इन्हीं शब्दों का प्रयोग किया जाता था। मैं उनका 'प्रिय बामण' और वे मुझको 'प्रिय बाणया' शब्दों से पत्र व्यवहार में सम्बोधन किया करते थे। उनके जोधपुर में प्रधान मंत्री और राजस्थान में मुख्यमंत्री बन जाने पर भी परस्पर इन्हीं शब्दों का प्रयोग होता था। ये शब्द हम दोनों की घनिष्टता के द्योतक हैं।

देशी राज्यों के अन्दोलन में मेरा कोई योग नहीं था और वे उसमें पूरी तरह रमे हुए थे। सार्वजनिक राजनीतिक जीवन की हलचलों में उनके साथ मेरा सम्पर्क कांग्रेस तक ही सीमित रहा। उनकी देशी राज्यों की राजनीतिक गतिविधि में मैं शामिल नहीं रहा। न तो उन्होंने कभी मुझे आग्रह किया और न मेरा ही उधर कभी झुकाव हुआ। बहुत थोड़े ही प्रसंग ऐसे आये होंगे, जब उनकी देशी राज्यों की राजनीतिक हलचलों में मैं शामिल हुआ। निःसन्देह १९४६ के बाद जब देशी राज्यों में उत्तरदायी शासन की शुरुआत के रूप में लोकप्रिय शासन का सिलसिला प्रारम्भ हुआ, तब व्यास जी के साथ मैंने जोधपुर की राजनीतिक हल-चलों में कुछ हिस्सा लिया। उसका मुख्य कारण व्यास जी के साथ कायम हुआ घनिष्ट सम्बन्ध ही था।

अजमेर जेल में

जहां तक मेरी स्मृति मेरा साथ देती है, दोनों की इस घनिष्टता की शुरुआत १९३२ में अजमेर जेल में हुई, जोधपुर जेल में पांच वर्ष की सजा काटते हुए व्यास जी को गांधी इरविन समझौते के कारण रिहा किया गया था। रिहा होने के बाद

व्यास जी कराची कांग्रेस में शामिल हुए और वहां से जोधपुर आने के वाद उनको राज्य से निर्वासित कर दिया गया। वे व्यावर आकर रहने लगे। गांधी जी के गोमेलज सम्मेलन से लन्दन से लौटने के वाद १६३२ में नमक सत्याग्रह का जो दूसरा दौर शुरू हुआ, उसमें गिरफ्तारियां हुईं। कांग्रेस के निश्चय के अनुसार देशी राज्यों में कांग्रेस का आन्दोलन चलाया नहीं जा सकता था और कांग्रेस कमेटियां भी कायम नहीं की जा सकती थीं। इस कारण राजस्थान और मध्याभारत के कांग्रेस जनों ने अजमेर मेरवाड़ा की कांग्रेस कमेटी को प्रादेशिक कांग्रेस कमेटी का रूप देकर अजमेर को सत्याग्रह का केन्द्र वना लिया। हम सवको अजमेर जेल में रखा गया। व्यास जी भी तव गिरफ्तार किये गये थे और अजमेर सेन्ट्रल जेल में रखे गये थे। जेल में वे सवसे अधिक हँसमुख, मस्त व लोकप्रिय व्यक्ति थे।

अजमेर मेरवाड़ा राजनीतिक सम्मेलन

उनके साथ काम करने का सबसे पहला अवसर मुझे अजमेर मेरवाड़ा राजनीतिक सम्मेलन में प्राप्त हुआ। इस सम्मेलन का आयोजन व्यावर में १६३७ के शुरू दिनों में किया गया था। पं० मुकुटविहारीलाल जी भार्गव उसके स्वागताध्यक्ष और व्यास जी तथा मैं उसके स्वागत मन्त्री थे। केन्द्रीय असेम्वली में कांग्रेस पार्टी के नेता श्री भूलाभाई देसाई की अध्यक्षता में वह सम्मेलन वड़ा सफल हुआ।

केन्द्रीय असेम्वली का चुनाव

१६३६ में कांग्रेस ने विधान सभाओं और केन्द्रीय असेम्वली के चुनाव लड़ने का जव निश्चय किया, तव अजमेर-मेरवाड़ा से केन्द्रीय असेम्वली के लिये केवल एक सदस्य चुना जाता था। उन दिनों में अजमेर मेरवाड़ा कांग्रेस कमेटी श्री अर्जुनलाल जी सेठी, वावा नरसिंह दास जी आदि के हाथों में थी। कांग्रेस में दूसरा दल पं० हरिभाऊ जी का समझा जाता था। व्यास पहले दल में और मैं दूसरे में शामिल थे। पहले दल ने केन्द्रीय असेम्वली के लिये पं० मुकुट विहारीलाल जी भार्गव को खड़ा किया। श्री रामनारायण जी चौधरी और हमारा विचार यह था कि राय साहव विश्वम्भर दास जी को खड़ा किया जाय। वे १६२६ के चुनाव में दीवान वहादुर श्री हरिविलास जी शारदा से केवल ६०-७० मतों से हारे थे। हमारा ख्याल यह था कि कांग्रेस की ओर से खड़े किये जाने पर उनके सफल होने में कोई कठिनाई न होगी। सर सेठ भागचन्द जी सोनी स्वतन्त्र उम्मीदवार थे। राय साहव विश्वम्भर दास जी को खड़ा करने में जव हमें सफलता न मिली, तव मैंने शारदा जी का समर्थन करना उचित समझा। दूसरी ओर से श्री भार्गव जी चुनाव के प्रचार अधिकारी व्यास जी थे। केवल उनको परेशानी में डालने के लिये हमने चुनाव से ठीक दो दिन पहले गांधी जी से इस आशय का तार मंगवा लिया कि भार्गव जी के लिये जो प्रचार किया रहा है, वह उचित नहीं है। चुनाव परिणाम दोनों ही पक्षों के प्रतिकूल निकला और सोनी जी चुनाव में सफल हुए। चुनाव का यह किस्सा केवल यह

दिखाने के लिये लिखा गया है कि परस्पर विरोधी पक्षों में काम करने पर भी व्यास जी के साथ मेरे स्नेह सम्बन्धों में कोई अन्तर पैदा नहीं हुआ।

पत्रकारिता के क्षेत्र में

व्यास जी को समाचार-पत्र निकालने की अजीब धुन थी। पुष्कर्णा युवक मण्डल का मासिक 'पुष्कर्णा युवक' बीकानेर, राजस्थान सेवा संघ का 'तरुण राजस्थान' ब्यावर, मारवाड़ी भाषा का पाक्षिक 'आगीवाण' ब्यावर, हिन्दी दैनिक 'अखंड भारत' बम्बई, हिन्दी साप्ताहिक 'लोकराज' दिल्ली और जीवन के अन्तिम दिनों में अंग्रेज़ी पाक्षिक 'पीप' इत्यादि कोई-न-कोई पत्र वे निकालते ही रहे। पत्रकारिता उनके लिये विशुद्ध रूप में मिशन था; धन्धा नहीं था। फिर भी वे उसके पीछे सब कुछ भूल जाते थे। बम्बई से दैनिक 'अखंड भारत' उन्होंने जिस लगन व धुन से निकाला था और जिस प्रकार मिशनरी भावना से उसको चलाया; उसका कुछ प्रत्यक्ष अनुभव मुझे प्राप्त है। उन दिनों में दैनिक पत्र निकालना और चलाना लोहे के चने चबाने के समान था। इसलिए दैनिक 'अखंड भारत' को चलाने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। कुछ तो अनुभवहीनता और कुछ ठीक-ठीक व्यवस्था न हो सकने के कारण आर्थिक कठिनाई सदा बनी ही रहती थी। व्यास जी के ही कारण सब कठिनाइयों पर विजय प्राप्त की जा सकी और आशा से भी अधिक समय तक उसको निभाया जा सका। बम्बई में वे बरलीचाल के उस क्षेत्र में रहते थे, जिसको 'स्लम एरिया' कहा जाता था। वहां रहने का कारण यह था कि बहुत सस्ते में काम चल जाता था। उनके पास घर-गृहस्थी का सामान इतना कम था कि देखकर आश्चर्य होता था कि उतने सामान से व्यास जी कैसे काम चलाते होंगे। दो-एक कप चाय पीकर दफ्तर चले जाते थे और चाय पर ही सारा दिन कभी रात भी निकाल देते थे।

अजमेर में म्युनिसिपल चुनाव

जोधपुर के राजनीतिक आन्दोलन तथा जीवन में रमे रहने पर भी व्यास जी अजमेर मेरवाड़ा की राजनीतिक प्रवृत्तियों में विशेष रुचि रखते थे। १६४७ में हमने अजमेर मेरवाड़ा को राजस्थान में शामिल करने का आन्दोलन उठाया और १६४७ में इसी उद्देश्य से एक सम्मेलन किया गया, जिसका मैं स्वागताध्यक्ष और श्री शंकरराव देव अध्यक्ष थे। उसमें व्यास जी ने बड़े उत्साह से भाग लिया। १६३६ में कांग्रेस ने पहली बार म्युनिसिपल चुनाव लड़ा। व्यास जी ने बड़े परिश्रम व लगन से सफलता के साथ चुनाव प्रचार की ज़िम्मेदारी निभाई।

व्यास जी के 'अंगरक्षक' के रूप में

१६४६ में व्यास जी ने जोधपुर के शासन सुधारों से निराश होकर उत्तरदायी शासन के लिये सत्याग्रह शुरू करने का कार्यक्रम बनाया। अजमेर में उसके लिये कार्यालय कायम करने को व्यास जी अपने कुछ साथियों के साथ अजमेर आये और

मेरे यहां ठहरे। उनके साथियों में सर्वश्री मथुरादास माथुर, द्वारकादास पुरोहित, छगनलाल चौपासनीवाला, तारकप्रसाद व्यास शामिल थे। एक दिन अचानक सांघी मोटर्स कम्पनी के स्थानीय कार्यालय से यह सूचना मिली कि जोधपुर महाराजा ने व्यास जी को मिलने के लिये तुरन्त बुलाया है और वे जब जाना चाहें, तब हमारी गाड़ी ले जा सकते हैं। हम लोगों में विचार-विनिमय हुआ। अधिकांश साथी निमंत्रण स्वीकार करने के पक्ष में नहीं थे। व्यास जी इस मत के थे कि महाराजा के निमंत्रण को अवश्य ही स्वीकार करना चाहिए। परन्तु हम लोगों में यह शंका व्यापी हुई थी कि कहीं कोई षड्यंत्र न हो। व्यास जी को इस बहाने बुलाकर गिरफ्तार अथवा उन पर घातक आक्रमण किया जा सकता है। इसलिए तय हुआ कि व्यास जी सांघी की गाड़ी पर नहीं, मेरी गाड़ी पर जायं और मैं उनका अंगरक्षक बनकर उनके साथ जाऊं। मैं अपनी रिवाल्वर साथ लेकर उनके साथ रवाना हुआ। जोधपुर पहुंचते-पहुंचते रात हो गई। जोधपुर से दो-एक मील पूर्व महाराजा की ओर से श्री नारायणसिंह व श्री रामप्रसाद श्रीवास्तव हमारा इन्तज़ार करते हुए मिले। व्यास जी को महाराज के पास महल ले जाया गया और मुझे दूसरी जगह ठहराया गया। व्यास जी धोती पहने नंगे सिर अपनी साधारण वेश-भूषा में थे। रात भर महाराज से समझौते की बात चलती रही। मैंने उनकी प्रतीक्षा में सारी रात जागते बिताई। सवेरे बड़ी प्रसन्न मुद्रा में वे लौटे और मुझसे बोले कि सब बातचीत तय हो गई है। परन्तु अभी उसको प्रकट नहीं करना है। स्वयं जोधपुर में रुक गये और मुझे उन्होंने अजमेर भेज दिया। अपने साथियों को इतना ही सन्देश भेजा कि सब ठीक हो गया है और सत्याग्रह शुरू करने की आवश्यकता नहीं रही। एक-दो दिन में श्री मेनन के जोधपुर आने पर समझौते को कार्यरूप दे दिया गया। इसी चर्चा वार्ता के फलस्वरूप व्यास जी जोधपुर के दीवान अथवा प्राइम मिनिस्टर नियुक्त किये गये और श्री मथुरादास माथुर, श्री द्वारकादास पुरोहित, श्री नाथूराम मिर्धा तथा जनाब बरकतउल्ला खां मंत्रिमंडल में शामिल किये गये। उनका मुझ पर जो विश्वास था, उसको प्रकट करने वाले ऐसे कितने ही प्रसंगों का उल्लेख किया जा सकता है।

व्यास जी की मोटर की तलाशी

व्यास जी जोधपुर के प्राइम मिनिस्टर थे और मैं अजमेर नगरपालिका का अध्यक्ष था। मुझे व्यास जी के अजमेर होकर दिल्ली जाने की सूचना मिली। व्यास जी के साथ मजाक करने की मुझे सूझी। मैं स्वयं जोधपुर की सड़क की चुंगी पर गया। चुंगी वालों को मैंने कहा कि आज इधर से आने वाली सब मोटर गाड़ियों को रोककर उनकी बारीकी से तलाशी ली जाय। यदि कोई मिनिस्टर होने की डींग बताये, तो साफ कह दिया जाय कि मिनिस्टरों की सरकारी गाड़ियों में अफीम आदि ले जाने की रिपोर्ट मिली है। इसलिए किसी भी गाड़ी को बिना तलाशी के

नहीं जाने दिया जा सकता। व्यास जी की गाड़ी आई। चुंगी पर रोक दी गई। व्यास जी के आदमियों ने बहुत आनाकानी की; परन्तु चुंगी वाले भी डटे रहे। आखिर हार मानकर व्यास जी और उनके साथी तलाशी देने को सहमत हो गये। व्यास जी ने अपने साथियों से कहा कि यह चुंगी किशनगोपाल की है, तलाशी दिये बिना काम नहीं चलेगा। मैं पास की ही झाड़ियों में छिपकर बैठा हुआ सारा तमाशा देख रहा था, जैसे ही मोटर की तलाशी ली जाने लगी, मैंने झाड़ियों में से निकल कर व्यास जी को नमस्कार किया और कहा कि जोधपुर राज्य का दीवान बड़ा है कि अजमेर नगरपालिका का अध्यक्ष। तलाशी का यह मज़ाक कई दिनों तक सार्वजनिक चर्चा का विषय बना रहा।

जोधपुर के मुकदमे

राजस्थान संघ बनने पर जोधपुर का पृथक् अस्तित्व और मंत्रिमंडल समाप्त हो गया। व्यास जी ने उसी दिन सरकारी बंगला खाली कर दिया। अपने किराये के घर में चले आये। सरकारी लोगों की ओर से कहा गया कि बंगला खाली करने की इतनी जल्दी क्या है। परन्तु व्यास जी ने तो उसके बाद वहां एक समय भोजन करना भी उचित नहीं समझा। उसके कुछ दिन बाद १९४९ के जनवरी मास में एक स्पेशल ट्रिब्यूनल की नियुक्ति की गई और उसके सामने जोधपुर के प्राइम मिनिस्टर के शासन काल के हिसाब को लेकर व्यास जी, माथुर जी और पुरोहित जी पर संगीन मुकदमे चलाये गये। व्यास जी के सभी स्नेही-साथी इस पर बड़े चिन्तित थे। मुकदमों का खर्च चलाना कोई सधारण बात नहीं थी। सभी मित्रों ने उस मुकदमे के खर्च के लिये पैसे की व्यवस्था की।

राजस्थान के मुख्यमन्त्री

मुकदमे का अन्त व्यास जी के लिये बड़ा शुभ हुआ। मुकदमे लौटा लिये गये और व्यास जी को राजस्थान संघ का मुख्यमन्त्री नियुक्त किया गया। तब फिर एक गम्भीर समस्या पैदा हुई। व्यास जी के साथियों को यह चिन्ता थी कि उनकी सहायता के लिये किसी-न-किसी विश्वस्त व निकटतम साथी को उनके पास रहना चाहिए। सबका यह आग्रह हुआ कि मैं उनका निजी सहायक बनकर जयपुर उनके पास चला जाऊं। मैंने मित्रों के निश्चय के अनुसार उनको एक पत्र लिख दिया। उनको मेरी स्वभाव की उग्रता व कठिनाइयों का पता था। इस कारण मैंने अपने को बुलाने का उनसे आग्रह किया। उनका उत्तर मिला कि बामण बाणया का संबंध अटूट है। मुझे तुम्हारी बात पसन्द है पर किसी को थप्पड़ मत मार देना। तुरन्त चले आओ। मैं बीमा कम्पनी से तीन मास की छुट्टी लेकर उनके पास चला गया। उन दिनों के तीन मास के अनुभवों की लम्बी कहानी बड़ी ही रोचक है और कुछ प्रसंग तो ऐसे हैं कि आज भी याद करके मैं अचरज में रह जाता हूं। सचमुच ही व्यास जी के लिये मुख्यमन्त्री का पद कांटों का ताज सिद्ध हुआ।

मेरे पर उनका विश्वास

व्यास जी के अपने प्रति विश्वास की एक छोटी-सी बात यहां लिख दूं। मेरे ही प्रति नहीं, प्रत्युत अपने सभी साथियों के प्रति उनका ऐसा ही विश्वास रहता था। इसी कारण उनको विश्वासघात का भी अनेक बार शिकार होना पड़ा। मुझे उनके सरकारी निजी सचिव ने एक बार कहा कि यहां की परम्परा यह है कि जिन पत्रों पर 'निजी' शब्द लिखा रहता है, उनको मुख्यमन्त्री स्वयं खोलते हैं। मेरा अनुभव यह था कि बहुत-सी मामूली चिट्ठियों पर भी 'निजी' शब्द लिख दिया जाता है और मुख्यमन्त्री को उनके कारण व्यर्थ में काफी परेशानी उठानी पड़ती है। इसलिए मैं सभी चिट्ठियां खोल देता। मैंने सरकारी निजी सचिव की बात व्यास जी से कह डाली। वे सहज स्वभाव से बोले कि तुमको ऐसी चर्चा करने की क्या जरूरत। तुमसे मेरा क्या भेद छिपा है। मजाक में कहा कि कोई प्रेमपत्र आ जाय तो मत खोलना; बाकी सब निवटाते रहो।

एक मनोरंजक घटना

मैं किस प्रकार उनकी इच्छा के विरुद्ध भी उनके नाम व पद का सदुपयोग या दुरुपयोग कर लेता था, इसको प्रकट करने वाली एक बड़ी ही मनोरंजक घटना है। कुछ देहाती भाई समय नियत किये बिना ही उनके बंगले पर आ गये और मिलने का आग्रह करने लगे। व्यास जी ने मिलने से इनकार कर दिया और मेरे समझाने-बुझाने पर भी वे मिलने को सहमत न हुए। काफी शोरगुल होने लगा। मुझे एक युक्ति सूझी। मैं स्वयं कुर्सी पर बैठ गया और मुख्यमन्त्री की हैसियत से उनसे मुलाकात ले ली। वे सन्तुष्ट होकर व्यास जी की जय बोलते हुए लौट गये। व्यास जी ने मुझसे पूछा कि वे कैसे लौट गये। मैंने कहा कि वे मुख्यमन्त्री से मिलकर और पूरी तरह सन्तुष्ट होकर वापस चले गये। व्यास जी एकाएक मेरी बात न समझ सके। तब मैंने उनसे कहा कि मैंने स्वयं जयनारायण व्यास बनकर मुख्यमन्त्री का पार्ट अदा कर दिया। व्यास जी बहुत हंसे।

उनकी आर्थिक स्थिति

मुख्यमन्त्री रहते हुए भी वे कैसे आर्थिक संकट से घिरे रहते थे, इसका प्रत्यक्ष अनुभव मुझे कई बार हुआ। एक छोटी-सी घटना यहां लिख दूं। व्यास जी को मित्रों को चाय या खाने पर बुलाने का बड़ा शौक था। ऐसे मौकों पर वे खर्च अपने पास से ही किया करते थे। एक दिन मुझे कहा कि कुछ मित्रों की चाय का प्रबन्ध करना है। मैंने निमंत्रित सज्जनों की सूची बनाकर खाने-पीने के सामान की सूची बना ली और व्यवस्था करने का आदेश दे दिया। भाया मेरे पास आया और मुझसे बोला कि खाद्य-पदार्थों की सूची में कुछ काट-छांट हो सकती हो, तो कर दीजिये। व्यास जी के लड़के देवनारायण को 'भाया' नाम से पुकारा जाता था। मैंने उसकी बात को थोड़ा बुरा माना और झुंझलाकर बोला कि मैंने जो लिख दिया, सो लिख

दिया। भाया ने मुझसे कहा कि भौजी जी ने व्यास जी से अभी कुछ दिन पहले पैसे मांगे थे, तो उन्होंने देने में असमर्थता प्रकट कर दी थी। इस खर्च के लिये उनसे कैसे कहा जाय। मुझे यह कल्पना भी न थी कि उस चाय के लिये भी घर में पैसा न होगा। मैंने कई बार देखा कि मुख्यमन्त्री रहते हुए भी व्यास जी के लिये अपना हर रोज का खर्च चलाना भी कैसा मुश्किल हो जाता था।

वीमा कम्पनी की तीन महीने की छुट्टी समाप्त होने पर मैं जयपुर से अजमेर लौट आया। मैंने यह अनुभव किया कि व्यास जी के काम-काज के लिये तो मैं सहायक हो सकता था और उनका भार भी मेरे कारण काफी हलका हो जाता था, परन्तु सार्वजनिक दृष्टि से मुझे उनके यहां रहना अधिक उपयोगी प्रतीत नहीं हुआ। उनका अधिकतर काम-काज तो सरकारी ढंग पर ही चलता था। उसमें कुछ अधिक परिवर्तन कर सकना मेरे लिये सम्भव नहीं हो सका। इसमें व्यास जी का भी ऐसा कोई दोष न था, क्योंकि सारे ही ढांचे को वदले विना इक्के-दुक्के परिवर्तन करने में कोई विशेष लाभ न था। फिर भी मेरे लिये सरकारी काम-काज का तीन मास का अनुभव वड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ।

उप-चुनाव

व्यास जी जोधपुर में जव १९५२ में दोनों चुनाव हार गये, तव उनकी इच्छा चुनाव या दलगत राजनीति की दल-दल में फंसने की नहीं थी। अनेक क्षेत्रों से उन पर विशेष जोर डाला गया। विशेष तौर पर श्री रफी अहमद किदवई वड़े उत्सुक थे, और उनके ही आग्रह पर व्यास जी किशनगढ़ से उप-चुनाव लड़ने के लिये सहमत हुए। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस के लिये यह चुनाव प्रतिष्ठा का विषय वन गया। सारी शक्ति लगाकर चुनाव लड़ा गया। व्यास जी के विरुद्ध एक वड़ा तर्क यह दिया जाता था कि क्षेत्र से वाहर के हैं। इसी पर उन्होंने यह घोषणा की थी कि वे किशनगढ़ में ही मकान वनाकर रहेंगे। मकान वनाने के वारे में भी वड़ा विवाद रहा। उनके कुछ साथियों की योजना यह थी कि अच्छी वड़ी रकम लगाकर कुछ वड़ा मकान वनाया जाय। मुझे उन्होंने कहा कि अपने को वड़ा मकान नहीं वनाना है। मेरे सुझाव पर वड़ी योजना को आधे से भी कम कर दिया गया और यह प्रयत्न किया गया कि उसके लिये किसी की भी सहायता स्वीकार न की जाय। वैसा ही हुआ। जव कभी व्यास जी थक जाते तो आराम करने के लिये किशनगढ़ चले जाते थे और कुछ दिन उस मकान में एकान्त व शान्त जीवन व्यतीत कर लेते थे।

व्यवहारवादी नहीं आदर्शवादी

मैं व्यास जी को व्यवहारवादी की अपेक्षा अधिक आदर्शवादी ही कह सकता हूं और जव वे एक वार कुछ करने की ठान लेते थे, तो उसके लिये डट जाते थे। कल्याणी-कांग्रेस के अवसर पर कलकत्ता में राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के लिये

कुछ धन संग्रह करने का निश्चय किया गया। सब मित्र वहां इकट्ठे हुए, परन्तु व्यास जी वहां नहीं गये थे। मित्रों ने विचार किया कि यदि व्यास जी भी आ जायं, तो सहज में अच्छी बड़ी रकम इकट्ठी की जा सकती है। उनसे सम्पर्क किया गया। उनकी शर्त यह थी कि कोई भी साथी अलग-अलग पैसा जमा न करे और सारा जमा रुपया एक जगह रखकर उसका विनियोग विभिन्न क्षेत्रों में वहां की आवश्यकता के अनुसार किया जाय। साथी इससे सहमत नहीं हुए और वे धन संग्रह करने में शामिल नहीं हुए। उनकी इच्छा के विरुद्ध उनसे काम ले सकना इतना आसान न था।

नाजुक अवसर

व्यास जी के राजनीतिक जीवन में मेरी दृष्टि से वह अवसर बड़ा ही नाजुक था, जब अपने साथियों के रुष्ट व असन्तुष्ट हो जाने पर उन्होंने विधानसभाई कांग्रेस दल का अपने प्रति विश्वास प्राप्त करने का निश्चय किया। उनके अंतरंग उनसे सहमत नहीं थे और कांग्रेस हाई कमान ने भी उनको उसके लिये खुली छूट दे दी थी। काफी लम्बी खींचतान चली। इस अवसर पर भी व्यास जी अपनी आदर्शवादिता से टस से मस नहीं हुए। सौदेबाजी तो उनको बिलकुल पसन्द न थी। मैं अपनी कम्पनी के काम से कलकत्ता गया हुआ था। मुझसे लौटने के लिये अनुरोध किया जा रहा था और काम-काज के कारण मुझे कम्पनी के डायरेक्टर रोक रखना चाहते थे। परिस्थिति कुछ ऐसी बन गई कि मुझे कम्पनी से इस्तीफा देकर आना पड़ा। मुझे उस समय कम्पनी से २२०० रुपया मासिक वेतन मिलता था। मैं जब जयपुर पहुंचा, तब मैंने देखा कि डोरी हाथ से निकल चुकी थी। उसको संभालना प्रायः असम्भव था।

व्यास जी के मुख्यमंत्री बनने से पहले एक बार हम कुछ साथी, जिनमें सेठ कमलनयन बजाज भी शामिल थे, मास्टर भोलानाथ जी के बंगले के बाहर बैठे हुए सोच रहे थे कि स्थिति को कैसे संभाला जाय। रुपया खर्च करने का प्रस्ताव किया गया और यह तय हुआ कि हर साथी को अधिक-से-अधिक त्याग करना चाहिए। हम लोग अपनी मोटरगाड़ी और घर के गहने आदि भी देने को तैयार हो गये। सेठ कमलनयन जी ने रुपया दिला देने की हामी भर ली। इतने में व्यास जी भी वहां पहुंच गये। बोले कि क्या कर रहे हो। सारी बात उनसे कह दी गई। यह भी कह दिया गया कि अपने मत बनाने के लिये सदस्यों को रुपया बांटना आवश्यक है। व्यास जी ने एकाएक सारी योजना को रद्द कर दिया और रुपये के बल पर मुख्यमंत्री व सत्ता हथियाने से इनकार कर दिया। हम सब चकित रह गये।

प्रायः अन्तिम क्षण में मास्टर भोलानाथ जी की मार्फत, जो उस समय शिक्षामंत्री थे, मेरे पास यह प्रस्ताव भेजा गया कि यदि व्यास जी श्री रामकरण जी जोशी

को अपने मंत्रिमंडल में शामिल न करने का वचन दे दें, तो जयपुर के सदस्य उनको मत देने को सहमत हैं। मास्टर भोलानाथ जी ने रामकरण जी जोशी का एक पत्र भी मुझे दिया, जिसमें उन्होंने स्वत: ही मंत्रिमंडल में शामिल न होने की इच्छा प्रकट की थी। मैंने बड़ी हिम्मत करके व्यास जी के सामने वह प्रस्ताव और पत्र रख दिया। उन्होंने यह कहते हुए उनका मत मानने से इनकार कर दिया कि 'मुख्य-मंत्री मुर्दाबाद, जयनारायण व्यास जिन्दाबाद'। उनका वह दृढ़ निश्चय देखते ही बनता था। मुझसे यह भी कहा गया कि उस स्थिति को मैं ही झूठा आश्वासन देकर बचा लूं, चाहे बाद में रामकरण जी को ले लिया जाय। यह चकमेबाज़ी व्यास जी की ओर से कैसे की जा सकती थी !

केवल आठ मतों की कमी

विश्वास के प्रस्ताव पर मतदान हुआ, केवल आठ मतों से वह गिर गया। व्यास जी ने बड़ी प्रसन्न मुद्रा में मित्रों के दुःख प्रकट करने पर निम्न पंक्तियां मस्ती के साथ सुना डालीं :

"मैंने अपने हाथों अपनी चिता जलाई,
देख-देख लपटें मैं हँसता, तू क्यों रोता भाई ?"

सचमुच ही मुख्यमन्त्री की पराजय हुई और लोकनायक श्रीजयनारायण व्यास विजयी हुए। हम सबके लिये अचरज की एक और बात यह हुई कि उन्होंने दीवाली का त्यौहार सामने होते हुए भी उसी समय सरकारी बंगला छोड़ दिया और रात को पोलोविक्ट्री होटल में आकर सोये।

उनके सम्बन्ध में यह भ्रम भी बिना किसी आधार के पैदा किया गया कि वे दुबारा मुख्यमन्त्री बनने को उत्सुक थे। जब उनसे मद्रास-कांग्रेस के समय पूछा गया तो उन्होंने साफ कह दिया कि इसका क्या भरोसा है कि जो आज सुखाड़िया जी से नाराज़ होकर उनका साथ छोड़ना चाहते हैं, वे कल फिर मेरा साथ नहीं छोड़ेंगे और मुझे धोखा नहीं देंगे।

अन्तिम बीमारी

मुझे इस बात का बड़ा दुःख है और जीवन भर बना रहेगा कि जो बीमारी उनके एकाएक निधन का कारण बनी, उसकी शुरुआत मेरे घर पर अजमेर में हुई और हम उनको बचा न सके। वे रात्रि को पेशाब के लिये उठे और सहसा ही तख्त से गिर गये। इस पर भी किसी को जगाया नहीं। प्रात: सोकर उठे तो सिर और आंख पर चोट दीखने पर मालूम हुआ कि रात को क्या बीती थी। डा० मानकरण जी शारदा को बुलाया गया। उन्होंने हालत कुछ अधिक गम्भीर न बताकर पूर्ण विश्राम करने की सलाह दी और विश्वास दिलाया कि वे पूरी तरह स्वस्थ हो जायेंगे। सरकारी अस्पताल में विशेषज्ञ डाक्टर श्री बी० डी० माथुर से भी परीक्षा करवाई गई। उन्होंने भी यही परामर्श दिया कि उनको दिल्ली न जाकर यहां अजमेर में

ही विश्राम करना चाहिए। पर वे न माने। मैं अपने काम पर बगड़ (शेखावाटी) चला गया। वहां जाने का मेरा कार्यक्रम बन चुका था। वे मेरे पीछे किशनगढ़ चल दिये। यह जानकर मुझे और अधिक दुःख हुआ कि वे स्टेशन जाकर गाड़ी भी ठीक तरह न पकड़ सके और सामने के ही डिब्बे में सेकिण्ड क्लास में बैठ गये। दिल्ली में अस्पताल में भरती हो जाने पर उन्होंने मुझे याद किया। भाई राजबहादुर जी ने मुझे फोन किया। मैं फौरन दिल्ली पहुंचा। मन पर बड़ा भार रहा कि मैं उनसे अन्तिम समय में दो बात भी न कर सका। दो-एक दिन तक वे लिखकर अपना भाव प्रकट करते रहे। मैं यह देखकर चकित रह गया कि जब उनको मेरे दिल्ली आने की सूचना दी गई, तब उन्होंने लिखकर भाया और भौजी को यह आदेश दिया कि मेरे पहुंचने पर मेरे लिये बिना मिर्च के खाने, फल व चाय आदि की समुचित व्यवस्था रखी जाय। इसी प्रकार उन्होंने जो पत्र मुझे दिल्ली पहुंचते ही लिखा था, उसके खो जाने की भी मुझे मर्मान्तिक वेदना है।

उनकी स्मृति

अपनी पैंट और बनियान वे मेरे यहां भूल गये थे। दिल्ली से मुझे उन्होंने यही लिखा था कि कल अस्पताल अपने को दिखाने जाऊंगा। उनके वे कपड़े मेरे पास उनकी याद रहेंगे।

इस पत्र की याद आते ही मेरे नेत्रों में आंसू भर आते हैं और यह समझ में नहीं आता कि अपने जिस बड़े भाई के ३४-३५ वर्ष के अत्यन्त निकट सहवास की कितनी ही स्मृतियां मैंने अपने हृदय में संजो रखी हैं, उसको पैण्ट और बनियान की स्मृति मेरे पास छोड़ने की क्या आवश्यकता थी। एक ज्योतिषी का कहना तो यह था कि पूर्व जन्म में मैं उनका छोटा भाई था। पूर्व जन्म में चाहे जो रहा होऊं, पर इस जन्म में तो निश्चय ही मैं उनका छोटा भाई था और हम दोनों के आपसी व्यवहार पर 'दो तन एक मन' की कहावत चरितार्थ होती थी। उनके उठ जाने से मुझे जो सूनापन अनुभव होता है उसको यत्न करने पर भी मैं दूर नहीं कर पाता और बड़े भाई के हंसमुख, विनोदी, सरल और भावुक चेहरे की छाया मेरे चारों ओर घूमती रहती है।

३

व्यास जी एक पहेली

श्री केशोराम जी, पोलोविक्ट्री होटल व सिनेमा, जयपुर (राजस्थान)

युवावस्था में लगभग चालीस वर्ष पहले व्यासजी के साथ मेरा मिलना-जुलना आरम्भ हुआ और वह ऐसे घनिष्ट सम्बन्ध में बदल गया कि अधिकतर लोग हम दोनों को सगे भाई ही समझते रहे। फिर भी मैं उनको आखिर तक समझ नहीं पाया। मेरा तो यह ख्याल है कि शायद ही कोई उन्हें पूरी तरह समझ सका हो। बहुत से लोग यह समझते हैं कि वे सरल व विनोदी स्वभाव के थे और उनमें गंभीरता नहीं थी, परन्तु मैंने उनको इतना गम्भीर पाया कि मुझे नहीं मालूम कि कोई उनकी गहराई तक पहुंच पाया हो। उन्हें जो कुछ जंच जाता था, उसको करने में कोई संकोच या भय नहीं होता था। वे चतुर राजनीतिज्ञ नहीं थे। हठी भी अपने ही ढंग के थे। जब वे कोई हठ पकड़ लेते थे, तब उनको समझाना-बुझाना बड़ा कठिन हो जाता था। समझदार तो उनको समझाने का साहस ही नहीं करता था और जो कोई समझाने का साहस करता था, उसको वे मूर्ख कहकर टाल देते थे। उनके और मेरे सब मित्र यह जानते थे कि वे मेरी बात को नहीं टालते। ऐसे प्रसंगों पर मुझे उनको समझाने का काम सौंपा जाता और मैं कोई-न-कोई ऐसी चाल चलकर उनको समझाता, जिसको काटना उनके लिये मुश्किल हो जाता।

उनकी राजनीति

मैंने प्रत्यक्ष राजनीति में कभी कोई हिस्सा नहीं लिया। फिर भी व्यास जी के ही कारण मुझे उनकी राजनीति में बड़े-से-बड़े खेल खेलने पड़े। मैं पोलो का शौकीन था और पोलो के ही कारण राजाओं, महाराजाओं के साथ अधिक पटती थी। उनके साथ मैंने देश-विदेश का खूब भ्रमण किया। साधारणतया मुझे राजाओं का साथी समझा जाता था। व्यास जी मेरी स्थिति को भली-भांति समझते थे। उससे लाभ उठाने में भी कभी चूकते न थे। 'राजस्थान संघ' के निर्माण के समय कई बार ऐसा भय उपस्थित हुआ कि सब राजाओं को उसके लिये सहमत कर सकना संभव न होगा। एक बार जोधपुर और बीकानेर के महाराजाओं ने संघ में शामिल होने से प्रायः इनकार कर दिया, तब व्यास जी ने मुझे बुलाया। जयपुर में महाराजा इकट्ठे हुए। जयपुर महाराज तो संघ में शामिल होने को तैयार हो गये थे; परन्तु दूसरे महाराजा सहमत न हुए। व्यास जी ने मुझसे परामर्श किया और उन्होंने राजाओं महाराजाओं को यह भरोसा दिलाया कि संघ में उनके हित व स्वार्थ सर्वथा सुरक्षित रहेंगे, और उनकी व्यक्तिगत सम्पत्ति पर कोई आंच न आयेगी। इस प्रकार व्यास जी ने राजस्थान संघ के निर्माण में जो भूमिका अदा की, वह भुलाई

नहीं जा सकती। उनके ही कारण उसके लिये मुझे भी अपनी सेवाएं अर्पित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वे हर किसी से काम लेना जानते थे।

उनको मैं चतुर राजनीतिज्ञ नहीं मानता था। उन्होंने राजस्थान संघ के निर्माण के समय और बाद में भी जो भूलें कीं, उनका दुष्परिणाम उनके साथ-साथ उनके साथियों और समूचे राजस्थान को भी भोगना पड़ा। यदि उन्होंने कुछ चतुराई से काम लिया होता जो राजस्थान का दूसरा ही चित्र आज दीख पड़ता और संकीर्ण क्षेत्रीय भावनाओं के कारण राजस्थान में इतनी उखाड़-पछाड़ न हुई होती। फिर भी मैं यह मानता हूं कि वे एक महान् साथी, महान् योद्धा, महान् सेनानी, महान् कार्यकर्त्ता, महान् नेता और महान् मानव थे। उनके हृदय की विशालता अन्यत्र दुर्लभ है।

आपबीती घटनाएं

उनके सम्बन्ध में आपबीती घटनाएं तो इतनी अधिक हैं कि उनको यदि कहने या लिखने बैठूं, तो एक बड़ा पोथा बन सकता है। मेरे लिये एक कठिनाई यह भी है कि मैं यह निर्णय नहीं कर सकता कि कौन-सी घटना लिखूं और कौन-सी छोड़ दूं। इस लेख में नमूने के तौर पर कुछ घटनाएं लिखनी पर्याप्त होनी चाहिए।

होटल और सिनेमा के 'मालिक'

मेरे पोलोविक्ट्री होटल व सिनेमा को वे इस रूप में अपना मानते थे कि कभी-कभी तो मुझे भी कई दिन बाद यह पता चलता था कि वे उसमें ठहरे हुए हैं। वे आते, कमरा खुलवाते और जिस चीज़ की ज़रूरत होती स्वयं उसका इंतजाम कर लेते। एक बार दिल्ली से कुछ कांग्रेसी नेता जयपुर आये। सरकार के मेहमान बने और उन्हें गवर्नमेन्ट होस्टल में ठहराया गया। व्यास जी तब मुख्यमन्त्री नहीं थे। उन्होंने वहां के खान-पान की व्यास जी से शिकायत की। उन्होंने उनसे कहा कि आप मेरे होटल में ठहरते, तो आपको कोई शिकायत नहीं होती। अब तो आप सरकार के होटल में ठहरे हैं। उन्होंने व्यास जी से पूछा कि आपका होटल कहां है। व्यास जी ने बड़े ही गम्भीर भाव से उत्तर दिया कि क्या आपको मालूम नहीं कि मेरा जयपुर में एक बड़ा होटल और सिनेमाघर भी है।

मुझे उन्होंने उनके ठहरने तथा खाने-पीने आदि की व्यवस्था करने को कहा और यह भी कहा कि उनके लिये शुद्ध देशी घी में सब खाना बनाया जाय। मैंने इसमें असमर्थता प्रकट की, तो अपने पास से सांकड़ा से लाया हुआ घी का एक डिब्बा भेज दिया। वे लोग इतने खुश होकर जयपुर से लौटे कि उन्होंने दिल्ली जाकर पण्डित जवाहरलाल जी नेहरू तक से व्यास जी के होटल और सिनेमा की तारीफ कर डाली। पण्डित जी ने उनसे मुस्काराकर कहा कि वह पोलोविक्ट्री होटल व सिनेमा व्यास जी का नहीं; परन्तु उनके भाई का है। वे और उनके भाई एक ही

हैं। दिल्ली में काफी समय तक हम दोनों को सगे भाई ही समझा जाता रहा।

श्रीयुत श्रीप्रकाश जी १९४२ के मारवाड़ लोकपरिषद् के आन्दोलन के सिलसिले में जब जोधपुर पधारे थे, तब वे हम दोनों को सगा भाई ही समझते थे। उसके बाद भी ग्यारह वर्ष तक उनकी धारणा ऐसी ही बनी रही। एक बार जब उन्होंने नेहरू जी के सामने अपनी इस धारणा को व्यक्त किया, तब उनको उन्होंने बताया कि दोनों कैसे भाई हैं और भाइयों से भी बढ़कर दोस्त हैं।

जोधपुर के प्राइम मिनिस्टर

जोधपुर में व्यास जी जब लोकप्रिय सरकार कायम होने पर दीवान अथवा प्राइम मिनिस्टर बनाये गये, तब मुझे उन्होंने वहां बुलाया। कोई भी राजपूत उनके साथ मंत्रिमंडल में शामिल होने को तैयार न था। उन्होंने समझा कि मैं उनकी इस कठिनाई को दूर कर सकूंगा। मैं जोधपुर गया। उनके बंगले पर पहुंचा। मैंने उनसे मिलते ही यह कहा कि पहला काम मेरी ओर से आपको बधाई देने का होना चाहिए। मैंने पूछा कि अन्दर कमरे में चलकर आपको बधाई दूं कि बाहर बैठे हुए लोगों के सामने ही। वे बोले कि तुम पोलो के और मैं सार्वजनिक क्षेत्र का खिलाड़ी हूं। खिलाड़ियों की बधाई तो मैदान में ही दी जाती है।

मेरी बधाई

मैंने कहा कि इतने संघर्ष और खींचातानी के बाद आपको प्राइम मिनिस्टर की यह कुर्सी प्राप्त हुई है। हमारे बाप-दादाओं ने इस कुर्सी को बड़ी मान प्रतिष्ठा के लिये बनाया है। परन्तु इसमें एक बड़ी खामी भी यह रखी है कि जो इसको सम्भाल नहीं सकता, उसको यह बुरी तरह नीचे पटक देती है। मुश्किल से ही कोई इसको दुबारा हासिल कर पाता है। इसलिए इसको पूरी होशियारी से सम्भालना। पहले तो आपके जेल जाने पर आपको देशभक्त कहकर आपके गले में फूल मालाएं डाली जाती थी। यदि कहीं इस कुर्सी से गिरकर जेल गये, तो आपको गद्दार कहा जायगा। इस गद्दारी से बचने का आपको सदा ही ध्यान रखना होगा।

व्यास जी यह कहते हुए मुझे भीतर ले गये कि ऐसी बधाई तो मुझे तुमसे ही मिल सकी है। भीतर जाकर उन्होंने अपने मंत्रिमंडल में किसी राजपूत सरदार को शामिल न कर सकने की कठिनाई की चर्चा की। मैंने उनसे पूछा कि आपके ध्यान में कौन राजपूत है, जिसको आप मंत्रिमंडल में लेना चाहते हैं। उन्होंने रावराजा हणुमन्तसिंह जी का नाम लिया और मुझसे कहा कि मैं उनको उसके लिये सहमत करूं। मैं रावराजा जी से मिला। उन्होंने कहा कि राजपूत तो मंत्रिमंडल में शामिल न होने के लिये एका कर चुके हैं। जोधपुर महाराज से बातचीत करके उनकी अनुमति लेने के बाद ही मंत्रिमंडल में शामिल हो सकूंगा। राजपूतों के विरोध और प्रदर्शन से बचने के लिये वे रात को एक होटल में सोये और सवेरे उन्होंने शपथ ले ली। व्यास जी की यह बहुत बड़ी सफलता मानी गई। वे जागीरदारी प्रथा के

घोर विरोधी होते हुए भी राजपूत सरदारों के व्यक्तिगत विरोधी नहीं थे। वे राजाओं-महाराजाओं की तरह राजपूत सरदारों को भी अपने साथ रखने की कोशिश में रहते थे। अपनी इसी कोशिश के कारण उन्हें राजस्थान के मुख्यमंत्री के पद से अलग होना पड़ा, क्योंकि उनके विरोधियों ने उनको जागीरदारों का पक्षपाती वताकर वदनाम करने में कुछ उठा न रखा।

प्रदेश कांग्रेस का अध्यक्ष पद

राजस्थान संघ वनने के वाद जव व्यास जी राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष चुने गये, तव उनके साथ जो वीती, उसको मैं कभी नहीं भूल सकता। श्री गोकुलभाई भट्ट की जगह व्यास जी उसके अध्यक्ष चुने गये। तव प्रदेश कांग्रेस पर ग्यारह हज़ार का कर्ज़ था। जयपुर में उसके दफ्तर के लिये कहीं स्थान मिल सकना व्यास जी को वड़ा कठिन मालूम हुआ। वे मेरे पास आये और वोले कि प्रदेश कांग्रेस का दफ्तर मैं जोधपुर ले जा रहा हूं। मैंने उनसे कहा कि आपका यह घर किस काम के लिये है। इसमें कांग्रेस का दफ्तर क्यों नहीं रखते। मैं पोलोविक्ट्री होटल व सिनेमा को आज भी उनका ही घर कहता हूं। दफ्तर तो उन्होंने पोलो-विक्ट्री होटल में खोल दिया। परन्तु उनके पास काम चलाने को एक पैसा भी न था। मुझे जव यह पता चला, तो मैंने श्री मथुरादास माथुर की मार्फत ५०१ रुपये का चैक उनको दिया। वे वर्मा जी से वोले कि यह शुरुआत वड़ी शुभ है। मैं तो अव भीख मांगकर भी कांग्रेस का काम निभा लूंगा।

उसी दिन दानवीर सेठ सोहनलाल जी दूगड़ की पत्नी व्यास जी को ढूंढ़ती हुई मेरे यहां आई। उनको उन्होंने शाम के भोजन का निमंत्रण दिया। व्यास जी वोले कि मैं अकेला नहीं आ सकता। मेरे साथ तो प्रदेश कांग्रेस के वे सव सदस्य हैं, जो उसकी वैठक के लिये जयपुर आये हुए हैं। उनकी संख्या दो-अढ़ाई सौ है। सेठानी जी ने कहा कि आप सभी को साथ लेकर भोजन के लिये आइये। शाम को उनके यहां भोजन हुआ और भोजन के साथ उन्होंने २१०० रुपया व्यास जी को भेंट किया। दूगड़ जी ने यह रकम जिस भावना से दी, उससे पता चला कि वे व्यास जी के व्यक्तित्व से कितने प्रभावित थे।

उनके राजस्थान के मुख्यमंत्री वनने के समय तक प्रदेश कांग्रेस का दफ्तर जयपुर में ही रहा और उनके वाद मास्टर आदित्येन्द्र जी उसके अध्यक्ष चुने गये। श्री जुगलकिशोर चतुर्वेदी ने वड़ी योग्यता से मंत्रिपद और दफ्तर का काम संभाला। पोलोविक्ट्री होटल तो व्यास जी के ही कारण कांग्रेस का ऐसा केन्द्र वन गया कि चालीस-पचास कांग्रेसी तो यहां हर समय वने ही रहते थे। व्यास जी कहीं दूसरी जगह ठहरने का विचार ही न करते थे।

मध्यस्थ का काम

व्यास जी की जव किसी अपने साथी से कुछ अनवन हो जाती, तव प्रायः मुझे ही

दोनों ओर से याद किया जाता था। कई अवसर ऐसे आये, जब मैंने सफलतापूर्वक बीच बचाव किया। ऐसे भी मौके आये, जब मैं सफल न हो सका। मुश्किल यह थी कि कभी-कभी वे ऐसे लोगों से घिर जाते थे, जो उन्हें गुमराह कर देते थे। उनके अत्यन्त विश्वासपात्र मेरे सरीखे साथियों को भी हार मान लेनी पड़ती थी।

'तब' और 'अब'

प्रसंगवश एक सामान्य बात लिख दूं। मेरे यहां जब कभी कांग्रेसी नेता आपसी मंत्रणा के लिये इकट्ठे हुआ करते, तब मैं इस बात का बड़ा ध्यान रखता कि मेरे घर का कोई भी व्यक्ति या मेरा कोई भी बच्चा उनके पास नहीं जाना चाहिए। मैं यह देखता और अनुभव करता था कि कांग्रेसी नेता बहुत ही हलकेपन और गैर ज़िम्मेवारी से आपस में चर्चा वार्ता किया करते थे और उनकी कोई भी बात छिपी न रहती थी। मैं यह नहीं चाहता था कि उसके प्रकट होने का दोष मेरे घर के किसी आदमी पर लगे। मैं स्वयं भी दूर ही रहा करता था। मैंने व्यास जी से भी कई बार कहा कि आप में और राजाओं में कितना बड़ा अन्तर है। राजाओं के यहां प्राय: ऐसे गूंगे बहरे लोग रखे जाते थे, जो उनकी मंत्रणा और चर्चा वार्ता को न तो सुन सकते थे, न समझ सकते थे और न उसके बारे में कहीं कुछ कह ही सकते थे। परन्तु आप लोग तो मोटर में बैठकर तब भी बड़े हलकेपन से बातचीत करते हो, जब आपके सामने की सीट पर आपका ड्राइवर, निजी सचिव और गनमैन भी बैठा होता है। ऐसी हालत में आपका कोई भी भेद या रहस्य कैसे छिपा रह सकता है। मेरी इस सलाह को मानते हुए भी वे उस पर कभी ध्यान नहीं देते थे। मेरी समझ में ऐसे ही कुछ कारण हैं, जिनसे कांग्रेसी शासन का बड़े से बड़ा रहस्य या भेद भी बाजारू चर्चा का विषय बन जाता है। इस दृष्टि से मैं व्यास जी को चतुर राज-नीतिज्ञ या सफल शासक नहीं मानता था। यह मैं उनके मुंह पर भी कह दिया करता था।

विनोदी स्वभाव

व्यास जी बड़े ही विनोदी स्वभाव के थे। मेरे साथ तो हमेशा विनोद और व्यंग्य में ही चर्चा हुआ करती थी। पुरानी बात है कि एक बार जोधपुर में मुझसे बोले कि शहर में कुछ हलचल पैदा करनी चाहिए। उनको दस नम्बरी ठहराकर पुलिस स्टेशन पर सोने को मजबूर किया जाता था। एक दिन उन्होंने पुलिस थाने पर सोने के लिये जाने से इनकार कर दिया और पुलिस वालों से कह दिया कि मैं स्वयं नहीं जाऊंगा। ले जाना है, तो ज़बरदस्ती ले चलो। उन्होंने उन्हें उठाकर तांगे में जबरदस्ती बैठा दिया। शहर में चारों ओर पुलिस की ज्यादती का शोर मच गया। पर्चे छप गये और हड़ताल हो गई। इस प्रकार आन्दोलन खड़ा करके वे बड़े खुश होते। उन दिनों आन्दोलन ही उनका जीवन था।

उप-चुनाव की एक विनोदी घटना

किशनगढ़ में उपचुनाव की धूम थी। मैं उनके साथ था। मतदान के बाद हम दोनों को अरई से सनवाड़ जाना था। दोपहर का समय था। अजमेर से नसीराबाद होकर रास्ता जाता था। व्यास जी बोले कि इतना लम्बा रास्ता न जाकर खेतों में से ही निकल चलो। मैंने समझाया कि किसान बिगड़ जायंगे और बड़ी मुश्किल खड़ी हो जायगी। उन्होंने मेरी बात न मानी और खेतों में से होकर हम चल पड़े। मक्का के खेत थे। किसानों ने हमारी गाड़ी को आ घेरा। कांग्रेस का झंडा लगा देखकर उनका गुस्सा कुछ शान्त हुआ। उन्होंने पूछा कि व्यास जी कौन हैं। मैंने कह दिया, ये हैं व्यास जी...फिर क्या था, किसानों ने व्यासजी को घेर लिया और बोले कि अपने वोट तो हमने आपको ही डाले हैं, परन्तु ये जो मक्का के भुट्टे आपने तोड़ डाले हैं, इनको आपको खाना पड़ेगा या इनको अपने साथ ले जाना पड़ेगा। व्यास जी मज़ाक में बोले, 'जान बची लाखों पाये'। भुट्टे खाने को सहमत हो गये। किसानों ने बड़े प्रेम से कुछ भुट्टे हमारी गाड़ी में रख दिये और दो-चार भूनकर खिला दिये।

हम थोड़ी ही दूर गये थे कि हमारी गाड़ी एक लकड़ी से टकराई और उसका टायर फट गया। व्यास जी बोले शाम हो चुकी है। अब रात हमको यहां खेतों में ही बितानी चाहिए। मैंने समझाय कि जैसे भी हो अपने को सनवाड़ पहुंच जाना चाहिए। नहीं तो लोगों में यह भय पैदा हो जायगा कि हमको डाकुओं ने कहीं घेर लिया है। हम दोनों ने धोतियां चढ़ाई और पैदल चल दिये। सड़क पर एक पुलिस चौकी के पास आ निकले। पास के कुएं पर हाथ-पैर धोकर कुछ आराम किया। थोड़ी ही देर में दूर से मोटर गाड़ियों की रोशनी दीख पड़ी। उनमें एक गाड़ी सुखाड़िया जी की और दूसरी थी भोगीलाल पंड्या की थी। उनसे हम दोनों रात को लगभग ११ बजे सनवाड़ पहुंच सके। वहां सुखाड़िया जी, वर्मा जी तथा अन्य साथी हमारी प्रतीक्षा में थे। मैंने व्यास जी से कहा कि यदि यहां न पहुंचते, तो ये लोग कैसी चिन्ता में पड़ जाते। उस दिन मुझे एक बार फिर व्यास जी के अल्हड़पन का प्रत्यक्ष परिचय मिला। ऐसी मुसीबतों में वे कभी हार न मानते थे।

'होटल पोलोटेरियेट'

अपने व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन के प्रति उनका निर्मोह, अनासक्ति की पराकाष्ठा पर पहुंच गया था। जेब में पैसा होने पर वे साथियों सहित दिल्ली में अच्छे से अच्छा खाना खाते थे। फिर, ऐसा भी समय मैंने देखा, जब उनकी जेब में केवल दो आने होते थे और वे रोटी हाथ में लेकर केवल दाल से खा लेते थे। दिल्ली में गलियों और सड़कों में ऐसे खोंमचे वालों की कमी नहीं है, जो एक-एक आने में एक बड़ी रोटी और दाल बेचकर अपना गुज़ारा चलाते हैं और जिनसे गरीब लोग एक-एक दो-दो रोटी लेकर अपना निर्वाह करते हैं। व्यास जी ऐसे

खोंमचेवालों के खोंमचों को 'होटल पोलोटेरियेट' अर्थात् आम जनता के होटल कहा करते थे। पैसे की कमी होने पर इन होटलों पर निर्भर रहने में व्यास जी को कोई संकोच या लज्जा न होती थी। मैंने उनको नई दिल्ली में अधिकतर स्वयं अपना खाना बनाते देखा।

घर की हालत

उनके घर की हालत मैं अपनी आंखों प्रायः देखा करता था। बहुत पुरानी बात है कि व्यास जी बैठे कुछ टाइप कर रहे थे। उनकी माता जी ने आकर कहा कि भइया तुम तो बैठे टप-टप कर रहे हो। क्या तुमको बच्चों के खाने-पीने की भी कुछ फिकर है। व्यास जी ने गम्भीर होकर कहा कबूतरों के लिये मैं कुछ ज्वार लाया था। माता जी बोली कि ज्वार तो रखा है। व्यास जी झट से बोल उठे कि फिर चिन्ता की क्या बात है। आज तो ज्वार कूट-काटकर खिचड़ी बना लो और बच्चों को खिला दो। कल की कल देखी जायगी। ऐसे विकट प्रसंग मैंने कई बार देखे।

बम्बई में उनका घर

बम्बई में एक बार उनका रहन-सहन देखकर मैं चकित रह गया। हमारी टीम पोलो देखने के लिये बम्बई गई हुई थी। मैं टीम के साथ ताजमहल होटल में ठहरा हुआ था। अखबार में हमारे टीम के बम्बई आने का समाचार पढ़कर व्यास जी मुझे ढूंढते हुए वहां आये और बड़े आग्रह से मुझे अपने यहां ले गये। उन दिनों व्यास जी अखबार बेचकर अपना खर्च चलाया करते थे। दिन भर मैंउनके साथ रहा। शाम होने पर वे बोले कि चलो मेरा बैड रूम भी देख लो। आज रात वहां ही सोयेंगे। मुझे अपने साथ समुद्र के किनारे ले गये। एक स्लीपर के नीचे से टाट के दो टुकड़े निकाले। दो स्लीपरों पर उनको बिछा दिया। एक पर स्वयं सो गये और दूसरे पर मुझे सोने को कह दिया। वह था कभी उनका बम्बई का घर और जीवन। मुझे मालूम है कि जब वे दैनिक 'अखण्ड भारत' निकाला करते थे, तब दो-चार कप चाय पीकर दिन-भर बिता देते और जमीन पर अखबार बिछाकर सो जाते थे। यह थी उनकी साधना और तपस्या।

राजस्थान के मुख्यमंत्री के पद पर रहते हुए जब उन्होंने अपने प्रति विश्वास का प्रस्ताव कांग्रेस दल में उपस्थित किया और वह प्रस्ताव अस्वीकार हो गया, तब उसी दिन सरकारी बंगला छोड़कर पोलोविक्ट्री होटल में मेरे पास आ गये। दूसरे दिन सवेरे ही बंगला खाली कर दिया। मित्रों ने बहुत कहा कि इतनी जल्दी क्या है। उन्होंने किसी की एक भी न सुनी। उन्हीं दिनों की बात है कि भौजी जी ने बच्चों के कपड़े खरीदने के लिये कुछ रुपया मांगा, तो उनको अंगूठा दिखाकर चुप रह गये। मुझे जब इसका पता चला, तब मैं उनके पास गया और वे बोले कि लो ये आये हैं पैसे वाले। जो लेना हो इनसे मांग लो। मैं चकित रह गया यह

देखकर कि जो कल तक मुख्यमंत्री था आज उसकी यह हालत है।

किशनगढ़ का मकान

किशनगढ़ में उप-चुनाव के वाद जव उन्होंने वहां अपना मकान वनाने का निश्चय किया, तव मैं उनसे सहमत न था। मैंने उनसे कहा कि किशनगढ़ में शमशान भूमि में मकान वनाकर क्या करोगे, वहां तो रात को भूतही दीख पड़ेंगे। वे वोले कि मैं उप-चुनाव में वायदा कर चुका हूं कि किशनगढ़ में रहूंगा। उनकी स्टूडीवेकेर मोटर की विक्री के सात हजार रुपये मेरे पास जमा थे। मैं सोचता था कि वे रुपये वचाकर रख लिये जायं। किसी आड़े समय काम आ जायेंगे। वे न माने और मुझे कहा कि मकान का काम जल्दी पूरा करवा लो। जयपुर में जव कभी वे काम से थक जाते, तो वहां एकान्त में जाकर कुछ आराम कर लेते थे। मैंने सन्तोप माना कि चलो आराम के लिये एकान्त में एक जगह तो वन गई। परन्तु वे वहां भी आराम न कर पाये। किसको क्या पता था कि इतनी जल्दी वे एकाएक हमसे विदा हो जायेंगे।

उनके विना मुझे पोलोविक्ट्री होटल की सारी इमारत सूनी-सी जान पड़ती है। जव कभी नीचे उतरकर उनके ठहरने के २९ नम्वर कमरे के सामने से गुजरता हूं, तो एकाएक ऐसा लगता है जैसे कि व्यास जी कहीं दौरे पर हैं और जल्दी ही लौटने वाले हैं। मैं उनको हमेशा दौरे से ही लौटते देखा करता था और आज भी दिमाग पर उनका वही रूप सदा वना रहता है।

४

आपवीते महत्त्वपूर्ण प्रसंग

श्री मुरलीमनोहर व्यास एडवोकेट, जोधपुर (राजस्थान)

पूज्य भाई जयनारायण व्यास मेरे शिक्षक थे। वे सर्वप्रथम १९१८ या १९१९ में श्री सुमेर पुप्टीकर स्कूल में शिक्षक नियुक्त हुए। मैं वहां विद्यार्थी था। मैं अपनी श्रेणी में सर्वप्रथम था। अतः वे मुझसे वहुत प्रसन्न रहते थे। उस समय वे खादी नहीं पहनते थे। धोती, कमीज, कोट और साफा रखते थे। धोती वहुत वारीक पहनते थे। अच्छे शौकीन जवान जंचते थे। वे संभवतः दो वर्प या इससे कुछ कम समय तक वहां शिक्षक रहे। तव से जीवन पर्यन्त 'मास्टर साहव' कहलाते रहे। स्कूल का नाम फिर श्री सुमेर पुप्टीकर हाई स्कूल हो गया और अव श्री सुमेर पुप्टीकर हायर सेकेण्डरी स्कूल कहलाता है। उसको व्रह्म-सभा

भी कहते हैं।

स्कूल छोड़कर वे रेलवे की नौकरी में चले गये। किन्तु राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने जब असहयोग आन्दोलन छेड़ा तो वे उनकी पुकार पर नौकरी छोड़कर मैदान में एक सच्चे सिपाही की भांति कूद पड़े और जीवन पर्यन्त सिपाही ही बने रहे व मैदान में जूझते रहे। नौकरी छोड़ने के पश्चात् उन्होंने कुछ समय तक पुस्तकें बेचने का काम किया। किन्तु कितने समय तक किया यह याद नहीं।

नवयुवक मंडल की स्थापना

उन्हीं दिनों में उन्होंने नवयुवक मंडल की स्थापना की। रूढ़िवाद का बहुत जोर था और सुधारक होने के लिये परम आत्मबल की आवश्यकता थी। नवयुवक मंडल समाज सुधारक संस्था थी। उसका राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं था। एक छोटा-सा पुस्तकालय भी था। मैं सन् १९२३ में प्रायः चौदह वर्ष की आयु में उसका सदस्य बना और सन् १९२५ से विशेष दिलचस्पी लेने लगा। तब से मास्टर साहब के अधिक सम्पर्क में आने लगा। मंडल का वार्षिक उत्सव मनाया जाता था, जिसमें मास्टर साहब, यदि वे जोधपुर में होते तो अवश्य ही भाग लेते थे।

समाज सुधारक के रूप में

होली के अवसर पर अश्लील गीतों को मिटाने का विशेष कार्यक्रम हाथ में ले लिया गया। प्रायः ४० वर्ष बाद आज यह बात अजीब-सी लगती है कि अश्लील गीतों को मिटाने के लिये भी भारी प्रयत्न करना पड़ता था। किन्तु जिन्होंने उन दिनों कार्य किया, वे जानते हैं कि वह कितना बड़ा प्रयास था। होली के दिनों में गायन टोलियां निकलती थीं। जिनको गैर कहते हैं। अश्लील गीतों के समर्थकों की संख्या बहुत अधिक थी। नवयुवक मास्टर साहब के साथ थे। मास्टर साहब स्वयं अच्छा गाते थे, और उनकी टोली में उनके घनिष्ट मित्र सर्व श्री मगन-राज जी, छगनराज जी व सरदारमल जी थानवी आदि बहुत अच्छे व बुलन्द आवाज़ से गाने वाले थे। जहां भी नवयुवक मण्डल की गैर पहुंच जाती वहीं भीड़ लग जाती। मास्टर साहब बहुत अच्छे गीतकार थे। सरदारमल थानवी व अन्य कविगण भी गीत बनाते थे। मुझे भी उन दिनों कविता करने का शौक था। उसको वकालत ने दबा लिया। मैं भी उन दिनों में लिखा करता था। हमारे गीतों का संग्रह प्रतिवर्ष छपा करता था और बेचा भी जाता था। मास्टर साहब के एक मित्र सेवाराम जी पुरोहित थे। साधारण पढ़े-लिखे थे। किन्तु उनकी सुधारक कार्य करने की लगन असीम थी। आजन्म ब्रह्मचारी रहे। इस प्रकार के कार्य-कर्त्ताओं को लेकर मास्टर साहब गुलाल से भरे हुए व चंग बजाते हुए जब अपनी टोली के साथ मोहल्लों, बाज़ारों व गलियों में निकलते थे, तो ऐसा प्रतीत होता था जैसे कि किसी सुधार सेना ने अश्लीलता पर धावा बोल दिया हो। उन्होंने एक गीत

'शिवजी भोलो' रचा था। उसको जब वे आगे-आगे और उनके साथी पीछे-पीछे गाते थे तो ऐसा प्रतीत होता था जैसे कि भगवान् शंकर अपनी टोली के साथ घूम रहे हों। वह गीत कुछ इस प्रकार का था 'ओ हो रे शिवजी भोलो साथ है भगतो रे टोलो, हाथ में भसमी रो गोतो, हरण ने बाबम्बर चोलो इत्यादि।' उनका दूसरा प्रिय गीत था 'वेलियां गाइजो रे गाइजो रे शंकर रा गुण गाइजो।' ये गीत तो रास्ते चलते गाये जाते थे। जहां घंटा आध-घंटा ठहरकर गाते थे तो दूसरे गीत जो हम लोग विशेष रूप से तैयार करते थे, गाये जाते थे। उस समय के मास्टर साहब के व हम लोगों के गीत अब पुस्तक रूप में उपलब्ध नहीं हैं। किन्तु विवाह आदि अवसरों पर अब भी स्त्रियां उन्हें बहुत गाती हैं। मास्टर साहब ने अपने गीतों में सामाजिक कुरीतियों को मिटाने का ध्येय अपने सामने रखा था। स्त्रियों को शिक्षा देने के लिये उन्होंने एक गीत लिखा था। जो कुछ इस प्रकार था 'नासमझ रहेगी जब तक ये घरवालियां···। घर कचरे का दफ्तर होगा, मकड़ी जाले घर-घर में, सब दिन-रात रहेगी बदबू, सड़ी रहेगी नालियां। ना समझ रहेंगी जब तक ये घरवालियां' मुझे इस समय उन दिनों में अपने बनाये हुए अनेक गीतों की याद आ रही है किन्तु मैं तो मास्टर साहब के संस्मरण लिख रहा हूं अपने नहीं, इसीलिये उनकी चर्चा यहां अनावश्यक है। केवल इतना लिखूंगा कि जब मेरा एक गीत 'जाति का हाल' छपा जो मैंने सन् १९२९ या १९३० में जोधपुर से प्रयाग जाते हुए रेल में अनेक अन्य गीतों के साथ लिखा था तो मास्टर साहब बहुत प्रसन्न हुए थे। उस गीत में उस समय की कुरीतियों का जीता जागता चित्र खींचा गया था। उसकी कुछ पंक्तियां याद आती हैं। जो इस प्रकार हैं :

> सुणजो सुणजो सरदारो रो साथ, जाति रो हाल कई,
> ए छोटा छोरो री शादी, वांरी विनणिया दासे हैल्यूं दा दी
> एड़ी शादी सूं बरबादी गणी होय, जाति रो हाल कई।
> ए बूढ़ा बूढ़ा परणी जे, वारीं वीनणियां पोतरियां ही दीसे।
> एड़ा व्यावां सूं विधवावा घणी होय, जाति रो हाल कई॥

गीत काफी लम्बा था और मास्टर साहब को बहुत पसन्द आया था।

उन्होंने सन् १९३१ से ही सादगी अपना ली थी और वे बारीक कपड़ों के विरुद्ध हो गये थे। चर्खे के भक्त हो गये थे। मुझे भी इसका चस्का लगा दिया था। उन दिनों मुझमें जोश अधिक होश कम था। मैंने एक पत्र पूज्य बापू को लिख दिया कि मुझे भी एक चर्खा रेल द्वारा भिजवा देवें। साबरमती आश्रम से चर्खा आया। साधारण चर्खा था। वजन में काफी भारी था। खासा-अच्छा खर्चा बैठ गया। बापू ने लिखा कि तुम्हारे आग्रह से चर्खा भेजा जाता है। किन्तु अच्छा यही होता कि इसको वहीं बनवाते या खरीदते। मास्टर साहब इस बात से बहुत प्रसन्न हुए कि मैंने चर्खा कातना आरम्भ किया व खादी पहनने लगा। तब अपनाई खादी में १९५०

तक या उसके कुछ बाद तक पहनता रहा। मास्टर साहब को जोधपुर से बाहर ही अधिक रहना पड़ता था। किन्तु जब कभी आते वे मिलना होता ही था। नवयुवक मण्डल में मैंने मन्त्री तथा अध्यक्ष रहकर कार्य किया। और उनका आशीर्वाद मेरे साथ रहा।

नागौर के किले में

मैंने मास्टर साहब का पहला जेल-जीवन नागौर के किले में देखा। मैं प्रयाग विश्वविद्यालय में कानून की पढ़ाई कर रहा था। यह बात १६२६-३० की है। मैं छुट्टियों में वहां से आया और मास्टर साहब से मिलने गया। वे, भंवरलाल सराफ और आनन्दराज जी सुराणा नागौर के किले में अलग-अलग रखे गये थे। मैं तीनों से मिला। राजनीति की चर्चा मिलने के समय नहीं की जा सकती थी। फिर भी चर्चा तो हुई। मुझे उनकी गिरफ्तारी का समाचार प्रयाग में ही मिला था। ऐसा याद पड़ता है कि उन दिनों कांग्रेस महासमिति या कार्यकारिणी की बैठक प्रयाग में हो रही थी और आप वहां आये हुए थे। श्री मणिलाल जी भाई भी वहीं ठहरे थे। वे व्यास जी के पुराने परम मित्र थे। वे होस्टल में मेरे कमरे में आये और देशी राज्यों के अन्य परिचित छात्रों को भी मैंने वहां ही इकट्ठा कर लिया था। मणिलाल जी भाई से बातचीत हुई। फिर उन्होंने मुझे बापू से मिलाया और मैं नित्य प्रायः व सायंकाल बापू की प्रार्थना में सम्मिलित होने लगा। किले में बन्द राजद्रोह के अभियुक्त मास्टर साहब को मैंने जब ये बातें सुनाईं तो वे अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा राजनीति में अधिकाधिक भाग लेने को उत्साहित किया।

उनका सत्परामर्श और आत्मीयता

मैंने कानून की पढ़ाई के लिये जाने से पहले उनसे मन्त्रणा की थी। उनकी राय थी कि मैं विलायत जाकर कोई हुनर सीख आऊं। मैंने कहा कि यहां तो प्रयाग जाकर पढ़ाई करने को भी पूरा खर्च नहीं है और आप विलायत जाने की सलाह दे रहे हैं। वे बोले कि रुपयों की कमी से कोई कार्य नहीं रुकता। यदि संकल्प सच्चा हो, अपने पर विश्वास हो और कार्य करने की लगन हो। फिर उन्होंने कराची में एक पुष्करणा सज्जन को इसके लिये पत्र लिखा। वहां उस पुष्करणा की एक बड़ी फर्म थी। मुझे नाम याद नहीं आ रहा है। फिर उन्होंने कहा कि विलायत जाकर कांच बनाने का काम सीखकर आओ या ऐसे ही किसी और काम को कहा था। ठीक याद नहीं। मेरे भाग्य में यह नहीं लिखा था, लिखा तो था रात-दिन मेहनत करके वकालत से आजीविका कमाना। मैं प्रयाग चला गया। सन् १६२६-३० का आन्दोलन छिड़ गया। मैं उसमें भाग लेने लगा और व्यास जी से कह दिया कि विलायत जाने के लिये रुपयों का प्रबन्ध करें। मैंने बापू को लिखा था कि मुझे क्या करना चाहिए, तो उन्होंने लिखा कि अपनी आत्मा से पूछ लो और उत्तर मिले वैसा करो। मैंने मास्टर साहब से कह दिया

कि मेरी आत्मा तो यही कहती है कि इस समय विदेश मत जाओ। उन्होंने कहा जैसी तुम्हारी इच्छा। अब कभी सोचता हूं कि मैंने उस समय कहीं भूल तो नहीं की। शायद तैंतीस वर्ष वकालत करने के पश्चात् आत्मा में इस प्रश्न का उत्तर देने की क्षमता नहीं रही। कुछ भी हो विलायत जाने का स्वप्न पूरा नहीं हुआ। किन्तु मास्टर साहब का प्रयास तो हृदय पर अमिट छाप छोड़ गया।

नागौर में लोक परिषद् की स्थापना

मैं नागौर में सन् १९३१ से वकालत करने लगा और मास्टर साहब से सम्पर्क कम हो गया। किन्तु लोक परिषद् की स्थापना के बाद जब वे नागौर में शाखा खोलने आये तब यह स्वाभाविक था कि अपने शिष्य के घर पर ही आते। वे विनोद प्रिय तो थे ही, वहां पर सर्वश्री शिवदयाल दवे, हस्तीमल बोथरा, छगनलाल चौपासनीवाला आदि ने उनसे कहा कि इसके यहां खाने-पीने का काम वैर-भाव से होना चाहिए। प्रातः काल दूध मंगवाया गया। इस बात को इसलिए लिख रहा हूं कि इसको वे स्वयं प्रायः दुहराया करते थे। उनके निधन से पहले जब मैं उनसे मिला था और मेरे साथ मेरे एक मित्र थे, जो उनके सम्बन्धी हैं, तो उन्होंने विनोदप्रिय बातों में इसका व एक अन्य बात का, जो आगे लिख रहा हूं, बहुत हँसते-हँसते उल्लेख किया था और कहा था कि हमने तुम्हारे साथ कैसे वैर-भाव से खान-पान किया था। तो नागौर में उस दिन शिवदयाल दवे को भेजकर प्रायः दो मन दूध मंगा लिया और स्वयं ने तथा अन्य कार्यकर्त्ताओं ने बिना गर्म किये ही जितना दूध उस दिन पिया उतना पीते हुए उनको फिर कभी नहीं देखा। फिर यही हाल भोजन का रहा। उन्होंने फिर वहां लोक परिषद् की शाखा कायम की और मुझे वहां का अध्यक्ष बना दिया। सम्भवतः शिवदयाल दवे मन्त्री बने। हस्तीमल बोथरा कोषाध्यक्ष बनाये गये। कार्य सुचारु रूप से चलता रहा। हमारा पुराना सम्पर्क नया बन गया, जो सन् १९४२-४३ के आन्दोलन में मुझको जेल ले जाने का कारण बना।

एक विनोद

दूसरी विनोदप्रिय बात जिसका उल्लेख उन्होंने हमारी अन्तिम मुलाकात में किया था। वह यह है, हम लोग जोधपुर में सर डोनाल्ड फील्ड चीफ मिनिस्टर के विरुद्ध एवं जिम्मेवार सरकार के लिये आन्दोलन आरम्भ करने वाले थे। इसलिये लोकपरिषद् की कार्यकारिणी की बैठकें हुआ करती थीं। मास्टर साहब नित्य कहा करते थे कि हम सबको अपने यहां एक दिन दावत दो। मुझे भी मजाक करने की सूझी। भोजन की सब तैयारी तो करवा ली किन्तु जब मास्टर साहब व अन्य २०-२५ कार्यकर्त्ता आये तो मैंने कहा कि आपको हरे व सूखे फल खिलाये जायें तो कैसा रहे। वे सब अत्यन्त प्रसन्न दिखाई दिये और प्रशंसा सूचक शब्द कहने लगे। सबके सामने तश्तरियां रख दीं और उनमें रख दिये सूखे व हरे बेर।

देखकर साथी झल्लाये। मैंने कहा आप लोग हरे व सूखे फल खाने से प्रसन्न हो सो दोनों ही तैयार हैं। थोड़ी देर विनोद होता रहा। फिर एक साथी सम्भवतः छगनलाल चौपासनीवाला भीतर रसोई में चले गये और वापस आकर सबको सूचना कर दी कि भोजन तैयार है। वैर-भाव से खाना चाहिए। जिस दिन आंदोलन आरम्भ होने वाला था, उस दिन भी सब साथियों ने वैर-भाव से घी, शक्कर और आटे का दुरुपयोग करने में संकोच नहीं किया और उसका फल भी अच्छा ही मिला। खाने वाले सबके सब मेरे सहित जेल में ठूंसे गये।

मास्टर साहब को भोजन का अच्छा शौक था और खाने में किसी से पीछे नहीं रहते थे। श्री हीरालाल शास्त्री वाली खुराक तो नहीं थी कि जिनके साथ वनस्थली में मुझे भोजन प्रतियोगिता करनी पड़ती थी। किन्तु मास्टर साहब भी भोजन पर अच्छा हाथ साफ कर लेते थे।

१९४२ का आन्दोलन

मास्टर साहब ने लोक परिषद् का १९४२ का आन्दोलन मेरे यहां से आरम्भ किया था। वे कुछ दिनों वहीं रहे और जिस दिन आन्दोलन आरम्भ होने वाला था, उस दिन खा-पीकर सब साथी चले गये। केवल हम दोनों घर पर रह गये। आन्दोलन किस प्रकार चलाया जावे इसकी रूपरेखा सोचते रहे। दोपहर बाद पुलिस सुपरिंटेण्डेण्ट बलदेवराम मिर्धा दल-बल सहित आये। घर की तलाशी ली। मुझे छोड़ गये और मास्टर साहब को गिरफ्तार कर ले गये।

एक उल्लेखनीय घटना

आन्दोलन आरम्भ होने से पहले की एक घटना का उल्लेख करना अत्यन्त आवश्यक है, जिससे मास्टर साहब की निडरता का पता चलता है। जोधपुर के राजघराने वाले और स्वयं महाराजा श्री उम्मेदसिंह जी साहब सर डोनाल्ड फील्ड को निकालने के लिये उत्सुक थे और हमारे आन्दोलन का वे इसी दृष्टि से भीतर-ही-भीतर स्वागत भी करते थे। महाराजा साहिब के पोते श्री भीमसिंह ने मुझे कहा कि व्यास जी से मेरी एकान्त में मुलाकात करवा दो। मगर वह मुलाकात शहर से दूर सुनसान में आधी रात में होनी चाहिए। और हम तीनों के अतिरिक्त वहां कोई और नहीं होना चाहिए। मैंने हां भर ली और जोधपुर से प्रायः सात-आठ मील दूर एक स्थान उसके लिये तय हुआ। मैंने मास्टर साहब से आकर यह बात कह दी; शाम के बाद रवाना हुए। श्री छगनलाल चौपासनीवाला को भी हमने साथ ले लिया। अपनी पुष्टीकर जाति की देवी उष्ट्रवाहिनी के दर्शन करके हम पहाड़ी निर्जन मार्ग से निर्जन स्थान पर पहुंचे। कुछ देर तक मोटर आती दीख न पड़ी, तब मुझे सन्देह हुआ कि कहीं हमको मारने-मरवाने का षड्यंत्र तो नहीं रचा गया है। काफी देर तक मैं इस विचार में चिन्तित रहा। अन्त में मैंने मास्टर साहब से कह ही दिया कि आप जैसे व्यक्ति की, जिसकी जान की कीमत हमारे

जैसे अनेक व्यक्तियों से भी अधिक है, यहां लाने में मैंने भारी भूल की है। उन्होंने हँसकर कहा कि कोई भूल नहीं की। मारने व जिलाने वाला तो भगवान् है। हम को उस पर विश्वास रखना चाहिए और किसी से डरना नहीं चाहिए। अन्त में जब श्री भीमसिंह अपनी मोटर में अकेले आये और बातचीत के बाद सकुशल हमको अपनी गाड़ी में मेरे यहां छोड़ गये, तब मेरी जान में जान आई। किन्तु मास्टर साहब को एक पल भी भय अनुभव नहीं हुआ।

मेरी गिरफ्तारी

आन्दोलन आरम्भ होने के पश्चात् मुझे संचालन के सम्बन्ध में बम्बई, ब्यावर, जयपुर, दिल्ली आदि स्थानों पर रहना पड़ा। नई दिल्ली में भाई सत्यदेव जी विद्यालंकार से भी इस विषय में कई बार मिला। जयपुर में हीरालाल जी शास्त्री से परामर्श होता था। उनके द्वारा सर मिर्जा इस्माइल से मिलकर उनसे सर डोनाल्ड फील्ड को पत्र लिखवाया। अन्य कार्य भी जैसे प्रतीत हुए, किये। जो साथी जेल में पहुंच चुके थे वे चाहते थे कि मैं भी शीघ्र ही गिरफ्तार होकर उनके पास पहुंच जाऊं। मास्टर साहब के गिरफ्तार होने के दिन जो रूपरेखा हमने बनाई थी, उसमें यह था कि मैं गिरफ्तार होने की जल्दी न करूं और जहां तक हो सके बाहर रहकर काम करता रहूं। इसी कारण मैं बाहर रहा। मेरी गिरफ्तारी तभी हुई, जब कि जयपुर सरकार ने मुझे गिरफ्तार कर जोधपुर राज्य में ले जाकर वहां की पुलिस को सौंप दिया। जेल से छूटने के बाद मैंने मास्टर साहब से एक दिन प्रायः पांच-छह घंटे बातचीत की और मुझे यह विश्वास हो गया कि उनके मन में मेरे प्रति कोई सन्देह नहीं था। वे मुझ पर वैसा ही प्रेम रखते हैं जैसा कि पहले रखते थे।

कलाकार

मास्टर साहब को संगीत व नृत्य का बहुत शौक था और उनका तांडव नृत्य तो उनके मित्रों को सदैव याद रहेगा। वे घुंघरू बांधकर बहुत अच्छा नृत्य करते थे।

कुछ कटु अनुभव

मास्टर साहब के संस्मरणों का एक अच्छा बड़ा ग्रन्थ बन सकता है। मैंने कुछ मधुर संस्मरण लिखे हैं। अब कुछ कड़वे भी लिखना चाहता हूं। मास्टर साहब जोधपुर के प्राइम मिनिस्टिर बने उसके बाद उनसे एक बार दफ्तर में मिलने गया और उनकी रुखाई देखकर फिर जब तक वे प्राइम मिनिस्टर रहे, तब तक नहीं मिला। राजस्थान संघ बना और उन पर मुकदमा चला तब फिर मिला और जब मुकदमा स्पेशल ट्रिब्यूनल के सामने चला तब उनकी ओर से अन्य वकीलों में मैं भी एक था। उस संगीन मुकदमे की उनको रत्ती-भर परवाह नहीं थी। वे अत्यन्त निडर रहते और विनोद करते रहते थे।

मास्टर साहब जोधपुर के नहीं राजस्थान के नागरिक थे। जब वे राजस्थान के चीफ मिनिस्टर बन गये, तब उन्होंने जोधपुर का अधिक ध्यान नहीं रखा। उनके राजस्थान के मुख्य मन्त्री बनने पर मैंने उनसे फिर मिलना बन्द कर दिया। एक बार जोधपुर में भौजी (उनकी पत्नी) ने कहा कि मिलने क्यों नहीं आते। मैंने कहा कि गद्दीनशीन होने पर उनका दिमाग फिर जाता है और भावों तथा आपसी व्यवहार में परिवर्तन हो जाता है, इसलिए मैं नहीं आता। भौजी ने आग्रह किया कि घर आ कर मैं अवश्य मिलूं। वे जोधपुर में अपने सराय वाले मकान में ही ठहरे हुए थे। मैं सुबह जल्दी गया। एक ओर से मैं पहुंचा और ठीक दूसरी ओर से वे हवाखोरी से लौटकर आये। मैंने पायलागन किया। वे बोले नहीं और मुंह फेर कर भीतर चले गये। मैंने निश्चय किया कि मैं घर के भीतर नहीं जाऊंगा। शिवदयाल दवे घर के बाहर लेटा था। उसकी एक टांग कट चुकी थी। मैंने दवे से कहा कि "भौजी को कह देना कि मैं आग्रह पर आया था और इस व्यवहार से खिन्न होकर मैं वापस जा रहा हूं।"

जब वे चीफ मिनिस्टर से हटे, तब तो फिर वैसा ही प्रेम-व्यवहार रहा। एक बार मैं व मेरे एक मित्र जो उनके बाललंगोटिये हैं, महादेव जी के दर्शन करके जा रहे थे और मास्टर साहब व कुछ साथी जा रहे थे। मास्टर साहब रुके किन्तु उनके वे साथी जो मेरे साथ थे, नहीं रुके और यह कहकर चल दिये कि जब तुम काम पर होते हो तो तुम्हें बात करने की फुर्सत नहीं मिलती। अभी तुम निकम्मे हो और मैं नौकरी पर हूं, इसलिए मैं बात नहीं करता। मास्टर साहब खूब हंसे। कुछ देर मुझसे बातचीत करके आगे चल दिये।

एक बार हम दोनों का रेल में साथ हो गया। डिब्बे में हम दोनों के अतिरिक्त कोई और न था। उन्होंने चीफ मिनिस्टर होते हुए भी पार्टी मीटिंग करके विश्वास का वोट लेने की जो कार्रवाई की थी और जिसमें उनके स्थान पर श्री मोहनलाल सुखाड़िया सफल हुए थे, उस पर बातचीत हुई। तब वे बोले कि पार्टी मीटिंग में जितने सदस्य आये, उनमें केवल मैं ही राजस्थानी था। बाकी सब तो जयपुर, जोधपुर और उदयपुर आदि के थे। कैसा सुन्दर था उनका यह विश्लेषण। एक ही वाक्य में उस समय की स्थिति का। मुख्यमन्त्री पद से हटने या हटाये जाने का उनको किंचिन्मात्र भी दुःख नहीं था। मुझे रामायण वह का प्रसंग याद आया, जहां तुलसीदास ने वाली के प्राण त्याग की उपमा हाथी के गले से पुष्पमाला गिरने से दी है और हाथी को पता नहीं चलता कि माला गिर गई है। वास्तव में वे निजी स्वार्थ से रहित महान् व्यास जी थे।

मास्टर साहब जब इस लोक से पधारे, उससे प्रायः एक महीने पहले अन्तिम मुलाकात हुई थी। वे राजस्थान के बीकानेर खंड का वहां दौरा करके लौटे थे। जहां भारतीय सीमा पाकिस्तानी सीमा से मिलती है। फिर किसी विवाह में सम्मि-

लित होने के लिये जैसलमेर होकर आये थे। वहां उनकी तवियत कुछ खराव हो गई थी। वे जोधपुर में विश्राम ले रहे थे। इसका पता लगने पर मैं मिलने गया। वहुत देर वातचीत हुई। मैसाराम पुरोहित साथ था। उन्होंने कई विनोद पूर्ण प्रसंग सुनाये। वह प्रसंग भी सुनाया जव मैंने उनको दावत में हरे सूखे वेर परोसे थे काफी देर तक हंसी-मज़ाक चलता रहा। फिर सीमा की स्थिति का वर्णन करते रहे। उन्होंने प्रधानमन्त्री, गृहमन्त्री और राजस्थान के भी गृहमन्त्री आदि से जो लिखा-पढ़ी की थी, वह दिखाई और नक्शे वताये।

तव स्वास्थ्य काफी सुधर गया था, फिर भी पूर्ण स्वस्थ नहीं हुए थे। हमने उनको अधिक विश्राम करने की राय दी तो वोले कि विश्राम करने का समय ही कहां है। मैं कल ही दिल्ली जा रहा हूं। दूसरे दिन वे दिल्ली चल दिये। फिर जोधपुर एक वार आये, तव मेरा मिलना नहीं हो सका और उस दिन की ही वह मुलाकात मेरे लिये अन्तिम स्मृति वन गई।

५

बाल साथी की मधुर स्मृतियां

श्री सरदारमल जी थानवी, किताव घर, जोधपुर (राजस्थान)

मेरा व्यास जी से दस वर्ष की अवस्था से तीस वर्ष की अवस्था तक घनिष्ट सम्वन्ध रहा, जवकि हम साथ खेले, साथ पढ़े, साथ खाये-पीये और साथ ही सामाजिक कार्य में लगे। सन् १६३८ में उन्होंने राजनीति में पूर्णरूपेण प्रवेश कर लिया। तव उन्हीं के आदेशानुसार मैंने अपना कार्यक्षेत्र समाज-सेवा तक ही सीमित कर लिया और राजनीतिक क्षेत्र में गौण रूप से ही कार्य करता रहा।

◇ ◇ ◇

व्यास जी का और मेरा मकान एक ही दीवार से मिला था। उनके पिता जी तथा आगे चलकर वे स्वयं, मेरे पिता जी श्री शिवदानमल जी से अंग्रेजी पढ़ने लगे। इस कारण हमारा उनका वहुत नज़दीक का सम्वन्ध रहा। जव तक उनके नाना श्री जोगीदास जी जोशी जीवित रहे वह अपने ननिहाल में ही रहे जो हमारे घर से आधा फर्लांग से भी कम दूरी पर था। इसलिए वचपन के खेल-कूद में हम दोनों साथ रह सकते थे। उनको कवड्डी, मारदडी, ठीयादडी और धुन्ना खेलने की विशेष रुचि थी। अपने से वड़ी उम्र के लड़कों से होड़ लगाने में वे कभी नहीं हिचकते थे। एक वार का जिक्र है कि कुछ लड़कों ने उन्हें धुन्ना खेल में हरा

दिया। और सब धुन्ने छीन लिये। वह हिम्मत नहीं हारे और जंगल में जाकर लकड़ी काट नये धुन्ने बना लाये। उन्होंने ऐसी लगन व दृढ़-प्रतिज्ञ होने का परिचय दिया कि उस दिन सबको हराकर उनके धुन्ने छीनकर ही दम लिया।

◇ ◇ ◇

पिता जी के नौकरी के कारण बाहर रहने एवं स्वयं नाना जी के बहुत लाड़ले होने से उनका पढ़ाई की ओर विशेष आकर्षण न रह सका और उन्होंने केवल आठवीं कक्षा उत्तीर्ण कर पुष्टिकर स्कूल में मास्टरी आरम्भ कर दी। फिर माली जाति के स्कूल श्री सुमेर स्कूल में अध्यापक हो गये। वहां जहां से आपने प्राइवेट तौर पर पंजाब मैट्रिक की परीक्षा पास की, वहां उनका और मेरा साथ रहा। मैंने सन् १९१८-१९ में उसी स्कूल में कक्षा ७ व ८ उत्तीर्ण की। वहां की एक घटना भी उल्लेखनीय है। वह स्कूल हमारे घर से करीब तीन मील दूर पड़ता था। वहां जाने का रास्ता पहाड़ के निर्जन स्थान से होकर जाता था। उस रास्ते से जाने वाले बीस-पच्चीस लड़के विविध कक्षाओं व उम्र के थे और अलग-अलग जाया करते थे। बागर में मुसलमानों के कुछ शरारती लड़के छोटे लड़कों को तंग करते और उनकी पुस्तकें छीन लेते। जब व्यास जी को पता चला तब उन्होंने पहले तो उन लड़कों को समझाया। उनके न मानने पर हमें साथ लेकर उन शरारती लड़कों को पत्थरों से पिटवाया। वे शरारत करना भूल गये। साथ ही हम छात्रों को यह सलाह दी कि वे निश्चित समय तक एक जगह रुककर सब साथ मिलकर ही स्कूल जावें। इस प्रकार संगठित रूप में आने-जाने से यह कष्ट सदैव के लिये दूर हो गया। अन्याय के प्रतिशोध और संगठन की जिस स्वाभाविक प्रतिभा ने उनके भावी जीवन में अद्‌भुत चमत्कार कर दिखाया उसका वैसा सुन्दर परिचय इस छोटी-सी घटना से मिलता है।

◇ ◇ ◇

१९१९ में आपने रेलवे के सेण्ट्रल डिस्ट्रिक्ट आफिस में असिस्टेन्ट इस्टेब्लिशमेन्ट क्लर्क के रूप में नौकरी कर ली। अन्यायपूर्वक पद-वृद्धि के विरोध में एकाएक त्यागपत्र दे दिया। यह था उनका स्वभावसिद्ध स्वाभिमान, जिस पर वे आजीवन अडिग बने रहे। उसके बाद वे पी० डब्ल्यू० डी० में क्लर्क हो गये। कुछ वर्ष पश्चात् राजनीतिक कार्यों में लग जाने से आपको वहां से भी त्यागपत्र देना पड़ा।

◇ ◇ ◇

संगीत, नृत्य एवं नाट्यकला में भी उनकी विशेष रुचि थी। श्री लक्ष्मीनारायण जी के साथ आपने सिलवर किंग नाटक में नब्बू और खूबसूरत बजा में काहिरा एवं खैरसज्ज बेग की भूमिका अदा की। राखी में भी जिसे गणेशचन्द्र जोशी ने लिखा था और स्वयं व्यास जी ने जिसके गाने लिखे थे; डायरेक्शन

किया। आपने स्वयं 'अनुचित विवाह' और 'परिवर्तन' नामक दो नाटकों की रचना की। पहले का कुछ अंश तो पुष्करणा ब्राह्मणोकारक में प्रकाशित हुआ और दूसरा अप्रकाशित ही रहा।

◇ ◇ ◇

प्रातःकाल ब्रह्ममुहूर्त में उठकर हम लोग सदैव शहर से दो मील खरबूजा बावड़ी जाया करते थे। वहां से मील भर दूर निवटने जाया करते। नजदीक रहने वाले इच्छुक किन्तु प्रमादवश जल्दी उठने में असमर्थ लोगों को उठाकर साथ ले जाने का कार्य भी किया गया। यह उनकी संगठन की रुचि व शक्ति का प्राथमिक नमूना था। आपको कुश्ती का भी शौक था। हम दोनों ने रात के बारह बजे तक परिश्रम करके चांद पोल के बाहर के मेरे नौहरे में अखाड़ा बनाया। वहां हम लोग नित्य कुश्ती का अभ्यास किया करते थे। फिर इस स्थान के दूर होने एवं छोटे-बड़े व्यक्तियों के लिये इतनी दूर प्रातः पांच बजे आना असुविधाजनक होने से हमारे मित्र श्री सेवाराम जी पुरोहित की प्रेरणा से मुहल्ले व नव चौक में एक सुरक्षित स्थान में अखाड़ा बनाया गया। भूतपूर्व जयपुर दरबार के गुरु श्रीमाली ब्राह्मण मूलराज जी हमारे उस्ताद थे। व्यास जी का 'खड़ी बगली' नाम दांव पर ज़बरदस्त अधिकार था। इस दांव से वे अपने से दुगने को भी एक बार जमीन पर गिरा ही देते थे। श्री मथुरादास माथुर के पिता जी श्री ज्वालादास जी माथुर की और व्यास जी का अच्छा जोड़ था। इस अखाड़े का उनका एक चित्र भी है, जो यत्न करने पर भी नहीं मिल सका।

◇ ◇ ◇

सामाजिक कुरीतियों से आप बड़े दुःखी रहते थे। उनके उन्मूलन का बीड़ा आपने उठाया। १९१९ में हमने स्वजातीय नवयुवक मण्डल की स्थापना की थी और समाजसुधार के गीतों की छोटी-बड़ी हज़ारों पुस्तकें प्रकाशित कर छपाईमात्र की लागत में वितरित कीं और जगह-जगह जाकर प्रचार किया। उनमें अनेक गीत उनके स्वयं रचे हुए हैं। बच्चों को सभ्यता से बात करने और आगन्तुकों से व्यवहार करने का ढंग सिखाने के उद्देश्य से आपने एक छोटी-सी पुस्तक 'सभ्य सोहन' नाम से लिखी थी और प्रकाशित भी करवाई थी। कन्याओं के लिये भी इसी प्रकार की आप एक पुस्तक लिख रहे थे पर वह प्रकाशित नहीं हो सकी।

◇ ◇ ◇

राजनीतिक एवं आर्थिक कारणों से आपको बीकानेर और बगड़ी में जैन साधुओं की सेवा में कुछ समय बिताना पड़ा था। बीकानेर के सेठ चांदमल जी के यहां शिक्षक के रूप में सिकन्दराबाद में और सेठ रामगोपाल जी मेहता के भाई श्री शिवरतन जी के पुत्र गिरधरलाल जी को पढ़ाने के लिये आपको बीकानेर व कराची में भी रहना पड़ा था। सेठों के जीवन का उनके मानस पर जो प्रभाव पड़ा

उसका दिग्दर्शन उन्होंने अपने उपन्यास 'जीवन समस्या' में किया है। वह मैंने उनके जेल जीवन के समय प्रकाशित किया था। उसकी भूमिका श्री वंशीधर जी थानवी ने लिखी थी। इस प्रकार युवावस्था में ही आप लेखक और सामाजिक क्रान्तिकारी के रूप में कार्य-क्षेत्र में आ गये थे।

◇ ◇ ◇

जैन साधु श्री चुन्नीलाल जी महाराज के साथ बगड़ी, सीमाट, कैलमाज आदि ग्रामों में रहकर उनकी पुस्तकों का सम्पादन करने व प्रकाशित कराने का कार्य आपने किया। वहां रहते हुए आपने बगड़ी निवासियों को वाचनालय, पुस्तकालय एवं व्याख्यानशाला स्थापित कर शिक्षित करने का कार्य किया। सेठ अमोलकचन्द जी लोढा तथा श्री सेठ गणेशमल जी खाटेर आदि का आपको पूर्ण सहयोग मिला। मुझे भी इस व्याख्यानशाला की एक बैठक में सभापति बनने का सुअवसर मिला था। यहां रहते हुए आपने भील जाति के जीवन का अध्ययन करके उनके उद्धार के लिये जो कार्य किया और उसके लिये जो कार्यप्रणाली अपनाई वह आपकी अपनी ही सूझ-बूझ थी। एक दिन हम दोनों बगड़ी के पास एक बावड़ी पर स्नान कर लौट रहे थे तो आप मुझे एक साधु की कुटिया पर ले गये। वहां साधु महाराज से बातें हुईं। वह भील जाति के थे और उनके माध्यम से आपने भील जाति के रीति-रिवाज तथा दुःख-सुख की सारी जानकारी प्राप्त की। महाराज को उनके सुधार व उन्नति के तरीके बताकर प्रचार की व्यवस्था की। भील व बागड़ियों सम्बन्धी लेख तथा ट्रेक्ट भी आपने लिखे और उनको जराइम-पेशा कौम से मुक्ति दिलाकर मानवीय अधिकार दिलाने के लिये आन्दोलन किया। यह थी आपकी धुन व लगन जिसका विकास राजनीतिक क्षेत्र में कार्य प्रारम्भ करने पर विस्मयजनक रूप में हुआ।

◇ ◇ ◇

आप में धार्मिक आस्था व सात्विक भावना भी कुछ कम न थी। सब धर्मों के मूलभूत तत्त्वों को जानने व समझने की इच्छा से हम साथी सभी धर्म-सभाओं में पहले बिना बुलाये, फिर निमन्त्रण पाकर जाया करते थे। गुरुद्वारा, चर्च, मस्जिदें और मौलूद शरीफ आदि सुनने भी जाया करते थे। दकियानूसीपन व अन्धश्रद्धा से दूर रहकर संध्या आदि भी किया करते और उसे मन की एकाग्रता का एक प्रारम्भिक साधन मानते थे। जेल प्रवास में आपने गीता की अनेक टीकाओं का अध्ययन मुझसे मंगवाकर किया था और उसके सम्बन्ध में अपने विचार भी जेल ही में लिखे थे। जेल में रहते हुए दो सौ पृष्ठ के तीन रजिस्टर लिख डाले थे। उनमें विभिन्न विषयों की विस्तार से चर्चा की गई थी। उनमें सभा संचालन के लिये स्वागत-गीत से लेकर धन्यवाद तक की पूरी प्रणाली दी गई थी। वह तीनों रजिस्टर कुछ समय मेरे पास रहे पर फिर आपके मांगने पर आपको लौटा दिये

गये थे। वे अब भी उनके कागजों में होने चाहिए। इससे आपकी अध्ययन, मनन व चिन्तन की प्रवृत्ति का अच्छा परिचय मिलता है।

◇ ◇ ◇

पत्रकार जीवन का श्रीगणेश युवावस्था में ही जातीय पत्र 'पुष्करणा ब्राह्मण' से हुआ। उसमें आपकी कविताएं व लेख विशेष रूप से प्रकाशित हुआ करते थे। उसके बाद 'पुष्करणा ब्राह्मणोपकारक' का सम्पादन भी किया। कुछ समय के लिये अपना निजी पत्र 'पुष्करणा' भी निकाला। सामाजिक एवं राजनीतिक संस्थाओं से सम्पर्क होने और उनमें कार्य करने के कारण आपने अजमेर से प्रकाशित होने वाले 'तरुण राजस्थान' तथा 'राजस्थान' आदि में स्थानीय समाचार भेजने शुरू किये और शीघ्र ही आप उनके जोधपुर में संवाददाता के रूप में काम करने लगे। जोधपुर छोड़ने के लिये बाध्य होने पर वह काम मुझे सौंपे गये। ब्यावर में आपने 'तरुण राजस्थान' का सम्पादन किया। आपको राजस्थानी भाषा से विशेष प्रेम था। उसी भाषा में आपने ब्यावर से 'आगीवाण' नाम का पाक्षिक पत्र भी प्रकाशित किया और 'अपनी बोली' शीर्षक से एक ट्रैक्ट भी लिखकर मेरे श्री सुमेर प्रिन्टिंग प्रेस से प्रकाशित करवाया था। इस प्रकार राजस्थानी पत्रकार के रूप में आपने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया। परन्तु पत्रकार के रूप में अखिल भारतीय प्रतिष्ठा प्राप्त अंग्रेजी, गुजराती तथा हिन्दी के दैनिकों का संवाददाता तथा प्रतिनिधि बनने में अधिक समय नहीं लगा। बम्बई के गुजराती दैनिक 'जन्म-भूमि' और नई दिल्ली के दैनिक 'हिन्दुस्तान' आदि के साथ आपका विशेष सम्बन्ध रहा। 'जन्म-भूमि' के संस्थापक श्री अमृतलाल सेठ के तो आप अन्यतम सहयोगी ही बन गये थे।

◇ ◇ ◇

आपका राजनीतिक कार्यक्षेत्र पहले मारवाड़ तक सीमित रहा, फिर राजस्थान और बाद में देश के समस्त देशी राज्यों तक फैल गया। आप अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद् के वर्षों मन्त्री रहे और उसके माध्यम से समस्त देशी रियासतों की जनता की सेवा की। आप रियासती नरेशों को निर्दोष मानते थे और अंग्रेजों व उनके नौकरशाही अधिकारियों के इशारों पर जबर्दस्ती चलाये जाने वाले दया योग्य प्राणी समझते थे। आपकी अपने जोधपुर नरेश के प्रति पूर्ण श्रद्धा थी, जिसे उन्होंने अपनी भावनाओं के अनुसार लिखे 'जोधपुर रियासत के राष्ट्रीय गीत' में इस प्रकार व्यक्त किया था कि "नृप मरुधर अमर रहे शंकर"। अपनी श्रद्धा व प्रेम-भावना को उन्होंने अन्त तक निभाया। यही कारण था कि राजघराने से एवं बुद्धजीवी सामन्तों से आपका स्नेह आजीवन बना रहा।

◇ ◇ ◇

वीर पूजा में आपका पूर्ण विश्वास था। आपने जोधपुर में 'वीर दुर्गादास

जयन्ती' महोत्सव का सूत्रपात किया था। तीन वर्ष तक आपके अनन्य मित्र श्री हेमकरण छंगाणी एवं श्री भंवरलाल सराफ ने उसका संचालन किया फिर भाई हेमकरण जी के प्रवासी एवं स्वर्गवासी हो जाने और भंवरलाल जी के कारावास में रहने से दो वर्ष मुझे भी उसका संचालन करना पड़ा। यह व्यास जी के अतीत के प्रति गौरवपूर्ण अनुभूति का एक ही उदाहरण है।

◇ ◇ ◇

देश-सेवा के कर्त्तव्य के सामने आपने अपने कुटुम्व का कुछ भी ध्यान न रखा। बालकों की पढ़ाई-लिखाई, विवाह-शादी सभी कामों के प्रति आप उदासीन रहे। ये सभी पारिवारिक कार्य पूजनीय माता गोपीवाई जी द्वारा सुव्यवस्था एवं दूर-दर्शिता से सम्पन्न होते रहे। मुझे अच्छी तरह याद है कि जब आपके पास पैसा न होता तो माता जी को कहते "वहन आज तो वीस रुपया चाहिए, कहीं से भी ला" और वगैर कुछ कारण पूछे 'वहन' व्यवस्था कर देती। स्थिति यह हुई कि उसको अपने जेवर व मकान तक वेच देने को वाध्य होना पड़ गया। किन्तु अन्त-काल के समय माता-पिता की भक्ति तथा सेवा-भावना का जो आपने परिचय अपने संस्कारी प्रतिवन्धों का उल्लंघन करते हुए दिया, वह युवकों के लिये अनु-करणीय है।

◇ ◇ ◇

१९३१ में आप अपने कुछ साथियों के साथ कराची कांग्रेस में सम्मिलित होने गये। लगभग वारह मित्र जोधपुर से और कुछ अजमेर से भी साथ थे। उसकी सूचना रायवहादुर सेठ शिवरतन जी मोहता को हो गई और स्टेशन पर पहुंचते ही सेठ जी के आदमी हम सवका सामान उनके निवासस्थान पर ले गये। आपकी इच्छा उन पर वोझा वनने की नहीं थी पर उनके वहुत आग्रह करने पर आपको उनका आतिथ्य स्वीकार करना ही पड़ा। कुछ दिन हम सेठ जी के वंगले पर जो समुद्र के किनारे पर वसा है, रहे और श्रीमती सेठानी जी का वहिन सरीखा व्यवहार मैं कभी नहीं भूल सकता। वड़ी वहिन जैसे अपने भाई से मिलकर प्रसन्न होती है, घर के सव हाल-चाल पूछती है व उलाहने देती है; वैसे ही वड़े प्रेम से उन्होंने घर-गृहस्थी के समाचार पूछे और राजनीतिक चर्चा भी की। यह विल्कुल भी प्रकट नहीं हुआ कि वह अपने पुराने नौकर अथवा पुत्र के भूतपूर्व अध्यापक से वातचीत कर रही हैं। व्यास जी का भी उनके परिवार के साथ घर का सा संवंध प्रतीत हुआ। यह था व्यास जी की सहृदयता तथा आत्मीयता का ही शुभ परि-णाम, जिसकी मेरे हृदय पर अमिट छाप लग गई। उसके वाद व्यास जी पूरी तरह सक्रिय राजनीति में रम गये।

६

आदर्शनिष्ठ

श्री गंगादास जी व्यास, जोधपुर (राजस्थान)

आदरणीय व्यास जी के साथ मेरा सम्वन्ध लगभग साठ वर्ष रहा। वह सम्वन्ध वचपन में शुरू हुआ और उनके जीवन की अन्तिम घड़ी तक वना रहा। हमारी जीवनधारा दो समानान्तर दिशाओं में प्रवाहित होने पर भी हमारे आन्तरिक स्नेह में कभी कोई अन्तर नहीं आया। वह राजशाही के प्रति वगावत करने वाले थे तो मैं राजशाही की सेवा में लगा था। फिर भी मैंने उनके प्रति अपनी निष्ठा में कोई कमी नहीं आने दी। और जहां तक वना मैं अपनी वुद्धि व शक्ति के अनुसार उनका सहायक ही वना रहा। कुछ विकट प्रसंगों पर भी मैंने उनके प्रति अपने कर्त्तव्य पालन में कभी कमी नहीं होने दी। किसी संस्कृत कवि का यह कथन विल्कुल ठीक है कि :

"नरपतिहितकरता द्वेष्यतां याति लोके,
जनपदहितकरता त्यज्यते पार्थिवेन्द्रैः।
इति महति विरोध वर्तमाने समाने,
नृपतिजनपदानां दुर्लभः कार्यकर्त्ता।"

अर्थात् राजसेवा में संलग्न व्यक्ति जनता में वदनाम हो जाता है और जनसेवा में संलग्न राजाओं का कृपापात्र नहीं वन सकता। इस विरोधाभास के रहते हुए दोनों की सेवा करने वाला कार्यकर्त्ता मिलना मुश्किल है। वाहरी दृष्टि से हम दोनों की वहुत कुछ ऐसी ही स्थिति वन गई थी। परन्तु आन्तरिक दृष्टि से हम दोनों में ऐसा कोई विरोध न था।

वचपन में पांच ही वर्ष की आयु में हम दोनों एक ही गुरु जी की पोशाला में पढ़ने के लिये विठाये गये थे और वहां भी हम दोनों भाई-भाई ही समझे जाते थे। हम दोनों अपने ननिहाल में रहते थे। उनके नाना जी का नाम जोगीदास जोशी तथा मेरे नाना जी का नाम शिवदेव था। उन दोनों में भी परस्पर वड़ा स्नेह था। हम दोनों व्यास थे। इसलिये गुरु जी हम दोनों को जोगिया व्यास और शिवदेविया व्यास कहकर पुकारा करते थे।

व्यास जी को मैं उनके कर्मठ जीवन और चरित्र को देखते हुए 'योगभ्रष्ट' मानता हूं। गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है कि :

"शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोभिजायते।"

गीता के 'शुचीनां' व 'श्रीमतां' शव्द उनके ननिहाल पर और 'योगभ्रष्ट' शव्द उनपर विल्कुल ठीक वैठते हैं। मेरी दृष्टि में उनकी ननिहाल के लोग आजकल की दुनिया को देखते हुए वड़े ही सदाचारी, पवित्र, धर्मनिष्ठ तथा श्रद्धासम्पन्न थे।

उनके कुल में जन्म लेने वाली माता की कोख से पैदा होना उनका परम सौभाग्य था। अपने योगभ्रष्ट पूर्व जीवन के संस्कारों की पृष्ठभूमि पाकर प्रस्फुटित हुए, तव उनमें विस्मयजनक व्यक्तित्व एवं चरित्र का प्रादुर्भाव होना सर्वथा स्वाभाविक था।

उनके सार्वजनिक जीवन का प्रारम्भ पुष्करणा समाज के समाज-सुधार के क्षेत्र से हुआ था। तव मैं भी उनका एक साथी था। परन्तु समाज-सुधार के क्षेत्र में वे ऐसे उग्रवादी सिद्ध हुए कि वहुत से साथी उनके साथ कदम मिलाकर आगे न वढ़ सके। जोधपुर में उन्होंने अपने समाज-सुधार सम्वन्धी विचारों के प्रचार के लिये पुष्करणा नवयुवक मण्डल को माध्यम वनाया था। अखिल भारतीय पुष्करणा महासभा समाज की वहुत पुरानी अखिल भारतीय संस्था थी और राजस्थान में राजपूताना पुष्टिकर सभा कायम थी। महासभा पर पुराने विचारों के लोगों का आधिपत्य था और राजपूताना पुष्टिकर सभा पर प्रगतिशील समाज-सुधारक हावी थे। मैं महासभा में और व्यास जी राजपूताना पुष्टिकर सभा में शामिल रहे। राजनीतिक क्षेत्र की तरह सामाजिक क्षेत्र में भी वे उग्रपंथी थे और मैं नरम पंथी था। कई वर्ष तक यह मतभेद वना रहा और वह समाज व्यापी भी वन गया। अन्त में खामगांव निवासी वरारकेसरी पन्नालाल जी व्यास के शुभ प्रयत्नों से मतभेद दूर हुआ और दोनों एक हो गये। इस मतभेद का भी पारस्परिक स्नेह सम्वन्ध पर कुछ असर नहीं पड़ा।

जोधपुर राज्य से निर्वासित होने के वाद उनका काफी समय व्यावर में वीता। वहां की जिस घटना का मुझ पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा और जिससे उनके पवित्र व्यक्तित्व तथा उत्कृष्ट चरित्र का परिचय मिलता है, वह उल्लेखनीय है। वहां वे 'तरुण राजस्थान' के सम्पादन के साथ-साथ एक जैन संस्था का भी काम किया करते थे। दोनों से उनको पचास-पचास रुपये महीने मिलना तय था। वे ऐसी अपरिग्रही वृत्ति के थे कि जहां से उन्हें पहले पचास रुपये मिल जाते, उसी पर संतोष कर दूसरे स्थान से पचास रुपये नहीं लेते थे। अपने सहकर्मी साथियों का इतना अधिक ध्यान रखते थे कि स्वयं तंगी में रहकर भी उनकी तंगी उनको सहन न होती थी। अपनी जेव में जो कुछ भी होता, उनको वांट देते थे। यह वृत्ति उनकी निरंतर वनी रही।

व्यास जी के जीवन की दृष्टि प्रधानतः भौतिक नहीं थी। आजकल की राजनीति उनके स्वभाव के अनुकूल न थी। इसी कारण मैं उनको व्यवहारवादी राजनीतिज्ञ न मानकर एक आदर्शनिष्ठ चरित्रवान मानता था। मेरी यह भी धारणा है कि परिस्थितियों से लाचार होकर ही उन्हें राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करना पड़ा था। मैं जव कभी उनसे इस वारे में कुछ कहता, तव वे यह कहकर मुझे चुप कर देते कि मैं तो कूद पड़ा, तुम जो चाहो कहते रहो। अन्यथा समाज-सुधारक, शिक्षक, लेखक, पत्रकार एवं कलाकार के रूप में वे कहीं अधिक सफल हुए होते और उनकी आदर्श-

वादी अध्यात्म वृत्ति इन क्षेत्रों में कहीं अधिक निखरी होती। राजनीतिक क्षेत्र में प्राप्त की गई लोकप्रियता से इन क्षेत्रों में अर्जित लोकप्रियता कहीं अधिक व्यापक, स्थायी एवं प्रभावशाली सिद्ध होती। इसका स्पष्ट प्रमाण यह है कि अनेक बार उन्होंने राजनीतिक क्षेत्र में ऊंचे-से-ऊंचा पद एवं बड़ी-से-बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त की; किन्तु उसको वे निभा नहीं सके और सदा ही उनकी पवित्र आत्मा ने उनको 'विद्रोही' बनाकर वहां से अलग होने को ही मजबूर किया। कांग्रेस के संगठन एवं शासन में व्याप्त भ्रष्टाचार के विरुद्ध उन्होंने जो अभियान शुरू किया, वह उनकी पवित्र आत्मा की ही आन्तरिक पुकार थी। अपने बड़े-से-बड़े परम स्नेही में भी जब उन्हें कोई विकार दीख पड़ता था, तब उस पर से उनका मन फिर जाता था। परन्तु अपनी सात्विक वृत्ति के कारण उनके प्रति रोष से काम न लेते हुए सदा सहिष्णु ही बने रहते थे और अपनी आत्मीयता को पूर्ववत् बनाये रखते थे। यही था उनका बड़प्पन और महानता।

७

उनके साथ आत्मीय सम्बन्ध

राजस्थानी गश्ती पुस्तकालय के प्रवर्तक श्री हरिभाई किंकर, सोजत सिटी, (राजस्थान)

सन् १९२३ में सबसे पहले राजस्थान सेवा संघ कार्यालय में मेरा भाई जय-नारायण व्यास से अचानक ही मिलना हुआ। मैं रुग्णावस्था में चारपाई पर अकेला पड़ा हुआ था। सब साथी जहां-तहां अपने काम पर बाहर गये हुए थे। सेवा संघ के प्राण श्री विजयसिंह जी पथिक पर चित्तौड़ में मेवाड़ सरकार की ओर से मुक-दमा चल रहा था। सेवा संघ के कार्यालय व प्रेस आदि पत्रों की देखभाल का सब काम मुझ पर था। मेवाड़ प्रदेश प्रवेश पर प्रतिबन्ध था, जो पूरे पच्चीस वर्ष रहा। इसलिए मैं पथिक जी के मुकदमे के देख-रेख के लिये भी नहीं जा सकता था। मेरी बीमारी का समाचार जानकर व्यास जी आये और दो दिन मेरे पास ही रहे। हम दोनों का वह सहवास पारस्परिक सम्बन्ध का निमित्त बन गया और वह सम्बन्ध उत्तरोत्तर घनिष्ट होता गया।

राजस्थान सेवासंघ का काम पारस्परिक मतभेद के कारण कुछ शिथिल पड़ गया, यहां तक कि प्रेस और समाचार-पत्र का चलना भी कठिन हो गया। प्रेस पर ताला पड़ गया। अन्त में राष्ट्रभिक्षुक भाई मणिलाल जी कोठारी को दोनों पक्षों ने मध्यस्थ बनाकर प्रेस की चाबियां सौंप दीं। उनके निर्णय पर प्रेस को ब्यावर

लाकर 'तरुण राजस्थान' को पुनः प्रकाशित करने का निश्चय किया गया। व्यवस्था सम्बन्धी कार्य मुझे सौंपा गया। और भाई जयनारायण व्यास पत्र के प्रधान सम्पादक नियुक्त किये गये। मैं इस निर्णय के अनुसार प्रेस का सारा सामान २८ नवम्बर को व्यावर ले आया। हम दोनों के एक साथ रहने के कारण पारस्परिक सम्बन्ध एक परिवार के रूप में परिणत हो गये। उनकी प्रतिभा का मैं कायल बन गया। उनकी लगन, धुन और परिश्रम कमाल का था। वे धीरे-धीरे अपने परिजनों को भी व्यावर ले आये। उनके घरवालों के साथ भी मेरे सम्बन्ध ऐसे बन गये जैसे कि हम सब एक ही परिवार के हों।

व्यास जी का ध्यान हमेशा जोधपुर की ओर लगा रहता था और वे वहां जाने और जन जागृति में हाथ बंटाने का मौका ढूंढ़ते रहते थे। व्यावर में प्रेस व पत्र का काम वैसा न चल सका जैसा कोठारी जी ने भरोसा दिलाया था। परिणामतः व्यास जी भाई ऋषिदत्त जी मेहता को प्रेस व पत्र सौंपकर अलग हो गये। मैं भी 'गश्ती पुस्तकालय' का काम शुरू करके अलग हो गया। व्यास जी जोधपुर चले गये और वहां उनको पांच साल की सजा हो गई।

मैं संग्रहणी की बीमारी का शिकार रहने लगा। मेरा स्वास्थ्य दिन-पर-दिन गिरता गया। कुछ मित्रों ने मुझे परामर्श दिया कि मुझे अकेले न रहकर विवाह कर लेना चाहिए। व्यावर को मैंने अपना निश्चित केन्द्र बना लिया था। विवाह की बातचीत जब शुरू हुई, तब मैंने यह तय कर लिया कि मैं किसी ऐसी योग्य विधवा से ही विवाह करूंगा, जो मेरे प्रचार कार्य करने में मेरा हाथ बंटा सकेगी। व्यास जी ने मेरे विचार को बहुत पसन्द किया और मुझे किसी विधवा के साथ ही विवाह करने को प्रोत्साहित किया। जयपुर के सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी पं० सूर्य-नारायण के परिवार की विदुषी विधवा महिमादेवी के साथ विवाह होना तय हो गया। व्यास जी गांधी इरविन समझौते में जेल से छूटने के बाद व्यावर आकर रहने लग गये थे, क्योंकि, जोधपुर से उनको पुनः निर्वासित कर दिया गया था। व्यास जी ने मेरे विवाह का इस प्रकार स्वागत किया कि मैं इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता था। उन्होंने जयपुर से व्यावर आने पर हम दोनों का डिक्सन छतरी पर विराट् सभा का आयोजन करके स्वागत व अभिनन्दन किया। २९ दिसम्बर, १९३१ को विवाह हुआ था और ३१ दिसम्बर को यह आयोजन किया गया था।

गांधी जी १९३२ में जब गोलमेज परिषद् से लौटे, तब सत्याग्रह आन्दोलन ने नया रूप धारण किया। राजस्थान व मध्यभारत के नेता व कार्यकर्त्ता हूटूंडी में एकत्र हुए और यह तय हुआ कि अजमेर को केन्द्र बनाकर सत्याग्रह शुरू किया जाय। परन्तु मेरा विवाह होने के कारण मुझे उससे अलग रहने का सन्देश व्यास जी की मार्फत भेजा गया। व्यास जी ने व्यावर आकर मुझे परामर्श दिया कि व्यावर छोड़कर कहीं और चला जाना चाहिए। उनके परामर्श

पर मैं उसी रात को कोटा चला गया। ब्यावर तथा अजमेर में गिरफ्तारियों का सिलसिला शुरू हुआ और सब साथियों के जेल चले जाने के बाद मैं ब्यावर लौट आया। यहां आने के बाद हम दोनों भी गिरफ्तार कर लिये गये और अजमेर जेल में व्यास जी के साथ रहने का अवसर फिर मिला। अजमेर जेल में व्यास जी बड़ा ही नियमित जीवन बिताते थे और पढ़ने-लिखने की इच्छा रखने वालों की विशेष क्लास लिया करते थे। मैं भी उनको पूरा सहयोग दिया करता था। इस प्रकार बाहर की घनिष्टता जेल में और अधिक सुदृढ़ बन गई। जेल से छूटने के बाद बम्बई में व्यास जी ने रहने का विचार किया और वहां वे अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजापरिषद् के काम में लग गये। वहां उन्होंने उसका अधिवेशन किया और मुझे भी निमंत्रित किया।

दो वर्ष बाद व्यास जी फिर ब्यावर लौट आये और हम दोनों भी ब्यावर आ गये। मैं, मेरी पत्नी, व्यास जी, उनका परिवार और भाई गोपीकृष्ण जी विजयवर्गीय का परिवार एक ही मकान में संयुक्त परिवार के रूप में रहने लग गये। अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद् के कार्य के अलावा जोधपुर के आन्दोलन का संचालन भी व्यास जी ब्यावर से ही करते थे। कुछ समय बाद व्यास जी ने राजस्थानी भाषा में 'आगीवाण' नाम का पाक्षिक निकालना शुरू किया, जिसका संचालन व सम्पादन राजस्थान की व्यापक भावना से किया जाता था। मैंने अपने गश्ती पुस्तकालय के प्रचार कार्य के साथ 'आगीवाण' के प्रचार को भी जोड़ दिया। मेरा प्रचार कार्य मुख्यतः राजस्थानी भाषा में ही होता था। इसलिए व्यास जी उसे बहुत पसन्द करते थे और 'आगीवाण' में उसकी चर्चा प्रायः रहा करती थी।

१९४२ के शुरू में जोधपुर में उत्तरदायी शासन की मांग का आन्दोलन व्यास जी ने शुरू किया और वहां के सारे कार्यकर्त्ता गिरफ्तार कर लिये गये। तब उसके संचालन के लिये ब्यावर में एक केन्द्र कायम किया गया और यहां से सत्याग्रही जत्थे भेजने का कार्यक्रम बनाया गया। मेरी पत्नी महिमादेवी महिलाओं का जत्था लेकर बगड़ी, सोजत व पाली होती हुई जोधपुर पहुंचीं और वहां गिरफ्तार कर ली गई। महिलाओं में उनकी गिरफ्तारी से अपूर्व जागृति पैदा हुई और जोधपुर सरकार के सामने एक नई समस्या पैदा हो गई, जिसका सामना करने के लिये 'स्त्री पुलिस' का संगठन करना पड़ा। मैंने बम्बई, नासिक, पूना आदि का दौरा करके जोधपुर सत्याग्रह के लिये धन संग्रह किया। कुछ दिन बाद मैं भी जोधपुर आया और नज़रबन्द कर लिया गया। अठारह मास बाद हम लोगों को रिहा किया गया।

१९४४ में महिमादेवी का देहान्त हो गया और मैं अकेले ही 'गश्ती पुस्तकालय' के प्रचार कार्य में लगा रहा। व्यास जी पहले जोधपुर व फिर राजस्थान के मुख्यमन्त्री बने। उन दिनों में मैं उनके विशेष सम्पर्क में इसलिए नहीं आया कि मेरे हृदय में उनके साथ के पुराने घनिष्ट सम्बन्ध से कोई लाभ उठाने की इच्छा कभी

पैदा नहीं हुई। इसमें सन्देह नहीं कि उन्होंने अपना पुराना स्नेह सम्बन्ध हमेशा कायम रखा और जब कभी वे सोजत से गुजरते, मुझसे अवश्य मिलते। मैंने ब्यावर छोड़कर १९४५ से सोजत में रहना शुरू कर दिया। राजस्थान की उखाड़-पछाड़ की राजनीति और दलदल में कोई दिलचस्पी न होने से मैं प्रायः अकेला ही सामाजिक कार्यों में लगा रहता हूं। इसका इतना लाभ अवश्य हुआ कि मुझे सभी का स्नेह और विश्वास प्राप्त है। परन्तु व्यास जी की आत्मीयता की मुझ पर सबसे गहरी छाप पड़ी, जो सदा ही उनकी याद को ताजा रखती है।

८

स्वप्नद्रष्टा

श्री मदन गोपाल जी कावरा, कूचामन हाउस, जोधपुर (राजस्थान)

व्यास जी सच्चे माने में राजस्थान के निर्माता और निर्भीक नेता थे। उन्होंने अपने जीवन में सत्य का साथ नहीं छोड़ा। सच्चाई की खातिर अन्त तक लड़ते रहे। राजस्थान बन जाने पर सच्चाई के नाते अपने सहयोगियों से भी टक्कर लेने में उन्होंने किसी प्रकार की आना-कानी नहीं की। वे मरते दम तक सिद्धान्तों के लिये लड़ते रहे और लड़ते-लड़ते अपने-आपको बलिदान कर दिया।

◇ ◇ ◇

व्यास जी स्वभाव से भावुक थे। कलाकार थे और कवि होने के नाते स्वप्नद्रष्टा भी थे। राजनीति उनके जीवन का साध्य नहीं, साधन थी। जीवन के अमूल्य आदर्श ही उनके ध्येय थे। उन्होंने राजस्थान बनने पर लोह पुरुष सरदार पटेल की कूटनीति के बल पर स्थापित राजस्थान की सरकार से भी अविचल निर्भीकता के साथ लोहा लिया और सरदार पटेल को भी आखिर झुकाकर सच्चे माने में लोकतन्त्रीय शासन स्थापित करने के लिये मजबूर किया। वे राजनीति के उस पहलू से कभी सहमत नहीं हुए कि मौका आने पर राजनीति को कूटनीति का स्वरूप दे दिया जाये। अपने प्रति विश्वास प्राप्त करने के प्रस्ताव को उपस्थित कर उस कूटनीति के घृणित स्वरूप का भी उन्होंने पर्दाफाश किया।

◇ ◇ ◇

राजनीति में श्रद्धेय व्यास जी से मेरा सदैव मतभेद रहा। किन्तु पारस्परिक प्रेम, व्यवहार और आदर-भाव में कभी भी फर्क नहीं आया। व्यास जी किशनगढ़ से चुनाव के लिये खड़े हुए। मैं उस समय उनके चुनाव के विरुद्ध काम करने वालों

में प्रमुख था। चुनाव दौरे में जगह-जगह उनसे मिलना हुआ किन्तु उनका 'मदन जी कैसे हो' के सम्बोधन में कभी फर्क नहीं आया। चुनाव में व्यास जी विजयी हुए। तब मैंने निम्नलिखित पत्र उनको लिखा :—

"आपकी किशनगढ़ चुनाव में विजय हुई, इसके लिये आपको मेरी हार्दिक बधाई है। यद्यपि चुनाव संघर्ष में विरोधी प्रचार करते रहने पर भी और कांग्रेस की विचारधारा से सहमत न होते हुए भी मैं यह समझता हूं कि आप राजस्थान की राजनीति में अवश्य परिवर्तन लायेंगे। मुझे पूर्ण आशा है कि जिस राजस्थान की शक्तियों की एकता की भव्य तस्वीर आपके सामने है उसे आप अब पूर्ण करेंगे। राजस्थान दलगत भावनाओं से ऊंचा उठकर आपके नेतृत्व से बड़ी-बड़ी आशाएं रखता है। यह भी विश्वास है कि आप सारी परिस्थितियों का गम्भीरता से अध्ययन कर लेने के बाद अवश्य ऐसा कदम उठावेंगे, जिससे राजस्थान की शक्तियां उचित कार्यों में लगें और राजस्थान बलवान बन सके।"

इस पत्र का उत्तर श्रद्धेय व्यास जी ने लौटती डाक से जो भेजा वह आज भी उन्हीं के हास्ताक्षरों से लिखित मेरे पास मौजूद है वह यहां देता हूं :—

"आपका पत्र मिला। बधाई के लिये धन्यवाद। राजस्थान में जो नई व्यवस्था स्थापित होने जा रही है, उसकी तस्वीर बनाने और व्यवस्थित तरीके से प्रस्थापित करने के लिये आवश्यक है कि सभी विचारों के लोग अपना सिर लगावें। मेरा ख्याल है कि सभी समझदार लोग, चाहे वे भविष्य निर्माण के तरीकों के बारे में अलग-अलग विचार रखते हों, भविष्य के स्वरूप के बारे में एकमत हो सकेंगे। मैं चाहता हूं कि इस सम्बन्ध में कांग्रेस महासमिति की बैठक के बाद विभिन्न विचार वालों से बातचीत करूं। चुनाव का प्रचार मेरे विचारों पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं डलेगा, ऐसा आप विश्वास रखें।"

कितनी ऊंची विचारधारा है और किस प्रकार की निश्छल सच्चाई से ओत-प्रोत भावना लिये हुए यह पत्र है। श्री व्यास जी राजस्थान की व्यवस्था प्रस्थापित करने में लग चुके थे। यह उनके बाद के कार्यों से प्रतीत होता है। किन्तु उन्हें जीवन में स्वार्थियों से टक्कर लेनी पड़ी और वे अपने विचारों और आदर्शों को स्थापित करने में सफल नहीं हो सके। फिर भी उन्होंने जो जन-जीवन में शुद्ध आचरण स्थापित करने और भ्रष्टाचार को मिटाने के लिये जो भावनाएं जागृत की हैं, वे सदैव जीवित और एक-न-एक दिन राजस्थान को सबल बनाने में सार्थक होंगी।

६

प्रताप प्रतिज्ञा के धनी

श्री तुलसीनारायण जी मेहता, खंदा मोतीखाना, छोटी चोपड़, जयपुर (राजस्थान)

मेरा पहला परिचय लोकनायक श्री जयनारायण व्यास से १९३४ में हुआ और १९३९ में दो मास उनके साथ रहने का सुअवसर भी मिला था। १९४२ में उत्तर-दायी शासन सम्बन्धी आन्दोलन में गिरफ्तार होने से पहले मैंने उनके साथ पाली, सोजत, व्यावर आदि का दौरा किया था। वह सच्चे निःस्वार्थ और देशभक्त नेता थे। राजस्थान की उन्नति, प्रगति व विकास के लिये वह अहोरात्र चिन्तित रहते थे। कांग्रेस की प्रतिष्ठा के लिये अपनों और परायों सबके साथ संघर्षरत रहे। संघर्ष शब्द उनके लिये पर्यायवाची बन गया था। मेरे सरीखे सैकड़ों युवकों ने उनके कर्मठ जीवन से प्रेरणा प्राप्त की और वे उनको अपने लिये आदर्श मानते रहे।

राजस्थान के मुख्यमन्त्री के उच्चतम पद पर आसीन होजाने पर भी मेरे प्रति उनका आत्मीय सम्बन्ध और व्यवहार यथावत बना रहा। पद प्रतिष्ठा की झूठी मर्यादा को वह आपसी सम्बन्धों में बाधक नहीं बनने देते थे। वह हमेशा अपने को कार्यकर्त्ता ही मानते रहे। पुराने संगी स्नेही साथियों के मिल जाने पर अपने बड़प्पन को इस तरह भूल जाते थे कि अपने हाथ से खाना व चाय आदि बनाकर स्वयं परोसने में उन्हें तनिक भी संकोच न होता था। उनका व्यवहार कुछ ऐसा होता था कि वह अपने को सदा कार्यकर्त्ता ही मानते व समझते रहे। कांग्रेस में स्वार्थ-प्रधान लोगों के कारण जो मलीनता पैदा हुई उसके विरुद्ध उन्होंने एक प्रकार से युद्ध ही छेड़ दिया था और उस युद्ध के मोर्चे पर वीर योद्धा की तरह अन्तिम सांस तक डटे रहे।

मुझ पर सच्चाई के लिये उनके संघर्षरत रहने का सबसे अधिक प्रभाव पड़ा। १९४९ में उन्होंने जिस सत्साहस का परिचय दिया, उसको मैं कभी नहीं भूल सकता। राजस्थान में पं० हीरालाल जी शास्त्री के साथ मतभेद पैदा होने पर वह चट्टान की तरह अपनी सच्चाई पर अडिग रहे और उसके लिये लोहपुरुष सरदार पटेल के साथ जमकर लोहा लिया। कोई दूसरा जोधपुर के मुकदमे की झांकी नहीं झेल सकता था और सरदार के प्रकोप का सामना नहीं कर सकता था। आजीवन उन्होंने राष्ट्रनायक पं० जवाहरलाल नेहरू के साथ साथी की तरह काम किया; परन्तु सच्चाई के लिये उनके साथ भी भिड़ गये।

यह साहस, वीरता और दृढ़ता उनमें किस प्रकार पैदा हुई, इसका उल्लेख उन्होंने एक बार स्वयं अपने श्रीमुख से किया था। हम कार्यकर्त्ताओं ने एक गोष्ठी में उनसे पूछा कि आपमें अपने संकल्प के लिये इतनी दृढ़ता कैसे पैदा हुई। तब उन्होंने बताया कि दढ़ता किसी संकल्प से पैदा होती है और संकल्प ऐसा होना चाहिए कि

मत्यु उपस्थित हो जाने पर भी उससे पैर डगमगायें नहीं। उन्होंने फिर कहा कि मैंने १९२३ में हल्दीघाटी की यात्रा में वहां के ऐतिहासिक मैदान में खड़े होकर यह प्रतिज्ञा की थी कि प्रणवीर महाराणा प्रताप की तरह भूखा-प्यासा रहकर भी मैं अपना सारा जीवन देश सेवा के लिये अर्पित कर दूंगा। यह प्रतिज्ञा मुझे सदा ही अपने कर्त्तव्यपथ पर अग्रसर होने व दृढ़ रहने के लिये प्रेरित करती रहती है। वह मुझमें कभी कोई कमज़ोरी पैदा नहीं होने देती। सचमुच ही उन्होंने महाराणा प्रताप के आदर्श को अपने सम्मुख रखते हुए गरीवी, कंगाली और अभाव का जीवन स्वेच्छा से स्वीकार किया था। अपरिग्रह उनके लिये जीवन व्रत वन गया था। उनकी उस दृढ़ता, सच्चाई और स्पष्टवादिता की हमारे सार्वजनिक जीवन में कैसी कमी दीख पड़ती है। ऐसा प्रतीत होता है, जैसे कि उनके साथ इन सद्गुणों का भी हमारे सार्वजनिक जीवन में अभाव हो गया हो। मेरे लिये तो व्यास जी सदा ही प्रेरणास्रोत वने रहे।

१०
व्यक्तिगत अनुभव

श्री वालकृष्ण व्यास उर्फ लाल जी, राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी, जयपुर (राजस्थान)

पर दुःखे उपकार करे

सर्दी का मौसम था। मैं व्यास जी के साथ जोधपुर से उनके जैसलमेर प्रवास पर सायंकाल रवाना हुआ। व्यास जी उन दिनों किसी ऊंचे पद पर आसीन नहीं थे। हम रास्ते में शेरगढ़ तहसील के मुख्य कार्यालय वालेसर में रुके। हमारे मेज-वानों ने कहा कि यहां सर्दी कड़ाके की पड़ती है, इसलिये यदि ओढ़ने-विछाने के लिये कपड़ों की ज़रूरत हो तो व्यवस्था कर दी जाय। व्यास जी ने मना कर दिया और संकोचवश मैंने भी मना कर दिया। मेरे पास एक कम्वल था और व्यास जी के पास एक चादर तथा काश्मीरी पशमीना।

मैं कम्वल ओढ़कर सो गया। सर्दी कड़ाके की थी। मुझे नींद नहीं आ रही थी। मैं वैसे ही सोने का वहाना कर रहा था। अर्द्धनिद्रा में मुझे धीरे-धीरे गर्मी का आभास हुआ और मैं प्रातः पांच या छह वजे उठा। उठने पर मैंने देखा कि पूरी नींद लेकर व्यास जी ने अपना पशमीना मेरे कम्वल पर डाल दिया था और स्वयं सूती चादर ओढ़े रात-भर जागते रहे।

मैंने इसके लिये उनसे क्षमा मांगी तो वे कहने लगे, नहीं यह वहुत अच्छा हुआ।

तुम्हारी वजह से मेरा वहुत दिनों का वचा हुआ लिखा-पढ़ी का काम पूरा हो गया। दिन में मिलने-जुलने वालों की वजह से काम का पूरा होना सम्भव नहीं था। यह वात उन्होंने विना किसी औपचारिकता अथवा वनावट के कही। उनकी इस परोपकार वृत्ति के ऐसे कितने ही प्रसंग हर किसी के साथ वीते होंगे।

शीतोष्ण दुःख दुःखेषु लाभालाभो जयाजयो

१९५४ में जिस दिन उन्होंने विधान सभा कांग्रेस दल के सदस्यों से अपने नेतृत्व में विश्वास की मांग की थी और श्री मोहनलाल जी सुखाड़िया उनके स्थान पर नेता चुने गये थे, उस दिन हम कुछ मित्र उनके सरकारी वंगले पर उपस्थित थे।

हम पर उसकी बड़ी तीव्र प्रतिक्रिया थी और वातावरण वड़ा गम्भीर था। थोड़ी देर में व्यास जी आये और हँसते हुए ऐसे दीख पड़े मानो कि कोई किसी संघर्ष में वड़ी विजय प्राप्त करके आ रहा हो। व्यास जी ने थोड़े ही दिन पहले लिखी हुई अपनी एक कविता को उस प्रसंग पर सुनाया।

"पंछी तेरा यह संसार नहीं है,
क्यों गन्दे पिंजरे में डोले
साफ हवा के पंछी भोले,
जो तुझ से यों मीठे वोले,
उनको तुझसे प्यार नहीं है,
तेरा यह संसार नहीं है।"

सारा वातावरण मनोरंजक हो गया और उसके वाद दो-तीन दिन में ही वंगला खाली कर दिया। तव एक दिन गोस्वामी ब्रह्मानन्द जी का शास्त्रीय संगीत, दूसरे दिन सामूहिक फोटो, तीसरे दिन मनोरंजन कार्यक्रम उन्होंने रखा। वीती घटनाओं का कोई स्थायी प्रभाव या प्रतिक्रिया उनके मन पर कभी दीख नहीं पड़ी। स्थितप्रज्ञ की सम्पत्ति उनमें सदा पाई गई।

पण्डित समदर्शिनां समवर्तिना

१९५० में मेरे पुत्र की शादी जैसलमेर जिले के पोकरण में थी। मैंने जानवूझ कर किसी भी मित्र या नेता को इसलिये निमंत्रित नहीं किया था कि मैं उनके निवास तथा भोजनादि की समुचित व्यवस्था नहीं कर सकता था। व्यास जी शादी के एक दिन वाद जोधपुर से पोकरण सांकड़ा जाने के लिये पधारे। उन्हें स्टेशन पर ज्ञात हुआ कि मेरे लड़के की शादी थी। तुरन्त मुझे वुलाया और कहा कि इस प्रकार चुपचाप शादी कैसे कर डाली। इतने ही में मेरे लड़के के श्वसुर भी वहां पहुंच गये। व्यास जी ने जो अक्सर खाने-पीने में परहेज करते थे, कहा कि वे विवाह की मिठाई अवश्य खायंगे। मेरे लड़के के श्वसुर ने उनके खाने की व्यवस्था की और वे उनके यहां खाना खा आये। मैं तथा मेरे समधी उनके इस व्यवहार से गद्गद हो गये।

जव मैं उन्हें स्टेशन पर छोड़ने आया तो उन्होंने कहा कि यह खाना तो समधी के

यहां खाया है, तुम्हारा बाकी है। मैंने उसको एक मनोविनोद ही समझा था। परन्तु दूसरे दिन जब मैं बरात लेकर वापस अपने घर फलोदी पहुंचा, तब व्यास जी सांकड़ा का प्रवास करके फलोदी पधारे और एक दिन ठहर कर मेरे यहां आतिथ्य स्वीकार किया। मेरे लिये तो यह एक अभूतपूर्व घटना थी। अपने छोटे-बड़े सभी साथियों के साथ उनका यही समता का व्यवहार था।

योगः कर्मषु कौशलम्

१९५२ के आम चुनाव में हम जोधपुर डिवीजन में महाराजा जोधपुर के कारण बुरी तरह परास्त हो चुके थे। सारे नेता पस्त हिम्मत थे और हार की ज़िम्मेवारी एक दूसरे पर डाल रहे थे। मैं उन दिनों मारवाड़ जिला कांग्रेस के दफ्तर में काम करता था। नितान्त अर्थाभाव के कारण दफ्तर के करीब-करीब सारे कार्यकर्त्ता दो-तीन को छोड़कर दूसरी जगहों पर चले गये थे। हम लोग जो वहां बचे थे, अखबारों की रद्दी बेचकर किसी प्रकार अपना काम चला रहे थे। व्यास जी वहां पधारे। वे सहसा ही सारे हालात समझ गये और कहा कि पहला काम तो इन्तज़ाम करने वालों का ही इन्तज़ाम करना होता है। उन्होंने बाहर खड़ी एक स्टेशन वेडन को उसी समय बेच दिया और हम सबको वेतन दे दिया। फिर स्वयं दफ्तर में बैठकर उसका संचालन किया।

वे कार्यालय में सचिवालय की भांति यथासमय आते और पेपर कटिंग आवत-जावत पत्र-रजिस्टर तथा सफाई पानी आदि के छोटे-से-छोटे काम को देखते और उसको हमें सिखाते रहते। वे छोटे-से-छोटे काम को कुशलता से करने का आदर्श व्यक्तिशः उपस्थित किया करते थे। यह था उनका तरीका अपने साथियों को काम सिखाने और उनसे काम लेने का। कोरा उपदेश देने की अपेक्षा क्रियात्मक उदाहरण उपस्थित करना उन्हें कहीं अधिक पसन्द था।

वाच काय मन निश्चित राखें

राजनीतिक स्तर पर तीव्र मतभेदों के कारण व्यास जी ने १९५७ के अन्त में राजस्थान प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष-पद से त्यागपत्र दे दिया था। मैं उन दिनों दिल्ली गया हुआ था और ९ अकबर रोड में श्री राजबहादुर जी की कोठी पर ठहरा हुआ था। मुझे सूचना मिली कि नव-निर्वाचित प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष श्री मथुरादास जी माथुर दिल्ली आ रहे हैं। मैंने व्यास जी को सूचना दी कि श्री माथुर कल प्रातः दिल्ली पधार रहे हैं और वे उनसे मिलना चाहेंगे। उन्होंने उनको लिवा लाने के लिये तत्काल मोटर का इन्तजाम कर दिया और कहा कि माथुर को मेरे यहां ही लाकर ठहराना। उनकी तबियत कुछ दिनों से खराब रहती है। मैं यहां उनके खाने-पीने की समुचित व्यवस्था कर सकूंगा। वैसा ही किया गया। सायंकाल खाना खाने के पश्चात् श्री माथुर ने उनसे निवेदन किया कि वे राजस्थान कांग्रेस में एकता लाना चाहते हैं और उसमें उनके आशीर्वाद की अपेक्षा है। व्यास

जी ने कहा कि मैं तो न आशीर्वाद दे सकता हूं, न शाप ही। यदि तुम इसमें सफल होओगे तो मुझे खुशी भी होगी और विस्मय भी। यदि असफल हुए तो मुझे कोई विशेष दुःख और आश्चर्य न होगा।

श्री मथुरादास माथुर के छोटे भाई श्री मनमोहन 'लाछू' के देहावसान के कुछ दिन बाद श्री माथुर दिल्ली गये थे। व्यास जी से उनके यहां मिलने गये। दोनों में बात नहीं हो सकी और दोनों बच्चों की तरह बहुत देर रोते रहे। दोनों इस प्रकार शोकाकुल रहे कि वे एक-दूसरे का क्षेमकुशल तक नहीं पूछ पाये। काफी देर बाद माथुर जी आंसू पोंछते हुए बाहर चले आये और व्यास जी काफी देर तक उसी शोकाकुल अवस्था में रहे।

यह थी व्यास जी की महानता, जिस पर पारस्परिक राजनीतिक मतभेद का कोई प्रभाव पड़ता देखा नहीं गया।

११

टूट गये, पर झुके नहीं

श्री वेंकटलाल जी ओझा, पत्रकार व मन्त्री, हिन्दी समाचारपत्र संग्रहालय, हैदराबाद (आंध्रप्रदेश)

"मैं तो भर पाया इस चाय से। यदि मालूम होता कि इस भीड़-भाड़ में इस तरह काफी देर धक्कम-धक्के में खड़ा रहना पड़ेगा तो मैं यहां कभी चाय के लिये न आता। कहीं बाहर ही पी लेता।" ये शब्द हैदराबाद की नानलनगर कांग्रेस की ओर से अन्नपूर्णा में आयोजित चाय सम्मान में राजस्थान के मुख्य मन्त्री श्री जय-नारायण जी व्यास से मध्य प्रान्त व बरार के मुख्य मन्त्री श्री रविशंकर शुक्ल और मैसूर के मुख्य मंत्री श्री हनुमन्तैया कह रहे थे। वे भी उनकी ही तरह खाद्य-पदार्थों की मेज तक पहुंचने के लिये पंक्ति में खड़े थे। उनके साथ इन पंक्तियों का लेखक भी पत्रकार के नाते खड़ा था।

व्यास जी ने तुरन्त कहा, "इतना घबरा गये। इससे भी बड़ी-बड़ी भीड़ आपने देखी हैं। अभी हम वहां पहुंचते ही हैं।"

शुक्ल जी—"अरे भाई मैं भीड़ से कहां घबराता हूं। आप जानते हैं, मैं इस समय देश में जितने भी मन्त्री, मुख्य मन्त्री, यहां तक कि प्रधान मन्त्री से भी मैं आयु में बड़ा हूं। अब तो मेरे हाथ-पांव भी कांपते हैं। इसीलिए कहीं ऐसा न हो कि गिर पड़ूं और भीड़ में पैरों से कुचला जाऊं।"

व्यास जी—"अरे वाह हमारे रहते आप कैसे गिर सकते हैं ! हम हैं तो क्या गम है।"

शुक्ल जी—"अरे भाई तुम नवजवान मेरी स्थिति को क्या समझो। अब तो ऐसे बुरे फंसे हैं कि न आगे बढ़ सकते हैं न पीछे ही हट सकते हैं। भगवान् ही मालिक है।"

व्यास जी—"घबराइये नहीं। हम जो आपके साथ हैं। देखिये इस भीड़ में खड़े रहने और धक्कम-धक्के का कैसा विचित्र अनुभव आज हम मुख्य मन्त्रियों को मिल रहा है। हम तो जनता के कष्ट निवारण के लिये मुख्य मन्त्री बने हैं। जब तक उनके कष्टों का हमें कटु अनुभव न हो, हम क्या उनकी पीड़ा व कष्टों को समझ सकेंगे। कैसे उन्हें दूर करेंगे। जाके पैर न फटी बिवाई, वह क्या जाने पीर पीर पराई।" सब हँस दिये।

शुक्ल जी—"अरे भाई, आपको मजाक सूझ रहा है और मेरे प्राण तो संकट में हैं।"

श्री हनुमन्तैया उनके वार्तालाप को मज़े में सुनते और उसका रस लेते रहे। वह कभी हिन्दी और कभी अंग्रेज़ी में होता था। उन्होंने अन्त में पूछ ही लिया कि क्या सचमुच आप आयु में सबसे बड़े हैं। अब तक तो मैं आपको मुख्यमन्त्रियों में वरिष्ठता की दृष्टि से ही सबसे बड़ा समझता था। अब पता चला कि आयु में भी आप बड़े हैं।

इस तरह व्यास जी अपने साथियों को हंसाते हुए कुछ ही देर में खाद्यान्न की मुख्य मेज़ तक पहुंच गये। तश्तरी में खाद्य-पदार्थ लेने के बाद बैठने का सवाल था। तब तक वहां सभी कुर्सियां भर गई थीं। अन्त में मेरी ओर देखकर व्यास जी ने कहा, "ओझा जी, हम तो दोनों खड़े रह जायेंगे, पर हमारे इन वृद्ध वशिष्ठ के लिये आप एकाध कुर्सी का प्रबन्ध तो करें।

एक मेज़ पर कुछ हैदराबाद के मित्र जलपान कर रहे थे। उनके पास जाकर मुख्यमन्त्री त्रिमूर्ति के लिये मेज़ खाली करने को मैंने कहा। वे तत्काल ही खड़े हो गये। वहां बैठकर सबने जलपान के साथ-साथ अपनी थकान भी मिटाई।

यह १९५१ की बात है। इतने ही में वहां हैदराबाद के मुख्यमन्त्री श्री बी० रामकृष्णराव भी आ गये। क्षेम कुशल पूछने लगे। व्यास जी ने कहा, "अब तो हम राम-राम कर वैतरणी पार कर आये हैं।" इस पर फिर सब हँस पड़े। इतने में नेहरू जी उस ओर आ गये। और हंसने का कारण ज्ञात होने पर वे भी हँसने लगे।

अखंड भारत

यों तो व्यास जी से मेरा परिचय १९३५ से ही था, जब उन्होंने दिसम्बर में उस वर्ष बम्बई से दैनिक 'अखंड भारत' का प्रकाशन व सम्पादन आरम्भ किया था। बम्बई में उस समय कोई हिन्दी दैनिक नहीं था। श्री खाडिलकर के 'नवा-

काल' कार्यालय से प्रकाशित होने वाला दैनिक 'स्वाधीन भारत' बन्द हो चुका था। सौराष्ट्र ट्रस्ट की ओर से श्री अमृतलाल सेठ गुजराती में 'जन्मभूमि' का श्रीगणेश १९३४ में कर चुके थे। वहां ही 'अखंड भारत' का जन्म हुआ। वह देशी राज्यों की प्रजा की एक वाणी था। छह-सात सौ देशी राज्यों के निरंकुश शासन से पीड़ित जनता का मसीहा था। उसका एक पृष्ठ 'देशी राज्यों की जनता की पुकार' शीर्षक से, जिसमें वहां के समाचार प्रकाशित हुआ करते थे, सुरक्षित था। मेरे भेजे हुए हैदराबाद राज्य के समाचार भी उसमें समय-समय पर स्थान पाते थे।

असल में 'अखंड भारत' का जन्म ही देशी राज्यों की असहाय प्रजा के उत्पीड़न के विरोध में हुआ था। उस समय के दैनिक पत्र विशेषकर अंग्रेज़ी पत्र इस सम्बन्ध में समाचार देते ही नहीं थे। ये उनके प्रभाव में थे। कई राज्यों में तो वहां का प्रधान मन्त्री या दीवान ही अंग्रेज़ी पत्रों का संवाददाता रहता था। यह अंग्रेज़ मालिकों के पत्रों की बात है। (एसोसिएटेड प्रेस आफ इण्डिया) ही उस समय समाचार देने का सुसंगठित साधन था। उसके पास दूर लेखन यंत्र थे। जनता पर हो रहे अत्याचारों को वे भी प्रकाशित नहीं करते थे।

ऐसी स्थिति में कुछ देशी भाषा के पत्र ही मूक जनता की वाणी थे। जिन पर सदा काले कानूनों की नंगी तलवार कच्चे धागे से बंधी लटकती रहती थी। पता नहीं कब किस समाचार प्रकाशन के अपराध में धर लिये जायं। ऐसे पत्र सदा सरकार की आंख का कांटा बने रहते थे। विज्ञापन भी उन्हें ठीक से मिल नहीं पाते थे। सदा आर्थिक संकट का सामना रहता था। 'अखंड भारत' भी इन सभी कठिनाइयों से घिरा हुआ था। भारी घाटे के कारण कइयों के हाथ में उसका स्वामित्व गया, फिर भी वह दीर्घजीवी न हो सका।

जितने वर्ष भी उसका प्रकाशन हो सका, देशी राज्यों की प्रजा के सन्देशवाहक के ही रूप में वह रहा। उन्हीं दिनों कई देशी राज्यों में नागरिक अधिकारों की मांग को लेकर सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ हुए, जिनको यथेष्ट प्रकाशन 'अखंड भारत' में ही मिल सका। चाहे वह हैदराबाद का मामला हो, ट्रावनकोर का हो, झाबुआ का हो, लोहारू या राजकोट का हो; उन सब में 'अखंड भारत' ने प्राण फूंक दिये थे। जनता में एक नई जागृति की लहर दौड़ गई थी। दिल्ली के पोलिटिकल विभाग का आसन डोल गया था। किस राज्य से कौन समाचार 'अखंड भारत' को भेजना है की खोज आरम्भ हुई, पर व्यास जी के यहां से किसी को इसका कुछ भी पता न चल सका। इतनी गुप्तता और सावधानी व्यास जी ने उस समय बरती थी। अन्यथा कई संवाददाताओं की हत्या उस समय हो जाती थी या काल-कोठरी में सड़ा करते थे।

१९६२ में व्यास जी दो दिन के लिये हैदराबाद पधारे थे। उस अवसर पर स्थानीय पत्रकार बन्धुओं से मिलनें का कार्य-क्रम बनाने का भार मुझ पर था।

उन दिनों जयपुर में लोहारू नवाब की पराजय और व्यास जी पर अनुशासनात्मक कार्रवाई विषयक चर्चा पत्रों में खूब स्थान पा रही थी। अतः पत्रकारों ने इसी विषय पर उन पर प्रश्नों की झड़ी लगा दी। व्यास जी ने बड़ी ही शान्ति और सौजन्यता से उस पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि लोहारू नवाब ने अंग्रेजी शासनकाल में अपनी जनता को स्वयं गोलियों से भून दिया, जिसकी जांच मैंने स्वयं की थी। उस समय इसकी निन्दा महात्मा जी तक ने अपने 'हरिजन' में की थी। ऐसे को कांग्रेसी उम्मीदवार बनाना कांग्रेस का स्वयं अपमान था। भला मैं इसे कैसे सहन कर सकता था। जब कांग्रेस उच्च सत्ता ने मेरी बात नहीं सुनी और नवाब को अपने उम्मीदवार के रूप में खड़ा कर ही दिया, तो उसका विरोध करना एक कांग्रेसी के नाते मेरा कर्त्तव्य हो गया। नवाब को हराकर मैंने तो कांग्रेस के गौरव व प्रतिष्ठा की ही रक्षा की है। इसीलिए नेहरू जी नहीं चाहते थे कि मेरे विरुद्ध कुछ किया जाय। उन दिनों में वे स्वयं अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद् के अध्यक्ष थे और मैं मन्त्री था। उनसे कुछ छिपा नहीं था। इसी समय मैंने व्यास जी को याद दिलाई कि नवाब तो उस समय कैसा फिजूल-खर्ची था। इस पर व्यास जी ने तुरन्त कहा कि मैं निजी मामले को सार्वजनिक मामलों से अलग रखता हूं।

उस पत्रकार सम्मेलन में हैदराबाद में रहने वाले लगभग सभी संवाददाता उपस्थित थे। वह एक घण्टे से अधिक चला। संवाददाता व्यास जी से बड़े ही प्रभावित और प्रसन्न हुए। वे कहने लगे कि आज तक हमने किसी ऐसे मारवाड़ी नेता को नहीं देखा जो उनकी तरह सांगोपांग रूप में प्रभावशाली ढंग से बिना किसी उत्तेजना के अपनी बात को वास्तविक रूप में रख सके। ऐसे अनोखे आकर्षण के धनी थे लोकनायक व्यास। हमें क्या पता था कि उनका वह मिलन अन्तिम होगा।

सच्चे लोकनायक

व्यास जी सच्चे अर्थों में लोकनायक थे। कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव में उन्होंने राजर्षि टंडन जी का समर्थन नेहरू जी की इच्छा के विरुद्ध किया था। यह सर्व-विदित है। दूसरा कोई होता तो प्रदेश कांग्रेस का अध्यक्ष रहते हुए प्रधान मन्त्री की इच्छा के विरुद्ध चलने का कट्टर साहस नहीं करता। कांग्रेस के कट्टर विरोधी और घोर शत्रु केवल जी हजूरी के बल पर कहां-से-कहां पहुंच गये। लोकनायक ने तो राजस्थान के मुख्य मन्त्रित्व को भी तुच्छ समझा। जब व्यास जी मुख्यमंत्री पद से निवृत्त हुए तो बहुत से लोग संवेदना और सहानुभूति प्रकट करने के लिये उनके पास गये तब व्यास जी ने हँसते हुए कहा--

"मैंने अपने ही हाथों, अपनी चिता जलाई।
देख-देख लपटें मैं हँसता, तू क्यों रोता भाई?"

इससे बढ़कर उनकी जिन्दादिली का और क्या सबूत हो सकता है। जो जीवन

भर अपने सिद्धान्तों पर डटे रहे। टूट गये, पर झुके नहीं।

१२

ऋषि दधीचि

श्री ताराचन्द जी जगाणी, जैसलमेर (राजस्थान)

साधारण स्थिति के परिवार में जन्म लेकर जो व्यक्ति अपने पुरुषार्थ और साधनामय जीवन से महापुरुष वन जाता है, उसके जीवन की छोटी-छोटी घटनाएं भी जन-साधारण के लिये प्रेरणास्पद स्मृतियां वन जाती हैं। लोकनायक श्री जयनारायण जी व्यास भी इसी कोटि के महापुरुष थे। मेरे जैसे हज़ारों कार्यकर्त्ताओं और अन्य लोगों को उनके निकट सम्पर्क में आने का सौभाग्य मिला था। यह सौभाग्य वास्तव में जीवन को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला सिद्ध हुआ। विपत्तियों में भी सदा हँसते रहकर उन्होंने जो कठोर तपस्या की थी वह वहुत कुछ आंखों के सामने से ही गुजरी थी। उसकी पावन स्मृतियां सार्वजनिक जीवन जीने की इच्छा रखने वाले लोगों को प्रेरणा देने के लिये आज भी काफी हैं।

त्याग मूर्ति

मुझे पहली वार सन् १९४५ में व्यास जी के दर्शनों का सौभाग्य मिला था। उस समय वे देशी राज्य लोक-परिषद् के प्रधान मन्त्री थे और उसका प्रधान कार्यालय जोधपुर में ही था। मैंने उन दिनों जैसलमेर की समस्याओं के वारे में पत्रों में लिखना आरम्भ किया था और नागपुर में प्रवासी जैसलमेरियों की एक संस्था की स्थापना की थी। प्रत्यक्ष दर्शनों से पूर्व अपनी गतिविधियों के वारे में उनके साथ पत्र-व्यवहार होता रहता था और मैं उनका मार्ग-दर्शन प्राप्त करता रहता था। इससे परिचय की भूमिका वन चुकी थी। उस दिन मैं जैसलमेर के वयोवृद्ध नेता स्व० मीठालाल जी व्यास के साथ उनके प्रथम साक्षात्कार के लिये गया था। स्व० मीठालाल जी के इतना कहते ही कि यह युवक नागपुर से आया है वे मुझे पहचान गये और प्यार से अपनी वांहों में लपेट लिया। उसके पहले मैंने उनकी सादगी और त्यागपूर्ण जीवन की वहुत-सी वातें सुन रखी थीं। जव उनके प्रथम दर्शन किये तव मुझे यह देखकर आश्चर्य नहीं हुआ कि उस समय वे एक छोटी सी धोती, जो घुटनों तक ऊंची थी और एक फटा हुआ कुरता, जिसकी फटी हुई वाहें फाड़कर अलग कर दी गई थीं, पहने हुए थे। उन दिनों उनका शरीर भी दुवला-

पतला था। उनका वह शरीर और उस पर फटे-पुराने कपड़ों की वेश-भूषा तथा उस समय तक देश के सार्वजनिक जीवन में उनका बहुत ऊंचा स्थान, यह सब देखकर ऐसा लग रहा था, जैसे लोक-कल्याण के लिये अपनी देह का भी त्याग करने वाले ऋषि दधीचि के साक्षात् दर्शन कर रहा हूं।

कलाकार

बात सन् १९४६ की है। राजस्थान की रियासतों के प्रजामण्डलों के मध्य-वर्ती संगठन का आयोजन बीकानेर में किया गया था। बीकानेर की सरकार ने उस दिन वहां की जाने वाली आम सभा पर रोक लगा दी तब तय किया गया कि उस रात सांस्कृतिक कार्यक्रम रखा जाय। वह कार्यक्रम उसी स्थान पर हुआ, जहां हम सब लोग ठहरे थे। व्यास जी ने कहा सभी बड़े-बड़े नेता अपना एक-एक कार्यक्रम रखें। लेकिन वहां उपस्थित बड़े नेता केवल भाषण पटु और भोजन पटु थे। कार्यक्रम बनाकर प्रस्तुत करना उनके बस की बात नहीं थी। व्यास जी ने कहा कि मैं एक नृत्य प्रस्तुत करूंगा और उस दिन का सांस्कृतिक कार्य-क्रम केवल उनके उस नृत्य से ही सम्पन्न हुआ। घुंघरू और अन्य वाद्य यन्त्र लाये गये। व्यास जी ने एक अनुपम भाव-नृत्य प्रस्तुत किया, जिसमें राजस्थान के रेगिस्तानी इलाके के एक किसान का अनेक दैवी प्रकोपों और सरकारी हाकिमों के जुल्मों से त्रस्त कष्टपूर्ण कठोर जीवन का निरूपण किया गया था। व्यास जी के इस सफल कला-कार के रूप के दर्शन करके वहां उपस्थित लोग आश्चर्य चकित रह गये थे। उस कला का धनी यदि चाहता तो उससे ही लाखों रुपये का धनी हो सकता था पर व्यास जी तो हम लोगों को कठोर त्याग, निष्काम सेवा और बेधड़क निर्भयता का पाठ पढ़ाने के लिये ही अवतरित हुए थे।

स्थितप्रज्ञ

जिस समय उनपर राजस्थान सरकार द्वारा संगीन मुकदमा चलाया जा रहा था उन दिनों की बात है। हम लोग उनके पास बैठे थे कि उनके एक साथी ने आकर कहा माड़सा, शास्त्री जी तो ज्योतिषियों को अपनी जन्म-पत्री बताकर पूछ रहे हैं कि इस मुकदमे में यदि व्यास जी जीत गये, तो कहीं मेरे साथ भी ऐसा बर्ताव तो नहीं होगा। बेचारे शास्त्री जी को कोई तसल्ली नहीं दे रहा है। शास्त्री जी के प्रति अपने साथी के इस व्यंग्यपूर्ण शब्दों को सुनकर व्यास जी एकदम गम्भीर हो गये और ऐसा लगा कि उनके उदार व कोमल हृदय को उससे भी ठेस लगी है। वातावरण को दूषित होने से बचाने के लिये उन्होंने दृढ़ आत्म-विश्वास के साथ कहा कि मुझे शास्त्री जी को यह तसल्ली करानी ही पड़ेगी। इन मुकदमों से तो व्यास का कुछ बिगड़ेगा नहीं पर वह आपका भी कुछ बिगड़ने नहीं देगा। उस समय की उनकी मुख-मुद्रा से ऐसा लग रहा था कि अपने जीवन के लक्ष्य की ओर एकाग्रता पूर्वक सतत व जागरूक और सुख-दुःख हानि-लाभ तथा जय-पराजय

न होने वाला अपने मार्ग पर शान्त और निश्चल गति से चलने वाला गीता के दूसरे अध्याय का स्थितप्रज्ञ ही हमारे सामने बैठा बोल रहा है।

सरल हृदय

व्यास जी द्वारा स्थापित और संचालित संस्था मारवाड़ खादी संघ के मंत्री का काम सम्हालने के लिये मुझसे कई बार कहा गया था। जब यह बात लगभग तय होने पर आई, तब मेरे मन में कुछ झिझक पैदा हो गई। आगे बात करने के लिये मुझे जोधपुर बुलाया गया। मैं जब उनके घर पहुंचा तो वहां काफी लोग बैठे थे और गपशप हो रही थी। मैं भी अभिवादन करके उनके साथ बैठ गया। कुशल समाचार पूछकर व्यास जी पुनः गपशप में लग गये और मैं आशा करता रहा कि वे मुझसे काम की बात करें। जब काफी समय तक बैठे रहने के कारण मैं उकता गया तब सोचा कि अब सबके सामने थोड़े में बात करके यहां से चल देना चाहिए। अपने से बात करने के लिये उठकर अलग चलने के लिये व्यास जी से कहना अशिष्टता और उनके व्यक्तित्व का अनादर करना ही होता। मेरे मित्र भाई सत्यदेव जी व्यास ने जो व्यास जी के अत्यन्त निकट के साथी और उनके स्वभाव के जानकार थे। उनसे काम की बात करने का गुरु यही बताया कि उनको अलग लेजाकर ही काम की बात की जा सकती है। उनके कहने पर मन मे संकोच होते हुए भी मैंने अशिष्टता कर ही डाली। लेकिन, मुझे यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि वे कितने सरल स्वभाव के थे जो मुझ जैसे साधारण व्यक्ति द्वारा बात करने के लिये उठकर अलग चलने का आग्रह तुरन्त मान गये। मुझे अपने कमरे में अलग ले जाकर निःसंकोच बात करने का मौका दिया।

मैं आज भी उनके विविध रूपों की याद करता हूं, तब मेरे सामने सिने-चित्रों की तरह उनकी व्यस्तता, गम्भीरता, सरलता, विनोद प्रियता, महानता और सबसे अधिक स्नेहपूर्ण आत्मीयता जाग उठती है। मैं अपने को खोया-खोया-सा अनुभव कर भूल जाता हूं।

१३

सफल नेतृत्व

श्री श्यामसुन्दर जी व्यास, सम्पादक, 'लोकजीवन', जोधपुर (राजस्थान)

संवत् १९३६ का साल था, तब भारत में फेडरेशन कायम करने की तैयारियां की जा रही थीं। नेताजी सुभाष बोस ने उसको 'काल नाग' कहा था। यह घोषणा बाबू

सुभाष ने जोधपुर के गिरदीकोट में एक सार्वजनिक सभा में की थी। उनसे संबंधित कुछ विशेष कागजों की खोज के लिये पुलिस ने प्रजामण्डल के कार्यालय पर धावा बोला जो कि मेरे घर के पास था। उसी सिलसिले में उन दिनों के प्रजामण्डल के नेता और 'प्रजासेवक' के संपादक मामा अचलेश्वर प्रसाद शर्मा की गिरफ्तारी हुई।

कुछ दिन बाद श्री जयनारायण व्यास के पिता श्री सेवाराम जी बीमार पड़े। वे अन्ध बाग के क्वाटर्स में रहते थे। व्यास जी तब जोधपुर राज्य से निर्वासित थे और ब्यावर से 'आगीवाण' नाम का राजस्थानी पाक्षिक पत्र प्रकाशित किया करते थे। वही उसके संपादक थे।

मैं सातवीं-आठवीं कक्षा में पढ़ता था। प्रजामण्डल का कार्यालय हमारे मोहल्ले में जिस मकान में था, उसको हम 'पोसाला का डागला' कहा करते थे। वह मेरे घर से सटा था। वहां की घटनाओं का मुझ पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था।

सुना कि व्यास जी शाम की गाड़ी से निषेध आज्ञा का उल्लंघन कर जोधपुर आ रहे हैं। मैं भी उनके दर्शन के लिये स्टेशन दौड़ पड़ा। दुबला-पतला शरीर, निर्भीक व हंसमुख चेहरा और मोटी खादी का अगुआ चोला व खादी की सफेद टोपी; बस, यह था उनका रूप जो आज भी मेरी आंखों के सामने बना है। लोगों ने उनको फूल मालाएं पहनाईं। उनका हार्दिक स्वागत व अभिनन्दन किया। पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। उनको सूचित किया गया कि जोधपुर रहकर वे रोगी पिता जी की सेवा सुश्रूषा कर सकेंगे।

व्यास जी के पिता जी उस बीमारी में चल बसे। व्यास जी ने पोसाला के डागले में प्रजामण्डल के कार्यालय में आना-जाना शुरू किया। अपने घर से लाकर उनको ठण्डा पानी पिलाना हम लोगों का काम था। मुझे बड़े प्यार से कहते कि 'गुड़िया, पानी पिलाओ, फिर गाना सुनाऊंगा।' वे गाने की पंक्तियां लिखने में तल्लीन हो जाते। जीभ का अगला हिस्सा होंठों पर चलता रहता। उन दिनों में बनाये हुए उनके बहुत से गीतों की पंक्तियां मुझे आज तक याद हैं। 'म्हाने एड़ो दी जो राज, म्हारा राजा जी।' 'इण मारवाड़ दे मांय मैं तो मजा करां तुम जागो मरुधर भाई, पूरब दिशा लाली छाई।' 'कह दो डंके की चोट, मारवाड़ नहीं रहसी ठोठ।' 'अब मैं सूतां नहीं रहोसा, गां गांव आ बात कहोला, मरद बणो मत बाजो ठोढ मारवाड़ नहीं रहसी ठोठ।' व्यास जी कवि थे और गीतकार भी।

◇ ◇ ◇

व्यास जी की कविताएं केवल राजनीतिक चेतना से ही ओत-प्रोत न होती थीं; प्रत्युत उनमें सामाजिक क्रान्ति की भावना भी व्यापी रहती थी। जोधपुर में पुष्करणा समाज में कुछ मनचले युवकों ने समाज-सुधार के आन्दोलन का सूत्रपात किया था। इसी उद्देश्य से पुष्करणा नवयुवक मण्डल की स्थापना की गई थी। वह मण्डल समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करने के लिये दृढ़ प्रतिज्ञ था। व्यास जी भी उसके

अगुआ थे। शीतलाअष्टमी व होली के मेलों पर युवक मण्डल के सदस्य 'घेर' भजन मण्डली निकाला करते थे। चंग हाथ में लिये वे हर मोहल्ले में जाते और समाज-सुधार के गीत लोगों को सुनाते। उनकी दो लोकप्रिय गानों की धुन की दो-दो लाइनें आज भी मुझे याद हैं :

पहली यह कि :

"ना समझ रहेंगी, जब तक ये घरवालियां।"

आर दूसरी यह कि :

"मत दूध लजाइ जे पाछो, मत आइजे बेटा रार सूं।"

◇ ◇ ◇

उन दिनों जोधपुर में कवि-सम्मेलन व गोष्ठियों की धूम रहती थी। व्यास जी उनमें अपनी कविताएं बड़ी तन्मयता से सुनाते और स्वयं तांडव नृत्य दिखाते। दर्शकगण उनको उस रूप में देखकर यह सोचते ही रह जाते कि आया व्यास राजनीतिक नेता हैं, गीतकार हैं, कलाकार हैं, कवि हैं, दार्शनिक हैं या विचारक। उन दिनों की व्यास जी की यह कविता उनके इन्कलाबी अरमानों की एक स्पष्ट झलक देती है :

"भूखों की सूखी हड्डी से, वज्र बनेगा महा भयंकर।
ऋषि दधिचि को ईर्ष्या होगी, नेत्र नया खोलेंगे शंकर॥
जाती है ये मोटर तेरी, बस्ती तो आबाद रहेगी।
ज़ालिम तेरे इन जुल्मों की, इसमें कायम याद रहेगी॥"

व्यास जी कभी-कभी रहस्यवादी कविताओं के लिखने में भी बड़ी दिलचस्पी लिया करते थे। एक बार उन्होंने तांगे वाले पर एक कविता लिख डाली जो उन्होंने नव चौकियों कोतवाली के कवि-सम्मेलन में सुनाई थी।

व्यास जी की कविता के शब्द आज भी गूंज उठते हैं :

अरे ओ तांगे वाले,
तेरे घोड़ों की टापों में रसगुल्लों का स्वाद छिपा है।

◇ ◇ ◇

जोधपुर राज्य में भयानक अकाल था। राज्य सरकार के मन्त्री श्री माधोसिंह व विभागीय अध्यक्ष श्री निरंजनसिंह स्वरूप पर अकाल के राहत कार्य में भ्रष्टाचार करने के गम्भीर आरोप लगाये गये थे। जागीरदारों और बेगार की ज्यादतियों से सामन्ती जनता कराह रही थी। इन हालतों पर विचार करने के लिये व्यास जी ने जोधपुर में एक राजनीतिक सम्मेलन का आयोजन किया था। सम्मेलन के दो दिन पूर्व जब व्यास जी व हम लोग पोसाला के डागले में प्रजामण्डल कार्यालय में बैठे विचार-विनिमय कर रहे थे, तब पुलिस सुपरिन्टेण्डेण्ट स्वर्गीय श्री बलदेवराम जी मिर्धा ने ऊपर आकर व्यास जी को गिरफ्तारी का वारंट दिखाया। इस समय व्यास

जी ने गिरफ्तारी से पहले बाजार में इकट्ठी हुई जनता को जो संदेश दिया उसके शब्द आज भी मेरे कानों में भली-भांति गूंज रहे हैं। उन्होंने कहा था कि :

"हम जिस उद्देश्य से चेतना पैदा करने हेतु इस सम्मेलन को बुलाना चाहते थे, वह अपने आप पूरा हो गया। सरकार जन-चेतना से घबरा उठी है। सरकार का यह दमन लोगों को जिम्मेवार हकूमत के आन्दोलन के लिये तैयार रहेगा।"

व्यास जी जेल गये व उनके साथी भी। परन्तु कुछ महीनों बाद सरकार ने उन्हें रिहा कर दिया।

◇ ◇ ◇

पहली गिरफ्तारी और उत्तरदायी शासन के आन्दोलन के बीच में व्यास जी जोधपुर एडवाइजरी असेम्बली के सदस्य उस समय के चीफ मिनिस्टर श्री डी० एम० फील्ड द्वारा मनोनीति किये गये थे। उस असेम्बली भवन में, जो स्टेडियम के समीप पब्लिक पार्क के लाइब्रेरी भवन में स्थित था, श्री डी० एम० फील्ड ने उद्-घाटन अवसर पर जो कुछ कहा था उससे एडवाइजरी बोर्ड के सदस्य विशेष रूप से प्रभावित हुए थे। जिम्मेवार हकूमत आन्दोलन के पहले जोधपुर नगरपालिका के चुनाव हल्केवारान आधार पर प्रथम बार बालिग मताधिकार के आधार पर हुए थे। उस समय लोक-परिषद् ने उसकी छत्तीस में से चौंतीस सीटों पर कब्जा किया। जब रात को बारह बजे हम लोग नगरपरिषद् हाल से पूरे चुनाव फल सुनकर आये तो व्यास जी के नेतृत्व में एक बड़ा जलूस निकाला गया। व्यास जी ने मोती चौक में दस हजार की उपस्थिति के सामने कहा था, "लोगों व शासकों ने हमें आन्दोलनकर्त्ता के रूप में ही देखा है। हम न सिर्फ एजिटेटर्स है; प्रत्युत वैसे ही अच्छे प्रशासक सिद्ध होकर दिखायेंगे।"

व्यास जी नगरपालिका के अध्यक्ष चुने गये। बाद में मारवाड़ लोक-परिषद् का जिम्मेवार हकूमत आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। तब व्यास जी ने एक इन्कलाबी गीत बनाया, जो बड़ा ही लोकप्रिय हुआ। जोधपुर का वह आन्दोलन १९४२ के 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' के आन्दोलन व 'अगस्त क्रांति' की भूमिका बनाई गई। गीत का शीर्षक था।

"फील्ड साहब की हकूमत गैर जिम्मेवार है।
इस हकूमत में तबाह जनता तथा दरबार है॥"

लोक-परिषद् का वह आन्दोलन तथा 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' आन्दोलन दोनों एक-दूसरे से सम्बन्धित हो गये। हम युवक भी १९४२ के बम केस के बन्दी बना लिये गये।

◇ ◇ ◇

यह है देशी राज्य विशेषतः मारवाड़ और भारत के संग्राम के पूर्वार्द्ध की हल्की-सी झांकी, जिसमें व्यास जी के प्रभावशाली सफल नेतृत्व की भी झांकी स्पष्ट रूप में दीख पड़ती है।

१४

दो घटनाएं

श्री खेतसिंह जी राठौड़, प्रमुख जिला परिषद्, जोधपुर (राजस्थान)

श्रद्धेय श्री जयनारायण जी व्यास से मिलने और निकटतम रहने का अवसर मुझे राजस्थान विधान सभा के सदस्य के नाते ही मिला था। ४ नवम्बर, १९५४ की घटना है। उनके घर यानी वंगले पर, जो आजकल राज्यपाल का निवास स्थान है, एक वैठक हुई थी। ६ नवम्वर को नेता का चुनाव था। व्यास जी व सुखाड़िया जी दो उम्मीदवार थे। सुखाड़िया जी के समर्थक राजकीय प्रवास भवन में वड़े ज़ोरों से अपने प्रचार में लगे थे। सुखाड़िया जी दिन में दो वार चक्कर लगाते थे। व्यास जी से यह सारी वात कही गई और उनसे निवेदन किया गया कि वे भी राज्य प्रवास भवन में पधार कर विधान सभा के कांग्रेस दल के विधायकों से वात करें। व्यास जी ने जवाव दिया, "मैं इस तरीके को गलत मानता हूं। पार्टी के चुनाव में इस प्रकार की परम्परा डालना किसी के लिये शोभाजनक नहीं हो सकता। मैं तो किसी से जाकर यह नहीं कहूंगा कि मुझे वोट दो, जो मुझे ठीक समझेंगे, वे वोट दे देंगे।" यह शब्द मैंने स्वयं उनके मुंह से सुने थे। हालांकि मैंने अपना वोट सुखाड़िया जी को दिया था। मगर मेरे हृदय और मस्तिष्क पर व्यास जी के कथन का गहरा असर पड़ा।

सीमावर्ती क्षेत्र के दौरे में एक वार मैं उनके साथ था। वे मुख्यमंत्री थे और पुलिस का महकमा भी उनके पास था। रात को करीव ग्यारह वजे के वाद हम नोख ग्राम में पहुंचे। जहां हम ठहरे थे, वहां सोने के लिये खाटों का प्रवन्ध नहीं था। लोग वाहर इधर-उधर दौड़ने लगे। व्यास जी ने पूछा "क्या वात है।" उन्हें वतलाया गया कि खाटें नहीं हैं, लाने के लिये आदमी भेजे जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि "जिन्हें भेजा गया है उन्हें वापस वुला लो। खाटों की क्या ज़रूरत है। अपन सभी इस कमरे में इस फर्श पर सो जायेंगे।" सवसे पहले उन्होंने अपना विस्तर स्वयं खोलना शुरू किया। फिर हम सवने भी उनका अनुकरण किया। रात-भर फर्श पर ही लेटे रहे। यह घटना छोटी-सी है। परन्तु मेरे दिमाग पर उनकी उस दिन की सरलता व सादगी का जो गहरा प्रभाव पड़ा, उसको मैं भुला नहीं सकता। राज्यों के मुख्य-मंत्रियों में यह सादगी देखने में कहां मिलती है?

१५
आदर्श सहयोगी

श्री रामकृष्ण धूत, महामंत्री अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा, हैदराबाद (आंध्रप्रदेश)

व्यास जी की सरलता और सौम्यवृत्ति का निकट परिचय मुझे उस समय मिला, जब वह कांग्रेस महासमिति के अधिवेशन के लिये हैदराबाद पधारे थे। तब वह राजस्थान के मुख्यमन्त्री थे। मैं उन दिनों सर्वोदय आश्रम शिवरामपल्ली में ही रहता था। देशी राज्यों को मुक्ति आन्दोलन में एक सहयोगी के नाते तथा सामाजिक क्षेत्र के साथ-साथ सेवा करने के नाते श्री व्यास जी के साथ परिचय तो था ही। हैदराबाद आने पर उन्होंने मुझे स्मरण किया। मेरे निवेदन पर वह शिव-रामपल्ली आश्रम में भी पधारे और वहां का कार्य तथा व्यवस्था देखकर बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने रात को आश्रम में ही रुकने का निश्चय किया। मेरे लिये इससे बड़ी सौभाग्य की की बात और क्या हो सकती थी ?

आश्रम में ज़मीन पर ही बिस्तर लगाकर शयन करने का रिवाज है। भोजनो-परान्त व्यास जी बड़ी प्रसन्नता के साथ ज़मीन पर लगे बिस्तर पर मेरे निकट ही सोये। बड़ी देर तक उनके साथ राजकीय और सामाजिक विषयों पर चर्चा होती रही। मैंने देखा कि आश्रम में ज़मीन पर लगे बिस्तर पर व्यास जी खूब गहरी निद्रा में निमग्न थे। विशाल बंगले के सुख-सुविधापूर्ण रवैये से कहीं अधिक उन्हें आश्रम में सोने में आनन्द मिला। महापुरुष की यही तो विशेषता होती है।

व्यास जी के अन्तिम दर्शन सितम्बर १९६२ में हैदराबाद में ही हुए, जब वह यहां के पुष्करणा समाज के एक समारोह में पधारे थे। इस अवसर पर राजस्थानी बन्धुओं की एक सभा में भाषण देते हुए व्यास जी ने राजस्थान राज्य के समुज्ज्वल भविष्य का चित्रण किया, हम सभी गद्गद हो गये। उन दिनों राजस्थान के कांग्रेस कार्यकर्त्ता आपसी दलबन्दी में उलझे थे और सत्ता हथियाने के अनेक षड्यन्त्र चला रहे थे। श्री व्यास जी जैसे निस्पृह और कर्मठ जन-सेवक को इससे दुःख होना स्वाभाविक था। वह स्पष्टवादी थे और इस प्रकार की दलगत राजनीति के कटु आलोचक थे। परन्तु मैंने देखा कि पद और सत्ता ने कभी उन्हें प्रलोभित नहीं किया। उनके हृदय में एक ही चाह थी, राजस्थान अपने गौरवपूर्ण अतीत की भांति अपने शौर्य, त्याग और बलिदान से भारत का मुख उज्ज्वल करता रहे।

व्यास जी जैसी विभूति को जन्म देकर राजस्थान की वीर भूमि निश्चय ही धन्य हो गई। स्वतन्त्र भारत के इतिहास में व्यास जी का नाम और उनकी सेवाएं सदा स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहेंगी। वह राजस्थान समाज के हृदय-सम्राट् थे और उनका आदर्श चरित्र हमें सदा अनुप्राणित करता रहेगा। मैं उनके चरणों में अपनी आदरयुक्त श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

१६
निर्भीक साथी

संसद सदस्य श्री रमेशचन्द्र जी व्यास, भीलवाड़ा (राजस्थान)

मैं व्यावर में सनातन धर्म हाई स्कूल में पढ़ता था। वहां उन दिनों में ईसाई मिशनरियों का काम बहुत तेज़ी से चल रहा था। मैंने अपने साथी विद्यार्थियों की एक मंडली बनाकर उनका विरोध करना शुरू किया, तो उन्होंने स्कूल के मुख्याध्यापक श्री चक्रवर्ती पर दवाव डालकर मुझे विद्यालय से अलग करवा दिया। इसका जब श्रद्धेय व्यास जी को पता चला, तब वे मुझे ढूंढ़ते हुए वहां आये, जहां मैं रहता था। बस, वहीं व्यास जी से मेरा पहला परिचय था और वह परिचय एक साथी राजनीतिक कार्यकर्त्ता के रूप में इतना प्रबल हुआ कि मैं उनका अन्यतम जीवन संगी बन गया। वह तब जैन गुरुकुल में मुख्याध्यापक थे। उनके प्रयत्न से मुझे फिर से स्कूल में भर्ती कर लिया गया।

◇ ◇ ◇

१९३२ में गांधी जी के गोलमेज सम्मेलन लन्दन से लौटने पर नमक सत्याग्रह का जो दूसरा दौर शुरू हुआ, उसमें व्यास जी के साथ मेरी घनिष्टता बहुत बढ़ गई। हम लोग सरकारी कानूनों और प्रतिबन्धों की अवज्ञा करने के लिये जो तरह-तरह के उपाय ढूंढ़ निकाला करते थे, उनका एक उदाहरण यहां दे दूं। सार्वजनिक सभाओं और तिरंगा राष्ट्रीय झण्डा फहराने पर भी प्रतिबन्ध लगा हुआ था। मैंने दोनों ही प्रतिबन्ध एक साथ तोड़ने का निश्चय किया। तिरंगे झण्डे के रंग की एक टोपी, एक कुर्ता और पाजामा बनाकर पहन लिया। बाजार में एक खम्भे के पास जाकर अपने को लोहे की एक मजबूत जंजीर से चारों ओर से ऊपर नीचे से बांधकर उसमें मोटा ताला लगा दिया और चाबी पास के नाले में फेंक दी। उस खम्भे के साथ बंधे-बंधे मैंने व्याख्यान देना शुरू कर दिया। उस अजीब दृश्य को देखने के लिये बहुत बड़ी भीड़ वहां जमा हो गई। भीड़ ने सहसा ही सार्वजनिक सभा का रूप धारण कर लिया। आध-पौन घण्टे में पुलिस आई और घण्टा भर जंजीर खोलकर मुझे गिरफ्तार करने में लग गया। लोहार बुलाया गया और जंजीर काटी गई। डेढ़-दो घण्टा सभा और मेरा व्याख्यान होता रहा। मुझे व्यावर से ले जाकर अजमेर सेन्ट्रल जेल में रखा गया। तब राजस्थान और मध्य भारत की विभिन्न रियासतों के सत्याग्रही व्यावर आकर ही सत्याग्रह किया करते थे और व्यावर का राजनीतिक महत्त्व बहुत अधिक था। अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा, सेठ दामोदरदास जी राठी और राष्ट्र-नेता श्री घीसूलाल जी जाजोदिया आदि की व्यावर तपोभूमि रही है। तब व्यास जी के कारण व्यावर अच्छा बड़ा राजनीतिक केन्द्र बन गया था। यहां एक पुरानी

और वहुत भद्दी परम्परा चली आ रही थी। एक वादशा हवनाया जाता था, जो होली के दिन कचहरी जाकर इंग्लैंड के सम्राट् के प्रतिनिधि को सलाम किया करता था। सम्भवतः उसका प्रयोजन यह प्रदर्शित करना था कि भारत इंग्लैंड का गुलाम है। हमने उसके विरोध में भी वड़ा जोरदार आन्दोलन किया था।

◇ ◇ ◇

१६३२ की एक वर्ष की जेल यात्रा अजमेर सेन्ट्रल जेल में व्यास जी के साथ विताने के कारण उनके साथ स्नेह सम्वन्ध और अधिक गहरा हो गया। यह जेल जीवन अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण रहा। व्यास जी वहां हम सत्याग्रही व्यक्तियों के लिये आकर्पण के केन्द्र थे। यह अत्युक्ति नहीं है कि हम लोगों के लिये वह ही जेलर और सुपरिन्टेन्डेन्ट थे। उनका आदेश व नियन्त्रण हमारे लिये सर्वोपरि था। जेलर फतहसिंह के साथ हमारी नहीं पटती थी। राव गोपालसिंह जी खर्वा के चाचा खर्वा के ठाकुर मौड़सिंह जी भी कनविक्ट वार्डर के रूप में जेल काट रहे थे। उनकी हमारे साथ सहानुभूति थी। परन्तु जेलर के सामने उनकी एक न चलती थी।

सत्याग्रहियों के लिये जेल में श्रेणी विभाग की व्यवस्था चालू हो चुकी थी। कुछ वड़े समझे गये लोगों को 'ए' श्रेणी में रखा गया था और हम सव को 'सी' श्रेणी में। जेलर ने व्यास जी को अपमानित करने के लिये 'ए' श्रेणी के सत्याग्रहियों का भोजन वनाने पर नियुक्त कर दिया, व्यास जी उनका भोजन वनाते और स्वयं खाना 'सी' श्रेणी का हम लोगों के साथ आकर खाते। इसका हम सव पर वड़ा प्रभाव पड़ा। वावा नरसिंहदास जी को भी 'ए' श्रेणी में रखा गया था। परन्तु उन्होंने 'सी' श्रेणी में ही रहना पसन्द किया और उनको उसके लिये भूख हड़ताल भी करनी पड़ी।

जेल जीवन की दो-एक घटनाएं उल्लेखनीय हैं। उन दिनों में जेल के निरीक्षण के लिये सरकार ने अपने पसन्द के कुछ गैर सरकारी 'विजिटर' नियुक्त किये हुए थे। उनका काम तो यह था कि वे यह देखें कि कैदियों के साथ कानून सम्मत व्यवहार किया जाता है कि नहीं और उनको कोई असुविधा तो नहीं है। विजिटर महोदय दो वार सप्ताह में आते और एक चक्कर काटकर चले जाते। व्यास जी ने एक दिन उनसे पूछ ही लिया कि आप कौन हैं और किस मतलव से जेल का चक्कर काटने आते हैं। वे कुछ गरूर से वोले कि मैं गैर सरकारी विजिटर हूं और जेल का मुआयना करने आता हूं। व्यास जी ने इस पर कहा कि अच्छा हो आप अपना एक फोटो यहां लगा दें और उसके हम रोज़ दर्शन कर लिया करेंगे। आपको यहां आने के लिये व्यर्थ की मेहनत करनी पड़ती है। जेलर फतहसिंह इस पर नाराज हो गये और इसी अपराध की सजा के वतौर व्यास जी को 'ए' श्रेणी के सत्याग्रहियों का खाना वनाने का काम दिया गया था।

जेल में 'सी' श्रेणी के कैदियों को खाने के सम्बन्ध में बड़ी शिकायत थी। रोटियां ऐसी अधपकी और गिचमिची होती थीं कि दीवार पर फेंकने से चिपक जाती थीं। जेलर से शिकायत की गई, तो उसने गुस्सा होकर 'सी' श्रेणी के हम पन्द्रह-सोलह सत्याग्रहियों को रसोईघर का काम सौंप दिया। व्यास जी हमारे अगुआ थे। खाना बहुत बढ़िया बनने लगा। रोटियां खूब सेकी जातीं और साधारण कैदी भी पूरी तरह सन्तुष्ट हो गये। लेकिन रोटियां अच्छी तरह से सेकने के कारण वजन में कुछ कम होने लगीं और लकड़ियां भी कुछ अधिक जलने लगीं। हम पर आटा व लकड़ी चोरी करने का आरोप लगाया गया। पेशी होने पर हम सबको अलग-अलग लोहे के सीकचों से बने पिंजरों में बन्द करने की सजा दी गई। उन पिंजरों में ही टट्टी पेशाब के लिये एक मिट्टी का बर्तन रख दिया जाता था। उसपर जेल में एक दिन की भूख हड़ताल हुई और व्यास जी को तो बारह-तेरह दिन भूख हड़ताल करनी पड़ी। इस सज़ा के दिये जाने का एक कारण यह भी था कि एक दिन व्यास जी दाल के दो बरतनों की बहंगी उठाये ले जा रहे थे कि एक वार्डर ने उनको टोक दिया और उन्हें उस बहंगी को अपने कन्धे से इस तरह उतार कर नीचे रख दिया कि दाल सारी बिखर गई। बहंगी का भार दो मन से कम न होगा। हमारी इस भूख-हड़ताल की गूंज केन्द्रीय असेम्बली तक में सुनने में आई थी। आगरा के दैनिक 'सैनिक' के संस्थापक--सम्पादक पं० श्रीकृष्णदत्त जी पालीवाल ने केन्द्रीय असेम्बली में उसको उठाया था।

जेल में व्यास जी सब सत्याग्रही बन्दियों को बड़ी व्यवस्था में रखते थे, पढ़ना लिखना कुछ-न-कुछ सिखाना और मनोरंजन कार्यक्रम भी बराबर चलते रहते थे। पत्रकारिता की एक विशेष क्लास वे लिया करते थे। उसमें संवाददाता के काम का विशेष प्रशिक्षण दिया जाता और यह बताया जाता कि समाचार लेखन संकलन तथा रिपोर्टिंग आदि किस प्रकार किया जाता है। व्यास जी का मत यह था कि हर रियासती कार्यकर्त्ता को संवाददाता बनकर किसी-न-किसी समाचार-पत्र के साथ अपने को सम्बन्धित रखना चाहिए। जन-सेवा के लिये यह बहुत जरूरी है। उन्होंने तब जेल में कितने ही संवाददाता तैयार किये।

◇ ◇ ◇

१९३५ में अजमेर में डोगरा शूटिंग केस के बाद हम लोग इधर-उधर बिखर गये और मैं इन्दौर पहुंच गया। भाई कन्हैयालाल जी खादीवाला से अजमेर जेल में जो जान-पहचान हुई थी, वह मेरे इन्दौर जाने का निमित्त बन गई। वहां कुछ दिन सेठ हीरालाल जी कासलीवाल के स्कूल में काम किया। परन्तु मैं अपने राष्ट्रीय स्वभाव के कारण निभ न सका। श्री खादीवाला मुझे इन्दौर में ही रोक रखना चाहते थे। उन्होंने एक दुकान लगाकर उसका काम मुझे सौंप दिया। व्यास जी को जब पता चला, तब वह इन्दौर आये और मुझे दैनिक 'अखंड भारत'

का मालवा का प्रतिनिधि नियुक्त कर गये। झाबुआ के षड्यन्त्र के मुकदमे का मुझे विशेष रूप से रिपोर्टिंग करनी पड़ी। तब मैंने अनुभव किया कि वह अपने साथियों की कितनी फिकर रखा करते थे।

◇ ◇ ◇

१६३८ में मेवाड़ राज्य प्रजामण्डल की स्थापना हुई, तब मैं मेवाड़ चला आया और मेवाड़ में ही रहने लग गया। यहां मैं मजदूरों में काम करता था और स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी उसी काम में लगा रहा। व्यास जी जब राजस्थान के मुख्यमन्त्री नियुक्त हुए, तब भीलवाड़ा की मेवाड़ टैक्सटाइल मिल में उन चालीस मजदूरों को लेकर एक समस्या पैदा हो गई, जिनको काम से अलग कर दिया गया था। मामला व्यास जी के पास पहुंचा। उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि वे मेरी बात सुने बिना कोई फैसला नहीं करेंगे, हालांकि मैं उनके विरोधी पक्ष में शामिल था। उन्होंने पक्ष-विपक्ष का विचार न करके मजदूरों के हित को देखा और उनको फिर से काम पर लगवाया। तब मुझे उनकी न्यायप्रियता का एक अनुकरणीय उदाहरण देखने को मिला। कानपुर के यशस्वी मजदूर नेता श्री हरिहरनाथ शास्त्री को पंच नियुक्त किया गया था और उनका निर्णय स्वीकार कर लिया गया था।

◇ ◇ ◇

इस प्रकार यदि आपबीती घटनाएं लिखने बैठूं तो बहुत लम्बा किस्सा बन जायगा। उनके अन्तिम दिनों में जिन घटनाओं का मैं प्रत्यक्ष दर्शी रहा, उनको मैं कभी नहीं भूल सकता। मैंने एक दिन जब कि वे राज्य-सभा से उठकर बाहर जाते हुए बहुत थके मालूम हो रहे थे, मैं उनको सहारा देकर बाहर तक लाया। इच्छा तो मेरी यह थी कि मैं उनको उनके घर पहुंचा आऊं, परन्तु वे न माने और टैक्सी पर बैठ अकेले ही चल दिये। मुझसे बोले कि तुम दमे का दौरा कैसे सहन कर लेते हो। मुझे तो छाती की तकलीफ सहन करनी मुश्किल हो जाती है। उस समय भी वह छाती में कुछ तकलीफ अनुभव कर रहे थे। वह ४ मार्च की घटना थी। शाम को मैंने फोन किया, तो पता चला कि डाक्टरों ने मेडिकल चैकअप के लिये अस्पताल में भर्ती होने की सलाह दी है। वह कुछ देर अन्धेरा होने पर विलिग्डन अस्पताल गये तो मैं भी भाई गोपीकृष्ण जी विजयवर्गीय के साथ वहां पहुंच गया। मैंने चाहा कि मैं रात-भर उनके पास रहूं। भौजी जी रक्तचाप से पीड़ित थीं। उनके लिये अस्पताल में आकर रहना सम्भव न था। परन्तु वे न माने। सिवाय अपने नौकर के किसी को अपने पास नहीं रहने दिया। रात को उनका सांस तेज चल रही थी और डाक्टरों ने आक्सीजन देना शुरू कर दिया। ५ मार्च को सवेरे फिर मैं उनको देखने गया। उनको खाट पर न देख मुझे थोड़ा अचरज हुआ। थोड़ी देर में स्नान-घर से निकले और मुझे देखकर

बोले कि मैंने तो डाक्टरों के बन्द करने पर भी स्नान कर लिया। मेरे सामने ही उन्होंने कॉफी व टोस्ट लिया। उनके हाथ कांपते देख मुझे चिन्ता हुई। परन्तु वह अपनी सहज प्रसन्न मुद्रा में थे। मैं कुछ ज़रूरी काम से भीलवाड़ा चला गया। १२ मार्च को वहां से लौटा तो उनकी हालत गम्भीर थी। वह स्पष्ट रूप में महाप्रयाण की सूचना दे रही थी। मैंने कुछ मित्रों को सूचना दी। विजयवर्गीय जी वहां आ पहुंचे। श्री राजबहादुर जी को सूचित किया गया तो वे भी तुरन्त आ गये। जयपुर से जनाब बरकतउल्ला साहब भी आ पहुंचे। हम सबको देख उनकी आंखों से अश्रुधारा वह निकली। मानो वह हम सबसे अन्तिम विदा लेने की तैयारी कर रहे थे। कैसा मर्मस्पर्शी था वह दृश्य। जिस महाप्राण की आंखों से आंसू की एक बूंद भी गिरती हमने कभी देखी न थी, उसकी आंखों से इस प्रकार अश्रुधारा का वह निकलना महाप्रयाण की ही पूर्व सूचना थी।

जयपुर से उनके विश्वस्त डाक्टर कासलीवाल जी भी आ पहुंचे। श्री मथुरादास माथुर और श्री कृष्णगोपाल गर्ग भी आ गये। परन्तु उनकी आंखें तो पहले ही मुंद चुकी थीं और बेहोशी ने उनको घेर लिया था। कुछ समय तो लिखकर अपना भाव प्रकट करते रहे। बाद में किसी से कुछ भी बातचीत न हो सकी। १३ और १४ मार्च का दिन इसी चिन्ता, व्यथा और वेदना में बीत गया। शाम को वे हम सबको छोड़कर कूच कर गये। श्री लालबहादुर शास्त्री यह दुःखद समाचार सुन सबसे पहले अस्पताल पहुंचे। आते ही उनके मुंह से ये उद्‌गार निकले कि "एक ऐसा विशिष्ट व्यक्ति उठ गया जो निर्भीकता से अपने मन की बात कहने में कभी नहीं हिचकिचाया।" शव को हवाई जहाज से जोधपुर ले जाने की व्यवस्था की और राजस्थान में राजकीय शोक मनाने का आदेश दिया। १५ मार्च की प्रात उनके निवास स्थान साउथ एवेन्यू से जिस मातम के साथ उनका शव हवाई अड्डे पर ले जाया गया, उसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। मेरे लिये अपने बत्तीस वर्ष पुराने जीवन-साथी की वह विदाई एक ऐसी पीड़ा छोड़ गई है, जिसका दर्द दूर होना सम्भव ही नहीं।

१७

मेरा गौरव

श्री द्वारकादास जी पुरोहित, जोधपुर (राजस्थान)

मैं अपने को श्रद्धेय व्यास जी का बाल साथी और जीवन-संगी कह सकता हूं। मेरी युवावस्था और सार्वजनिक जीवन प्रायः उनके साथ-साथ बीता। हम दोनों

एक ही समाज से सम्बन्ध रखते थे। एक ही मुहल्ले के निवासी थे। यदि मैं भूलता नहीं तो अपनी सात वर्ष की ही आयु में उनका साथी बन गया था। १९१८ में पुष्करणा नवयुवक मण्डल की स्थापना हुई थी। मुख्यतः समाज-सेवा के उद्देश्य से उसका गठन किया गया था। पुष्करणा समाज में जाति भोजों की कुछ ऐसी प्रथा थी कि दस-दस हजार तक बाल-बच्चे, स्त्री-पुरुष उनमें सम्मिलित हुआ करते थे। उनकी व्यवस्था के लिये व्यास जी ने पुष्करणा युवकों का एक दल संगठित किया था। उनमें खाना बनाने, परोसने और सफाई करने आदि का सब काम पुष्करणा युवक बड़े प्रेम, लगन तथा उत्साह से किया करते थे। उन्हीं दिनों में अखिल भारतीय पुष्करणा महासभा का एक वृहत् अधिवेशन जोधपुर में हुआ था। तब एक सौ युवकों ने उसमें स्वयं-सेवक बनकर सेवा का काम बड़ी तत्परता से किया था। महादेव मन्दिर पर व्यास जी ने अखाड़ा बनाकर युवकों में कसरत वगैरह करने का शौक पैदा किया था। मैं इन और ऐसी प्रवृत्तियों में व्यास जी के साथ बराबर शामिल रहता था। इसी कारण मैं अपने को उनका बाल-साथी कहता हूं।

दिल्ली जाकर उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा पास की थी। उससे पहले ही उन्होंने सौनी विद्यालय में अध्यापक का काम शुरू कर दिया था। वहां से आने के बाद पुष्टिकर मिडिल स्कूल में अध्यापकी की और उसके बाद रेलवे तथा पी० डब्ल्यू० डी० विभाग में क्लर्की का काम किया। मेरी स्मृति के अनुसार क्लर्की का वह काम दोनों विभागों में चार मास से अधिक नहीं निभा। फिर उन्होंने पुस्तकों और अखबारों की एक छोटी-सी दूकान खोली। पुलिस के हस्तक्षेप के कारण दुकान अधिक दिन नहीं चल सकी। उन्हीं दिनों में मारवाड़ सेवा संघ और मारवाड़ हितकारिणी सभा के जन आन्दोलनों में व्यास जी ने जो भाग लिया उसके कारण उनको पहले तो दस नम्बरी ठहराया गया, बाद में राजद्रोह का मुकदमा चला और छह वर्ष की सज़ा हुई। इन सब घटनाओं के विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं।

१९२९ की घटना मैं कभी नहीं भूल सकता। वह मेरे हृदय पर पत्थर की रेखा की तरह अंकित हो गई। मैं कालेज का विद्यार्थी था। व्यासजी मारवाड़ राज्य से लम्बे निर्वासन के बाद जोधपुर लौटे थे। इसलिए जिधर से भी वे निकलते थे, सबकी आंखें उन पर लगी रहती थीं। एक दिन उनको मैंने बड़ी गम्भीर मुद्रा में और बड़ी तेज़ी से जाते देखा। मैंने आवाज देकर रोका और पूछा कि क्या बात है इतनी तेजी से आप कहां जा रहे हैं। वे कुछ रुक कर बोले कि बस, अब अपने को होम देना है। उसके बिना अब काम नहीं चलेगा। उनके शब्दों में जो दृढ़ता और आत्म-विश्वास था, उससे जान पड़ता था कि अब उनके हृदय में कुछ कर गुजरने की आग धधक रही थी। हम सबने देखा कि वह आग कैसी तेजस्वी थी और

किस दृढ़ता तथा आत्मविश्वास से उन्होंने अपना सर्वस्व उस सर्वमेघ यज्ञ में होम दिया।

कराची कांग्रेस से लौटते ही उनको मारवाड़ राज्य से फिर निर्वासित कर दिया गया। तब उन्होंने निर्वासित रह कर ही आन्दोलन का नेतृत्व एवं संचालन किया। राज्य में जागीरी आन्दोलन ने किसानों की जागृति के कारण इतना भयानक रूप पकड़ा कि एक प्रकार से संघर्ष की-सी स्थिति पैदा हो गई थी। चण्डावल काण्ड (२७ मार्च, १९४२) और डावड़ा काण्ड (१३ मार्च, १९४७) उस संघर्ष के ही प्रतीक थे। चण्डावल में तो केवल मार-पिटाई हुई थी, किन्तु डावड़ा में तो पांच किसानों को अपनी बलि देनी पड़ गई और जख्मी लोगों को काफी दिनों तक अस्पताल में भर्ती हो औषधोपचार करवाना पड़ा था। किसान सभा को मारवाड़ लोक-परिषद् के समानान्तर खड़ा किया गया था, किन्तु बाद में किसान सभा भी जागीरी संघर्ष से पृथक् न रह सकी, तब जाट सभा का आडम्बर रचा गया। लेकिन, व्यास जी के नेतृत्व में मारवाड़ लोक-परिषद् का आन्दोलन कुछ ऐसा तीव्र हो गया कि वह सामन्तशाही के साथ बराबर सफल मोर्चा लेती रही और अन्त में मार्च १९४२ के उत्तरदायी शासन के मोर्चे में भी वह सफल हुई। यद्यपि राज्य की ओर से शासन सुधारों के तरह-तरह के जाल रचे गये, परन्तु व्यास जी अपने लक्ष्य से तब तक विचलित नहीं हुए, जब तक कि राज्य में लोकप्रिय मंत्रिमंडल गठित करके शासन सूत्र उसके हाथ में सौंप नहीं दिये गये। उस लोकप्रिय मन्त्रि-मण्डल के मार्ग में भी तरह-तरह की अड़चनें डाली गईं। उसका मुख्य कारण यह था कि केन्द्र से भेजे गये श्री पी० एस० राव अपने को 'दीवान' समझकर अपनी मनमानी चलाते थे और व्यास जी उनकी मनमानी चलने नहीं देते थे। वे व्यास जी के विरुद्ध केन्द्र के कान भरते रहते थे। दूसरी ओर राजपूतों में यह धारणा पैदा कर दी गई थी कि राज्य की सत्ता उनके हाथ से निकली जा रही है। वे खुले विद्रोह पर उतर आये। चौपासनी विद्यालय राजपूतों का अपना विद्यालय था। उसको व्यास जी के मन्त्रिमण्डल ने सार्वजनिक रूप देने का निश्चय किया, तब उसको राजपूती विद्रोह का केन्द्र बना दिया गया। राज्य की सेना में प्रायः शत-प्रतिशत राजपूत ही थे। उन सब में भी विद्रोह की भावना भर दी गई। उस समय हम लोगों ने व्यास जी के नेतृत्व में जिस दृढ़ता और दूरदर्शिता से काम लिया, उससे उस विद्रोह को पनपने से पहले ही दबा दिया गया। नीमच से सेना बुलानी पड़ी और लगभग चार हजार राजपूतों को गिरफ्तार भी करना पड़ा। व्यास जी के साथ मैं और मथुरादास माथुर दोनों मन्त्रिमण्डल में शामिल थे। इसलिए राज-पूतों ने हम तीनों को ही अपने रोष, असन्तोष तथा विद्रोह का निशाना बनाया। राजपूतों ने अपने इस विद्रोह को 'सत्याग्रह' का नाम दिया था। उस विद्रोह को दबा देना बहुत बड़ी सफलता थी। लेकिन श्री पी० एस० राव ने हम लोगों के

विरुद्ध केन्द्र में विशेषतः सरदार पटेल के मन में जो दुर्भावनाएं पैदा कर दी थीं, उनकी कीमत हम तीनों को जनवरी, १९५० के जोधपुर के मुकदमे के रूप में चुकानी पड़ी। उस विकट संकट में भी व्यास जी ने जिस धीरता, वीरता, गम्भीरता और दृढ़ता का परिचय दिया, उसकी तथा उसके वाद की भी, व्यास जी की कहानी सर्वविदित है। इतना ही लिखना पर्याप्त होना चाहिए कि मैंने एक साथी के रूप में व्यास जी को जितना अधिक निकट से देखा उतना ही मेरा स्नेह विश्वास में और विश्वास श्रद्धा में परिणत होता गया। आधी सदी से भी अधिक समय तक उनका साथी वना रहना मैं अपना परम गौरव मानता हूं और उसके लिये मुझे वास्तविक गर्व है।

१८
प्रेरणा स्रोत

श्री अमरसिंह जी चतुर्वेदी, एडवोकेट, भरतपुर (राजस्थान)

व्यास जी से पहली मुलाकात दिल्ली में सत्रह-अठारह साल पहले हुई थी। उस समय व्यास जी अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद् के महामन्त्री थे। उन दिनों मैं भरतपुर राज्य की नौकरी छोड़कर 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के सम्पादकीय विभाग में काम करने लगा था। डा० पट्टाभि सीतारमैया तथा श्री जयनारायण व्यास से मेरी मुलाकात अक्सर और आये दिन भरतपुर की समस्याओं को लेकर ही होती थी। वास्तविक वात यह है कि उन दोनों का घर मेरे लिये अपने जैसा ही था। जव कभी सरदार पटेल से सुवह छह वजे मिलने की जरूरत होती, तव मैं रात को व्यास जी के यहां ही सो जाता था। यदि पलंग न होता तो हम दोनों ज़मीन पर ही सो जाते थे। मुझे व्यास जी हमेशा एक सहृदय साथी ही मालूम हुए। वह एक विषय पर काफी देर तक वातें नहीं करते थे। वीच में अक्सर छोटी-मोटी इधर-उधर की वातचीत भी हो जाती थी।

१९४७ में जव भरतपुर में राजनीतिक आंदोलन हुआ और साथी जेल के सींखचों में वन्द कर दिये गये तो दिल्ली में प्रचार का काम मेरे जिम्मे पड़ा। तव व्यास जी से मुझे हर प्रकार की सहायता मिली। उसी सिलसिले में सरदार पटेल से पहली मुलाकात भी व्यास जी और श्री जुगलकिशोर चतुर्वेदी के साथ हुई थी। वम्वई से अंग्रेजी दैनिक 'फ्री प्रेस जनरल' जव देशी राज्यों से सम्वन्धित एक अतिरिक्त अंक निकालने लगा, तो उन अंकों में मेरे और व्यास जी के काफी लेख

राजस्थान के सम्वन्ध में निकले। हम दोनों अपने-अपने लेख एक-दूसरे को दिखा लेते थे।

जब व्यास जी जोधपुर वहां के प्रधानमन्त्री होकर चले गये तब सम्पर्क उनसे कुछ कम हो गया। मैं भी मत्स्य संघ बनने के बाद भरतपुर और अलवर में रहने लगा। जब राजस्थान का निर्माण हुआ और पं० हीरालाल जी शास्त्री प्रथम मुख्य मन्त्री बने, तो व्यास जी और श्री माणिकलाल जी वर्मा का दल अविश्वास की तैयारी में लग गया। उस समय मैं भी राजस्थान प्रदेश कांग्रेस का एक सदस्य था। अविश्वास का प्रस्ताव पेश होने से एक दिन पहले जयपुर के एक होटल में मीटिंग हुई। उसमें करीब अस्सी सदस्य मौजूद थे। उन सभी ने उस प्रस्ताव पर दस्तखत कर दिये थे। वर्मा जी ने उस प्रस्ताव पर दस्तखत करने के लिये मुझसे भी कहा। मैंने जब उस पर दस्तखत करने से इनकार करते हुए कहा कि जब प्रस्ताव मीटिंग में आयेगा तब मैं अपना निर्णय करूंगा, तो उदयपुर के एक सदस्य ने मुझसे कुछ शब्द व्यंग्य में कहे। उस समय व्यास जी मुझको एक तरफ ले गये और बड़े प्रेम से अपनी बात समझाई। व्यास जी की विशेषता यह थी कि वह अपने विरोधियों के प्रति भी बातचीत में आत्मीयता और सहृदयता रखते थे।

वह सिद्धान्तवादी होते हुए भी भोले व सरल थे। राजनीतिक जीवन के प्रारम्भ से लेकर सन् ५४ तक, जब तक वे सत्ता से हटा नहीं दिये गये, हर साथी पर विश्वास करते रहे। जीवन के अन्तिम दिनों में कई साथियों द्वारा जिनको उन्होंने सत्ता की सीढ़ी पर चढ़ाया था, धोखा खाने के बाद वे बहुत दुःखी रहने लगे थे। वे स्वाभिमानी थे और अकड़ उनमें कूट-कूटकर भरी थी। वे अपने स्वाभिमान की रक्षा करने के लिये हर प्रकार का कष्ट सह सकते थे। वे सत्ता के सामने झुकना अपनी शान के खिलाफ समझते थे। इसकी अनेक मिसालें दी जा सकती हैं कि उन्होंने संकट के समय अपनी मस्ती, प्रसन्न मुद्रा और अकड़ को नहीं त्यागा। वे देश के उन थोड़े लोगों में थे जो जीवन में संघर्ष करने वालों के लिये प्रेरणा का स्रोत बने रहे। वे उन इने-गिने नेताओं में से थे जो भले थे, ईमानदार थे और कठिनतम परिस्थितियों से जूझने वाले साथियों और कार्यकर्त्ताओं के लिये प्रकाशपुंज थे। इतिहास इसका साक्षी है कि वहां व्यक्ति साधारण लोगों के लिये रास्ता दिखाने वाला बना है, जिसने अपने उसूलों तथा सिद्धान्तों को घोर संकट में भी नहीं त्यागा। इस दृष्टि से व्यास जी ऐतिहासिक पुरुष थे। राजस्थान के इतिहास में वे हमेशा अमर रहेंगे।

१९

अजमेर जेल में उनके साथ

श्री रतनलाल अग्रवाल, १८६, लेडी जमशेदजी रोड, बम्बई-१६

अजमेर जेल में श्री जयनारायण व्यास से मेरा पहला सम्पर्क हुआ था। वहां हम गाया करते थे कि—

"शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।"

यतीन्द्र, भगतसिंह और आज़ाद आदि शहीदों के खून का दाग अंग्रेजी राज्य के दामन पर अभी ताज़ा ही था। मेरे दिमाग में तो जेल ही उनकी स्मृति का केन्द्र-स्थल आज भी बना है।

व्यास जी विचित्र मानसिक सम्मिश्रण थे। आधारभूत अधिकारों का गांधी और नेहरू का प्रस्ताव कराची कांग्रेस में स्वीकृत हो चुका था। अजमेर जेल में कुछ प्रगतिवादी साथी भी थे। जेल के बाहर तो अधिकारों अथवा समाजवाद का नाम लेने पर ढाई वर्ष की सजा होती थी। कुछ लोगों का विचार हुआ कि क्यों न यहां समाजवाद का अध्ययन प्रारम्भ किया जाय। व्यास जी का हंसमुख और भव्य व्यक्तित्व अपने पिछले कार्यों और अनुभव की गरिमा में मचल उठा। बोले, "भई खूब कहा, अरे, अवश्य प्रारम्भ करो, यहां से आगे और कहां ले जायगी सरकार।" फिर क्या था, स्वामी कुमारानन्द जी तो तैयार थे ही, समाजवादी राष्ट्र-निर्माण की चर्चा का दैनिक कार्यक्रम प्रारम्भ हो गया।

◇ ◇ ◇

किसी बेवकूफ अथवा नीच खुशामदी मजिस्ट्रेट ने नौ छोटे-छोटे बच्चों को नौ-नौ बेंत की सजा सुनाकर जेल भेज दिया था। उनमें से कोई भी दस वर्ष से ऊपर नहीं था। वे तब सात और नौ वर्ष के बीच में ही थे। कसूर भी उनका इतना ही था कि वे टोली बना राष्ट्रीय झण्डा ले सरकार विरोधी नारे लगाते घूम रहे थे। जेल के चौक में टिकटी लगी। शायद उस मजिस्ट्रेट ने समझा होगा कि स्कूल जैसे नौ-नौ बेंत हाथों पर लगा दिये जायंगे। यदि वह जेल की भयंकरता जानता था तो अवश्य ही दुधमुहों के खून का प्यासा था। एक बत्तीस वर्ष का पट्ठा जवान सोलह में से नौ बेंत खाकर ही बेहोश हो गया था। टिकटी पर पहले बच्चे को बिल्कुल नंगा करके कस दिया गया। चमड़े के पट्टों से हाथ-पैर और कमर टिकटी पर बांध दिये गये। उस समय हम सबको बैरकों में बन्द कर दिया गया था। व्यास जी बैरक के दरवाजे पर सींकचों से चिपके खड़े थे। हमारा वार्डर जरा दूर बाहर चौक में खड़ा धीरे-धीरे संजय का काम कर रहा था। उसने कहा, "अब पड़ा बेंत, और तुरन्त गूंजा स···र···र···स्···ट। साथ ही एक नन्हीं आवाज़

'इन्कलाब जिन्दावाद'। मैं भी वहां व्यास जी के पास ही था, व्यास जी आंसू वहा रहे थे। हाथ मल रहे थे। वार्डर ने कहा, अरे उसकी तो गर्दन लटक गई। उसे खोलकर टांग घसीट कर बाहर फेंक दिया गया। अब कसा गया दूसरा लड़का। वही स···र्र···र्र···स्···ट और दूसरी नन्ही आवाज़ 'इन्कलाब जिन्दावाद'। गर्दन लटक गई और इसके वाद तीसरा..."

व्यास उछल पड़े, आंसू गायब थे, शेर पिंजड़े में दहाड़ रहा था, "यह नहीं चलेगा। हम इस सरकार को मटियामेट कर देंगे।"

इस प्रकार वारी-वारी नौ के नौ वच्चे कसे गयें, गर्दनें लटकती गईं, टांग घसीट कर फाटक के बाहर फेंके जाते रहे। नन्ही आवाज़ में इन्कलाबी नारे गूंजते रहे। हम सभी का खून उवाल खाता रहा। हम सब भी इन्कलावी नारे लगा रहेथे सारी जेल नारों से गूंज उठी।

वार्डरों को हुक्म हुआ, बन्द करो इनको। जेलर उबल पड़ा, रात के नौ बजे कमिश्नर के बंदूकधारी गोली चलाने आये। बैरक के दरवाजे के सींकचों में होकर वन्दूकें पैरों पर तान दी गईं। कुछ आसमानी फायर किये गये तो गम्भीरता का सूत्रपात हुआ। दूसरे दिन हम सौ कैदी जिन्होंने नारे लगाने का दम भरा छोटे-छोटे लोहे के पिंजरों में बन्द कर दिये गये और व्यास जी उसमें सबसे आगे थे।

सेवा भाव तो कूट-कूटकर भरा था उनमें। जेल का भोजन यों ही रद्दी होता है, परन्तु राजनीतिक बन्दियों के लिये उसे और भी रद्दी बना दिया जाता है। सुरेरियों से भरी काली-काली दाल, मरी मक्खियां और रेत से भरी रोटियां वे भी कच्ची। मिर्च इतनी कि कइयों को बवासीर हो गई। साग में एक बिलांद लम्बे डंठल और दुर्गन्ध। व्यास जी ने जेलर से कहकर एक टोली वनाई और रसोई का सारा काम अपने जिम्मे ले लिया। पूरी मशक्कत करनी पड़ती थी। सारे कांग्रेसियों की रोटी वनाना और बांटना। पर व्यास जी ने हँसते हँसते सब किया।

◇ ◇ ◇

एक साथी के साथ सहानुभूति के लिये सभी कांग्रेसी कैदियों ने एक वक्त उस दिन दोपहर का भोजन छोड़ने का जेलर को नोटिस दे दिया। आशा थी शाम को तो भोजन रोज की तरह मिलेगा ही। परन्तु नहीं दिया गया। सव अपने-अपने तसले, कटोरी उठाकर पिंजड़ों में चले गये। शायद कोई भूल हो गई होगी। परन्तु दूसरे दिन, तीसरे दिन भी किसी प्रकार का भोजन नहीं आया। कलेवे के चने भी नहीं। व्यास जी वौखला उठे। वावा नृसिंह दास और कुमारानन्द जी भी उबल पड़े। हमारे बैरक में हम लोग वड़े थे। अस्सी वड़े कैदी पिंजड़ों में और बीस छोटे वच्चे थे काल कोठरियों में। बच्चे वहुत घवड़ा रहे थे। व्यास जी ने क्रान्ति और क्रान्तिकारियों के किस्से कहकर सवको मानसिक आहार दिया। वड़े ही नहीं वच्चे

भी उस पांच दिन की थोपी हुई भूख हड़ताल को पार कर गये। यों एक इमली का पौधा साफ कर दिया गया था। कुछ पीपल और नीम भी खा डाले थे।

◇ ◇ ◇

मैं एक-दो अन्य साथियों के साथ बैरक के सींकचों से बाहर चौक में देख रहा था। बहुत से साधारण कैदी जोड़े-जोड़े बैठे थे। हरलाल नामक एक डिप्टी जेलर था, हट्टा-कट्टा, एकदम जवान, भारी बूट पहने। जेल की चाबियों का बहुत भारी गुच्छा हाथ में। देखा तो एक मिनट में कूद कर उन कैदियों के सिरों व कन्धों पर नाचने लगा। ऊपर-ही-ऊपर इस छोर से उस छोर तक। व्यास जी जरा ही दूर पर कुछ व्यस्त से खड़े थे। मैं बोला, "व्यास जी जरा कलियुगी नाग नाथ की लीला तो देख लीजिये।" ओहो, त्योरियां चढ़ गई, शेर दहाड़ा, डिप्टी साहब आप आदमी नहीं जानवर हैं। अंग्रेजी राज हमेशा नहीं रहेगा। तुम्हारा दिल भी गुलाम है। परन्तु पिंजड़े के शेर की परवाह किसने की है।

◇ ◇ ◇

फिर सम्पर्क हुआ व्यास जी से बम्बई में। भारत में छह सौ से अधिक देशी राज्य थे। आज जब कोई अखण्ड भारत की बात करता है तो उसका ध्यान पाकिस्तान की ओर होता है। परन्तु सन् १९३५ में पाकिस्तान नाम का एक बंगला बम्बई में जुहू तट पर अवश्य था। व्यास जी स्वयं एक देशी रियासत की तानाशाही और पिछड़ेपन के शिकार थे। उनको मिलाकर भारत एक और अखण्ड बन जाय, यह उनका सबसे बड़ा स्वप्न था। नेहरू जी ने एक अमरीकी पत्रिका 'एशिया' में लिखा था कि कोई नेता देश को अपनी चाल से नहीं चला सकता। उसे जनता की चाल में चलना पड़ता है। जितनी तेज चाल वह चल सके। इसी प्रकार की विचारधारा के अनुसार व्यास जी अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद् के जागरूक कार्यकर्त्ता रहे थे, अक्सर उसके प्रधान मन्त्री ही। उनकी मांगें भी देशी राज्यों को मिटा देने की नहीं, उत्तरदायी शासन की थीं। सिर्फ उसी से प्रेरित होकर उन्होंने बम्बई से 'अखण्ड भारत' दैनिक-पत्र निकाला था १९३५में। वैलिंगडन के दमन के बावजूद सत्याग्रह १९३४ तक चलता रहा था, पूना समझौता हो चुका था। साम्प्रदायिक बटवारे का निर्णय भी ब्रिटिश प्रधान मन्त्री मैकडॉनाल्ड दे चुके थे। प्रान्तीय स्वराज्ज और भारतीय संघ योजना के प्रश्न जोरों पर थे। 'अखण्ड भारत' का शंखनाद जो रणभेरी का अगला रूप लेकर आया तो अंग्रेज सहम गये। व्यास जी की जेब खाली थी और छपाई तक के लिये पैसे न थे। परन्तु उनमें साहस कमाल का था। साहस की पूंजी के सहारे ही उन्होंने उसको शुरू किया था। मेरे पत्रकार जीवन का श्रीगणेश 'अखण्ड भारत' में व्यास जी के सान्निध्य में ही हुआ था। काशी विद्यापीठ का स्नातक होने के नाते राजनीतिक मामलों में कुछ जागरूक अवश्य था। अन्तर्राष्ट्रीय पृष्ठ मैं ही बनाता था। सर-

कार का एक भेदिया एक दिन आ पहुंचा। मुझे ही उसके साथ भिड़ा दिया गया। 'अखण्ड भारत' के राष्ट्रीय आन्दोलन और जन-शक्ति के प्रभाव का जो चित्र मैंने उस भेदिये के सामने खींचा उससे व्यास जी बहुत प्रसन्न हुए। 'अखण्ड भारत' की धूम मच गई थी। कुछ ही दिनों के बाद बम्बई में भयंकर हिन्दू-मुस्लिम दंगा करा दिया गया। अंग्रेजों के लिये यह भारतीय अखण्डता ही तो थी।

◇ ◇ ◇

वे जोधपुर राज्य के प्रधान मन्त्री हुए। एक बार बम्बई दौरे पर आये, मोटे आसामियों से घिरे व्यास जी अपने स्तर के साथियों की नमस्ते तक नहीं ले सके। वे लोग घेरे ही रहे। जब गद्दी से हट कर फिर बम्बई आये तो चमकीले लोग गायब थे। पुराने साथियों ने ही चने कुरमुरे से उनका स्वागत किया। उनके उद्गार थे—"यही तो असली स्वागत है रमणलाल जी। इसी में मुझे अपनापन लगता है।"

राजस्थान बनने पर मुख्य मन्त्री हुए, तो फिर बम्बई आये, भारतीय विद्या-भवन चौपाटी में स्वागत हुआ। धूल के फेंके हुए रोड़े को फिर चमकीलों ने कुर्सी पर टांग कर घेर लिया। मुझे किसी प्रकार उन्हें नमस्ते कहने का मौका मिल गया, बिलकुल उनके पास जाकर। खाली मार्ग की ओर मुझे बुलाकर इशारे से कहा, "देखा रमणलाल जी गद्दी फिर पुज रही है।" परन्तु व्यास जी तो धूल के फूल थे। मिट्टी में ही उनकी जड़ें थीं। मखमल पर वे जी न पाये और जनता-जनार्दन ने अपने बीच फिर उनका स्वागत किया।

कौन नहीं जानता उस शेक्सपीयर को जो फ्रांस की राज्य क्रांति के लिये अथक परिश्रम करता रहा। महान् रूसो आदर्शों की स्थापना के लिये लड़ता रहा पर उसी को गुलौटीन पर चढ़ा दिया गया। हमारे १८५७ के स्वतन्त्रता-संग्राम में हमीं में से कुछ भाइयों ने अंग्रेज आततायों के चन्द टुकड़ों के लिये स्वतन्त्रता के सेनानियों को भून डाला था। महात्मा गांधी से बढ़कर राष्ट्र की सेवा किसने की और हम कृतघ्नों ने उन्हीं के सीने में गोली दाग दी। बड़े भक्त थे व्यास जी उस डेढ़ पसली के पहलवान के। वे रो दिये थे। और कौन नहीं रोया। परन्तु अब मैं कहता हूं उस महात्यागी राष्ट्रीय फकीर जयनारायण व्यास को क्या हमने ही मिटने को मजबूर नहीं कर दिया। व्यास जी तिल-तिल करके शहीद हुए।

चलिये गायें—"शहीदों की चिताओं पर···"

२०

इकत्तीस-वत्तीस वर्ष का घनिष्ट सम्बन्ध

श्री गोपीकृष्ण विजयवर्गीय, संसद सदस्य, इन्दौर (म० प्र०)

मेरा पहला घनिष्ट परिचय व्यास जी से १६३२ में अजमेर जेल में हुआ। तब राजस्थान और मध्यभारत के कार्यकर्त्ता अजमेर अथवा व्यावर आकर ही सत्याग्रह में भाग लिया करते थे और सबको अजमेर जेल में रखा जाता था। उसका सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि अलग-अलग देशी राज्यों में काम करने वालों में परस्पर घनिष्ट परिचय हुआ, भाईचारे की भावना जागृत हुई और देशी राज्यों में काम करने की सामूहिक दृष्टि भी पैदा हुई। व्यास जी के कारण जेल जीवन बड़े ही आमोद-प्रमोद में बीता और हम सबको उनसे कुछ सीखने का भी अवसर मिला। व्यास जी के नेतृत्व में मनोरंजन के कार्यक्रमों के साथ-साथ लेखन, भाषण तथा कविता पाठ आदि का क्रम भी नियमित रूप से चलता था। व्यास जी की कविताओं का खूब रंग जमता था। समाजवादी विचार-धारा के प्रशिक्षण का कार्यक्रम विशेष रूप से शुरू किया गया था। मुझे भी व्यास जी की ही तरह 'सी' श्रेणी में रखा गया था। इसलिये मेहनत-मजदूरी का काम भी मुझे उनके जैसा ही दिया जाता था। एक ही शेड में चक्की लगाने का काम व्यास जी को और मुझे पूरे एक महीने के लिये दिया गया था। रसोई में भी मैंने उनके साथ काम किया था। इस प्रकार उनके साथ मेरा सम्बन्ध बहुत घनिष्ट बन गया था।

हम दोनों की अजमेर जेल से रिहाई १६३३ में एक ही दिन एकसाथ हुई। वह जेल से छूटकर जोधपुर चले गये और मैं ग्वालियर चला आया। अजमेर जेल यात्रा का लाभ यह मिला कि हम लोगों का राजनीतिक दृष्टिकोण कुछ व्यापक बना। मैंने समाजवादी विचारधारा को स्वीकार कर उज्जैन, इन्दौर, तथा व्यावर के मजदूरों में काम किया।

देशी राज्यों में काम करने वालों में एक बड़ा असंतोष यह घर किये हुआ था कि कांग्रेस ने उनके प्रति तटस्थ नीति अपना कर हमारा भाग्य देशी नरेशों की निरंकुशता अथा स्वच्छन्दता पर छोड़ दिया था। व्यास जी की ही तरह मैं भी इस पर असन्तुष्ट था। अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् का ध्यान भी तब तक उत्तर भारतीय देशी राज्यों की ओर जैसा चाहिए वैसा आकर्षित न हुआ था। इसलिए १६३२ में राजस्थान और मध्य भारत के कार्यकर्त्ताओं में जो बन्धु भाव पैदा हुआ था, उसका एक शुभ परिणाम यह हुआ कि हम सब संयुक्त मोर्चा सा बनाकर काम करने लग गये थे। अजमेर जेल के बाद व्यास जी बम्बई से अखंड भारत निकालने लग गये थे। वह डेढ़ वर्ष बाद बन्द हो गया। तब व्यास जी फिर व्यावर लौट आये। मैं भी कुछ समय बाद व्यावर में मजदूरों में काम करने चला

आया।। व्यास जी और मैं तथा कुछ अन्य साथी भी ब्यावर में एक ही मकान में एक साथ रहते थे। सबकी रसोई भी इकट्ठी बनती थी। व्यास जी, कांग्रेस की राजनीति में विशेष दिलचस्पी लेते थे। ब्यावर में उनकी स्थिति इतनी दृढ़ थी कि अजमेर के कुछ कांग्रेसी साथी उनसे प्रतिस्पर्धा करने लग गये थे। १९३७ के अंतिम दिनों में ब्यावर में जिस अजमेर, मेरवाड़ा राजनीतिक सम्मेलन का आयोजन किया गया था, व्यास जी उसके स्वागत मंत्री और मैं स्वागत उपमंत्री था। फिर भी उनका अधिक समय देशी राज्यों के ही काम-काज में बीतता था। मुझे अच्छी तरह याद है कि हरिपुरा कांग्रेस तक हम लोग देशी राज्यों के प्रति कांग्रेस की रीति-नीति के संबंध में बड़े चिंतित रहा करते थे। इसलिए हरिपुरा से ठीक पहले नवसारी में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् की ओर से जो सम्मेलन हुआ था उसमें मुख्यतः, इसी विषय पर चर्चा हुई थी कि कांग्रेस के अधिवेशन में क्या रुख अपनाया जाय। उस सम्मेलन में राजस्थान और मध्य भारत के कार्यकर्त्ता इतनी अधिक संख्या में उपस्थित हुए थे कि हमारी उपेक्षा संभव न रही थी। किसी प्रश्न पर हम सब संयुक्त रूप में सम्मेलन से उठकर चले आये थे। तब डा० पट्टाभि की मध्यस्थता से समझौता हुआ और अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद् की रीति-नीति में ऐसा परिवर्तन हुआ कि हम उस पर छा गये। नेता जी सुभाषचन्द्र बोस की देशी राज्यों की जनता के साथ कुछ अधिक सहानुभूति थी। इस कारण, कांग्रेस को हरिपुरा में अपने रुख में कुछ परिवर्तन करना आवश्यक हो गया। हमने उसको अपनी पहली विजय माना था। व्यास जी के मैं जितना अधिक निकट संपर्क में आया उतना ही उनकी सरलता, मिलनसारिता, दृढ़संगठन शक्ति और प्रभावशाली व्यक्तित्व आदि गुणों से प्रभावित होता गया।

१९४२ के अगस्त आन्दोलन में ग्वालियर में गिरफ्तार होने के बाद मुझे कुछ साथियों के साथ शिवपुरी जेल में रखा गया था। १९४३ में हम सब रिहा कर दिये गये थे। किन्तु व्यास जी और जोधपुर के उनके अन्य साथी वहां की जेलों तथा किलों में नज़रबन्द थे। महात्मा गांधी की प्रेरणा पर बाबू श्रीप्रकाश जी ने १९४२ में जोधपुर जाकर जो समझौता करवाया था, वह अधिक दिन नहीं निभ सका था। जेल से छूटने के बाद मुझे यह आवश्यक प्रतीत हुआ कि मैं जोधपुर जाकर कोई बीच का रास्ता निकालूं। मैं वहां गया। श्री धर्मनारायण तथा श्री ईश्वर भाई त्रिवेदी आदि अधिकारियों से मिला। बीजोलाई तथा दौलतपुरा आदि किलों में नजरबन्द व्यास जी तथा उनके साथियों से मिला। उस समय तो समझौते का कोई रास्ता न निकल सका। परन्तु निराश न हो मैंने अधिकारियों के साथ पत्र व्यवहार जारी रखा। मेरा ख्याल है कि उसका लाभ इतना अवश्य हुआ कि व्यास जी को सुलह समझौते की वार्ता के लिये जोधपुर बुलाया गया। अन्त में प्रयत्न सफल हुए। १९४५ में व्यास जी अपने साथियों के साथ रिहा किये गये।

बड़ौदा के श्री मुधालकर को राज्य के लिये शासन सुधार योजना तैयार करने का जो काम सौंपा गया था, वह भी कुछ दूरगामी सिद्ध नहीं हुआ। श्री मुधालकर ने बहुत बड़ी भूल यह की कि मारवाड़ लोकपरिषद् को अपने विश्वास में नहीं लिया। मुझे इस समझौता वार्ता के लिये दो बार जोधपुर जाना पड़ा। मैं ग्वालियर राज्य सार्वजनिक सभा का अध्यक्ष था। उस स्थिति से मैंने कुछ लाभ उठाया।

यह भी एक कैसा सुयोग था कि मैं और व्यास जी दोनों ही संसद में राज्य सभा के लिये चुने गये। तब उनके साथ राजस्थान और मध्यभारत की राजनीतिक स्थिति के बारे में प्रायः चर्चा होती रहती थी। मैं उनकी दृढ़ता पर मुग्ध था। वह सहज में कोई धारणा नहीं बनाते थे, परन्तु जो धारणा बना लेते थे उससे उनको विचलित कर सकना आसान न होता था। मुझे वह प्रसंग अच्छी तरह याद है, जब मैंने एक बार उनसे दोनों राज्यों की स्थिति के बारे में प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू से मिलने का अनुरोध किया। उन्होंने बड़ी ही दृढ़ता से मुझे स्पष्ट कह दिया कि मिलने से कोई लाभ न होगा। मैं उनसे पत्र-व्यवहार करके और अनेक मामलों में तार तक देकर थक चुका हूं। मैं इतना निराश हो चुका हूं कि उनसे मिलना भी मुझे अनावश्यक प्रतीत होता है। अब तो उनको पत्र तक लिखना भी मुझे बेकार मालूम होता है। आश्चर्य नहीं कि हममें से कइयों का ऐसा ही अनुभव हो, परन्तु अपने अनुभव को इतनी दृढ़ता तथा स्पष्टता से प्रकट करने का साहस करने वाले कितने हैं? यह दृढ़ता व्यास जी की अपनी ही अनोखी विशेषता थी।

उनकी अन्तिम बीमारी के दिनों में भी मैंने उनको कई बार देखा। कई बार मैं अस्पताल गया। मूर्च्छावस्था से ठीक पहले भी उनके दर्शन किये थे। मैं आज जब उनको याद करता हूं तो इकत्तीस-बत्तीस वर्षों के लम्बे घनिष्ट सहवास की अनेक स्मृतियां ताजा हो जाती हैं और तरह-तरह की अनुभूतियां जगाकर रह जाती हैं। उन सरीखा साथी पाना दुर्लभ है।

२१

गांधी जी और व्यास जी

वैद्य संत लाडूराम जी, संचालक, राजस्थान ग्रामोत्थान केन्द्र, जोधपुर (राजस्थान),

"जननि दान दे, स्वाभिमान दे।
तेरी नित रहे तान, वही गान दे॥

तन में बल मन निश्छल, सगुण सकल यत्न सफल।
अचल सुदृढ़ निश्चय दे, हृदय विमल दे ॥ जननि ॥
भाव दीजै गम्भीर, बनें सकल धीर वीर।
तेरी अनुरक्ति भक्ति, धवल ध्यान दे ॥ जननि ॥
स्वाभिमान हम न तजें, तदपि रहें निरभिमान ॥
त्याग तप सहिष्णुता, बलिदान ज्ञान दे ॥ जननि ॥
तेरे पद शीश धरें, अर्पण सर्वस्व करें।
तेरे हित जिये मरें, विजय मान दे ॥ जननि ॥"

यह थी कविता श्री जयनारायण जी व्यास की, जो मैंने १९३२ में महात्मा गांधी को सुनाई थी और जिसको मैं प्रतिदिन प्रार्थना के रूप में दुहराता हूं।

मेरे पिता श्री चुन्नीलाल जी जैन स्थापत्य कला में विशेष ख्याति रखते थे। सौराष्ट्र में श्री आनन्द जी कल्याण जी की पीढ़ी की ओर से सूरत, भड़ौंच, बाड्ली तथा नवसारी आदि में जैन मन्दिरों के निर्माण और जैन मूर्तियों की स्थापना के लिये उन्होंने विशेष नाम पैदा किया था। यहां तक कि लोग उनको और उनके ही कारण मुझको भी गुजराती ही मानने लग गये थे। १९३२ में जब महात्मा जी को यह पता चला कि मैं गुज़रात का नहीं, किन्तु मारवाड़ का निवासी हूं, तब उन्होंने मुझे यह कहा कि राजपूताने के देशी राज्जों में श्री जयनारायण व्यास ऐसे कार्य-कर्त्ता हैं जो अपनी जान की बाजी लगाने को तैयार हैं। उनमें अपनी मातृभूमि के लिये सच्चा प्रेम है। तुमको मारवाड़ जाकर उनके साथ कांम करना चाहिए। पूज्य महात्मा जी के इस परामर्श पर मैं गुजरात से मारवाड़ चला आया और मैंने व्यास जी के साथ मिलकर काम करना शुरू कर दिया। मेरे हृदय पर गांधी जी के परामर्श और व्यास जी के सम्बन्ध में उनकी सम्मति का ऐसा गहरा असर पड़ा कि मैं आजीवन उनका साथी बना रहा। यदि उनका मुख्य कार्य क्षेत्र राजनीति था, तो मेरा था ग्रामोत्थान और हरिजन-सेवा।

उनके साथ मिलकर मैंने जो अनेक काम किये उनमें बावरी, मेघिया, सांसी, कंजर, मेड़ा और भील आदि किसान जातियों को जरायम—पेशा-कानून से मुक्ति दिलाना मुख्य था। व्यास जी के परामर्श से मैं ठक्कर बापा तथा माता रामेश्वरी जी नेहरू से दिल्ली आकर मिला। उन्हीं की मार्फत मैं तत्कालीन विधिमंत्री डाक्टर भीमराव अम्बेडकर और राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी से भी मिला। धीरे-धीरे वह आन्दोलन भारत-व्यापी बन गया। मैंने उन दिनों में अनुभव किया कि पद दलित अस्पृश्य ठहराई गई जातियों के लिये व्यास जी के हृदय में कितना स्थान था। वह उसको मानवीय अपराध और समाज के माथे पर एक बड़ा कलंक मानते थे।

दूसरे बड़े जिस काम में व्यास जी के सहयोग से मैं सफल हो सका, वह था नांगल भाखड़ा नहर की खुदाई के लिये मारवाड़ से पटियाला ले जाये गये दो हज़ार मज़-

दूरों की वापसी। वहां के ठेकेदार उन मजदूरों को सरसब्ज बाग दिखाकर वहां ले गये थे। वहां उनका बुरी तरह शोषण करते थे। उनके पास घर भेजने को तो क्या, अपने भरण-पोषण के लिये भी एक पैसा तक न बचता था और वे हमेशा ठेकेदारों के कर्जदार ही बने रहते थे। कर्ज के चक्रव्यूह में उनको इसलिये फंसाया गया था कि वे काम छोड़कर वापस लौटने की बात तक न सोच सकें। व्यास जी से पत्र लेकर मैं कुछ अधिकारियों तथा कांग्रेसी नेताओं से भी मिला। व्यास जी के ही उद्योग से दो हज़ार मजदूरों के वापस लाने के लिये रेलभाड़े का भी प्रबन्ध किया। बड़े लम्बे संघर्ष के बाद उसमें सफलता मिल सकी। तब मैंने अनुभव किया कि शोषित व पीड़ित की सेवा के लिये व्यास जी किस प्रकार चिंतित और प्रयत्नशील रहते थे।

ऐसी ही कुछ घटनाओं के कारण मेरे हृदय में व्यास जी के प्रति वह भावना प्रबल होती गई जो महात्मा गांधी के शब्दों से मेरे हृदय में पैदा हुई थी। मैं उनको गांधी जी के ही समान सच्चा, ईमानदार, बलिदानी और दरिद्रनारायण का पुजारी मानने लग गया था। इसी कारण जब जोधपुर में उन पर १९५० में मुकदमा चलाया गया और उन पर कुछ ऐसे आरोप लगाये गये, जिनसे उनकी सचाई व ईमानदारी पर दाग लगता था, तब मुझे असह्य वेदना हुई। मैं इतना परेशान हो गया कि मेरे लिये खाना, पीना और सोना दूभर हो गया। मैं रात-दिन इसी चिन्ता में डूबा रहता कि उस मुकदमे का अंत कैसे हो। उसके लिये जो प्रयत्न मैंने किये उनकी कहानी बहुत लम्बी है। जयपुर और दिल्ली कई बार जाकर मैंने हर किसी से मिलने की कोशिश की। अन्त में व्यास जी को श्री हीरालाल शास्त्री से मिलाने में सफल हुआ। यह कहना तो कठिन है कि मेरी दौड़-धूप का क्या परिणाम निकला; परन्तु मुझे इससे बड़ा सन्तोष मिला। व्यास जी के उस मुकदमे से बेदाग छूटने और राजस्थान के मुख्यमंत्री के पद पर प्रतिष्ठित किये जाने से मुझे जो प्रसन्नता हुई उसका वर्णन मैं शब्दों में नहीं कर सकता। उनके सम्बन्ध में पूज्य बापूजी के शब्द जब मुझे याद आते हैं तब बरबस मेरे मुख से ये शब्द निकल पड़ते हैं कि वह राजस्थान का गांधी था और गांधी जी ने ही उसके हृदय की तड़पन को अनुभव किया था।

२२

अजमेर जेल और उसके बाद

श्री चिरंजीलाल जी शर्मा, खादी बोर्ड, जयपुर (राजस्थान)

श्री जयनारायण व्यास के साथ अन्य अनेक साथियों की तरह मेरा भी पहला परिचय सन् १९३२ में अजमेर जेल में हुआ था। उसी जेल में तब राजस्थान और मध्यभारत के विभिन्न राज्यों के कार्यकर्त्ता एक-दूसरे से परिचित हुए थे। व्यास जी ऐसे हँसमुख, विनोदप्रिय और मिलनसार साथी थे कि उनके पास रहने वाला कोई भी व्यक्ति उदास या मायूस न रह सकता था। जेल में दो तरह के सत्याग्रही आये थे। एक वे जो केवल गांधी के नाम से प्रभावित थे और दूसरे वे जो राजनीतिक विचारधारा को समझते थे। व्यास जी की यह धारणा थी कि चाहे किसी भी कारण सत्याग्रही जेल आया हो; किन्तु जेल से छूटने के बाद हरएक को अपने राज्य में अच्छा व प्रभावशाली कार्यकर्त्ता बनना चाहिए। इसलिए वह हर किसी की पूरी जानकारी लेते थे और उसके अतीत एवं भावी जीवन की पूरी छानबीन करते थे। जेल में उन्होंने सबके प्रशिक्षण की भी तरह-तरह की व्यवस्था की थी। समाजवादी विचारधारा और पत्रकारिता के प्रशिक्षण का प्रयोग सबसे अधिक सफल रहा। राजनीतिक जागृति और देश-सेवा की धुन उन्हें दिन-रात लगी रहती थी।

हम लोग जब अजमेर जेल में थे, तब ही बीकानेर में षड्यन्त्र का मुकदमा शुरू हो चुका था। जेल में उसके समाचार पाकर व्यास जी चिन्तित हो गये थे। इसलिए बाहर आते ही उन्होंने तुरन्त बीकानेर के उस मुकदमे पर ध्यान दिया। बीकानेर के सम्बन्ध में उन्होंने दो पुस्तिकाएं तैयार करवाई थीं। पहली पुस्तिका वहां के शासन के सम्बन्ध में थी, जो गोलमेज सम्मेलन के अवसर पर लन्दन भेजी गई थी और दूसरी मुकदमे के सम्बन्ध में थी। यदि मैं भूलता नहीं तो उसकी भूमिका भाई सत्यदेव जी विद्यालंकार ने लिखी थी।

अजमेर जेल से छूटकर जब मैं करौली पहुंचा तो मुझे गिरफ्तार करके करौली जेल में रखा गया। पांच मास बाद छोड़ा गया। बात यह थी कि विभिन्न राज्यों के कार्यकर्त्ताओं ने जब अजमेर जाकर सत्याग्रह करना शुरू किया, तब राजपूताना के ए० जी० जी० ने सब राज्यों को एक सर्क्यूलर भेजकर यह लिखा कि उन्हें अपने यहां के लोगों पर निगरानी रखनी चाहिए और उनको अजमेर जाने से रोकना चाहिए। मुझे इसी कारण जेल में बन्द रखा गया था कि मैं दुबारा अजमेर जाकर सत्याग्रह न करूं। इसका एक कारण और भी था; वह यह कि अजमेर से आते हुए मैं अपने साथ गांधी जी के हरिजन-उपवास के सम्बन्ध में प्रकाशित कुछ परचे ले आया था। उनमें अस्पृश्यता निवारण के लिये अपील के सिवाय कुछ और न

था। परन्तु करौली राज्य के लिये वे परचे भी कुछ कम भयावह न थे। जेल से छूटने के बाद मैं काफी समय अजमेर, जयपुर और शेखावाटी आदि स्थानों में रहा। व्यास जी के सम्पर्क में बराबर आता रहा।

१९४४ की एक घटना का उल्लेख पाठकों के लिये मनोरंजक होगा। तब बीकानेर प्रजामण्डल को गैरकानूनी ठहराकर श्री रघुवरदयाल जी गोयल को लूणकरणसर में एक घर में नजरबन्द का दिया गया था। नागौर में राजस्थान के प्रमुख नेता विचार-विनिमय के लिये इकट्ठे हुएं। यह विचार किया गया कि रायबहादुर शिवरतन जी मोहता की मार्फत बीकानेर में कुछ भी बचाव किया जाय। उसके लिये श्री गोयल जी से मिलना आवश्यक समझा गया। मुझे कहा गया कि मैं लूणकरणसर जाकर उनके विचार और समाचार लाऊं। वैसे बीकानेर राज्य में खादीधारी के लिये जाना बड़ी टेढ़ी खीर थी। व्यास जी ने मुझे अपना लोहारू का अनुभव बताया और मैं जाट का छद्म वेश धारण कर वहां रात को १ बजे पहुंचा। वहां से सब समाचार लाकर व्यास जी को दिये। उन्होंने मुझे अपनी कामयाबी पर दाद दी और मेरा हौसला बढ़ाया।

करौली में यद्यपि जन-आन्दोलन कुछ उग्ररूप धारण नहीं कर सका; फिर भी प्रजामण्डल का संघर्ष किसी न किसी रूप में चलता ही रहा। भरतपुर के श्री युगलकिशोर जी चतुर्वेदी की अध्यक्षता में उसके एक सम्मेलन का भी आयोजन हुआ। देश की स्वतन्त्रता के साथ-साथ देशी राज्यों की भी हवा बदली। राजस्थान पर उसका विशेष प्रभाव पड़ा। अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली को मिलाकर जब मत्स्य संघ बनाने की चर्चा नई दिल्ली में शुरू हुई होगी तब व्यास जी ने मुझे संविधान परिषद् के लैटर हैड पर केवल तीन पंक्तियों का इस आशय का यह पत्र लिखा कि, जी चाहता है कि बधाई दूं; पर ज़रा ठहरकर। मत्स्य संघ बना और उनकी बधाई सार्थक हो गई। मुझे उसके मन्त्रिमण्डल में शामिल किया गया। यह व्यास जी की कृपा का प्रसाद था। उन दिनों की एक विनोदपूर्ण घटना भी मैं यहां लिख दूं। उन्होंने एक बार अलवर आने से पहले अपने ठहरने के बारे में लिखा कि मैं ऐसे मित्र के यहां ठहरूंगा जिसकी नई शादी हुई हो, जिसका मकान स्टेशन के पास हो और उसका मुख्य द्वार पूरब दिशा की ओर हो। हम लोगों में आपस में उस पत्र की बड़ी चर्चा रही। जब वे पधारे तो मेरे यहां आ पहुंचे। उनका वह विनोद मेरे एक और साथी पर भी लागू होता था। यह था उनका आत्मीय व्यवहार अपने साथियों के प्रति।

व्यास जी उस राजनीति में विश्वास नहीं रखते थे, जिसमें रचनात्मक कार्य के लिये स्थान न हो। वह रचनात्मक कार्य का अर्थ करते थे—'अभावग्रस्त जनता की सेवा'। इसी दृष्टि से उन्होंने मारवाड़ खादी संघ का गठन किया था और उसको स्थायी रूप देने के लिये एक लाख इक्कीस हज़ार की एक विशाल

इमारत का सौदा भी कर लिया था। जैसलमेर क्षेत्र में भी उन्होंने रचनात्मक प्रवृत्तियों का शुभ श्रीगणेश किया था। राजस्थान के मुख्य मन्त्री की हैसियत से, जब उद्योग विभाग भी उनके हाथ में था, उन्होंने खादी बोर्ड का १९५३-५४ में गठन अर्द्ध सरकारी संस्था के रूप में किया था। किन्तु बाद में उसको पूरी तरह सरकारी संरक्षण में ले लिया। कताई, बुनाई और खादी बिक्री के क्षेत्र में बोर्ड बड़ा ही सराहनीय काम कर रहा है। उसकी प्रवृत्तियां सारे राजस्थान में फैली हुई हैं। खादी ग्रामोद्योग संस्था संघ को प्रभावशाली बनाने में व्यास जी ने जो सहयोग दिया, वह चिरस्मरणीय रहेगा। रचनात्मक प्रवृत्तियों में लगे कार्यकर्त्ताओं में व्यास जी सर्वाधिक प्रिय थे और उनकी सम्मति सदा आदेश के रूप में स्वीकार की जाती थी।

२३
बलिदान के वे दिन

श्री भंवरलाल जी सराफ, जोधपुर (राजस्थान)

जोधपुर में धीरे-धीरे जो राजनीतिक जागृति पैदा हुई उसने १९१९ की दिवाली के शुभ पर्व पर मूर्तरूप धारण किया। उस दिन दोपहर को गोवर्द्धन जी के मन्दिर में मारवाड़-सेवा-संघ की स्थापना की गई। संघ के संस्थापकों में सर्व श्री दुर्गाशंकर जी श्रीमाली, कन्हैयालाल जी अग्रवाल, जयनारायण जी व्यास और मैं मुख्य थे। उस दिन वहां ही व्यास जी से मेरा पहला परिचय हुआ और वह उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया। मेरी दुकान समाचार-पत्र पढ़ने के बहाने राजनीतिक चर्चा का केन्द्र बन गई। व्यास जी भी वहां नियमित रूप से आने-जाने लगे। पुलिस ने हमारा पीछा करना शुरू किया। १९२२ में जो दूसरा सार्वजनिक कदम उठाया गया, वह था 'मारवाड़-हितकारिणी-सभा' की स्थापना। वस्तुतः 'मारवाड़-सेवा-संघ' और 'मारवाड़-हितकारिणी-सभा' को ही जोधपुर में राजनीतिक जीवन पैदा करने का श्रेय है। समय-समय पर उसकी ओर से जो आंदोलन उठाये गये उन आंदोलनों का अन्तिम परिणाम यह हुआ कि अक्तूबर १९२९ में व्यास जी, देश-भक्त श्री आनन्दराज जी सुराणा और मुझ पर नागौर किले में राजद्रोह तथा षड्यंत्र के मुकदमे चलाये गये। उनका नाटक इस भयानक रूप में रचा गया, जैसे कि हम लोगों ने राज्य को ही पलट देने का कोई गुप्त षड्यन्त्र रचा हो। व्यास जी तथा सुराणा जी को आसौज सुदी तीज को गिरफ्तार किया गया और दस दिन बाद

दशहरे के दिन मुझे भी गिरफ्तार कर लिया गया। व्यास जी को दौलतपुरा और सुराणा जी को गिराव किले में रखा गया। वहां पीना सांप के कारण सुराणा जी जब बीमार पड़ गये तब उनको सिवाणा किले में लाया गया। विजयादशमी के दिन हम तीनों को मेड़ता रोड में लाकर नागौर किले में पहुंचा दिया गया। मुझे व्यक्तिगत रूप से उस मुकदमे का इतना काम मिला कि मैं व्यास जी का राजनीतिक क्षेत्र में एक अन्यतम साथी बन गया और उनकी हर प्रवृत्ति में हाथ बटाने लग गया। १६४५ तक मैंने हर बार उनके साथ जेल काटी और मेरा सराफे का पैतृक कारोबार राजनीतिक आन्दोलन के कारण चौपट हो गया। व्यासजी जिन दिनों में ब्यावर रहे, मेरा मुख्य काम यह था कि मैं जोधपुर के समाचार ब्यावर और ब्यावर के जोधपुर लाकर दिया करता था। आज जब मैं उन दिनों की याद करता हूं तो मुझे व्यास जी की सूझ-बूझ, साहस तथा कष्ट सहिष्णुता आदि याद करते रोमांच हो आता है। वे कैसे दिन थे जब हम सिर हथेली पर रख बड़े से बड़ा बलिदान करने को तैयार रहते थे।

२४

राजस्थान के आदर्शनिष्ठ महान् सेवक

श्री रामनिवास जी शर्मा, ब्यावर (राजस्थान)

श्रद्धेय व्यास जी के साथ मेरा पारिवारिक परिचय तब हो गया था, जब उनके पिता ब्यावर मे कृष्णा मिल्स में काम करते थे। मेरे बुआ के लड़के भी वहीं काम करते थे। दोनों में काफी मेल-जोल और एक-दूसरे के यहां आना जाना भी था। व्यास जी के साथ व्यक्तिगत परिचय १६३१ में हुआ, जब वे जेल से गांधी इरविन समझौते में रिहा किये जाने के बाद कराची कांग्रेस से लौटने पर मारवाड़ राज्य से निर्वासित किये गये थे और ब्यावर आकर रहने लग गये थे। कांग्रेस के काम-काज में उनकी विशेष रुचि थी और मारवाड़ प्रजा परिषद् का काम भी निरन्तर करते रहते थे। परिषद् का एक कार्यालय कांग्रेस के ही कार्यालय में अजमेर और ब्यावर दोनों स्थानों में कायम था। उसी की ओर से पुष्कर के मेले पर २४-२५ नवम्बर १६३१ को मारवाड़ राज्य सम्मेलन का आयोजन अजमेर के सुप्रसिद्ध नेता कुंवर चांदकरण जी शारदा की अध्यक्षता में किया गया था और उसी अवसर पर माता कस्तूरबा गांधी की अध्यक्षता में अजमेरमेरवाड़ा राजनीतिक सम्मेलन का आयोजन भी किया गया था। मारवाड़ राज्य परिषद् के सम्मेलन में कुछ उपद्रवियों ने काफी

गड़बड़ की थी और व्यास जी पर भी लाठियां चलाई थीं। जोधपुर के सी० आई० डी० आफीसर श्री नेकीराम पर भीड़ टूट पड़ी, तो अपनी जान पर खेलकर व्यास-जी ने उस समय कहा कि "पहले मैं मरूंगा, तब उसका बाल बांका हो सकेगा।"

जून १९३२ में मैं भी गिरफ्तार किया गया और तेरह मास की सजा देकर अजमेर जेल भेज दिया गया; वहां व्यास जी के साथ सम्पर्क और अधिक सुदृढ़ बन गया। जेल में डेढ़ सौ सत्याग्रही और छह सौ साधारण कैदी थे। सबके सब व्यास जी की बात को जेल अधिकारियों के हुक्म से भी कहीं अधिक महत्त्व देते थे। जेल में व्यास जी ने चक्की चलाने, पानी भरने और सारे कैदियों की रोटी बनाने आदि का कठोर-से-कठोर काम भी हँसते-खेलते और गाते हुए किया; हालांकि हाथों व कन्धों पर मोटे-मोटे छाले पड़ जाते थे। जेल में उनका यह गीत हम सभी गाया करते थे :

पांव में हों जंजीरें, हाथों में हथकड़ियां।
मातृभूमि पर बलि होने की देख रहा घड़ियां।
देख-देख मां दशा तुम्हारी, मेरी आंखों से,
मोती सदृश टपक पड़ीं आंसू की लड़ियां।
मेरा रोना भी न सुहाया,
अत्याचारी को इसीलिए चहुं-
ओर खड़ी हैं लोहे की छड़ियां।
पर न मातृभू चिन्ता करना हूं सच्चा बेटा तेरा,
बंधा हुआ भी मैं तोडूंगा तेरी कड़ियां।

उनकी यह प्रार्थना भी जेल में बड़ी लोकप्रिय थी :

हे प्रभु अशरण शरण ज्ञान हमको दीजिये।
हम निर्बलों को दिव्य बल हे सबल सक्षम कीजिये।
लीजिये हमको शरण में हम देश सेवारत रहें।
देश हित दुःख के प्रहारों को सुमन सम सब सहें।
स्वार्थ में बीते न क्षण परमार्थ जीवन सार हो।
सोते सजग हर दशा में मम विषय देशोद्धार हो।
सेवाव्रती बन कर सभी हम भक्ति अधिकारी बनें।
ब्रह्मचारी धर्म रक्षक वीर व्रत धारी बनें।
टल जायं अखिल विन्ध्य हिम गिरि पर न हम पीछे हटें।
कर जायं तिल-तिल मुहित हो सन्मार्ग पर जब हम डटें।
यह है तभी सम्भव प्रभु जब तव कृपा की कोर हो।
विश्वरूप विराट् के कर विश्व शासन डोर हो।

ब्यावर में सबसे पहला सम्मेलन १ जनवरी, १९३४ को 'जन्मभूमि' के संचालक-सम्पादक श्री अमृतलाल सेठ की अध्यक्षता में देशी राज्य लोकपरिषद् के नाम से किया गया। इसमें प्राय: सभी राज्यों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद के मन्त्री श्री मनीशंकर त्रिवेदी विशेष रूप से पधारे थे।

१९३४ के अक्तूबर मास में बम्बई के वर्ली क्षेत्र में कांग्रेस का जो ऐतिहासिक अधिवेशन राजेन्द्र बाबू की अध्यक्षता में हुआ, उसके बाद व्यास जी ने वहां से दैनिक 'अखंड भारत' निकलना शुरू किया और मुझको उसका राजस्थान में प्रचार करने का काम सौंपा गया। 'अखंड भारत' खूब लोकप्रिय हुआ। परन्तु प्राय: सभी राज्यों में प्रवेश निषेध और प्रबन्ध व्यवस्था में साथियों के विश्वासघात के कारण वह चल न सका। व्यास जी फिर ब्यावर लौट आये और १९३६ में उन्होंने मारवाड़ी भाषा में पाक्षिक 'आगीवाण' निकालना शुरू कर दिया। यहां १९३६ के अन्तिम दिनों में व्यास जी के ही परिश्रम से राजपूताना मध्य भारत राजनीतिक सम्मेलन बड़ी सफलता से श्री भूलाभाई देसाई की अध्यक्षता में किया गया। मैं व्यास जी के साथ स्वागत के मंत्रिमण्डल में शामिल था। १९३८ में मारवाड़ राज्य में भयानक दुर्भिक्ष पड़ा। व्यास जी ने मारवाड़ राज्य प्रजामण्डल की ओर से राहत कार्य संगठित किया। यहीं से वह आन्दोलन शुरू हुआ समझना चाहिए, जिसने १९४० और ४२ में उत्तरदायी शासन आन्दोलन का प्रचण्ड रूप धारण कर लिया। चार वर्ष तक आन्दोलन का संचालन प्राय: ब्यावर से ही होता रहा। मैंने उसमें व्यास जी का पूरा हाथ बंटाया। जोधपुर में सत्याग्रह शुरू होने पर अनेक जत्थे ब्यावर से भेजे गये। उनमें श्री नैनूराम खंडेलवाल और श्रीमती महिमादेवी किंकर के नेतृत्व में भेजे गये जत्थे विशेष उल्लेखनीय हैं।

हम लोग आदोलन का संचालन जिस ढंग से किया करते थे, उसको स्पष्ट करनेवाली एक घटना का यहां उल्लेख कर दूं, भारत सरकार ने अजमेर मेरवाड़ा के ७०-७५ गांव उदयपुर और २८ गांव जोधपुर में मिला देने का गुप्त षड्यन्त्र रचा। हमने उसका इस रूप में पर्दाफाश किया कि वाइसराय और जोधपुर राज्य में परस्पर हुआ पत्र व्यवहार प्रकाशित कर दिया। इस पर चारों ओर बड़ी खलबली मच गई। पुलिस ने उसका भेद जानने के लिये कांग्रेस कार्यालय और व्यास जी तथा मेरे मकान की ठीक दिवाली के दिन सवेरे ५ बजे तलाशी ली। परन्तु उसके हाथ कुछ न लगा। दिल्ली और जोधपुर के अधिकारी हाथ मलते रह गये।

व्यास जी के स्वाभिमान को प्रकट करनेवाली एक घटना भी यहां लिख दूं। राजस्थान संघ के उद्घाटन के अवसर पर जयपुर महाराज ने अपने भाषण में जयपुर की अधिष्ठातृ देवी का जो उल्लेख किया था, उसपर अपना विरोध प्रकट करते हुए ब्यावर से सरदार पटेल को एक जोरदार पत्र लिखा। उनके विरोध के

दो मुख्य आधार थे। एक तो यह कि सभी राज्यों में इस प्रकार की देवियों की मान्यता पाई जाती है और सभी राज्यों के स्वेच्छापूर्ण विलीनीकरण से राजस्थान संघ का निर्माण हुआ है। संघ के राजप्रमुख के भाषण में केवल एक ही राज्य की देवी का उल्लेख किया जाना उचित नहीं था। फिर, धर्मनरपेक्ष राष्ट्र के ऐसे महत्त्वपूर्ण प्रसंगों पर संकीर्ण साम्प्रदायिक एवं धार्मिक भावनाओं का उल्लेख किया जाना कैसे उचित माना जा सकता है। आदर्शवाद की दृष्टि से व्यास जी पूर्णतः सिद्धांतवादी थे और उनको उसमें किसी प्रकार का समझौता स्वीकार न था। अपने राजनीतिक जीवन में भी उन्होंने समझौतावादी मनोवृत्ति से काम नहीं लिया। उनके जीवन में जो असफलताएं दीख पड़ती हैं, उनका यही मुख्य कारण रहा था।

उनके घरेलू तथा पारिवारिक जीवन की जितनी जानकारी मुझे है, उतनी बहुत ही कम साथियों को होगी। मैंने उनको कभी भी आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न नहीं देखा। फिर भी सुख सन्तोष और शान्ति की दृष्टि से मैंने उनको कभी विचलित नहीं पाया। व्यावर में तो उन्होंने पूरी फाकामस्ती में ही दिन विताये और सदा मस्तमौला बने रहे। यहां तक कि अपनी पत्नी भौजी साहिवा और बच्चों के कपड़े खुद नदी पर ले जाकर धोने में उन्हें कभी संकोच नहीं हुआ। अपनी पत्नी को इसीलिए 'अन्नपूर्णादेवी' कहा करते थे कि उनके ही कारण घर में कभी अभाव जन्य स्थिति पैदा हुई दीख नहीं पड़ी। अपने स्वीकृत आदर्श के लिये कभी किसी का लिहाज उन्होंने नहीं किया।

उनकी वड़ी लड़की का विवाह उनके पिताजी ने उनकी इच्छा के विरुद्ध करना तय कर लिया। दोनों में विवाह की आयु के सम्बन्ध में मतभेद था। वे स्वयं उसमें शामिल नहीं हुए और मुझ सरीखे मित्रों को भी शामिल नहीं होने दिया। उनके अन्यतम मित्र वलून्दा के सेठ छगनलाल जी मूथा विवाह हर दस हजार रुपया तक खर्च करने को तैयार थे। व्यास जी ने उनको कहलवा भेजा कि यदि वे एक पैसा भी खर्च करेंगे, तो आपस के सारे सम्बन्ध समाप्त हो जायेंगे। ज़ोधपुर के दीवान और राजस्थान के मुख्यमंत्री वनने पर अपने सगे सम्बन्धियों तथा मित्रों को इतना दूर रखा कि किसी को सन्देह तक पैदा होने का अवसर नहीं दिया। उनके अनेक मित्र इसी कारण उनसे नाराज रहे। उन दिनों उन्हें १५-१५; २०-२० दिन तक अपनी पत्नी, घरवालों तथा मित्रों से वात करने का मौका न मिलता था।

राजस्थान के मुख्यमंत्री के पद को छोड़ने के वाद उनको हिमांचल प्रदेश का उपराज्यपाल का पद देने का प्रस्ताव किया गया और इसी प्रकार के अन्य प्रस्ताव भी उनके सामने रखे गये। उनके स्वीकार न करने का मैंने एक वार उनसे कारण पूछा, तो वे वड़ी दृढ़ता से वोले कि राजस्थान के वाहर जाकर कोई ऊंचा पद स्वीकार करने की अपेक्षा कांग्रेस के कार्यालय अथवा राजस्थान के किसी नगर के

चौराहे पर झाड़ू लगाने या सफाई करने में अपना गौरव समझूंगा। मुझे किसी पद की अपेक्षा ग्रामीण स्तर पर साधारण कार्यकर्त्ता बनने में कहीं अधिक सुख अनुभव होगा। आज भी जब मैं उनके ये शब्द याद करता हूं, तो मेरा हृदय गद्गद हो जाता है।

प्रकरण ३

स्वभाव

१

मस्तमौला

शिक्षा मंत्री, श्री हरिभाऊ जी उपाध्याय, जयपुर (राजस्थान)

यह मैं अपना दुर्भाग्य ही समझता हूं कि अपने छोटे भाई श्री जयनारायण व्यास के संस्मरण मुझे लिखने पड़ रहे हैं। हमारे वस में होता, तो हम उन्हें कभी अपने में से अलग नहीं होने देते। उनके राजनीतिक जीवन पर तो लिखने वालों की कमी नहीं है। उनका वह जीवन खुली पुस्तक के समान सब के सामने है। मैं उनके मस्तमौला जीवन से बहुत अधिक प्रभावित हुआ हूं। अपने सब साथियों में अपेक्षाकृत उनकी आर्थिक स्थिति सम्भवतः सबसे अधिक कमज़ोर थी और घर-गृहस्थी का भार भी कुछ कम न था। फिर अपने निजी जीवन अथवा घर-गृहस्थी की समस्याओं में न उलझकर उन्होंने सदा अपने को लोक-सेवा के सार्वजनिक जीवन में ही लगाये रखा। कभी कोई भार अनुभव नहीं किया और अपने साथियों पर भी यह प्रभाव नहीं पड़ने दिया कि उनको किसी प्रकार की विषम कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। इसीलिये तो उन जैसा खुश मिजाज़ नेता राजस्थान के राज-नीतिक क्षेत्र में दूसरा मिलना मुश्किल है। खुश मिजाज कोई मिल भी जाय, तो उन जैसा वीर, गम्भीर, साहसी, सिद्धान्त की खातिर वड़ों-वड़ों से टक्कर लेने वाला फिर भी मन में मलिनता न रखने वाला, सांसारिक, पारिवारिक जीवन के प्रति लापरवाह मस्तमौला तो वह एक ही थे। उनके इन स्वभाव सिद्ध गुणों की तरंगें हर किसी को सदा ही प्रेरित करती रहेंगी। मैं उनके उस मस्तमौला जीवन की ही कुछ आपवीती घटनाएं लिख रहा हूं।

वहुत पुरानी वात है कि हम लोग एक वार हरद्वार की यात्रा पर गये। मेरे साथ परिवार के सभी लोग थे। व्यास जी अकेले ही थे। लौटते हुए गाड़ी में भीड़ इतनी थी कि वड़ी मुश्किल से सवार हुआ जा सका। घरवालों को तो किसी प्रकार नीचे की सीटों पर विठा दिया गया। मेरे लिये और व्यास जी के लिये नीचे

पैर रखने तक को स्थान न रहा। तब व्यास जी बोले कि दा साहब, अपने को तो अब छत पर ही लटकना होगा। यह कहकर वे ऊपर की सीट पर रखे सामान को इधर-उधर खिसकाकर उसी में किसी प्रकार जमकर बैठ गये और मेरे लिये भी ऊपर की सामने की सीट पर रखे सामान को इधर-उधर करके किसी प्रकार बैठने की जगह बना ली। हम दोनों के लिये जगह इतनी ही थी कि बिना हिले-डुले जमकर बैठे रह सकते थे। कुछ सहारा लेना होता, तो हम दोनों को सामने पैर पसार कर एक-दूसरे की सीट का ही सहारा लेना पड़ता था। मैंने व्यास जी से कहा कि आपको आसानी से दूसरे किसी डिब्बे में कुछ खुली जगह मिल सकती है। उन्होंने तपाक के उत्तर दिया कि नरक में अपने साथियों के साथ जो सुख है, वह स्वर्ग में अकेले कहां नसीब हो सकता है। उन्होंने सारी रात उसी तरह बैठे हँसी-मजाक में ऐसे बिता दी जैसे कि कोई कष्ट ही न हो...छोटे-छोटे चुटकुले सुनाकर मनोरंजन करने और सबको हँसाकर लोट-पोट करने की कला में व्यास जी अद्भुत चातुर्य रखते थे। उन्होंने सारी रात उसी चातुर्य का प्रदर्शन किया।

◇ ◇ ◇

बम्बई में मैं उनके साथ ठहरा हुआ था। सिनेमा जगत मे उनकी मुझसे कहीं अधिक पहुंच थी। संगीत, नृत्य नाटक आदि में उनकी दिलचस्पी मुझसे कहीं अधिक थी। मेरी दिलचस्पी तो श्रोता अथवा दर्शक तक ही सीमित थी। वे तो इन कलाओं में पूर्ण दक्षता रखते थे। एक दिन उन्होंने प्रस्ताव किया कि चलो, दा साहब आपको सिनेमा चित्रों का शूटिंग दिखाया जाय। मेरे लिये तब तक शूटिंग का अर्थ गोली चलाने से कुछ अधिक न था। सिनेमा चित्र के साथ 'शूटिंग' शब्द का प्रयोग सुन मेरी दिलचस्पी कुछ ऐसी बढ़ी कि मैंने व्यास जी से अनुरोध करके उसको देखने के लिये कार्यक्रम स्थिर करवाया। उन दिनों आजकल की तरह शूटिंग का न तो आम रिवाज था और न उसके लिये इतनी कम्पनियां ही थीं। बम्बई शहर से काफी दूर शूटिंग हुआ करता था। एक दिन व्यास जी के साथ शूटिंग देखने पहुंच गया। दो-तीन घंटे तक हम लोग शूटिंग देखते रहे। एक ही सीन को ठीक करने में दो घण्टे से भी अधिक लग गये। कलाकार की जरा-सी भूल पर सारा रिहर्सल फिर दुबारा किया जाता और उसी की पुनरावृत्ति में सारा समय बीत गया। व्यास जी के लिये यह सब भी बड़ा दिलचस्प था, परन्तु मेरे पल्ले कुछ न पड़ा। मैं तो यह कहते हुए वहां से उठा कि "क्या समझे, यही समझे, क्या खाक समझे।" बात यह थी कि कलाकार की भूल पर उससे काम लेने वाला मास्टर उसकी भूल पर बार-बार यही शब्द दुहराता था और उनको सुनते-सुनते मेरे कान पक गये थे।

रात को दो बज गये। वहां से लौटे तो कोई सवारी नहीं मिली। पैदल चलकर जैसे-तैसे अपने स्थान पर पहुंचे। रास्ते में व्यास जी मुझे कलाकार और अपने को मास्टर बनाकर मेरे साथ यही विनोद करते आये कि "क्या समझे, यही

समझे, क्या खाक समझे।" कई दिनों तक यह शब्द आपसी विनोद के निमित्त बने रहे।

◇ ◇ ◇

भरतपुर में वहां प्रजामण्डल की कार्य समिति की बैठक थी। व्यास जी के साथ मैं भी पहुंचा। भरतपुर के नेता तब जेल में थे। इस कारण भी हम दोनों का वहां पहुंचना आवश्यक था। वहां का काम निपटाने के बाद हम दोनों गोवर्द्धन का पूर्णिमा का मेला देखने पहुंचे। गोवर्द्धन के इस मेले की चर्चा तो बहुत सुन रखी थी; परन्तु हम दोनों में से किसी ने भी उसको देखा न था। वहां चैतन्य सम्प्रदाय के लोगों की जो भजन मण्डली निकलती थी, उसको 'बुड़िया' कहा जाता था और उस पर कीर्तन सुनने वालों की भीड़ टूटी पड़ती थी। हम एक जगह जमकर बैठ गये। कीर्तन का दृश्य बड़ा ही मनोरंजक था। मण्डली के सब कीर्तनकार सिर मुंडाकर उसमें शामिल होते थे। व्यास जी ने उसमें इतना रस लिया कि मुझे वे बार-बार कहते कि, अपने को बुड़िया बनकर उसमें शामिल होना चाहिये।

मुझे उसमें कुछ भी रस मालूम न हुआ और उतना समय बिताना मेरे लिये मुसीबत बन गया। घाव पर नमक छिड़कने वाली दुर्घटना यह हुई कि रात को सोलह-सत्रह मील का रास्ता तय करके मथुरा पहुंचने के लिये सवारी मिलनी मुश्किल हो गई। काफी रास्ता पैदल तय करना पड़ा। मेरे जूते का एक कील पैर में चुभने लगा तो जूते भी हाथ में उठाने पड़े। यदि कहीं वह सारी मुसीबत मुझ अकेले को झेलनी पड़ती, तो निश्चय ही रास्ता तय करना गोवर्द्धन का पर्वत ही बन गया होता। परन्तु व्यास जी ने गोवर्द्धन को भी मानो अपनी अंगुली पर उठा लिया और मेरी यात्रा की सारी मुसीबत हलकी कर डाली। कुछ दूरी पर आकर एक तांगा मिला तो वह भी लचर-पचर चलने वाला और सवारियों से लदा हुआ। फिर भी दो-दो रुपये लेकर हम दोनों को बिठाने पर सहमत हो गया। व्यास जी ने कहा दा साहब जान बची लाखों पाये। चलो आज इसी तांगे की सवारी नसीब में लिखी है। हँसते-खेलते व्यास जी ने मुसीबत भरा वह रास्ता तय कर दिया। मथुरा स्टेशन पहुंचकर बड़े ही विनोद में बोले चलो नरक का रास्ता तय हुआ और अब रेल पर सवार हो स्वर्ग की यात्रा करेंगे। विषम से विषम परिस्थिति में भी अपने को अनुकूल बनाकर हँसमुख बने रहना व्यास जी खूब जानते थे। अपने साथियों को भी वे किसी मुसीबत का कोई भार महसूस नहीं करने देते थे।

◇ ◇ ◇

धौलपुर की एक मनोरंजक घटना का यहां और उल्लेख कर दूं। राजनीतिक आन्दोलनों में कभी-कभी टेढ़ी उलझनें पैदा हो जाती थीं और उनको सुलझाना बड़ा कठिन हो जाता था। ऐसा ही एक टेढ़ा प्रसंग हम दोनों के लिये धौलपुर में उपस्थित हुआ था। वहां हाउस टैक्स लगाया गया था। उसके विरुद्ध सत्याग्रह

करने का वहां के मकान-मालिकों ने निश्चय किया। कुछ मकान-मालिक आगरा कांग्रेस कमेटी के पास पहुंचे। भाई जगनप्रसाद जी रावत ने मुझको और व्यास जी को आग्रहपूर्वक आगरा बुलाया। व्यास जी किसी भी आन्दोलन का संचालन करने में चतुर माने जाते थे और मुझे सत्याग्रह का विशेषज्ञ माना जाता था।

उन दिनों हम लोग आन्दोलन शुरू करने और सम्भव हो, तो सत्याग्रह छेड़ने की टोह में रहा करते थे। रियासतों में ऐसे मौके हाथ लगना प्रायः दुर्लभ ही होता था। इसलिए धौलपुर में आन्दोलन एवं सत्याग्रह का अवसर उपस्थित होता देख हम दोनों को बड़ी प्रसन्नता हुई। हम दोनों ने दो-तीन दिन लगाकर सारी स्थिति का अध्ययन किया और धौलपुर वालों को सत्याग्रह के पक्ष-विपक्ष समझाकर उसके लिये तैयार किया। हम दोनों ही जानते थे कि धौलपुर के मकान-मालिक कितने पानी में हैं और सत्याग्रह के लिये उन पर निर्भर नहीं रहा जा सकता। इसलिए तय यह हुआ कि सत्याग्रह के लिये धौलपुर के जत्थों के साथ आगरा के भी दो-एक सत्याग्रही भेजे जायं। व्यास जी ने मुझे कहा कि मैं तो बल से काम लूंगा, आप थोड़ा अकल से काम लीजिये। उनका तात्पर्य यह था कि वे वहां रहकर सत्याग्रह का संचालन करेंगे और मैं महाराज को एक पत्र लिखकर सुलह समझौते का मार्ग निकालने की कोशिश करूं। मैंने महाराज को एक पत्र लिखा और वहां से चला आया। सत्याग्रह शुरू होते न होते धौलपुर वालों के पैर उखड़ने शुरू हो गये। व्यास जी के लिये बड़ी ही प्रतिकूल स्थिति पैदा हो गई। इसी बीच महाराज का समझौते की बातचीत करने के लिये पत्र मिल गया। व्यास जी ने सारी स्थिति की जानकारी देते हुए मुझे एक पत्र लिखा और तुरन्त धौलपुर पहुंचकर महाराज से बातचीत शुरू करने का अनुरोध किया। समस्या हल हो गई। व्यास जी प्रायः यह कहा करते थे कि "बल से तो काम नहीं हुआ, अकल से हो गया।" अपने साथियों के बीच बैठकर भी वे कभी-कभी कुछ विनोद में और कुछ गम्भीरता में अपने बल की असफलता और मेरी अकल की सफलता की यह कहानी अपने ही ढंग से सुनाया करते थे। उनके साथ काम करने के ऐसे अनेक विनोद भरे प्रसंग उपस्थित हुए होंगे।

वे जब किसी काम में जुट जाते थे तो सब कुछ भूल जाते थे। यही उनकी सफलता का रहस्य था। मस्तमौलापन उनका इसी में था कि वे किसी भी काम को भारी न मानते थे और 'असम्भव' शब्द तो नेपोलियन बोनापार्ट की तरह उनके शब्दकोश में था ही नहीं। वे उसके ही समान वीर, धीर, गम्भीर, साहसी और पुरुषार्थी थे। कभी भी किसी भी मोर्चे पर उन्होंने पीठ न दिखाई थी।

२
उनकी जिन्दादिली

श्री मुकुटविहारी जी वर्मा, भूतपूर्व प्रधान सम्पादक दैनिक 'हिन्दुस्तान' नई दिल्ली

श्री जयनारायण व्यास के रूप में राजस्थान ने एक ऐसा व्यक्ति खोया है, जो शासन में चाहे पटु न रहा हो पर जहां भी रहा अपने आस-पास ज़िन्दादिली का वातावरण वनाये रखने में कभी असफल नहीं रहा।

व्यास जी से मेरा सम्पर्क काफी पुराने समय से रहा है और अभिमान न समझा जाय तो कह सकता हूं कि लिखित रूप में उनके सुनिश्चित भविष्य की कल्पना सम्भवतः मैंने ही सबसे पहले की थी, जब सन् १६३४ में दिल्ली में हुए अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद के व्यक्तित्वों की चर्चा करते हुए १२ फरवरी, १६३४ के दैनिक 'अर्जुन' में एक लेख में मैंने लिखा था :

"इसके (श्री अमृतलाल सेठी के) वाद जो व्यक्तित्व अपनी ओर बरबस हमें खींचता है वह है भाई जयनारायण व्यास का। जहां दूसरों से काम लेने में श्री सेठ की कुशलता की छाप पड़ी वहां खुद काम करने में जयनारायण जी ने कमाल किया। उनकी कर्मण्यता, चुस्ती और कार्यकुशलता किसी भी नौजवान के लिये भारी ईर्ष्या की चीज़ थी। प्रेरणा श्री सेठ की थी किन्तु कर्तृत्व बहुत कुछ जयनारायण जी का था।

"अधिवेशन के भाषणों में जहां राजस्थान का शेर (पथिक जी) कुछ मुरझाया हुआ मालूम हुआ, यह तरुण सामने आ रहा था।"

अखबारी व्यक्ति और जन सेवक

अखबारी जीवन मेंने मैं उनसे पहले प्रवेश किया था, 'वीर दुर्गादास' में लेखक के रूप में जब उनका नाम सामने आया, उस समय मुझे कई साल इस जीवन में प्रवेश किये हो चुके थे और 'राजस्थान केसरी' वर्धा, 'आज' काशी तथा 'प्रणवीर' नागपुर में काम करने के बाद राजस्थान सेवा संघ के 'तरुण राजस्थान' में मैं काम कर रहा था। अजमेर प्रदेश कांग्रेस पर जिसमें उस समय अजमेर मेरवाड़ा के ब्रिटिश प्रान्त के अलावा राजस्थान, मध्य भारत व बुन्देलखण्ड के देशी राज्य भी शामिल थे; श्री अर्जुनलाल जी सेठी के वाद श्री हरिभाऊ जी उपाध्याय के पक्ष का वर्चस्व होने पर उसकी जो कार्यकारिणी वनी उसमें व्यास जी के साथ मैं भी सदस्य था। उस समय मैं 'त्यागभूमि' का काम करता था और व्यास राजस्थान सेवा संघ के विघटन के वाद उसके मुख पत्र 'तरुण राजस्थान' को सम्भाल रहे थे।

स्वतंत्रता संघर्ष के दिनों की स्थिति आज से वहुत भिन्न थी, सीधे संघर्ष में जो लोग थे, वे तो जनसेवक थे ही, अखबारों के द्वारा संघर्ष को पुष्ट करने वाले भी उनके समुदाय में ही माने जाते थे। दोनों का भाईचारे और निकटता का सम्बन्ध

था। इसी नाते मैं तथा मेरे जैसे कुछ दूसरे व्यक्ति कांग्रेस की कार्यकारिणी में थे, जब कि व्यास जी सीधे संघर्ष के भी भुक्तभोगी थे। उम्र तथा भावना दोनों ही दृष्टियों से वह नौजवानों को आकृष्ट करते थे। विचारों की स्वतंत्रता के साथ उन्हें व्यक्त करने की स्वतंत्रता तथा निर्भीकता ने उन्हें हमारा प्रिय बना दिया था और हम कुछ नौजवानों की एक ऐसी मंडली-सी बन गई थी, जिसे कुछ लोग 'वाम पंथी' भी कहा करते थे। हम लोग खुलकर बात करते और किसी का दबाव नहीं मानते थे।

मस्त और विनोदी

व्यास जी के निकट सम्पर्क में आने पर पता चला कि जन्म से ब्राह्मण होने पर भी राजपूती आनबान का उन पर पूरा असर था। नटखटपन उनका बचपन का गुण था जैसा अलमोड़ा से निकलने वाले, 'नटखट' मासिक के एक विशेषांक में उन्होंने अपने नटखटपन का स्वयं वर्णन किया है। संघर्ष से डरने के बजाय उसमें ही वे मजा लेते थे। सम्भवतः सन् १६३२ की बात है। मैं ब्यावर 'अजमेर' में 'तरुण राजस्थान' के दफ्तर में उनके साथ बैठा गपशप कर रहा था। अचानक संघर्ष छिड़ने का समाचार मिला। वह कुर्सी से उछल पड़े और हर्ष विभोर हो गये। जेल जाने, तकलीफ उठाने और विपरीत परिस्थितियों में भी मस्त रहने के वे आदी थे। सुस्त होने के बजाय उन्हीं में मजा लेते। दूसरों को भी खुश रखने की उनमें अपूर्व क्षमता थी।

सन् ३२ के आन्दोलन में मुझे भी जेल यात्रा का सौभाग्य प्राप्त हुआ। संयोग की बात, कि अजमेर जेल में वह भी मेरे साथी थे। 'सी' क्लास में ही हमें रहने का सुयोग मिला। साठ-सत्तर साथियों के उस समूह में और भी कई अच्छे व्यक्ति थे, जिनके स्नेह और साथ ने जेल को जेल महसूस नहीं होने दिया, लेकिन जयनारायण जी का अपना निराला ही व्यक्तित्व था। खुश रहना और दूसरों को खुश रखना, मानो उनका परम कर्त्तव्य था। खासकर रविवार के दिन जब जेल में दंड-स्वरूप मिले मशक्कत के काम से छुट्टी रहती थी और हम सब कैदी एकत्र होते तो व्यास जी अपने पूरे रंग रंगे में होते थे। गाना, नाचना, लतीफे सुनाना, मज़ाक करना और तसले पर ताकधनाधन करना; मतलब यह कि जिस तरह भी हो वातावरण को मनहूसियत से मुक्त रखने में वह कोई कसर नहीं रखते थे। मुझे भी वह कभी गम्भीर नहीं रहने देते थे।

मैं कुछ संकोची वृत्ति का व्यक्ति हूं। यों बात बहुत खुलकर करता हूं, पर नाच-गान, हँसी-मज़ाक का आदी नहीं। शास्तगी का भूत कहिये या मेरी कमजोरी, सभामंच का भी मैं व्यक्ति नहीं हूं। भाषण देना, नारे लगाना जलूस में निकलना मुझे नहीं आता, सन् ३२ के आन्दोलन में जेल जाने के लिये भी मैंने परिचितों और भीड़ के बीच शहर के बजाय अजमेर से नसीराबाद के बीच के सुनसान हटूंडी आश्रम

को चुना, जहां प्रान्तीय सर्वाधिकारी डिक्टेटर के नाते दो साथियों के साथ मैं ट्रेन से चुपचाप पहुंचा और हलके से नारे लगाकर अपने को गिरफ्तार करा लिया। यों प्रदर्शन से भी बच लिया और गिरफ्तार भी हो गया। जयनारायण जी इस घटना को लेकर मुझे खूब बनाते थे और मेरी नकल उतारकर सबको खूब हँसाते थे।

व्यास जी का यह विनोदी स्वभाव जेल से बाहर भी खूब देखने को मिला है। जब वह राजस्थान के मुख्य मंत्री थे और सत्ता के साथ-साथ कुछ अभिमान का होना भी स्वाभाविक था, तब भी बात करते थे तो खूब खुलकर और अपने साथियों का भी ऐसा खाका खींचते थे कि हँसी आये बिना नहीं रहती थी। इस तरह जब घर आये तो कहीं तोते की बोली बोलकर बच्चों को विस्मय में डाल रहे हैं तो कहीं किसी बच्चे को उछालकर या किसी और तरह हँसा रहे हैं। उनको पाकर बच्चे भी खूब खुश और प्रफुल्ल होते थे।

जवांमर्द और संघर्षप्रिय

जवांमर्दी का हाल तो कुछ पूछिये ही नहीं। राजस्थान का पहला संघ बनने पर जब कोटा में कांग्रेसी इकट्ठे हुए तो व्यास प्रदेशाध्यक्ष थे। गोकुल जी (प्रो० गोकुललाल असावा) जो हमारे अजमेर के पुराने मित्र और साथी थे, शाहपुरा राज्य के प्रधान मंत्री के नाते वहां कार में आये थे। सरदार पटेल की उपस्थिति में हुए सरकारी दरबार में कोटा राज्य के कुछ कांग्रेसियों की शिकायत रही कि 'हमें निमंत्रण नहीं मिला,' या कि 'उपयुक्त स्थान नहीं मिला।' व्यास जी को स्वभावतः यह शिकायत नहीं रुची। फिर तीसरे पहर शहर में कांग्रेसजनों का जो सम्मेलन रखा गया, उसमें कांग्रेसजनों के समय पर न पहुंचने पर भी उन्हें अच्छा नहीं लगा। शायद वे लोग इस उधेड़बुन में थे कि हममें से किसे मिनिस्टर बनाया जायगा या यह कि अपना दावा उपस्थित कर आश्वासन कैसे प्राप्त किया जाय। व्यास जी और गोकुल जी के साथ मैं भी नियत स्थान पर नियत समय से पहले पहुंच गया था, पर स्थानीय कांग्रेसी प्रायः समय पर नहीं पहुंचे।

ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, व्यास जी की मुद्रा बिगड़ती गई और काफी समय बाद जब लोग इकट्ठे हुए तो वह बिखर पड़े। बड़ी डपट के साथ उन्होंने कहा, "आप लोगों को सरकारी दरबार की तो बड़ी फिक्र थी, लेकिन मेरे यानी प्रान्तपति के दरबार की मानो कोई परवाह ही नहीं।" यही नहीं, लोगों के भड़के हुए भावों से दबने के बजाय, उन्होंने बड़े रौब के साथ कहा, "जो कोई गड़बड़ करेगा उसे संस्था से निकाल दिया जायगा।" और जब एक साहसी व्यक्ति ने पूछा कि किसे कैसे निकालेंगे आप। व्यास जी की हाजिर जवाबी ने काम दिया, "मैं अपने को ही निकाल लूंगा।" शब्द बिल्कुल यही नहीं थे, पर भाव कुछ ऐसे ही थे और उनका असर भी अच्छा ही पड़ा था।

संघर्ष से न घबराने और कष्टों से जूझते हुए भी मस्त रहने का उनका स्वभाव

तब भी सामने आया, जब राजस्थान का बड़ा संघ बनने पर व्यास जी के बजाय श्री हीरालाल जी शास्त्री मुख्यमन्त्री बने और व्यास जी पर जोधपुर के उनके मन्त्रित्वकाल की तथाकथित गड़बड़ी के लिये मुकदमा चला। दूसरा कोई होता तो ऐसे वक्त टूट जाता, पर व्यास जी न केवल टूटे नहीं बल्कि डटकर मुकाबला करते रहे और बाद में न केवल मुकदमा हटा बल्कि वह मुख्यमन्त्री भी बनाये गये। इस वक्त की व्यास जी की स्थिति जिन्होंने पास से देखी वे उनके प्रति नतमस्तक हुए बिना नहीं रह सके। मुकदमे की परेशानी के साथ खर्च भी बढ़ रहे थे और उनके यहां आने वाले अतिथियों की संख्या बढ़ती रहती थी। उनके लिये भोजन की व्यवस्था करना सरल नहीं था। ऐसे समय किस तरह कुछ लोग व्यास जी की ओर श्रद्धावनत हुए और उनकी मदद को आगे बढ़े, यह जानने वाले ही जानते हैं। नई दिल्ली के एक होटल वाले का किस्सा स्वयं व्यास जी ने सुनाया, जिसके यहां व्यास जी के मेहमान खाना खाते रहे और जब व्यास जी ने इकट्ठे रुपये भिजवाये तो उसने लेने से इनकार कर दिया था। ऐसी कितनी ही घटनाएं उन दिनों घटी होंगी।

भावुक और सहृदय

भावुकता और सहृदयता में भी वे कम नहीं थे। इसी से अपने साथियों के कारण उन्हें कष्ट सहन करना पड़ा और कई बार उन्हीं के कारण व्यास जी की आलोचना हुई। शायद साथियों की ठीक परख उनको नहीं थी या यों कहना चाहिए कि अपनी भलमनसाहत के कारण दूसरों को भी तब तक भला ही समझते थे जब तक कि धोखा खा न लें या उनकी खुली चोट के शिकार न हो जायं। साथियों के संघर्ष से या सत्ता स्पर्धा में कभी-कभी अच्छे-बुरे की तमीज न कर सकना भी स्वाभाविक ही था। इन्हीं बातों का परिणाम था कि पिछले दिनों वह कुछ खोये-खोये-से, चोट खाये-से रहे और जिस राजस्थान के वह वरिष्ठ नेता थे उसमें निर्माता के बजाय आलोचक का रूप ही उन्हें अदा करना पड़ रहा था। लेकिन मन उनका राजस्थान की सेवा में ही अन्त समय तक रमा रहा। स्वास्थ्य सम्बन्धी निषेध के बावजूद वे राजस्थान पाकिस्तान सीमा के लगातार दौरे करते रहे। उनके स्वास्थ्य पर ऐसा धक्का लगा कि फिर सम्हल ही न सके।

बीमारी की खबर मिलने पर अस्पताल में व्यास जी को देखने गया तो उन जैसे जिन्दादिल और जवांमर्द व्यक्ति को अवश और मौन पड़े देखकर दंग रह गया। चुपचाप नमस्कार के आदान-प्रदान के साथ गमगीन विदा ली और फिर आकाशवाणी से उनके निधन का समाचार पा स्तब्ध रह गया। सवेरे उनके मुख्य कर्मक्षेत्र जोधपुर को उनका शव ले जाते वक्त भारी जनसमुदाय के बीच में भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर आया, लेकिन यह विचार अब भी मन में बना ही

हुआ है कि ऐसे व्यक्ति बार-बार सान्निध्य में नहीं आते और सचमुच मैं धन्य था, जो ऐसे व्यक्ति के सान्निध्य में आया।

३

उनका और मेरा स्वभाव

संसद सदस्य श्री रामकुमार जी भुवालका, कलकत्ता

मेरा परिचय व्यास जी के साथ बहुत पुराना नहीं है और उनके साथ मिलकर सार्वजनिक कार्य करने का सम्बन्ध तो नहीं के बराबर है। पारस्परिक परिचय होने के बाद उनके साथ सहसा ही ऐसा सम्बन्ध हो गया, जैसे कि हम दोनों अपने ही हों। हम दोनों का स्वभाव कुछ ऐसा मिल गया, जैसे कि वह एक ही ढांचे में ढला हो। बिना किसी संकोच के आपस में मिलना-जुलना होता और छोटी-छोटी समस्याओं पर दिल खोलकर चर्चा होती। हम दोनों के ही स्वभाव की यह एक सरीखी विशेषता थी कि वे मेरे समान या मैं उनके समान सार्वजनिक व्यवहार में स्पष्ट-वादी रहे, जो काम करना हो उसके लिये 'हां' और जो न करना हो उसके लिये 'नहीं' कहने में हम दोनों को कोई भय या संकोच न होता था। गत आम चुनाव की एक छोटी-सी घटना हम दोनों के स्वभाव की अनुकूलता को प्रकट करती है। बीकानेर डिवीजन के रतनगढ़ चुनाव क्षेत्र से कांग्रेसी प्रत्याशी के रूप में जिस भाई को खड़ा किया गया था, वह व्यास जी और मेरी दोनों की ही दृष्टि में उपयुक्त नहीं था। हमारा दृष्टिकोण स्वीकार नहीं किया गया। श्री मोहनलाल सारस्वत स्वतन्त्र रूप में खड़े हुए। उनको व्यास जी का खुला समर्थन प्राप्त था और मेरी दृष्टि में भी वे अधिक उपयुक्त थे। वे सफल हुए और कांग्रेसी प्रत्याशी पराजित हुआ। तब मुझे व्यास जी के स्पष्ट दृष्टिकोण और साहसपूर्ण स्पष्टवादिता का परिचय मिला।

जब भी कभी उनसे मिलना होता, तो वे सदा राजस्थान के ही सम्बन्ध में चर्चा किया करते थे। ऐसा मालूम होता था कि सिवाय राजस्थान के कोई और विषय चर्चा के लिये उनके पास था ही नहीं। वे अपनी बात कुछ ऐसे ढंग से कहते थे कि सुनने वाला उनसे प्रभावित हुए बिना और उनकी बात को स्वीकार किये बिना रह नहीं सकता था। राजस्थान के विकास, प्रगति और उन्नति की उनको अहोरात्र चिन्ता रहती थी। कलकत्ता आकर वे यहां के राजस्थानियों में राजस्थान के लिये अनुभूति पैदा करने में ही अपना सारा समय लगाया करते थे।

बहरामपुर उड़ीसा की एक छोटी-सी घटना है। उससे उनके सरल व सहृदय, मिलनसार और आत्मीय व्यवहार का बड़ा ही सुन्दर परिचय मिलता है। वहां कांग्रेस महासमिति की बैठक थी। वे उन दिनों राजस्थान के मुख्यमन्त्री थे। वे ढूंढते हुए वहां आ पहुंचे, जहां हम कलकत्ता के राजस्थानी मित्र ठहरे हुए थे। हमारे ही साथ उन्होंने अपना सामान रख दिया। छोटा-सा कमरा था, खाने-पीने, नहाने व सोने आदि की भी समुचित व्यवस्था नहीं थी। हमको उनका वहां ठहरना उनकी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल प्रतीत हुआ। हमने उनसे निवेदन किया कि हम तो जिनके मेहमान हैं, उनको हमारा यहां से कहीं और जाकर ठहरना बहुत बुरा मालूम होगा। आप क्यों हमारे साथ ठहर कर असुविधा में पड़ते हैं और यह स्थान आपकी प्रतिष्ठा के अनुकूल भी नहीं है। आपके ठहरने की व्यवस्था कहीं और की जा सकती है। उन्होंने सहज स्वभाव से कहा कि आप मुझे अपने से अलग क्यों समझते हैं, जैसे आप हैं वैसा ही मैं हूं। जहां आप रहेंगे वहां ही मुझे रहना है। आप यदि असुविधा में रह सकते हैं तो मैं क्यों नहीं रह सकता। वे हमारे साथ ही ठहरे। परन्तु कभी भी किसी भी बात पर उन्होंने रोष व असन्तोष प्रकट नही किया। सदा हँसमुख रहना और दूसरों को भी हँसाते रखना उनका स्वभाव बन गया था। हर परिस्थिति के अनुकूल अपने को बना लेने की कला में वे माहिर थे। लेकिन हंसी-मज़ाक और आमोद-प्रमोद में भी उनकी बातें बड़ी ठोस और सार-गर्भित होती थीं। ऊंची-से-ऊंची और गम्भीर-से-गम्भीर बात को भी वे ऐसे सरल ढंग से कह जाते थे कि सहज ही में हर किसी के गले उतर जाती थी और किसी को अखरती भी न थी। खाली बैठना वे जानते ही न थे। हर समय किसी-न-किसी काम में जुटे रहते थे। एकान्त समय मिलते ही कुछ-न-कुछ लिखने-पढ़ने में लग जाते थे। हर प्रकार के सामाजिक व राजनीतिक विषयों की उनकी जानकारी विस्मयजनक थी। छोटे-छोटे किस्से-कहानियां कहकर वे अपनी बात को समझाने में बड़े चतुर थे। वे जितने भी दिन हमारे साथ रहे, वे दिन घण्टों की तरह कट गये और उनका साथ होने के ही कारण हम अपनी सभी असुविधाओं को भूल गये। पद और प्रतिष्ठा का मोह उनको अपने साथियों से अलग नहीं कर सका।

उनका सारा जीवन जिस संघर्ष में बीता, उसका कुछ अनुभव वे ही लगा सकते हैं, जिनको देशी राज्यों और जागीरदारों के निरंकुश शासन का कुछ अनुभव है। अंग्रेजी राज्य में रहने वाले उनका ठीक-ठीक अनुमान नहीं लगा सकते थे। मैं एक बार दो-तीन दिन के लिये रतनगढ़ गया था। बीकानेर की खुफिया पुलिस ने मेरा ऐसा पीछा किया कि मैं दो ही दिन में तंग आ गया। व्यास जी से एक बार उसकी चर्चा हुई तो उन्होंने कहा कि खुफिया पुलिस वालों से भय करना वैसा ही है जैसे कि हम अपनी ही छाया से डरते हों। वे तो छाया की तरह हमारे साथी बन गये। हम अपना काम करते हैं और वे अपना। व्यास जी के लिये तो ऐसे सब

कष्ट गले के पुष्पहार के समान थे।

राजस्थान में देशी राज्यों में काम करते रहना लोहे के चने चबाने के समान था। परन्तु व्यास जी तो ऐसे प्रतीत होते थे जैसे फ़ौलाद के बने हों। वे अपने ध्येय से कभी विचलित नहीं हुए। लोक सेवा का जो व्रत उन्होंने स्वेच्छा से अंगीकार किया था, उसमें वे आजीवन लगे रहे और पग-पग पर प्रतिकूलताएं पैदा होने पर भी वे निरन्तर आगे ही बढ़ते गये।

अपने निधन से कुछ ही दिन पहले उनके मन में जो उबाल पैदा हुआ था, उसकी केवल एक झांकी ही वे दिखा सके थे। यदि कुछ दिन और वे जीवित रह जाते तो मालूम नहीं उन्होंने क्या गुल खिलाया होता। इस समय जिस भ्रष्टाचार का बोलबाला है उसके विरुद्ध उन्होंने बगावत करने का शंख पहले ही फूंक दिया था।

वे आयु में मुझसे दो-एक वर्ष ही छोटे होंगे और आश्चर्य नहीं कि मेरी बराबर आयु के ही हों। फिर भी मेरे हृदय में उनके लिये विशेष आदर और प्रतिष्ठा थी। ऐसे कर्मवीर साथी को पाकर कौन अपने को धन्य न मानेगा। मैं ऐसा अनुभव करता हूं जैसे कि वे अब भी साथ ही हों। उनका यह अनुकरणीय सरल स्वभाव हमें सदा ही अपने कर्त्तव्य पालन की ओर अग्रसर करता रहे, यही मेरी हार्दिक कामना है।

४

उनकी आत्मीयता

आयुर्वेद बृहस्पति पं० सीताराम जी मिश्र, अध्यक्ष राष्ट्रीय आयुर्वेद कांग्रेस,
जयपुर (राजस्थान)

मैं जब बम्बई के प्रसिद्ध स्वर्गीय वैद्यराज आचार्य श्री यादव जी टीकम जी महाराज से आयुर्वेद का अध्ययन करता था, तब उनके यहां लोकनायक श्री जयनारायण जी व्यास से मेरी पहली भेंट हुई थी। जोधपुर में उन पर राजद्रोह का जो मुकदमा चला था और जिसमें उन्हें पांच वर्ष की सज़ा हुई थी, उसके कारण उनका नाम हम राजस्थानी बड़े गौरव से लिया करते थे। मेरी स्मृति के अनुसार राजस्थान में वैसा संगीन मुकदमा और वैसी संगीन सज़ा पहली ही बार सुनने में आई थी। व्यास जी का वह राजद्रोह का मुकदमा लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी पर चलाये गये राजद्रोह के मुकदमों के जोड़ का था। १६३१ में जब व्यास जी बम्बई पधारे थे, आचार्य जी ने ही मेरी उनसे भेंट करवाई थी। १६३५ में

दैनिक 'अखण्ड भारत' के प्रकाशन के सम्बन्ध में मैं उनके अधिक सम्पर्क में आया और वह सम्पर्क उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया। १९४९-५० में जोधपुर में सरदार पटेल के प्रकोप के कारण उन पर तथा उनके अन्य मंत्री साथियों पर जो मुकदमा चलाया गया था, उसकी मेरे मन पर बड़ी तीव्र प्रतिक्रिया हुई। उनके प्रति मेरी श्रद्धा कुछ इस रूप में जागृत हो गई थी कि मैं यह समझ नहीं सका कि उन पर वह मुकदमा किस आधार पर चलाया जा सकता था। जो आरोप उन पर लगाये गये थे, उन पर विश्वास करना मेरे लिये सम्भव न था।

मैं कुछ घबराया हुआ सा उसी मुकदमे के सिलसिले में उनसे मिलने दिल्ली गया। वहां मालूम हुआ कि वे मुकदमे की तारीख के लिये जोधपुर गये हैं। मैंने जोधपुर जाने का विचार कर लिया और रात ही की गाड़ी से रवाना हो गया। अकस्मात् फुलेरा जंकशन पर जयपुर के प्रसिद्ध एडवोकेट और नेता श्री चिरंजीलाल जी अग्रवाल के साथ उनसे मुलाकात हो गई। वह उनके साथ जोधपुर जा रहे थे। मैंने उनसे अपने मन की बात कह दी और कहा कि मेरे योग्य कोई सेवा बताइये। उन्होंने टाल-सा दिया। तब मैंने उनसे बम्बई आने का अनुरोध किया।

मेरे अनुरोध पर वह सहसा ही बोल उठे कि मुझे बम्बई बुलाकर तुम बहुत ही कठिनाइयों में उलझ जाओगे। मुझे इन दिनों बम्बई बुलाना कई तरह के खतरे मोल लेना है। मैंने सहज भाव से कह दिया कि बम्बई से यहां आकर आप से मिलना भी तो खतरे से खाली नहीं है। उन्होंने मेरा अनुरोध स्वीकार कर लिया और जल्दी ही बम्बई पधारने का आश्वासन दिया।

◇ ◇ ◇

कुछ दिन बाद व्यास जी अपने दोनों अभियुक्त साथी श्री मथुरादासजी माथुर और श्री द्वारकादासजी पुरोहित के साथ बम्बई पधारे। स्टेशन पर राजस्थानी जनता ने उनका हार्दिक स्वागत किया। उन्हीं दिनों में राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री पं० हीरालाल जी शास्त्री भी बम्बई पधारे हुए थे। शास्त्री जी और व्यास जी दोनों के स्वागत व अभिनन्दन का आयोजन क्रमशः श्री सीताराम पोद्दार बालिका विद्यालय और मारवाड़ी व्यापारी संघ के भवन में प्रायः एक ही समय किया गया। मारवाड़ी व्यापारी संघ में राजस्थानी जनता की इतनी भीड़ जमा हो गई थी कि पुलिस को विशेष प्रबन्ध करना पड़ा। वह भीड़ व्यास जी के प्रति जनता की श्रद्धा भक्ति एवं आकर्षण की द्योतक थी। मैंने व्यक्तिगत रूप से भी अनेक सज्जनों से व्यासजी का परिचय करवाया। जहां कहीं भी मैं उनको लेकर जाता वहां लोग तरह-तरह की कल्पनाएं करते। अधिकतर लोग यह कहते कि जब व्यासजी पर ऐसा संगीन मुकदमा चल रहा है और उन पर ऐसे भीषण आरोप लगाये गये हैं, तब मेरा उनके साथ रहना उचित नहीं है। मैं अपने को राजस्थान सरकार और सरदारपटेल दोनों की आंखों का कांटा बना रहा हूं।

एक दिन मेरे परम हितैषी श्रीमान् सेठ गजाधर जी सोमानी ने अपनी गद्दी पर बुलाकर बड़े प्रेम से मुझे समझाया कि व्यास जी के साथ रहने के कारण केन्द्रीय सी० आई० डी० ने मेरी गतिविधि की भी निगरानी करनी शुरू कर दी है। आप व्यास जी के साथ जिन-जिन के यहां जाते हैं और जिनकी मोटरगगड़ियों को आप काम में लाते हैं, उन सबकी सूचना सरदार पटेल तक पहुंचाई जाती है। मैंने उनसे निवेदन कर दिया कि मैं कोई चोरी या डकैती तो करता नहीं, तो मुझे सरदार पटेल की सी० आ० डी० का डर क्यों होना चाहिए ? राजस्थान के एक तपस्वी व कर्मठ कार्यकर्त्ता के संकट में सहायता करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूं।

कुछ दिन बाद सोमानी जी ने मुझसे कहा कि मैं व्यास जी से मिलकर उनको वह सन्देश देना चाहता हूं, जो बाबू घनश्यामदास जी बिड़ला ने विदेश के लिये रवाना होने के समय मुझे उनको पहुंचाने का आदेश दिया है। उनका क्या कार्य-क्रम है, मैं स्वयं उनसे जाकर मिल लूंगा। मैंने उनको दिन-भर का कार्यक्रम बता दिया और उन्होंने कहा कि वह दो बजे श्रीमान् सेठ चिरंजीलाल जी लोयलका की गद्दी पर आकर उनसे मिल लेंगे। तब व्यास जी वहां चाय के लिये जाने को थे। सोमानी जी ठीक समय पर लोयलका जी के यहां पहुंच गये। व्यास जी के साथ वहां लोयलका जी और मेरे सिवाय बाबू मदनलालजी अग्रवाल तथा मध्यभारत के जन नेता श्री कन्हैयालाल जी वैद्य भी उपस्थित थे।

सेठ सोमानी जी ने व्यास जी को बाबू घनश्यामदास जी बिड़ला का सन्देश देते हुए कहा कि उनका कहना यह है कि आपको पंडित हीरालाल जी शास्त्री के मंत्रि-मंडल में शामिल होने की स्वीकृति दे देनी चाहिए, अथवा परिणाम बहुत भयंकर होंगे, व्यासजी ने कुछ गम्भीर भाव और कुछ विनोद में थोड़े ही शब्दों में इतना ही कहा कि मैं उनकी तसवीर में फिट नहीं होता। मैं तो जमीन पर सोता हूं।

सेठ सोमानी जी वापस चले गये और मैं व्यास जी को लेकर राजाबहादुर सेठ नारायणलाल जी पित्ती के यहां चला गया। पित्ती जी व्यास जी के बहुत पुराने साथी थे और उनपर बड़ा स्नेह व विश्वास रखते थे। उन्होंने उनसे कहा कि आपके साथ जो अन्याय हो रहा है,उसका मुझे बड़ा दुःख है। मेरी सेवाएं आपके सुपुर्द हैं। आप जैसा चाहें वैसा उनका उपयोग कर सकते हैं।

इस प्रकार बम्बई में व्यास जी के अनुकूल वातावरण बनाने में मुझे जो सफ-लता मिली, उसपर मुझे आज भी बड़ा गर्व है। सेठ लोयलकाजी और सेठ पित्ती जी के प्रभाव तथा प्रयत्न से बम्बई से मुकदमे के लिये पुष्कल धनराशि प्राप्त हुई और इलाहाबाद के श्री पाठक एडवोकेट को मुकदमे की पैरवी के लिये नियुक्त करना तय हुआ। पित्ती जी ने मुकदमे के लिये दस हजार रुपये उसी समय व्यास जी को भेंट किये।

बम्बई से लौटकर व्यास जी ने राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी का दूसरी बार चुनाव लड़ा, जिसमें उनको अप्रत्याशित सफलता प्राप्त हुई और सबको पता चल गया कि राजस्थान का लोकमत किस प्रकार उनके साथ है। मैंने इस चुनाव में भी व्यास जी का खुलकर साथ दिया। चुनाव के विरुद्ध अपील की गई और पंजाब से सरदार प्रतापसिंह कैरो को भेजकर उनकी देख-रेख में फिर चुनाव करवाये गये। व्यास जी को तब फिर आर्थिक सहायता की आवश्यकता हुई। मैं राजाबहादुर सेठ नारायणलाल जी पित्ती के साथ शिमला गया हुआ था। व्यास जी शिमला पधारे। उन्होंने अपनी कठिनाई बताते हुए कहा कि मेरे विरोधी कानूनी दांव-पेंच के साथ मेरी इस कमज़ोरी से भी लाभ उठाना चाहते हैं कि मेरे पास पैसा नहीं है। वे मेरी इस कमज़ोरी को खूब जानते हैं। मैंने उनको भरोसा दिलाते हुए कहा कि जनता आपके साथ है। इसलिए आपकी ऐसी किसी भी कमज़ोरी से आपके विरोधी लाभ नहीं उठा सकते। पित्तीजी ने उनकी बम्बई के ही समान फिर सहायता की और चुनाव में उनको पहले से भी कहीं अधिक शानदार सफलता प्राप्त हुई। यदि मैं भूलता नहीं तो प्रदेश कांग्रेस कमेटी के ११२ सदस्यों में से १०३ व्यास जी के समर्थक थे। वे प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये। उनकी इस विजय व सफलता का लोह पुरुष सरदार पटेल पर भी ऐसा गहरा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने मुकदमा वापस ले लिया और व्यास जी को राजस्थान के मुख्यमंत्री पद पर प्रतिष्ठित किया उनकी इस सफलता में मैं भी उनका एक सहयोगी बन सका, इस पर मुझे आज भी बड़ा ही सन्तोष है।

◇ ◇ ◇

व्यासजी की आयुर्वेद में भी बड़ी श्रद्धा थी। वे हर समय उसके विकास के लिये चिंतित एवं प्रयत्नशील रहते थे। मैं दिल्ली जाकर श्रीमान् सेठ वेणी प्रसाद जी जयपुरिया धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय की ओर से हर वर्ष श्री धन्वन्तरि जयन्ती का आयोजन किया करता था। मेरी प्रार्थना पर एक बार व्यास जी ने उसका सभापतित्व किया था।

◇ ◇ ◇

मेरे व्यक्तिगत सम्बन्ध उनके साथ हमेशा ही बहुत मधुर और आत्मीय रहे। दिल्ली तथा जयपुर जाने पर उनसे ज़रूर मिलता और वे भी बम्बई आने पर मुझसे मिले बिना नहीं रहते थे। उनके सरल, स्नेही और सहृदय व्यवहार का मुझ पर बहुत गहरा प्रभाव था। अहमन्यता और मिथ्याभिमान उनको छू तक न सके थे। ऐसे सरल, स्नेही साथी का उठ जाना मैं अपनी व्यक्तिगत क्षति मानता हूं। इसीलिए उनका अभाव मुझे सदा ही खटकता रहता है।

५

उनका स्वभाव

सेशन जज श्री रणछोड़दास गट्टानी, भीलवाड़ा (राजस्थान)

यद्यपि जोधपुर के सार्वजनिक जीवन में मैंने अप्रैल १९३६ से भाग लेना शुरू किया था, परन्तु श्री व्यास जी उन दिनों जलावतन थे; इसलिये उनसे सम्पर्क शुरू नहीं हो सका। नवम्बर, १९३७ में जब जोधपुर राज्य प्रजामण्डल व नागरिक अधिकार रक्षक संघ नाम की संस्थाएं गैर कानूनी घोषित की गईं तब भावी कार्य-क्रम पर विचार करने हेतु श्री व्यास जी से मिलने मैं ब्यावर गया। तब उनसे मेरा पहला परिचय हुआ। वे तब ब्यावर रहते थे।

◇ ◇ ◇

जैसा मैंने उनको जाना, उनको चुनौती दी जाना असह्य था; चाहे फिर वह चुनौती मज़ाक में हो या गम्भीर रूप में, छोटी बात में हो या बड़ी बात में। सन् १९३९ की बात है। हम दोनों मारवाड़ लोक परिषद् के कार्य के लिये लाड़नूं गये हुए थे और वहां के कर्मठ कार्यकर्त्ता स्वर्गीय श्री चैनदास स्वामी के मन्दिर में ठहरे थे। चैनदास जी के शरीर का गठन कुछ विचित्रता लिये था। कुबड़े तो थे, परन्तु उनकी टांगें अपेक्षाकृत बहुत लम्बी थीं, सारस की टांगों की तरह। मन्दिर में खड़े हम तीनों बातें कर रहे थे, पास में ही घण्टा टंग रहा था। यों ही चैनदास जी के मुंह से निकला कि "व्यास जी! क्या आप इस घण्टे को अपने पैर से बजा सकते हैं?" व्यास जी को इसमें आश्चर्य लगा घंटा इतनी ऊंचाई पर था कि उसका किसी के पैर से बजाया जाना अद्भुत था। व्यास जी ने पूछा—यह कैसे हो सकता है और स्वामी जी ने वहीं खड़े-खड़े न मालूम अपने पैर को किस तरह साधा कि उनके अंगूठे से घंटा बज गया। हम दोनों हैरत में पड़ गये।

◇ ◇ ◇

कुछ देर बाद स्वामी जी तो कार्यवश बाहर चले गये। मैं भीतर एक कमरे में बैठा कुछ लिख रहा था—अचानक धड़ाम की आवाज़ सुनकर मैं बाहर भागा तो व्यास जी को घंटे के नीचे पड़ा पाया। मेरे पूछने पर—सामीड़े को घंटो बजावण री कोशिश करी ही—कहकर हँसकर उन्होंने टाल दिया। बाद में बताया कि किस तरह स्वामी जी की चुनौती के कारण उन्होंने खूब कूद-फांद कर घंटा के पैर लगाने की कोशिश की और उसमें वे गिर पड़े थे।

◇ ◇ ◇

व्यास जी को घड़ी की तरह नियमित जीवन पसन्द नहीं था। यह नहीं कि अमुक वक्त सो जाओ और अमुक वक्त खाना खाया जावे इत्यादि। एक दफे किसी ने उनको कहा कि, व्यास जी आपका जीवन 'रेगुलर' नियमित नहीं है तो उन्होंने

सहज भाव से जवाब दिया कि 'आई एम रेगुलर इन माई इर्रेगुलरिटीज़' अर्थात् मैं अपनी अनियमितताओं में बिलकुल नियमित हूं।

◇ ◇ ◇

मेधावी होने के कारण वक्त पर आवाज़ देने की उनकी सूझ भी बड़ी कमाल की थी। जब वे मारवाड़ के मुख्यमन्त्री बने तब किसी अवसर पर साथी कार्यकर्त्ताओं को दावत दी। दावत में निमंत्रित तो निश्चित संख्या में ही किये गये थे परन्तु आ गये कहीं ज़्यादा। किसी ने अलग ले जा कर ज़रा गम्भीर होकर स्थिति उन्हें बताई तो सबके सामने हँसते हुए यही कहा कि निमंत्रित लोग तो एकाध घंटे और प्रतीक्षा कर लेंगे परन्तु जो प्रेमवश आये हैं उनको पहले परोसना अच्छा रहेगा। मित्रों ने खिलखिलाकर उनका सुझाव स्वीकार कर लिया।

◇ ◇ ◇

सन् १९३९ की बात है। मारवाड़ में अकाल पड़ा। ठेकेदारों की मारफत सरकार दुर्भिक्ष पीड़ितों को कार्य में लगाने के लिये सड़कें बनवा रही थी। ठेकेदार उनका शोषण करते थे। जोधपुर से आठ मील की दूरी पर काम करने वाले पुरुष, स्त्री, एवं बच्चे १२०० मजदूर निःसहाय होकर जोधपुर फरियाद करने आये। दो दिन दफ्तर के बाहर बैठे रहे। उनकी कौन सुनता? लोक-परिषद् ने मामला हाथ में ले लिया। उनके ठहरने, खाने इत्यादि की व्यवस्था भी करनी पड़ी। लोक-परिषद् के साधन सीमित थे। उसके कार्यकर्त्ताओं का उत्साह अपार था। सरदार मार्केट गिरदीकोट घंटाघर पर उन सब मजदूरों को हम ले आये—दरियां इकट्ठी कर लीं। हम कार्यकर्त्ता भी वहीं सोते थे। पहली रात जमीन पर अकेली दरी पर मुझे नींद नहीं आ रही थी। कमबख्त तकिया भी तो नहीं था। व्यास जी पास में ही सो रहे थे, उन्होंने स्थिति समझ ली और बोले कि जूतियां दरी नीचे करके उनसे तकिये का काम ले लो, खोयेंगी भी नहीं। कितना माकूल सुझाव था, मानना पड़ा उसी वक्त।

◇ ◇ ◇

व्यास जी में अपने भावों को सहज और छोटे शब्दों मे व्यक्त करने की अपूर्व प्राकृतिक देन थी। १९६१ में जब मैं अजमेर रहता था हम दोनों को काफी बार मिलना हुआ। एक दफा बैठे-बैठे पुराने जीवन व पुराने साथियों की बातों में लग गये तो वह कहने लगे कि तू तो कामचोर निकला और दामचोर निकला। उनके चेहरे पर उस समय जो अभिव्यक्ति थी, लगता था कि उनके निकट के अधिकांश साथी उनके लिये अमरबेल बन गये। व्यास जी का ध्यान आते ही संस्कृत का यह श्लोक याद आ जाता है—

उदये सविता रक्तः रक्तश्चास्तगमने तथा।
सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता॥

६

स्पष्टवादी

संसद सदस्य लाला काशीराम जी गुप्त, अलवर (राजस्थान)

श्रद्धेय व्यास जी के नाम और काम से मैं तभी से परिचित था, जब मुझमें राजनीतिक चेतना का संचार हुआ था। परन्तु प्रत्यक्ष परिचय १९४४ में तब हुआ, जब अलवर में राजस्थान कार्यकर्त्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया था। तब पहली ही मुलाकात में एक ऐसी घटना घट गई, जिसको न मैं कभी भूला और न व्यास जी ही। किसी ने उनके दिमाग में यह बिठा दिया था कि मैं 'सेठ' हूं और मुझे 'सेठ' शब्द से बड़ी चिढ़ थी। मैं सेठ उसको मानता था, जो बेजा तरीके से धन संचय करे और उसका उपयोग देश और समाज के लिये न करके स्वयं उसका उपभोग करे। व्यास जी ने मुझे सेठ कहकर बुलाया। मैंने उस पर आपत्ति की। उन्होंने मुझसे पूछा कि सेठ नहीं तो और क्या हो। मैंने कहा केवल एक कार्यकर्त्ता और आपका एक साथी हूं। इस पर उन्होंने अपने शब्द लौटा लिये और उसके बाद मेरे लिये कभी भी इस शब्द का प्रयोग नहीं किया। यह था उनका स्नेह और सरलता, जिसका मुझ पर पहली ही मुलाकात में बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा।

◇ ◇ ◇

व्यास जी स्वभावतः जिद्दी न होते हुए भी उस बात के लिये अड़ जाते थे, जिसमें उन्हें अपनी कोई भूल न मालूम होती थी। इसीलिए सच्चाई के लिये संघर्ष करना उनका स्वभाव बन गया था। संघर्षशील व्यक्ति कूटनीतिज्ञ नहीं होता। इसी कारण संसारी लोगों की दृष्टि में उसको सफल नहीं माना जाता। व्यास जी अपने जीवन में ऐसे लोगों की दृष्टि में प्रायः असफल ही रहे। इसका एक प्रत्यक्ष उदाहरण तब उपस्थित हुआ, जब विधानसभाई कांग्रेस दल का विश्वास प्राप्त करने में केवल आठ मत से असफल रहे। उन्होंने न तो नेहरू जी का यह परामर्श माना कि उनको विश्वास के मत के लिये जल्दी नहीं करनी चाहिए, और न दल के किसी सदस्य से मिलकर उसको अपने साथ मिलाने का ही प्रयत्न किया। अलवर के सदस्यों ने तो श्री सुखाड़िया के साथ खुली सौदेबाजी ही की थी। वैसी सौदेबाजी व्यास जी भी कर सकते थे। परन्तु उन्होंने वैसा नहीं किया। यह उनके स्वभाव के सर्वथा अनुकूल ही था। वह मुख्यमंत्री जयनारायण व्यास की अपेक्षा 'जयनारायण व्यास' को कहीं अधिक ऊंचा और प्रतिष्ठित मानते थे और उसकी प्रतिष्ठा पर आंच आना उनको सह्य नहीं था।

◇ ◇ ◇

ऐसी अनेक आपबीती घटनाएं यहां दी जा सकती हैं। किन्तु, मैं केवल एक ही घटना की चर्चा करना पर्याप्त समझता हूं। उसका सीधा सम्बन्ध मेरे साथ है।

१९५७ में कांग्रेस की कुछ मूल नीतियों को लेकर मेरा अलवर कांग्रेस के सत्ता-धारियों के साथ मतभेद पैदा होना शुरू हो गया। उसका आखिरी विस्फोट हुआ १९६२ के आम चुनाव से अढ़ाई मास पहले। तव मुझे कांग्रेस से अलग होकर निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में लोकसभा का चुनाव लड़ने का निश्चय करने के लिये मजबूर होना पड़ा। उन्हीं दिनों में व्यास जी का राजस्थान के कांग्रेसी उम्मीदवारों के वारे में कांग्रेस हाइ कमान के साथ पत्र-व्यवहार हुआ और उन्होंने अपनी दृष्टि से अवांछनीय उम्मीदवारों की भी सूची भेजी। उसमें अलवर के श्री शोभाराम जी का भी नाम था। वे ही हमारे यहां से कांग्रेस टिकट पर लोकसभा का चुनाव लड़ा करते थे। इस वार भी उनको कांग्रेस टिकट दे दिया गया था और मैंने उनके मुकावले में निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ने का अन्तिम फैसला कर लिया था। व्यास जी ने अलवर आने के अपने कार्यक्रम की घोषणा की तो अलवर के कांग्रेसी क्षेत्रों में और आम जनता में भी कुछ हलचल-सी पैदा हुई। हमने यह तय किया कि व्यास जी को कार्यकर्त्ताओं की एक सभा में निमंत्रित किया जाय और उनके मार्गदर्शन में आगे का कार्यक्रम वनाया जाय। सभा में सभी प्रकार के विचारों के, और कांग्रेस के भी कार्यकर्त्ता वहुत वड़ी संख्या में सम्मिलित हुए। व्यास जी ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि वे शोभाराम जी सरीखे उम्मीदवारों का विरोध करेंगे, भले ही उनके विरुद्ध उसके लिये अनुशासन की कैसी भी कार्रवाई क्यों न की जाये। एक महीना वाद वे फिर अलवर पधारे और मेरा दिल खोलकर समर्थन किया। मुझे वड़ा वल और प्रोत्साहन मिला। व्यास जी के इस विरोध का कांग्रेस के वड़े-वड़े नेताओं पर भी कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने कोटा में अपने सार्व-जनिक भाषण में स्पष्ट कह दिया कि कुछ अवांछनीय उम्मीदवारों को भी कांग्रेस के टिकट दे दिये गये हैं। यदि जनता न चाहे, तो उनको मत न दे।

चुनाव के वाद एक वार तो व्यास जी के विरुद्ध अनुशासन की कार्रवाई करने का कांग्रेस हाइ कमान ने निश्चय कर लिया; किन्तु उनकी यह नैतिक विजय थी कि वह निश्चय कागज पर ही लिखा रह गया और उसको मूर्तरूप नहीं दिया जा सका।

व्यास जी ने चुनाव के वाद अपने अंग्रेज़ी पाक्षिक पत्र 'पीप' में एक लेखमाला लिखकर राजस्थान के कांग्रेसी उम्मीदवारों और अपने विरोध के वारे में खुलासे-वार स्पष्टीकरण दिया और अलवर के सम्बन्ध में सारी वास्तविकता खोलकर रख दी। उनका यह भी विचार था कि राजस्थान में 'जनता कांग्रेस' स्थापित की जाय और उसमें सभी ईमानदार कांग्रेसजनों को शामिल किया जाय। भले ही राजस्थान में व्यास जी का वह स्वप्न पूरा न हो सका; परन्तु वे देश में एक ऐसी भावना और चेतना अवश्य पैदा कर गये, जिसने कांग्रेस के संगठन और शासन में से भ्रष्टाचार

को दूर करने का सुदृढ़ प्रयास शुरू कर दिया है। इस प्रयास की पूर्ति ही व्यास जी का सही अर्थों में सच्चा स्मारक होगा।

७

विनोदपूर्ण प्रसंग

बंगाल विधान परिषद् सदस्य श्री धर्मचन्द जी सरावगी, जैन भवन, चौरंगी, कलकत्ता

लोकनायक श्री जयनारायण जी व्यास का नाम और उनके कार्य-कलापों के बारे में सुन तो बहुत रखा था, पर नजदीक से उन्हें समझने का और साथ रहने का मौका पहले बहरामपुर कांग्रेस में हुआ। उस समय स्वर्गीय श्री बसन्तलाल जी मुरारका भी जीवित थे। हम लोग जब एक स्थान पर भोजन करने के लिये बैठे श्री बसन्तलाल जी ने मेरा परिचय प्राकृतिक चिकित्सा के प्रेमी के नाते उनसे करवाया तो वे हँसकर कहने लगे कि हमारे राजस्थान में भी एक प्राकृतिक चिकित्सा प्रेमी हैं। वे जब किसी के यहां जाकर ठहरते हैं और उनसे कोई भोजन की बात करता है, तो वे कहते हैं कि मैं तो कुछ खाऊंगा नहीं। जब लोग बहुत आग्रह से पूछते हैं तो वे कहते हैं कि अन्न तो मैं खाता नहीं, दो गाजर, कुछ केले, ला दो। इसके अलावा कुछ और पूछने पर कुछ खजूर, बादाम, काजू मांगते हैं। एक-दो सन्तरे इसके अलावा कुछ और पूछने पर अंगूर, पिस्ते, किशमिश, जरद आलू आदि बताते हैं। दूध के बारे में जब पूछा जाता है तो कहते हैं कि आधा सेर दूध बहुत है। देहातों में जब लोग कहते हैं कि दूध तो गाय का है, आप जितना कहेंगे इन्तजाम हो जायेगा, तब गम्भीरता से कहते हैं कि दूध यदि घर की गाय का है तो एक सेर चलेगा।

श्री व्यास जी ने सारी की सारी बातें इस लहजे और मनोरंजक ढंग से कहीं कि हम सभी लोग ध्यानपूर्वक सुनते रहे और जब उन्होंने घर की गाय का है तो एक सेर चलेगा कहा तो सब कोई ठहाका मारकर हंसने लगे। मैं भी खूब हँसा। मनोरंजन करना उनका स्वभाव बन गया था और यह स्वभाव भी उनकी लोकप्रियता का एक प्रधान कारण था।

व्यास जी जब कभी कलकत्ता आते या अपने भ्रमण में रहते तो सात्विक और प्राकृतिक भोजन ही करते। वे अक्सर कहा करते थे कि लोगों की पार्टियों में जाकर चटपटा भोजन करने से पेट खराब होता है, इसलिये मैं पेट के साथ अत्याचार करके अपने कार्यों में बाधा उपस्थित करना नहीं चाहता।

व्यास जी के उठ जाने से देश की एक महान् निधि चली गई।

८

विनोदप्रिय व्यास जी

श्री चिरंजीलाल विनोदी, ७३/३० कूपरगंज, कानपुर (उत्तरप्रदेश)

राजस्थान के मुख्यमंत्री पद से मुक्त होने के थोड़े समय बाद ही आदरणीय व्यास जी से मिलने मैं जयपुर गया। उस समय वह स्टेशन के समीप रुंगटा महल में रहते थे। जाड़े का मौसम था। मैं प्रातः बड़ी जल्दी ही उनके पास पहुंच गया। मन में यह शंका थी कि शायद वे अभी तैयार नहीं होंगे। किन्तु वहां पहुंचने पर यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वे स्नान आदि से निवृत्त होकर दैनिक पत्रों को देखने में व्यस्त थे।

मैंने कुशल मंगल के बाद पूछा कि मास्टर जी ! बड़ी जल्दी तैयार हो जाते हैं। उन्होंने थोड़ी गम्भीर मुद्रा में उत्तर दिया, "भाई अब बुढ़ापा आ गया। इसलिये तैयार तो रहना ही है। न जाने किस क्षण बुलावा आ जाय और जाना पड़ जाय।" उनके इस उत्तर से मैं भी गम्भीर बन गया एवं प्रसंग बदलकर उनसे कहा, यदि अवकाश हो तो कभी चिड़ावा भी आने की कृपा करियेगा।

मैंने बात चालू रखते हुए पुनः कहा कि अब तो मुख्यमंत्री पद से भी अवकाश मिल गया और कुछ ऐसा संयोग है कि हमारे चिड़ावा का नम्बर भूतपूर्व होने के बाद ही आता है। उन्होंने हँसकर कहा कि "भाई मैं तो तब में और अब में कोई अन्तर नहीं पा रहा हूं। मेरे लिये तो सदा दिवाली-वसन्त, आठों पहर आनन्द।"

कुछ समय बाद हमारे क्षेत्र के विधायक श्री हजारीलाल जी शर्मा के आग्रह पर वह चिड़ावा पधारे। स्टेशन पर स्वागत के लिये बड़ी भीड़ थी। यथासमय ट्रेन आई। व्यास जी मुस्कराते हुए उतरे। हम लोगों ने देखा कि उनके एक हाथ पर पट्टी बंधी थी। गले की पट्टी के सहारे वह जख्मी हाथ का भार रोके हुए थे।

हम लोगों ने उनसे पूछा व्यास जी यह क्या हुआ। वे कहने लगे. "भाई, अमुक तालाब को देखने गये थे। तब कई युवक साथी लंगोट बांधकर नहाने के लिये कूद पड़े और मैं भी अपना लोभ संवरण न कर सका और कूदने लगा तो पांव फिसल गया चोट आ गई।" लम्बी सांस भर के उन्होंने यह शेर पढ़ा :

जवानी का मन था, बुढ़ापे का तन था।
उछलना भी वाजिब, फिसलना भी वाजिब॥

ऐसे विनोदी थे हमारे लोकनायक।

भाई जयनारायण जी व्यास के साथ मेरा बहुत पुराना प्रेममय सम्बन्ध रहा है। राजस्थान में वे अकेले ऐसे नेता थे, जिन्होंने भूखे रहकर व चने चबाकर, निरंकुश सामन्तशाही के साथ राजनीतिक संघर्ष किया। उनके सेवामय जीवन से महाराणा प्रताप की यह प्रतिज्ञा सहसा ही याद आती है कि "जो पत राखे धर्म की ताहि राखे करतार।" पीड़ित व शोषित जनता के प्रति उनके हृदय में भारी वेदना थी। उसके लिये कष्टमय जीवन बिताकर बड़े ही साहस और धैर्य के साथ सामन्तशाही को सदा के लिये खत्म करके ही दम लिया। वे राजस्थान के शेर थे। उनमें अनन्त गुण थे। राजस्थान के उन वीर पुरुषों में से थे, जिन्होंने, 'हैं अमर जो देश हित सब कुछ निछावर कर गये।' के कथन को मूर्त रूप दिया।

मैं १९३८ में दिल्ली के देहली कामर्शियल प्रेस का मैनेजर था। जब वे कभी दिल्ली प्रवास पर आते तब मेरे यहां अवश्य ही आते थे। वे सेठ आनन्दराज जी सुराणा के यहां ठहरा करते थे; परन्तु प्रतिदिन प्रातः काल प्रेस में आते, शौच-स्नान आदि से निवृत्त होकर नाश्ता करते और कुछ मिनट विनोद वार्ता भी होती। वे स्वभाव से बड़े विनोदी थे। अपने साथियों को हँसी मजाक की बातों से हँसा-हँसा कर लोट-पोट कर देते थे।

१०
नटखट व्यास जी

उनकी अपनी लेखनी से

अल्मोड़ा से श्री सन्तराम विचित्र के सम्पादकत्व में प्रकाशित 'नटखट' के १९३६ के जनवरी-फरवरी के संयुक्त अंक में व्यास जी ने अपने स्वभाव के सम्बन्ध में एक लेख लिखा था। तब वे दैनिक 'अखण्ड भारत' बम्बई के प्रधान सम्पादक थे। उसका शीर्षक था 'आऊं क्या'। वह लेख पढ़कर आज भी हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जाते हैं। उसको अविकल रूप में यहां दिया जा रहा है। व्यास जी ने लिखा था:

"यह बात सही है कि आधा दर्जन बच्चों का बाप होने का सौभाग्य मुझे प्राप्त है, पर मैं तो अब भी अपने को बच्चा ही अनुभव करता हूं। अच्छा ही है। यह बचपन बना रहे ताकि जवानी, बुढ़ापा और मौत देरी से आये। पर एक बात है, अब तक बचपन का छिछोरापन और खिलाड़ीपन तो मैं अपने में पाता हूं, लेकिन नटखटपन और शरारत का भयंकर ह्रास हो गया है। इससे जीवन में वह सुख नहीं,

जो बचपन में था।

"जोधपुर में मैं अपने एक मित्र के घर पर बैठा हुआ पत्थर की एक जाली में से सड़क पर चलने-फिरने वालों की खबर ले रहा था। मन में यही शरारत समाई हुई थी कि किसी की दुर्गति की जाय। सड़क के किनारे पर एक तालाब था। तालाब में स्त्रियां नहाया करती थीं। इसलिये जिस ओर मेरे मित्र का घर था, उसके सामने ही तालाब के किनारे पर एक चबूतरा था। एक लड़की आकर उस चबूतरे पर बैठ गई। उसके हाथ में गूंदी थी। वह यहां बैठकर गूंदी खाने लगी। उसे देखकर मुझे शरारत सूझी। उस तालाब में कई स्त्रियां गिर भी चुकी थीं और लोग कहा करते थे कि वहां कई 'भूतनियां' हैं। बस, मैंने 'भूतनी' बनने का निश्चय किया।

"आऊं क्या ?' बड़े ज़ोर से आवाज़ बनाकर मैंने लगाई। उसने ऊपर देखा, पर उसे कुछ भी नज़र न आया। कुछ ठहरकर ज्यों ही वह फिर गूंदी खाने लगी, कि मैंने फिर चीख लगाई, 'मुझे भी खिला।' बेचारी घबड़ाई और गूंदी वहीं छोड़कर दीवाल के अन्दर के दरवाजे से होकर तालाब पर पहुंच गई। इतने ही में मेरे सौभाग्य से और उस लड़की के दुर्भाग्य से एक भिखारिन उस सड़क पर से निकली। मैंने खिड़की खोली और उसे गूंदी उठाने के लिये इशारा किया। वह गूंदी उठाकर चली गई।

"कुछ देर बाद वह लड़की अन्दर से एक बुढ़िया को लेकर आई। गूंदी गायब देखकर दोनों को विश्वास हो गया कि यह 'भूत लीला' ही है। बुढ़िया बेचारी दो मिनट ठहरकर वापस चली गई। अब वहां वह लड़की अकेली ही रह गई। वह सारे मामले को गम्भीरता से सोच रही थी। इतने ही में मैंने फिर चीख लगाई, 'खा जाऊंगी।' बेचारी लड़की सिर पर पांव रखकर भाग गई। मैंने खिड़की खोलकर देखा, तो कम-से-कम सौ कदम तक तो वह इसी तरह घबड़ाहट में भागती हुई दिखाई देती थी। उस दिन मैं अपनी बहादुरी पर फूला न समाया, पर आजकल इस बात को अच्छी नहीं समझता।"

प्रकरण ४

पिता व गुरु का रूप

१

पितृतुल्य

सुश्री विनय लक्ष्मी सुमन, एम० एल० ए०, टेहरी गढ़वाल (उ०प्र०)

"मुझे बहुत खुशी होगी अगर तुम पूज्य बा की स्मृति में चलाये गये पुण्य कार्यों में अपने को लगा दो। बेशक उनसे पढ़ाई में क्षति हो सकती है, पर मैं पाठशाला की पढ़ाई को इतना महत्त्व नहीं देता, जितना कार्यक्षेत्र की पढ़ाई को।"

ये शब्द हैं, जिन्हें मैं कभी भुला नहीं सकती। ये शब्द उस महापुरुष के हैं, जिसे देश ने राजस्थान का निर्माता, रियासतों के स्वातन्त्र्य आन्दोलन के प्रमुख सूत्रधार तथा लोकनायक के रूप में देखा और सम्मानित किया। पर मैं तो दिवंगत श्री जयनारायण व्यास को केवल एक ही रूप में देखती और जानती थी। वह रूप था पिता।

जिस समय दुनिया में मेरा कोई नहीं रहा था और मैं यह नहीं जानती थी कि दूसरे दिन सूरज मेरे लिये उगेगा या नहीं। उस समय मेरे लिये अान्धकारमय इस समूचे संसार में केवल एक ऐसा व्यक्ति निकला, जिससे मुझे प्रकाश किरण के समान पिता का स्नेह मिला और मिला सांसारिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये वात्सल्यपूर्ण आश्वासन का अवलम्ब।

व्यास जी ने ऊपर के शब्द २६ अगस्त, १९४८ को जोधपुर से एक पत्र में लिखे थे। तब वे वहां के प्रधानमन्त्री थे और मैं आर्य कन्या गुरुकुल देहरादून में अध्ययन-अध्यापन दोनों कार्य साथ-साथ कर रही थी। इस संस्था में व्यास जी ने ही मुझे प्रविष्ट करवाया था और वहां के खर्चे की सारी व्यवस्था भी उन्होंने ही की थी।

जब मैं वह पत्र पढ़ रही थी, तब मेरी आंखों के सामने जोधपुर के प्रधानमंत्री का वह चित्र उपस्थित होता था, जब वह बस में पीछे की ओर की सीट पर बैठता था। भगवान् ने उसको सब कुछ दिया था, किन्तु पैसे नहीं दिये थे; और वह एक

पैसे का भी दुरुपयोग करना न चाहता था।

एक बार जब हम देहरादून से ऋषिकेश बस पर जा रहे थे और व्यास जी ने पिछली सीट का ही टिकट लिया, तब मैंने कुछ आश्चर्य और खेद प्रकट किया। उन्होंने मेरे दिल को रखने के लिये स्नेह भरे शब्दों में कहा कि "बेटी, सफर ही तो तय करना है, फिर आगे बैठें या पीछे, फर्क ही क्या पड़ता है। जब पीछे बैठने से कुछ पैसे बचाये जा सकते हैं, तो क्यों न बचाये जायं ?" यह थी उनकी सीख जो मेरे दिल में सहसा ही घर कर गई।

उसी पत्र में व्यास जी ने आगे लिखा था, "मैं स्वयं मैट्रिक ही पास हूं। कालेज जाने की तैयारी की थी, किताबें भी खरीद ली थीं, परन्तु असहयोग की आंधी में उड़ गया। पता नहीं कितने झपेटे मैंने खाये इस दुनिया में। कई जिम्मेवारी के कार्य करने का अवसर मिला। सब कुछ केवल अनुभव के आधार पर करता गया। कोई हर्ज नहीं अगर पाठशाला की पढ़ाई छूट जाय। इस समय अवसर है सेवा का; साधन भी मिलेंगे, और मेरा आशीर्वाद भी तुम्हारे साथ है।" यह थी प्रेरणा-भरी सीख उस महापुरुष की अपनी ऐसी अभागी बेटी को जिसका सब लुट चुका था। जिसके जीवन-साथी को स्वेच्छाचारपूर्ण अन्याय, अत्याचार व दमन के विरुद्ध जूझने के कारण पहले टेहरी जेल की चाहारदीवारी में नाना यातनाओं का शिकार बनाया गया और अन्त में लम्बे अनशन व रहस्यपूर्ण मृत्यु के बाद उसके अस्थि-पंजर को २३ जुलाई, १९४४ को जेठ-वैशाख की भयानक रात्रि में बोरे में बांध पास में बहती भागीरथी में डुबो दिया गया था। कैसा था वह वज्रपात मुझ सरीखी अबला पर !

पिता जी की ऐसी ही सीख ने टेहरी की एक ग्रामीण लड़की में समाज और देश के सेवा-कार्य पर न्यौछावर होने की प्रेरणा पैदा की। शहीद पति श्री देवसुमन ने एक ऐसी दुनिया की झांकी मुझे दिखाई थी, जिसमें अपना कुछ नहीं होता और सब राष्ट्र का होता है। लेकिन इस दुनिया में प्रवेश करने की शक्ति मुझे उस महान् व्यक्ति से मिली जिसकी कोशिश यह थी कि सुमन की भावना और सुमन की परंपरा किसी भी प्रकार मिटने न पाये। व्यास जी के वाक्यों ने मेरे दिल और दिमाग से वह दीनता व हीनता समूल नष्ट कर दी, जो उसकी अपर्याप्त शिक्षा, अपूर्णता और अनुभवहीनता के कारण पैदा हुई थी। आज अगर मैं विधायक के रूप में विगत सात-आठ वर्षों से समाज की थोड़ी-बहुत सेवा कर पा रही हूं तो केवल इसीलिये कि लोक-सेवा की कभी गुल न होने वाली लौ लोकनायक ने मेरे हृदय में जला दी थी और मुझे निर्भीक बनने का उपदेश दिया था।

मुझे वह दिन अच्छी तरह याद है कि जब व्यास जी अपने कुछ सहयोगियों के साथ देहरादून आये और लाला मेहरचन्द जी (बाबा जी) के यहां ठहरे थे। मैं भी उनके साथ थी। शाम का खाना तैयार करने की जिम्मेवारी मुझे सौंपी गई।

जब व्यास जी और सब, खाना खा चुके, तब उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया और कहा, "खाना तो बहुत अच्छा बना। कहो तुमको कितने नम्बर दिये जायं।" "मैं क्या कहूं खाना आपने खाया है, नम्बर आपको देने हैं। तो मैं कैसे कहूं कि आप मुझे क़ितने नम्बर दें।" मैंने कहा, और व्यास जी, बाबा जी आदि सभी हँस पड़े।

"तो सुनो विनय हम तुम्हें रुपये में सोलह आने या सौ फीसदी नम्बर देते हैं, क्यों है न ठीक?" व्यास जी ने कहा, और मैं रसोई की ओर बढ़ चली। मैं खाना पकाना तब तो क्या अब भी नहीं जानती हूं। जिसे स्वयं स्वाद का आभास न हो, वह पकवानों में स्वाद पैदा करना क्या जाने; और स्वाद मेरा मुझ में सुध पैदा होते ही समाप्त हो गया था। लेकिन तब भी नम्बरों वाली बात कही गई, अपनी बेटी का हौसला बढ़ाने का व्यास जी का यही तरीका था। अपने अनुभव से मैं कह सकती हूं कि यह तरीका अचूक और अत्यन्त प्रभावशाली सिद्ध हुआ, क्योंकि उस दिन से पाकशाला के प्रति मेरी दिलचस्पी बढ़ी।

उन्हें अपने सार्वजनिक जीवन में थपेड़े खाने पड़े, यह बात तो सर्वविदित है। लेकिन एक रियासत के प्रधानमन्त्री बन जाने के बाद भी कौटुम्बिक जीवन और उसके सुख उनके लिये नहीं के बराबर थे। यह तथ्य बहुत अधिक को मालूम नहीं।

वे सदैव चाहते थे कि अगर वे मेरे पास देहरादून न आ सकें तो मैं उनके पास जोधपुर जाऊं और उनके पास कुछ दिन ठहरूं। जब वे जोधपुर के प्रधानमन्त्री बन गये, तब उन्होंने मुझे अपने पास बुलाने के लिये अपनी एक धर्म बहन को भेजा। जब मैं जोधपुर पहुंची, तब वे वहां नहीं थे। कार्यवश दिल्ली गये हुए थे। वे दिल्ली से लौटे भी लेकिन दो दिन गुज़र गये। उनके दर्शन नहीं हो सके। तीसरी रात को जब उन्होंने खाना खा लिया, माता जी (श्रीमती व्यास) ने कहा कि विनय को जोधपुर आये कई रोज हो गये हैं। "अरे मैं भूल गया; इस समय वह है कहां?" व्यास जी ने पूछा, "यहीं इसी मकान में है और लड़कियों के साथ है। शायद अब सो गई होगी।" माता जी ने कहा।

"चलो-चलो उन्हें जगाओ विनय से अभी मुलाक़ात कर लें। फिर तो प्रातः काल मैं दौरे पर चला जाऊंगा।" व्यास जी ने कहा; और वे माता जी के साथ हम लड़कियों के कमरे में आ गये। मैंने उन्हें प्रणाम किया ही था कि उन्होंने कहा, "देखा बेटी, मन्त्री बनने के बाद भी संघर्ष ने मुझे नहीं छोड़ा। अब तो मैं अपना भी नहीं रहा। लेकिन कभी-कभी सोचता हूं कि अपना बनकर रहने की बात काम आये तो मैं अपना अहोभाग्य समझूंगा।"

व्यास जी जोधपुर और मारवाड़ के ही न होकर समूचे राजस्थान के निर्माता थे। और उसके मुख्यमन्त्री भी रहे। नहीं, वे इससे भी बढ़कर रहे। देश में जहां कहीं भी इन्सान ने अपनी आज़ादी के लिये संघर्ष छेड़ा, वे उसके प्रेरणा स्रोत बन गये। लेकिन मेरे लिये तो वे सदैव गुरु और पिता बनकर रहे। उन्होंने इस

हाड़ और मांस के चीथड़े को समाज सेविका के रूप में गढ़ा और यह उन्हीं के वात्सल्य का सुफल है कि मैं आज एक विधायिका के रूप में देश की कुछ सेवा करने में समर्थ हो सकी हूं। यह थी उनकी अद्भुत निर्माण कला, जिसे उनकी महान् साधना ही कहना चाहिए।

२
मेरे गुरु

श्रीमती कृष्णा भाटिया, जोधपुर (राजस्थान)

१९५२ की वात है। जनवरी में प्रथम आम चुनाव चल रहे थे। हमें जोधपुर में आये लगभग पांच ही वर्ष हुए थे। हमारे घर के पास सरदारपुरा में एक दिन कांग्रेस की ओर से आम सभा हो रही थी। उसमें बड़े-वड़े नेताओं के भाषण हुए। मैंने उसी दिन व्यास जी का भाषण सुना। उनके व्यक्तित्व और भाषण का मुझ पर ऐसा गहरा प्रभाव पड़ा कि मेरे मन में उनके प्रति सम्मान तथा श्रद्धा की भावना उत्पन्न हो गई। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह सच्चे देशभक्त और सर्वथा निःस्वार्थ नेता हैं। शेरे राजस्थान वह माने जाते थे। उनके त्याग, तपस्या और वलिदान की कहानियां तो मैंने पढ़ी और सुनी थीं। उन्होंने अपने भाषण में अपने विरोधी उम्मीदवार स्वर्गीय महाराजा हणुमन्तसिंह जी के प्रति वड़े प्रेम से कहा कि "वह तो मेरे मित्र का लड़का है और इसी नाते वह मेरा पुत्र है, इसका यह अर्थ नहीं कि हमारी आपस में व्यक्तिगत शत्रुता है।"

मेरे मन में भी उस सभा में कुछ बोलने की इच्छा हुई। मैं अपने पति से वात कर ही रही थी कि कांग्रेस कमेटी के प्रवन्धकों में से किसी ने कहा, "क्या आप दो-चार मिनट वोल सकती हैं।" उस दिन मैं बारह मिनट तक बोली। सव लोग वड़े ध्यान से सुनते रहे। लोगों को मेरा भाषण वहुत पसन्द आया। व्यास जी ने तो यहां तक कहा कि विदेशी नीति के विषय में जो आपने कहा वह तो मैं भी नहीं कह सकता था। यदि हमें पहले मामूम होता तो हम तुम्हें किसी जगह से चुनाव के लिये खड़ा करते।

◇ ◇ ◇

तीन-चार दिन लगातार मेरे भाषण होते रहे, चुनाव समाप्त हो गया। महाराजा हणुवन्तसिंह जी वहुत भारी वहुमत से निर्वाचित होकर भी हवाई विमान दुर्घटना में असमय और अचानक मृत्यु को प्राप्त हो जाने के कारण जनता की सेवा

न कर सके। राजस्थान विधान सभा में उनकी जगह खाली हो गई। व्यास जी ने मेरे पति से कहा, "हम आपकी पत्नी को चुनाव के लिये खड़ा करना चाहते हैं।" वे व्यास जी की बात को टाल नहीं सके। जब मैंने उनसे पूछा कि किस योग्यता पर आप मुझे टिकट दे रहे हैं, तो वे बोले कि जातिवाद के रोग से ग्रस्त राजस्थान में शायद बाहर के व्यक्ति और वह भी एक महिला का चुनाव लड़ना अच्छा ही रहेगा। उनका आदेश मुझे शिरोधार्य करना पड़ा।

◇ ◇ ◇

चुनाव में हारने का मुझे लेशमात्र भी खेद नहीं हुआ। मेरी जीत तो व्यास जी जैसे महान् व्यक्ति के साथ परिचय और उनका विश्वास सम्पादन करने के रूप में पहले ही हो गई थी।

◇ ◇ ◇

उनके साथ एक बार मैं हरिजन बस्ती में गई तो अनुभव किया कि वे सचमुच ही दरिद्रनारायण थे। दीन-हीन दुःखियों की दुःखभरी कहानी को ऐसे प्रेम से सुनते कि अपने को बिल्कुल ही भूल जाते थे। धर्म के विषय में भी उनके विचार बहुत ऊंचे और उदार थे। एक दिन हम उनके साथ श्री मंडलनाथ जी के मन्दिर में गये। मैंने पूछा कि आप आर्यसमाजी हैं या सनातनधर्मी। उन्होंने उत्तर दिया कि मेरा धर्म तो केवल इंसानियत है। वे अपने इस धर्म को अंत तक निभाते रहे।

◇ ◇ ◇

किशनगढ़ से चुनाव में जब व्यास जी को खड़ा किया गया, तो मैं भी वहां काम करने के लिये गई। मैं उनके सम्पर्क में जितना आती गई, मेरी श्रद्धा उतनी ही उनके प्रति बढ़ती गई। अति परिचय से पैदा होने वाली अवज्ञा मेरे हृदय में स्थान नहीं पा सकी।

गीता उनके जीवन में पूरी तरह उतारी हुई थी। कर्म करते हुए वे कभी फल की इच्छा नहीं करते थे। सुख-दुःख में समान रूप से प्रसन्न रहते थे। जब वे मुख्य-मंत्री के पद से हट गये तब वे अपने जसवन्त सराय के मकान में समाचार-पत्रों तथा पुस्तकों के अध्ययन में लगे रहते थे। उनको प्रायः पैदल जाते देख मेरे पति ने उनसे कहा कि मास्टर साहब आप गाड़ी के लिये फोन क्यों नहीं कर देते। हँसकर उन्होंने उत्तर दिया कि अपने पास दो टांगें जो हैं। हमारी तो यही वफादार सवारी है।

◇ ◇ ◇
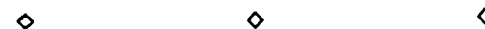
मेरे पति से वे एक दिन मिलने आये। उन्होंने बैठे-बैठे एक घटना सुनाई, जो कि मैं उल्लेखनीय समझती हूं। उन्होंने कहा, "जब मैंने मुख्यमंत्री रहते हुए अपनी पार्टी का अपने प्रति विश्वास परखने के लिये बैठक बुलाई, तब केन्द्र से सलाह दी गई थी कि इतनी जल्दी करने की आवश्यकता नहीं। मैं बिना पार्टी के विश्वास

के उसका नेता रहना नहीं चाहता था। मैं बैठक के दो दिन पूर्व किशनगढ़ जाकर अपने मकान में बैठ गया। मेरे कुछ सम्पन्न मित्रों ने आकर कहा कि यदि मैं अनुमति दे दूं तो कुछ वोट किसी प्रकार अपनी ओर खींच लिये जायं। उनका कहना यह था कि अच्छे काम के लिये यदि कोई बुरा साधन भी अपनाया जाय, तो बुरा नहीं है। मैंने उनसे कह दिया कि ऐसा कभी नहीं हो सकता। ऐसा किये जाने पर मैं एक व्यक्ति के सामने क्या उत्तर दूंगा। मेरे साथी मेरे मुंह की ओर देखने लगे और पूछने लगे कि वह व्यक्ति कौन है। मैंने उत्तर दिया कि तब 'जयनारायण व्यास' नाम के व्यक्ति को क्या उत्तर दूंगा।" यह सारा किस्सा सुनकर मेरी श्रद्धा उनके प्रति और बढ़ गई। मैं उनको अपना राजनीतिक गुरु मानने लग गई।

◇ ◇ ◇

उनकी भावनाएं बहुत ऊंची थीं। वे उखाड़-पछाड़ की राजनीति के योग्य नहीं थे। परिस्थितियों ने उनको उस में डाल दिया था। जब राजस्थान की जनता दोहरी गुलामी की जंजीरों में जकड़ी हुई थी, तब इस महान् व्यक्ति ने चट्टान की भांति सब तूफानों का सामना करके जनता के लिये अधिकार प्राप्त किये। कई बार जेल गये। घर-बार, सुख-ऐश्वर्य सबका त्याग किया। कोई भी लोभ-लालच उनको विचलित नहीं कर सका। चाहे वे उखाड़-पछाड़ की राजनीति में असफल रहे, परन्तु उनकी सच्चाई और ईमानदारी ही उनकी उस असफलता का कारण थे। उन्होंने अपनी आत्मा की पवित्रता को आजीवन बनाये रखा। उनके जीवन का प्रत्येक क्षण मानव की भलाई में ही बीता। ऐसे महान् व्यक्ति के लिये न केवल राजस्थान, प्रत्युत सारे ही देश को गर्व होना चाहिए।

३

मेरे साथी, मेरे पिता और मेरे गुरु

कामरेड श्री कल्याणसिंह, कामगार कुटीर, ब्यावर (राजस्थान)

भिखारियों को भी नहीं बख्शा

घटना काफी पुरानी है। शायद सन् १९३७-३८ की। मारवाड़ में भयंकर अकाल पड़ा था। आज के १९६३-६४ के अकाल के मुकाबले कम भयंकर नहीं था वह अकाल। प्रतिदिन ब्यावर होकर हजारों मवेशियों को लेकर सैकड़ों किसान-परिवार मारवाड़ से मालवे की ओर जाते थे। मारवाड़ के किसानों पर ऐसे भयंकर अकाल की काली छाया हो और शेरे राजस्थान निष्क्रिय रहे, यह मुमकिन ही

न था। जवानी जमा-खर्च तो मास्टर साहब को कतई पसन्द न था।

व्यावर में अकाल पीड़ितों की सहायता के लिये व्यापक जन-सहयोग लेना आवश्यक था। व्यावर के नागरिक, क्या धनी क्या गरीब, सभी उदार वृत्ति के हैं। सवाल यह था कि इस उदारता को कैसे इस्तैमाल किया जाय। कुछ कमेटियां बनाई गई। स्वयं सेवकों के जत्थे बनाये गये। कार्यक्रम बनाया गया। एक कार्यक्रम यह भी था कि एक मुट्ठी आटा हांडी में प्रतिदिन डाला जावे। स्वयं सेवक प्रत्येक हफ्ते घरों पर जावें और आटा इकट्ठा कर लायं। ताकि किसानों को गरम भोजन व्यावर में खिलाया जा सके और साथ में रास्ते के लिये कुछ आटा दिया जा सके। कार्यक्रम यह भी था कि प्रभावशाली व्यक्ति व्यावर के पड़ोस के गांवों में जावें और चारे की भिक्षा मांगें, ताकि मारवाड़ के मवेशियों को चारा दिया जा सके।

एक दिन की बात है। मास्टर साहब और मौलाना अतर मोहम्मद के साथ मैं भी स्वयंसेवक के रूप में गया था। सुबह-सुबह व्यावर से निकल पड़े। लगभग पांच साढ़े पांच बजे शाम तक कई गांवों में घूमे, चारा इकट्ठा किया। हमें खाना नहीं मिला। मौलाना के थैले में थोड़े चने, मूंगफली और गुड़ था। तीनों ने मिल कर खाया, किन्तु मेरी भूख मिटने के बजाय बढ़ गई। पैसे किसी के पास थे नहीं। मालूम नहीं उन दोनों की थकान और भूख से क्या स्थिति बनी, किन्तु मेरे पांव जवाब देने का नोटिस दे रहे थे। आखिर मैंने मौलाना से कहा कि मैं तो भूखा मर रहा हूं। अब चला नहीं जाता। मास्टर साहब ने सुन लिया। हम लोग एक कुएं के पास छाया में बैठ गये। थोड़ी ही देर के बाद कुछ भिखमंगों पर मास्टर साहब की नज़र पड़ी। वे लोग शहर से भीख मांगकर ला रहे थे। मास्टर साहब ने उन्हें बुलाया और पूछा कि आज क्या-क्या माल भीख में मिला है। भिखारियों ने जो व्यास जी को तथा मौलाना को जानते थे अपनी-अपनी झोलियां दिखा दीं। व्यास जी ने कहा कि हमें भी इन रोटियों में से कुछ खाने के लिये देना पसन्द करोगे। भिखारियों ने मज़ाक समझा और फैयाजदिली से कह दिया कि जो चाहो सो ले लो। भिखारियों की फैयाजदिली का व्यास जी ने फैयाजदिली से प्रयोग किया। हम तीनों ने पेट भर खाया।

भिखारियों ने व्यास जी की इस फैयाजदिली के लिये उनका आभार माना। मैंने भिखारियों की दानशीलता तथा व्यास जी की हृदय विशालता से उस दिन अविस्मरणीय सबक सीखा।

अटूट विश्वास

घटना शायद सन् ४५-४६ की है। मैं अपने घर गहरी नींद में सो रहा था। मेरी मां ने मुझे साढ़े पांच बजे ही जगाया और बोली,' दो-तीन तांगों में सामान भरे कुछ लोग बाहर खड़े तुम्हें आवाज दे रहे हैं। देख तो कहां के मेहमान आये हैं।" मैं

बाहर आया तो एकदम कुछ अजनवियों को देखा। तांगे वाले कह रहे थे यही हैं कामरेड साहब। एक भाई ने मुझे चिट्ठी दी। मैंने चिट्ठी पढ़ी और अपने काम की गम्भीरता को मैं समझ गया। बात यह थी कि मारवाड़ लोक-परिषद् गैर कानूनी करार दे दी गई थी। अंडर ग्राउंड आफिस का कारोबार चलाने की व्यवस्था तो अलग से कर ली गई थी किन्तु मारवाड़ राज्य लोक-परिषद् का रिकार्ड रखने और उसकी हिफाजत करने की ज़िम्मेवारी मुझ पर डाली गई थी। जोधपुर के पांच-छह हरिजनों के साथ चार वोरियों में भर कर वह सारा रेकार्ड मेरे पास भेजा गया था। मैंने तुरन्त इस रेकार्ड को हिफाजत की जगह पर रखवा दिया और आगन्तुक लोगों को विदा किया। व्यावर के सी० आई० डी० विभाग ने कई घरों व गलियों को सूंघा। वेचारे रेकार्ड की गन्ध भी न पा सके। कुछ ही दिनों वाद व्यास जी मिले। मैंने पूछा कि मास्टर साहब, मैं तो कम्युनिस्ट हूं और अब तो हम लोग कांग्रेस से भी इस्तीफा दे चुके हैं। आपने मेरे पर विश्वास करके लोक-परिषद का वहुमूल्य खजाना यह रेकार्ड कैसे भेज दिया। यह मेरे लिये तो गौरव की वात है, किन्तु क्या लोक-परिषद् के दृष्टिकोण से यह आपने ठीक किया ? व्यास जी ने कहा कि लोक-परिषद् की दृष्टि की वात छोड़, मैंने तो उस कल्याणसिंह पर भरोसा किया जो मेरे साथ वर्षों काम कर चुका है और जिस पर मुझे राजनीतिक तौर पर पूरा विश्वास था और अव भी है। यह वड़ी अच्छी वात है कि वह कल्याणसिंह आज साम्यवादी पार्टी में भी एक वड़ी ज़िम्मेवारी निभा रहा है।

१५१ रुपये में एक घंटे नेहरू की गालियां महंगी नहीं रहीं

घटना है, २३ सितम्बर, ४५ की। मध्यभारत राजस्थान ट्रेड यूनियन कांग्रेस का दूसरा अधिवेशन हमारे निमंत्रण पर २५ से २७ सितम्बर तक व्यावर में हो रहा था। उसके लिये राजस्थान एवं मध्यभारत के जाने-माने साम्यवादी तथा दूसरे मज़दूर नेतागण काफी संख्या में आये थे।

कांग्रेस के लगभग सभी चोटी के नेतागण जेल से छूट चुके थे। पंडित नेहरू जेल से छूटने के वाद देशव्यापी तूफानी दौरे के सिलसिले में व्यावर २३ सितम्बर, ४५ को आये। यह लाजमी था कि अजमेर-मेवाड़ के आस-पास की देशी रियासतों के नेता भी तव व्यावर आते।

पंडित जी को थैलियां भेंट करने की होड़ चल पड़ी। प्रत्येक संस्था पंडित जी को थैली भेंट करने की घोषणा कर रही थी। हमने भी टैक्सटाइल लेवर यूनियन की ओर से १५१ रुपये की थैली भेंट की। पूज्य स्वामी कुमारानन्द जी मंच पर वैठे शेख अव्दुल्ला से मज़ाक कर रहे थे। पंडित जी तथा स्वामी जी के वीच भी ऊंचे दर्जे की व्यंग्यभरी मजाक हो गई। पंडित जी को अपने नव्वे मिनट के जोशीले भाषण के साठ मिनट हम लोगों व कम्युनिस्ट पार्टी को गालियां देने और आलोचना करने में खर्च करने पड़े। जेल से छूटने के वाद कम्युनिस्ट विरोधी पहला

भाषण पंडित जी ने ब्यावर में ही दिया था। मालूम नहीं स्वामी जी की मंच पर की मौजूदगी से प्रेरणा पाई या हमारी ट्रेड यूनियन कांग्रेस के जलसे की सूचना से।

दूसरे दिन शहर में हमारे प्रति अजीब प्रतिक्रिया होनी शुरू हुई। व्यास जी से जब कुछ मनचलों ने पूछा कि पंडित जी के कम्युनिस्ट विरोधी भाषण पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है, तो उन्होंने कहा कि नेहरू जी जैसे राष्ट्रीय नेता को भी अगर अपने नब्बे मिनट के भाषण में से साठ मिनट किसी पार्टी के खिलाफ बोलना पड़े, तो मानना होगा वह जनता में अपनी जड़ें गहराई से जमाये हुए है। लेकिन साम्यवादियों को १५१ रुपये में साठ मिनट की पंडित जी द्वारा मिली गालियां और आलोचना कतई महंगी नहीं है।

भौजी (भाभी) की भेंट

मेरी दिनचर्या यह थी कि मैं सुबह छह-साढ़े छह बजे घर से मिल गेटपर चल देता और एक बजे घर आता। भोजन आदि से निवृत होकर दो-अढ़ाई बजे आफिस में पहुंच जाता। वहां से रात को दस-साढ़े दस बजे वापस घर लौटता। एक दिन की बात है कि व्यास जी दिन में लगभग डेढ़ बजे घर पहुंचे। मैं स्नान करके खाना खाने बैठा ही था कि उनकी आवाज़ सुनी। आते ही उन्होंने मां को हुक्म दिया "भौजी एक थाली में मेरे लिये भी खाना जल्द लगा दो।" और मेरे पास आकर बैठ गये। मैं और मेरी मां दोनों सकपका गये, क्योंकि हमारे घर का खाना नितान्त निम्न स्तर का था। जौ की रोटी, बिना छौंकी दाल और प्याज। व्यास जी ने जब खाना शुरू किया तब खाने की तारीफ के पुल बांध दिये। खाना खाने के बाद मेरी किताबों की अलमारी का निरीक्षण किया और जब जाने लगे तो मेरी मां ने अपने स्वभाव के अनुसार व्यास जी को भेंट देनी चाही। सब जमा-पूंजी इकट्ठी करने के बाद भी चार-आने से ज़्यादा दौलत नहीं जुटा पाई, तो मानसिक वेदना होते हुए भी अपनी जमा-पूंजी चार या आठ आने मां ने व्यास जी को भेंट कर दिये और ज़्यादा भेंट न दे सकने के लिये क्षमा मांग ली। व्यास जी ने कहा, भौजी, ये पैसे तो बहुमूल्य हैं। इन पैसों से तो सरकार से लड़ने के लिये काफी सामान खरीदा जा सकता है और तुम्हारा पुत्र कल्याणसिंह भी तो अब भेंट की ही पूंजी है। यह केवल तुम्हारी ही नहीं पूरे राजस्थान की सेवा करेगा और करता रहेगा। न मालूम क्या-क्या बखान मेरे बारे में किये गये, जिन्हें सुनकर मेरी मां अपने आनन्द-उल्लास के आंसू नहीं रोक सकीं। व्यास जी जाते समय वह भेंट की रकम मेरी बहन को दे गये।

अगाध प्रेम

किसी भी सार्वजनिक कार्यकर्त्ता के जीवन में वे घड़ियां बड़ी कठिन होती हैं, जब एक ओर घर में कंगाली हो और दूसरी ओर विरोधी पार्टियां उसकी राजनीतिक मान्यताओं पर करारी चोट करती हों। ऐसे समय अगर कार्यकर्त्ता को

किसी उचित मार्गदर्शक नेता से सहानुभूति न मिले, तो उसकी राजनीतिक निष्ठाओं की वही स्थिति होती है, जो तूफान में किश्ती की होती है।

मेरे जीवन में भी सन् ४६ में ऐसी ही स्थिति पैदा हुई थी। घर में कंगाली तो थी ही। कांग्रेस के चोटी के नेताओं तथा हिन्दी समाचार-पत्रों का कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति लगातार कुत्सित प्रचार होने से मुझमें गहरी मायूसी पैदा हो रही थी। कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति अटूट आस्था, उसकी नीतियों में पूरा भरोसा और सन् ४२ के बाद की पार्टी की रीति-नीति पर पूर्ण निष्ठा होते हुए भी, जीवन में निराशा आ रही थी। व्यास जी को दिल का हाल और घर की स्थिति लिखी। दिमागी परेशानियों से परिचित कराया। पत्र का जवाब तो नहीं आया, किन्तु मौखिक सन्देश आया और वह बड़ा प्रेरणाप्रद सिद्ध हुआ।

इसके बाद व्यास जी जब भी ब्यावर आते मेरे आफिस में ठहरते थे। मुझे उनके इस व्यवहार से काफी परेशानी होती थी, क्योंकि आफिस में बिस्तर की कतई व्यवस्था नहीं थी। घर पर ऐसे बिस्तर थे नहीं कि उन्हें आफिस में लाया जा सके। मैं व्यास जी से कहता कि "मास्टर साहब आपको यहां बेहद असुविधा होती है, शहर में सैकड़ों मित्र आपके हैं। वहां रात में ठहरने से आपको ज़्यादा सुविधा होगी।" तो व्यास जी कहते कि ब्यावर में तेरे अलावा कोई अन्य कल्याण-सिंह नहीं है। यहां फटी दरी तथा पुराने अखबारों का तकिया जो मजा देता है, उसमें तेरे साथ दो-चार घंटे की चर्चा सभी सुविधाओं के मुकाबले मुझे ज़्यादा सन्तोष प्रदान करती है।

एक रोज़ मैंने व्यास जी से पूछा कि मास्टर साहब, पंडित जी और कांग्रेस के सभी चोटी के नेता कम्युनिस्ट पार्टी को देशभक्त नहीं मानते और अब तो हमें गद्दार कहा जाने लगा है। फिर भी आप मेरे प्रति इतना प्यार व स्नेह रखते हैं। क्या यह आपके राजनीतिक जीवन के लिये ठीक है? व्यास जी ने कहा कि जिस पार्टी में कल्याणसिंह है, जिस पार्टी में स्वामी कुमारानन्द, राधाकिशन बोहरा 'तात' तथा 'ताया' हैं, वह पार्टी देश के साथ गद्दारी करने वालों की नहीं हो सकती। यह बात जुदा है उनकी और हमारी नीतियों में ताल-मेल नहीं है। कांग्रेस की नीतियों का समर्थन करने वाले राजनीतिक व सामाजिक दलों या व्यक्तियों को अगर गद्दार मान लिया जाय तो बहुत बड़ा बहुमत गद्दारों की सूची में आ जायगा। कांग्रेस की नीतियों का और वह भी कांग्रेस की अधिकृत नीतियों का पूर्ण समर्थन करने वाले लोग एकदम भारी अल्पमत में पड़ जायेंगे। देशभक्ति की कसौटी यह नहीं है कि कौन-सा दल या पार्टी कांग्रेस की नीति को मानते हैं और उस पर अमल करते हैं; बल्कि सच्ची कसौटी यह है कि देश को आज़ाद कराने और किसान मजदूर, मध्यवर्गीय जनता के राजनीतिक व आर्थिक हितों की रक्षा करने के लिये कौन क्या करता है। कम्युनिस्ट पार्टी के लोग मज़दूरों

में खास तौर से तथा किसानों में मामूली तौर पर उनके आर्थिक हितों और राज-नीतिक हितों की रक्षा के लिये काम करते हैं। ये कैसे गद्दार हो सकते हैं ?

मैं तो कल्याणसिंह के पास इसीलिए आता हूं कि वह कम्युनिस्ट है तथा उसके मौजूदा विचार बनाने में मेरा कुछ-न-कुछ हाथ रहा है। ऐसे थे व्यास जी, मेरे मास्टर जी, जिनसे मैंने साथी जैसा विश्वास पाया, पिता जैसा प्यार पाया और गुरु जैसी शिक्षा पाई।

४

गुरु के चरणों में

श्री तारकप्रसाद जी व्यास, जोधपुर (राजस्थान)

एक लम्बा समय बीत चुका है। करीब तैंतीस वर्ष पूर्व। मैं जब एक नन्हा-सा बच्चा था। बाल-सुलभ भावना या जिज्ञासा से अथवा कुतूहलवश एक दुबले-पतले व्यक्ति को निहारने लगा। उस व्यक्ति के इर्द-गिर्द काफी लोग थे। मेरे मकान के पास वाले चौक में खड़े गीत गा रहे थे। "अजब हैरान तमाशे रे ओ कई राशो रे" चौक के पास वाले मकानों की खिड़कियों से औरतें झांक रही थीं। मैं इस तमाशे को देखने को कुछ समय खड़ा रहा। गीत समाप्त हुआ और वह गीत मंडली दूसरे मोहल्ले की ओर चल दी। मैं भी उनके साथ-साथ चलने लगा। मैं क्यों उनके पीछे-पीछे जा रहा था ? शायद उस समय मुझे मालूम न हो सका और आज भी उसका पूर्ण विश्लेषण नहीं कर सकता। बस, मुझे इतना ही याद है कि उस गीत मंडली के पीछे-पीछे चलने वालों में से एक ने दूसरे को कहा, "चले हैं समाज सुधार करने।" होली के त्यौहार पर अपशब्द नहीं गायेंगे तो क्या हरि-कीर्तन करेंगे।" मुझे उसके उस व्यंग्य पर गुस्सा आ गया। मैं बोल उठा, "क्या समाज-सुधार बुरा है ?" उसने मुझे फटकारते हुए कहा, "जा ! जा ! कह दे अपने व्यासिये को पहले अपना घर तो सुधार ले।"

उस दिन मुझे मालूम हुआ यही व्यास जी हैं जो नवयुवक मंडल के जरिये समाज-सुधार में लगे हैं। मैं उनके व्यक्तित्व की ओर आकर्षित हुए बिना न रह सका। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि वही दिवस था जिसने मेरी सुकुमार भावनाओं को झकझोर दिया। मुझे भी समाज सुधार में अपना योगदान देने पर विवश कर दिया। मैं मन-ही-मन व्यास जी को अपना गुरु मानने लगा। धीरे-धीरे मैं समाज-सुधार के अर्थ को समझने लगा और समाज तथा व्यक्ति के सम्बन्धों का

विश्लेषण करने लगा। मैं भी नवयुवक मंडल का सदस्य बन गया।

◇ ◇ ◇

मारवाड़ राज्य लोकपरिषद् के सम्बन्ध में लम्बे निर्वासन के बाद व्यास जी जोधपुर लौटे। मेरे दिल में मिलने की बड़ी उत्कंठा थी। मैं स्टेशन पर उनके स्वागत के लिये पहुंचा। उन्होंने मुझे देखते ही पहिचान लिया और कहा, "अरे तारक, तुम तो काफी बड़े हो गये हो।" उन्होंने पिता तुल्य भावना से ये शब्द कहे। मैं कुछ उत्तर न दे सका। व्यास जी के पिता का देहावसान हो चुका था। फिर भी मुझे उनके मुंह पर किसी तरह का विषाद दीख नहीं पड़ा। मैं हर रोज़ उनके घर जाया करता था। उन्हीं दिनों राधाकिशन 'तात' बालकिशन बोहरा 'भाया जी', मथुरा-दास माथुर, छगनलाल चौपासनीवाला से मेरी घनिष्टता हो गई। हम सब व्यास जी को अपना गुरु मानते थे। लोकपरिषद् का कार्य किया करते थे। स्वतन्त्रता के बारे में विचार-गोष्ठी किया करते थे। व्यास जी के निर्देशानुसार प्रत्येक कार्य में जुट जाते। गुरु पूर्णिमा को व्यास जी का पूजन किया करते। उन्हीं दिनों व्यास जी के व्यक्तित्व को पूर्णतः अपनी योग्यतानुसार पहिचानने व समझने का अवसर मिला। व्यास जी चहुंमुखी प्रतिभा के स्वामी थे। वे एक संगीतज्ञ, नृत्यकार, राजनीतिज्ञ, समाजसुधारक तथा राजनीतिक आन्दोलन के विज्ञ संचालक थे। उनके विशाल व्यक्तित्व के सामने हम सभी नतमस्तक हुए बिना नहीं रह सके और उनके सामने सिर ऊंचा करके कभी कुछ कहने की हिम्मत न हुई। गुरु के साथ ही वे हमारे पिता भी थे। राजनीतिज्ञ पैदा हो सकते हैं लेकिन बहुप्रतिभासम्पन्न व्यक्ति कभी-कभी ही पैदा होते हैं। व्यास जी उन्हीं में से एक थे।

◇ ◇ ◇

आज जब भी मैं किसी मानसिक पीड़ा का अनुभव करता हूं, तब व्यास जी की स्मृति ताजी हो जाती है। वह दिन याद आ जाते हैं जब व्यास जी गुरु के रूप में हमें ज्ञान-गंगा से स्वच्छ तथा पवित्रता के आदर्शों की शिक्षा देते तो दूसरी ओर हमसफर की तरह जीवन की थकान को मिटाने में सहायता देते। व्यास जी पार्थिव शरीरधारी महा मानव थे।

◇ ◇ ◇

अपने गुरु के चरणों में नतमस्तक होने की आज भी इच्छा हो जाती है। दूर तक दृष्टि दौड़ाने पर व्यास जी के समान कोई दूसरा दीख नहीं पड़ता।

५

युवकों के प्रकाश-स्तम्भ

श्री जगन्नाथ शर्मा एडवोकेट, व्यावर (राजस्थान)

साइमन कमीशन का जब दौरा चल रहा था, तब मैं वकालत पास करके व्यावर आया और अपना धन्धा शुरू किया ही था कि कांग्रेस के निश्चय के अनुसार उसका वहिष्कार किया गया। व्यावर में भी विरोध सभा का आयोजन किया गया। व्यास जी व्यावर में ही रहते थे और तब यही उनका कार्यक्षेत्र था। मैं अल्प आयु का अनुभवहीन नवयुवक था। व्यास जी मेरे कार्यालय में आये और विरोध सभा की अध्यक्षता करने का मुझसे अनुरोध किया। मैं उनकी बात सुनकर अचम्भित रह गया। उन जैसे योग्य और अनुभवी राजनीतिज्ञ की उपस्थिति में मेरे जैसे अनुभवहीन नवयुवक का उस महत्त्वपूर्ण सभा का अध्यक्ष पद ग्रहण करना कोई शोभा की बात नहीं थी। मेरे लिये वह अनधिकार चेष्टा ही थी। मैंने उनसे बार-बार क्षमा चाही और प्रार्थना की कि सभा में जाकर मैं अपने विचार रख दूं, इसकी आज्ञा प्रदान करें। अध्यक्ष पद वे स्वयं ग्रहण करें अथवा किसी अधिक आयु वाले विद्वान् या पुराने कार्यकर्त्ता से सुशोभित करावें। वे न माने। हम नवयुवकों में उनके प्रति इतनी श्रद्धा थी कि उनकी आज्ञा का उल्लंघन करना बड़ा अप्रिय लगता था। अन्त में मुझे झुकना पड़ा और उनकी आज्ञा स्वीकार करनी पड़ी। मुझे अनुभव हुआ कि वे नगर के युवकों को किस प्रकार चुन-चुन कर आगे लाये और उनमें देशभक्ति का संचार कर उनको देश सेवा के मार्ग पर अग्रसर किया। उन दिनों व्यावर के अनेक युवक इसके लिये उनके कृतज्ञ हैं। उनके जीवन में इसी प्रकार के अनेक उदाहरण मिलते हैं, जब कि स्वयं अपने को पीछे रखकर वे होनहार युवकों को प्रकाश में लाये।

जैसा वे दूसरों को उपदेश देते थे, वैसा ही स्वयं आचरण करते थे। 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे, जे आचरहिं ते नर न घनेरे' की कहावत उन पर लागू नहीं होती थी। इसी कारण अपने समय के अनेक युवकों को उन्होंने आकर्षित किया और अपने कर्त्तव्य-पालन के लिये प्रेरित किया। गीता के दूसरे अध्याय में श्रीकृष्ण भगवान् ने कहा है, "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन:" व्यास जी ने इसी के अनुसार अपने सारे जीवन में कर्त्तव्य पालन को ही अपना अधिकार माना और फल की कभी इच्छा नहीं की।

व्यास जी का जीवन युवकों के लिये सदैव प्रेरणाप्रद रहेगा।

६

मेरे पथप्रदर्शक

श्री रावतमल जी पारीक, बीकानेर होटल, जयपुर (राजस्थान)

लोकनायक श्री जयनारायण जी व्यास के प्रति मेरा आकर्षण छात्रावस्था में ही हो गया था, जब में 'मोहता मूलचन्द विद्यालय' का एक छात्र था। व्यास जी स्वर्गीय मनीषी श्री रामगोपालजी मोहता के यहां शिक्षक का काम करते थे। मोहता मूलचन्द विद्यालय की स्थापना मोहता जी ने अपने अनुज श्री मूलचन्दजी मोहता की स्मृति में की थी। इसलिए व्यास जी विद्यालय में जब-जब आते, हम छात्रों के साथ कुछ ऐसे घुलमिल जाते, जैसे कि वे हमारे ही साथी हों।

बीकानेर महाराज ने १९३२ में अपने यहाँ राजद्रोह व षड्यंत्र का एक मुकदमा सर्वश्री स्वामी गोपालदास जी, खूबराम जी सराफ, सत्यनारायण सराफ, चन्दनमल जी बहड़ और सोहनलाल शर्मा आदि पर चलाया। व्यास जी उस मुकदमे की देख-रेख करने के लिये बीकानेर पधारे। बीकानेर जन-जागृति के जनक बाबू मुक्ताप्रसाद जी और बाबू रघुवरदयाल जी गोयल मुकदमे की पैरवी कर रहे थे। उनके द्वारा तब व्यास जी से पहला सार्वजनिक परिचय हुआ। मेरे सार्वजनिक जीवन का प्रारम्भ भी यहीं से हुआ समझना चाहिए। समय-समय पर उनसे मिलना-जुलना होता रहा और मैं उनके आदेशानुसार उनके पथप्रदर्शन में काम करता रहा। १९४२ के शुरू में जब व्यास जी ने जोधपुर में उत्तरदायी शासन के लिये आंदोलन का सूत्रपात किया और वे अपने सब साथियों के साथ गिरफ्तार कर लिये गये। तब मैं बाबू रघुवरदयाल जी गोयल तथा कुछ साथियों के साथ उनसे मिलने जोधपुर गया। वहाँ उनसे मिलने का प्रयत्न किया, परन्तु अधिकारियों ने मिलने की अनुमति नहीं दी। श्री द्वारकादास पुरोहित के कार्यालय में जाकर हम स्वर्गीय श्री द्वारकानाथ जी कचरू और श्री कन्हैयालालजी वैद्य से मिले। वे दोनों वहां आंदोलन के सम्बन्ध में पधारे हुए थे।

हम वहां से ऐसी स्फूर्ति और प्रेरणा लेकर लौटे कि २२ जुलाई, १९४२ को हमने बीकानेर राज्य प्रजापरिषद् की स्थापना की। सौभाग्यवश यही तारीख मेरे जन्म की थी और मेरे ही घर पर परिषद् की स्थापना की गई थी। फिर तो संपर्क दिन-पर-दिन बढ़ता गया और उनके परामर्श तथा प्रेरणा से सारा काम चलता रहा। इस सार्वजनिक सम्बन्ध के कारण मैं उनके इतने निकट सम्पर्क में आ गया कि उनका मुझे पितृवत स्नेह प्राप्त हो गया और मैं अपने को पुत्रतुल्य मानने लगा।

जब कभी उनसे मिला, तब हमेशा ही उनको मस्त और फक्कड़ पाया। मुझमें जो थोड़ी बहुत मस्ती तथा फक्कड़पन पैदा हुआ, उसको उनके सम्पर्क की ही देन

मानता हूं। उनका मुझ पर कुछ ऐसा स्नेह रहा कि वे जब भी बीकानेर पधारते, तब किसी भी जगह भोजन के लिये निमंत्रित होने पर मुझे अपने साथ अवश्य ले जाते। यहां तक कि राजस्थान के मुख्यमंत्री की हैसियत से बीकानेर पधारने पर भी किसी भी जगह भोजन का निमंत्रण पाने पर मुझे नहीं भूलते थे। मुझे मिठाई का बहुत शौक था और भरपेट खाना खा लेने के बाद भी मिठाई सामने आने पर मैं अपना सन्तुलन खो बैठता था। एक बार नागौर में मैं उनके पास गया, वहां बाजरे की रोटी और ग्वार की फली का ही खाना बना था। उसकी याद करते हुए व्यास जी प्रायः यह कहा करते थे कि इसने हमारे साथ रूखी रोटियां खाई हैं, तो आज यह मिठाई क्यों न खाये। इस तरह मिठाई खाने को वे हमेशा एक विनोद बना देते थे और मैं भी उनसे प्रोत्साहन पाकर अपनी हिम्मत से कुछ ज़्यादा ही खा जाता था। एक दिन स्वास्थ्य कुछ ठीक न होने से मैं उनके साथ खाने को नहीं गया, तब वे राजस्थान के मुख्यमंत्री थे और मुख्यमंत्री की हैसियत से ही उनके सम्मान में उस भोज का आयोजन किया गया था। मुझे वहां उपस्थित न देख मेरे घर गाड़ी भेज मुझे बुलाया। खाना समाप्त हुआ ही था कि व्यास जी ने मेरी ओर संकेत करते हुए कहा कि अभी रसगुल्लों का नम्बर तो बाकी है। मैंने कहा, "मंगा लीजिए।" मैंने रसगुल्ले खाने शुरू किये कि उपस्थित मित्रमंडली अचरज में पड़ गई। स्थानीय सरकारी अस्पताल के डाक्टर भी वहां उपस्थित थे। मुझे रसगुल्लों पर हाथ साफ करते देख वे बोले कि, "इतना खाने के बाद रावतमल जरूर बीमार पड़ेगा और फिर हमें तंग करेगा।" व्यास जी को तो मेरी खुराक का पता था। उन्होंने कहा कि इनको मत छेड़ो नहीं तो ये इतना ही और खाने बैठ जायेंगे। दूसरे दिन डाक्टर साहब मिले तो मैंने उनसे कहा कि देखिये मैं बिलकुल तन्दुरुस्त हूं। आपको मेरी वजह से कोई कष्ट नहीं उठाना पड़ा। वे झेंपकर रह गये। व्यास जी का मुझ पर ऐसा ही स्नेह व कृपा थी कि वे बीकानेर आने पर मुझे अवश्य याद करते थे। मैं १९५२ से ५४ तक बीकानेर नगरपालिका का अध्यक्ष रहा। व्यास जी राजस्थान के मुख्यमंत्री की हैसियत से केन्द्रीय गृहमंत्री डा० कैलासनाथ काटजू के साथ बीकानेर के दौरे पर आये। शहर की सड़कों की हालत बहुत बुरी थी। मैंने दोनों को शहर में घुमाया और नगरपालिका के अभिनन्दन समारोह में सड़कों की मरम्मत के लिये पैसे की कमी बताते हुए व्यास जी से सरकारी सहायता के लिये अपील की। उन्होंने तत्काल मेरी अपील को स्वीकार कर लिया और सहायता का आश्वासन दे दिया। मुझे तो ऐसा लगा, जैसे कि उन्होंने मेरे प्रति स्नेहवश मुझ पर ही कृपा की थी।

अगस्त-सितम्बर १९६० में मैंने नोखा से राजस्थान विधानसभा का उप-चुनाव लड़ा था। उसमें मेरी सफलता पर व्यास जी ने अपने दैनिक अंग्रेजी पाक्षिक 'पीप' में एक विशेष टिप्पणी लिखी थी। 'पीप' में वे प्रायः राजस्थान के सम्बन्ध

में आलोचनात्मक टिप्पणियां ही लिखा करते थे। उनकी वह प्रशंसात्मक टिप्पणी मैं कभी भूल नहीं सकता, जिसमें उन्होंने मेरे प्रति विशेष स्नेह और कृपा का परिचय दिया था।

बीकानेर में गेहूं आंदोलन ने बड़ा तीव्र रूप धारण कर लिया था और तीन सप्ताह शहर में हड़ताल भी रही थी। तब व्यास जी मुख्यमंत्री थे और बीकानेर में उनके प्रति तीव्र रोषपूर्ण वातावरण पैदा हो गया था। मुझे जयपुर से टेलीफोन कर यही हिदायत देते रहे कि मैं गलत तत्त्वों से बचा रहूं। इस प्रकार मैंने तो हमेशा व्यास जी को अपना पथप्रदर्शक ही माना और उनके आदेशानुसार काम करता रहा। उनके अभाव में सार्वजनिक जीवन बिलकुल नीरस ही जान पड़ता है।

प्रकरण ५

जैन समाज व जैन गुरुकुल

१

अध्यात्म पृष्ठभूमि

श्री चैतन्य जी (मुनि श्री चुन्नीलाल जी महाराज) लालगंज, मिर्जापुर (उत्तरप्रदेश)

"होनहार विरवान के होत चीकने पात।" आज से करीब पैंतीस साल पूर्व पाली मारवाड़ में होली के त्योहार पर मैं जैन मुनि के रूप में आम व्याख्यान में यह उपदेश दे रहा था कि नाथूराम जी की वीभत्स मूर्तियां न वनें और वुरे संस्कारों से वालकों की रक्षा हो। सैकड़ों की तादाद में श्रोता उपस्थित थे। मैंने ऐसी वीभत्स मूर्तियों को हटाने वाले वीर युवकों के दल की मांग की और कई युवक खड़े हो गये।

इस सभा में श्री जयनारायण व्यास जोधपुर से यह देखने आये थे कि समाज-सुधारक जैन मुनि क्या कहते हैं। श्री व्यास ने इसी सभा में समाज-सुधार पर ओजस्वी व्याख्यान दिया। जनता व मुझ पर उसका वहुत प्रभाव पड़ा। व्याख्यान के पश्चात् व्यास जी मुझसे मिले। जैसे पूर्व जन्म के कोई साथी ही हों; ऐसा स्नेह प्रकट करते हुए मेरे सहायक लेखक वनकर मेरे साथ पैदल यात्रा शुरू कर दी।

पाली मारवाड़ के पुराने विचार वाले समझदार लोगों ने नाथूराम जी की मूर्ति की रक्षार्थ उसके चारों ओर दीवारें चिन लीं और वीभत्स मूर्ति को छिपा दिया।

श्री जयनारायण जी उस वक्त युवक थे। वुद्धि, स्फूर्ति, सूझ-वूझ, लेखनकला, और वक्तृत्व आदि कला उन्हें सहज ही प्राप्त थीं।

राजनीतिक व आध्यात्मिक पुस्तकें—

१. मोक्ष की कुंजी भाग १-२

२. वालगीत

३. शराव निषेध (मय चित्र व गाने)

आदि करीव पांच-सात पुस्तकें उन्होंने मेरे साथ मिलकर लिखने व छपवाने की व्यवस्था की। गांवों में पैदल घूमे। बच्चों को पढ़ाया। तपश्चर्या में मुझे भी हराया। व्यावर में जैन गुरुकुल जैन समाज ने खोला था। उसमें प्रधान अध्यापक का काम आपको दिया गया। पढ़ाने में इतने कुशल थे, कि ब्रह्मचारियों व विद्यार्थियों को हँसाते-खिलाते हुए पढ़ाते थे और सभी छात्र आप पर वड़ी श्रद्धा रखते थे। वे सहसा ही जैन गुरुकुल व्यावर के प्राण बन गये। स्व० श्री मणिलाल कोठारी ने व्यास जी को मुझसे भिक्षा में लेकर अपने साथ कर लिया। व्यावर में एक दिन वापू के राष्ट्रीय आन्दोलन के गुजरात के निष्ठावान प्रमुख सहायक, कुबेर भंडारी, स्वर्गीय श्री मणिलाल कोठारी मेरे पास आये और विविध राष्ट्रीय वार्तालाप के पश्चात् बोले :

"आज मैं आपसे श्री जयनारायण व्यास को भिक्षा में देने के लिये याचना करने आया हूं। 'तरुण राजस्थान' पत्र चलाने के लिये उनकी सख्त जरूरत है।" एक महान् व्यक्ति की, विशिष्ट कार्य के लिये योग्य व्यक्ति की मांग उचित जानकर सहर्ष व्यास जी को जैन गरुकुल से मुक्त करके 'तरुण राजस्थान' पत्र के संपादन कार्य के लिये दे दिया गया।

जैन समाज की भक्ति

व्यास जी की ऐसी योग्यता थी कि उन्होंने जैन समाज के भाइयों को अपना इतना भक्त बना लिया कि 'तरुण राजस्थान' व अन्य सेवा करते रहने पर भी उनकी तथा उनके उस पत्र की सभी आर्थिक आवश्यकताएं कई वर्षों तक पूर्ण होती रहीं।

निर्लोभी व्यास

उस समय व्यास जी पचास रुपया माहवार लेते थे। वह रकम भी वे जहां तक मुझे स्मरण है 'तरुण राजस्थान' पत्र के सहायक संपादकों श्री अचलेश्वर भाई आदि में बांट देते थे।

सत्ताधारी व्यास

कांग्रेस के अधिवेशन पर ग्राम उद्योग प्रदर्शनी जनता के लिये दर्शन की चीज थी। परिवर्तन होता है, मुनिवेष बदलकर मैं ग्राम सेवक वन गया। मैं ग्राम सेवक और व्यास जी राज्यपद पर आसीन थे।

हड्डी खाद प्रक्रिया

प्रदर्शनी में मैं यह वता रहा था कि हड्डी बटोर लो, भून लो, कूट लो, छान लो। एक दिन में वढ़िया फास्फेट ३० प्रतिशत वाला शुद्ध स्वाभाविक खाद मिलेगा।

थोड़ी विशेष रुचि हो, तो वुद्धि वढ़ाने वाला, हड्डी सुदृढ़ करने वाला, नस्ल सुधारने वाला हड्डी का खाद वनाने का, हड्डी पाचक यंत्र देखो और वह अपने यहां चलाओ।

ये बातें बता रहा था। भीड़ में ही दो-एक भाई निकट में बैठ गये। मेरी नजर पड़ते ही व्यास जी को कई वर्षों के बाद देखकर प्रसन्न हुआ। कुशल प्रश्न के पश्चात् अपने ग्राम सेवक बनने का कारण कहा—

तपेश्वरी सो राजेश्वरी
राजेश्वरी सो नर्केश्वरी
राजयोगी मोक्ष गामी।

अब व्यास जी गये। मैं भी जाने की तैयारी में हूं। जंगल में दरिद्रनारायणों को बसाने में व्यस्त हूं। और इसी में अपने श्रेष्ठ जीवन को सार्थक मान रहा हूं।

२

जैन समाज और व्यास जी

श्री धीरजलाल के० तुरखिया, भूतपूर्व मन्त्री जैन गुरुकुल, ब्यावर
रतनचौक, रायापुर, अहमदाबाद (गुजरात)

मैं जैन ट्रेनिंग कालेज बीकानेर का सुपरिंटेण्डेण्ट था। वि० सं० १९८४ (१९२७ ई०) में अखिल भारतीय जैन कांफ्रेन्स का अधिवेशन सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री वा० मो० शाह की अध्यक्षता में बीकानेर में हो रहा था। उसके लिये आये हुए श्री अमोलकचन्द जी लोढा और श्री मगनमल जी कोचेटा, बगड़ी एवं मुनि श्री चुन्नीलाल जी (चैतन्य जी), जो रतलाम जैन ट्रेनिंग कालेज के मेरे बाल साथी और सीनियर स्नातक थे। उन्होंने अपने समाचार मुझे कहे और मास्टरजी (श्री जयनारायण व्यास) के उत्साहवर्द्धक कार्य का ब्यौरा विस्तार से बताया। उन्होंने मुझे बगड़ी आने का आग्रहपूर्ण निमंत्रण भी दिया। मैं बगड़ी पहुंचा। मुनिद्वय के मार्ग दर्शन में, व्यास जी को विविध प्रवृत्तियों में कार्यरत देख प्रसन्न चित्त हुआ। मुझे भी वहां ही रोक लिया गया। पाठशाला, कन्याशाला, हरिजनशाला, साहित्य प्रकाशन संस्था, आत्म जागृति कार्यालय, पुस्तकालय आदि संस्थाएं स्थापित की गई थीं। बाद में छात्रालय भी स्थापित किया गया। वह सं० १९८५ की विजया दशमी पर प्रारम्भ किया और कार्तिक शुक्ला पंचमी को ब्यावर शहर से दो मील दूर कांकरिया भवन में स्थानान्तर किया गया। वह श्री जैन गुरुकुल ब्यावर के नाम से राजस्थान की सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय शिक्षा संस्था के रूप में पच्चीस वर्ष चला। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद श्री जैन गुरुकुल हायर सैकण्डरी स्कूल के रूप में अब भी चल रहा है। श्री जैन गुरुकुल में व्यास जी कुछ वर्ष मेरे सहकर्मी रहे।

समाज-सुधारक के रूप में

मारवाड़ (जोधपुर राज्य) में 'इल्डाजी' की विशेष मूर्ति की पूजा की प्रथा प्रचलित थी। होलिका के दिनों में वड़ा घिनौना, लज्जास्पद और असभ्य वातावरण बन जाता था। प्रत्येक मोहल्ले में नग्न मूर्ति रखी जाती थी। बगड़ी में जब हम रहते थे, तब व्यास जी के नेतृत्व में कार्यकर्त्ताओं और सुधारक नागरिकों ने 'इल्डा जी' की नग्न प्रतिमा को उखाड़ फेंका। पुराने विचार की जनता नाराज़ हुई। ठाकुर साहब तक फरियाद पहुंची। ठाकुर साहब ने व्यास जी को बुलाया और धमकाया। परन्तु व्यास जी ने निर्भीकता से उत्तर दिया कि हमने एक कुप्रथा को दूर कर जनता को सदाचारी बनाने का ही काम किया है। समाज-सुधार के संबंध में व्यास जी ने सदा निर्भीकता का परिचय दिया।

जाति-पांति में समभाव

महात्मा गांधी जी का अछूतोद्धार का आन्दोलन चल रहा था। इसका प्रभाव भी व्यास जी पर पड़ा। उन दिनों छूआछूत तथा जाति-पांति के भेद भाव अधिक उग्र थे। फिर भी व्यास जी हरिजन पाठशाला में पढ़ाने जाया करते थे। व्यास जी का जन्म पुष्करणा ब्राह्मण समाज में होने पर भी वे सबके साथ बिना किसी भेद-भाव के भोजन करते थे। कहीं आतिथ्य करने वाले पूछते थे कि "व्यास जी आप कच्ची रसोई जीमेंगे या पक्की।" इस पर हँसमुख व्यास जी कहते। "नहीं भाई, हम कच्ची तो नहीं खायेंगे। कच्ची से तो पेट दुखेगा। हम तो पकी पकाई ही खाते हैं। ठण्डी चीजें भारी पड़ती हैं। इसलिये गरमा-गरम ही खाना पसन्द है। हँसमुख विनोदी स्वभाव उनका सदा ही बना रहता था।

कवि एवं लेखक

आत्म जागृति कार्यालय द्वारा प्रकाशित 'बालगीत', 'विद्यार्थी भावना', आत्म 'जागृति भावना', 'जैन पाठावलि ५ भाग' और 'मोक्ष की कुञ्जी २ भाग' आदि गद्य-पद्य पुस्तिकाएं मुनिद्वय की प्रेरणा और मार्ग दर्शन द्वारा व्यास जी ने ही लिखी थीं।

'जैन पथ-प्रदर्शक', पाक्षिकपत्र के संपादक मंडल में आप रहे और 'तरुण राजस्थान' साप्ताहिक, राष्ट्रीय पत्र का भी आपने लम्बे समय तक सम्पादन किया। आपका कवि, लेखक और पत्रकार का यह रूप जिस प्रकार बाद में निखरा, वह विस्मयजनक है।

प्रधानाध्यापक के रूप में

श्री जैन गुरुकुल ब्यावर में आप प्रधानाध्यापक रहे। उनका विद्यार्थियों के साथ साथी भाव से हँसना-बोलना, खेलना-कूदना, लिखना-पढ़ना, व्यायाम में साथ देना और कौटुम्बिक भाव तथा पिता, बन्धु-सखा एवं शिक्षक भाव से दर्शाना आदर्श गुरुकुल पद्धति के सर्वथा अनुकूल था। उनकेस्वभावमें मृदुता, मस्कराहट, सरलता

और सहज सौम्यता थी। इन सब विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण पर और उनमें राष्ट्रीय भावना का संचार करने पर बड़ा ही अद्भुत प्रभाव पड़ता था।

स्वेच्छा से गुरुकुल से पृथक् हो जाने के बाद भी उसके प्रति उनका स्नेह, आत्मीयता और आकर्षण वैसा ही बना रहा। व्यावर रहते हुए अथवा व्यावर छोड़ देने के बाद भी, वे उसके उत्सवों और विशेष प्रसंगों पर आयोजित कार्यक्रमों में विशेष रूप से सम्मिलित होते। उसमें व्याख्यान देते और नाट्योत्सवों में तो सक्रिय भाग ही लेते थे। उनका शंकर नृत्य विशेष प्रसिद्ध था। उसका प्रदर्शन उन्होंने गुरुकुल में कई बार किया। एक अवसर पर तो हिटलर-नृत्य का भी उन्होंने प्रदर्शन किया था। जोधपुर राज्य में जागीरदारी उन्मूलन आन्दोलन शुरू करने के बाद उन्होंने एक बेगार नृत्य का प्रदर्शन करना प्रारम्भ किया था। उसके प्रदर्शन में बेगार प्रथा की अमानुषिकता तथा नृशंसता नग्न रूप में प्रदर्शित की जाती थी।

अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद् के प्रधानमंत्री के रूप में पण्डित जवाहरलाल नेहरू के सहकारी बन जाने और जोधपुर राज्य के प्रधान मंत्री के पद पर आसीन हो जाने पर भी, उनके गुरुकुल के प्रति आकर्षण में कोई कमी नहीं आई। वे अन्त तक उसको अपनी ही संस्था समझते रहे।

राष्ट्र-प्रेम

उन दिनों राष्ट्रीय आन्दोलन जोरों पर था। व्यावर भी राष्ट्रीय आन्दोलन का केन्द्र था। अक्सर सार्वजनिक सभाएं होती रहती थीं। शहर से कोस-भर दूर होने पर भी, प्राय: सभाओं में व्यास जी उपस्थित होकर व्याख्यान दिया करते। जब ज्ञात हुआ कि इन प्रवृत्तियों से आप सरकारी जेल के मेहमान हो सकते हैं और गुरुकुल को भी हानि हो सकती है, तब आप स्वयं गुरुकुल से पृथक् हो गये; किन्तु राष्ट्रीय आन्दोलन में आगे ही बढ़ते गये। जोधपुर में, व्यास जी, आनन्दराज जी सुराणा और भंवरलाल जी सराफ को गिरफ्तार कर लिया गया। पांच वर्ष की सजा हुई। छूटने पर भी वही प्रवृत्ति जारी रही। अजमेर में राजस्थान सेवा संघ नाम की संस्था आजीवन राष्ट्र सेवकों की चलती थी। उसमें मत मुटाव होने पर श्री मणिलाल जी कोठारी ने उसको व्यवस्थित किया और व्यावर में स्थानान्तर करके व्यास जी को उसका सारा काम सुपुर्द किया। संघ में साप्ताहिक पत्र 'तरुण राजस्थान' को व्यास जी ने निपुणता से चलाया।

अद्भुत-व्यक्तित्व

नृत्यकला, वक्तृत्व-कला, संपादनकला और लेखन कला आदि का सम्मिश्रण कुछ अद्भुत ढंग से उनमें दीख पड़ता था। इतने अधिक गुणों का सम्मिश्रण कहीं और दुर्लभ है। बच्चों में बच्चे, बुजुर्गों में बुजुर्ग, साहित्यकारों के बीच साहित्यकार और नेताओं के बीच में मूर्धन्य नेता के रूप में उनको देख विस्मय होता था। इस पर भी वे सदा निर्भीक, निरभिमान और प्रसन्न चित्तता की मूर्ति दीख पड़ते थे। एक बार

जिसने व्यास जी को देख लिया, वह उनको कभी भूल नहीं सका। मैं तीस-पैंतीस वर्ष बाद भी उनको अनेक रूपों में प्रत्यक्ष अनुभव करता हूं। इसी प्रकार उनके अन्य मित्रों पर भी उनके व्यक्तित्व की अमिट छाप लगी होगी। उनके जीवन में प्रामाणिकता पूरी थी। लोभ-लालच और सत्तामद से वे सर्वथा रहित थे। सादा और आडम्बर रहित उनका जीवन व्यवहार था, अनासक्ति वृत्तिवाला, मैत्रीपूर्ण जीवन था। श्री जयनारायण जी व्यास अपने इन अद्भुत गुणों के ही कारण मास्टर जी के पद से अपने राज्य के मुख्यमंत्री पद पर पहुंचे।

शतशः प्रणाम है उनकी अमर आत्मा को।

३

राष्ट्रीय तेज और श्री जैन गुरुकुल

श्री मुन्नालाल जी वैद्य, भूतपूर्व सुपरिंटेण्डेण्ट जैन गुरुकुल, सोजत रोड (राजस्थान)

१९२८ की बात है। उन दिनों मारवाड़ राज्य में जागीरदारों का बड़ा आतंक था और वे जनता पर तरह-तरह के जुल्म कर रहे थे। उनके खिलाफ आवाज़ उठाना सहज न था। मारवाड़ में टीकायती ठिकाना होने से बगड़ी ठिकाना भी जुल्म ज्यादती में पीछे न था। वहां के लोग ज्यादातर मद्रास, बंगलौर तथा मध्य-प्रदेश आदि में व्यापार धन्धा करने वाले थे और वहां के राजनीतिक आन्दोलनों का प्रभाव उन पर भी पड़ता था। इसलिए जब वे यहां आते थे, तब उनको दम घुटता-सा मालूम होता था। किसी में आवाज़ उठाने की हिम्मत न थी। स्वर्गीय श्री आमोलकचन्द जी लोढा और श्री गणेशमल जी खाटेर आदि ऐसे युवक थे, जिन्होंने बगड़ी में सामाज सुधार की प्रवृत्तियां चालू कर रखी थीं। वे वाचनालय व औषधालय आदि खोलकर जनसेवा में संलग्न थे। उन्हीं दिनों में जैन मुनि श्री चुन्नीलाल जी महाराज का चातुर्मास बगड़ी में हुआ। उन्होंने जगह-जगह प्रभावशाली उपदेश देकर कई गांवों में पाठशालाएं खुलवाईं, और जैन समाज में राष्ट्रीय भावना का संचार करने का भी काम वे बड़े उत्साह से कर रहे थे। बगड़ी में भी उनके अनुयाइयों द्वारा 'महावीर मिडिल स्कूल' खोला गया, पर मुनि जी को सन्तोष न हुआ। वे कोई बड़ा कार्य करना चाहते थे। इसीलिए जैन गुरुकुल संस्था की उन्होंने नींव डाली और उनका प्रथम प्रधानाध्याक श्री जयनारायण व्यास को नियुक्त किया।

व्यास जी अपनी जनसेवा की प्रवृत्तियों को व्यापक बनाना चाहते थे, पर धनाभाव के कारण आगे नहीं बढ़ पाते थे। पढ़े-लिखे लोग व्यास जी के लेखों से प्रभावित थे ही। वे उनकी तरफ आकर्षित हुए। परन्तु उनके घरों में व्यास जी का आना-जाना ठिकाने वालों को पसन्द न था। वे चौकन्ने हो गये; और व्यास जी की हर प्रवृत्ति पर कठोर नज़र रखने लगे। जो लोग व्यास जी के सम्पर्क में आते, उन पर भी ठिकाने की तरफ से जासूसी की जाने लगी और डराया-धमकाया जाना शुरू कर दिया गया।

◇ ◇ ◇

व्यास जी को यहां वृद्धों का प्रेम व युवकों का सहयोग भरपूर मिला। उन्होंने उनके सहारे अपना कार्यक्षेत्र व्यापक बनाना शुरू किया। एक सामाजिक सप्ताहिक 'जैन पथ-प्रदर्शक' का सम्पादन व प्रकाशन भी होने लगा। उसके राष्ट्रीय भावों के लेख ठिकाने वालों को पसन्द नहीं थे। उनसे वे चिढ़ने लगे; और जनता में आतंक फैलाना शुरू कर दिया गया।

◇ ◇ ◇

जैन मुनिश्री चुन्नीलाल जी महाराज की ओजमय वाणी से आकर्षित होकर जैन समाज के धनाढ्य व कर्मठ युवक व्यास जी के कामों की ओर खिचने लगे। व्यास जी को सुन्दर मौका मिला पर ठिकाने की अड़ंगेबाजी ने उनके कार्य में बाधा डालनी जारी रक्खी। आखिर जैन गुरुकुल संस्था का कार्य क्षेत्र विशेष रूप से बढ़ाने और राष्ट्रीय कार्यों में सक्रिय योग देने के विचार से उस संस्था को ब्यावर स्थानान्तरित कर दिया गया। व्यास जी ने ऐसी तन्मयता से जैन गुरुकुल में काम किया कि उनको उसका स्तम्भ माना जाने लग गया। धार्मिक व राष्ट्रीय स्वाभिमानी युवक तैयार करने की भावना से उसकी स्थापना की गई थी। इसी कारण व्यास जी को, संस्था में इतने ऊंचे पद पर नियुक्ति की गई थी।

◇ ◇ ◇

अपने घरेलू कार्य के लिये व्यास जी कुछ दिनों के लिये जोधपुर चले गये। कुछ मित्रों ने वहां एक सभा का आयोजन किया। उसमें भाषण देने के अपराध में व्यास जी के साथ सेठ आनन्दराज जी सुराणा व श्री भंवरलाल जी सराफ गिरफ्तार कर लिये गये।

जोधपुर में गिरफ्तारी

व्यास जी की गिरफ्तारी के समाचार सुनकर बगड़ी ठिकाने की जनता में जोश पैदा हुआ और ठिकाने वालों ने राजनीतिक प्रवृत्तियों को समूल नष्ट करने की ठान ली। बाहर से आते हुए बगड़ी स्टेशन और बगड़ी के बीच चार प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ उन्होंने छेड़खानी की और गांव में घुसते ही उनको मारा-पीटा। सारे गांव में आतंक फैल गया। व्यास जी को इन समाचारों से बड़ा दुःख हुआ। ठिकाने

वालों की ज्यादती और मनमानी का वह एक नमूना था।

◇ ◇ ◇

व्यास जी हिरासत में होने की वजह से और तो कुछ कर नहीं सकते थे। उन्होंने अपने एक गुप्त सन्देश में सहानुभूति प्रकट की और अन्याय के सामने न झुकने की सलाह दी।

बगड़ी के सेठ लोगों से ठिकाने वालों की मुकदमाबाजी शुरू हुई। सेठ सोभागमल जी, सेठ अमोलकचन्द जी लोढ़ा, सेठ हंसराज जी, सेठ गणेशमल जी खाटेर और सेठ जेवंतराज खाटेर ने ठिकाने वालों के अत्याचारों से तंग आकर हमेशा के लिये बगड़ी छोड़ दिया और सोजतरोड आकर बस गये। उस मुकदमे में सेठ लोगों का करीब ४० हज़ार रुपया व्यय हुआ। ठिकाने वाले मुकदमा हार गये। ठाकुर को बगड़ी छोड़कर, चौकड़ी गांव में रहने की आज्ञा हुई। यह सब व्यास जी की ही प्रेरणा का परिणाम था।

ब्यावर में सम्मान

जब व्यास जी जोधपुर जेल से छूटकर पहली बार ब्यावर आये, तो नागरिकों की ओर से उनका भव्य स्वागत किया गया और उनके त्याग की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। वस्तुतः ब्यावर ही व्यास जी का मुख्य राजनीतिक कार्यक्षेत्र था।

जैन गुरुकुल के संस्थापक उसको महत्त्वशाली राष्ट्रीय संस्था बनाना चाहते थे। इसीलिए श्री धीरजलाल तुरखिया को अधिष्ठाता, व्यास जी को प्रधानाध्यापक और मुझे सुपरिन्टेण्डेण्ट बनाकर संस्था का सारा बोझ हम तीनों पर ड़ाल दिया गया। यद्यपि व्यास जी इस संस्था में काम कर रहे थे। परन्तु उनकी प्रवृत्तियां देशी राज्यों में बढ़ रही थीं। 'तरुण राजस्थान' का सम्पादन भी इनके द्वारा इसी दृष्टि से किया जा रहा था। स्वयं वे घरेलू समस्याओं से चिन्तित थे, पर अपने साथी कार्यकर्त्ताओं के प्रति उनका ध्यान हमेशा लगा रहता था। 'तरुण राजस्थान' की स्थिति कभी-कभी तो ऐसी डांवाडोल हो जाती थी कि कार्यकर्त्ताओं को समय पर वेतन देना भी भारी पड़ जाता था। कार्यकर्त्ता हताश होकर दूसरा काम ढूंढ़ने पर मज़बूर हो जाते थे। पर व्यास जी के प्रेम व आत्म त्याग को देखकर कुछ भी कहना या करना उचित नहीं समझते थे। साथी कार्यकर्त्ताओं के अभाव में व्यास जी सम्पादक, प्रूफरीडर तथा डिस्पैचर आदि सब कुछ बन जाने के लिये मज़बूर हो जाते थे, अत्यधिक परिश्रम के कारण स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रह पाता था। उन दिनों में व्यास जी दिन-रात काम में जुटे रहते थे। गुरुकुल में अध्यापन, 'तरुण राजस्थान' का सम्पादन, रियासती समस्याओं की उधेड़बुन और नगर की राष्ट्रीय गतिविधि का संचालन आदि का सब भार उनके कन्धों पर था। 'तरुण राजस्थान' का कार्यालय रियासती कार्यकर्त्ताओं का प्रधान केन्द्र बन गया था। राजस्थान और मध्यभारत की रियासतों के कार्यकर्त्ताओं का वहां जमघट लगा रहता था। कभी-

कभी कुछ ऐसे समाचार 'तरुण राजस्थान' में प्रकाशित हो जाते थे, जो रियासतों के राजाओं, अधिकारियों और जागीरदारों के लिये बड़े सनसनीखेज होते थे। उनको प्रकाशित करने से रोकने के लिये व्यास जी पर तरह-तरह का दवाव डाला जाता और मोटी-मोटी रकमों का प्रलोभन भी दिखाया जाता। एक वार वगड़ी ठिकाने की ओर से पांच हज़ार रुपये का प्रलोभन दिया गया, परन्तु व्यास जी थे, जो इस प्रकार उन्हें अपने कर्त्तव्य से विचलित करने वालों से वातचीत करना और उनका मुंह तक देखना पसन्द नहीं करते थे।

समाज-सुधारक व्यास जी की परीक्षा

व्यास जी की सवसे वड़ी कन्या को उनकी अनुमति विना उनके पिता जी विवाह योग्य समझने लग गये थे, उनके माता-पिता का ख्याल था कि इससे ज़्यादा उम्र में विना विवाह कन्या को रखना धर्म के विरुद्ध है; वे कन्या का विवाह करने पर तुल गये, उन पर उनके मित्रों व सम्वन्धियों के द्वारा भी जोर डलवाया गया, पर वे टस से मस नहीं हुए। आखिर माता-पिता ने कन्या का विवाह कर दिया। वे स्वयं कन्या के पिता होने पर भी उसमें शरीक नहीं हुए। यह थी उनकी दृढ़ता, जिसकी परीक्षा उनके जीवन में न मालूम कितनी वार हुई होगी।

फिर जेल में

महात्मा गांधी के लन्दन से लौटने पर सत्याग्रह आन्दोलन ने फिर जोर पकड़ा। व्यास जी की इच्छा उस आन्दोलन में भाग लेने की नहीं थी। अपनी उस इच्छा को उन्होंने अपने साथियों पर प्रकट भी कर दिया था। पर अचानक एक दिन मुझको गुरुकुल की अपनी सारी जिम्मेवारी सौंपकर आन्दोलन में भाग लेने चल दिये। कुछ पूछने का भी समय नहीं दिया। उसी रात्रि को महादेव की छतरी पर हुई वड़ी भारी सभा में सरकारी आज्ञा भंग कर ओजस्वी भाषण दिया और अपने साथियों के साथ गिरफ्तार हो गये। दूसरे दिन सारे शहर में पूर्ण हड़ताल रही।

गुरुकुल पर संकट

गुरुकुल के विद्यार्थियों और कार्यकर्त्ताओं में भी जोश फैलना स्वाभाविक था। वे अपनी मर्यादा में रहते हुए समय-समय पर सारे शहर में राष्ट्रीय गान गाते हुए निकलते और जनता को उत्साहित करते। सरकार को वह पसन्द न था। गुप्त धमकियां दी जाने लगीं। गुरुकुल ने उनको हेच समझा। सरकार की वक्र दृष्टि तीव्र से तीव्रतर होती गई। प्रवन्धकारिणी सभा ने सुरक्षा के लिये संस्था को फलौदी (मारवाड़) स्थानान्तरित करने का निश्चय किया। रेलगाड़ी में उसके लिये रिजर्वेशन हो गया। निश्चित तिथि को जव गुरुकुल के विद्यार्थियों ने शहर में होकर प्रयाण किया, तो जनता को वड़ा आश्चर्य हुआ। उस टोली के स्टेशन पर पहुंचते-पहुंचते सैकड़ों लोग इकट्ठे हो गये। जव गाड़ी रवाना हुई, उस समय का दृश्य वड़ा ही हृदय द्रावक और मार्मिक था। जोधपुर स्टेशन पर पहुंचते ही मित्रों और

हितचिन्तकों ने आकर स्वागत व अभिनन्दन किया और शुभकामना अर्पित की। जब गाड़ी जोधपुर से कुछ मील आगे बढ़ी, तब रात्रि के अन्धकार में राज्य की पुलिस आई० जी० पी० के साथ पहुंची, रास्ते में ही गाड़ी को रोक दिया। सारे विद्यार्थियों और कार्यकर्त्ताओं को नीचे उतार लिया गया। उन्हें राज्य की बस-गाड़ियों में सवार कर प्रातःकाल ब्रिटिश राज्य की सीमा में सैंदड़े के पास लाकर छोड़ दिया। कार्यकर्त्ताओं ने वैसा करने का कुछ कारण जानना चाहा, परन्तु पुलिस अधिकारियों ने कुछ भी नहीं बताया।

सैंदड़े से व्यावर लौटने पर संस्था को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। जिस मकान में गुरुकुल का काम पहले हो रहा था। उसके मालिक सेठ पन्नालाल जी व सेठ कालूराम जी कांकरिया ने सरकारी प्रकोप के कारण फिर से गुरुकुल के लिये अपना मकान देने से इनकार कर दिया। उन्हें भय था कि कहीं गुरुकुल के कारण उनका मकान जब्त न कर लिया जाय। उन्होंने जमानत की बातचीत चलाई। अन्त में विशिष्ट लोगों के समझाने-बुझाने पर वे मकान देने को सहमत हुए और किसी प्रकार वह संकट टल गया।

यह सब व्यास जी द्वारा गुरुकुल में रोपी गई, राष्ट्रीय भावनाओं का ही प्रति-फल था। श्रद्धावान व निष्ठावान व्यक्तित्व का जो प्रभाव पड़ सकता है, उसको गुरुकुलवासियों ने व्यास जी के व्यक्तित्व के रूप में जिस प्रकार अनुभव किया, उसको उन दिनों के उनके साथी कभी भूल नहीं सकते। मुझे गर्व है कि मैं भी उनमें से एक हूं। उन्होंने गुरुकुल का काम जिस निष्ठा से किया उसका दूसरा उदाहरण सार्वजनिक संस्थाओं के इतिहास में मिलना दुर्लभ है। गुरुकुल के सभी छोटे-बड़े कर्मचारियों और विद्यार्थियों के साथ उनका आत्मीय व्यवहार था। वे विद्यार्थियों के साथ खेल-कूद, व्यायाम, गायन, वादन तथा अन्य कार्यक्रमों में कुछ ऐसे तल्लीन हो जाते और यह भूल जाते कि वे मुख्याध्यापक हैं। उन्होंने गुरुकुल को जो राष्ट्रीयता प्रदान की, उसके कारण वह सदा ही सरकार की आंखों में खटकते रहे। एक बार तो ऐसा प्रसंग उपस्थित हुआ कि गुरुकुल के उत्सव के लिये तैयार किये गये शामियाने पर पुलिस ने छापा मारकर राष्ट्रीय नेताओं के फोटो उतार लिये और संस्था के मंत्री को अपनी हिरासत में ले लिया। उत्सव के बाद उनको रिहा किया गया। जैन गुरुकुल के इतिहास के वे दिन स्वर्णिम थे और उनकी याद आज भी हृदय में गर्व एवं गौरव की अनुभूति जगा देती है। उसमें व्यास जी की मूर्ति पूर्णेन्दु की तरह चमकती दीख पड़ती है।

प्रकरण ६

शोषित व पीड़ित की सेवा (क)

१

देशी राज्य स्वातन्त्र्य संग्राम के महारथी

वयोवृद्ध जन नेता स्वामी रामानन्द जी तीर्थ, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

भारतीय रियासतों की जनता के स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानियों में श्री जय-नारायण व्यास का प्रमुख स्थान रहा। उन्होंने जोधपुर की जनता का नेतृत्व करके उत्तरदायी शासन के आन्दोलन का सूत्रपात करने में उचित ही कदम उठाया था। वह अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् के महामन्त्री के पद के सर्वथा उप-युक्त थे। जो लोग इस संस्था से सम्बन्धित थे, उनको यह भली प्रकार मालूम है कि उन्होंने इस पद के दायित्व को कैसी जिम्मेवारी के साथ निभाया। उनके साथ काम करना बड़ा ही सुखद और उनका साथी बनना बहुत बड़ा सौभाग्य था। जिन लोगों ने अपनी रियासतों में स्वतन्त्रता संग्राम का संचालन किया, वे इस बात से अवश्य ही प्रभावित हुए, कि व्यास जी ने उनके काम में कैसी व्यक्तिगत दिलचस्पी ली।

व्यास जी का व्यक्तित्व चहुंमुखी था। जो कोई भी उनके सम्पर्क में थोड़े से समय के लिये भी आता था, उसमें वे नये जीवन और नई शक्ति का सहसा ही संचार कर डालते थे। गूढ़-से-गूढ़ समस्याओं को हल करने में कितना भी श्रम क्यों न करना पड़ता हो, वे उसको नहीं मानते थे। बड़ी-सी-बड़ी बाधाएं और कठिनाइयां उनको अपने मार्ग से विचलित न कर पाती थीं। उनके हृदय में सदा ही उज्ज्वल आशावाद और असीम आकांक्षा जागृत रही। भयानक-से-भयानक आर्थिक कठि-नाइयां भी उनको जनस्वातन्त्र्य संग्राम की भीषण भंवर में कूदने से रोक नहीं सकीं। वह कठोर-से-कठोर कसौटी पर पूरे उतरे और उन्होंने जो प्रतिष्ठा प्राप्त की, वह विरलों के ही भाग्य में बदी होती है।

मुझे उनके साथ काफी लम्बे समय तक काम करने का सौभाग्य मिला। जब कभी भी अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् की कार्यसमिति की बैठकों के

लिये हम दिल्ली में एकत्र होते, हम दोनों चांदनी चौक के समीप नई सड़क पर एक गली में मारवाड़ी धर्मशाला में इकट्ठे ही ठहरा करते थे। भोजन के लिये पैदल देशभक्त सेठ श्री आनन्दराज जी सुराणा के यहां जाया करते और धर्मशाला के एक छोटे से कमरे में बैठकर विभिन्न रियासतों की समस्याओं तथा आन्दोलनों के बारे में गम्भीर चर्चा किया करते थे। कभी-कभी तो धर्मशाला के निवास में एकान्त सम्भव न होने के कारण हम शहर के बाहर जाकर किसी एकान्त स्थान में बैठकर अपना काम किया करते थे। उन दिनों में जैसी परिस्थितियां थीं, उनमें हमें पैदल ही दूर-दूर भोजन करने तथा काम करने के लिये जाना पड़ता था। यहां तक कि हमारे पास बस अथवा तांगे का भाड़ा चुकाने तक के लिये पैसा न होता था। यदि कभी हममें से कोई थक जाता या उदास हो जाता तो व्यास जी अपने कलाकार स्वभाव का परिचय देते हुए कोई मनोरंजक गीत सुनाकर अथवा कोई दिलचस्प किस्सा सुनाकर उसमें ताज़गी भर देते और सारे ही वातावरण को उल्लासमय बना देते।

वह स्वतन्त्रता संग्राम के महारथी थे। अपने उदार मिलनसार स्वभाव और स्पष्टवादिता के कारण युवकों को आकर्षित करने की उनमें अद्भुत क्षमता थी और सैकड़ों युवकों को उन्होंने अपना साथी बना लिया था। कुछ ही दिन साथ रहने पर उनकी विस्मयजनक लोकप्रियता का सहज ही में परिचय मिल जाता था और यह देखकर आश्चर्य होता था कि उनमें उनके साथियों की कैसी विलक्षण श्रद्धाभक्ति थी। अपने साथियों का जैसा भ्रातृ स्नेह व्यास जी ने संपादन किया वैसा बहुत ही कम नेताओं को नसीब होता है।

यहां उन दिनों के एक प्रसंग का उल्लेख करना आवश्यक है। भारत को शासन सत्ता सौंपने के अपने मसविदे की व्याख्या करने और समझाने में इंगलैंड के मन्त्रि-मण्डल मिशन के सदस्य व्यस्त थे। उस मसविदे में अथवा उसके सम्बन्ध में की जाने वाली चर्चा-वार्ता में रियासतों की जनता का कहीं कोई उल्लेख नहीं था। उसमें केवल देशी नरेशों को ही प्रधानता दी गई थी। हम, वे लोग जिन्होंने देशी नरेशों की सत्ता को मानने से इनकार कर दिया था, जनता की इस तिरस्कारपूर्ण अवहेलना को कैसे सहन कर सकते थे। हममें से कुछ ने उन दिनों के अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् के अध्यक्ष पण्डित जवाहरलाल नेहरू से यह अपील की कि यदि देशी राज्यों की जनता के अधिकार को स्वीकार न किया जा सके, तो मन्त्रि-मण्डल मिशन के सदस्यों से बात तक करने से इनकार कर देना चाहिए। श्री जयनारायण व्यास का इसके लिये बड़ा ही दृढ़ आग्रह था। अन्त में महात्मा गांधी ने हमको यह विश्वास दिलाया कि देशी राज्यों की जनता के हितों व अधिकारों की उपेक्षा न की जायेगी। तब कहीं व्यास जी मन्त्रिमण्डल मिशन के मसविदे से पैदा हुई विषम स्थिति को सहन करने के लिये सहमत हुए।

वह कैसे भी ऊंचे पद या प्रतिष्ठा पर रहे या उससे अलग रहे, परन्तु उन्होंने अपने साथीपन में कभी कोई कमी नहीं आने दी। राजस्थान के मुख्यमन्त्री के रूप में जो ऊंचा पद उन्होंने प्राप्त किया, उसका कोई अभिमान उनमें कभी पाया नहीं गया। वह पद उन्होंने अपने स्वभावसिद्ध अधिकार से प्राप्त किया था। जब उन्होंने उसको त्याग दिया, तब भी उनमें ऐसा कोई अन्तर दीख नहीं पड़ा। वह सदा एक से रहे।

श्री जयनारायण व्यास के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही हो सकती है कि उन सरीखे बहादुर सेनापति के लिये ऐसा गर्व अनुभव किया जाय, जिससे कि उनकी तथा उनके साथियों की भस्मी में से उस स्वर्णिम युग का प्रादुर्भाव हो सके जिसमें जनता सुख और समृद्धि की ओर तेज़ी से अग्रसर हो।

उनकी पुनीत स्मृति का भव्य प्रदीप सदा प्रज्ज्वलित रहे।

२

अखंड सेवायज्ञ के महाव्रती

श्री मोहनलाल जी मेहता सोपान, सम्पादक 'सुकानी' बम्बई

स्व० जयनारायण जी व्यास की स्मृति जब भी जागृत होती है, तब मानो राजस्थान के वीरों की परम्परा का एक व्यक्तित्व देख रहा हूं। ऐसे भाव मेरे दिल में उठते हैं। हम उन्हें व्यास जी के नाम से पुकारते और वे हमारे एक कुटुम्बीजन हों, ऐसे भाव का अनुभव करते। इस लोक से उनकी विदा के समाचार जब मुझे मिले, तब एक स्वजन को खोये जैसा आघात अनुभूत हुआ था। यूं तो व्यास जी सारग्रह रियासती प्रजा के मुक्ति-संग्राम के सैनिक और सेनानी थे और मैं भी उस क्षेत्र में यत्किंचित् भाग ले रहा था। इसलिए उनका परिचय उनकी प्रवृत्ति का भी परिचय माना जा सकता है। स्व० अमृतलाल सेठ के वे परम मित्र और साथी होने के कारण हमारा परिचय प्रथम से ही कौटुम्बिक भूमिका पर रच गया था और प्रतिदिन विकसित होता जाता था।

मैंने उन्हें राजस्थानी जंग के योद्धा के रूप में 'अखंड भारत' के संपादक के रूप में, राजस्थान प्रजा-परिषद के मंत्री के रूप में तथा 'जन्म-भूमि' पत्र के एक संवाददाता के रूप में देखा और जाना था। उन दिनों 'जन्म-भूमि' केवल एक वर्तमान पत्र नहीं था, एक आन्दोलन था। 'जन्म-भूमि' कार्यालय में क्रान्तिकारियों का अड्डा था। उन सब में व्यास जी अग्रणी दीख पड़ते थे। जब कराची में अखिल

भारतीय देशी राज्य प्रजा-परिषद् का अखिल भारतीय अधिवेशन हुआ, तब मुझे स्वागतमन्त्री बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। व्यास जी उस समय परिषद् के मन्त्री थे। इतना ही नहीं, उसके प्राणस्वरूप माने गये पांच व्यक्तियों में उनका स्थान था। उनकी सादगी, शौर्य, त्यागवृत्ति तथा कुरबान हो जाने की तत्परता उनके परिचय में आने वाले के मर्म को छू लेती थी।

भय को उन्होंने देखा नहीं था। जाना नहीं था। खतरे मोल लेने की साहसी वृत्ति तो अदम्य थी। जनता के दुःख-दर्द को झेलकर अपना बना लेना उनका स्वभाव था। दूर के लोग शायद नहीं जानते होंगे, किन्तु जिस प्रकार वे प्रखर पत्रकार थे उसी प्रकार उच्च कोटि के कवि भी थे। उनके काव्यों को उन्हीं के श्रीमुख से सुनने का अवसर मुझे अनेक बार मिला। जब तक वे आन्दोलन के अग्रणी थे, तब तक उनकी यह कविता आश्चर्यजनक नहीं लगती थी, परन्तु स्वराज प्राप्ति के बाद प्रथम जोधपुर और फिर समग्र राजस्थान का सच्चा कारोबार उनके हाथ आया और मुख्यप्रधान का उत्तरदायित्व भी उन्होंने उठा लिया, तब भी उनके काव्यों का स्रोत सूखा नहीं।

'जन्मभूमि' के बीस वर्ष पूरे होने के प्रसंग पर एक विशेषांक प्रकाशित करने का निर्णय किया गया था। उसके मुख्य संपादक के रूप में मैंने श्री व्यास जी को संवाददाता के अपने अनुभव लिख भेजने को कहा था। उन्होंने एक प्रसंग लिख भेजा था, जो उन्हीं के शब्दों में यहां उद्धृत करूंगा तो उपयुक्त होगा। उनके शब्द ये थे, " 'जन्मभूमि' के साथ एक पत्रकार के रूप में मेरा सम्बन्ध उसके जन्मकाल से ही है। मैं बार-बार उस पत्र में लिखता। किन्तु जब राजस्थान में कहीं किसी प्रकार का दमन होता और मुझे वहां भेज दिया जाता तो वहां से मैं खबरें भेजता, उसी में मेरा सच्चा पत्रकारित्व झलक उठता। लोहारू गोली बार की जो रिपोर्ट मैंने भेजी थी, वे मेरी अखबारी कार्यकृति में सर्वश्रेष्ठ थी, ऐसा मैं मानता हूं।"

"१९३४ में सीकर में गोलीबार और लाठीचार्ज की घटना घटी थी। अजमेर में इसकी जांच करने का काम श्री बलवन्तराय मेहता को सौंपा गया था। मुझे उनका सहायक नियुक्त किया गया था। श्री बलवन्तराय मेहता इतना समय न पा सके और विभिन्न साक्षियों के बयान लिखने का काम मुझे करना पड़ा। मैंने यह काम किया तथा गांधी जी को और अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजापरिषद को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। इसके बाद मैं बम्बई गया और उस रिपोर्ट को खुद ही प्रकाशित किया।

"बम्बई में मुझे खबर मिली कि लोहारू में गोलीबार हुआ है और दो-एक दर्जन आदमियों ने जान गंवाई है। अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद् तथा 'जन्मभूमि' ने मुझे सारी रिपोर्ट प्राप्त करने के लिये लोहारू भेजा। ऐसे प्रसंगों की रिपोर्ट प्राप्त करना और भेजना बड़ा कठिन होता है। लोहारू तथा बीकानेर

आदि राज्यों में पुलिस सी० आई० डी० का पहरा बड़ा सख्त था। उन राज्यों की सीमा पार करके ब्रिटिश राज्य के निवासियों के लिये किसी देशी राज्य में पहुंचना उन दिनों में बड़ा कठिन था। इसलिए मुझे एक जाट की वेशभूषा पहन कर वहां जाना पड़ा। आखिर में वहां पहुंचा तो सही, परन्तु कई दर्जन जासूसों ने मुझे घेर लिया। सैकड़ों व्यक्ति मेरे पास आते और करुण शब्दों में नृशंस गोलीवार के प्रसंग का वर्णन करते। जिनकी मृत्यु हुई थी उनके फोटोग्राफ भी मुझे मिल गये। वे सब मैंने बम्बई भिजवा दिये। यदि मैं पकड़ा जाऊं तो भी एकत्र की हुई जानकारी पुलिस के हाथ न लग जाय, इसलिए उसको अनेक विश्वस्त साथियों को सौंप कर अलग-अलग रास्तों से बम्बई भेजना पड़ा।

"एक सुहावनी चांदनी रात को दो बजे के लगभग एक छोटे स्टेशन से गाड़ी पकड़कर मैं वहां से भाग चला। उस समय मैंने मुसलमानी पोशाक पहनी थी। मैं दूसरे दर्जे के जिस डिब्बे में मुसाफरी कर रहा था, उसी में बीकानेर का एक जासूस सवार था। जयनारायण व्यास जैसे आदमी को उस क्षेत्र में से जाने की अनुमति नहीं थी; फिर भी मैंने उसको साहस करके डांट दिया। परन्तु उसको जब यह पता चला होगा कि उसके साथ बात करने वाला ही जयनारायण व्यास था, तब सचमुच ही चिन्ता में पड़ गया होगा। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में जांच करनी बड़ी मुश्किल होती है। परन्तु वह प्रसंग मेरे लिये बड़ा ही सनसनी-खेज था।"

राजनीति में उतार-चढ़ाव तथा लोकतन्त्र में परिवर्तन अनिवार्य है। जो सत्ता के सिंहासन पर बैठा हो और उसके विरुद्ध द्रोह का ध्वज लहराता हो, तब भी उसका व्यक्तित्व यदि बदल न जाय, तो उसको असामान्य मानना चाहिए। मेरे अनुभव के अनुसार व्यास जी इसी प्रकार के व्यक्ति थे। सत्ता उतर जाने के बाद उनमें द्वेष या कटुता के दर्शन कदापि नहीं हुए। स्वराज प्राप्ति से पहले की भावना उन्होंने जीवन के अन्त तक कायम रखी। मेरी दृष्टि में वे मुतसद्दी राजकारणी की अपेक्षा योद्धा अधिक थे। 'जन्मभूमि' के प्रतिनिधि के रूप में वे जो काम करते थे, उसमें उन दिनों के देशी राज्य के अधिकारियों के जुल्मों की अप्रकट गाथा विशेष रूप में रहती थी। इसमें अत्यन्त परिश्रम, सूझ-बूझ और साहस की आवश्यकता होती थी और सर्वस्व खो देने की तैयारी भी रखनी पड़ती थी।

मुझे याद है कि एक बार वे क्षय रोग के शिकार बन गये थे। तब कितनों ने ही यह मान लिया था कि उनकी तूफान की-सी प्रवृत्ति में चढ़ाव या उतार आ जायगा। मैंने देखा कि उनके जीवन में या प्रवृत्ति में उस रोग के कारण कोई शिथिलता नहीं आई। जल की मछली पानी के बाहर नहीं रह सकती। ऐसा ही स्वभाव उनका बन गया था। वे तूफानी प्रवृत्ति के बिना जीवित नहीं रह सकते थे। उनका राजकारण सत्ता का नहीं सेवा का था और यह सेवायज्ञ जीवन के

अन्तिम क्षण तक अखण्ड बना रहा। व्यास जी की स्मृति मेरे जीवन की एक सुवास है और इतने वर्षों के परिचय में वह बराबर निखरती ही रही है।

३

परिषद् तथा किसान सभा का संयुक्त मोर्चा : डावड़ा हत्याकांड

श्री नरसिंह जी कछवाहा, महावीर मार्ग, जयपुर (राजस्थान)

मुझे देश सेवा की सार्वजनिक भावना अपने पूज्य पिता जी से वसीयत में प्राप्त हुई थी। वे जेमिनी उपनाम से 'मरुधर मित्र' नाम का पाक्षिक पत्र निकाला करते थे। १९२१ में तब अहमदाबाद कांग्रेस में शामिल हुए थे, जब देशी राज्यों में राजनीति की चर्चा तक नहीं थी। वे अपने साथी लक्ष्मण आर्य और जमनादास जी के साथ वहां से देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत होकर लौटे। जोधपुर के बाहर मंडोर में उन्होंने आर्यसमाज की ओर से गुरुकुल और गौशाला की स्थापना की थी। उनसे प्राप्त संस्कारों के कारण मैंने भी युवावस्था में ही सार्वजनिक कार्यों में हिस्सा लेना शुरू कर दिया। इसी सार्वजनिक सेवा की भावना से प्रेरित होने के कारण मैं व्यास जी के सम्पर्क में आया और वह सम्पर्क उत्तरोत्तर घनिष्ट होता गया।

हमारे परिवार का कछवाहा आदर्स के नाम से सोजत रोड में चूने का कारखाना था और एक काटन जीनिंग फैक्ट्री भी थी। वहां व्यास जी का विशेष आना-जाना होता था। मेरे बड़े भाई श्री सन्तोषसिंह जी कछवाहा वहां की मारवाड़ लोक-परिषद् की शाखा के अध्यक्ष थे। यदि मैं भूलता नहीं तो जोधपुर शहर के बाद मारवाड़ में सोजत रोड में ही मारवाड़ लोक-परिषद् की वैसी प्रभावशाली सुसंगठित शाखा कायम थी। व्यास जी का प्रारम्भिक मुख्य कार्यक्षेत्र कभी बगड़ी का ठिकाना था और वे बगड़ी से जोधपुर आते-जाते प्रायः सोजत रोड ठहरा करते थे। वहां उनके कई पुराने साथी थे, जो बगड़ी के ठाकुर के अत्याचारों के कारण वहां से उठकर सोजत रोड आ वसे थे। उनके ही कारण सोजत रोड व्यास जी की गतिविधि का मुख्य केन्द्र बन गया था। भाई मीठालाल जी त्रिवेदी काका इस क्षेत्र के प्रमुख कार्यकर्त्ता थे। जोधपुर से निर्वासित होने की स्थिति में वे व्यावर रहते हुए भी सोजत रोड के माध्यम से ही राजनीतिक आन्दोलन का संचालन किया करते थे। इस प्रकार सोजत रोड के कारण व्यास जी का हमारे परिवार के साथ

अच्छा सम्बन्ध हो गया और मैं उनके बहुत निकट सम्पर्क में आ गया।

किसान सभा और चुनाव का बहिष्कार

१९४० में मैंने किसान सभा के माध्यम से लोकसेवा के क्षेत्र में प्रवेश किया था। मैं उसका मंत्री और बाद में अध्यक्ष भी था। मेरे ही कारण किसान सभा और मारवाड़ लोकपरिषद् के जागीरदारी आन्दोलन के सम्बन्ध में परस्पर मेल हुआ था। दोनों ने संयुक्त मोर्चा बनाकर उस आन्दोलन का संचालन एवं पथ-प्रदर्शन किया था। शहरों में मारवाड़ लोकपरिषद और देहातों में किसान सभा का विशेष प्रभाव था। १९४२ की उत्तरदायी शासन सम्बन्धी मांग के कारण जो गिरफ्तारियां की गई थीं और जिस आन्दोलन का सूत्रपात हुआ, वह महात्मा गांधी की मध्यस्थता के कारण अधिक लम्बा न चला था। समझौते के फलस्वरूप बड़ोदा के श्री सुथालकर को शासन सुधारों सम्बन्धी योजना तैयार करने का काम सौंपा गया था। उनकी रिपोर्ट के अनुसार जोधपुर में १९४४ में पहले चुनाव हुए थे। परन्तु चुनावों के लिये बालिग मताधिकार को स्वीकर नहीं किया गया था। फिर भी किसान सभा ने चुनाव में भाग लेना तय किया; किन्तु मारवाड़ राज्य लोक-परिषद के जब चुनाव का विरोध किया, तब किसान सभा ने भी हाथ खींच लिया और चुनाव का बहिष्कार कर दिया।

इस विरोध का एक मुख्य कारण यह भी था कि श्री सुथालकर ने उस समय की सलाहकार विधान सभा को अपने विश्वास में न लेकर अपनी रिपोर्ट तैयार की थी। इसको अपमानजनक समझा गया और मारवाड़ राज्य लोकपरिषद् ने उन शासन सुधारों का बहिष्कार कर उत्तरदायी शासन की मांग का नारा बुलन्द किया। उस आन्दोलन ने किसान सभा के कारण देहातों, विशेषतः जागीरों, में बड़ा जोर पकड़ा। जागीरदारों ने बड़ा आतंक फैलाया; परन्तु वे किसानों को भयभीत नहीं कर सके।

डाबड़ा कांड

इसी बीच १३ मार्च, १९४७ को वह डाबड़ा कांड हुआ, जिसमें जागीरदारों के निर्मम अत्याचार पराकाष्ठा पर पहुंच गये। वहां किसान सभा के एक विशेष सम्मेलन का आयोजन किया गया था। उसी पर जागीरदार उत्तेजित हो गये थे। शेखावाटी से २२ ऊंटों पर सशस्त्र आक्रमणकारी विशेष रूप से बुलाये गये। उन्होंने आते ही बन्दूकें दागनी शुरू कर दीं। किसान भी उत्तेजित हो गये। उनके जो युवक फौजों में भरती थे उन्होंने बन्दूकें संभाल लीं। परिषद् व किसान सभा के कार्य-कर्त्ताओं ने स्थिति को बदतर होने से बचा लिया। सभा पर सशस्त्र आक्रमण किया गया। गोलियां दागी गईं और तलवारें चमकाई गईं। किसान सभा के परि-पद्‌के पांच-छह कार्यकर्त्ता वहां शहीद हो गये। उनमें चुन्नी ब्राह्मण का नाम उल्लेख-नीय है। सर्वश्री द्वारकादास पुरोहित, मथुरादास माथुर, छगनलाल चौपासनी-

वाला, 'ज्वाला' संपादक वंशीधर पुरोहित, किशनलाल शाह, लाल साहब ऊर्फ वालकृष्ण व्यास और मुझको आक्रमण का विशेष निशाना बनाया गया। हम सभी साथियों पर घातक आक्रमण किये गये। सभी के कहीं-न-कहीं से रुधिर धारा वह निकली। मेरी तो सात जगह से हड्डियां टूट गई थीं। लाल जी बुरी तरह घायल होने पर भी वहां से निकल पड़े और पैदल ही जोधपुर चल दिये। रास्ते में मौलासर तथा डीडवाना आदि में डावड़ा कांड की सूचना देते हुए जोधपुर पहुंच गये।

'करेला और वह भी नीम चढ़ा।' वाला हाल हुआ कि हम पर ही धारा ३०२ में हत्या के मुकदमे चलाये गये। जोधपुर आते हुए ट्रेन में व्यास जी को उस क्रूरकांड की सूचना मिली, वे एक वार तो आपे से बाहर हो गये। उनकी मध्यस्थता के कारण मुकदमे वापस ले लिये गये और जागीरदारी उन्मूलन आन्दोलन में नई जान पड़ गई। इसी प्रकार के निर्मम आक्रमण चंडावल, लाडनू तथा नीमाज आदि जागीरों में भी हुए। ऐसा प्रतीत होता था, जैसे कि जागीरदारों ने मारवाड़ राज्य लोकपरिषद् और किसान सभा के विरोध में मारवाड़ व्यापी षड्यंत्र ही रच लिया हो।

संविधान परिषद के लिये चुनाव

१९४२ की अगस्त क्रान्ति के फलस्वरूप देश में जिस प्रकार हवा बदली, उसका प्रभाव देशी राज्यों पर भी पड़ा। १९४३ में केन्द्र में कांग्रेस-लीग का जो अन्तरिम मंत्रिमंडल बना और स्वतंत्र भारत का संविधान तैयार करने के लिये संविधान परिषद् का जो गठन हुआ, उसकी जोधपुर में भी प्रतिक्रिया हुई। जोधपुर नगरपालिका के निर्वाचन क्षेत्र को इलैक्ट्ररल कालेज का रूप देकर उसकी ओर से संविधान परिषद् के लिये एक सदस्य चुनने का अधिकार दिया गया। श्री इन्द्रनाथ जी मोदी और श्री जयनारायण जी व्यास के बीच तीव्र संघर्ष हुआ। विरोध में पानी की तरह रुपया बहाया गया और प्रतिक्रियावादियों ने सारी शक्ति विरोध में लगा दी। फिर भी व्यास जी बड़ी शान से अत्यधिक बहुमत से सफल हुए। मैंने और श्री द्वारकादास पुरोहित ने इस चुनाव में दिन-रात एक करके बड़ा परिश्रम किया। अपने लोकप्रिय नेता की सफलता पर हम फूले न समाये।

एक मनोरंजक घटना

१९२९-३० की एक घटना बड़ी ही मनोरंजक है। उसका उल्लेख भी मैं अन्त में कर दूं। मंडोर की पहाड़ी में मंडलनाथ नाम का एक बड़ा ही सुरम्य तीर्थ क्षेत्र है। व्यास जी वहां हैट लगाकर और धोती पहनकर आया करते थे। कुछ दिन वहां रहकर एकान्त में विश्राम किया करते थे। विश्राम के उन दिनों में भी हम साथियों के साथ देश और राजस्थान की राजनीतिक समस्याओं के बारे में चर्चा व विचार-विनिमय हुआ करता था। इस प्रकार युवकों में राजनीतिक चेतना पैदा कर उन्हें देश सेवा के लिये अग्रसर करने में व्यास जी हमेशा लगे रहते थे।

एक दिन मैं उनसे पूछ बैठा कि आप इस तीर्थ क्षेत्र में हैट लगाकर क्यों आते हैं। उन्होंने बड़े ही विनोद में उत्तर दिया कि इसमें दो लाभ हैं। एक तो धूप से रक्षा और दूसरा सी० आई० डी० वालों से सुरक्षा। सी० आई० डी० पुलिस तो दिन-रात छाया की तरह उनके पीछे लगी ही रहती थी।

मुझे यह स्वीकार करना चाहिए कि राजस्थान संघ के निर्माण के समय उनसे मेरा राजनीतिक मामलों में कुछ मतभेद हो गया था। परन्तु पारस्परिक आपसी सम्बन्ध में उस मतभेद के कारण कुछ भी भेद नहीं आया। यह थी उदारता व विशालता व्यास जी की। इसके ही कारण उनके निधन को राजस्थान में सबसे अधिक महसूस किया गया। मुझ सरीखों ने तो ऐसा अनुभव किया, जैसे कि उनका अपना कोई अन्तरंग साथी ही सदा के लिये खो गया हो।

४

चंडावल का क्रूरकांड

काका मीठालालजी त्रिवेदी, भूतपूर्व अध्यक्ष, मारवाड़ लोकपरिषद्, सोजत सिटी (राजस्थान)

लोकनायक श्री जयनारायण व्यास की संगठनात्मक अद्भुत शक्ति तथा आंदोलन के नेतृत्व करने के विस्मयजनक और साहसपूर्ण व्यक्तित्व, प्रभाव और सामर्थ्य का ठीक-ठीक परिचय मारवाड़ राज्य लोकपरिषद् के राज्यव्यापी संगठन और जागीरदारी उन्मूलन आंदोलन से मिलता है। मारवाड़ राज्य में जन-जागृति का जो महान् कार्य उन्होंने किया, उससे अपने उस महान् स्वप्न को साकार कर दिया, जिसका उल्लेख उन्होंने कभी अपनी कविता में किया था—

भूखे की सूखी हड्डी से, वज्र बनेगा महा भयंकर।
ऋषि दधीचि को ईर्ष्या होगी, नेत्र नया खोलेंगे शंकर॥ १॥
अन्न विहीन उदर की आहें, दावानल-सी भीषण बनकर।
भस्मीभूत कर देंगी उनको, जो दीनों का करते शोषण॥ २॥

मुझे उन दिनों सोजत में श्रद्धेय व्यास जी के सहकर्मी होने का सौभाग्य प्राप्त था। इसलिए उन दिनों की अनेक घटनाएं मेरे लिये आपबीती घटनाओं का महत्त्व रखती हैं। उन सबके संस्मरणात्मक विवरण पर रामायण का किष्किन्धा कांड अथवा महाभारत का उद्योग पर्व लिखा जा सकता है। यहां केवल उनकी एक झांकी दी जा रही है।

प्रजामंडल के बाद लोकपरिषद्

१९३८ में मारवाड़ प्रजामण्डल को गैर-कानूनी घोषित किया जा चुका था। उसके स्थान पर मारवाड़ राज्य लोकपरिषद् की स्थापना की गई। व्यास जी ने सोजत रोड के मारवाड़ प्रजा मण्डल के कार्यकर्त्ता सर्वश्री सेठ अमोलकचंद लोढा, सेठ गणेशमल जी खाटेर, श्री मुन्नालालजी वैद और मुझे मारवाड़ राज्य लोकपरिषद् के कार्य को बढ़ाने के लिये प्रेरणा दी। जोधपुर के बाद सोजत रोड को ही व्यास जी ने परिषद् के कार्य के लिये विशेष रूप से चुना और यहां से ही उसकी कई प्रवृत्तियों तथा गतिविधियों का सूत्र संचालन होने लगा। स्वर्गीय सेठ अमोलकचन्द जी लोढा ने आर्थिक सहायता जुटाने में विशेष मदद की। सेठ गणेशमल खाटेर व्यास जी के अन्यतम साथी व अनुगामी सिद्ध हुए।

मैंने और श्री मुन्नालालजी वैद ने उनके साथ तूफानी दौरे कर जगह-जगह परिषद् की शाखाएं खोलीं। हम जिस किसी गांव में पहुंच जाते वहां की जनता जागीरदारों से आतंकित होते हुए भी, हमारा स्वागत करती तथा भाषण सुनने के लिये बहुत बड़ी संख्या में इकट्ठी हो जाती और परिषद् को हर तरह से सहायता देने के लिये उत्सुकता जाहिर करती थी। व्यास जी के भाषण सरल मारवाड़ी भाषा में होते थे। उनकी सादगी, सच्चाई, त्याग व तपस्या सें जनता पहले सें ही परिचित थी। अतः उनके भाषण जनता के हृदय में जम जाते थे।

मारवाड़ राज्य लोकपरिषद् गैरकानूनी

सन् १९४० में मारवाड़ राज्य लोकपरिषद् भी गैरकानूनी ठहरा दी गई। जगह-जगह कार्यकर्त्ता गिरफ्तार किये गये। सोजत रोड से एक जत्था सरकारी आज्ञा भंग करने के लिये सोजत सिटी गया। धानमण्डी में सभा का आयोजन किया गया। सर्वश्री हरिराम ओझा, विजयशंकर दवे व मुन्नालाल वैद सरकारी आज्ञा की अवज्ञा करने के अपराध में पुलिस सुपरिंटेण्डेण्ट द्वारा गिरफ्तार कर लिये गये। सोजत रोड में श्री मुन्नालाल वैद के मकान को पुलिस ने घेर लिया और कोने-कोने की तलाशी लेकर हर चीज़ देखी गई। यही हाल मेरे घर का भी किया गया। दो-तीन दिन बाद भाई वासुदेव भटनागर भी गिरफ्तार कर लिये गये और अपने साथियों के साथ हवालात में वन्द कर दिये गये। सव पर मुकदमा चलाया गया। इसी प्रकार सारे राज्य में घोर दमन तथा आतंक फैला दिया गया।

चण्डावल काण्ड

२८ मार्च, १९४२ को उत्तरदायी शासन दिवस मनाने के उद्देश्य से मेरे नेतृत्व में कार्यकर्त्ता दल का एक जत्था तांगों से चंडावल चला। चंडावल के जागीरदार को मालूम था कि जत्था उसके यहां आनेवाला है। उसने आसपास के जागीरदारों से सहायता प्राप्त की और गांव के आस पास सशस्त्र आदमी तैनात कर दिये। चंडावल के मुख्य कार्यकर्त्ता श्री मांगीलाल त्रिवेदी उर्फ 'आलीशान'

को ठिकाने वालों ने पहले से ही एक मकान में वन्द कर दिया था। दरवाजे पर हम सवको रोकने का प्रवन्ध किया गया था, जिससे कोई भी आदमी वगैर जागीर-दार के नियुक्त अधिकारी की आज्ञा प्राप्त किये गांव में घुसने न पाये।

वेरहमी से मारपीट

जत्थे ने गांव में जाने की कोशिश की पर, वेकार। आखिर में उसने दरवाजे के वाहर वट वृक्ष की छाया में सभा का आयोजन करने का विचार किया। वह ठिकाने वालों के लिये असह्य था। उन्होंने अपनी निश्चित योजना के अनुसार वगैर किसी चेतावनी के कार्यकर्त्ताओं को वड़ी वेरहमी से मारना-पीटना शुरू कर दिया। झाड़ू, लाठियों, डंडों व भालों के अतिरिक्त तलवारें भी चमकाई गईं। सभा भंग हो गई। लोग इधर-उधर वचने के लिये भागने लगे। ठिकाने के निर्दयी भड़ैतों ने उनका पीछा किया। वड़ी निर्दयता से उन्हें मारा-पीटा। स्त्रियों और वच्चों को भी नहीं वख्शा गया। गांधी टोपी वालों को मारपीट का विशेप निशाना वनाया गया। कार्यकर्त्ता इस पर भी अडिग रहे। उन्होंने लाठियों की मार को वड़ी वहादुरी के झेला। कितने ही ५०-५० लाठियों की मार पड़ने पर भी अपने स्थान से टस से मस नहीं हुए। इस मारपीट में किसी के सिर, किसी की आंख, किसी का कान और किसी के गुप्तांग पर भी जान-वूझकर गम्भीर आघात किये गये। कार्यकर्त्ताओं के शरीर लाठियों की मार से सूज गये और लहू-लुहान हो गये जगह-जगह से खून वहने लगा। धूप तेज थी। भीपण गर्मी में प्यास वुरी तरह सता रही थी पर पानी पिलानेवाला कौन था? कार्यकर्त्ता किसी तरह गिरते-पड़ते तांगों में वैठ वापस सोजत सिटी पहुंचे। वहां के सरकारी अस्पताल के डाक्टर ने मामूली-सी प्राथमिक चिकित्सा कर छुट्टी दे दी। डाक्टर के व्यवहार से मालूम पड़ता था मानो उसे पहले ही हिदायतें दे दी गई थीं कि इस प्रकार की घटना घट जाने पर उसे क्या रुख अपनाना चाहिए।

दिन के डेढ़ वजे की मोटर सर्विस से सारे घायलों को जोधपुर पहुंचाया गया और वहां के विडहम हास्पिटल में जिसका नाम अव गांधी मेमोरियल अस्पताल हो गया है, भर्ती किया गया। पन्द्रह-वीस दिन के उपचार के वाद छुट्टी दे दी गई।

इस भीपण कांड से सारे मारवाड़ में सनसनी फैल गई। लोगों में जागीरदारी प्रथा के जुल्मों के प्रति वड़ी तीव्र प्रतिक्रिया हुई।

व्यास जी और श्री मथुरादास माथुर अपने साथियों के साथ सोजत आये। आम सभा में इस दुःखद घटना पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने जनता को चेतावनी दी कि इस प्रकार की घटनाएं भविष्य में अन्य स्थानों पर भी घट सकती हैं। हमें धैर्य व संयम से काम लेना होगा। मुकदमेवाजी करने से हमें कोई न्याय मिलेगा, यह हास्यास्पद है।

अन्य स्थानों पर मारपीट

जिस दिन चंडावल में वह घटना घटी, उसी दिन मारवाड़ के अन्य स्थानों पर भी सभाएं करने पर लोगों को मारा-पीटा गया था। उनमें मुख्य रूप से नीमाज में श्री माधवलाल तथा मौलाना अख्तर मुहम्मद आदि को पीटा गया व गुटों में श्री अमरसिंह जी पर सख्त मार पड़ी।

चंडावल कांड के बाद

चंडावल कांड के समाचार समाचार-पत्रों में विशेष रूप से प्रकाशित हुए और सारे ही देश में उन पर खेद प्रकट किया गया। मारवाड़ राज्य लोकपरिषद् और उसके तत्कालीन अध्यक्ष श्री रणछोड़दास जी गट्टानी ने बड़े ही धैर्य तथा संयम से काम लिया। उत्तेजना में कोई कदम नहीं उठाया गया। यह अफवाह चारों ओर फैल गई और समाचार-पत्रों में भी प्रकाशित हो गई कि १६ अप्रैल को मारवाड़ राज्य लोकपरिषद् चंडावल में एक और जत्था भेजेगी। सोजत के फर्स्ट क्लास जिला मजिस्ट्रेट ने १८ अप्रैल को एक हुक्म जारी किया। उस हुक्म में नई दिल्ली के दैनिक 'हिन्दुस्तान' में प्रकाशित समाचार का उल्लेख करते हुए चंडावल में एक मास के लिये १४४ धारा लगा दी गई और सभाबन्दी का आदेश जारी कर दिया गया। लेकिन, १६ अप्रैल के सम्बन्ध में फैली अफवाह सर्वथा निराधार थी। फिर भी ठिकाने की ओर से परिषद के कार्यकर्त्ताओं पर आक्रमण करने की पूरी तैयारी की गई थी। यह भी समाचार था कि पाली से उसके लिये बहुत-सी लाठियां खरीदी गई थीं। परिषद ने बड़े धैर्य से काम लिया। उसके अध्यक्ष श्री गट्टानी ने चंडावल कांड की जांच का काम व्यास जी के सुपुर्द किया। व्यास जी ने २१ अप्रैल को सोजत मजिस्ट्रेट को एक पत्र लिखकर सूचना दी कि वे वहां जांच के लिये २२ अप्रैल को जा रहे हैं। उन्होंने यह भी लिखा कि १६ अप्रैल को परिषद की ओर से किसी प्रकार का कोई कदम उठाने का फैसला नहीं किया गया था और परिषद यदि कुछ करने का फैसला करेगी, तो पहले उसकी सूचना उनको दी जायगी। व्यास जी ने वहां पहुंचकर पूरी जांच की। आहत लोगों के बयान लिये। हमला करने वालों की सूची तैयार की। जांच की रिपोर्ट महात्मा गांधी, पंडित जवाहर-लाल नेहरू, मारवाड़ राज्य लोकपरिषद तथा अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद को भेजी।

महात्मा जी को पत्र

गांधी जी को उन्होंने १६ अप्रैल को चंडावल जाने से पहले एक विस्तृत पत्र लिखा था। वह यहां अविकल रूप में दिया जा रहा है :

"पूज्य बापू,

सादर वन्दे। जोधपुर रियासत में बयासी फी सैकड़ा ज़मीन जागीरदारों के कब्जे में है और अट्ठारह फी सैकड़ा राज्य की है। जागीरों में, स्कूल, अस्पताल और

सफाई-रोशनी वगैरह ज़िन्दगी की ज़रूरी चीज़ों का प्राय: अभाव है। जागीरदार खुद तो लोगों के आराम और उत्थान के साधन उपस्थित करना प्राय: नापसन्द करते हैं। स्टेट भी उन्हें जागीरदारों के भरोसे छोड़ देती है। इससे जागीरें स्टेट के खालसा इलाके से ज़्यादा पिछड़ी हैं।

"मैं यहां चंडावल जागीर में मारवाड़ लोकपरिषद के कुछ कार्यकर्त्ताओं पर किये गये हमले की तफसीलवार जांच के लिये आया हुआ हूं। २८ मार्च को लोक-परिषद् ने रियासत-भर में 'उत्तरदायी शासन दिवस' मनाया। परिषद् की सोजत जिला शाखाओं में अलग-अलग समय पर यह दिवस मनाया जाने को था। अलग-अलग गांवों के कार्यकर्त्ता इकट्ठा होकर सभी गांवों में जावें, ऐसा कार्यक्रम था। चंडावल में श्रीगणेश करने को था। २८ तारीख को सुबह वहां सोजत रोड, सोजत शहर, वगड़ी, सांडिया व देवली के इक्कीस कार्यकर्त्ता अलग-अलग दिशाओं से अलग-अलग समय पहुंचे। वहां दो सौ के करीब लाठी और भालाधारी मौजूद थे। उन्हें सुना है आस-पास के जागीरी इलाकों से मारपीट के लिये बुलाया गया था। इन लोगों ने हमारे कार्यकर्त्ताओं को गांवों में जाने से रोका। वे लोग बैठ गये और चंडावल शाखा के कार्यकर्त्ता श्री मांगीलाल जी शर्मा के आने पर बैठे हुए कार्य-कर्त्ताओं ने नारे लगाये। इस पर ठिकाने के लोग उन पर टूट पड़े, जिससे प्राय: सभी लोगों को चोटें आईं। कुछ लोगों को जोधपुर अस्पताल में भेजा गया और भी जगह ऐसी बातें हुई हैं, पर इतनी उग्रता के साथ नहीं। इस दिन खास काम जिम्मेवार हुकूमत की प्रतिज्ञा पढ़ना था।

"आज देशी राज्य प्रजा का दिन है। आज वह प्रस्ताव पढ़ा जाना चाहिये जो नई दिल्ली में देशी राज्य लोकपरिषद् की स्टैंडिंग कमेटी ने पास किया है। चंडावल में तो यह प्रोग्राम नहीं रखा है, लेकिन मुझे तो जांच के सिलसिले में जाना है। हिन्दी के एक अखबार में वहां सभा होगी ऐसे समाचार छपे थे। इस पर चंडावल में कल से एक मास के लिये दफा १४४ लगा दी गई है। वहां सौ-डेढ़ सौ आदमी पुलिस के भी भेज दिये गये हैं। आज के दिन मेरा वहां प्रोग्राम है नहीं। इसलिए उन्हें निराश ही होना पड़ेगा।

"आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि ठिकाने वालों ने लोगों को पीटा भी और अब भी पीट-पीटकर या भय दिखाकर लोगों से हस्ताक्षर करा लेते हैं कि हम अपने गांवों में लोकपरिषद् नहीं चाहते। जिन्होंने हस्ताक्षर किये। उन्हीं लोगों ने यहां आकर ये बयान लिखित रूप में दिये हैं कि हमें दबाकर हमारे हस्ताक्षर लिये गये। जैसा कि आपको मालूम होगा कि हमारे राज्य के दीवान सर डोनाल्ड फील्ड हैं। वे होशियार आदमी हैं; लेकिन उनकी एक बड़ी भारी कमज़ोरी यह है कि जो युद्ध-फंड में अच्छी रकमें दे दें उन्हें वे माफ कर सकते हैं और प्रजा पर जुल्म होते देखकर भी वे आंखमिचौनी कर लेते हैं। जागीरदारों के पास पैसा है। वे दे

सकते हैं। अब प्रजा के घर भी उजड़ने लग गये हैं। हमारे साहब को चिन्ता नहीं। उल्टा उन्हीं की मदद में वे रहते हैं।

"कुछ दिनों पहले आपका एक लेख 'हरिजन' में छपा था, जिसमें आपने यह सलाह दी थी कि रियासतों में लोगों को डरने की जरूरत नहीं। जहां मारपीट कर के मामूली प्रवृत्तियां रोक दें और रोकथाम की जिम्मेवार भी जनता ही को मारपीटकर बनाया जाय और जहां विना माकूल कारणों के १४४ धारा लगा दी जाय क्या वहां भयभीत होकर नहीं जाना उचित होगा?

"लोक-परिषद् की कार्यकारिणी २५-२६ अप्रैल को सोजत शहर में होगी। अगर आपके विचार डाक्टर मेनन द्वारा या स्वयं लिखकर उस तारीख तक भिजवा सकें तो वड़ी कृपा हो। आपको अधिक काम हो तो इस सम्वन्ध में आपकी जो भी आज्ञा हो २६ के वाद जोधपुर मेरे नाम भेजने की अनुकम्पा करें। मेरा २६ तारीख तक का पता नीचे मुजिव रहेगा।"

—विनीत

जयनारायण व्यास

२४ अप्रैल को चंडावल जाने से पहले यह पत्र इसलिये लिखा गया प्रतीत होता है कि उनको भय था कि कहीं २५ अप्रैल से पहले उनको गिरफ्तार न कर दिया जाय और वाद में पत्र लिखना कदाचित् सम्भव न हो सके। २५-२६ अप्रैल को मारवाड़ राज्य लोकपरिषद् की कार्य समिति की बैठक सोजत में हुई। २६ अप्रैल को राज्यभर में चंडावल अत्याचार विरोधी दिवस मनाया गया। चंडावल कांड सम्वन्धी चित्रों के फोटो कार्ड पर छपवाकर राज्य में सर्वत्र वेचे गये। परिषद् की कार्य-समिति की बैठक में आवश्यकता होने पर सत्याग्रह करने का भी निश्चय किया गया और परिषद् के अध्यक्ष श्री रणछोड़दास जी गट्टानी उसके प्रथम डिक्टेटर नियुक्त किये गये। २७ अप्रैल, १९४२ को वे स्वयं चंडावल की स्थिति का अध्ययन करने के लिये गये। वहां जनता ने उनका हार्दिक स्वागत किया। राज्य की तरफ से पुलिस सुपरिंटेण्डेण्ट व सोजत के हाकिम वहां पहले से मौजूद थे। उन्होंने स्थिति को संभाला और आपस में वातचीत कर समझौते का मार्ग प्रशस्त किया। वस्तुतः चंडावल कांड से ही मारवाड़ राज्य लोक परिषद् का वह ऐतिहासिक आन्दोलन शुरू हुआ था, जिसने वरवस गांधी जी का ध्यान भी अपनी ओर आकर्षित कर लिया था।

कुछ विशिष्ट महानुभाव

सोजत रोड के कुछ महानुभाओं का उल्लेख ऊपर किया गया है, जिनसे मारवाड़ राज्य लोकपरिषद् को विशेष आर्थिक सहायता प्राप्त होती थी। ऐसे महानुभावों में श्रीमान् सेठ छगनमल जी मूथा का उल्लेख आवश्यक है। वे आजकल वंगलौर में व्यापार व्यवसाय करते हैं। आप नियमित रूप से व्यास जी को परिषद्

के लिये आर्थिक सहायता अपने मित्रों की मारफत भिजवाते रहते थे। मारवाड़ लोकपरिषद् के आन्दोलन के साथ आपकी पूरी सहानुभूति थी। परिषद् के कार्य-कर्त्ताओं के जेल जाने पर उनके परिवार वालों की आर्थिक सहायता करना आप अपना कर्त्तव्य समझते और जेल में भी उनकी सुख-सुविधाओं के लिये प्रयत्नशील रहते थे। आपकी प्रेरणा पर आपके बड़े भाई स्वर्गीय सेठ मूलचन्द जी भी राष्ट्रीय आन्दोलन में मुक्तहस्त से आर्थिक सहायता किया करते थे। ऐसे उदार महानु-भावों की सहायता भुलाई नहीं जा सकती।

५

मारवाड़ की जनता के लिये उनका संघर्ष

श्री मोहनलालजी कठारस्थले, जैतारण (राजस्थान)

सन् १९२६ में मैं मेसर्स एस० गिरधरलाल बैंक में खजांची था और सिकन्दराबाद किले में रहने वाली अंग्रेजी फौजों में तनख्वाह का वितरण करता था। उस समय इंपीरियल बैंक न था। उस वक्त गांधी जी के विदेशी कपड़ों के बहिष्कार का आंदोलन चल रहा था। विदेशी कपड़ों की होलियां जलाई जा रही थीं। अंग्रेज़ों की पल्टन में जवान गाय बैल के मांस के लिये एक मुसलमान को ठेका दे रखा था। उसके लिये सैकड़ों गाय-बैल कत्ल होते थे।

श्रीमती सरोजिनी नायडू का भाषण भी वहां कभी-कभी हुआ करता था। मैं एक बार उनका भाषण सुनने गया। उस भाषण का मुझ पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि मैंने नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया। मुझे राजनीतिक वैराग्य उत्पन्न हुआ। वही वैराग्य व्यास जी के सम्पर्क में रहने का निमित्त बन गया।

प्रथम मिलन

व्यास जी उन दिनों जोधपुर राज्य से निर्वासित थे। १९३६ में उन्होंने श्री भूलाबाई देसाई को ब्यावर बुलाकर एक राजनीतिक सम्मेलन का आयोजन किया उसमें मेरा व्यास जी से पहला सम्पर्क हुआ। ब्यावर चांद गेट के सामने चिरंजी-लाल जी की बगीची में व्यास जी, श्री हरिभाई किंकर और गोपीकृष्ण विजय-वर्गीय आदि रहते थे।

गांधी जी से प्रथम मिलन

महात्मा गांधी का दिल्ली से अहमदाबाद जाने का प्रोग्राम था। तब व्यास जी हमको स्वयंसेवक बनाकर रेलवे प्लेटफार्म पर ले गये। जहां मैं खड़ा था, वहां

महात्मा जी का तृतीय श्रेणी का डिब्बा रुका। गाड़ी रुकते ही महात्मा जी ने हरिजन फंड के लिये अपना हाथ बाहर निकाला। मेरी जेब में एक ही पैसा था। वह मैंने महात्मा जी के हाथ में रख दिया। व्यास जी की महात्मा जी से बातचीत हुई। काफी चन्दा इकट्ठा हुआ।

उन्हीं दिनों श्री जवाहरलाल नेहरू ब्यावर पधारे थे। उनको दो घोड़ों की बग्घी में बिठाकर जलूस निकाला गया। मुझे बग्घी के पीछे तिरंगा झंडा देकर व्यास जी ने खड़ा किया। स्वयंसेवकों की व्यवस्था ठीक नहीं थी। भीड़ बहुत थी। नेहरू जी ने स्वयं गाड़ी से उतरकर स्वयंसेवकों को जनता को कंट्रोल करने का ज्ञान करवाया।

व्यास जी जोधपुर में

व्यास जी के पिता जोधपुर में बीमार थे। व्यास जी उस समय जोधपुर से निर्वासित थे। इसलिए वे ब्यावर में ही रहते थे। उन्होंने ब्यावर से 'आगीबाण' नामक पत्र भी निकाला था। उन्होंने जोधपुर दरबार को लिखा कि पिताजी की बीमारी के कारण मुझे जोधपुर जाने की अनुमति दी जाय। कुछ भी उत्तर नहीं मिला। व्यास जी कानून भंग करने के लिये जोधपुर रवाना हो गये। उनके रवाना होने से पूर्व हम कुछ साथी जोधपुर पहुंच चुके थे। जोधपुर रेलवे प्लेटफार्म पर हम उनके स्वागत के लिये एकत्र थे। जोधपुर स्टेट की ओर से डी० आई० जी० बलदेवरामजी मिर्धा पुलिस के साथ उपस्थित थे। गाड़ी आते ही नारे लगाते हुए बड़ी तादाद में लोग व्यास जी को उनके घर ले गये। स्टेट की पुलिस का कन्ट्रोल कोई काम न आ सका। एक घण्टे में ही उनको जोधपुर दरबार का यह इत्तलानामा मिला कि तुम अपनी रोज़ की डायरी हमारे सामने पेश किया करो। इसका उत्तर व्यास जी ने यह दिया कि यदि मेरे पिता जी में बाहर जाने की सामर्थ्य हुई, तो मैं उनको बाहर ले जाऊंगा। अगर बीमारी अधिक हुई तो मैं यहीं रहूंगा। आप अपनी स्टेट का एक आदमी मेरे घर भेज दीजिये। जो कुछ मैं करूंगा, उसके सारे समाचार वह आपको देता रहेगा।

व्यास जी के पिता कुछ दिनों के बाद गुज़र गये। तब व्यास जी वापस स्टेट के बाहर जाने लगे। महाराजा उम्मेदसिंह ने उनसे कहा कि आप अपने पिता के क्रिया कर्म तक यहां ही रहिए।

व्यास जी मेरे गांव में

एक बार मैंने अपने गांव बीराटियां में व्यास जी को उनके दल-बल के सहित बुलाया। उनका भाषण होनेके बाद जागीरदार इकट्ठे हुए। उस वक्त मेरी भानायता गांव की जमीन नीमाज के जागीरदार ने दबा ली थी और वे मुझे तंग करते थे। व्यासजी ने मुझ से कहा कि ये जागीरदार लोग आपकी तरह हज़ारों किसानों को तकलीफ देते हैं। हमें उनकी तकलीफ मिटानी चाहिए। जागीरदारों की गलती

का कोई सवाल पेश करने पर वे नाराज़ हो जाते थे। इस कारण मुझे अपना गांव छोड़ना पड़ा और मैं जैतारण रहने लगा।

जागीरदारों के न्यायिक अधिकार

२३ मार्च, १९३८ को जागीरदार पावर्स इनक्वायरी कमेटी की तरफ से सवालात की एक प्रति जैतारण हाकिम ने मुझको भेजी। मैंने वह व्यास जी को दिखाई उन्होंने रात-भर चार कप चाय पीकर उनके जवाब लिखे और उसकी तीन सौ प्रतिलिपियां छपवाकर हर गांव में भेजीं। कमेटी ने अपना फैसला ११-१-३९ को दिया। जिल्द नं० ७४, हुक्म नं० १६ के अनुसार सिर्फ ३६ जागीरदारों की जूडिसियल पावर्स रही। बाकी सबकी समाप्ति कर दी गई।

◇ ◇ ◇

एक बार व्यास जी और मैं खेड़ा गांव गये। वहां के काश्तकार बिलकुल काले रंग की गोयले की बनी हुई रोटी खा रहे थे। व्यास जी ने भी वे रोटियां खाईं। यह था उनका तरीका काश्तकारों में घुल-मिलकर उनके सही हालात जानने का।

२४ जुलाई, १९४१ को मेरे और माधुलाल खाती के साथ नीमाज में जागीरदारों ने मारपीट की। तब व्यास जी जोधपुर से पुरुषोत्तमदास जी डाक्टर को लेकर सीधे बीराटियां आये। एक गढ़ में बहुत से जागीरदार इकट्ठे थे। व्यास जी स्वयं एक कुएं से पानी भरकर लाये और पुरुषोत्तमदास जी ने बाटियां बनाईं। उनका जीवन बहुत सादा था। दूसरों पर निर्भर रहने की उनकी आदत नहीं थी।

कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर

सन् १९४१ अप्रैल मास में जोधपुर में हम कार्यकर्त्ताओं को तीन महीने तक ट्रेनिंग दी गई थी। जोधपुर के सरदारपुरे के एक आखिरी मकान, रावण के मैदान के पास किराये पर लिया गया था। वहां पर व्यास जी ने वह शिविर खोला था। वे स्वयं पढ़ाने के लिये आया करते थे।

मारवाड़ के प्रत्येक गांव में लोकपरिषद् की शाखाएं खोली गईं। व्यास जी इस कार्य में इतने संलग्न रहते थे कि उन्होंने अपना घरबार, फर्नीचर सभी कुछ इसी कार्य में लगा दिया था। उनकी माता जी हमारा बड़ा आदर करतीं थीं। व्यास जी अपने कार्य में इतने तत्पर रहे कि वे अपनी बच्चियों के विवाह में भी घर पर नहीं रह सके। विवाह का कार्य उनकी माता जी तथा श्रीराम जी, मनसाराम जी पुरोहित ने किया। वे व्यास जी के लड़के को भाया के नाम से पुकारते थे।

वचन के पक्के व समय के पाबन्द

सन् १९४० में जोधपुर सरदारपुरा में व्यास जी से मेरी बातचीत हुई। तब मैं करीब डेढ़ महीने व्यास जी के साथ रहा। उनकी आर्थिक हालत बहुत गिरी हुई थी। परन्तु वे ऐसे राजनीतिक संन्यासी थे कि किसी भी बात की परवाह नहीं करते थे। पाली के एक सेठ ने व्यास जी को सवा सौ रुपयों की थैली भेंट की।

उन्होंने वह थैली मुझ को सौंप दी और कहा कि सरदारपुरा के शिविर का खर्च इससे चलाना। मैं एक ज़रूरी काम से बीकानेर जा रहा हूं।

मेरी भानायता जमीन का केस भी चल रहा था। उन्हें मेरी जमीन के केस की इतनी चिन्ता थी कि मुझे विश्वास दिलाकर कहा कि मैं बीकानेर से आकर तुम्हारी जमीन के बारे में नेहरू जी को लिखूंगा।

लगन व धुन का एक उदाहरण

व्यास जी के बीकानेर जाने के बाद उनकी गैर मौजूदगी में उनके नाम से तीन तार बम्बई से आये। चार दिन के बाद व्यास जी बीकानेर से सरदारपुरा आ गये। उन्होंने आते ही मुझसे कहा कि वे कल सवेरे ही बम्बई जायेंगे। इसलिए रात्रि को ही आपकी मिसिल देखकर नेहरू जी को जमीन के बारे में लिख कर भेज देंगे। वे रात्रि में मिसल देखने में ऐसे लग गये कि भोजन भी न कर सके। रात्रि में नौ कप चाय पीकर पच्चीस पेज अंग्रेजी में लिख कर प्रेस में छापने के लिये दे दिये।

पीलिया से पीड़ित

रात्रि में नींद न ले सके और प्रातः काल बम्बई के लिये रवाना हो गये। गाड़ी में बहुत भीड़ थी। वे एक सप्ताह के बाद बम्बई से वापस लौटे तो उनकी आंखें पीली थीं। निरन्तर कार्य के भार के कारण उनको पीलिया हो गया था। मैं उनके पास पच्चीस दिन रहा। उनको भुने हुए चने और नीबू की शिकंजी दी जाती थी। बीमारी के कारण व्यास जी को शिविर बन्द करना पड़ा। भारी-से-भारी काम होने पर भी वे सहज में थकान या हार नहीं मानते थे।

◇ ◇ ◇

उन्होंने दस दिन के लिये एक प्रताप नगर बसाकर बहुत बड़ी प्रदर्शनी का आयोजन किया। प्रस्तुत प्रदर्शनी लोक शिक्षण और जन-जागृति पैदा करने के लिये बड़ी महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुई। मैंने भी उससे बहुत सी बातें नोट कीं। उन नोटों की डायरी आज तक मेरे पास सुरक्षित है।

किशनगढ़ चुनाव

जब व्यास जी किशनगढ़ क्षेत्र से उपचुनाव में खड़े हुए, तब उन्होंने अपने प्रचारकों को प्रचार करने के लिये अलग-अलग गांव बांट दिये थे। मेरा प्रचार का हलका नरवर था।

जागीरी अत्याचार का एक नमूना

निम्बाहेड़ा ठाकुर उम्मेदसिंह जी, सकवा ठाकुर माधोसिंह जी मिनिस्टर के बहनोई थे। जिनके गढ़ में चौबीस साल पहले एक चौकीदार को मार-पीटकर मार दिया गया था। बहनोई का पक्ष लेकर स्टेट की मोटरों में भर कर उसके घर वालों को उन्होंने पाली लाकर छोड़ दिया, गांव से उन्हें निर्वासित कर दिया था। उनके घर व जमीनें जब्त कर ली थीं। मैं अमीन बनकर उस गांव को छटे हिस्सा

लाटने गया, तब मैंने यह किस्सा व्यास जी को लिखा। उन्होंने प्रयत्न करके फौरन उनको वापस अपने गांव में बसवा दिया।

भ्रष्टाचार पर विनोदपूर्ण तत्परता

व्यास जी के मन्त्रित्व काल में सत्रह कार्यकर्त्ताओं को मोटरों के लायसेंस मिले जो उनके एक कृपापात्र ने अपने एक साथी को दिलवा दिये। अपवित्र गठबन्धन था। कई कार्यकर्त्ताओं को व्यास जी ने माहवारी रुपये बांधे थे। वे भी उनको नहीं दिये गये। फकत मुझे तीन महीने के तीन सौ रुपये दिये गये थे। जब मैंने व्यास जी को यह किस्सा कहा तब उन्होंने इस पर 'खुदाफरोश' की कहानी कह कर ऐसा विनोद और व्यंग्य किया कि मैं सुनता ही रह गया। उस विनोद भरी व्यंग्यपूर्ण कहानी को यहां देने के लोभ का संवरण मैं नहीं कर सकता। व्यास जी ने कहना शुरू किया—"एक सेठ और एक जाट जंगल के रास्ते से किसी गांव को जा रहे थे। रास्ते में एक ईख का खेत आया। सूने खेत को देख कर जाट दो गन्ने ले आया। उसने एक गन्ना सेठ जी को दिया। सेठ जी ने उससे कहा कि तुम नेकचलन नहीं हो। इसी कारण तुम गरीब हो। अगर तुम मेरे पास रहो, तो तुम भी नेकचलन और धर्मात्मा बन जाओगे। इससे सुख पाओगे। जाट सेठ जी के पास रहने लगा और घर का सारा काम करने लगा। सेठ जी व्यापार के लिये समुद्र पार किसी दूसरे देश को जाने लगे। उन्होंने जाट को भी अपने साथ ले लिया। जब वे बीच समुद्र में पहुंचे तो उन्होंने एक मगर को अपनी नाव की ओर बहुत तेज़ी से आते देखा। सेठ जी ने देखा कि पास में बकरा आदि कोई जानवर नहीं जिसको मगरमच्छ के सामने डाल, जान बचाई जा सके। उन्होंने झट तय किया, जाट ऐसा मूर्ख है कि इसको समुद्र में डाल दिया जाय। उसने अपने नौकरों को कहा, उस जाट को बांधकर मगर के नाव के पास आने पर उसके सामने डाल दिया जाय। जाट मगर के सामने न गिर उसकी पीठ पर जा गिरा और बच गया। जाट ने सोचा कि यह सेठ इतना धर्मात्मा बनता था, मुझे तो ईख तोड़ने पर इतना कहा। परन्तु अपनी जान बचाने को इसने मुझे भी समुद्र में डुबोने में संकोच नहीं किया। मगरमच्छ समुद्र के किनारे पहुंच गया। वह कोई दूसरा देश था। जाट अपने बन्धन खोल कर नगर में पहुंचा। वहां उस देश के बादशाह का गुरु 'खुदाफरोश' रहता था। बड़ा धर्मात्मा था। जिस भवन में वह रहता था उसके तीन सौ साठ दरवाजे थे। जिस दरवाजे से निकलता, वहां रहने वाले अपना अहोभाग्य मानते। शहर के कुछ बदमाश खुदाफरोश का सीधापन देख झट उसके चेले बन गये और उसकी भेंट की वस्तुओं पर हाथ साफ करने लगे। वे अपनी दूसरी हरकतों से भी बाज नहीं आये।

जब खुदाफरोश किसी रास्ते से निकलते, मुहल्ले और बाजार के लोग उनके पैरों में गिर नमस्कार करते। बादशाह के गुरु जी भी इतने दयालु थे कि वे अपनी

पैरों तक लटकती सफेद दाढ़ी से रास्ते की चींटियों को हटाते हुए चलते थे। परन्तु उनके चेले ऐसे दुष्ट स्वभाव के थे कि वे उनके पीछे दो पंक्तियां बनाकर खड़े हो जाते और ध्यान रखते, जब किसी अमीर के लड़के लड़की गुरुजी के चरणों में नमस्कार करने को झुकते तो वे उनको पीछे खींच लेते। गुरु जी के निवास स्थान पर ले जा कर वे उसके गहने उतार लेते और छत पर ले जाकर बांध देते। वहां चीलें और कौए झपट-झपट कर उन्हें खा जाते। लोगों को इस गिरोह का पता न चला। दुःखी होकर उन्होंने बादशाह से प्रार्थना की कि हुजूर हमारे छोटे बच्चों को न जाने कौन गायब कर देता है। इसलिए आप इसका जल्दी पता लगवायें। बादशाह ने फौरन हुक्म निकाल दिया कि शहर में कोई अजनबी घूमता पाया जाय, तो उसे तुरन्त गिरफ्तार कर लिया जाय। वह जाट नगरी में घूम रहा था। बादशाह के सिपाहियों ने उसे अजनबी देख गिरफ्तार कर लिया। जाट ने पूछा कि मुझे क्यों गिरफ्तार किया गया है। सिपाहियों ने कहा कि शहर में अमीरों के बच्चे उड़ा लिये जाते है। इसलिए बादशाह ने यह पता लगाने के लिये हमें हुक्म दिया है कि किसी अजनबी को देखो तो गिरफ्तार कर लो। जाट ने उनकी बातें सुनकर उनसे कहा, मुझे बादशाह के पास ले चलो। मैं बच्चों के उड़ाने वालों का पता लगा दूंगा। सिपाही उसे बादशाह के पास ले गये। उसने बादशाह से अर्ज की कि हुजूर आपके यहां सबसे धर्मात्मा कौन है? बादशाह ने कहा मेरे गुरु खुदाफरोश। जाट ने कहा कि आप मुझे छोड़ दें तो मैं बच्चों के उड़ाने वालों का पता लगा दूंगा। फिर उसने धर्मात्मा बनने वाले सेठ की बात याद कर कहा कि वे ही ऐसे दुष्कर्मों में अगुआ होते हैं। बादशाह ने उसको छोड़ दिया और अपने सिपाही पीछे लगा दिये। जाट बादशाह के गुरु खुदाफरोश को आते हुए देख रहा था। उसका ध्यान उनके चेलों की तरफ भी था। उसने देखा कि जब अमीरों के बच्चे खुदाफरोश के पैरों पर गिरते हैं, तो उनके चेलें उन्हें पीछे खींच लेते हैं। यह देख जाट ने खुदाफरोश व बादशाह को भी प्रत्यक्ष दिखला दिया। बादशाह ने जाट को छोड़ दिया।"

व्यास जी ने इस कहानी की समाप्ति पर मुझसे कहा कि जो कार्यकर्त्ता अपने को मेरा चेला बताते हैं, वे मेरे को खुदाफरोश की तरह आगे रखकर नाजायज फायदा उठाते हैं; तुम जाट बनकर उनसे मुझे सावधान करो, जिससे मैं भ्रष्टाचार को खत्म करने में सफल हो सकूं। व्यास जी की इस कहानी से मैं इतना प्रभावित हुआ कि मैंने उसी समय यह कविता लिख डाली——

कांग्रेस में जन्तु जनमिया,
हाथ हाथ ने खावे।
मोटा मिनख कुटुम्ब ने खावे,
छोटा रुलता जावे॥

जैतारण में अत्यधिक भ्रष्टाचार बढ़ जाने पर मैंने व्यास जी को सूचित किया उन्होंने इस मामले की गुप्त तहकीकात कराई तथा भ्रष्टाचारी पदाधिकारियों को निलम्बित कर दिया। उनका वह आदेश मेरे पास सुरक्षित है।

◇ ◇ ◇

व्यास जी जब थक जाते थे, तब अपने को हल्का करने के लिये कुछ विनोद-पूर्ण गाने गाया करते थे। उनमें से कुछ की पंक्तियां निम्नलिखित हैं—

१

महाराज टीपणो लाया,
भे माता सूं मिल आया।
गरीबां रां करम बांचता अटके,
मालदारा रा माल मुफ्त में गटके।

२

ओ कांई रासो जी,
हैरान अकल है, अजब तमासो जी।
ओ कांई रासो जी ॥ टेक ॥
पग दूखे पण कड़िया भारी,
जिण सूं ये दुःख पासो जी।
कान काटे, पिण बालकियां मोटी घड़वासो जी।

३

भूखे सूखे की हड्डी से
वज्र बनेगा महा भयंकर।
ऋषि दधीचि को ईर्ष्या होगी
नेत्र नया खोलेंगे शंकर।

उनके धार्मिक विचार

मैंने एक बार व्यास जी से मूर्ति पूजा के बारे में चर्चा की, तब उन्होंने मुझको एक कविता सुनाई। इस कविता से उनके क्रान्तिकारी धार्मिक विचारों का स्पष्ट आभास मिल जाता है—

सजीवो नजीवो गढीया, सजीवो नजीव सूं मांगे
मली बैठा बे,
नजीवो सजीवा सूं बोले,
थारी एक फूटी के बे,
पत्थर फोड़िया, देव गढीया,
दे छाती पर पाय जी।

पत्थर में परमेसुर हो तो,
गढ वाला ने खाय जी।
पूजो घर की धट्ठुलड़ी,
पीस खाय संसार जी।

व्यास जी के कुछ गानों का संग्रह छोटी-छोटी पुस्तिकाओं के रूप में मैंने प्रकाशित किया था और उनके कुछ विचारपूर्ण लेख भी छोटी-छोटी पुस्तिकाओं के रूप में प्रकाशित किये थे।

मुझ पर अपार कृपा

उन्होंने मारवाड़ के जागीरदारों के जुल्म से दुःखी व्यक्तियों के विषय में नेहरू जी को पत्र लिखा था, उनमें मेरा नाम तीसरे नम्बर पर था। वह पत्र व्यास जी ने मुझको दिखाया। उस वक्त जोधपुर के चीफ मिनिस्टर कर्नल डोनाल्ड फील्ड थे। उन्होंने मेरी जमीन पर शिलालेख लिखवाकर मेरा कब्जा करा दिया। यह सब व्यास जी की ही मेहनत का परिणाम था। मुझ पर उनकी सदा ही अपार कृपा रही।

६

उन दिनों के जागीरी जुल्म

पं० देवकरण जी आर्य विद्यावाचस्पति, डेह, नागौर, (राजस्थान)

व्यास जी के साथ मेरा बचपन से ही घनिष्ट सम्पर्क रहा। सन् १९४० की बात है। जब कि गांव-गांव घूमकर क्रान्ति की तरल तरंगों द्वारा जन-जन को जागृत कर रहे थे। एक बार जब वे मेरे गांव डेह जो कि नागौर से बारह मील की दूरी पर पूर्व की ओर स्थित है, नागौर के प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री शिवदयाल जी दवे, हस्तीमल जी बोथरा, जोरावरमल जी कोठारी, बालकृष्ण जी दधीचि, घनश्याम जी ज्योतिषी श्रीमाली, मुरली मनोहर जी वकील, जोरावरमल जी वकील, मगनलाल जी ओझा तथा छगनलाल जी चौपासनीवाला के साथ आये थे। भाषणों द्वारा उन्होंने जन-जन को जागृत कर दिया। जब व्यास जी का भाषण प्रारम्भ हुआ तो डेह के ठाकुर साहब जोरावरसिंह जी उदावत के भेजे हुए साथियों ने पत्थर वर्षा कर ही दी। परन्तु व्यास जी ने कहा आज जो अज्ञानता के कारण आप पत्थर फेंक रहे हैं वे कल फूल बनकर बरसेंगे। उनका भाषण और भी उग्र हो गया। थोड़ी ही देर में कुछ राजपूत हाथापाई करने को उतारू हो गये। तब हनुमान की तरह दहाड़ते हुए

शिवदयाल जी दवे कुश्ती लड़ने को तैयार हो गये। अन्त में शान्ति स्थापित हो गई। उसके बाद सांप-सांप कहकर जनता को विचलित करने की राजपूतों ने चाल चली। परन्तु जनता तनिक भी विचलित नहीं हुई। तत्काल मारवाड़ लोकपरिषद् शाखा डेह में स्थापित कर दी गई। सभापति पूनमचन्द जी बेताला, उपसभापति हीरालाल जी वैद, मंत्री मदनलाल जी बेताला, उपमंत्री खींवराम जी बड़जात्या, सहायक मंत्री कंवरलाल जी ओझा, प्रतिनिधि चौ० किशनराम छावा, रघुनाथ जाट, घासीराम छावा, गोपूराम, आईदान, धनीराम गोरा चुन लिये गये। देखते ही देखते पांच सौ सदस्य बने। जागीरदार को बेगार देनी सदा के लिये बन्द हो गई। खेजड़ी काटने पर जागीरदार ने मुकदमा चलाया। पन्द्रह वर्ष तक गरीब किसानों पर मुकदमा चलता रहा। चौ० रघुनाथ जाट व धनीराम गोरा की सरे बाज़ार जागीरदार के साथियों ने पिटाई की। भयंकर मार पड़ी, परन्तु बेगार बन्द ही रही।

रोल, मुंडवा, डीडवाना, जायल, कटौती, खियाला, तरणाऊ, और खेराट में देवकरण शास्त्री और शिवदयाल दवे ने लोकपरिषद् शाखाएं स्थापित कीं। पं० भगवतीप्रसाद अभय और चौ० हीरासिंह भजनोपदेशकों ने समाज-सुधार का प्रचार करना प्रारम्भ किया। चौ० मूलचन्द सियाग, चौ० बलदेवराम मिर्धा ने किसान सभाएं कायम करके बाइस परगनों में किसान बोर्डिंग हाउस स्थापित किये।

नागौर में आर्यसमाज मन्दिर में व्यास जी ने हरिजनों के हाथों से पुष्पमालाएं पहनीं, सहभोज किया, दलितोद्धार किया। उनके साथियों की पत्नियों ने उन्हें बिना नहाये घर में प्रवेश तक नहीं करने दिया। औसर-मौसर सदा के लिये बन्द हो गये।

लाडनू, सुजानगढ़, नोसा भगर आदि में भी व्यास जी ने जोरों से प्रचार किया। पं० हजारीप्रसाद वद्र और गंगादत्त रंगा ने कांग्रेस कार्य में विशेष भाग लिया। लाठियां पड़ीं, खूब मार सही। परिमाऊ के ठाकुर को क्रुद्ध किसानों ने पीट दिया। बेगार नहीं दी। खीमसर ठाकुर ने मुकदमा चलाया। गैर जिम्मेदार सरकार की खूब पोल खोली गई। जागीरी अत्याचार, राजाओं की मनमानी अन्धेरगर्दी और अंग्रेजों की तानाशाही की खूब आलोचना की गई। जोधपुर जेल में बिस्सा जी का बलिदान हुआ। जैसलमेर के उत्साही युवक शहीद सागरमल जी गोपा को पीट-पीटकर जेल में मार डाला गया। बीकानेर में मघाराम जी वैद्य और हनुमानसिंह चौधरी ने गंगानगर में क्रांति का बिगुल बजा दिया। इन सबमें लोकनायक जयनारायण व्यास का प्रमुख हाथ रहा।

जोधपुर नरेश ने व्यास जी को जेल के बाद मारवाड़ से निर्वासित कर दिया। अजमेर में बाबा नृसिंहदास ने सहयोग दिया। नागपुर, कामठी, वर्धा तथा हिंगनघाट आदि का व्यास जी ने दौरा किया। उन दिनों में हम लोग प्रायः ये नारे लगाया करते थे :

'जागीरदारी प्रथा खत्म हो', 'लोकपरिषद् जिन्दाबाद', 'इन्कलाब जिन्दाबाद', 'औसर-मौसर बन्द कर', 'खादी पहनो', 'बेगार बन्द करो', 'फिजूलखर्ची बन्द करो', 'राज किसका ? किसानों का', 'देश किसका ? जनता का', 'किला किसका ? हमारा', 'ये महल किसके ? हमारे'।

व्यास जी की लोकपरिषद् के सम्बन्ध में यह राजस्थानी कविता प्रत्येक के मुख पर थी :

किसान म्हांरा अन्नदाता, क्यों लागा वैर बसावा ने।
अन्नदाता सूं वैर करो तो, मिले ना टुकड़ो खावाने।।

लोकपरिषद् का स्वागत वे यों करते थे :

मारवाड़ में लोकपरिषद्, सभापति मंत्रीरसभासद्।
उपमंत्री हैं चतुर सुजान, विद्या बुद्धि बलरोनिधान।। १।।

सहयोगी सचिव, निपुण प्रतिनिधि, हिन्दी इंगलिश विद्या वारिधि।
राजनीति मर्मज्ञ पूरे, व्यास मेधावी कर्मठ शूरे।। २।।

जयनारायण विजयी होंगे, कलि कल्मष सारे धोवेंगे।
अत्याचार ठाकरां बन्द करो, अंग्रेज़ों से मत ना डरो।। ३।।

राजाओं का ना राज रहेगा बन करके गणराज्य रहेगा।
लूटपाट ना होने देंगे, अत्याचार, हम न सहेंगे।। ४।।

निर्भय जनता जागृत होगी, मिले व्यास से हमको योगी।
जयनारायण हैं हमरे साथ, करें 'देव' हम सबको मात।। ५।।

स्वामी लक्ष्मणदास जी शास्त्री का प्रधान अनाथोपकारक संस्कृत विद्यालय नागौर राजनीति मनीषियों का अखाड़ा था। बाबा नृसिंहदास जी ने 'प्रभात' का सम्पादन अजमेर से किया। नागौर में आर्यसमाज में शांतिभव पुस्तकालय की स्थापना की। 'प्रजासेवक' जोधपुर से पं० अचलेश्वरप्रसाद के सम्पादकत्व में अभी तक चल रहा है। 'लोकपरिषद् बुलेटिन', 'लोकमत', 'ज्वाला' व्यास जी की प्रेरणा पर निकले। 'रियासती' श्री सुमनेश जोशी के संपादकत्व में निकला। 'प्रेरणा' का संपादन श्री देवनारायण व्यास ने किया। 'लोकवाणी' जयपुर से प्रकाशित हुआ। 'क्रान्तिदूत' श्री रामनारायण शर्मा ने बीकानेर से निकाला। स्थान-स्थान पर खादी भंडारों की स्थापना हुई। गोकुलभाई भट्ट, टीकाराम पालीवाल, मोहनलाल सुखाड़िया, हीरालाल शास्त्री, नरसिंह कछवाहा, मथुरादास माथुर, रणछोड़दास गट्टानी, जयनारायण व्यास के नेतृत्व में भारत भू को स्वतन्त्रता दिलाने और राजस्थान को क्रांति में अग्रसर करने में लगे थे। नागौर में रामदेव आर्य, सूरजमल

अटल लूणकरण, शिवकरण, भगीरथ, मदनलाल अग्रवाल, पं० सुन्दरलाल त्रिवेदी और लालचन्द जी पित्ती प्रचार कार्य में प्रमुख हाथ बंटाया करते थे। नागौर में जिला कांग्रेस संगठन हुआ। आर्यकन्या महाविद्यालय बड़ौदा की छात्राओं ने धनुर्वेद के अद्‌भुत कला-कौशल से जनता को जोश दिलाया था। इन सब प्रवृत्तियों का व्यास जी ने नेतृत्व किया। सांकड़ा के डाकुओं को सत्पथ बताया। देश-समाज को योग्य बना दिया। तभी तो व्यास जी लोकनायक थे।

प्रकरण ७

शोषित व पीड़ित की सेवा (ख)

१

व्यास जी और टिहरी राज्य

कूर्मांचल केसरी बदरीदत्त जी पांडे, प्रेम कुटी, अल्मोड़ा (उत्तरप्रदेश)

मैं ८३ वर्ष का हो चुका हूं। बहुत निर्बल हूं और किसी काम का नहीं रहा हूं। यहां अल्मोड़ा में अपनी प्रेम कुटी में एकान्त जीवन व्यतीत कर रहा हूं। आपने मुझे लोकनायक श्री जयनारायण व्यास के सम्बन्ध में याद किया। अनेक धन्यवाद। आपका पत्र पाकर एक ऐसे पुराने साथी की अनेक स्मृतियां दिमाग में चक्कर काटने लग गईं, जिसको मैं तब से जानता था, जब केन्द्रीय असेम्बली के सदस्य के नाते दिल्ली में रहा करता था; और स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक के नाते हम सब एक-दूसरे से सगे भाइयों से भी अधिक स्नेह रखते थे। छल-कपट, ईर्ष्या-द्वेष और विरोध-वैमनस्य की छाया तक कहीं आपसी व्यवहार में दीख न पड़ती थी। कैसी निर्मल थी उन दिनों की राजनीति और कैसा पवित्र था हम लोगों का उन दिनों का राजनीतिक जीवन। व्यास जी तो उस स्नेह सम्बन्ध, निर्मलता और पवित्रता की साक्षात मूर्ति ही थे। एक बार उनसे मिलने वाला उनको कभी भूल न सकता था। इसीलिये उनकी अनेक मधुर स्मृतियां मेरे हृदय पर अंकित हैं।

व्यास जी के अत्यन्त निकट सम्पर्क में मैं तब आया, जब टिहरी गढ़वाल के अमर शहीद श्री देवसुमन की ८३-८४ दिन की भूख हड़ताल के बाद टिहरी जेल में रहस्यपूर्ण मृत्यु हुई। उनकी उस रहस्यपूर्ण मृत्यु से सारे ही देश में, विशेषत: देशी राज्यों की जनता में बड़ी बेचैनी पैदा हो गई थी। उस रहस्यपूर्ण मृत्यु की जांच के लिये देशव्यापी मांग की गई। उन दिनों देशी राज्यों में भी ऐसे मामलों की जांच के बारे में अंग्रेज़ी राज्य की दुर्नीति से ही काम लिया जाता था। इकतरफा जांच करके सारे मामले की लीपा-पोती कर दी जाती थी। ऐसा ही टिहरी गढ़वाल के महाराजा की सरकार ने भी किया। श्री मौलीचन्द शर्मा के वहां के दीवान पद पर

रहते हुए भी उस रहस्य का पर्दाफाश न हो सका; हालांकि वे उसके बाद वहां से पदत्याग कर चले आये थे।

व्यास जी ने अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् की ओर से एक जांच समिति नियुक्त की और मुझे उसका अध्यक्ष नियुक्त किया। हरद्वार से तार देकर मुझे वहां बुलाया। उस समिति के मंत्री थे श्री अजितप्रसाद जी जैन और सदस्यों में ज्वालापुर गुरुकुल महाविद्यालय के आचार्य स्वर्गीय पं० नरदेव जी शास्त्री, स्व० श्री लाल जी, हिन्दी पत्रकार श्री सत्यदेव विद्यालंकार, श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर तथा श्री भगवानदास जी मुल्तानी आदि। मैं तार पाकर तुरन्त हरद्वार पहुंचा। वहां हम लोग व्यास जी के साथ ऋषिकेश गये। वहां से हम लोगों ने टिहरी गढ़वाल जाने का प्रयत्न किया। पुलिस ने मुनि को रेती पर रोक दिया और आगे नहीं जाने दिया। यहीं से उन दिनों में टिहरी गढ़वाल राज्य की सीमा शुरू होती थी। व्यास जी ने टिहरी गढ़वाल से अनुमति मांगने के लिये तार द्वारा आवेदन किया, परन्तु अनुमति नहीं मिली। भारत मन्दिर के महन्त जी ने भी समझौता करवाने की कोशिश की, परन्तु सफलता नहीं मिली। हमने मजबूर होकर ऋषिकेश में ही जांच का काम शुरू कर दिया। बहुत-सी गवाहियां ली गई और अन्य कुछ सामग्री भी एकत्र की गई। श्री अजितप्रसाद जैन ने मन्त्री के नाते रिपोर्ट तैयार की। जांच समिति की ओर से अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् के प्रधान मन्त्री श्री जयनारायण व्यास के पास वह रिपोर्ट भेज दी गई।

हिमालय की गोद में स्थित टिहरी राज्य ऐसे एकान्त प्रदेश में था, जहां बाहर के राजनीतिक कार्यकर्त्ता नहीं पहुंचते थे। वहां के महाराज सनातन धर्म जगत में विशेष प्रतिष्ठा रखते थे। इसी कारण उनके शासन की निरंकुश ज्यादतियां प्रकाश में नहीं आ पाती थीं। सनातन धर्मी नेता महाराजा की प्रशंसा के ऐसे पुल बांधते थे कि जनता में शासन की बुराइयों की चर्चा प्रायः नहीं हो पाती थी। श्री देव सुमन ने उनका ऐसा पर्दाफाश किया कि अन्य देशी राज्यों की तरह टिहरी गढ़वाल की निरंकुशता की भी समाचार-पत्रों में चर्चा होनी शुरू हो गई। श्री देव सुमन अपनी लगन, धुन और सच्चाई तथा ईमानदारी के कारण शीघ्र ही लोकप्रिय हो गये थे। व्यास जी का उन्होंने कुछ ऐसा विश्वास सम्पादन किया कि वे उनके निमंत्रण पर अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् और उसकी कार्य समिति की बैठकों में भी शामिल होने लगे थे। देशी राज्यों के अखिल भारतीय प्रतिष्ठा रखने वाले नेताओं के साथ उनका बड़ा गहरा सम्पर्क कायम हो गया था। उनके कारण ही टिहरी राज्य की चर्चा अन्य देशी राज्यों के समान उच्च स्तरीय धरातल पर की जाने लगी थी। महाराजा के शासन को यह सहन नहीं हुआ। श्री देव सुमन को राज्य से निर्वासित किया गया। प्रवेश पर रोक लगा दी गई। निषेधाज्ञा भंग करके राज्य में जाने पर गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया गया। उस तेईस-चौबीस वर्ष

के हँसमुख युवक ने अपनी उभरती हुई नौजवानी, खिलता हुआ स्वास्थ्य, जीवन की समस्त महत्त्वाकांक्षाएं और उस घर-गृहस्थी का सारा सुख, जिसकी देहरी पर अभी पैर ही रखा था, अपने राज्य की जनता के लिये हँसते-खेलते न्यौछावर कर दिया और 'शहीद' होकर 'अमर' पद प्राप्त कर लिया। व्यास जी ने टिहरी राज्य की जनता के आन्दोलन में निरन्तर दिलचस्पी लेते हुए उसके इस युवक नेता की शहादत को व्यर्थ न जाने देकर, उसको यथोचित मान प्रतिष्ठा प्रदान करने का जो महान् कार्य किया उसके लिये टिहरी की जनता सदा के लिये उनकी ऋणी रहेगी। श्री देव सुमन की विधवा पत्नी चि० विनय लक्ष्मी के लिये व्यास जी ने जो कुछ किया, उसी का यह सुफल है, कि वह आज उत्तर प्रदेशीय विधान सभा की सदस्या हैं; और अपने स्वर्गीय पति के ही पद-चिह्नों पर चलती हुई लोक सेवा के कार्य में संलग्न है।

मैंने व्यास जी के अन्तिम दर्शन १९५६ में तब बीकानेर में किये, जब मैं वहां स्वर्गीय गृहमन्त्री श्री गोविन्दवल्लभ पन्त के साथ हवाई जहाज़ से गया था। मैंने तब भी उनका चेहरा वैसा ही हँसमुख, स्वभाव वैसा ही सहृदय और विनोदी एवं प्रकृति वैसी ही सरल तथा मिलनसार पाई, जैसी कि हरद्वार में मिलने पर दीख पड़ी थी। अनुकूल या प्रतिकूल समय और परिस्थितियों तथा अत्यन्त विषम दुर्घटनाओं का भी उन पर कोई प्रभाव न पड़ता था। राजस्थान के मुख्यमन्त्री के पद की ऊंची प्रतिष्ठा का गर्व तब भी मैंने उनमें न देखा। वे सच्चे अर्थों में एक साथी थे और उनका यही रूप हर किसी को मोह लेता था।

२

व्यास जी और दिल्ली

समाज सेवी श्री कपूरचंद जी पोद्दार, मालीवाड़ा, दिल्ली

श्रद्धेय व्यास जी का दिल्ली में अकस्मात १४ मार्च, १९६३ को जो निधन हुआ, वह केवल संयोग की ही बात नहीं; उनका दिल्ली के साथ बहुत पुराना सम्बन्ध था। उन्होंने स्वयं दिल्ली में कई बार सार्वजनिक सभाओं में अपने युवा जीवन की दिल्ली की वह आपबीती घटना सुनाई थी, जिसका उनके सार्वजनिक जीवन के निर्माण पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। तब वे मैट्रिक की परीक्षा में बैठने के लिये दिल्ली आये थे। दिल्ली में सत्याग्रह आन्दोलन ज़ोरों पर था। अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी के नेतृत्व में तब १९१९ के मार्च मास में जो ऐतिहासिक

घटनाएं घटीं, व्यास जी उनके प्रत्यक्षदर्शी थे। दिल्ली जंकशन स्टेशन पर गोली कांड में दो युवकों का बलिदान, स्वामी जी और हकीम अजमल खां साहब के नेतृत्व में उनकी शानदार शवयात्रा, और घण्टा घर के नीचे चांदनी चौक में स्वामी जी की छाती पर गोरखाली सिपाहियों का नंगी संगीनें तान देना, आदि घटनाओं से उनके हृदय में जिस राजनीतिक भावना का बीजारोपण हुआ, उसका वर्णन वे निजी बातचीत में भी बड़े ही प्रभावशाली ढंग में सुनाया करते थे; और सुनने वाले मंत्र मुग्ध हुए बिना न रहते थे।

रियासती जनता की सेवा

संभवत: १९३४-३५ की बात है, जब वे चांदनी चौक में देशभक्त सेठ आनन्दराज जी सुराणा के कार्यालय के बाहर खुले छज्जे में बैठ अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद् के कार्यालय का काम भुगताया करते थे। जहां तहां से अपने अभाव, अभियोग लेकर रियासती कार्यकर्त्ता उनके पास आया करते। अपनी रियासतों से निर्वासित कार्यकर्त्ताओं के लिये तो सुराणा जी का मकान व्यास जी के कारण शरण का केन्द्र अथवा धर्मशाला बना हुआ था। कभी कभी उनका जमघट ऐसा हो जाता था कि व्यास जी को अपने तथा उनके सोने आदि की व्यवस्था आस-पास के कटरों में, रात को दुकानें बन्द हो जाने के बाद करनी पड़ती थी। हमारी नये कटरे की दूकान उनके लिये सदा खुली रहती थी। हम उनको चारों ओर से घेर उनकी आपबीती बड़े शौक से सुना करते थे। हंसी-विनोद और मनोरंजन भी खूब होता था। बड़ा ही सरल व्यवहार, गुपचुप सेवा, बिना आर्थिक साधनों के बड़े-से-बड़े काम का दायित्व उठा लेना, और किसी भी कार्यकर्त्ता को निराश न लौटने देना, उनके कुछ ऐसे गुण थे, जिनसे उनकी लोकप्रियता में चार चांद लग गये थे। अत्यंत संकट, असीम अभाव और सर्वथा विपरीत परिस्थितियों में उन दिनों में उन्होंने रियासती जनता की जो सेवा की और विविध देशी राज्यों के जन आन्दोलनों का उन्होंने जैसा सफलतापूर्वक जो संचालन किया, वह सब भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहने के योग्य है। उनकी उन दिनों की प्रवृत्तियों को बहुत समीप से देखने का मुझे सुअवसर मिला और उनकी स्मृतियां मेरे हृदय पर अमिट रूप में अंकित हैं। इस रूप में हमारे तो वे अन्यतम प्रेरक नेता ही थे। उनके मन में छोटे-बड़े का कोई भेद-भाव नहीं था। वे सबकी राय समान रूप से सुनते, उस पर विचार करते और उसको मान लेने में भी उन्हें कोई संकोच न होता। यह उनकी बहुत बड़ी विशेषता थी। हमारी दूकान पर आकर भी वे छोटे-से-छोटे कर्मचारी के प्रति बन्धु भाव का ही व्यवहार करते थे। किसी की उपेक्षा करना वे जानते ही न थे। सम्भवत: प्रवासी राजस्थानियों में वे अधिक लोकप्रिय राजस्थानी नेता थे।

मारवाड़ी कवि सम्मेलन

दिल्ली में १६४५ में मारवाड़ी कवि सम्मेलल का आयोजन विशेष रूप से किया गया था। हमारी योजना यह थी कि राजस्थान के सभी स्थानों में विशिष्ट कवियों को निमन्त्रित करके राजधानी के लोगों के सामने यह प्रकट किया जाय कि मारवाड़ी समाज में साहित्यिक प्रतिभा और अभिरुचि किस ऊंचे दर्जे की है। श्रद्धेय व्यास जी को बड़े आग्रह से विशेष रूप में उसके लिये निमंत्रित किया गया। वे जोधपुर से अच्छी वड़ी मण्डली के साथ पधारे। वीकानेर, जयपुर, उदयपुर, अलवर, भरतपुर तथा अन्य राज्यों से भी लगभग तीन दर्जन कवि पधारे होंगे। सबके ठहरने और भोजन आदि की व्यवस्था मारवाड़ी धर्मशाला में की गई थी। सम्मेलन के संचालन का सम्पूर्ण भार उन्हीं पर छोड़ दिया गया था। उन्होंने ही उसका सभापतित्व किया। लगातार तीन दिन तक दोपहर के लगभग दो वजे से रात के आठ-नौ वजे तक सम्मेलन की तीन बैठकें हुईं। तीसरे दिन राजस्थान के सम्वन्ध में राजस्थानी अथवा मारवाड़ी भाषा में कविताएं पढ़ी गईं। राजधानी में चारों ओर सम्मेलन की धूम मच गई। एक दिन विशेष आग्रह पर नई दिल्ली आर्य-समाज मन्दिर और विड़ला मन्दिर में भी दो बैठकें सम्मेलन की हुईं। दानवीर सेठ जुगलकिशोर जी विड़ला ने सम्मेलन में उपस्थित रहकर विशेष दिलचस्पी दिखाई और उन्होंने ही विड़ला मन्दिर में कवियों को निमंत्रित कर उनको सम्मानित किया। इस प्रकार राजधानी में मारवाड़ी कवियों की जो धाक जमी और सम्मेलन की जो धूम मची उसका सारा श्रेय व्यास जी के प्रभावशाली संचालन को ही था। वे मारवाड़ी धर्मशाला में सवको इकट्ठा कर प्रतिदिन के कार्यक्रम का रिहर्सल किया करते और यह तय किया करते थे कि कौन कवि अपनी कौन-सी कविता सुनायेगा। इसी कारण सम्मेलन तीनों-चारों दिन अभूतपूर्व सफलता से सम्पन्न हुआ। कुछ विघ्न संतोषी लोगों ने सम्मेलन को असफल बनाने का भी प्रयत्न किया। परन्तु व्यास जी के सामने उनकी दाल न गल सकी। एक दिन सम्मेलन में कुछ गड़बड़ पैदा कर दी गई। तब व्यास जी ने तपाक से खड़े होकर सम्मेलन को समाप्त कर देने की घोषणा की और सम्मेलन में ऐसी शान्ति छा गई कि सुई गिरने की भी आवाज सुनी जा सकती थी। जिस कवि की कविता पर वह गड़बड़ हुई थी, उसी को व्यास जी ने खड़ा किया और उसकी वही कविता पढ़ी गई। उनके संचालन और नेतृत्व का वह अचूक प्रभाव देखते ही बनता था।

उनकी कविताओं ने तो श्रोताओं को कुछ ऐसा मुग्ध किया था कि उसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। सामाजिक एवं राजनीतिक विषयों पर उनकी सभी कविताएं बड़े ध्यान से सुनी गईं और कुछ लोगों के मुंह पर तो सिनेमा के गीतों की तरह चढ़ गईं।

एक छोटी-सी घटना का उल्लेख और कर दूं। कृष्णाष्टमी के दिन सम्मेलन

कुछ अधिक देर तक चला। व्यास जी अपने साथियों के साथ दीवान हाल से बाहर निकले, तो एक मन्दिर में भजन-कीर्तन चल रहा था। भजन-कीर्तन का बेतुका राग सुनकर व्यास जी भीतर चले गये। हारमोनियम अपने हाथ में लिया और खड़ताल दूसरे साथी के हाथ में दी। भजन-कीर्तन का ऐसा समा बंधा कि आधी रात बीत गई, बाद में लोगों को पता चला कि वे व्यास जी थे। तब उन्हें लोगों से पीछा छुड़ाना मुश्किल हो गया। और दूसरे दिन पधारने का वायदा लेकर ही लोगों ने उनको छोड़ा। यह भी उल्लेखनीय है कि मारवाड़ी धर्मशाला से दीवानहाल, बिड़ला मन्दिर और नई दिल्ली आर्य-समाज आदि सब जगह वे अपने साथियों के साथ पैदल ही आ गये। स्वागत समिति का एक भी पैसा उन्होंने सवारी आदि में खर्च नहीं होने दिया। उसकी किसी व्यवस्था के प्रति न तो स्वयं असंतोष प्रकट किया और न अपने किसी साथी को ही असंतोष या शिकायत करने दी। ऐसी थी सरलता, सहृदयता और आत्मीयता उनमें। दिल्ली का राजस्थानी समाज उनके इन गुणों पर मोहित हुए बिना नहीं रहा। वह उनको कभी भूल नहीं सकता।

३

व्यास जी और ब्यावर

श्री लादूराम कुमावत, पत्रकार सर्वोदय सदन, ब्यावर (राजस्थान)

बात उस समय की है, जब मैं मिडिल स्कूल का छात्र था। प्रारम्भ से ही मुझे बड़े आदमियों के पास बैठने और उनकी बातें सुनने तथा उनके साथ सो लेने का चाव था। १९५२ के म्युनिसिपल चुनावों की बात है। श्री जयनारायण व्यास तब राजस्थान के मुख्यमंत्री थे, वे ब्यावर आये, क्रान्तिकारी जन नेता स्वामी कुमारानन्द व अन्य कुछ राजनीतिज्ञ भी उनके साथ थे। इधर-उधर की बातों के दौरान में स्वामी जी ने व्यास जी को मुस्कराते हुए कहा, "जयनारायण तू आजकल बहुत मोटा हो गया है। दिन-पर-दिन तेरी तोंद बढ़ती ही जा रही है।" सहज भाव से व्यास जी ने हँसते हुए कहा, "स्वामी जी, अब तो काफी संघर्ष के बाद आजादी मिली है। क्या आप चाहते हैं हमेशा पहले जैसे ही रहें। अब तो कुछ अच्छा खा पी लेने दो।" मैं उनके इस सहज स्वाभाविक उत्तर से काफी प्रभावित हुआ। उन्हें स्वामी जी की बातों से तनिक भी रोष नहीं हुआ।

एक चपरासी का अनुभव

जब व्यास जी जैन गुरुकुल विद्या मन्दिर में मुख्याध्यापक थे। उन दिनों के

एक चपरासी से मालूम हुआ कि व्यास जी की उस पर बड़ी कृपा रही। उसने बताया कि उन्होंने मुझे चपरासी कभी नहीं समझा। उनका व्यवहार घर जैसा रहा। मुझे वे कई बार अपने साथ भजन-कीर्तन में ले गये। भजन-कीर्तन के बाद वे मजदूरों एवं गांव के किसानों में सुधार पर भाषण देते थे। उन्होंने कई भजन सरकारी नीतियों के विरुद्ध तथा ग्राम-सुधार आदि पर तैयार किये, जिसे मजदूर किसान बड़े चाव से सुनते थे और बड़े प्रभावित होते थे। छोटे-बड़ों के बीच उन्होंने भेद-भाव नहीं बरता। सबको समान दृष्टि से देखते थे।

एक क्लर्क का अनुभव

स्थानीय मिल के क्लर्क श्री प्रहलादराम अग्रवाल ने मुझे बताया कि मिल में काम करते समय उनकी व्यास जी के साथ बड़ी घनिष्टता हो गई थी। उनमें एक अजीब सी सम्मोहन शक्ति थी; जिससे वे एक बार मिलते, उसको सदा के लिये अपना बना लेते। स्थानीय मिल मजदूरों के साथ बैठकर उनकी समस्याओं के बारे में मंत्रणा होती थी। मजदूरों की तात्कालिक दशा सुधारने में व्यास जी ने काफी सहयोग दिया।

सब के प्यारे

श्री नेतराम जी कुमावत के शब्दों में व्यास जी जब श्री चिरंजीलाल की बगीची में रहते थे, तब हमारे घर आया-जाया करते थे। पारिवारिक बातों के अतिरिक्त पूंजीवाद की बुराइयों पर भी वे प्रकाश डाला करते थे। मेरे बच्चे से वे तुतली भाषा में बातचीत करते; बालक बड़ा प्रसन्न होता। उनके देखते ही उनकी ओर लपकता। वे बच्चों-बूढ़ों सबके एक सरीखे प्यारे थे।

लोफर एसोसियेशन

श्री रामचन्द्र जी श्रीपाल के शब्दों में व्यास जी ने एक लोफर एसोसियेशन ब्यावर में कायम किया था। उसके व्यास जी स्वयं अध्यक्ष थे और श्री साहिबचन्द जी सुराणा, श्री रामचन्द्र जी श्रीपाल और श्री सांवलराम जी शर्मा 'गांधी' आदि सदस्य थे। यह संस्था बड़ी लोकप्रिय थी। उसका कार्य निर्धन किसानों एवं मजदूरों को हर प्रकार का सहयोग देना था। 'लोफर' का तात्पर्य व्यास जी के शब्दों में यह था कि वह संस्था जो गरीबों के लिये रोटी का इन्तजाम करती है। लोफर शब्द से उनका अभिप्राय अंगरेजी रोटी वाचक शब्द लोफ को देखनेवाले से था।

पान का शौक

व्यास जी को अखाड़ेबाजी, भजन-कीर्तन व पान खाने का बड़ा शौक था। अक्सर वे तेजा चौक में स्थिति श्री चुन्नीलाल मेहरा की दूकान पर जाते और कहते कि चुन्नी यार एक टुकड़ा लगा दे। मेहरा जी उनके पायजामे व चप्पल की ओर देखते हुए मुस्करा देते और पान का टुकड़ा देते हुए कहते, "व्यास जी, आप ऐसे ही रहोगे या कभी तुम्हारी तकदीर चेतेगी।" चुन्नीलाल जी स्वयं भी लोफर

एसोसियेशन के सक्रिय कार्यकर्त्ता व व्यास जी के मित्र थे। उन्होंने भी स्वतंत्रता आन्दोलन में व्यास जी के साथ काफी काम किया।

राजनीतिक जागृति

जोधपुर से निर्वासित होकर व्यास जी ने अपना डेरा व्यावर में जमाया। जोधपुर के बाद मुख्यतः दूसरा कार्यक्षेत्र उनका व्यावर ही रहा। जैन गुरुकुल के मुख्याध्यापक के रूप में भी उन्होंने कुछ वर्ष यहां विताये थे। बम्बई में दैनिक 'अखंड भारत' के बन्द हो जाने के बाद व्यावर आकर उन्होंने 'आगीवाण' नाम से मारवाड़ी भाषा में एक पाक्षिक का संचालन व संपादन किया। अजमेर मेरवाड़ा में राजनीतिक जागृति पैदा करने का उनको विशेष श्रेय प्राप्त है। व्यावर में सन् १९३७-३८ में पांचवे अजमेर मेरवाड़ा राजनीतिक सम्मेलन का आयोजन स्थानीय सेठ सामचन्द्र जी श्रीपाल के नोहरे में दिसम्बर मास में व्यास जी की ही प्रेरणा पर हुआ था। उसके स्वागताध्यक्ष पं० मुकुटविहारी लाल जी भार्गव एडवोकेट, प्रधान मंत्री श्री जयनारायण जी व्यास और कोषाध्यक्ष सेठ चांदमल जी मोदी बैंकर थे। तब केन्द्रीय असेम्बली में कांग्रेस दल के नेता श्री भूलाभाई देसाई को उसके अध्यक्ष पद के लिये निमंत्रित किया गया था। दैनिक 'वीर अर्जुन' के संपादक स्वर्गीय प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति, दैनिक 'हिन्दुस्तान' के संपादक श्री सत्यदेव विद्यालंकार और उनकी पत्नी श्रीमती सुभद्रा देवी जी दिल्ली से विशेषरूप से पधारे थे। इस अधिवेशन में कई महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुए। बाहर से पधारे हुए सत्यदेव जी आदि सज्जनों तथा व्यास जी और स्वागताध्यक्ष भार्गव आदि के सारगर्भित भाषणों का जनता पर विशेष प्रभाव पड़ा। सम्मेलन राजनीतिक जागृति पैदा करने में विशेष सफल रहा। उससे लोगों तथा प्रतिनिधियों ने विशेष प्रेरणा प्राप्त की।

४

व्यास जी और जैसलमेर

श्री सत्यदेव व्यास, जैसलमेर (राजस्थान)

लोकनायक जयनारायण जी व्यास मूलतः जैसलमेर के निवासी थे। उनके पूर्वज दो सौ वर्ष पूर्व जैसलमेर से जोधपुर आकर वस गये थे। उनके परिवार वाले जोधपुर में 'जैसलमेरीया व्यास' ही कहलाते हैं। उनके कौटुम्बिक रीतिरिवाजों में जोधपुर वालों से कुछ भिन्न जैसलमेरी छाप का दर्शन मिलता है।

उनके पूर्वजों का मकान भी खण्डहर रूप में जैसलमेर में अब भी मौजूद है। व्यास जी के प्रथम जैसलमेर आगमन पर तत्कालीन महारावल जवाहिरसिंह जी ने व्यासों के मोहल्ले में पंचायती शाल के पास स्थिति गुफा में व्यास जी को अपने पूर्वजों के मकान होने का संकेत दिया था। व्यास जी १९४६ की मई में अमर शहीद सागरमल जी गोपा की मृत्यु पर जैसलमेर पधारे थे। तब से जैसलमेर के साथ उनका निकट का संपर्क रहा और यहां की सार्वजनिक समस्याओं में वे रुचि लेते रहे। १९४६ से पहले भी जैसलमेर की जन जागृति के साथ उनका निकट संपर्क था। वे स्वयं अपने-आपको जैसलमेर का मूल निवासी कहने में गौरव अनुभव करते थे। कभी-कभी विनोद में कहने लगते कि मैं तो जैसलमेर का आदिवासी हूं। व्यास जी का जैसलमेर के प्रति आकर्षण गोपा जी के कारण हुआ था। उन्होंने देशी राज्य लोकपरिषद् का गोपा जी के आन्दोलन को पूरा समर्थन दिलाया और उसके वरिष्ठ नेताओं की भी इस रूप में रुचि पैदा कर दी। इस प्रकार जैसलमेर की नवजागृति का श्रेय इन दोनों महारथियों को है।

जैसलमेर की जन जागृति और गोपा जी

जैसलमेर की जन-जागृति का सूत्रपात करने वाले व्यक्तियों में शिरोमणि अमर शहीद सागरमल जी गोपा थे। उन्होंने जीवन पर्यन्त जैसलमेर की रावलशाही के विरुद्ध जागृति पैदा करने का सतत सराहनीय प्रयास किया। १९१५ में जैसलमेर नगर में सर्व हितकारी वाचनालय की स्थापना हुई, तब से ही उसमें सक्रिय भाग लेकर गोपा जी आम लोगों के परिचय में आ गये थे। वे जैसलमेर के राजकुल गुरु वंशज होने के कारण सम्मानित परिवार के सदस्य थे। राज्य कारण में उनके पूर्वजों का सदैव से हाथ रहा था। उनके दादा आदि भी राज्य सेवा में रहते हुए पहले भी शहीद हुए थे। अपने पूर्वजों की शहादत से प्रेरणा पाकर गोपा जी भी सार्वजनिक जीवन में रुचि लेने लगे। १९१७ में वाचनालय के आम जलसे में एक प्रस्ताव द्वारा महारावल जी से राज्य में मिडल तक की शिक्षा की मांग की गई थी उसमें भी गोपा जी शरीक थे। उसके उपरान्त १९२० में उन्होंने स्वयं अपनी ओर से एक पत्र महरावल साहब को भेंट किया, जिसमें जैसलमेर की आम समस्याओं, जल कष्ट, शिक्षा, स्वास्थ्य और यातायात आदि की ओर ध्यान आकर्षित किया था। महात्मा गांधी के १९२०-२१ के असहयोग आन्दोलन में एक स्वयंसेवक के तौर पर नागपुर में कार्य करने से उनका आत्म-विश्वास इतना जागृत हो गया था कि वे जैसलमेर की रावलशाही को समाप्त करने का स्वप्न देखने लगे थे। ज्यों-ज्यों देश में जागृति की लहर फैलने लगी त्यों-त्यों गोपा जी भी जैसलमेर की समस्याओं में दिलचस्पी लेने लगे। प्रसिद्ध समाज शास्त्री स्व० भगवानदास जी केला भी जब एक बार अपनी पितृभूमि जैसलमेर आये तब गोपा के साथ उन्होंने भी तत्कालीन महरावल को राज्य में सुधारों के बारे में एक चिट्ठा,

अर्पित किया था।

गोपा जी विशेषतः नागपुर में ही रहते और वहीं से अखबारों के जरिये ए० जी० जी० रेजीडेन्ट व भारत सरकार को जैसलमेर में होने वाली घटनाओं की जानकारी देते हुए राजनीतिक सुधारों की मांग करते रहते थे। पहले दिल्ली के 'विजय' और फिर वर्धा के 'राजस्थान केसरी' में उन्होंने जैसलमेर के जो समाचार प्रकाशित करवाये उनके कारण राज्य के कोपभाजन बन गये थे।

माहेश्वरी युवक मण्डल की स्थापना

महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन ने कई रियासती व्यक्तियों को इस बात की प्रेरणा दी कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में जन जागृति का कार्य करें। १९३८ में मद्रास से श्री रघुनाथसिंह मोहता और नागपुर से भी गोपा जी इसी भावना से जैसलमेर आये। श्री रघुनाथसिंह जी जैसलमेर के बहुत बड़े प्रतिष्ठित माहेश्वरी घराने के हैं। उनके पूर्वज भी जैसलमेर के दीवान रह चुके थे। अंतिम दीवान सालिमसिंह के वे प्रपौत्र हैं। वे १९३२ में जब जैसलमेर आये तब कुछ युवकों में उत्साह पैदा करके विशुद्ध सामाजिक सुधारों के लिये माहेश्वरी युवक मण्डल की स्थापना की। युवकों में संगठन व समाज-सुधार के भाव भरने के कारण श्री रघुनाथ सिंह जी समाज में काफी लोकप्रिय होने लगे। लेकिन उस समय के दकियानूसी शासन को उनकी सामाजिक गतिविधियों में भी राजनीति की गंध आने लगी और थोड़े ही अर्से में राज्य ने माहेश्वरी युवक मण्डल पर छापा मारकर उसके सारे साज-समान को जप्त कर लिया। संस्था को गैर कानूनी घोषित कर दिया। उसके अध्यक्ष श्री रघुनाथ सिंह जी को गिरफ्तार कर लिया गया।

श्री रघुनाथ सिंह का मुकदमा

श्री मोहता जी की गिरफ्तारी के बाद उन पर एक मुकदमा चलाया गया। झूठे गवाह तैयार किये गये। उसकी बड़ी प्रतिक्रिया हुई। माहेश्वरी समाज में बड़ा रोष फैला। यहां तक कि कइयों ने मेलों, भगरियों अथवा सामाजिक भोजों आदि का बहिष्कार कर दिया। इससे पूर्व महारावल साहब दर्जियों के मामले में जनता के संगठन बल के सामने हार खा चुके थे। इसलिए माहेश्वरियों के संगठन को गर्भ में ही समाप्त कर देना उनकी राजनीतिक क्रूरता का ही सूचक था। गोपा जी ने बाहरी पत्रकार जगत में रियासत की काफी भर्त्सना की। उन्होंने इस मुकदमे पर 'रघुनाथ सिंह का मुकदमा' के नाम से एक पुस्तक भी लिखी जो बाद में राज्य द्वारा जप्त कर ली गई थी।

जवाहर दिवस

जब जवाहरलाल जी नैनी जेल में बीमार पड़ गये थे। तब कांग्रेस के प्रधान स्व० मोतीलाल नेहरू ने 'जवाहर दिवस' मनाने का जो सरक्यूलर जारी किया था उसके अनुसार जैसलमेर में भी तीन व्यक्तियों, सर्व श्री आईदान जी पुरोहित,

सागरमल जी गोपा व श्री रघुनाथसिंह जी मोहता के हस्ताक्षरों से एक परचा बांटा गया और जनता से जवाहर-दिवस मनाने की अपील की गई थी। इस अपील के फलस्वरूप उक्त तीनों व्यक्तियों को राज्य द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया। परन्तु कुछ दिन बाद उन्हें रिहा कर दिया गया। तीनों व्यक्तियों को जब अदालत के सम्मुख पेश किया गया तो उन्होंने अपना लिखित बयान पढ़कर सबको आश्चर्य-चकित कर दिया उस समय की लोकनायक व्यास जी ने गोपा जी को जैसलमेर की जागृति के कार्यों में अप्रत्यक्ष रूप से काफी समर्थन प्रदान किया था। उस समय के 'तरुण राजस्थान' 'आगीवाड़' व 'अखंड भारत' से पता लगेगा कि जैसलमेर के जन आन्दोलन में वे कैसी रुचि लेते थे। गोपा जी ने नागपुर में रहकर जैसलमेर प्रवासी बन्धुओं का एक प्रजामण्डल के नाम से संगठन कायम किया, जिसके वे स्वयं अध्यक्ष थे।

जैसलमेर में प्रजा परिषद्

१६३६-३७ में देशी राज्य लोक परिषद् ने जब राजपूताना की रियासतों के मामलों में दिलचस्पी लेनी आरम्भ की तो जैसलमेर में भी गोपा जी ने जैसलमेर राज्य प्रजा परिषद् की स्थापना करके अपने अनन्य कर्मठ साथी श्री शिवशंकर जी गोपा को उसके सारे कागजात संभलवा दिये। शिवशंकर जी का भी एक वर्ष पूर्व देहान्त हो चुका है। वे १६३५-३६ में अपनी दुकान पर सार्वजनिक वाचनालय की पुस्तकों व अखबारों को रखकर काफी युवकों को प्रजा परिषद् की तरफ आकर्शित करने में सफल हुए। सागरमल जी फिर नागपुर चले गये। श्री शिवशंकर जी के उस समय के साथी सर्व श्री मदनलाल पुरोहित, लालचन्द जोशी, जीतमल जी, चिरंजीलाल जी, गिरधरलाल जी, मोहनलाल जी जगाणी तथा नारायणदास जी भाटिया प्रमुख थे। श्री भाटिया आर्यसमाजी विचारों के होने के कारण वहां की सार्वजनिक गतिविधियों में प्रमुख भाग लेते थे।

व्यावर में व्यास जी से सम्पर्क

स्व० शिवशंकर गोपा देशी राज्य लोकपरिषद् की ओर से लिये गये थे। प्रस्तावित भारतीय संघ राज्य में जैसलमेर की स्थिति पर मार्ग दर्शन प्राप्त करने के लिये सर्वप्रथम १६३५ में जोधपुर राज्य से निर्वासित लोक नायक व्यास जी से मिलने व्यावर गये थे। वहां से लौटकर उन्होंने देशी राज्य लोकपरिषद् से सम्बन्ध जोड़कर प्रजा परिषद् का काम हाथ में लिया था। उस समय की रावलशाही ने शिवशंकर जी की दुकान पर पुलिस का पहरा विठा दिया। उनकी दुकान पर आने वाले हर व्यक्ति की रिपोर्ट रावलजी को दी जाती थी। कई लोगों को डराया-धमकाया जाता था मगर शिवशंकर जी जैसे तपे हुए कर्मठ गांधीवादी व्यक्ति को पकड़ने की हिम्मत किसी की नहीं हुई।

दुकान की तलाशी

१९३८-३९ के दरमियान एक दिन शासन ने शिवशंकर जी गोपा की दुकान की तलाशी लेने के लिये पुलिस अफसरों को भेजा, वहां से प्रजा परिषद् के सभी कागज़ात जब्त कर लिये गये। उनमें सदस्य भरती का रजिस्टर भी था। सरकार को आसानी से उन सभी व्यक्तियों की सूची मिल गई, जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रजा परिषद् की गतिविधि में सहानुभूति रखते थे। एक-एक करके सभी को दमन का शिकार बनाया गया और उनसे मांफीनामे लिखवाये गये। शिवशंकर जी गोपा और मदनलाल पुरोहित का विवाह न होने देने के लिये पुष्करणा समाजवालों पर भी महारावल ने दवाव डाला। अगर कोई उन्हें अपनी कन्या देने की वात सोचता तो रावलजी के गुर्गे उसे यह सूचना देकर भयभीत कर देते कि शादी की तो उसे (दुल्हे को) जेल में डाल दिया जायेगा।

व्यासजी की सहानुभूति

उक्त तलाशी की घटना की सूचना मिलने पर देशी राज्य लोकपरिषद् की ओर से व्यास जी ने जैसलमेर के तात्कालीन दीवान श्री एल० आर० सिकन्द को पत्र लिखकर स्थानीय प्रजा परिषद के कार्यकर्त्ताओं के साथ दुर्व्यवहार न करने का अनुरोध किया। साथ ही उन्होंने श्री गोपा को लिखे पत्र में कार्यकर्त्ताओं को संगठित रहकर शासन के दमन का मुकावला करने की सलाह दी। व्यास जी ने उन्हें लिखा था कि राजनीतिक मुकदमे भाग्यशाली व्यक्तियों पर ही चलते हैं।

रेजीडेण्ट को मैमोरेंडम

सागरमल जी गोपा ने १९३९ में पश्चिमी राजपूताना के रेजिडेण्ट को जैसलमेर राज्य के वारे में एक मैमोरेन्डम देकर जैसलमेर की वास्तविक स्थिति का जो चित्रण किया वह वहुत ही अनूठा था। ३८ फुलस्केप पृष्ठों का उनके हाथ का लिखा वह चिट्ठा आज एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ के रूप में सुरक्षित है। उसमें अफीम के नाजायज़ व्यापार जैसे राज्य के काले कारनामों का वड़ा ही रोमांचक वर्णन है। उस समय के शासन को गोपा जी ने 'सनकी शासन' या 'पोपोवाई का राज्य' की संज्ञा दी थी। तत्कालीन दकियानूसी शासन का वर्णन जैसा गोपा जी ने किया वैसा शायद ही अन्यत्र मिलता हो। उसकी एक प्रति लोकनायक व्यास जी के पास अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् के कार्यालय में भी भेजी गई थी।

देशी राज्य लोकपरिषद् द्वारा जांच

देशी राज्य लोकपरिषद् की ओर से १९१९ में परिषद् के अध्यक्ष पं० नेहरू, उड़ीसा के नेता सारंगधरदास जी को वीकानेर, जोधपुर व जैसलमेर के दौरे पर भेजा था। श्री सारंगधरदास जी जैसलमेर में वैद्यराज श्री चिरंजीलाल व्यास के औषधालय में ठहरे थे। वहां से लौटकर जो रिपोर्ट उन्होंने देशी राज्य लोकपरिषद् को दी उस पर पंडित जी ने 'जैसलमेर को संसार का एक आश्चर्य' वताया था।

कार्यकर्त्ताओं की गिरफ्तारियां

राज्य शासन को प्रजापरिषद् की तलाशी से भी शांति नहीं मिली। कुछ निष्ठावान् कार्यकर्त्ताओं ने महारावल के सामने जब आत्म समर्पण नहीं किया तब उन्हें दवाने के लिये राज्य ने दूसरा कदम उठाया। सर्वप्रथम श्री लालचंद जोशी को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया और छह माह तक उनके पांवों में डंडा-बेड़ियां डाल रखी गईं। श्री जीवनलाल कोठारी को एक वर्ष नज़रबन्द रखा गया। महारावलजी ने सोचा था कि परिषद् का संगठन उससे छिन्न-भिन्न हो जायगा। श्री शिवशंकर जी गोपा ने व्यास जी के द्वारा देशी राज्य लोकपरिषद् का ध्यान उक्त गिरफ्तारियों की ओर आकर्षित किया। व्यास जी ने जैसलमेर को एक कड़ा विरोध पत्र महारावल व दीवान को भेज जैसलमेर के संगठन की पैरवी की। शिवशंकर जी को परेशान करने के लिये पुलिसवालों ने उनकी दुकान के ग्राहकों को धमकाना प्रारम्भ किया।

शहीद गोपा जी का आगमन

१९४० के मध्य में सागरमल जी गोपा के पिता अखैराजजी का, जो रियासत के एक बड़े मुसाहिब थे, देहान्त हो गया। अपने पिता के स्वर्गवास के एक वर्ष पश्चात् वे अपनी वृद्धा माता से मिलने के लिये जैसलमेर आये। जैसलमेर आते समय के पोलिटिक्ल एजेण्ट से मिलकर आये थे। उन्हें भय था कि कहीं राज्य शासन उनके साथ दुर्व्यवहार न करे। रेजीडेण्ट ने गोपाजी को जो पत्र लिखकर दिया था उसमें स्पष्ट तौर से लिखा था कि जैसलमेर दीवान ने मुझे विश्वास दिलाया है कि कहीं आपके विरुद्ध कोई मुकदमा नहीं है और आप वखुशी जैसलमेर जा सकते हैं। गोपाजी २२ जून, १९४१ के दिन जैसलमेर आये पर उसके बाद वे कभी वापस न लौट सके। वे तीन दिन तक अपने घर पर ही रहे थे। किसी प्रकार की सार्वजनिक गतिविधि में उन्होंने भाग नहीं लिया था। संभवतः वे सरलता से शीघ्र वापस लौट जाना चाहते थे।

गोपा जी की गिरफ्तारी

तीन दिन जैसलमेर रहने के वाद उन्होंने नागपुर अपने अनुज को पोस्टकार्ड लिखकर सूचना दी थी कि स्टेट ने अभी तक तो मेरे साथ कोई ज़्यादाती नहीं की है। अव मैं एकाध रोज़ में आबू होते हुए नागपुर पहुंच रहा हूं। न जाने कैसे वह पोस्टकार्ड महारावल साहव के पास पहुंच गया और उन्होंने गोपा जी के घर के इर्द-गिर्द खुफिया व्यक्तियों का घेरा लगाकर २५ जून, १९४१ की शाम को जब वे घर से वाहर केवल बंडी पहने पेशाव करने वैठे थे, टंगाटोली करके उठा लिया गया। गोपाजी द्वारा कपड़े आदि पहनकर घरवालों से मिल आने की मांग पर भी कुछ गौर नहीं किया गया और रात होने के पहले-पहले उन्हें जेल में ले जाकर डंडा-

बेड़ियां पहना दी गई। संयोग की बात है कि उससे एक दिन पूर्व श्री जीवनलाल कोठारी को जेल से मुक्त कर दिया गया था। यह कार्रवाई बाकायदा पूर्व आयोजित ही कही जा सकती है।

नगर में सन्नाटा

गोपाजी की गिरफ्तारी से नगर में एक सन्नाटा छा गया। राज्य के इस कदम से जहां सबमें भय के कारण मुर्दानगी छा गई थी, वहां महारावल साहब बहुत खुशियां मना रहे थे। दूसरे रोज २६ जून को महारावल का तख्तनशीनी का दिन था। उस दिन के जलसे बड़े उत्साह से मनाये गये। मानो, उन्होंने बहुत बड़े किले को जीत लिया हो। श्री शिवशंकर जी गोपा को अपनी आर्थिक परेशानी से मजबूर होकर शीघ्र ही जैसलमेर छोड़ देना पड़ा। पूरे एक साल तक गोपा जी को हवालाती के तौर पर रखकर बाद में मुकदमे चलाये गये और अन्त में तीन भिन्न-भिन्न राजनीतिक अपराधों में उन्हें साढ़े सात वर्षों की सख्त सजा सुनाई गई।

पांच वर्ष जेल में यातनाएं

शहीद गोपाजी के साथ जेल में भी शासन ने बड़ा निर्दयतापूर्ण व्यवहार किया। कैदियों द्वारा उनकी पिटाई और अपमान कराया जाता। पुलिस अधिकारी जेल में पहुंचकर गोपाजी के साथ मारपीट करते तथा उनकी गुदा में लाल मिर्च चढ़वाने जैसे अमानवीय कृत्य भी करवाते थे। निरन्तर पांच वर्ष तक उनके साथ ऐसा ही अमानुषिक दुर्व्यवहार किया जाता रहा। इस सारे दुर्व्यवहार की डायरी गोपाजी के हाथ की लिखी उनके निधन के बाद मिली थी। जेल में उन्हें परेशान करने का अभिप्राय यह था कि किसी तरह उनसे माफीनामा लिखा लिया जाय। मगर वे हिमालय की तरह अडिग रहे। रावलशाही के आगे मरना कबूल किया। लेकिन झुके नहीं।

जेल से पत्र व्यवहार

वैसे उन्हें जेल से किसी को पत्र लिखने की इजाजत नहीं थी। फिर भी समय-समय पर उन्होंने जैसे-तैसे कुछ पत्र व्यास जी, ब्रजलाल बियाणी और पण्डित जवाहरलाल नेहरू जी को लिखे थे। उनमें उनके साथ जेल की ज्यादतियों का चित्रण किया गया था। एक बार मारवाड़ राज्य लोकपरिषद् के कार्यकर्त्ता जैसलमेर किसी बहाने पहुंचे। उन्होंने येनकेन प्रकारेण जेल में गोपा जी से मुलाकात लेकर उनकी वास्तविक स्थिति का पता लगाया और वहां से लौटकर जोधपुर के 'प्रजा सेवक' पत्र में उनके साथ होने वाले अमानुषिक व्यवहार का संवाद छपवाया था। उनमें मुख्य थे श्री बालकृष्ण व्यास और स्वरूपचन्द वैद। सबसे बड़ी दुर्भाग्य की बात तो यह रही कि १६४२ के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में देश के सभी चोटी के नेता जेलों में बंद थे। गोपा जी की सुनवाई करने वाला कोई व्यक्ति बाहर नहीं था।

नागपुर में सेवा संघ

१९४४ में नागपुर में कतिपय युवकों ने मिलकर सोचा कि वहां पर जैसलमेर बन्धुओं का एक संगठन बनाया जाय, जो राज्य के अधिकारियों से शासन सुधारों आदि के सम्बन्ध में लिखा-पढ़ी करे। १९४५ में नेताओं की रिहाई के बाद श्री ताराचन्द जगाणी ने गोपा जी की रिहाई की आवाज़ उठाई। व्यास जी से संपर्क स्थापित करके गोपा जी की रिहाई के लिये उनसे रहनुमाई करने का अनुरोध किया गया। उन्होंने देशी राज्य लोकपरिषद् की ओर से राज्य शासन व पोलीटिकल एजेण्ट से लिखा-पढ़ी की। श्री शिवशंकर जी गोपा और श्री ताराचन्द जगाणी ने निजी तौर पर व्यास जी से मुलाकातें भी कीं और पत्रों में जैसलमेरी शासन की निरंकुश नीति पर प्रकाश डाला।

नेहरू का जोधपुर आगमन और जैसलमेर

दिसम्बर १९४५ में देशी राज्य लोकपरिषद् के उदयपुर अधिवेशन के बाद व्यास जी पण्डित जवाहरलाल नेहरू को जोधपुर लाये थे। जैसलमेर की समस्याओं खास कर गोपा जी की रिहाई के प्रश्न को लेकर जैसलमेर नागरिकों का एक शिष्ट-मण्डल भी नेहरू जी से मिला और उस समय जैसलमेर से वहां के वयोवृद्ध सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री मीठालाल जी व्यास, व्यास जी के पास गोपा जी के मसले को लेकर पहुंचे थे। मीठालाल जी वैसे सेठ रामगोपाल जी मोहता द्वारा संचालित जोधपुर के विधवा आश्रम के व्यवस्थापक थे। व्यास जी से उनका बहुत निकट का संपर्क था। व्यास जी उन्हें 'मीठा भा' के नाम से पुकारते थे। पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने जैसलमेरी शिष्टमण्डल को जैसलमेर में प्रजामण्डल की स्थापना करने की सलाह दी और कहा कि वैधानिक संगठन होने पर देशी राज्य लोकपरिषद् भी उसकी मदद कर सकेगी। उस दिन से तो व्यास जी ने जैसलमेर के साथ अपना नाता पुनः जोड़ लिया।

प्रजामण्डल की स्थापना

दिसम्बर, १९४५ में ही जैसलमेर में सावा था। बाहर के काफी लोग जैसलमेर आये हुए थे। तब प्रजामण्डल की स्थापना पर साथियों से चर्चा की गई नागपुर से शिवशंकर जी और श्री ताराचन्द जी आये हुए थे। बीकानेर से श्री जीतमल जगाणी जिनका अभी कुछ दिनों पूर्व देहान्त हो गया है, उज्जैन से श्री अनन्तलाल जी व्यास, जैसलमेर के वयोवृद्ध वैद्यराज श्री जेठमल जी व्यास, श्री मीठालाल जी व श्री मदनलाल जी पुरोहित आदि ने मिलकर जैसलमेर राज्य प्रजामण्डल की स्थापना की। उसका प्रधान कार्यालय उस समय जोधपुर में मीठालाल जी के यहां रखने का निश्चय किया गया।

गोपा रिहाई आन्दोलन

उन्हीं दिनों नरेन्द्र मण्डल में राजाओं ने अपने यहां सुधार करने की बड़ी-बड़ी

हामियां भरी थीं। जैसलमेर राज्य प्रजामण्डल ने गोपा जी को जेल से मुक्त कराने का आन्दोलन छेड़ा। जोधपुर स्थित जैसलमेरी प्रजामण्डल के विधिवत् स्टेट व रेजीडेण्ट के समक्ष उनकी रिहाई की मांग पेश की। श्री ताराचन्द आदि कार्य-कर्त्ताओं ने अखबारी जगत में इस प्रश्न को उठाया। देशी राज्य लोकपरिषद् ने इसमें पूरी रुचि ली। व्यास जी ने जोधपुर के रेजीडेण्ट को लिखा-पढ़ी करके व निजी तौर पर मिलकर इस बात के लिये राजी कर लिया था कि वे स्वयं ६ अप्रैल, १९४६ के दिन जैसलमेर पहुंचकर जेल में गोपा जी से मुलाकात करेंगे और फिर उनकी रिहाई के बारे में स्टेट से सम्पर्क स्थापित करेंगे।

गोपा जी द्वारा प्रतिवाद

इससे पूर्व पुलिस अधिकारियों द्वारा जोधपुर में जवाहरलाल जी के आगमन के बाद भी गोपी जी को धमकियां दी गई थीं। उनसे अखबारों में छपी उनके विषय की खबरों के जबरदस्ती प्रतिवाद भी लिखवाये गये थे। जबरदस्ती लिखाये गये प्रतिवादों की सूचना गोपी जी ने लोकनायक आदि को दे दी थी और इस स्थिति पर उन्होंने जेल में बैठे ही जिस कविता की रचना की थी, उसकी निम्न पंक्तियां उस समय की स्थिति को बिल्कुल स्पष्ट करती हैं:

"कूरी अदावट कूरो शासन कूरो कानून करे मन चायो,
कूरे गवाह कूर कुरान को 'आई की आन' में कूर समायो।
शासन में जब केस गया तब लेश नहीं मैं सांच को पायो॥
ढोल की तान पै नाचत पोल मदारी गुमाने ज्यों ढोल बजायो।
किससे कहूं और कौन सुने, अन्याय को यहां पर शासन छायो॥
मुरादाबाद से कूरे को मोती को पूत यहां जब आयो।
जीवनलाल को जेल में डाल लाले जोशी को कूर फंसायो॥
सागरमल किये अमल तब लाठी से कूर मंजूर करायो।
किससे कहूं कौन सुने, अन्याय को यहां पर शासन छायो॥"

गोपा जी राजनीतिज्ञ के अलावा एक अच्छे साहित्यकार व कवि भी थे। उनकी कविताएं आज भी काफी प्रेरणा देने वाली हैं। उपर्युक्त पंक्तियों में उन्होंने अपने दर्द में उस सामन्ती शासन का एक नंगा चित्र प्रस्तुत किया है।

४ अप्रैल की दुर्घटना

एक ओर लोकनायक व्यास जी के अनुरोध पर ६ अप्रैल, १९४६ के दिन रेजीडेण्ट का जैसलमेर पहुंचने का कार्यक्रम अन्तिम रूप से बन चुका था और दूसरी ओर जैसलमेर के शासक ने उक्त दौरे को टालने का जो नाटकीय ढंग अख्तियार किया वह बड़ा ही रहस्यमय था। कहते हैं महारावल साहब ने गनगौर के मेले में व्यस्त होने के कारण रेजीडेंट को अपने दौरे का कार्यक्रम स्थगित करने का अनुरोध किया था। ३ अप्रैल, ४६ को दोपहर बाद दो बजे अचानक नगर में

सूचना फैली कि जेल में सागरमल गोपा ने अपने शरीर में आग लगा दी है। इस कुतूहल भरे समाचार ने प्रायः सभी को आश्चर्यचकित कर दिया और नगरवासियों का तांता जेल की ओर लग गया। किसी भी व्यक्ति को जेल में नहीं जाने दिया गया। उपचार के लिये भी गोपा जी को अस्पताल नहीं पहुंचाया गया। शरीर में आग लगने से एक घंटा पूर्व जैसलमेर के पुलिस अधिकारी ने गोपा जी को यह कहा कि "महाराज तुम रेजीडेंट आदि को लिखाते हो। देखना आज कैसा मजा चखाता हूं।" ३ अप्रैल की शाम को अंधेरा होने के बाद गोपा जी को चुपके से एक खाट पर सुलाकर कैदियों के कंधों पर अस्पताल में पहुंचाया गया। वहीं पर रात को नौ वजे जज साहव को भेज कर अंतिम वयान लेने का नाटक रचा गया। उनके वयानों के समय उनकी पत्नी व भाई में से किसी को उपस्थित नहीं रहने दिया गया और न ही उक्त वयानों पर उनके हस्ताक्षर ही करवाये गये। जव वे मर्दाना वार्ड में रखे गये थे, तब भी उनके उपचार की समुचित व्यवस्था नहीं की गई। वे रात-भर कराहते रहे। डाक्टर-डाक्टर चिल्लाते रहे मगर सब असफल रहा। वहां भी उनकी खाट पर पुलिस का पहरा था। रात को जलने के आठ घंटे वाद उनके पैरों की डंडा-वेड़ियां निकाली गई थीं। दूसरे रोज प्रातः उनकी अत्यन्त चिंताजनक हालत देख उनकी पत्नी श्रीमती हीरादेवी जैसलमेर के वड़े डाक्टर श्री दवे के पास गईं तव करीब साढ़े नौ वजे वह अस्पताल में आये और कराहते हुए गोपा जी को एक इन्जेक्शन दिया। इन्जेक्शन देते ही उनका चिल्लाना शांत हो गया और करीव दस वजे वहीं अस्पताल की खाट पर अन्तकाल हो गया। गोपा जी के इस रहस्यमय अन्त की सूचना भाई ताराचन्द ने उसी समय व्यास जी, और मीठालाल जी व्यास के अतिरिक्त नागपुर में श्री शिवशंकर जी गोपा व वीकानेर में श्री जीतमल जी जगाणी को, जो उस समय प्रजामण्डल के कोषाध्यक्ष थे, तार द्वारा दी। गोपा जी की अन्त्येष्टि शीघ्रता से कर दी गई। लेकिन दाह-क्रिया से लौटते ही 'अमर शहीद सागरमल जी गोपा जी की जय' 'पुलिस अफसर गुमानसिंह मुर्दावाद' व 'इन्किलाव जिन्दावाद' आदि के नारों से नगर गूंज उठा। उनका नेतृत्व भी श्री ताराचन्द जगाणी कर रहे थे। सारे नगर में तहलका मच गया। महारावल के पैरों से धरती खिसकने लगी। गोपा जी की शहादत ने सुषुप्त 'जैसाणा ज्वाला' को भड़का दिया। स्थान-स्थान पर गोपा जी की रहस्यमय मृत्यु को खून की संज्ञा दी गई और 'खून का वदला खून' के नारे दीवारों पर लिख दिये गये। जेल में कैरासीन छिड़ककर आत्महत्या करने की राज्य पक्ष की वात को लोगों ने कतई स्वीकार नहीं किया।

प्रथम शोक सभा

गोपा जी मृत्यु के वारह दिनों वाद पहले-पहल १६ अप्रैल, ४६ के दिन लोक-नायक व्यास जी के पुराने साथी अनुभवी पत्रकार, 'प्रजासेवक' के सम्पादक श्री

अचलेश्वर प्रसाद शर्मा अपने साथी श्री हंस जी के साथ जैसलमेर आये। हिन्दुस्तान टाइम्स के प्रतिनिधि के तौर पर उन्होंने तत्कालीन दीवान श्री बी० एन० जुल्फी से मुलाकात लेनी चाही। पहले तो उन्हें दुर्ग के फाटक के बाहर ही पहरे वालों ने रोक दिया। यद्यपि दुर्ग के भीतर आम जनता रहती थी, जो अब भी रहती है। तथापि श्री शर्मा पर रोक लगा दी गई। जब इस रुकावट की सूचना शर्मा जी द्वारा दीवान के पास पहुंचाई गई तब उन्हें उनके आदेश पर उनसे मुलाकात करने का अवसर दिया गया। नगर में गोपाजी के सम्मान में शोक सभा करने की तैयारी की गई तो कोई ऐलान करने वाला नहीं मिला। अन्त में मीठालालजी का ही नाती छोटा बच्चा मदनलाल आया। उसने शोक सभा का नगर में ऐलान करने का साहस दिखाया। शाम को सदरमण्डी में श्री चिरंजीलाल व्यास की अध्यक्षता में सभा का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम श्री हंस द्वारा बोलने के बाद श्री अचलेश्वर जी बोलने को खड़े हुए तब पुलिस के थानेदार ने सभा में आकर रुकावट की और कहा कि मजिस्ट्रेट की आज्ञा बिना मीटिंग नहीं हो सकेगी। श्री अचलेश्वर जी ने सभा को बरखास्त कर दिया। गोपा जी की गिरफ्तारी के बाद न्याय का जो नाटक रचा गया था उसमें छह गवाह पेश किये गये थे। उनसे यह कहलवाया गया था कि गोपाजी राज्य के विरुद्ध राजद्रोहात्मक चर्चा करते, कविताएं लिखते और प्रचार करते। १२ जनवरी, १९४१ का उनका एक पत्र भी पेश किया गया, परन्तु उनको अपनी सफाई देने की सुविधाएं नहीं दी गईं। १० जून, १९४२ को उन्हें तीन-तीन वर्ष की दो सजाएं दी गई और २५० रुपये का जुर्माना किया गया। मुकदमे के बाद उनके भाई श्री रामचन्द्र गोपा ने मुकदमे के कागज़ात के लिये दरख्वास्तें दीं, वे सब रद्दी की टोकरी में फेंक दी गईं। अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद् के कत्कालीन अध्यक्ष जनाब शेख अब्दुल्ला साहब ने जो पत्र लिखे उन पर भी कुछ ध्यान नही दिया गया। महकमा खास की ओर से केवल इतनी सूचना दी गई कि गोपा जी ने अपने कपड़ों पर बहुत-सा मिट्टी का तेल डालकर आग लगा ली थी, उसके फलस्वरूप उनके शरीर पर जो घाव आये उनके कारण ३ अप्रैल, १९४६ को अस्पताल में उनकी मृत्यु हो गई। अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद् की प्रादेशिक शाखा के मंत्री पं० हीरालाल शास्त्री ने महारावल साहब और दीवान से मिलने के लिये जो पत्र लिखे उन पर भी कोई ध्यान नहीं दिया गया।

अखबारी प्रचार

श्री अचलेश्वर जी ने शहीद गोपा जी की मृत्यु को हत्याकांड की संज्ञा देकर अपने 'प्रजा सेवक' में खुली जांच का बल पहुंचाया। उस समय की 'प्रजा सेवक' की फाइलें गोपा जी के चित्रों, उनकी जेल में लिखी डायरी की सूचनाओं व लोकनायक व्यास जी के गोपा काण्ड सम्बन्धी वक्तव्यों व अपने संपादकीय अग्र लेखों के अतिरिक्त जैसलमेरी सामन्तवाद के ताण्डव नृत्य की खबरों से भरी रहती थीं।

समय-समय पर अखबारों व हैंडबिलों के द्वारा जैसलमेर राज्य की भर्त्सना की गई। बम्बई के 'वन्देमातरम्', और 'जन्मभूमि' के मुखपृष्ठों पर गोपाजी के चित्रों के साथ बड़े कालम भरे रहते थे। देश-भर में गोपा जी की हत्या की जांच की आवाज उठाई गई। देशी राज्य लोक-परिषद् के भूतपूर्व प्रधान पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने परिषद् के महामन्त्री व्यास जी की रिपोर्ट पर गोपाजी के बारे में वक्तव्य देते हुए राजाओं की, बड़ी भर्त्सना की और चेतावनी दी कि गोपाजी की रहस्यमयी मृत्यु से दूसरे राजाओं को सबक लेना चाहिए। वह दिन दूर नहीं जब राजाओं का कोई अस्तित्व नहीं रहेगा।

व्यास जी का प्रथम आगमन

गोपा जी की हत्या के इस जांच आन्दोलन के सिलसिले मे ही श्री व्यास जी मारवाड़ लोक-परिषद् के बीस साथियों सहित २४ मई, १९४६ के दिन प्रथम बार बस द्वारा जैसलमेर पधारे। वे अपने साथ एक लाउडस्पीकर बस पर लगा कर लाये थे। राज्य प्रजा मण्डल के कर्णधार मीठालाल जी व्यास के अनुरोध में जैसल-मेर में राज्य प्रजा मण्डल के प्रधान कार्यालय का, जो अब तक जोधपुर में ही था, उद्घाटन भी उसी अवसर पर किया गया और वह राज्याधिकारियों से भी मिले। व्यास जी को जिस मकान में ठहराने का प्रबन्ध किया गया था उसका मालिक मौके पर मुकर गया। दूसरा कोई व्यक्ति भी पुलिस के आंतक के मारे तब अपने मकान में ठहराने को राजी न था, अतः अन्त में उन्हें बाहर गड़सीसर तालाब के किनारे पर स्थित व्यासों की बगीची में ठहराया गया। बस का ड्राइवर भी संयोग से व्यास ही था। उसने बस को बगीची पर जाकर खड़ा कर दिया। उनके आगमन की सूचना तुरन्त महारावलजी को पहुंच गई। वे घबरा गये।

संध्या के समय सदरमण्डी में आम सभा का आयोजन किया गया। सभा स्थल पर जाने के लिये व्यास जी को बगीची से मण्डी तक एक लम्बे जुलूस में ले जाया गया। जुलूस में पचासों महिलाओं के हाथ में तिरंगे झण्डे थे। वह जुलूस शाम को ५ बजे सभा स्थल पर पहुंचा। विद्यार्थियों के नारों से सारा नगर गूंज उठा। सभा स्व० वैद्य भावनी शंकर विस्सा की अध्यक्षता में हुई। उस सभा में व्यास जी ने अपने पूर्वजों की जन्मस्थली जैसलमेर दुर्ग की ओर गम्भीरता से निहारते हुए अपना सारगर्भित भाषण करीब ढाई घण्टे तक दिया। लोकनायक ने जैसलमेर को बड़ा तीर्थ स्थान और अपने को जैसलमेर का मूल निवासी बताया। अमर शहीद सागरमल जी गोपा की हत्या के विषय में राज्य सरकार द्वारा अपनाई गई नीति पर रोष प्रकट करते हुए उन्होंने महारावल साहब से अनुरोध किया कि वे अपना कलंक साफ करने के लिये 'गोपा हत्या काण्ड' की खुली जांच करावें। अन्त में उन्होंने लोगों को प्रजामण्डल के झण्डे के नीचे संगठित होने की अपील की।

व्यास जी के उस भाषण का आम लोगों पर व सरकारी आदमियों पर भी

अच्छा असर पड़ा। व्यास जी ने जिस चौक में अपना प्रथम व्याख्यान दिया था उसका नाम गोपा जी की स्मृति में 'गोपा चौक' रख दिया है। व्यास जी जब कभी जैसलमेर पधारते इसी चौक में व्याख्यान देने का कार्यक्रम रखते थे। व्यासों की वगीची व 'गोपा चौक' लोकनायक व्यास जी के भी स्मारक बन गये हैं। अपने मुख्य मन्त्रित्व काल में भी उन्होंने व्यासों की वगीची में ही ठहरकर उस स्थान के प्रति अपनी आत्मीयता का परिचय दिया था।

वे जैसलमेर के तत्कालीन महारावल साहव जवाहरसिंह जी से भी, उनके वुलावे पर मिले थे। महारावल जी ने वड़ी आत्मीयता से व्यास जी का सत्कार किया और उन्हें अपने राज्य का प्रजाजन वताते हुए वहां उनके पूर्वजों का घर उन्हें वताया। गोपा जी के विषय में महारावल जी ने अपने को निर्दोष वताते हुए, खुली जांच कराने का आश्वासन दिया।

२५ मई, १९४६ को व्यास जी ने जैसलमेर राज्य प्रजामण्डल के प्रधान कार्यालय का उद्‌घाटन किया। उस समय भी उन्होंने लोगों से प्रजामण्डल के नीचे संगठित होने की अपील की। उस दिन व्यास जी को २५१ रु० की एक थैली भी दी गई, जो उन्होंने प्रजामण्डल को सौंप दी।

जांच कमीशन की स्थापना

देशी राज्य लोकपरिषद् और राज्य प्रजा मण्डल के निरन्तर आन्दोलन के फलस्वरूप जैसलमेर राज्य ने इलाहावाद हाई कोर्ट के रिटायर्ड जज श्री गोपालस्वरूप पाठक का एकसदस्यीय जांच कमीशन नियुक्त किया, जिसने २४ सितम्बर, १९४६ से जैसलमेर के जवाहर निवास नामक वंगले में जांच शुरू की। देशी राज्य लोकपरिषद् की ओर से प्रादेशिक शाखा का प्रतिनिधित्व राजस्थान के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री श्री हीरालाल शास्त्री, वीकानेर के नेता श्री रघुवरदयाल गोयल तथा अन्य वकीलों द्वारा किया गया। पाठक से जांच स्थगित करने की मांग की। मांग के स्वीकार न करने पर उन्होंने जांच में भाग न लेने की घोषणा कर जैसलमेर से प्रस्थान कर दिया। शास्त्री जी ने गोपा चौक में हुई सार्वजनिक सभा में भाषण करते हुए वहिष्कार के कारणों पर विस्तार से प्रकाश डाला और वताया कि आज गोपा जी मर कर भी जिन्दा हैं और महारावल जिन्दा होते हुए भी मरेसमान हैं, क्योंकि गोपा हत्याकाण्ड से उनकी कीर्ति पर कलंक लगा है।

श्री गोपालस्वरूप पाठक ने अपनी इकतरफा जांच से जो नतीजा निकला वह अधिकारियों के विरुद्ध कदम उठाने के लिये पर्याप्त था। उन्होंने लिखा था कि जो तथ्य मेरे सामने अव तव आये हैं, उनके आधार पर गोपा जी द्वारा आत्महत्या करने की वात ही प्रकट होती है। हां, यह ज़रूर है कि जलने से पूर्व पुलिस अधिकारी द्वारा दी गई धमकी ने श्री गोपा के मस्तिष्क में एक ऐसा फितूर पैदा कर दिया था, जिससे सिवाय आत्मघात करने के दूसरा कोई चारा ही न वचा था।

उत्तरदायी शासन की मांग

जैसलमेर राज्य प्रजा मण्डल तब से काफी सक्रिय हो गया। श्री भंवरलाल आचार्य के पधारने से जो लोग उत्साहित हुए उनमें चानणमल आसेरा, चन्दनमल गोलरिया, भगवानदास जी माहेश्वरी, चतुरभुज जी डोंगरा, छगनलाल भाटिया, रतनलाल भाटिया, तखतमल भाटिया, श्री बूलीदान शर्मा और श्री नेमीचन्द जैन आदि मुख्य थे। प्रजामण्डल में उत्तरदायित्व पूर्ण शासन की मांग को लेकर राज्य भर में जागृति व संगठन को पनपाया।

जैसलमेर पर पाकिस्तानी हमला

१५ अगस्त, १९४७ को भारत के स्वतन्त्र होने के कुछ दिनों बाद दिसम्बर ४७ में जैसलमेर के अर्जुन सुल्ताना गांव पर पाकिस्तानी पठानों ने अचानक हमला बोल दिया और राज्य में बड़ी असुरक्षा की भावना बल पकड़ने लगी। दीवान साहब ने सहायता लेने के बहाने जोधपुर भाग गये और फिर कभी वापस न आये। जैसलमेर के निकटवर्ती बीकानेर व जैसलमेर राज्यों से सैनिक सहायता अविलम्ब भिजवाई गई। व्यास जी ने भी जैसलमेर को बचाने के लिये शीघ्र सहायता पहुंचाने का उनसे अनुरोध किया और भारत सरकार से भी शीघ्र कदम उठाने की मांग की।

व्यास जी जोधपुर के प्रधानमंत्री

मार्च १९४८ में व्यास जी जोधपुर राज्य के प्रधानमंत्री नियुक्त हुए। जैसलमेर और जोधपुर के पोकरण नगर के बीच बस रूट के ठेके का विवाद खड़ा हो गया। पोकरण तक १८ मील का टुकड़ा जोधपुर राज्य में पड़ता था जिसके लिये जैसलमेर राज्य द्वारा ठेके की रकम का लिया जाना अनुचित था। दोनों राज्यों के प्रधानमंत्रियों के मध्य विचारविमर्श हुआ। जैसलमेर के बस मालिकों का एक शिष्टमण्डल व्यास जी से मिला। दोनों के मध्य जो निर्णय हुआ वह जैसलमेर वालों के हित में ही हुआ। व्यास जी दूसरे राज्य के शासक रहते हुए भी जैसलमेर की मदद करना नहीं भूले।

राजस्थान के मुख्यमंत्री

२६ अप्रैल, १९५१ को जब वे पहली बार राजस्थान के मुख्यमंत्री बने, तब जैलसमेर को उन दिनों भयंकर जल संकट का सामना करना पड़ रहा था। जैसलमेर से एक शिष्ट मण्डल तत्कालीन निर्माण मंत्री श्री युगल किशोर चतुर्वेदी व मुख्यमंत्री व्यास जी से जोधपुर जाकर मिला। व्यास जी के आदेश पर श्री चतुर्वेदी जी ने उसी समय चीफ इंजीनियर को बुलाकर नलों को तुरन्त ठीक करने की व्यवस्था करा तथा मीठे पानी के लिये जैसलमेर से चार मील दूर बड़ा बाग से लौरियों द्वारा नगर को पानी सप्लाई करने का आदेश जारी किया। जल व्यवस्था के अतिरिक्त भी जैसलमेर में शांति व व्यवस्था की स्थिति को सुधारने और शिक्षा

साधनों का विकास करने आदि की दिशा में भी व्यास जी ने बड़ी तत्परता से कार्य किया। शिक्षा मंत्री और स्वास्थ्य मंत्री को जैसलमेर भेजकर उन्हें वहां की स्थिति की जानकारी कराई और समुचित प्रबंध करवाया।

३० मई, १९५२ को जोधपुर महाराजा के स्वर्गवास से रिक्त हुई लोक-सभा की सीट के चुनाव में कांग्रेसी उम्मीदवार बेरिस्टर नूरी के पक्ष में प्रचार करते हुए व्यास जी छह वर्ष बाद दूसरी बार जैसलमेर पधारे। लोगों ने उनका हार्दिक स्वागत किया। वे उस समय अपने साथ तत्कालीन निर्माण मन्त्री मास्टर भोलानाथ जी को भी ले आये थे कि वे वहां की सड़क, यातायात व जल समस्या पर ध्यान दें। भूतपूर्व निर्माणमन्त्री श्री चतुर्वेदी भी उनके साथ थे।

उसी दौरे में वे बीस मील दूर कंडियाला ग्राम भी गये। जहां पत्थर के बने फल बहुतायत से प्राप्त होते हैं। कण्डियाला के पहाड़ पर वे इतने मग्न होकर उन फलों को छांटने में लग गये कि कई बोरियां भर लीं। उनमें एक सुपारीनुमा पत्थर तो वे उसे जैसलमेर के अतिथिग्रह में भूल गये और जोधपुर जाकर उसके लिये फोन करके पड़ताल की। उन्होंने इन पत्थरों को भारत सरकार के पास अन्वेषण के लिये भी भेजा। पता लगा कि उनमें लोहे का अंश था। पर उसे निकालना काफी खर्चीला था। उन फलों का उन्होंने इतना प्रचार किया कि लोग अब भी कण्डियाला की तरफ दौड़ते हैं। देश के कई संग्रहालयों में वहां के पत्थर पहुंच गये हैं।

जैसलमेर के साथ अन्याय

प्रथम आम चुनाव के पश्चात् जब व्यास जी मुख्यमन्त्री के पद से हट गये तब कुछ दिनों के लिये जैसलमेर को तोड़ कर जोधपुर में मिला दिया गया तथा उसकी बाप आदि की कुछ तहसीलें उससे अलग कर दी गई। जैसलमेर की जनता में इस पर बड़ा रोष उत्पन्न हुआ। स्थान-स्थान पर सरकारी निर्णय के विरुद्ध सभाएं की गई। अखबारों में लिखा गया, राज्य सरकार के पास मैमोरेण्डम भेजे गये तथा शिष्टमण्डल भेजकर जैसलमेर को पुन: जिला बनाने की मांग की गई। सितम्बर १९५२ में उदयपुर में प्रदेश कांग्रेस कमेटी की बैठक में व्यास जी ने जैसलमेर के इस प्रश्न को प्रबल समर्थन प्रदान किया। उनकी मान्यता थी कि सीमा पर स्थित जैसलमेर के जिले को, केवल कुछ आर्थिक कारणों से तोड़ना उचित नहीं था।

प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने जैसलमेर जिला कांग्रेस कमेटी को भंग कर उसे जोधपुर में मिला देना तय कर लिया था। व्यास जी ने अपने हाथ से लगाये पौधे को स्वतंत्र रूप से पनपने की दृष्टि से उसका भी विरोध किया। जैसलमेर के कार्यकर्त्ताओं की सहायतार्थ पांच सौ रुपयों का चैक काट दिया।

जैसलमेर के किले में स्थित जैन मन्दिर, ज्ञान-भण्डार व राजप्रासाद बहुत ही कलापूर्ण व प्राचीन हैं। किन्तु इसके बारे में बाहर के लोगों को तब तक कोई ज्ञान नहीं था। व्यास जी के कारण ही लोग जैसलमेर को सही रूप में समझने लगे।

लोग पहले जैसलमेर को काला पानी समझकर वहां जाना पसन्द नहीं करते थे। वहां की कलापूर्ण कारीगरी के सुन्दर चित्र देख सभी लोग वहां आने के लिये उत्सुक होने लगे। व्यास जी ने अपने मुख्यमन्त्री-निवास स्थान पर जैसलमेर के पचासों चित्र टांग रखे थे। चित्रों के अतिरिक्त कण्डियाला के प्रस्तर फलों का एक संग्रहालय-सा वना रखा था। विदेशी अतिथियों को भी जैसलमेर के पत्थर व चित्र दिखाकर व्यास जी वड़ा गौरव अनुभव करते थे।

सांकड़ा का प्रयोग

पुनः मुख्यमन्त्री वनने के वाद व्यास जी ने राज्य की शान्ति व व्यवस्था की स्थिति पर जव गम्भीर विचार किया। तव सर्वप्रथम मारवाड़ के उन इलाकों को जहां अव तक कोई राज्याधिकारी जाने का साहस नहीं करता था, देखने का कार्य-क्रम बनाया। सांकड़ा के डाकू मशहूर थे और उस क्षेत्र के लोगों पर उनका आतंक छाया था। व्यास जी जोधपुर के उच्च पुलिस अधिकारियों व कतिपय कार्यकर्त्ताओं के साथ सांकड़ा पहुंचे। वहां वे लोगों से प्रेम व विश्वास के साथ मिले। उन्होंने उनकी समस्याओं का अध्ययन किया। गांव वालों की सभा में उस दिन कुछ फरार डाकू भी थे, जिनका अधिकारियों तक को कोई पता नहीं था। जव लोगों ने अपनी सही स्थिति का वर्णन किया तव उनको डाकू समस्या के हल का एक नया दर्शन प्राप्त हुआ। उन्होंने कहा, "मनुष्य जन्म से डाकू नहीं होता, उसे परिस्थितियां ही वैसा वनाती हैं। डाकुओं के साथ दमन करने के वजाय हृदय परिवर्तन का गांधी-वादी तरीका अपनाकर ही उन्हें सुधारा जा सकता है। संयोगवश वह गांधी के निर्वाण का दिन था। उन्होंने कहा कि अगर "फरार डाकू स्वयं जाकर पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण कर दें तो उन्हें झूठे गवाह आदि वनाकर नहीं सताया जायगा।" इसका गहरा असर पड़ा और कुछ फरार डाकुओं ने उसी समय अपने आपको पेश कर दिया। व्यास जी ने इस प्रकार सांकड़ा का जो कायाकल्प किया उसकी अपनी ही कहानी है।

शहीद गोपा स्मारक

मई, १९५२ के दौरे में व्यास जी ने जैसलमेर में अमर शहीद सागरमल जी गोपा की समाधि पर उपयुक्त स्मारक वनाने की चर्चा प्रारम्भ कर दी थी। इसके लिये एक गोपा स्मारक कोष की स्थापना की गई। ३१ जनवरी, १९५४ के दिन सांकड़ा में हुए प्रथम विराट् गांधी मेले को समाप्त कर व्यास जी जव जैसलमेर आये तव गोपा स्मारक का विधिवत् उद्घाटन किया गया।

सांकड़ा से व्यास जी लगभग वीस-पच्चीस पत्रकारों के साथ जैसलमेर आये थे। पत्रकार वन्धुओं ने जैसलमेर के नगर की कला पर कई लेख लिखे और वहां की समस्याओं पर सहानुभूति प्रकट की।

नेहरू जी जैसलमेर में

व्यास जी की प्रेरणा पर पंडित जवाहरलाल नेहरू भी जैसलमेर पधारे। ३० मार्च, १९५४ के दिन पंडित जी राजस्थान संघ निर्माण दिवस समारोह में भाग लेने के लिये जयपुर पधारे हुए थे। दूसरे रोज ३१ मार्च को पांच-छह घण्टों का समय खाली बचता था। उसका समुचित उपयोग करने के लिये पंडित जी ने जयपुर से बाहर घूमने की इच्छा जाहिर की। तब व्यास जी ने उनके सामने जैसलमेर देखने का प्रस्ताव रखा तो वे एकदम राजी हो गये और ३१ मार्च को प्रातः दस बजे हवाई जहाज से व्यास जी के साथ जैसलमेर पधारे। पंडित जी ने जैसलमेर के अल्पतम प्रवास में भी ऊंटों की दौड़ देखी, स्वयं ऊंट पर चढ़े और जैसलमेर के दुर्ग में स्थित जैन मन्दिर व ज्ञान-भण्डार देखे।

जैन मन्दिर में रखे गये एक रजिस्टर पर पंडित जी से व्यास जी ने जो पंक्तियां लिखाईं, उनमें जैसलमेर की कला आदि की प्रशंसा करते हुए अन्त में लिखा कि "जैसलमेर की ओर हमारा अधिक ध्यान होना चाहिए।"

पुनः जिला बनाया गया

पंडित जी के दौरे के बाद व्यास जी ने अपने मन्त्रिमण्डलीय साथियों के साथ परामर्श किया। जोधपुर डिवीजन के कमिश्नर श्री दौलतसिंह की अध्यक्षता में एक जांच कमेटी बिठाई गई कि वह जैसलमेर का जिला टूटने के फलस्वरूप हुई राज्य सरकार की बचत आदि के तथ्य सरकार के समक्ष प्रस्तुत करे। कमेटी द्वारा कुल अड़तालीस-पचास हजार रुपयों की बचत बताई गई। १ जून १९५४ को पुनः जिला निर्माण की घोषणा कर दी गई। सांकड़ा सहित पोकरण के क्षेत्र को जैसल-मेर जिले में तथा बापनोखा के इलाकों को जो जिस जिले के समीप पड़ता था, जोधपुर व बीकानेर जिलों के साथ मिलाकर सभी व्यक्तियों को सन्तुष्ट कर दिया। लोगों की मान्यता है कि अगर उस समय व्यास जी शासन में न होते तो न तो पंडित जी जैसलमेर आ पाते और न कभी जिले का पुनर्निर्माण होता।

जैसलमेर के लिये भगीरथ प्रयत्न

व्यास जी के मुख्यमन्त्रित्व काल में यहां विकास की काफी योजनाएं बनाई गई थीं। विशाल राजस्थान नहर की योजना और पेट्रोल की खोज के पुराने काग-जात व्यास जी ने निकलवाये। जैसलमेर से पोकरण को मिलाने वाली सड़क को पक्का बनाने की योजना को तो उन्होंने अपने समय में ही स्वीकार कर लिया था। सोलह लाख की इस योजना का कार्य यद्यपि बाद में सम्पूर्ण हुआ फिर भी इसको हाथ में लेने का श्रेय व्यास जी को ही था।

राष्ट्रपति का दौरा

व्यास जी के कार्यकाल में भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद के जैसलमेर आगमन का कार्यक्रम सितम्बर १९५४ का बना था। परन्तु वे ३१ मार्च,,

१९५५ को जैसलमेर पधारे। इस प्रकार व्यास जी ने देश के बड़े-बड़े कर्णाधारों को जैसलमेर के प्रति आकर्षित करके अपनी इस पितृ-भूमि के प्रति आत्मीयता का परिचय दिया था।

चुनाव अभियान

१९५६ में व्यास जी राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष चुने गये और द्वितीय आम चुनाव की तैयारी में लग गये। १९५७ के चुनाव के लिये कांग्रेसी उम्मीदवारों का चयन करने के बाद चुनाव अभियान का श्रीगणेश भी उन्होंने जैसलमेर से ही किया था। संयोगवश उस दिन जैसलमेर के पुराने कार्यकर्त्ता श्री रघुनाथसिंह मोहता व शिवशंकर जी गोपा भी मद्रास व नागपुर से वहां आये हुए थे।

सेवा केन्द्र की स्थापना

चुनाव समाप्त होने के बाद व्यास जी ने सांकड़ा की तरह जैसलमेर में भी सेवा केन्द्र की स्थापना करके वहां भी एक वाचनालय खोला। यहां के और सांकड़ा के केन्द्रों में समन्वय स्थापित करने के लिये पोकरण में ज्ञान संधान कार्यालय की स्थापना की और समय-समय पर वहां की गतिविधियों को मार्ग-दर्शन प्रदान करते रहे।

एक वर्ष के उपरान्त सांकड़ा मेले से लौटने पर व्यास जी के केन्द्रीय सूचना मन्त्री डा० केसकर के हाथों जैसलमेर में सेवा केन्द्र पुस्तकालय की स्थापना करवाई। उक्त पुस्तकालय को उन्होंने अपनी निजी लायब्रेरी की पुस्तकें प्रदान करके सांकड़ा व जैसलमेर के क्षेत्रों में चलते-फिरते पुस्तकालय का सुझाव दिया। डा० केसकर के अतिरिक्त संचारमन्त्री श्री राजबहादुर के समक्ष पुस्तकालय उद्घाटन के अवसर पर व्यास जी ने जैसलमेर की महत्ता पर बल देते हुए भारत सरकार से निवेदन किया कि जैसलमेर की ओर यात्रियों को आकर्षित करने के लिये इसे एक विदेशी यात्री केन्द्र घोषित किया जाय।

१९५९ में जैसलमेर में अकाल पड़ने पर उन्होंने जैसलमेर का दौरा किया।

ज्ञान मन्दिर की योजना उन्होंने सन् १९६० में तैयार की थी। कलकत्ता यात्रा से लौटकर देशभक्त सेठ सोहनलाल जी दूगड़ द्वारा प्रदत्त दस हज़ार की धनराशि के विनियोग के सम्बन्ध में विचार किया और २९ जनवरी, १९६१ को पोकरण में ज्ञान-संधान की आवश्यक बैठक बुलाकर सर्वसम्मति से यह निर्णय किया कि जैसलमेर जिले में चल रहे सेवा केन्द्रों को ज्ञान मन्दिरों में परिवर्तित कर दिया जाय और अन्य केन्द्रों में नये ज्ञान मन्दिर खोले जायं। ज्ञान संधान का एक कार्यालय जैसलमेर में रखा जाय और ज्ञान संधान नामक बुलेटिन को बन्द करके जैसलमेर से 'दीप' नामक एक पाक्षिक पत्र निकाला जाय। उक्त पत्र में जो घाटा हो, वह ज्ञान संधान की ओर से सहायता देकर पूरा किया जाय। उस पत्र में ज्ञान

मन्दिरों की गतिविधियों पर प्रकाश डाला जाय।

'मरु संदेश' का प्रकाशन

'दीप' नामक पत्र की स्वीकृति न मिलने पर १ अगस्त, १९६१ से जैसलमेर से एक पाक्षिक पत्र 'मरु संदेश' प्रकाशित किया गया। मरु संदेश के प्रथम अंक पर अपना आशीर्वाद देते हुए व्यास जी ने उसकी सफलता की कामना की थी। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि 'मरु संदेश' स्वयं एक संस्था बनकर जैसलमेर की सार्वजनिक समस्याओं के सम्बन्ध में प्रकाश दीप का काम करे। उनकी मान्यता थी कि ऐसे जिला स्तरीय पत्र ही आज के युग में वास्तविक लोक शिक्षण का कार्य कर सकते हैं।

१९६१ में जैसलमेर में अतिवृष्टि होने से सर्वत्र हाहाकार मच गया। लाखों की संख्या में पशुओं का नाश हो गया। कई मकान व झोंपड़े धराशाही हो गये। जैसलमेर का एक सप्ताह भर के लिये सारे संसार से सम्बन्ध टूट-सा गया। तब स्थिति का अध्ययन करने के लिये ११-१२ अक्तूबर, १९६१ को व्यास जी ने जैसलमेर बसीयां व मोहनगढ़ आदि स्थानों में आकर 'मरु संदेश' में अपने विचार प्रकट किये और राज्य सरकार को भी अपने विचार भेजे।

बसीयां में पुलिस की बर्बरता

अप्रैल १९६२ में जैसलमेर के बसीयां क्षेत्र में डाकुओं का सफाया करने के नाम पर राज्य सरकार के पुलिस विभाग ने एक 'टाइगर आपरेशन' चलाया था। बसीयां के कुल नौ डाकुओं को समाप्त करने के उद्देश्य से सात जिलों के पुलिस अधिकारियों को एकत्र करके बसीयां के इलाके में पुलिस ने जिस प्रकार दमनचक्र चलाया वह स्वतन्त्रता के बाद पुराने सामंती ढंग का पहला प्रदर्शन था। जब डाकू पुलिस के हाथ नहीं लगे तब उनके सम्बन्धियों, पड़ोसियों आदि को मारपीट कर, उनके झोंपड़े व खलिहान आदि जलाकर सारे क्षेत्र में पुलिस ने आंतक फैला दिया। बसीयां जैसलमेर से दक्षिण की तरफ फतहगढ़ तहसील का एक इलाका है जहां पर पीढ़ियों से चोरी-डकैती करने वाले लोग रहते हैं। सांकड़ा के मनोवैज्ञानिक प्रयोग के प्रति असहमति प्रकट करते हुए राज्य के गृहमन्त्री ने जिस प्रकार पुलिस को दमन करने की छूट दी वह वास्तव में आश्चर्यजनक थी। पुलिस ने 'टाइगर आपरेशन' में तीन पक्के मकान और दस कच्चे मकान मय माल असबाब के जला दिये। सैकड़ों मन अनाज के खलिहान पेट्रोल छिड़कर जला दिये; गांव वालों के साथ मारपीट की और उन्हें परेशान किया। महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार होने की घटनाओं की शिकायतें भी सुन पड़ीं।

व्यास जी की प्रतिक्रिया

जब व्यास जी को बसीयां की घटनाओं की जानकारी मिली तो उन्हें बड़ी वेदना हुई। उस क्षेत्र के निवासियों व जैसलमेर के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं की प्रार्थना

पर व्यास जी ३ जून, १९६२ को पोकरण पहुंचे और वहां पर कार्य करने वाली अपनी समाज सेवी संस्था ज्ञान संधान की कार्यकारिणी की आवश्यक बैठक बुला कर वसीयां में हुई पुलिस ज्यादतियों की जांच करने के लिये स्वयं के अतिरिक्त चार अन्य व्यक्तियों की एक कमेटी का निर्माण किया। दूसरे दिन जैसलमेर पहुंचकर जीप द्वारा घटना स्थल की ओर कूंच कर दिया। वसीयां जांच कमेटी ने प्रायः प्रत्येक जले हुए मकान व झोंपड़े को देखा और वहां के सभी पीड़ित व्यक्तियों से खास कर महिलाओं से मिलकर मामले की असलियत प्राप्त की। वसीयां कमेटी के सदस्य बाड़मेर पहुंचे, वहां वसीयां में हुई पुलिस ज्यादतियों के बारे में राज्य सरकार के मुख्यमन्त्री व गृहमन्त्री के अतिरिक्त राज्यपाल को अपनी रिपोर्ट प्रेषित की। व्यास जी ने उनको व्यक्तिगत पत्र लिखकर सरकार द्वारा न्यायिक जांच कराने का अनुरोध किया। उसी दिन ७ जून को बाड़मेर में सार्वजनिक सभा में वसीयां की घटनाओं का विस्तार से जिक्र करते हुए व्यास जी ने 'टाइगर आपरेशन' को स्वराज्य के लिये चुनौती बताया। तब उन्होंने कहा कि "स्वराज्य के बाद पुलिस की इस प्रकार की ज्यादतियां हम सबके लिये चुनौती हैं। अगर ऐसी हरकतों को हमने होने दिया तो हमारा जीवन असंभव हो जायेगा।" व्यास जी ने वसीयां की रिपोर्ट को अखबारों में भी छपवाया और वे अपने जीवन के अन्त तक उसके लिये सरकार से झगड़ते रहे। प्रधानमन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू से वसीयां घटनाओं के बारे में जो पत्र व्यवहार किया और जिसकी अधिकांश प्रतियां उन्होंने मुझे भेजी थीं, उनको देखने से हर कोई उनकी स्पष्टवादिता व निर्भीकता से परिचित हो सकता है।

घटनाओं की पुनरावृत्ति

२३ सितम्बर, ६२ को जब वसीयां की घटनाओं पर कतिपय पुलिस अधिकारियों के विरुद्ध अदालतों में मुकदमे दायर हुए तब प्रतिशोध की दुर्भावना से कुछ अफसरों ने फिर एक स्थान पर माल-असबाब सहित ढाणी को जला दिया और महिलाओं आदि को पकड़कर घसीटा। कुछ लोगों के साथ बड़ी बेरहमी से मार-पीट की गई। इस पर क्षुब्ध होकर व्यास जी दिल्ली से राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री सुखाड़िया जी से मिलने जयपुर गये और मामले की जांच करने का अनुरोध किया। मुख्य मंत्री ने जैसलमेर के जिलाधीश द्वारा जांच करवाने का आश्वासन दिया था। उक्त जांच का नतीजा अभी तक प्रकाश में नहीं आया है और न किसी अफसर के विरुद्ध कोई कदम ही उठाया गया है। यद्यपि व्यास जी के जीवन काल में ही राज्य सरकार द्वारा दो-एक व्यक्तियों का मुहावजा स्वीकृत हो गया था मगर वे कब सन्तोष करने वाले थे। उनका तो कहना था कि सरकार अपराधी अधिकारियों को दण्ड देकर अपनी न्यायप्रियता का परिचय दे। वे अन्तिम दम तक वसीयां के मामले में न्याय करने पर जोर देते रहे।

वसीयां से लौटने के वाद व्यास जी ने ज्ञान संधान की ओर से वसीयां क्षेत्र में भी सांकड़ा की तरह डाकुओं की सुधार-योजना चालू की थी। झिझनयाली, मोढा, गूंगा व वाड़मेर में ज्ञान-मन्दिरों की स्थापना करके जैसलमेर से इनका संचालन करने के लिये उन्होंने जो दो वर्षीय योजना निश्चित की थी वह उनके हाथ से लिखी हुई असल प्रति मेरे पास सुरक्षित है। वसीयां के डाकू-सुधार कार्यक्रम की जानकारी उन्होंने अपने कलकत्ते के मित्रों को भी दे दी थी और उसके लिये उनके सहयोग का वचन भी प्राप्त कर लिया था। अप्रैल १९६३ में व्यास जी ने मुझसे इस कार्य के लिये कलकत्ता आदि स्थानों पर चलने का कार्यक्रम वना लिया था और तव तक के कार्य की रिपोर्ट तैयार करके छपवाने का भी आदेश दे दिया था। आदमी जो सोचता है वह नियति को मंजूर नहीं होता। अप्रैल आने से पूर्व १४ मार्च को ही जैसलमेर के वहुत वड़े सहायक लोकनायक व्यास जी इस संसार से चल वसे।

सांकड़ा की अन्तिम यात्रा

३० जनवरी, १९६३ को हमेशा की भांति व्यास जी गांधी जी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये सांकड़ा पहुंचे। वहां पहुंचकर उन्होंने महात्मा जी की मूर्ति को माला अर्पित कर जो शव्द कहे थे वे उस समय विश्वसनीय प्रतीत नहीं होते थे। उनके भीतर के देव की वाणी में जो अन्तर्भावना फूट पड़ी वह सुनिश्चित भविष्य की सूचक थी। उन्होंने वापू को संवोधित करते हुए कहा था कि "वापू यह मेरी अन्तिम माला स्वीकार कीजिये।"

अन्तिम वर्षगाठ जैसलमेर में

सांकड़ा से लौटने पर वे मेरी वच्ची के विवाह पर चार दिन के लिये जैसलमेर पधारे थे। २ फरवरी को माघशुक्ला अष्टमी के दिन व्यास जी की ६५वीं वर्षगांठ पड़ती थी। उस दिन शादी का एक खास कार्यक्रम था। लोगों को स्वतः ही मीठा मिलने वाला था। प्रातः काल व्यास जी ने स्वयं हमें विनोद के साथ स्मरण कराया कि "आज मेरी वर्षगांठ है इसलिए सभी लोग लड्डू खायेंगे।" लोगों को जव उनके जन्म दिवस का पता लगा तो वे व्यास जी को शुभकामनाएं अर्पित करने के लिये उनके निवास स्थान पर पहुंचे। जैलसमेर में पहुंचने के वाद उन्हें कुछ वुखार हो गया था और अपनी रुग्णावस्था में भी उन्होंने विवाह के कार्यक्रमों में वरावर भाग लिया। ४ फरवरी की शाम को वे जव जैसलमेर से प्रस्थान करने लगे तो मैंने उन्हें पोकरण तक जीप से जाने का सुझाव दिया। उसे स्वीकार न कर वे साधारण सर्विस वस में एक सीट पर जैसलमेर से चल दिये। मुझे विवाह कार्यों से निवृत होकर मिलने को कहकर जव विदा हुए तो उनकी मुखाकृति वहुत प्रसन्न थी। हम लोगों को क्या मालूम था कि वे अपना अन्तिम स्नेह देकर जैसलमेर से विदा हो रहे हैं?

वहां से चलने के बाद दो-तीन पत्र भी मेरे पास आये। किन्तु फिर कभी उनके दर्शन नहीं हुए। १४ मार्च, १९६३ को उनकी अचानक मृत्यु का दु:खद समाचार जैसलमेर वासियों ने वज्राघात की तरह सुना। उनके स्वर्गवास के समाचार सुनते ही प्रातः काल जैसलमेर की बाजार में सभी यह कहते सुने गये कि "जैसलमेर का एक मात्र सहारा टूट गया।"

व्यास जी ने जैसलमेर के साथ जो आत्मीय संबंध रखा वह अनूठा था। जैसलमेर उनके उपकार से कभी उऋण नहीं हो सकता।

५
व्यास जी और बीकानेर

१

श्री रघुवरदयाल जी गोयल, बीकानेर (राजस्थान)

मार्च १९४२ में जयपुर राज्य प्रजामंडल का वार्षिक अधिवेशन श्री माधोपुर में हुआ था। वहां राजस्थान और मध्यभारत आदि के कार्यकर्त्ता आमंत्रित थे। मैं भी वहां गया था। उस समय मेरा व्यास जी से पहली बार व्यक्तिगत परिचय हुआ। व्यास जी से मैंने सरलता, मिलनसारिता विनोदप्रियता, और कार्यकर्त्ताओं के प्रति सहानुभूति खूब बड़ी मात्रा में अनुभव की।

मैं जब निर्वासित हुआ, तब भी नेहरू जी ने श्री कचरू के द्वारा बम्बई बुलाया और बीकानेर की राजनीतिक परिस्थिति से अपने को परिचित किया। उस समय व्यास जी ने जेल में से ही किसी प्रकार अपने मित्र श्री अमृतलाल सेठ से श्री कचरू के द्वारा मुझे परिचित करवाया। श्री व्यास जी का बीकानेर के जन आन्दोलन से निकट का सम्बन्ध था और वे हमेशा उसे बल देने का प्रयास करते रहते थे। सन् १९४६-४७ में बीकानेर राज्य प्रजापरिषद् के कार्यकर्त्ताओं में आपस में मनमुटाव रहने लगा और एक दल ने दूसरे दल के प्रमुख व्यक्ति पर एक बहुत बड़ी रकम को गबन करने का इल्जाम सार्वजनिक रूप से पर्चा निकालकर लगाया। उस पर भूख हड़ताल हुई। प्रान्तीय स्तर के संगठन द्वारा व्यास जी को जांच के लिये नियुक्त किया गया। उन्होंने जांच से उसे गलत पाया। इस सिलसिले में उनको बीकानेर कई बार आना पड़ा। उन्हें स्थानीय संगठन के आन्तरिक झगड़ों की जानकारी भी मिली।

बाबू मुक्ताप्रसाद जी बीकानेर में एक प्रमुख वकील थे, वे गरीबों का पक्ष लिया

करते थे। उन्होंने यहां एक संगठन बनाया था, जिसका नाम 'मित्र मंडल' था। मित्र मण्डल के द्वारा बीकानेर स्टेशन पर पानी पिलाने, लावारिस मृतकों का दाह संस्कार करने और कोलायत के मेले पर स्वयंसेवकों की व्यवस्था आदि का काम किया जाता था। कोलायत में चीज़ें सस्ती मिलने का प्रबन्ध किया जाता था और सामाजिक जागृति के नाटक भी खेले जाते थे। मुक्ताप्रसाद जी का बाहर के कार्यकर्त्ताओं के साथ विशेष सम्बन्ध था और वे कांग्रेस के लिये प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से, यहां से आर्थिक और दूसरी सहायता पहुंचाया करते थे। उस सिलसिले में उनका व्यास जी, श्री हरिभाऊ जी उपाध्याय, श्री विजयसिंह जी पथिक, श्री रामनारायण जी चौधरी, श्री मणिकलाल जी कोठारी और ऋषिदत्त जी मेहता इत्यादि से खूब संपर्क था।

सम्भवत: मेरी लूणकरणसर की नज़रबन्दी या वहां से निर्वासित किये जाने के काल में श्री व्यास जी ने बीकानेर व जोधपुर के कार्यकर्त्ताओं की एक सम्मिलित बैठक बीकानेर के जन-आन्दोलन को प्रभावशाली तथा बलशाली बनाने के लिये बुलाई थी। उसके बाद ही बीकानेर में तेलीवाड़ा मोहल्ले में एक पुस्तकालय खोला गया, जो राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र बन गया। बीकानेर राज्य उसको भी बर्दाश्त न कर सका और थोड़े दिन बाद श्री माधोराम, श्री रामनारायण और श्री किशनगोपाल को गिरफ्तार कर लिया गया। नागौर की बैठक में व्यास जी ने बीकानेर के कार्यकर्त्ताओं में मज़बूती लाने के लिये शपथ भी दिलवाई थी कि वे कार्य के प्रति सच्चे, संलग्न और दत्तचित्त रहेंगे। इस प्रकार व्यास जी बीकानेर की जन-जागृति में सदा ही सक्रिय भाग लेते रहे।

व्यास जी जीवन के पिछले हिस्से में रचनात्मक कार्यों में खूब दिलचस्पी लेने लगे थे और खादी कार्य में विशेष सक्रिय थे। राजस्थान बोर्ड के सदस्य थे और जोधपुर में एक खादी संस्था भी चलाते थे। खादी सम्बन्धी बैठकों में मेरा उनसे मिलना हो जाता था और खूब बातचीत होती थी। जयपुर में संस्था संघ की मीटिंग में हम लोग, एक बार इकट्ठे हुए और वहीं बीकानेर में कुछ विशिष्ट कार्यकर्त्ताओं को इकट्ठा करना तय हुआ। उनके नाम भी तय कर लिये गये। वह बैठक जनवरी सन् ६३ में बीकानेर में बुलाई गई। उसमें राजस्थान भर के लगभग १०-१२ कार्यकर्त्ता आये थे। उस समय एक संगठन बनाने की भी बात चली थी। व्यास जी की राय से संगठन के काम को स्थगित रखकर पहले राजनीतिक दृष्टि से राजस्थान का सर्वेक्षण करना तय हुआ और सर्वेक्षण समिति का गठन किया गया। व्यास जी को मैंने उस सर्वेक्षण समिति में बड़े उत्साह के साथ काम करते पाया। अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में जब वे दिल्ली में स्वास्थ्य सम्बन्धी जांच करवाने के लिये विलिंग्टन अस्पताल में दाखिल हुए थे, उस समय का उनका एक पत्र मेरे पास संजोकर रखा हुआ है। राजस्थान की जन-जागृति का जो श्रेय व्यास

जी को प्राप्त है, उसमें बीकानेर की जनता उनके ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकती।

२

श्री गंगादास जी कौशिक, बीकानेर (राजस्थान)

व्यास जी के साथ मेरे राजनीतिक सम्बन्ध का श्रीगणेश बीकानेर में राज्य द्वारा चलाये गये राजद्रोह के षड्यन्त्र के मुकदमे से हुआ, वह सन् १९३४ की बात है।

१९४० में रियासत जोधपुर के नागौर नामक स्थान पर 'मारवाड़ राज्य लोकपरिषद्' के वार्षिक अधिवेशन में बीकानेर से जाने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। मैंने उस राजनीतिक सम्मेलन में उत्साहपूर्वक भाग लिया। मेरे साथ बीकानेर से पुलिस गुप्तचर विभाग का एक कर्मचारी भी नागौर चला। रात के ग्यारह बजे नागौर स्टेशन पर ट्रेन पहुंची। रेल के डिब्बे से उतरा, अजनबी होने के कारण प्लेटफार्म पर इधर-उधर देखा तो स्वर्गीय पं० शिवदयाल दवे जो राज-नीतिक मित्र थे। मुझे लेने के लिये स्टेशन पर उपस्थित थे। उनके साथ मैं अतिथि निवास स्थान पर गया। वहां राजनीतिक वार्तालाप करते-करते निद्रा आ गई। प्रभात होते ही जोधपुर की ट्रेन से श्री जयनारायण जी व्यास अपने साथियों सहित पधारे। उनके स्वागत के लिये हम सब स्टेशन पर गये। उनके लिये निश्चित निवास स्थान पर उनको ले आये। शौचादि से निवृत्त हो, हाथ-मुंह धोने के उपरांत हम सबने एकसाथ बैठकर नागौर निवासियों की तरफ से लाई हुई नाश्ते की शुद्ध घी से बनी गरम-गरम जलेबी और बीकानेर के प्रसिद्ध भुजिये आदि का नाश्ता किया। पारस्परिक बन्धुभाव का वह कैसा सुन्दर दृश्य था।

दो दिन तक सम्मेलन में व्यास जी के साथ रहने का सुअवसर मिला। भाई श्री छगनलाल चौपासनीवाला और श्री शिवदयाल दवे मेरे पूर्व परिचित मित्र थे। बीकानेर की राजनीतिक गतिविधियों पर व्यास जी के साथ बहुत-सी चर्चा हुई। व्यास जी ने मुझे एक ही मार्ग सुझाया, वह था 'राजनीतिक संगठन।' बीकानेर में उस समय उसकी चर्चा तक करना गुनाह था। व्यास जी ने मुझे परामर्श दिया कि भादरा के श्री खूबराम जी सराफ के साथ मिलकर जन-सेवा का काम करने में जुट जाना चाहिए। उन्होंने यह भी बतलाया कि श्री खूबराम जी के दिल में बीकानेर की जनता की सेवा करने की तड़पन है। उनके कुछ साथी इधर-उधर बिखर गये हैं। उनका नया संगठन कायम करके तुरन्त काम प्रारम्भ कर देना चाहिये। उसी अवसर पर राजस्थान के तपस्वी नेता के जिनका मैंने उस समय तक केवल नाम ही नाम अखबारों में पढ़ रखा था, प्रत्यक्ष में दर्शन कराये। वे थे स्वनामधन्य बाबा नरसिंहदास जी। वे नागौर के आदिवासी थे। उनके साथ भी

बीकानेर की मूक प्रजा की दर्दभरी आपबीती पर खुलकर चर्चा हुई। उन्होंने भी वही राय दी कि राजनीतिक संगठन बनाकर काम करने की ज़रूरत है। अपने को सेवा-कार्य में खपाने वाले की ही प्रथम आवश्यकता है। जब तक कष्ट सहने की शक्ति बीकानेर की जनता में नहीं आयेगी, तब तक कुछ होने वाला नहीं है। उन्होंने महात्मा गांधी के एक वाक्य का उल्लेख करते हुए कहा कि "यदि बीकानेर की जनता डर को दूर करके बलिदान की कला को सीख ले तो उसे अपना वांछित मिल जायेगा।" यह वाक्य साप्ताहिक 'हरिजन' ता० ४ फरवरी, १६३६ के अंक में प्रकाशित हुआ था।

दोनों नेताओं की आज्ञा मेरे हृदय में बस गई। मैं उनसे विशेष रूप में प्रभावित हुआ। उसी को ध्यान में रखते हुए जून सन् १६४२ में श्री पं० हीरालाल शास्त्री द्वारा वनस्थली में आयोजित एक मास के राजनीतिक शिविर में २८ दिन रहा। तब व्यास जी जोधपुर जेल में अपने साथियों सहित भूख हड़ताल पर थे। उनकी सहानुभूति में शिविर में हमने भी एक दिन की भूख हड़ताल का कार्यक्रम रखा था।

२२ जुलाई, १६४२ को श्री रघुवरदयाल गोयल के नेतृत्व में 'बीकानेर प्रजा परिषद्' के नाम से राजनीतिक संस्था की स्थापना की गई। महाराजा की छत्रछाया में उत्तरदायी शासन प्राप्त किये जाने का ध्येय निश्चित किया गया। इसी उद्देश्य से प्रेरित हो स्वीकृत प्रस्ताव में महाराजा से उत्तरदायी शासन कायम करने की मांग की गई। इस पर हम सब गिरफ्तार कर लिये गये। गोयल जी को निर्वासित कर दिया गया। इस पर व्यास जी ने, जो उस समय अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् के प्रधानमंत्री थे, गिरफ्तार कार्यकर्त्ताओं को रिहा करने, अनाचार व अत्याचार बन्द करने के लिये महाराजा को तार व पत्र आदि दिये थे। व्यास जी अपने साथी कार्यकर्त्ताओं के दुःख-सुख को सदैव बिना किसी भेद-भाव के अपना ही समझते थे। वे उनके परिवार के पालन-पोषण की फिक्र भी रखा करते थे। इस प्रकार व्यास जी को बीकानेर में जन-जागृति के लिये राजनीतिक संगठन का श्रीगणेश करने का श्रेय प्राप्त है और बीकानेर की जनता उसके लिये उनकी सदा कृतज्ञ रही। इसी कारण राजनीतिक जीवन की अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाएं घटीं।

ग्रामोद्योग के समर्थक

स्वतन्त्र भारत के बृहद् राजस्थान राज्य बनने के बाद प्रथम मुख्यमंत्री श्री हीरालाल शास्त्री के त्याग-पत्र देने पर व्यास जी मुख्यमंत्री बने। तब उन्होंने बीकानेर में खादी ग्रामोद्योग को प्रोत्साहन देने के लिये 'खादी ग्रामोद्योग प्रतिष्ठान' नामक खादी संस्था की स्थापना करवाई। उसको सरकारी सहायता दिलाकर गांव-गांव में ऊनी खादी के उत्पादन को प्रोत्साहित किया। सैकड़ों हरिजन परिवारों को रोजी दिलाने में सहायक बने।

अन्तिम भेंट

मेरी अन्तिम भेंट उनसे तब हुई, जब वे बीकानेर में आयोजित पुराने कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओं के सम्मेलन के लिये १९६२ में पधारे थे। उसमें श्री मास्टर आदित्येन्द्र जी, श्री युगलकिशोर चतुर्वेदी और श्री रघुवरदयाल जी गोयल के अतिरिक्त कई पुराने साथी सम्मिलित हुए थे। वर्तमान संकटकालीन स्थिति, सीमा पर होने वाले तस्कर व्यापार की रोकथाम और देश में फैले हुए भ्रष्टाचार को रोकने के सम्बन्ध में दो दिन तक विचार-विमर्श हुआ। व्यास जी स्वयं जैसलमेर बीकानेर तथा गंगानगर के सीमावर्ती ग्रामों के नागरिकों की करुणाजनक स्थिति देखकर आये थे। उनकी दुःखभरी कहानी उन्होंने सुनाई। उन्होंने सही स्थिति का विवरण उस समय के गृहमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री को भी बताया था और उसके निवारण के लिये कुछ सुझाव भी प्रस्तुत किये थे।

शोक संवाद

जब व्यास जी के निधन का शोक संवाद आकाशवाणी द्वारा सुना गया, तब बीकानेर में एकाएक शोक की लहर व्याप गई। कांग्रेस की ओर से श्री रतन-बिहारी जी के बाग में शोक सभा की गई। उनके निधन से बीकानेर की जनता ने अपना परम हितैषी खो दिया। वस्तुतः बीकानेर के साथ उनका वैसा ही सम्बन्ध था, जैसा कि जोधपुर के साथ समझा जाता है। अपने प्रारम्भिक सार्वजनिक जीवन के कई वर्ष उन्होंने बीकानेर में विताये थे। यह भी कहा जा सकता है कि उनके सार्वजनिक जीवन का शुभारम्भ बीकानेर से ही हुआ था। अपने महान् नेता के चरणों में मेरे शतशः प्रणाम हैं।

६

व्यास जी और भरतपुर

श्री युगलकिशोरजी चतुर्वेदी, प्रियम्वदा सदन, अशोक मार्ग, जयपुर (राजस्थान)

२८ जुलाई, सन् १९४० को संध्या समय तिलक हाल पूरा के समीप लंबे कद के एक दुबले-पतले किन्तु सुडौल और गठीले शरीर तथा घुंघराले लम्बे-लम्बे बालों वाले पेशावरी चप्पल, धोती कुरता और जवाहर जाकेट पहने मुख पर मृदु मुस्करा-हट के साथ सामने से आते हुए सज्जन का परिचय करते हुए एक रियासती कार्य-कर्त्ता ने कहा, "अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् के प्रधानमंत्री श्री जय-नारायणजी व्यास आप ही हैं। 'और आप' मेरी ओरसंकेत करते हुए कहा, "भरत-पुर से प्रतिनिधि होकर आये हुए श्री युगलकिशोरजी चतुर्वेदी हैं।" पारस्पारिक

अभिवादन तथा कुशल क्षेम आदि पूछने के अनन्तर "अच्छा, अब कल सम्मेलन के समय मिलेंगे।" कहकर श्री व्यास जी ने विदा ली और हम भी तिलक चौक हाल की ओर अग्रसर हो गये।

यह थी वह सर्वप्रथम भेंट, जो पूना में तब हुई, जब मैं अब से लगभग चौबीस वर्ष पूर्व भरतपुर राज्य प्रजा परिषद् के प्रतिनिधि के रूप में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् के तत्त्वावधान में आयोजित रिसायती कार्यकर्त्ता सम्मेलन में भाग लेने के लिये पूना गया था। आगे चलकर हमारी यही औपचारिक भेंट एक-दूसरे के निकटतम साथी और सहयोगी के रूप में परिणत होकर अन्त तक अक्षुण्ण बनी रही।

श्री नेहरू का अट्टहास

दूसरे दिन उसी तिलक हाल में पंडित जवाहरलाल जी नेहरू की अध्यक्षता में कार्यकर्त्ता सम्मेलन आरम्भ हुआ। लगभग पांच सौ कार्यकर्त्ता विविध देशी रियासतों के प्रतिनिधि तथा दर्शकों के रूप में उपस्थित थे। कार्रवाई आरम्भ होने के थोड़ी देर बाद ही नेहरू जी के समीप ही मंच पर बैठे व्यास जी ने अपनी दृष्टि बड़ी उत्सुकतापूर्वक इधर-उधर दौड़ाई। मानो आप उस विशाल जन-समुदाय में से किसी व्यक्ति विशेष की टोह कर रहे हों। कुछ ही समय बाद आपकी दृष्टि मुझ पर पड़ी और आप तत्काल ही बैठे-ही-बैठे मेरे समीप आये और धीरे-से मेरे कान में कहने लगे, "हमने प्रत्येक रियासती संगठन से एक-एक वक्ता के बुलवाने की व्यवस्था की है। आपको पूरे राजस्थान का प्रतिनिधित्व करके सभी रियासतों की स्थिति का सामान्य परिचय कराना है। आप तैयार रहें।" आप तुरन्त मंच पर वापस पहुंच गये।

केवल एक ही दिन पूर्व साधारण परिचय होने पर भी व्यास जी ने राजस्थान के अपने अन्य अनेक चिर परिचित साथियों को छोड़कर मुझे ही सम्पूर्ण राजस्थान का प्रतिनिधित्व करने के लिये क्यों चुना? उसको मैं अब तक समझ नहीं पाया। उस दिन मेरे भाषण के एक अंश से सदन में जो सजीवता आई, उसका उल्लेख व्यासजी समय-समय पर करते रहते थे।

बात यह थी कि राजस्थान के अन्य राज्यों की स्थिति पर प्रकाश डालने के अनन्तर जिस समय मैंने भरतपुर राज्य के उस झंडा कांड की चर्चा की, जिससे वहां संघर्ष की-सी स्थिति बन रही थी, जो वहां की प्रजा परिषद् द्वारा तब तक प्रयुक्त किये जाने वाले राष्ट्रीय तिरंगे झंडे के स्थान पर दरबार के झंडे की मैंने चूड़ीदार पाजामे से उपमा दी और उक्त भाव को व्यक्त करने के लिये अपनी दो उंगलियां उसी आकार के रूप में उठाई। अध्यक्षीय आसन पर आसीन नेहरूजी ने इतने जोर का अट्टहास किया कि आप जिस कुर्सी पर बैठे थे, वह काफी देर तक हिलती रही और सारे सदन में आपका वह अट्टहास गूंज उठा।

भरतपुर सम्मेलन के सभापति

इसी वर्ष के दिसम्बर मास में भरतपुर राज्य प्रजापरिषद् का प्रथम राजनीतिक सम्मेलन पूर्ण समारोह पूर्वक मनाने का आयोजन किया गया। उस अवसर पर स्थानीय तथा समीप की अन्य रियासतों के कार्यकर्त्ताओं के अतिरिक्त कुछ विशेष प्रभावशाली नेताओं को भी आमंत्रित करने का विचार हुआ। हमने स्वर्गीय सेठ जमनालालजी बजाज तथा श्री रामनारायणजी चौधरी, जो उस समय महात्मा जी की सेवा में सेवाग्राम में थे तथा बरार के श्री तख्तमलजी जैन व व्यास जी को भी निमंत्रण पत्र भेजे थे। प्रथम तीन लोगों ने तो किसी-न-किसी कारण उपस्थित होने में असमर्थता प्रकट की, परन्तु काफी कार्य व्यस्त रहने के बावजूद व्यास जी ने हमारे निमंत्रण पर सम्मेलन का सभापतित्व सहर्ष स्वीकार कर लिया।

जब स्वागत समिति के अधिकारी तथा सदस्यगण आपके स्वागतार्थ रेलवे स्टेशन पर पहुंचे तो आपको प्लेटफार्म पर उतरते न देखकर सबको बड़ी निराशा हुई। काफी देर तक ट्रेन के सारे डिब्बों की पूरी देखभाल करके जब हम लोग निराश और खिन्न होकर वापस लौटने लगे तो यह देखकर हमारे आश्चर्य की सीमा न रही कि हमारे मान्य मेहमान मुसाफिर खाने में बड़ी तसल्ली के साथ चाय की चुस्कियां ले रहे थे। "हम सबकी नज़र बचाकर आप यहां कैसे आ पहुंचे ?" यह पूछने पर आपने बड़ी बेतकुल्लुफी से कहा, "भाई, मुझे सवेरे की चाय पीने की तलब लगी थी। आप लोग प्लेटफार्म पर ही स्वागत-सत्कार में आधा घंटा लगा देते। इसलिए मैं पीछे के दरवाज़े से उतरकर सीधा यहां चाय पीने पहुंच गया। अब मैं आपके हवाले हूं। मेरा जो चाहें, सो कर लो।" आपकी इस सरलता और विनोदप्रियता की सभी कार्यकर्त्ताओं पर बड़ी गहरी छाप पड़ी।

सम्मेलन अत्यन्त सफल और शानदार रहा। अपने अध्यक्षीय भाषणों में आपने राजा और प्रजा के पारस्परिक सम्बन्धों का निरूपण करते हुए उनको पिता और पुत्र की उपमा दी। आपने राज्याधिकारियों को भी जनता के स्वामी बनने के स्थान पर सेवक बनने की सलाह दी, क्योंकि वे उसके पिता अर्थात् राज्य के सेवक हैं। इस प्रसंग में जब आपने "ये हमारे नौकर और हमारे बाप के नौकर हैं।" ये शब्द कहे तो उपस्थित जनसमूह ने भारी हर्षध्वनि की। उसका इतना प्रभाव पड़ा कि उन्हीं शब्दों के आधार पर एक स्थानीय कवि श्री गिरीश ने एक कविता रच ली। जिसकी निम्नलिखित पंक्तियां अभी तक लोगों की जबान पर चढ़ी हुई हैं—

"पिता भूपाल हमारे हैं।
उनके नौकर के नौकर, का लगत हमारे हैं।"

बच्चों की पीपी बजाई

इस सम्मेल के अनन्तर आपका भरतपुर राज्य के कार्यकर्त्ताओं के साथ ऐसा

गहरा सम्बन्ध जुड़ गया कि आप प्रायः प्रतिवर्ष भरतपुर आने लग गये। उन अवसरों के कितने ही मधुर संस्मरण मेरे तथा अन्य कार्यकर्त्ताओं के स्मृति पटल पर ज्यों के त्यों अंकित हैं।

सन् ४४ या ४५ की बात है, भरतपुर दरबार और प्रजापरिषद् के बीच संघर्ष छिड़ रहा था। हमारे प्रायः सभी प्रमुख कार्यकर्त्ता जेल में बन्द थे। दमन पूरे ज़ोरं पर था। व्यासजी सर्वश्री हरिभाऊ जी उपाध्याय, व० सा० देशपांडे आदि के साथ स्थिति का अध्ययन करने और सम्भव हो तो सम्मानपूर्ण समझौता कराने के लिये पधारे। इस सिलसिले में आप हम लोगों से जेल में मिले और अधिकारियों से भी भेंट की थी। उन दिनों भरतपुर के समीप गोवर्द्धन नामक तीर्थ स्थान पर बहुत बड़ा मेला लगा हुआ था। विनोदप्रिय व्यास जी उस मेले को देखने से कब चूकनेवाले थे। आप अपने साथियों तथा दो एक स्थानीय कार्यकर्त्ताओं के साथ मेले में जा पहुंचे। वहां कुछ बच्चों को नरसल की बनी पी पी बजाते देखा तो आपने भी एक पी पी खरीदी और लगे उसको बच्चों की तरह ही झूम-झूमकर बजाने। ग्रामीण जनता के लिये कुतूहल बन गया। काफी देर तक आप उन सबका मनोरंजन करते रहे। भरतपुर लौटकर जब वह घटना कार्यकर्त्ताओं को सुनाई गई तो सब हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये।

हड़ताड़ के साथ

सन् ४६ में प्रजा-परिषद् का एक अधिवेशन बयाना कस्बे में हुआ था। स्थानीय गायक राष्ट्रीय गायन गा रहा था, परन्तु आपको साज-बाज के ताल स्वर में मेल बैठता न दीख पड़ा। बस, फिर क्या था। आपने तत्काल लपककर खड़ताल उससे अपने हाथ में ले ली। इस प्रकार बजाने लगे, जैसे आप उस कला में पूर्ण सिद्धहस्त हों। देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि राजस्थान का इतना बड़ा राजनीतिक नेता कैसा कुशल कलाकार भी है!

पैदल ही निकल पड़े

एक बार आपके भरतपुर पहुंचने की सूचना तो थी, परन्तु किस ट्रेन से कब आयेंगे, इसका पूरी तरह पता न लग पाया। अतः स्टेशन पर आपके स्वागत का प्रबन्ध नहीं किया जा सका। कुछ देर प्रतीक्षा करके आप अपना सामान वेटिंग रूम में छोड़कर पैदल ही शहर की ओर चल दिये। परन्तु किसके पास जायं, इसका कुछ निश्चय न कर सके। आप अपने एक पुराने मुलाकाती श्री गोकुलजी वर्मा के यहां चाय पीने जा पहुंचे। फिर पैदल ही स्टेशन की ओर वापस चल दिये। इस अरसे में हम लोगों को स्टेशन से लाने के लिये रवाना हो गये। जैसे ही उनका तांगा स्टेशन रोड पर पहुंचा तो उन्होंने देखा कि उनके अतिथि झूमते-झूमते उसी सड़क पर पैदल ही मार्च करते जा रहे हैं। आपके समीप पहुंचकर आपसे तांगे में बैठकर वापस चलने का अनुरोध किया, तो आपने बतलाया कि आपका सामान स्टेशन पर

ही पड़ा है। उस समय आपकी सरलता, निरभिमानतता और कष्ट सहिष्णुता आदि सद्गुणों पर कार्यकर्त्ता मुग्ध हो गये।

विलक्षण स्मरणशक्ति

आपके अन्तिम दिनों की भरतपुर से सम्बन्धित एक और घटना का उल्लेख करना उचित होगा। दिसम्बर सन् ६१ में जब आपने आम चुनावों में कुछ कांग्रेसियों का विरोध करने का अभियान आरम्भ किया तो आपने प्राय: सभी जिलों में जाकर अपने उद्देश्य का प्रचार करने का कार्यक्रम बनाया। आप सर्वप्रथम भरतपुर ही पधारे। उस समय तक हम पुराने कार्यकर्त्ता कांग्रेस छोड़ चुके थे। अत: उनकी सभा आदि की सारी व्यवस्था हमारे ही द्वारा की गई थी। उस अवसर पर आपको स्थानीय खादी भण्डार की ओर से चाय-पान का आयोजन किया गया था। व्यापारियों ने अपने अभाव अभियोग भी आपके समक्ष रखे थे। यहां से रवाना होते-होते रात्रि हो गई थी और कुछ वर्षा भी होने लगी थी। आपको शीघ्र ही वापस लौटना था। परन्तु जीप में बैठते ही आपने एकदम कहा कि आज अमुक तारीख है। आज तो श्री गोकुल जी वर्मा की वर्षगांठ होगी। हमको पहले उनको बधाई देने जाना चाहिए। हम लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतने कार्य व्यस्त रहते हुए और इतने दूर से आकर भी आप उस दिन को कैसे याद रख सके। जब हम वर्मा जी के यहां पहुंचे, तो उन्होंने बतलाया कि उस दिन उनकी ८०वीं वर्षगांठ है। उनको यह आशा भी नहीं थी कि उनकी वर्षगांठ पर कोई बाहर का बड़ा आदमी उनको बधाई देने आयेगा। अत: व्यास जी को देखते ही आप गद्गद हो गये तथा अत्यन्त कृतज्ञतापूर्वक आपकी आत्मीयता के व्यवहार और विलक्षण स्मरण शक्ति पर चकित रह गये।

दूध के अभाव में चाय

व्यास जी अखिल भारतीय लोक-परिषद् के प्रधानमंत्री रहते हुए, राजपूताना प्रान्तीय शाखा की प्रबन्धक समिति के भी प्रमुख पदाधिकारी थे। मैं भी उसका एक सदस्य था। समिति की बैठकें प्रतिवर्ष प्राय: दो-तीन बार किसी-न-किसी रियासत की राजधानी में हुआ करती थीं। उन अवसरों पर आपके सान्निध्य में रहने का सौभाग्य मिलता रहता था। उन बैठकों के सिलसिले में भी आपसे संबंधित एक-दो संस्मरणों का उल्लेख करना आवश्यक समझता हूं।

उन दिनों मैं आदतन चाय नहीं पीता था, जब कि व्यास जी थे पूरे पियक्कड़। अत: जब कभी स्वागत सत्कार के समय चाय लाई जाती और मैं उसको लेने में असमर्थता प्रकट करता तो आप बड़े विनोदपूर्ण शब्दों में कहते, "चतुर्वेदी तो दूध के अभाव में ही चाय पीते हैं।"

बेगार व शिकारी नृत्य

सन् ४५-४६ में बीकानेर राज्य की जनता के नागरिक तथा राजनीतिक

अधिकारों पर कठोर कुठाराघात हो रहा था। वहां न सार्वजनिक सभा हो सकती थी और न जलूस ही निकाल सकते थे। समाचार-पत्रों के पढ़ने पर भी कड़ा प्रबंध था। कार्यकर्त्ताओं का दमन हो रहा था। जनता अत्यन्त भयभीत और आंतकित थी। इस स्थिति में प्रान्तीय समिति ने वहां अपनी बैठक रखकर जनता का मनोबल बढ़ाने तथा उसको उत्साहित करने का निश्चय किया। रेलवे स्टेशन के समीप ही सदस्यगण बैठ गये थे। उन्होंने निश्चय किया कि पाबन्दी को तोड़कर जलूस निकाला जाये और सभा की जाये। यदि इसके परिणामस्वरूप गिरफ्तारियां होती हैं तो उनके लिये भी तैयार ही रहा जाय। इस निश्चय की सूचना एक पत्र द्वारा तत्कालीन दीवान सरदार पणिक्कर को दे दी गई। दोपहर बाद जलूस राष्ट्रीय नारे लगाता शहर की ओर बढ़ा। गिरफ्तारी के लिये पुलिस भेजने के स्थान पर दीवान साहब ने एक हरकारे के साथ हमारे पत्र का उत्तर भेजते हुए हमको सूचित किया कि शान्तिपूर्ण ढंग से जलूस निकाल सकते हैं। परन्तु खुले आम सार्वजनिक सभा नहीं कर सकते। चहारदीवारी के अन्दर अनौपचारिक रूप से हमारा जलूस जोर-शोर से आगे बढ़ा। काफी लोग उसमें सम्मिलित हुए। अन्त में एक नौहरे के अहाते में वह जलूस सभा में परिवर्तित हो गया और उसमें प्रश्नोत्तर के रूप में स्थानीय अभाव अभियोगों पर प्रकाश डाला गया। इससे जनता का भय और आतंक दूर होकर उसमें उत्साह और जीवन का संचार हो गया। प्रान्तीय समिति की यह अपूर्व सफलता थी, जिसके उपलक्ष्य में उत्सव मनाने का निश्चय किया गया। उसका स्वरूप क्या हो, इस पर विचार होने लगा। सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि उसी रात्रि को व्यास भी अपने नृत्यों का प्रदर्शन करें।

मस्त स्वभाव के व्यास जी को इस प्रस्ताव के स्वीकार करने में देर न लगी। तत्काल ही वहां वाद्य आदि की व्यवस्था हो गई और हारमोनियम तथा तबले पर व्यास जी का नृत्य आरम्भ हुआ। उस समय की वेश-भूषा भी दर्शनीय थी। धोती ऊंची उठाये नंग-धड़ंगे शरीर, पैरों में घुंघरू तथा सिर पर तौलिया बांधे जिस समय आपने 'बेगार' तथा 'शिकारी' नृत्यों का प्रदर्शन किया। आपकी मुख मुद्रा तथा भावभंगी उनके सर्वथा अनुकूल थी। लगभग एक-डेढ़ घण्टा आप सभी उपस्थित जनों का इस प्रकार मनोरंजन करते रहे। वह प्रदर्शन आपकी जिन्दादिली तथा विनोदी स्वभाव का सर्वोत्तम परिचायक था। उसको कभी भूला नहीं जा सकता।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व के समान ही उसके बाद भी कितनी ही हैसियतों में आपका सन्निकट सहयोगी बनने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। उदाहरण के तौर पर आप जब जुलाई सन् १९४९ से लेकर अप्रैल सन् ५१ तक राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे तो मैं उसका प्रधान मंत्री था। तदुपरान्त आपके नेतृत्व में बने मंत्रिमण्डल का भी सदस्य रहा। इसी प्रकार स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास

सम्बन्धी जो समिति बनी, उसके आप अध्यक्ष थे, मैं मंत्री था। १९६३ के जनवरी मास में बीकानेर में राजस्थान राजनीतिक सर्वेक्षण संगठन समिति का गठन होने पर आपके सहित जो पंचसदस्यीय समिति बनी थी, उसका मैं संयोजक था। अतः इन सभी स्थितियों में आपकी विशेषताएं और कमजोरियों का भी पूरा-पूरा अनुभव करने का अनुपम अवसर मुझे प्राप्त हुआ था। विस्तार रूप से उनका विवरण यहां नहीं दिया जा सकता।

७

व्यास जी और अलवर

मास्टर भोलानाथ जी, महावीर गली, अलवर (राजस्थान)

व्यास जी का नाम हम लोगों ने विद्यार्थी जीवन से ही सुन रखा था। हमारे बुजुर्ग साथी और पुराने राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता गुरु ब्रजनारायण जी आचार्य ने उनके परिश्रमी व लगनशील व्यक्तित्व का निकट से परिचय बम्बई में तब दिया था, जब वे जमीन पर सोकर आधे भूखे रहकर दैनिक 'अखंड भारत' का संपादन करते और देशी राज्यों के अभाव अभियोगों का प्रकाशन निर्भयतापूर्वक करते थे। साथियों में बैठकर जब गुरु जी व्यास जी की चर्चा करते, तब हमें बड़ा आनन्द मिलता था, और इच्छा होती थी कि उनके नेतृत्व में राजपूताने के देशी राज्यों में उसी मस्ती से जन-सेवा का कार्य करें।

◇ ◇ ◇

मेरी यह अभिलाषा पूरी हुई और सन् १९३८ से उनके नेतृत्व में देशी राज्यों के निरंकुश शासकों के विरुद्ध आवाज़ उठाने की प्रतिज्ञा की। यह वह समय था जब कि हरिपुरा कांग्रेस के एक प्रस्ताव के अनुसार देशी राज्यों की जनता का कांग्रेस ने आह्वान किया था कि वह अपने-अपने राज्यों में स्वतन्त्र संगठन बनाकर उत्तर-दायी शासन के लिये काम करे, और उसकी प्राप्ति के लिये त्याग और बलिदान के लिये तैयार रहे। कांग्रेस का प्रभावशाली संगठन उन्हें केवल नैतिक समर्थन देगा और उनके आन्दोलनों में सक्रिय भाग नहीं लेगा। कांग्रेस के इस प्रस्ताव की बड़ी आलोचना हुई। इसे कांग्रेस की कमजोरी भी माना गया। इस प्रस्ताव ने ही देशी राज्यों में नये-नये संगठन तथा नये-नये कार्यकर्त्ता पैदा किये और एक जादू दिखाया। प्रायः सभी देशी राज्यों में राजनीतिक संगठन विभिन्न नामों से खड़े हो गये। ये संगठन कहीं पर 'प्रजापरिषद्, प्रजामण्डल, लोकपरिषद्' और कहीं पर 'सार्वजनिक

सभा' कहलाये। कश्मीर में तो इस प्रकार के संगठन का नाम 'नेशनल कांफ्रेन्स' रखा गया, जो आज भी उसी नाम से पुकारा जाता है। परन्तु ये संगठन खड़े कैसे हुए, इसके पीछे व्यास जी सरीखे कर्मठ नेता का व्यक्तित्व था। व्यास जी ने कांग्रेस के इस प्रस्ताव का विरोध हरिपुरा में अखिल भारतीय कांग्रेस के प्रतिनिधि सदस्य के रूप में किया था। परन्तु प्रस्ताव पास हो जाने के बाद, उन्होंने देशी राज्यों की प्रजा को झकझोर दिया और जगह-जगह उपर्युक्त नामों के संगठन खड़े हो गये। अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् के प्रधानमन्त्री का पद स्वयं उन्होंने संभाला। उसके सभापति पद के लिये पण्डित जवाहरलाल जी नेहरू को तैयार किया और कांग्रेस के समानान्तर देशी राज्यों का पूरा प्रभावशाली संगठन खड़ा कर दिया। लुधियाना में परिषद् का खुला अधिवेशन पण्डित जवाहरलाल जी की अध्यक्षता में हुआ, जिस में देशी राज्यों के शासन व्यवस्था के सम्बन्ध में बड़े ही महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुए। यही प्रस्ताव स्वतन्त्रता प्राप्ति तक देशी राज्यों के के संगठनों के लिये मार्ग दर्शक बने रहे।

◇ ◇ ◇

अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् के इस अधिवेशन में अलवर राज्य के प्रतिनिधि के रूप में मैं भी सम्मिलित हुआ था। उस समय व्यास जी के अखिल भारतीय नेतृत्व के दर्शन हमें हुए। राजपूताना राज्यों के नेता के रूप में तो हम उनका स्वागत और अभिनन्दन अलवर में अगस्त, १६३८ से ही करते आ रहे थे। उस समय व्यास जी जोधपुर राज्य से निर्वासित थे और ब्यावर में रहकर देशी राज्यों का संगठन कर रहे थे। 'आगीवाण' नामक पत्र ब्यावर से प्रकाशित करते थे। उसमें अलवर के दमन चक्र की कहानियां भी प्रकाशित हुआ करती थीं। अलवर राज्य में अलवर राज्य प्रजामण्डल ने आम सभाएं करके विरोध किया। भाषण कर्त्ताओं को राजद्रोहात्मक सभाओं के मातहत गिरफ्तार किया गया और खूनियों को पहनाई जाने वाली डंडा-बेड़ी डालकर जेल में बन्द कर दिया। व्यास जी इसकी जांच करने स्वयं अलवर आये। उन्हें स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिया गया और गुड़गांवा ले जाकर छोड़ दिया गया। इस कांड की निन्दा का प्रस्ताव हमने लुधियाना अधिवेशन में रखा और अलवर राज्य शासन को जालिमाना वर्ताव करने में अग्रणी घोषित किया गया। इस प्रकार अलवर के कार्यकर्त्ताओं का व्यास जी के साथ निकट सम्पर्क हो गया। अलवर के राजनीतिक पीड़ित कार्यकर्त्ताओं की सहायता के लिये उन्होंने एक दफ्तर सेठ आनन्द राज जी सुराणा के दिल्ली के इंडो यूरोपा मशीनरी कम्पनी के दफ्तर में खोला। तब सेठ आनन्दराज जी का यह दफ्तर एक प्रकार से देशी राज्य लोकपरिषद् का ही दफ्तर था। वहां ही देशी राज्यों के पीड़ित कार्य-कर्त्ता ठहरा करते थे।

व्यास जी ने देशी राज्यों के अभाव अभियोग के प्रकाशन के लिये बहुत-से संवाददाता तैयार किये। दैनिक 'हिन्दुस्तान' के उस समय के सम्पादक भाई सत्य-देव जी विद्याजंकार से विशेष अनुरोध करके संवाददाता नियुक्त करवाये। उस समय 'हिन्दुस्तान' की आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं थी। इसलिये कार्यकर्त्ताओं ने उसको भी सेवा-कार्य समझकर बड़ी लगन व तत्परता से अवैतनिक रूप में 'हिन्दुस्तान' संवाददाता का कार्य किया। इसी प्रकार अन्य अनेक पत्रों के साथ भी कार्यकर्त्ताओं को लेखक व संवाददाता के रूप में सम्बन्धित किया। सन् ४२ में व्यास जी ने कार्यकर्त्ताओं को आर्थिक सहायता दिलाने के लिये देशी राज्यों के प्रसिद्ध नेता श्री अमृतलाल सेठ से अनुरोध करके दैनिक 'जन्म भूमि' का संवादा-दाता नियुक्त करवाया। ऐसा करने में संवाददाता की अपेक्षा देशी राज्यों के लिये कार्यकर्त्ता तैयार करने का उद्देश्य मुख्य था।

◇ ◇ ◇

१६४२ में जोधपुर में उत्तरदायी शासन के लिये आन्दोलन शुरू होने पर व्यास जी अपने सब साथियों के साथ जब गिरफ्तार किये गये, तब उनके आन्दो-लन के लिये ब्यावर में दफ्तर खोला गया। मैंने वहां जाकर उसका काम संभाला। यह सर्वविदित है कि महात्मा गांधी की प्रेरणा पर बाबू श्रीप्रकाश जी जोधपुर स्थिति की जांच करने के लिये नियुक्त किये गये थे। मैं उनसे मारवाड़ स्टेशन पर जाकर मिला और उनको सारी स्थिति की जानकारी दी। तब बाबू श्रीप्रकाश जी व्यास जी से कुछ अधिक परिचित नहीं थे। उन्होंने हमको बताया था कि व्यास जी के सम्बन्ध में महात्मा जी की सम्मति कितनी ऊंची थी। उन्होंने कहा था कि वे तो जोधपुर के मुख्यमन्त्री होने चाहिएं और उनको राज्य ने जेल में बन्द कर रखा है। गांधी जी की वह भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई।

◇ ◇ ◇

सन् १६४५ के प्रारम्भ में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद् का वार्षिक अधिवेशन पं० जवाहरलाल जी नेहरू के सभापतित्व में उदयपुर में हुआ। इस अधिवेशन को सफल बनाने के लिये वह एक छोटी-सी कोठरी में महीना भर रहे और भोजन बनाने के लिये अपनी श्रीमती गौरेजी देवी 'भौजी' को भी बुला लिया। जमीन पर सोना, दिन-रात पत्र-व्यवहार करना और अधिवेशन की तैया-रियों को देखना उनका काम था। इसी परिश्रम का फल था कि राजस्थान के एक देशी राज्य में लोक-परिषद् का अधिवेशन बड़ी सफलतापूर्वक हुआ।

◇ ◇ ◇

विरोधी भी उनके व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नहीं रहते थे। मुझे याद है कि स्वयं जब श्री मोहनलाल जी सुखाड़िया ने उनके विरुद्ध सन् १६५४ में विधान सभा कांग्रेस पार्टी के नेता का चुनाव लड़ा और वे विजयी हुए, तो उन्होंने

समस्त सदस्यों के सामने आपको झुक कर नमस्कार किया। यह उनके व्यक्तित्व की विशालता का प्रभाव था। उनके स्वयं के दिल में भी ऐसी ही विशालता थी।

◇ ◇ ◇

उनके मन्त्रिमण्डल के हम सभी सदस्य उनको पिता तुल्य मानते थे। इसी प्रकार उनका आदर करते थे और वे भी सभी मन्त्रियों के बच्चों को उनके घरों पर जाकर संभाला करते थे।

उन दिनों की एक मधुर स्मृति है। मेरी छोटी बच्ची जो उस समय पांच वर्ष की थी। दीवाली की रात्रि को उसके ऐसे ख्याल बने कि मैं गांधी जी से मिलूंगी, वे मरे नहीं जिन्दा हैं। व्यास जी के यहां हैं। रात्रि भर यही बात उस बच्ची की रही। दीवाली की सुबह व्यास जी के घर मैं अपनी लड़की उषा को ले गया। उसे व्यास जी ने सदैव की भांति प्यार किया। गोदी में लिया और मिठाई दी। परन्तु बच्ची ने कोई चीज मंजूर नहीं की। उनके ड्राइंग रूम में गांधी जी की एक प्लास्टर की बेस्ट मूर्ति रखी थी। उसे उसने लेना चाहा। व्यास जी ने उसे लड़की को दे दिया। वह उसे पैदल चपरासी के सिर पर रखवाकर मेरे बंगले पर जो उनके पास ही था ले आई। वह मूर्ति आज भी हमारे घर की शोभा है और बच्चों के लिये व्यास जी का स्मृति चिह्न है।

◇ ◇ ◇

मन्त्रिमंडल से हटने पर व्यास जी एक बार जब घर पर आये तो मेरी श्रीमती पुष्पा देवी ने व्यास जी से कहा कि हमने आपके राज्य में जोधपुर भी नहीं देखा। तो उन्होंने स्वयं पुष्पा देवी से कहा कि मैं अपनी बेटी को जोधपुर दिखाऊंगा। व्यास जी के स्वर्गवास के रेडियो पर समाचार सुनकर सब घरवालों ने इसी प्रकार की उनकी मधुर स्मृतियां याद करके शोक मनाया।

◇ ◇ ◇

वे बड़े ही विनोदी स्वभाव के थे। एक बार मुझसे बोले कि खेती का क्या हाल है? मैंने कहा वर्षा की परेशानी है, तो वे बोले इस खेती की नहीं दिल्ली वाली खेती की बात पूछ रहा हूं। उनका आशय था कि मेरा बड़ा लड़का दिल्ली में पूसा कालेज में एम०एस-सी० (एजी०) में पढ़ रहा था, वह कैसा चल रहा है।

बहुत दिनों की बात है। लगभग सन् १६४० की होगी। उनको पीलिये की शिकायत थी। बड़े कमज़ोर दिखाई दिये तो हमने पूछा बड़े दुबले दिखाई पड़ते हो तो बोले हरिभाऊ बन रहा हूं।

जोधपुर के मुकदमे के कारण लोगों में यह धारणा घर कर गई है कि व्यास जी के साथ सरदार पटेल का तीव्र मतभेद और विरोध था। परन्तु वास्तविकता ऐसी नहीं थी। १६४६-४७ में विवाद क्षेत्र में जो उपद्रव हुए और जिनके कारण कुछ विद्रोह की-सी स्थिति पैदा हो गई थी, उसकी विशेष जांच के लिये गृह-मन्त्री और

रियासती विभाग के मन्त्री के नाते सरदार ने व्यास जी को नियुक्त किया था। यह उल्लेखनीय है कि महात्मा गांधी और और सन्त विनोवा को इस क्षेत्र की स्थिति पर विशेष ध्यान देने को वाध्य होना पड़ा था। व्यास जी ने उस क्षेत्र का दौरा करके जो रिपोर्ट तैयार की थी, दुर्भाग्यवश उसकी कोई प्रतिलिपि उपलब्ध नहीं है।

◇ ◇ ◇

व्यास जी का जब ख्याल करता हूं, तो सामने वह विशाल आकृति आ उपस्थित होती है, जो सदा मस्त हाथी की तरह चलती-फिरती हम लोग देखा करते थे। व्यास जी को हमने विभिन्न रूपों में देखा। वह एक महान् राजनीतिज्ञ नेता थे, परन्तु वह राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं के घरों को संभालने वाले उनके बुजुर्ग भी थे। यह गुण व्यास जी की अपनी ही विशेषता थी। यशस्वी पत्रकार, मर्मज्ञ साहित्यकार और हिन्दी राजस्थानी के प्रतिभाशाली सुकवि के अतिरिक्त कुशल संगीतज्ञ और नृत्यकार भी थे। स्वाभिमान उनमें कूट-कूटकर भरा था। सच्चे साथी थे। फक्कड़पन में उनका विश्वास था। अर्थ का उनको सदैव अभाव रहता था। परन्तु मेहमानवाजी में एक ही थे। दिन में दो-चार वार चाय पीते थे, परन्तु दस-पांच साथियों के साथ। खाना भी दो-चार कार्थकर्त्ताओं के साथ ही खाते थे। रोटी वनाने वाला न होने पर भोजन सब मेहमानों के लिये होटल या ढावों से मंगा लिया करते थे और साग-सब्जी तो कभी-कभी स्वयं ही वना लिया करते थे। वाजार में घूमने जाते तो अचार के डिब्बे ले आया करते। छोटे-मोटे ढावे वाले दिल्ली में उन्हें खूब जानते थे और उन ढावों पर पहुंचने पर वे ढावे वाले व्यास जी तथा उनके साथियों को भोजन कराने के लिये दौड़ पड़ते थे। ढावे वालों से वे घर-वार के समाचार भी पूछते रहते थे। इस प्रकार उनसे भी आत्मीयता का सम्वन्ध जोड़ लेते थे। यह वात हम सबको मालूम थी कि व्यास जी पार्लियामेंट के सदस्य हैं। जोधपुर और राजस्थान के प्रधानमंत्री व मुख्यमन्त्री रह चुके हैं। देशी राज्यों के महान् नेताओं में हैं। परन्तु दिल्ली से राजस्थान को जाते हुए छोटे-छोटे ढावों पर रोटी व दाल सभी साथियों के साथ प्रेमपूर्वक खाते थे। पंजाव के जिला गुड़गांव में फिरोजपुर अड्डे की झोपड़ियों में ढावा रखने वाले व्यास जी के मनमोहक व्यक्तित्व को अब भी वड़ी श्रद्धा से याद करते हैं।

◇ ◇ ◇

मुख्यमन्त्री पद से हटते ही विधान सभा में अन्तिम वेंच पर वैठकर भाषण करने में आनन्द लेते हुए भी हमने उन्हें देखा। मंत्रिमंडल से हटने के वाद निरन्तर उनके प्रयास रहे कि कांग्रेस का शासन जनता की दृष्टि में प्रतिष्ठित हो। व्यासजी इस संसार से विदा हो गये और अपने साथ में राजस्थान कांग्रेस के नेतृत्व की शान को सदा के लिये ले गये।

व्यास जी भी अन्तिम दिनों में महात्मा जी की तरह कहने लगे थे, भाई अब हमें जाना चाहिए। देश को अब हमारी आवश्यकता नहीं है। कौन जानता था कि कुछ हफ्तों में ही उनके यह वाक्य सही हो जायेंगे ?

व्यास जी हमारे देश को स्वतन्त्रता दिलाने वाले अग्रणी नेता के रूप में इतिहास में सदा अमर रहेंगे। उनके निधन से राजस्थान का बुजुर्ग नेतृत्व उठ गया।

८

व्यास जी और मेवाड़

भूरेलाल बया, नवनिर्माण संघ, उदयपुर (राजस्थान)

१९३५ में बम्बई से हिन्दी में मासिक 'सन्देश' के प्रकाशन का मैंने निश्चय किया। उन दिनों मैंने सुना कि व्यास जी दैनिक 'अखंड भारत' को प्रकाशित करने जा रहे हैं तथा एक चलचित्र भी उन दिनों तैयार करने की उनकी योजना है। जब वे उसके लिये १९३५ में बम्बई आये, मुझे पहली बार यह मालूम हुआ कि बम्बई में उनके समर्थकों तथा प्रशंसकों की कितनी बड़ी संख्या है। देशी राज्य लोकपरिषद् के कार्य के लिये व्यास जी अधिकतर बम्बई आते रहते थे और उनके कार्य के प्रति मेरी रुचि भी धीरे-धीरे बढ़ती गई।

यरवदा जेल से रिहा होने के बाद पुलिस ने मुझे उदयपुर लाकर छोड़ दिया। कुछ दिन बाद ब्यावर से व्यास जी का सन्देश मिला कि वहां राजस्थान के देशी राज्यों की जनता के प्रतिनिधियों का एक राजनीतिक सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। मुझे मेवाड़ के साथियों ने अपना प्रतिनिधि चुनकर वहां जाने का अवसर प्रदान किया। वहां मैं पहली बार व्यास जी के निकट सम्पर्क में आया। उनकी साधना, धुन, लगन और तत्परता की मेरे हृदय पर बड़ी गहरी छाप पड़ी। उनकी सरलता, सहृदयता, आत्मीयता तथा जिन्दादिली से भी मैं विशेष रूप में प्रभावित हुआ।

ब्यावर में ही मुझे देश-भक्त जमनालाल जी बजाज का सन्देश मिला कि मुझे पूज्य बापू जी के आदेश के अनुसार वर्धा चले आना चाहिए। वर्धा में रहते हुए व्यास जी से सम्पर्क छूट गया और उनके निकट आने का मुझे अवसर न मिल सका। १९३७ में हरिपुरा कांग्रेस में यह निश्चय किया गया कि देशी राज्यों में जन-आन्दोलन को संगठित किया जाय। उसके अनुसार राजस्थान के देशी राज्यों

में जहां-तहां प्रजामण्डल तथा लोकपरिषद् आदि पनपनी शुरू हो गईं। मेवाड़ में भी प्रजामण्डल की स्थापना का निश्चय किया गया और मैं उदयपुर चला आया। मेवाड़ प्रजामण्डल के कार्य में सक्रिय भाग लेते हुए अन्य राज्यों के जन-आन्दोलनों में मैंने दिलचस्पी लेनी शुरू की। इस सिलसिले में व्यास जी से विचार-विमर्श करने के लिये बहुधा मिलना-जुलना आवश्यक हो गया। कठोर-से-कठोर और गम्भीर-से-गम्भीर प्रसंग उपस्थित होने पर भी व्यास जी के दिल या दिमाग पर कभी कोई भार दीख नहीं पड़ता था। वे अपने सहज विनोदप्रिय स्वभाव के कारण अपने सभी साथियों को सदा प्रसन्न रखने का प्रयत्न किया करते थे तथा आमोद-प्रमोद-विनोद के वातावरण में अपना सारा कार्य सम्पन्न किया करते थे। अत्यन्त गम्भीर परिस्थिति में भी उनका विनोद, यहां तक कि हास्य नृत्य भी बराबर जारी रहता। ऐसे कई प्रसंग, विशेषत: बीकानेर में राजस्थान प्रदेश कांग्रेस की कार्य-समिति की बैठक के समय का मैं भूल नहीं सकता। वहां उन्होंने जो नृत्य दिखाया था, उस पर उनके हम सभी साथी मुग्ध हो गये थे। अत्यन्त विकट और गम्भीर वातावरण को इस प्रकार हल्का बनाकर वे साथियों का मनोरंजन करने में कभी चूकते न थे। अपने को हास्य का पात्र बनाने में उन्हें कभी संकोच व लज्जा अनुभव न होती थी।

१९४६ में अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् का ऐतिहासिक अधि-वेशन उदयपुर में किया गया था। उसकी व्यवस्था के लिये व्यास जी उसमें पहले ही उदयपुर पधार गये थे। उस समय अधिवेशन की अधिकतर जिम्मेवारी मुझ पर थी। मैंने उनके ठहरने का प्रबन्ध अपने पुराने घर के समीप अक्षय आश्रम में किया था। दूसरे कार्यों में अत्यधिक व्यस्त रहने के कारण मैंने अपने छोटे पुत्र स्व० वीरेन्द्र भारत को उनके पास कार्य करने के लिये छोड़ दिया था। उसकी तीक्ष्ण बुद्धि, प्रतिभा तथा कार्यकुशलता पर वे इतने प्रसन्न थे कि प्राय: उसको वे यह कहा करते थे कि तुमको बड़े होकर मेरे साथ निजी सचिव के रूप में रहना होगा। वह भी अनायास अपनी स्वीकृति दे दिया करता था। राजस्थान के मुख्यमंत्री की हैसियत से जब वे उदयपुर पधारे तब चि० वीरेन्द्र कालेज में प्रविष्ट हुआ था, उससे मिलने पर वे अपना पुराना वायदा दुहराना नहीं भूले। यह थी उनकी आत्मीयता, जो हर किसी को सहज सुलभ थी। परन्तु वह होनहार बालक कुछ ही समय बाद सर्पदंश के कारण हम सबको छोड़कर चल बसा और हमें अपना वायदा पूरा करने का अवसर न मिल सका। उनको जब हमारी इस विपत्ति का पता चला, तब उन्होंने मार्मिक सन्देश भेजकर हमारी व्यथा, वेदना को हल्का करने का प्रयत्न किया। यह था उनका हमारे साथ पारिवारिक सम्बन्ध, जो निरन्तर घनिष्ट ही होता गया।

राजस्थान में संघ का निर्माण ३० मार्च, १९४९ को जिन परिस्थितियों में

हुआ, उनको शुभ नहीं कहा जा सकता। सबसे बड़े अपशकुन तो उद्घाटन के लिये आते हुए सरदार पटेल के वायुयान का दुर्घटनाग्रस्त होना था, जिसके कारण उसे शाहपुरा में, जयपुर के समीप उतरने को बाध्य होना पड़ा। दूसरा अपशकुन यह हुआ कि उद्घाटन के लिये पुराने राजमहल में जो व्यवस्था की गई थी उससे असन्तुष्ट होकर साथी उठकर चले आये, उनमें मैं भी शामिल था। लेकिन श्री हीरालाल जी शास्त्री के नेतृत्व में मंत्रिमंडल के गठन के प्रश्न पर जो मतभेद पैदा हुआ, वह और भी अधिक बड़ा अपशकुन सिद्ध हुआ। शास्त्री जी व्यास जी को मंत्रिमंडल में गृहमंत्री के रूप में सम्मिलित करना चाहते थे। परन्तु जोधपुर के साथियों का अनुरोध यह था कि जब तक श्री मथुरादास माथुर और श्री द्वारकादास पुरोहित को भी मंत्रिमंडल में न लिया जाय, तब तक व्यास जी को गृहमंत्री का पद स्वीकार नहीं करना चाहिए। व्यास जी ने वैसा ही किया। इसी बीच मेवाड़ में कुछ ऐसी परिस्थिति पैदा हुई जो जोधपुर के मित्रों और व्यास जी को भी पसन्द न थी। शास्त्री जी ने मुझे और भाई श्री प्रेमनाथ माथुर को मंत्रिमंडल में शामिल होने का निमंत्रण दिया। मैंने अपना निर्णय मेवाड़ प्रजामंडल के साथियों पर छोड़ दिया। उन्होंने ६ अप्रैल की मध्यरात्रि को यह निर्णय किया कि मुझे निमंत्रण स्वीकार कर लेना चाहिए। व्यास जी ने जोधपुर से टेलीफोन पर यह परामर्श दिया कि मेवाड़ के मित्रों को अपना निर्णय तब तक स्थगित रखना चाहिए, जब तक जोधपुर की समस्या हल न हो जाय। मेवाड़ के मित्र इस परामर्श से सहमत न हुए। मैंने जयपुर पहुंचकर भी व्यास जी से टेलीफोन पर चर्चा करके उनकी सहमति प्राप्त करने का प्रयत्न किया, परन्तु उन्होंने स्वास्थ्य-सुधार के लिये कश्मीर जाने की बात कहकर अगली बातचीत का सिलसिला बन्द कर दिया। इसमें सन्देह नहीं कि मेरी दृष्टि में यह स्थिति उस आश्वासन के प्रतिकूल थी जो हम सबने मिलकर सरदार पटेल को दिया था। दिल्ली के उदयपुर हाउस में राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी की बैठक में श्री हीरालाल जी शास्त्री सर्वसम्मति से राजस्थान संघ के मुख्यमन्त्री के पद के लिये चुने गये। फिर रामबाग पैलेस में सरदार पटेल को यह आश्वासन दिया गया था कि हम सब एक हैं और मिलकर काम करेंगे। परन्तु कुछ ही समय बाद किशनगढ़ में प्रदेश कांग्रेस कमेटी की बैठक में मतभेद ने उग्ररूप धारण कर लिया। उस मतभेदपूर्ण परिस्थिति में भी व्यास जी जब कभी मिलते तब उनका स्वभावसिद्ध विनोद पहले के ही समान बना रहता और मेरे निजी सम्बन्ध में उन्होंने कभी कोई अन्तर नहीं आने दिया। यह थी उनकी महान् उदार सहृदयता, जिसमें उन्होंने कभी कोई कोताही नहीं आने दी।

उनके राजनीतिक मतभेद में जो उग्रता पैदा हुई, जिसके कारण अनेक उलट-फेर हुए और किसी भी मंत्रिमंडल का स्थिर रहना कठिन हो गया; उसकी यहां चर्चा करने की आवश्यकता नहीं। इतना ही लिखना पर्याप्त है कि व्यास जी ने अपने

दिल व दिमाग पर इस प्रतिकूल घटना-चक्र का कोई स्थायी प्रभाव नहीं होने दिया और जब मुख्यमंत्री पद से हटने के बाद उनके पुराने विश्वस्त साथी भी एक-एक करके उनको छोड़ते गये, तब भी उनके माथे पर विषाद की कोई रेखा दीख नहीं पड़ी। परन्तु मित्र-द्रोह और साथियों के विश्वासघात से पैदा होने वाली विषमता में विचलित न होना असाधारण साहस तथा अपार धैर्य का ही सूचक होता है। ऐसे साहस और धैर्य के धनी होते हुए भी उनके हृदय में पैदा हुई व्यथा व वेदना को मैंने अनेक बार बातचीत में अनुभव किया। मेरी तो मान्यता यह है कि वह व्यथा और वेदना ही उनके अप्रत्याशित व आकस्मिक निधन का कारण बन गई। चाहे जो हो, इस घोर निराशा में भी आशा की किरण दीख पड़ी कि उनका झुकाव रचनात्मक प्रवृत्तियों की ओर अधिक तेज़ी से होने लगा, वे राज्य खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के मनोनीत सदस्य थे और जयपुर में गठित संस्था संघ के भी उत्साही सदस्य रहे। वे जब भी कभी इन संस्थाओं के अधिवेशनों में सम्मिलित होते तब गूढ़-से-गूढ़ समस्या के उपस्थित होने पर अपने विनोदप्रिय स्वभाव का परिचय देते हुए उसका हल कुछ इस ढंग से उपस्थित करते कि सदस्य हँसी के वातावरण में उसको स्वीकार करके उनकी सूझ-बूझ की दाद दिये बिना न रहते। एक बार का प्रसंग है कि कुछ अधिक सामान न बचा और उपस्थित सदस्य कुछ कठिनाई-सी अनुभव करने लगे, तब व्यास जी ने अपने स्वभावसिद्ध विनोद में यह कहा कि :

"दो ईस नहीं है
दो उब नहीं है।
लीन नहीं हैं पाया,
विच लोझावा झोल नहीं है,
माचो ले ले माया।"

उनके इस विनोद पर हँसी का फुहारा छूट पड़ा और सारी कठिनाई बात ही बात में दूर हो गई।

तीसरे आम चुनाव में और उसके बाद व्यास जी ने जो साहसपूर्ण कदम उठाया वह उनके आकस्मिक निधन के कारण बिना किसी स्पष्ट परिणाम के प्राय: अधूरा ही रह गया, फिर भी उनके साहस की प्राय: एकस्वर से प्रशंसा की गई है। उन्होंने कांग्रेस में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार, पक्षपात तथा धींगाधींगी के विरोध में जिस साहस, धीरता व वीरता से आवाज़ उठाई थी, वह सत्ता के मद के सम्मुख अपना यथेष्ट प्रभाव न दिखा सकी; फिर भी वह व्यर्थ नहीं गई।

चुनाव के पूर्व जयपुर आदि, उसके बाद बीकानेर में उनके नेतृत्व में राजस्थान के पुराने कांग्रेसियों के जो सम्मेलन हुए उनमें नई राजनीतिक संस्था के गठन के सम्बन्ध में काफी ऊहापोह हुआ, परन्तु व्यास जी और मैं इस मत के थे कि नये

राजनीतिक दल का गठन करना और उनको अनुशासनवद्ध रख सकना न तो सम्भव होगा और न लाभदायक। फिर भी पुराने कांग्रेस जनों को समम-समय पर मिलकर जनहित सम्बन्धी प्रश्नों द्वारा समस्याओं पर अपना निर्भीक मत प्रकट करते रहना चाहिए। हमने लोक राज्य परिषद का जो गठन किया है उसका अभिप्राय उसी प्रकार निर्भीक मत प्रकट करना मात्र है।

अब व्यास जी हमारे बीच नहीं रहे; किन्तु उनका साधनामय तपःपूत साहसपूर्ण जीवन हमारे सामने विद्यमान् है, जो इस भ्रष्टाचार पक्षपात तथा धींगाधींगी को दूर करने के लिये हमें सदैव प्रेरित करता रहेगा, जिसके लिये अधिकतर राजनीतिज्ञ ही जिम्मेवार हैं। इस सम्बन्ध में पुराने कांग्रेस जनों का दायित्व कुछ कम नहीं है। उस दायित्व के प्रति उनको सचेत व सावधान करने के लिये ही व्यास जी ने अकेले रहते हुए भी अपनी आवाज़ बुलन्द की थी। मुझे इस महत्त्वपूर्ण कार्य में उनका सहयोगी बनने का जो अवसर प्राप्त हुआ उसको मैं अपना सबसे बड़ा अहोभाग्य मानता हूं।

९
व्यास जी और सिरोही

श्री अचलमल जी मोदी, मोदी हाउस, सिरोही (राजस्थान)

भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास में जिन इने-गिने व्यक्तियों के नाम आदर से लिये जाते हैं, उनमें श्री जयनारायण जी व्यास का नाम भी शामिल है। प्रतिभाशाली कर्मठ राजनीतिज्ञ व्यास जी ने अपने जीवन को देश के लिये न्यौछावर किया। यह दुर्भाग्य है कि आज व्यास जी हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनका देश सेवा का आदर्श आज भी हमारे सामने है। उन्होंने आज के अनेक नेताओं की तरह समय का लाभ नहीं उठाया। अपनी ईमानदारी और कर्त्तव्यनिष्ठा पर स्थिर रहकर देश सेवा करते रहे। देश सेवा का उनका यह आदर्श हम सबको अपने कर्त्तव्यपालन की ओर प्रेरित करता है।

◇ ◇ ◇

वैसे तो मैं उनसे समय-समय पर मिलता रहा, परस्पर घण्टों चर्चा हुई और पत्रव्यवहार द्वारा भी अनेक विषयों पर उनसे विचार विमर्श होता रहा। उनके शान्त स्वभाव एवं अटल विश्वास की अमिट छाप मेरे हृदय पर अंकित है। सन् १९२९ की बात है, लोकमान्य श्री गुलाबचन्द जी ढड्ढा के साथ जावरा में श्री चांदमल जी ढड्ढा

से मिलने जाने का मौका आया। उस समय व्यास जी से मेरा पहला परिचय हुआ था। उसके बाद भी समय-समय पर मिलते रहे। सिरोही आदि के मामले में वे बहुत दिलचस्पी लिया करते थे। सन् १९३४ में महाराज श्री मानसिंह जी पर रोक लगाई गई। उस समय उन्होंने काफी दिलचस्पी ली। मैं जब इन्दौर में था और बम्बई से उन्होंने 'अखंड भारत' का प्रकाशन शुरू किया था, तब कुछ दिन उनके साथ रहने का भी अवसर मिला था। उनसे इस पर प्रायः चर्चा होती थी कि राजस्थान की जनता का उत्थान किस प्रकार किया जाय।

◇ ◇ ◇

सिरोही के आबू के मामले में लोह पुरुष सरदार पटेल का जिस तरह उन्होंने विरोध किया, उसके फलस्वरूप उनके कोपभाजन बने और जो यातनाएं उन्हे भोगनी पड़ीं, वे राजस्थान के और खास कर सिरोही के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेंगी। यही एक सिंह था जिसने सिरोही के विभाजन के लिये सरदार से लोहा लिया और आखिर भारत सरकार को सिरोही और आबू को राजस्थान में ही शामिल रखने को बाध्य होना पड़ा।

◇ ◇ ◇

वृहद राजस्थान के मुख्यमन्त्री के पद पर आसीन होते ही जब वे सिरोही आये तो स्वागत के लिये जनता उमड़ पड़ी। मैं भी ऐरनपुरा गया। उस समय व्यास जी मुझे गले लगाकर ऐसे मिले कि वह मिलन आज भी याद आता है। सादा जीवन, मधुर वाणी और शान्त स्वभाव उनके स्वभावसिद्ध गुण थे। वे जब भी मिलते तब प्रसन्न मुद्रा में ही मिलते।

◇ ◇ ◇

सन् १९५६ में जब व्यास जी राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष थे, तब उनसे ट्रस्ट एक्ट के सम्बन्ध में मिलने का अवसर मिला। ट्रस्ट एक्ट के सम्बन्ध में भारत के कोने-कोने से विरोध हो रहा था। पत्र और तार की उनके पास झड़ी लग रही थी। एक प्रतिनिधि मण्डल व्यास जी से मिलने गया। उस प्रतिनिधि मण्डल का सदस्य एक मन्त्री भी था। व्यास जी ने शांति से सारी दलीलों को सुना और आखिर में उन्होंने यह कहा कि कांग्रेस सिवाय तार व पत्रों को सरकार के पास भेजने के अलावा क्या करती है? अगर आप लोग चाहें तो स्वयं वे तार, पत्र ले जाकर मन्त्री जी को दे सकते हैं। मुझसे मजाक करते हुए उन्होंने कहा कि, आपकी वेशभूषा ऐसी है कि आप स्वयं मन्त्री जी के पास न जायें। आजकल के नेता राजाओं और अंग्रेज़ अफसरों को भी मात करते हैं। ठीक वही बात आज प्रत्यक्ष नज़र आ रही है। व्यास जी आखिरी दम तक भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष करते रहे। क्या अच्छा हो कि राजस्थान उनके सिद्धान्तों को अपनाकर भ्रष्टाचार का उन्मूलन करे। इसी प्रकारहम दिवंगत आत्मा के प्रति सर्वोत्तम श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।

प्रकरण ८

रचनात्मक प्रतिभा और सांकड़ा का अनोखा प्रयोग

१

रचनात्मक प्रतिभासम्पन्न व्यास जी

श्री रामेश्वर जी अग्रवाल, अध्यक्ष खादी ग्रामोद्योग संस्था संघ, गांधी नगर, जयपुर

राजस्थान की चहुमुंखी जन-जागृति में व्यास जी का स्थान सर्वाग्रणी रहा है। हर रियासत के आन्दोलन में उन्होंने सक्रिय भाग लिया और जहां वे नहीं पहुंच सके वहां ठोस सहानुभूति प्रकट करने में पीछे नहीं रहे। रियासती कार्यकर्त्ताओं के साथ उनके कुछ ऐसे घनिष्ट सम्बन्ध थे कि वे अपने को उनके ही घर का सदस्य सरीखा मानते और उनकी सार्वजनिक ही नहीं; अपितु व्यक्तिगत कठिनाइयों को दूर करने में भी तत्पर रहते थे। जहां कोई और नहीं पहुंच पाता, वहां वे सबसे पहले उपस्थित दीखते थे।

सन् १९३२ की बात है। जयपुर राज्य युवक सम्मेलन का आयोजन करने का निश्चय किया गया, तब राज्य में सभा सम्मेलन तथा संस्था संगठन आदि करने पर तरह-तरह की रोक लगी हुई थीं। उनका आयोजन तो क्या, उनकी कल्पना तक नहीं की जा सकती थी। तब जयपुर के युवकों को प्रोत्साहन देकर उनका पथ-प्रदर्शन व्यास जी ने ही किया था। उस समय उन्होंने जो दृढ़ता दिखाई, उसी के फलस्वरूप जयपुर राज्य में सार्वजनिक जीवन और जागृति के बीज बिखेरे। इसी तरह के कितने ही प्रसंग हैं, जबकि उन्होंने राजस्थान के विभिन्न राज्यों में जाकर वहां के कार्यकर्त्ताओं को प्रोत्साहन दिया, उनका पथ-प्रदर्शन किया, उनमें जागृति पैदा की, और उनकी कठिनाइयों को दूर कर, उनमें दृढ़ता का संचार किया।

वे केवल राजनीतिक संघर्ष करने वाले आन्दोलनकारी ही न थे; प्रत्युत रचनात्मक प्रवृत्तियों में प्रमुख रूप से सक्रिय भाग लिया करते थे। मेरी मान्यता तो यह

है कि वे स्वभावत: रचनात्मक कार्य करने वाले ही थे। १६२७-२८ तक वे मुख्यत: विविध प्रकार की रचनात्मक गतिविधियों में ही संलग्न रहे। समाज-सुधार, समाज-सेवा, शिक्षा-प्रसार, युवक-संगठन तथा आध्यात्मिक प्रगति आदि क्षेत्र में जो रचनात्मक कार्य उन्होंने अपने सार्वजनिक जीवन के शुरू के नौ-दस वर्षों में किये, उनको भुलाया नहीं जा सकता। राजनीतिक संघर्ष में तो वे इसलिये पड़े दीख पड़ते हैं कि उसके द्वारा वे रचनात्मक कार्य को ही प्रशस्त बनाना चाहते थे। लम्बे राजनीतिक संघर्ष के बाद जब जोधपुर राज्य में लोकप्रिय मन्त्रिमण्डल कायम हुआ और वे उसके प्रधानमन्त्री नियुक्त किये गये, तब उन्होंने थोड़े ही समय में अपनी रचनात्मक प्रतिभा का विस्मयजनक परिचय दिया और उन चहुमुंखी सुधारों का सूत्रपात किया, जिनसे अधिक, उनके बाद राजस्थान संघ का शासन भी कर नहीं सका। राजस्थान संघ के मुख्यमन्त्री के पद पर आसीन होने पर उनके द्वारा गठित खादी बोर्ड उनकी रचनात्मक प्रतिभा का ज्वलन्त प्रमाण है। सांकड़ा में जिस रचनात्मक यज्ञ का उन्होंने अनुष्ठान किया, वह भी उनकी स्वभावसिद्ध रचनात्मक प्रवृत्ति का ही प्रबल साक्षी था। इस दृष्टि से उनकी ज्ञान मन्दिर की योजना विशेष महत्त्व-पूर्ण है।

मारवाड़ खादी संघ का गठन उनकी उसे क्षेत्र के लिये बहुत बड़ी देन है, जिनको प्राय: प्रति तीसरे-चौथे वर्ष अनावृष्टि के कारण भयानक दुर्भिक्ष का शिकार होना पड़ता है। वे ही उसके पहले अध्यक्ष थे। मारवाड़ के अनेक जिलों में उसकी ओर से खादी का काम शुरू किया गया और आस-पास के क्षेत्रों पर भी उसकी बड़ी अनुकूल प्रतिक्रिया हुई। उसमें कुछ कमियां पाई गईं तो बिना किसी संकोच और लिहाज के उसको भंग करके उसका पुनर्गठन किया। वह आज मारवाड़ तथा आस-पास के क्षेत्र की एक प्रमुख रचनात्मक काम करने वाली संस्था है और योग्य कार्य-कर्त्ताओं के कारण खूब फल-फूल रही है। संस्था को स्थायी रूप देने के लिये व्यास जी ने एक मकान और जमीन खरीदने का उपक्रम किया था। उसमें ३२ हज़ार गज जमीन के चारों तरफ डंडा और बीच में दो मंजिला सुन्दर मकान है। उसकी कीमत १,२१,००० रुपया तय हुई थी। ५०,००० रुपया खादी बोर्ड ने उसके लिये दे दिया है। बाकी रकम की व्यवस्था करके उसको व्यास जी की पुनीत स्मृति में सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया गया है। रचनात्मक दृष्टि से इससे अधिक सुन्दर दूसरा कोई स्मारक व्यास जी का बनाया नहीं जा सकता। मारवाड़ राज्य के अलावा जैसलमेर के आस-पास के क्षेत्रों को भी व्यास जी की रचनात्मक प्रतिभा का बहुमूल्य लाभ मिला है।

राजस्थान खादी ग्रामोद्योग संस्था संघ के वे सदस्य थे। उसकी गतिविधि में विशेष अभिरुचि लिया करते और अपने सक्रिय सहयोग से उसको लाभान्वित किया करते थे। खादीग्रामोद्योग कमीशन की ओर से तीन व्यक्तियों की एक समिति इस

पेचीदा समस्या पर अपना निर्णय देने के लिये नियुक्त की गई थी कि विभिन्न संस्थाओं के कार्यक्षेत्र का सीमा निर्धारण किस प्रकार किया जाय। उस जटिल समस्या को हल करने का काम व्यास जी ने उस समिति के सदस्यों के नाते प्राय: अकेले ही अपने हाथ में ले लिया। काफी परिश्रम करके नीर-क्षीर विवेक के साथ जो रिपोर्ट उन्होंने तैयार की उसको इतना सराहा गया कि विना किसी मतभेद या परिवर्तन के कमीशन ने उसको स्वीकार कर लिया और अपनी सिफारिश के साथ मूर्त रूप देने के लिये संस्था संघ के पास भेज दिया। संस्था संघ के सदस्यों ने भी विना किसी आपत्ति के उसको एक मत से स्वीकार कर लिया। सभी क्षेत्रों में व्यास जी के उदार व्यापक और निष्पक्ष दृष्टिकोण की प्रशंसा की गई। आपसी विवाद को निपटाने का यह केवल एक ही उदाहरण नहीं। संस्थाओं के संचालन व कार्य-प्रणाली का जिनको अनुभव है उनसे यह छिपा नहीं है कि किस प्रकार उनके मार्ग में पग-पग पर आपसी मतभेद के कारण कठिनाइयां उपस्थित होती हैं। खादी ग्रामोद्योग संस्था संघ के मार्ग में भी ऐसी कठिनाइयां उपस्थित हुईं; परन्तु व्यास जी की उपस्थिति तथा मध्यस्थता ने सदा ही जादू कर दिखाया और वे ऐसे दूर हो गईं जैसे कि थी ही नहीं। वे हँसी-मजाक और विनोद में उनका हल कुछ इस ढंग से उपस्थित कर देते थे कि गम्भीर वातावरण एकाएक विनोद में बदल जाता था और सभी सदस्य अट्टहास के साथ उनका सुझाव सहसा ही स्वीकार कर लेते थे। एक वार कुछ ऐसी परिस्थिति पैदा हो गई कि मैंने संस्था संघ के अध्यक्ष पद से त्याग पत्र देने का संकल्प कर लिया। उन्होंने मुझ पर विनोदपूर्ण एक ऐसा चुटकुला कसा कि मेरे लिये चुपचाप उनकी बात को मान लेने के सिवाय दूसरा कोई मार्ग न रहा। अत्यन्त विषम स्थिति में भी वे किस हल्केपन से मार्ग सुझा देते थे। वह देखते ही बनता था।

इस प्रकार उन्होंने रचनात्मक प्रवृत्तियों में अपना अमूल्य सहयोग देकर राजस्थान के नव-निर्माण में जो भूमिका अदा की और राजस्थान की जो ठोस सेवाएं उन्होंने कीं, उनको दृढ़ता प्रदान करके और कुशलतापूर्वक भविष्य में संचालन करके ही उनकी पुनीत स्मृति को सुरक्षित रखा जा सकता है। रचनात्मक प्रवृत्तियों तथा गतिविधि में संलग्न कार्यकर्त्ताओं को व्यास जी की पुण्य स्मृति के प्रति अपने कर्त्तव्य के सम्बन्ध में इसी दृष्टि से कुछ गम्भीर चिन्तन व मनन करना चाहिए।

२

रचनात्मक प्रतिभासम्पन्न नेतृत्व

श्री ओमदत्तजी शास्त्री, हिन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी, जयपुर (राजस्थान)

मेरा सम्पर्क व्यासजी से सन् १९३० में तब हुआ, जब देश में नमक सत्याग्रह चल रहा था और अजमेर में भी राजस्थान मध्यभारत के कार्यकर्त्ता नमकसत्याग्रह चला रहे थे। उसके बाद तो बराबर मिलना होता रहता था। छोटे कार्यकर्त्ताओं के प्रति करुणा, प्रेम और सद्भावना उनमें विशेष थी।

सन् ३९ के जयपुर सत्याग्रह के बाद श्री ठक्कर बापा और श्रीमती रामेश्वरी नेहरू राजस्थान के हरिजन दौरे पर आये। मैं राजस्थान प्रदेश हरिजन सेवक संघ का मंत्री होने के नाते उनके साथ था। अजमेर, उदयपुर, डूंगरपुर और बांसवाड़ा आदि स्थानों का दौरा करते हुए जोधपुर की तरफ रवाना हुए। व्यास जी मारवाड़ जंकशन पर ही हमें मिले और बापा की पार्टी के साथ हो लिये। लगभग ८ बजे श्रीमती रामेश्वरी नेहरू ने स्नान की इच्छा प्रकट की। व्यास जी ने गार्ड से कहकर गाड़ी रुकवाई और इंजन से पानी मंगाकर स्नान कराया। जब तक सबने स्नान नहीं किया गाड़ी खड़ी रही। किसी मनचले ने पूछा गाड़ी क्यों रुकी पड़ी है। स्टेशन कर्मचारियों ने उतर दिया कि "जयनारायण जी स्नान कर रहे हैं।" यह एक घटना है जो उनकी लोकप्रियता और जनता की उनके प्रति उस समय जो भावना थी उसे प्रदर्शित करती है।

राजस्थान ग्रामोद्योग बोर्ड उनके मुख्यमंत्री काल में बना। उन्होंने बोर्ड को विकसित करने का प्रयत्न किया और पांच बत्ती का खादी भवन शासकीय अधिकारियों के विरोध के बावजूद भी स्थापित किया।

रचनात्मक कार्यों में उनकी रुचि और आपसी विवाद निपटाने की उनकी कार्यकुशलता विस्मयजनक थी। उन सरीखा चहुंमुखी व्यक्ति मिलना अत्यन्त दुर्लभ है।

३

सांकड़ा के सन्त

श्री राजारामजी व्यास, अध्यक्ष—ज्ञानमंदिर, पोकरण (राजस्थान)

सांकड़ा जैसलमेर जिले की पोकरण तहसील का एक महत्त्वपूर्ण गांव है। सांकड़ा पंचायत समिति इसी गांव के नाम से बनाई गई है। राजस्थान के इतिहास

में सांकड़ा अपनी ही विशिष्टता रखता है। कुछ वर्ष पहले यह सांकड़ा मारवाड़ राज्य के लिये भारी सिर दर्द था। तब वह लूट, चोरी व अराजकता आदि के कारण आतंक का केन्द्र माना जाता था। किसी भी बड़े-से-बड़े शासक अधिकारी की उस क्षेत्र के जाने की हिम्मत नहीं होती थी। वहां रियासती शासन का अस्तित्व नहीं के बराबर था। वहां का न्याय व प्रशासन स्थानीय पंचायत के माध्यम से चलता था और उन पंचायतों का संचालन डकैतों के हाथ में था। बड़े-से-बड़े कत्ल का अपराध या हजारों रुपयों की लेन-देन के दावे आपसी समझौते से तय हो जाते थे। राज्य नियंत्रण से सर्वथा मुक्त सांकड़ा स्वत: में एक चुनौती था।

सांकड़ा पोकरण नगर से २७ मील दूर दक्षिण-पश्चिम में स्थित एक ग्राम अवश्य है। मगर केवल नाम का सांकड़ा है। उसका विस्तार करीब सात वर्ग मील में फैला है। वह छोटी-छोटी कई ढाणियों जैसे केवतसिंह की ढाणी, उत्तमसिंह की ढाणी या सांवलसिंह की ढाणी आदि से घिरा है। वे ढाणियां भी आध पौन मील की दूरी पर इस हेतु से बसाई गई थीं कि एक ढाणी में छिपा हुआ चोर या डाकू पुलिस अधिकारी का पीछा करने पर आसानी से दूसरी में भागकर छिप सके। सांकड़ा ग्राम का नाम वहां के एक प्रसिद्ध सांकड़िया नाम के कुएं से पड़ा बताया जाता है। कहते हैं उस क्षेत्र में उत्पन्न प्रत्येक बच्चे को बचपन से ही सर्वप्रथम इस कुएं के पानी का एक घूंट पिलाया जाता था। मानो कि उसको अपने पूर्वजों की चोरी व डकैती की परम्परा को कायम रखने की इस प्रकार दीक्षा दी जाती थी। जैसलमेर के भाटी, बाड़मेर के कोटड़िये व सांकड़ा के पोकरने ये तीनों मिलकर ही किसी स्थान की चोरी या डकैती में सफल हो सकते थे। सांकड़ा व आसपास के क्षेत्र को 'ठरड़ा' भी कहते हैं। ठरड़ा के चोर व डाकू सारे मारवाड़ में बड़े आतंककारी माने जाते थे। वहां के चोर व डाकू न केवल राजस्थान में ही नहीं अपितु, सौराष्ट्र, गुजरात, व मालवा तक में चोरी व डकैती के लिये छापा मारा करते थे। मारवाड़ राज्य ने सबसे पहले एक पुलिस थाना वहां कायम किया और एक पक्का मकान बनाया। राजस्थान संघ बनने तक और उसके बाद भी सांकड़ा विकास खंड कायम होने तक वही एकमात्र पक्का भवन सांकड़ा में था। सांकड़ा के चोरों को सारे राजस्थानी व्यंग्य में सन्त कहा करते थे। इन 'सन्तों' के विषय में एक प्रसिद्ध कहावत है कि—

सन्त बसे सब सांकड़े, शेखासर आरंग।
बिरला तो बारू बसे बसियां सन्त अनन्त ॥

इस प्रकार सांकड़ा, शेखासर, आरंग चोचरा, बारू और जैसलमेर का बसियां का इलाका ये सारे क्षेत्र उन डाकू सन्तों के लिये प्रसिद्ध था।

सांकड़े में प्रथम प्रवेश

बात जनवरी, १९५३ की है। लोकनायक श्री जयनारायण व्यास राजस्थान के मुख्यमंत्री थे। राज्य का गृह-विभाग भी उन्हीं के हाथ में था। इस क्षेत्र की शांति

व व्यवस्था की दृष्टि से व्यास जी ने उच्च पुलिस अधिकारियों से परामर्श करके जोधपुर डिवीजन के तत्कालीन कमिश्नर मेजर दौलतसिंह जी व डी० आई० जी० श्री गणेशसिंह तथा अन्य साथी कार्यकर्त्ताओं के साथ जिनमें सर्वश्री छगनलाल जी चौपासनीवाला, पोकरदास जी व लीलाधर जी व्यास प्रमुख थे। सांकड़ा जाने का कार्यक्रम बनाया। प्रायः सभी अधिकारियों को व्यास जी के सांकड़ा जाने का आश्चर्य हुआ। मगर मुख्यमंत्री व्यास जी अपनी निर्भीकता की छाप सभी अधिकारियों पर जमा चुके थे। लोकनायक जिस दिन सांकड़ा में पहुंचे वह ३० जनवरी पूज्य महात्मा गांधी का बलिदान दिवस था। उन्होंने वहां पहुंचकर सर्वप्रथम उस सांकड़िये कुएं को देखा जो डाकू पैदा करने के लिये कुख्यात था। वे गांव वालों से मिले और उनको अपने सच्चे प्रेम व आत्मीयता का परिचय देते हुए पूछा कि "इस क्षेत्र के लोग चोरियां-डकैतियां क्यों करते हैं? वे अच्छे नागरिक बनकर अपना काम-काज क्यों नहीं करते?" वहां गांव वालों में कुछ डकैत भी मौजूद थे जो किसी की पहिचान से परे थे। ग्रामवासियों ने उत्तर दिया कि "हमारे यहां प्रायः राजपूत जाति के लोग अधिक हैं। वे खेती व मवेशी का धन्धा कर सकते हैं, मगर हमेशा अकाल पड़ने से उन धन्धों में कोई गुंजाइश नहीं रहती। अपनी स्वाभिमानी परम्परा के कारण भीख मांगना उचित नहीं समझते। ऐसी परिस्थिति में मजबूर होकर गाय, बैल व ऊंट आदि की चोरी करके सरलता से अपना पेट भर लेते हैं। पुलिस के चंगुल में आ नहीं पाते।" इस पर व्यास जी ने कहा कि "मनुष्य जन्म से अपराधी नहीं होता। परिस्थितियां व संगति ही उससे अपराध करवाती हैं। यदि उसके लिये रोटी व रोजी के अनुकूल साधन प्रस्तुत कर दिये जायं तो वह कभी अपराध नहीं करेगा बल्कि अपना विकास स्वयं करने लगेगा।" व्यास जी के ये शब्द प्रशासन के लिये एक नया मनोवैज्ञानिक दर्शन था। उन्होंने गृहमंत्री अथवा मुख्यमंत्री के तौर पर वहीं पर उसी समय यह घोषणा कर दी कि "सांकड़ा क्षेत्र के फरार व्यक्ति यदि स्वतः आत्मसमर्पण कर देंगे तो सरकार उनको सहानुभूतिपूर्वक अच्छा नागरिक बनने में सहायता देगी।" उसी दिन व्यास जी ने वहां एक छोटी-सी पाठशाला व ग्राम-सेवा केन्द्र की स्थापना करके अपनी ओर से एक कार्यकर्त्ता को वहां बिठा दिया।

ग्राम-सेवा केन्द्र का जनसम्पर्क

ग्राम-सेवा केन्द्र सांकड़ा में वहां के लोगों ने प्रवेश किया। वहां के पशुपालकों से शुद्ध घी, चर्म व्यवसायियों से जूते व अन्य सामान तथा वहां की बरड़ी व कम्बलें लेकर बाहर जोधपुर, जयपुर व दिल्ली तक भेजना प्रारम्भ किया। प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू तक को यहां के बने कम्बल भेंट किये गये। एक बार की बात है कि सांकड़ा का कम्बल ओढ़कर व्यास जी ट्रेन में यात्रा कर रहे थे, तब हिमाचल प्रदेश के भूतपूर्व उप-राज्यपाल राजा साहब श्री बजरंग बहादुरसिंह ने उनके

कम्बल को देखकर पूछ लिया कि यह कहां का बना है। तब व्यास जी ने कह दिया कि शायद आपकी नीयत खराब हो गई प्रतीत होती है और वह कम्बल उन्हें भेंट स्वरूप दे दिया। उस क्षेत्र के करीब तीस-पैंतीस फरार डाकू एक-एक करके स्वयं व्यास जी या पुलिस अधिकारियों के समक्ष उपस्थित हो गये। उनमें लालपुरी, आइदानसिंह व रूप आदि मुख्य थे।

मनोवैज्ञानिक प्रयोग

व्यास जी का दस्युओं को शान्त कर उन्हें अच्छे सभ्य नागरिक बनाने का यह अनोखा मनोवैज्ञानिक प्रयोग सारे देश के पुलिस प्रशासन के लिये एक आदर्श बन गया। सारे भारत के पत्रकारों ने इस सफल प्रयोग की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। विदेशी पत्रों ने भी लिखा कि "वहां के लोग अब चोरी पेशा छोड़कर कुएं, तालाब व टांके बनवाने में लगे हैं।" जो डाकू इस नये प्रयोग के अनुसार पेश हुए उनके विरुद्ध पुलिस ने कोई झूठा गवाह तैयार न करके उन्हें अदालतों के सम्मुख खड़ा कर दिया। कई लोग अदालतों से छूट गये जो खेती-बाड़ी व पशुपालन आदि में लग गये। पहले के कट्टर डाकू आज के अच्छे किसान व क्षेत्र के सुधारक नेता बन गये हैं। उनको अपने परिवर्तन पर बड़ा ही सन्तोष व गर्व है। वे अब अपने बाल-बच्चों के साथ रहकर आनन्द का जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

प्रथम गांधी मेला

ग्राम-सेवा केन्द्र की स्थापना के ठीक एक वर्ष बाद ३० जनवरी, १९५४ को सेवा-केन्द्र के तत्वावधान में विशाल गांधी मेले का आयोजन किया गया। उस मेले में समस्त सरकारी विभागों की ओर से आकर्षक स्टाल लगवाये गये। कृषि, पशुपालन, शिक्षा, पुलिस, सिंचाई, प्रचार आदि विभागों की ओर से जो प्रदर्शन किये गये, उनसे सांकड़ा व आसपास की जनता में नई जागृति व स्फूर्ति पैदा हो गई। वह मेला इस क्षेत्र के लिये अभूतपूर्व था। उस समय तब सांकड़ा में नियमित डाकघर भी खुल चुका था। लोगों की चिकित्सा के लिये केन्द्र की ओर से औषधालय व मनोरंजन केन्द्र, बस सर्विस और प्याऊ भी चालू हो गई थी। गांव वालों की ऊंट दौड़, स्कूली बच्चों के खेल व प्रचार, फिल्मों के प्रदर्शन से ग्रामवासियों में नया जीवन पैदा होने लगा। बच्चों व बूढ़ों को पारितोषिक दिये गये। अध्यापकों, छात्रों व अधिकारियों के साथ मुख्यमंत्री ने स्वयं फुटबाल के खेल में खिलाडी के तौर पर भाग लेकर समस्त ग्रामवासियों पर निरभिमानता और आत्मीयता की गहरी छाप डाल दी। पचास पत्रकार भी उस मेले में आये थे। पत्रकार जगत् में सांकड़ा के प्रयोग को महात्मा गांधी के हृदय परिवर्तन का सच्चा परीक्षण बताया गया था। वह गांधी मेला हर वर्ष ३० जनवरी को गतवर्ष उनके निधन तक मनाया जाता रहा। सरकारी उपेक्षा के कारण मेले की वह परम्परा जारी नहीं रह सकी।

क्षेत्र का सर्वांगीण विकास

व्यास जी ने राष्ट्रीय विकास सेवा खंड की स्थापना २ अक्तूबर, १६५४ को की थी। उसका कार्यालय पोकरण में रखकर वहीं से सारे क्षेत्र की विकास योजनाओं का संचालन किया जाने लगा। इस तहसील के चौरासी गांव विकास की ओर दृढ़ता से वढ़ रहे हैं। अपरिचित व अज्ञात सांकड़ा व्यास जी के सतत प्रयत्न से देश के सामुदायिक विकास नक्शे पर देशवासियों की नजर में आ गया। आज सांकड़ा में एक पक्का मिडिल स्कूल है, जिसमें डेढ़ सौ से अधिक छात्र पढ़ते हैं। वहां के लोग सांकड़ा मिडिल स्कूल को हायर सेकंडरी स्कूल वनाने की मांग कर रहे हैं। औषधालय, डाकघर व मनोरंजन केन्द्र आदि, सेवा केन्द्र की ओर से पक्के वनाकर सरकार को सौंप दिये गये हैं। पंचायतघर व ग्रामसेवक के कार्यालय भी वहां खुल गये हैं। गांव वालों व सरकार के सम्मिलित अर्थयोग से सांकड़ा में ५० छात्रों का छात्रावास भी गत दो-तीन वर्षों से चल रहा है। गांधी जी की प्रस्तर मूर्ति भी वहां स्थापित की गई है। पुस्तकालय व वाचनालय भी वहां के अध्यापक व छात्र चलाते हैं। सांकड़ा विकास खंड ने सांकड़ा का तो कायाकल्प ही कर दिया है। स्थान-स्थान पर प्राथमिक बुनियादी पाठशालाएं, मिडिल पाठशालाएं वाचनालय, पुस्तकालय, पीने के जलाशय व ग्राम पंचायतें कायम होने से सांकड़ा क्षेत्र एक नये विकास युग में प्रवेश कर चुका है।

अन्तिम उद्गार

व्यास जी हर वर्ष हमारे इस क्षेत्र को संभाल लिया करते थे। ३० जनवरी, का दिन व्यास जी के लिये सांकड़ा में विताना नियम वन गया था। चाहे कहीं भी किसी भी हालत में हों सांकड़ा तो वे इस दिन ज़रूर पहुंचते थे। सन् १६६२ में ३० जनवरी को व्यास जी समय पर सांकड़ा न पधार पाये और रास्ते में मोटर ने धोखा दे दिया। वैसी स्थिति में जंगल में ही वापू को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उनके दिल में इतनी खुशी थी कि नियत समय पर सांकड़ा में वापू की प्रस्तर मूर्ति पर न पहुंच सकने पर भी वे सांकड़ा की सरहद में तो पहुंच ही गये। सांकड़ा पहुंच कर व्यास जी ने वापू को श्रद्धांजलि अर्पित की और निराशाजनक शब्दों में कहा, "वापू यह मेरी अन्तिम श्रद्धांजलि है। अव मैं सांकड़ा से छुट्टी चाहता हूं। मैं जिस उद्देश्य को लेकर यहां आया था वह आपकी प्रेरणा व दया से पूरा हो गया है।" आज व्यास जी के उपर्युक्त शब्द सत्य सिद्ध हो गये हैं। क्या उस ३० जनवरी, को ही व्यास जी को यह ज्ञात हो गया था कि उनका शरीर वापस वापू जी के चरणों में हाजिर न हो सकेगा और उन्होंने आज्ञाकारी शिष्य की तरह वापू से दो माह पूर्व ही छुट्टी मांग ली।

जो होना था सो हो गया। अव हमारा कर्त्तव्य है कि उनके द्वारा जारी की गई प्रवत्तियों को स्थायी रूप दें और उस राजस्थान केसरी जन-नायक व्यास जी

के द्वारा बताये गये मार्ग पर चलकर जनहितार्थ कार्य कर उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करें। उनकी स्मृति में गांधी मेले को फिर से चालू करना और राज्य स्तर पर उसका आयोजन करना आवश्यक है। इस पर राज्य शासन, कांग्रेस कमेटी रचनात्मक काम करने वाली संस्था और जैसलमेर तथा पोकरण की कांग्रेस कमेटियों को विशेष ध्यान देना चाहिए।

सांकड़ा के सन्त

सन्त या महात्मा उसको कहते हैं, जो निःस्वार्थ भाव से पीड़ित या उपेक्षित मानव की हृदय से सेवा करता है। व्यास जी ने सांकड़ा को इसी सेवा भावना से अपनाया था। उन्हें पाप से घृणा थी मगर पापी से नहीं। वे धधकती हुई आग में कूदना जानते थे। डाकुओं की आतंकरूपी अग्नि में वे कूद पड़े थे। उसमें कूदकर उन्होंने सांकड़ा में नया दर्शन प्राप्त किया। उन्होंने अपराधी को दमन के बजाय प्रेम से सुधारने का उदाहरण प्रस्तुत किया। सांकड़ा के सन्त को मेरे शतशः प्रणाम हैं। नियमित विचार-गोष्ठियों का भी आयोजन किया जाने लगा। बाकायदा चुनी हुई पंचायत समिति है। नये ग्राम नेतृत्व का उदय हो रहा है। लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की दिशा में ग्राम नेताओं के कदम बढ़ रहे हैं। स्वावलम्बन व सहकारिता के आधार पर नये पंचायती राज्य का उद्भव हो रहा है। लोगों में यह आम धारणा बन रही है कि अपना विकास हम स्वयं करेंगे। व्यास जी के प्रति सांकड़ा वासियों की अगाध श्रद्धा है। उनकी मान्यता है कि व्यास जी ने सांकड़ा को सर्वस्व दिया। लेकिन बदले में कुछ भी नहीं लिया। लोग अपनी मुसीबतों में जोधपुर या दिल्ली तक व्यास जी का मार्ग-दर्शन लेने जाते थे। व्यास जी महान् आत्मा थे, सन्त थे; उन्होंने सबसे अधिक गिरे को ऊंचा उठाया, गले लगाया और अपने कदमों के साथ आगे बढ़ाया। इसी रूप में वे अमर हैं और अमर रहेंगे।

४

सांकड़ा का तीर्थ

श्री टीकमदास जी मालपाणी, पोकरण रेलवे स्टेशन, (जैसलमेर)

जैसलमेर राज्य में तब जयहिन्द या इन्कलाब शब्द गुनाह समझे जाते थे। शहीद सागरमल जी गोपा के बलिदान से वह नारा लगाने का सौभाग्य बच्चों के रूप में हमें प्राप्त हुआ था। इस नारे के प्रचारक स्वतन्त्रता संग्राम के सच्चे व निःस्वार्थ सेनानी आदरणीय श्री जयनारायण जी व्यास थे। तब मुझे व्यास

जी से मिलने का पहला मौका मिला था। बाद में तो व्यास जी का जैसलमेर आना-जाना लगातार रहा। तब विद्यार्थी के रूप में ही मैं उनके पास पहुंच जाया करता था।

◇ ◇ ◇

विद्यार्थी जीवन के बाद जब कर्मक्षेत्र में प्रवेश किया, तो मुझे पोकरण जाकर अपनी दुकान स्टेशन पर ही सन् १९५३ में खोलनी पड़ी। वहां पर उन्हीं दिनों में श्रद्धेय व्यास जी ने भी सांकड़ा क्षेत्र में आना-जाना शुरू किया और मेरा उनका निकट सम्पर्क बन गया। इसका एकमात्र कारण यह था कि मेरी दुकान पोकरण स्टेशन रोड पर थी और मेरे यहां जैसलमेर, पोकरण शहर तथा सांकड़ा आदि जाने-आने वालों को हर तरह की सुविधा रहती थी। उनके पत्र आदि भी मेरी मार्फत आते रहते थे।

◇ ◇ ◇

१९५३ में इस क्षेत्र में कुख्यात डाकू जगमलसिंह व भंवरसिंह का बड़ा आतंक था। आये दिन वे गांवों में डकैतियां डालते और मनुष्यों को उठाकर पाकिस्तान ले जाते। तब वे पोकरण जैसलमेर रोड स्थित लाठीगांव से मेरे तीन सम्बन्धियों को उड़ाकर पाकिस्तान ले गये। सरकारी अधिकारी शक्ति का प्रयोग करके उन्हें डाकुओं से वापस मंगाना चाहते थे, परन्तु व्यास जी का सिद्धान्त उन्हें पूज्य बापू जी के बताये हुए मार्ग अहिंसा व प्रेम से समझाना और उनका हृदय परिवर्तन करना था। कई कानूनी अड़चनें होने पर भी व्यास जी ने उसमें सफलता प्राप्त की। लाठीगांव में डाक की सुविधा न होने से व्यास जी व लाठीवासियों के बीच कड़ी का काम मुझे करना पड़ा था। इस पर व्यास जी के प्रति मेरी श्रद्धा और अधिक बढ़ गई। उनके पोकरण व जैसलमेर आने-जाने पर उनसे अवश्य मिल लेता था। मैंने किसी चुनाव प्रचार तथा गन्दी राजनीतिक दलदल में न पड़कर अपना जीवन सादा बनाने का पाठ उनकी संगति से ही सीखा। अपने लिये प्रेरणापुंज व्यास जी को ही मानता रहा।

◇ ◇ ◇

व्यास जी ने सांकड़ा क्षेत्र में इतनी सफलता प्राप्त की जितनी कि सन्त विनोवा भावे को चम्बल घाटी में नहीं मिल सकी। सांकड़ा गांव सुनसान रेगिस्तान के बीच पोकरण से २९ मील दूरी पर स्थित है। कहा जाता है कि यहां के रहने वाले सब डाकू हैं। इसके बारे में एक दोहा भी है:

"सन्त बसे, सब सांकड़े सेखासर आरंग।
विरला तो बसीयां बसे बारू सन्त अनन्त।।"

सन्त का अर्थ यहां व्यंग्य रूप से डाकू, यानी डाकू सब सांकड़ा, सेखासर आरंग गांव में ही रहते हैं। बाकी बस्तियों व गांवों में तो बहुत ही कम रहते हैं। बतलाते

हैं कि जोधपुर स्टेट के राजा सर प्रतापसिंह जी ने काफी कोशिश की, परन्तु डाकुओं का पैदा होना जारी रहा। व्यास जी राजस्थान के मुख्यमंत्री थे। तब इस समस्या को सर्वथा नई विधि से सुलझाने का प्रयत्न किया। यह नया प्रयोग सांकड़ावासियों के प्रति स्नेहयुक्त व्यवहार का और वहां के पिछड़ेपन को दूर करने का था। उन्होंने घोषणा कर दी कि आत्मसमर्पण करने वाले डाकुओं को कानूनी सीमा में पूरी-पूरी रियायतें दी जायंगी और उनके सहयोग से उन्होंने लोक-कल्याण की प्रवृत्तियां चालू कीं। श्री साईं दाससिंह जी एक समय था जब डाकुओं का नेतृत्व करते थे। अब वे व्यास जी की कोशिश से रचनात्मक कार्यों व सांकड़ावासियों का सभ्य भारतीय की तरह नेतृत्व कर रहे हैं। व्यास जी ने पूज्य बापू की पुण्य निर्वाण तिथि ३० जनवरी १९५३ को सेवा केन्द्र की स्थापना की। वह शिक्षा ग्रामसुधार, जन-स्वास्थ्य, चिकित्सा और प्रौढ़ शिक्षा आदि का तीर्थ बन गया। सांकड़ा के डाकू जो कभी लाज ढाकने तक को कपड़े के लिये डाकेजनी किया करते थे, उन्हें काम दिला-कर वह गलत रास्ता छुड़वा दिया गया और अपराध की इच्छा को पनपने ही नहीं दिया जाता। नई पीढ़ी में शिक्षा का प्रचार होने से अब उनके माता-पिता बालकों को अपराध करने की जगह गाढ़े पसीने की कमाई से गुजर बसर करने की शिक्षा देने लगे। व्यास जी के इस प्रयोग का प्रभाव गांव वालों पर ऐसा पड़ा कि वे सरकार व पुलिस के प्रति पहले जैसी विरोधी भावना को छोड़कर ग्राम सुधार के बहुविध कार्यक्रम और पारस्परिक सहयोग से कार्य करने लगे।

◇ ◇ ◇

३० जनवरी १९५४ को व्यास जी ने सांकड़ा में पहली बार गांधी मेले का आयोजन किया। मुझे भी इस मेले की व्यवस्था में भाग लेने का व्यास जी ने मौका दिया। पोकरण स्टेशन पर अपनी शक्ति के अनुसार काम किया। तीन-चार दिन लगातार व्यास जी के भी दर्शन करने का मौका मिला। सांकड़ा के प्रयोग की पूर्ण जानकारी हुई।

मुख्यमंत्री पद से हटने के बाद जब कभी व्यास जी पोकरण पधारते, तब मिलना हो ही जाता था। परन्तु आखिरी भाषण मुझे १९६२ में जैसलमेर में सुनने को मिला, जिसमें मौजूदा सरकार ने गांव बसीयां के निवासियों पर जहां सांकड़े के मुकाबले में मामूली डाकू रहते थे, 'टाइगर आपरेशन' के नाम से डाकुओं को खत्म करने की कार्रवाई की थी। डाकुओं की बजाय उनके सम्बन्धियों को पीटा गया। उनके झोंपड़े पुलिस ने जलाये और औरतों के साथ बुरा व्यवहार करने की भी शिकायतें सुनी गई। पर व्यास जी ने अपने भाषण में रोष प्रकट किया था। उन्होंने ये शब्द कहे थे कि यदि कांग्रेस सरकार ने डाकुओं को शान्त करने के लिये इस प्रकार की तानाशाही कार्रवाई करके जनता को तंग किया तो यहां डाकू कम न

होकर ज़्यादा ही बढ़ेंगे। इस प्रकार जनता के साथ असहनीय वर्ताव होना कांग्रेस की प्रतिष्ठा व सिद्धान्तों को धक्का लगाने वाला सिद्ध होगा।

वे सच्चे कांग्रेसी थे। सांकड़ा डाकुओं के घर को रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं का क्षेत्र बनाकर हमेशा के लिये अनुकरणीय उदाहरण छोड़कर चले गये। उनके ही कारण डाकुओं का सांकड़ा अब रचनात्मक प्रवृत्तियों का तीर्थस्थान बन गया है।

प्रकरण ६

पत्रकारिता

१

राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ सपूत : सफल पत्रकार

राजस्थानी पत्रकार श्री निरंजन शर्मा 'अजित', बाबुलनाथ चाल, बम्बई—२६

राजस्थान के उद्धार के परम दुष्कर कार्य में जिनका योग रहा है, उस सबमें भाई जयनारायण व्यास सबसे कम संबल लेकर कार्यक्षेत्र में अवतरित हुए थे। निरन्तर संघर्षों और असुविधाओं से लड़ते-लड़ते सबसे अधिक कार्य सम्पादन करके दिखला गये। यह बात असाधारण आन्तरिक गुण गरिमा के बिना कदापि सम्भव नहीं हो सकती थी। यही कारण है कि जनता को जागृत करने में भी वह सफल हुए और नृपतिगण अत्याचारी मंत्रिगण, उद्धत जागीरदार तथा उनके आश्रित अन्याय निरत सरकारी गैरसरकारी धनमान स्थान परिपुष्टों के दलों को परास्त करने में भी उन्हें सफलता मिली।

◇ ◇ ◇

राजस्थान सेवा संघ के विवाद शमनार्थ भाई श्री मणिलाल जी कोठारी के सहयोग से व्यवस्था होने के बाद मेरा व्यास जी से अति निकट पारिवारिक संबंध रहा है। मैं ही उनको सबसे अधिक जानता हूं। इसी आधार पर मेरा स्पष्ट मत है कि क्षेत्र में अपने समय के वह सर्वश्रेष्ठ राजस्थानी नेता थे। साधारण क्लर्की से निकल भाई श्री जयनारायण व्यास साप्ताहिक 'तरुण राजस्थान' के सफल सम्पादक बने थे। यह आश्चर्य की बात है कि इसके पूर्व उनको इस दिशा में कोई अनुभव प्राप्त न था, तो भी भरपूर सफलता उनको मिल गई। वह बड़े जिगर और दिल व गुर्दे जवान था। उनको मटककर चलते देख चकित रह जाना पड़ता था। वह मुस्मित वदन राजस्थानी सपूत स्फूर्ति का भंडार था। 'अखंड भारत' का प्रधान सम्पादक पद उन्हें देते समय कंपनी के चेयरमैन तक की असहमति थी। केवल इसलिये कि दैनिक पत्र का अनुभव व्यास जी को उस समय न था। पर अनुभवी

मित्रों के सहयोग से उनका पत्र शीघ्र ही चमक उठा और सफलता से चलता रहा।

◇ ◇ ◇

देशी राज्य लोकपरिषद् के महायज्ञ की पूर्णाहुति उन्हीं के हाथों से हुई थी। परिश्रमशील स्वभाव के कारण मुसीवत के पहाड़ों को वालू के टीलों से भी क्षुद्र मानने वाला सरल, शुद्ध हृदय, उत्साह और स्फूर्ति का भण्डार और गृहस्थ जीवन वालकों से घुल-मिलकर 'होजी, होजी रे...' आदि रेगिस्तानी ऊंट वाला गीत सिखाने वाला मुझे कभी विस्मृत नहीं हो सकता। मेरे यहां के तो वालक और वालिकाओं के हृदयों में व्यास जी अमर हैं। पर केवल अति निकट सम्पर्क के ही कारण मैं उनको राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ सपूत नहीं कहता और न उनकी सफलता से चकित होकर भी यह फैसला देता हूं। मैं तो यह फैसला उनके उन अगणित गुणों को परखने में वर्षों व्यतीत करने के वाद ही दे रहा हूं।

२

राजस्थान के पत्रकार पितामह

श्री अचलेश्वरप्रसाद जी शर्मा, सम्पादक 'प्रजा सेवक', जोधपुर (राजस्थान)

"क्या आप पच्चीस रुपये महीने पर मेरे सहायक होकर आ सकते हैं।" यह व्यास जी ने अपने ४ मार्च, १९२९ के पत्र में मुझसे पूछा। मेरी स्वीकृति मिलने पर उन्होंने २४ अप्रैल, १९२९ को मुझे नियुक्ति-पत्र देकर अपने पास व्यावर में 'तरुण राजस्थान' में अपना सहायक वनाकर वुला लिया। यह था पहला निकट सम्पर्क मेरा व्यास जी के साथ।

मैंने पोकरण में फतहचन्द लाभचन्द स्कूल में मुख्याध्यापक के रूप में काम शुरू किया था। वहां से राज्य के शिक्षा विभाग में नियुक्त होकर मारवाड़ जंक्शन चला आया। तव मारवाड़ जंक्शन जोधपुर आने-जाने के लिये मुख्य पड़ाव था। व्यास जी प्रायः जोधपुर आते-जाते मारवाड़ जंक्शन ठहरा करते थे। साधारण परिचय उनसे मेरा वहां हो गया था। यह मुझे मालूम नहीं कि उन्होंने मुझे अपने सहायक के रूप में क्यों चुना था। परन्तु उनका यह चुनाव मेरे लिये वरदान वन गया। उससे मेरे जीवन का एक सांचा वन गया और मैं उसमें ढलता चला गया। आज जो कुछ भी मैं वन सका हूं, उसको उसी का परिणाम मानता हूं।

पहला पाठ

मैंने अपने पत्रकार जीवन का जो पहला पाठ 'तरुण राजस्थान' में व्यास

जी से सीखा, उसको मैंने कभी नहीं भुलाया। वह प्रकाशस्तम्भ की तरह सदा मेरे सामने बना रहता है। व्यास जी दैनिक 'जन्म भूमि' के श्री अमृतलाल सेठ की बीमारी का समाचार पाकर सब काम मुझे सौंप बम्बई चले गये। उनके पीछे सिरोही से एक लेख मिला। लेख बड़ी गरम भाषा में कुछ ऐसे आलोचक ढंग से लिखा गया था कि मैंने उत्साहित हो 'सिरोही में रावण राज्य' शीर्षक से उसको 'तरुण राजस्थान' में दे दिया। उस लेख के पक्ष-विपक्ष में चारों ओर एक तूफान खड़ा हो गया। हमारे कार्यालय में अनेक प्रतिवाद प्राप्त हुए। उनके साथ रजिस्ट्री व मनीआर्डर आदि से छपाई के लिये पैसे भी भेजे गये। मैं नवसिखुवा अपनी सफलता पर फूला न समाया। व्यास जी बम्बई से लौटे। सारी स्थिति उनके सामने रखी। लेख देख कर उन्होंने अप्रसन्नता जाहिर की। उन्होंने कहा कि वह व्यक्तिगत आक्षेपों के कारण ऐसा अपमानजनक बन गया है कि यदि कहीं उसके कारण मानहानि का मुकदमा चला दिया गया तो जान बचानी मुश्किल हो जायगी। मैं मानहानि आदि के मुकदमों से बिलकुल अपरिचित था। व्यास जी ने सबसे पहला काम यह किया कि प्रतिवाद छपवाने के लिये जो रुपये प्राप्त हुए थे वे सब वापस लौटा दिये। मुझे समझाया कि किसी समाचार अथवा अपने किसी लेख के प्रतिवाद की छपाई के लिये पैसा लेना पत्रकारिता की नैतिकता के प्रतिकूल है। एक छोटा-सा सम्पादकीय नोट उन्होंने लिख दिया कि लेख के अनेक प्रतिवाद प्राप्त हुए हैं, उनके सम्बन्ध में जांच की जा रही है, यदि प्रतिवाद सत्य सिद्ध हुए तो उनको प्रकाशित करने में हमें कोई आपत्ति न होगी। पत्रकार जीवन की नैतिकता का जो यह पहला पाठ मैंने उनसे सीखा, उस पर मैंने निरन्तर सच्चाई व ईमानदारी से आचरण किया।

सिरोही राज की ओर से उस लेख के लेखक का नाम जानने के लिये हम पर तरह-तरह के डोरे व दबाव डाले गये और बड़ी-बड़ी धनराशि भेंट करने के प्रस्ताव भी किये गये। एक बार तो महाराजा साहब के निजी सचिव बीमा एजेण्ट बनकर स्वयं ब्यावर पधारे और उन्होंने केवल नाम जानने के लिये कई हज़ार रुपये और बड़ी तनख्वाह पर स्थायी नौकरी देने का लालच दिया। व्यास जी के कारण हम लोग उन सब प्रलोभनों से बचे रहे।

दूसरा पाठ

व्यास जी से पत्रकार जीवन का दूसरा पाठ मैंने तब सीखा, जब १९३२ में उन्होंने मुझे बीकानेर षड्यन्त्र के मुकदमे के समाचार भेजने के लिये नियुक्त किया था। वहां स्थिति इतनी प्रतिकूल थी कि रहने के लिये मकान तक मुश्किल था। हर रोज मुझे नया मकान ढूंढना पड़ता था। मैंने इसकी उनको सूचना दी। तो वह नागौर के श्री शिवदयाल दवे के साथ स्वयं बीकानेर पधारे। खुफिया पुलिस वाले साइकिलों पर हमारे पीछे लगे रहते थे। व्यास जी ने एक दिन उनको छकाने

का कार्यक्रम वनाया। पांच-छह साथी बीकानेर और तीन हम व्यास जी की कमान में डवल मार्च करते हुए शहर में चक्कर काटने निकल पड़े। व्यास जी के लेफ्ट-राइट, राइट-टर्न, लेफ्ट-टर्न तथा आउट-टर्न आदि के आदेश पर परेड करते हुए हम लोगों ने प्रायः सारे शहर का चक्कर काट डाला। कभी-कभी किसी घर में सामने की सड़क से घुसते और पीछे की सड़क से बाहर निकल जाते। शहर में हमारे प्रदर्शन की धूम मच गई और खुफिया पुलिस वालों पर हमारी धाक जम गई। यह था उनका काम करने का तरीका, जिससे वे विषम-से-विषम स्थिति में भी अपना रास्ता ढूंढ निकालते थे। दूसरा यह पाठ मैंने उनसे सीखा था।

तीसरा पाठ

तीसरा पाठ मैंने १९३४ में तब सीखा था, जव अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् का वार्षिक अधिवेशन वम्बई में 'लीडर' सम्पादक पत्रकार शिरोमणि श्री सी० वाई० चिन्तामणि की अध्यक्षता में बम्बई में हुआ था। चिन्तामणि जी का भाषण अंग्रेज़ी में अधिवेशन से एक ही दिन पहले मिला था। व्यास जी ने मुझसे कहा कि उसका हिन्दी अनुवाद अधिवेशन से पहले छपकर तैयार हो जाना चाहिए। भाषण काफी लम्बा था। मैंने कहा कि यह ज़रा मुश्किल मालूम होता है। वम्वई में उन दिनों में मराठी प्रेसों में हिन्दी का काम हुआ करता था और मराठी भाषी कम्पोजीटरों को हिन्दी कम्पोज करने में वड़ी कठिनाई होती थी। उनके कम्पोज का प्रूफ पढ़ना भी एक सिरदर्द ही होता था। परन्तु व्यास जी के शब्दकोश में 'कठिन' शब्द तो मानो था ही नहीं। एक मराठी प्रेस में छपाई की व्यवस्था की गई और मुझे साथ विठाकर अनुवाद करने में वे जुट गये। सवेरे कुछ चने-मुरमुरे मंगाकर रख लिये। दिन में केवल तीन या चार बार चाय मंगाई गई होगी। सवेरे काम शुरू हुआ और दूसरे दिन सवेरे पांच वजे तक वैसे ही बैठे-बैठे चने-मुरमुरे फांकते काम चलता रहा। व्यास जी की अथक कर्तृत्व-शक्ति कमाल की थी। वह अकेले मेरे साथ बैठे स्वयं अनुवाद करते, मेरे अनुवाद को देखते, प्रूफ पढ़ते और प्रेस वालों को आवश्यक निर्देश देते। सवेरे जव काम खत्म हुआ और प्रेस से अन्तिम प्रूफ आ गये, तव हम अपने आसन से उठे। भूख इतनी जोर की लगी थी कि मैं व्यास जी के पीछे पड़ गया। उनसे वोला कि काम तो आपने डवल ले लिया, अव कुछ खाने-पीने का इन्तज़ाम कीजिये। हम नीचे उतरे तो वड़े सवेरे केवल ईरानी होटल खुले मिले। व्यास जी वोले कि क्या इस होटल में मेरे साथ खाओगे। मैंने सहज भाव से कहा, अपने को आपके हाथों में सौंपने के वाद अव खाने-पीने का धर्म-कर्म क्या रहा ? अधिवेशन में भाषण की जव हिन्दी प्रतियां वांटी गईं तव सबके मुंह पर व्यास जी की कर्तृत्व-शक्ति की ही चर्चा थी। अपने को भुलाकर काम में जुट जाने का यह पाठ भी मैंने व्यास जी से ही सीखा।

व्यास जी की जागरूकता

'तरुण राजस्थान' का सम्पादन जिस सावधानी से किया जाता था, उसके सिरोही लेख सरीखे कई आपबीते अनुभव मुझे आज भी याद हैं। 'तरुण राजस्थान' में नियुक्त होने से पहले भी मैंने उसमें कुछ लिखना और समाचार भेजना शुरू कर दिया था। ४ मार्च, १६२६ के पत्र में उन्होंने मुझे लिखा था कि 'अबला का बलिदान' प्रकाशित नहीं करने का कारण एक पृष्ठ से अधिक लम्बा हो जाना था। विचार था कि फुरसत पाकर कुछ काट-छांट कर दूं। 'जागीरदार या नर-पिशाच संवाद' किस जागीरदार के विषय में है, कुछ स्पष्ट नहीं होता। क्या बलूंदा ही के सम्बन्ध में यह संवाद है ? स्पष्ट लिखिये ताकि अगले अंक में छाप दूं।" पत्र के लिये प्राप्त एक-एक लेख और एक-एक संवाद पर इस प्रकार ध्यान देने वाले कितने संपादक हैं ?

ब्यावर में रहते हुए भी व्यास जी की दृष्टि सदा जोधपुर पर ही लगी रहती थी और जब-तब वह उसके सम्बन्ध में अच्छे जोरदार लेख लिखते रहते थे। अक्तूबर १६२६ में नागौर किले में उन पर और सेठ आनन्दराज जी सुराणा तथा श्री भंवरलाल सराफ पर षड्यन्त्र का जो संगीन मुकदमा चलाया गया था, उसका आधार 'तरुण राजस्थान' में प्रकाशित उनका एक लेख था। १६२६ में मारवाड़ हितकारिणी सभा की प्रवृत्तियां कुछ अधिक जोरों पर थीं। श्री किशन-लाल बापना तब उसके अध्यक्ष थे। सभा ने सितम्बर, १६२८ में मारवाड़ राज्य लोक परिषद् का आयोजन करने का निश्चय किया। सम्भवतः राज्य व्यापी वह पहला सम्मेलन किया जाने वाला था। राव राजा नरपतिशाही का उन दिनों बोल-बाला था। परिषद् पर पाबन्दी लगा दी गई। १६ सितम्बर, १६२८ को राज्य व्यापी विरोध दिवस मनाया गया। व्यास जी ने 'तरुण राजस्थान' में एक लेख लिखा। उसमें राज्य की आलोचना करते हुए उन्होंने लिखा था कि, "जोधपुर के महाराजा उस सफेद बोतल की तरह हैं, जिसमें असली वस्तु के रंग का पता चल जाता है। सर सुखदेव के दिनों में 'सुखदेव शाही' के रंग दीखते थे और अब जो राव राजा नरपत हैं, तो इस 'नरपतशाही' के रंग सामने आ रहे हैं।" इस लेख को राजद्रोही ठहराया गया। व्यास जी पर उस लेख का लेखक होने और सेठ आनन्दराज जी सुराणा तथा श्री भंवरलाल जी सराफ पर 'तरुण राजस्थान' बांटने तथा बेचने के अपराध में वह मुकदमा चलाया गया था। लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी पर भी उनके लेखों के ही कारण राजद्रोह के मुकदमे चलाये गये थे जिनमें उनको छह-छह साल की सज़ा दी गई थी। जोधपुर की जनता की दृष्टि में व्यास जी पर उनके लेख के कारण चलाया गया वह मुकदमा उसी पाये का था, उनको भी छह वर्ष की ही सजा हुई थी। 'तरुण राजस्थान' के सम्पादक के नाते

व्यास जी को उनकी सफलता का इससे अधिक बड़ा प्रमाणपत्र और क्या प्राप्त हो सकता था ?

व्यास जी का आर्थिक संकट

राष्ट्रभिक्षु श्री मणिलाल कोठारी के अनुरोध पर व्यास जी ने 'तरुण राज-स्थान' का सम्पादन कार्य संभाला था। उसमें उन्हें जिस आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा, उसकी पूरी जानकारी उनके ३० अगस्त, १९३१ के पत्र से मिलती है। तब मैं आगरा के 'सैनिक' में सह-सम्पादक नियुक्त होकर चला गया था।

उस पत्र में उन्होंने मुझे लिखा था कि, "मणिभाई ने जब मैं 'तरुण' में रहा मुझे दुःखी रखा। 'तरुण' के खत्म हो जाने पर भी मुझे आर्थिक संकट इसी कारणसहना पड़ता है। पता नहीं भविष्य में क्या होगा। मैं सदैव यह चाहता था कि 'तरुण' की बदनामी न हो। इसीलिए अब तक किराया और अन्य खर्चा अपनी जेब से भुगतता रहा हूं। लेकिन अब मैं स्वयं काफी कर्जदार हो गया हूं। ऐसी अवस्था में मैंने यही तय किया है कि जहां तक बन सके महात्मा गांधी के बायें हाथ, भारत के महान् राष्ट्रीय भिक्षुक, प्रसिद्ध व्याख्यानदाता और देशी राज्यों की प्रजा के परम शुभचिन्तक श्री कोठारी से जल्दी से छक्का छुटा लूं। बस, मुझे इसी में भलाई मालूम हुई है।"

एक महत्त्वपूर्ण निजी प्रसंग

व्यास जी ने अपने साथियों के प्रति उदार व सहृदय भावना का परिचय देने के लिये मैं एक निजी महत्त्वपूर्ण प्रसंग का उल्लेख करना आवश्यक समझता हूं। एक बार मैंने उनको भावावेश में यह लिख दिया कि एकपरिवारकेनष्टहोने के भय से मैं तो अपने निश्चित ध्येय से तिल भर भी पीछे नहीं हट सकता। इस पर उन्होंने मुझे १९३१ के सितम्बर मास में एक लम्बे पत्र में यह लिखा कि :

"मुझे खेद है कि मैं हटूंडी नहीं आ सका और सीधा जोधपुर चला गया। इसका कारण पिता जी की ओर से किसी विशेष कार्य के लिये एक दिन के निमित्त जोधपुर पहुंचने की तार द्वारा आज्ञा थी।

"आप आश्रम में जुट गये। अच्छा किया। बीस रुपये मासिक जो घर भेजने का निश्चय किया है वह उचित नहीं है। मैंने आपको पहले यह कभी नहीं लिखा था कि आप घर वालों के पीछे अपने ध्येय को छोड़ दें। हां, मेरी यह सम्मति अवश्य है कि इस विपत्ति के समय में जब कि घर-भर का उत्तरदायित्व एक प्रकार से आप ही पर पड़ रहा है, उस समय आपको अर्थ द्वारा जहां तक बन सके उनकी सेवा करनी चाहिए। आपने ऐसी कुछ व्यवस्था कर रखी, अतः धन्यवाद।

"आपके ये शब्द कि 'आप जो चाहें कुछ भी मेरे बारे में कहें मेरा तो हृदय कम से-कम यह नहीं मानता कि मैं घरवालों के पीछे अपना ध्येय छोड़ दूं।' मुझे आपकी दृढ़ता के लिये आपको धन्यवाद देने को बाध्य करते हैं। एक महान् त्यागी के

अतिरिक्त किस का साहस हो सकता है कि वह इतना कह सके कि 'एक परिवार के नष्ट होने के भय से मैं तो अपने निश्चित ध्येय से तिल भर भी पीछे नहीं हट सकता।' ईश्वर आप में सदैव के लिये यह दृढ़ता स्थिर रखे। हां, यदि आपके ध्येय को तनिक भी ठेस न लगे और घर वालों की भी कुछ सेवा हो सके तब तो मैं समझता हूं आप उनको नष्ट न होने देंगे। यदि समय-समय पर उन्हें पत्रादि लिख कर सांत्वना दे सकें तो भी मेरा अनुमान है आपके ध्येय की पूर्ति में कोई आपत्ति या बाधा न आवेगी। विश्वास है आप मेरी इन नम्र सम्मतियों को प्रेमपूर्वक स्वीकार करेंगे।

"एक बात और, अपनी ही निर्बलता अथवा दोष-दृष्टि के कारण मुझे आपके भावों में कुछ जागृति प्रतीत होने लग गई है। आप भौतिक देह की चिन्ता न कीजिये। परन्तु साथ ही अहंवादिता को भी जहां तक बन सके दूर रखने का प्रयत्न कीजियेगा। घरवालों को भी पत्र लिखते समय यदि आप 'नष्ट-भ्रष्ट' आदि भयंकर शब्दों का प्रयोग न करें और उनके बदले में ये ही भाव सात्विक भाषा और नम्रता तथा आर्जव के साथ प्रकट कर सकें तो कोई हानि नहीं, प्रत्युत कुछ लाभ ही है। यदि हो सके तो 'गीता' के इस श्लोक को याद कर लें।"

'मुक्त संगो नहं वादी धृत्युत्साह समन्वितः
सिध्य सिध्योर्विविकार कर्ता सात्विक उच्यते।'

यद्यपि व्यास जी आजीवन घर फूंक तमाशा ही रचते रहे। फिर भी अपने साथियों को उससे बचने का वे ऐसा ही उपयोगी परामर्श दिया करते थे।

कांग्रेस बनाम देशी राज्य

मेरे पास व्यास जी के पत्रों का जो संग्रह है, उस पर एक दृष्टि डालने पर पता चलता है कि उनका मेरे साथ कैसा खुला व्यवहार था। मेरा विवाह सम्बन्ध करवाने में उन्होंने जो रुचि ली थी, उसके सम्बन्ध में भी उनके कुछ पत्र विद्यमान् हैं। यहां मैं सार्वजनिक विषयों से सम्बन्ध रखने वाले कुछ ही पत्र उद्धृत कर रहा हूं। १९३२ की जेल यात्रा के बाद व्यास जी ने एक बार फिर 'तरुण राजस्थान' का सम्पादन कार्य अपने हाथ में ले लिया था। परन्तु १९३४ में श्री मणिलाल जी कोठारी के साथ मतभेद हो जाने पर उसको उन्होंने छोड़ दिया था। इस सम्बन्ध में उन्होंने मुझे जो पत्र लिखा था, उससे उनके साहस का भी परिचय मिलता है। श्री मणिलाल जी कोठारी उनको आग्रहपूर्वक जैन गुरुकुल से हटाकर 'तरुण राजस्थान' में लाये थे। इसलिए यह पत्र विशेष महत्त्वपूर्ण है। ८ अगस्त, १९३४ के पत्र में व्यास जी ने मुझे लिखा था कि "मैंने पत्र का सम्पादकीय लिखने के सम्बन्ध में आपको विस्तृत समाचार नहीं लिखे थे। इससे आपको भ्रम हो सकता है। वास्तव में बात यह है कि मेरे देशी राज्य प्रजा परिषद् के साथ सम्बन्ध रखने में श्री मणिभाई को प्रसन्नता नहीं थी। केलकर गांधी पत्र-व्यवहार के बाद कांग्रेस और देशी

राज्यों के पारस्परिक सम्बन्धों के विषय में काफी चर्चा हुई है। मैं इस बात का पक्षपाती रहा हूं कि कांग्रेस को देशी राज्यों को वैसे ही प्रान्त समझना चाहिए जैसे ब्रिटिश भारतीय प्रान्त और जहां बन सके चहल-पहल भी होने देनी चाहिए। देशी राज्यों के नरेशों पर यदि यह प्रभाव पड़ जाय कि कांग्रेस भी राज्यों की जनता के साथ है तो वे हम पर वार करते घबड़ायेंगे। इस ख्याल से कांग्रेस के अन्तर्गत एक देशी राज्य पार्टी का संगठन भी मैं आवश्यक समझता था और मैंने इस विषय में एक लेख 'अर्जुन' में दिया था। श्री मणिभाई को वह पसन्द नहीं आया। वे कहते हैं कि कांग्रेस ब्रिटिश भारत और देशी राज्यों की बराबर सेवा करती है। नई पार्टी की कोई आवश्यकता नहीं। इसके अलावा भी कई बातें ऐसी हो सकती हैं जिनमें हमारे दृष्टिकोणों में फर्क हो। ऐसी अवस्था में मेरा अन्य समाचार-पत्रों में कुछ लिखना या छापना बुरा हो अथवा मैं इस पत्र का संपादक रहकर दूसरे पत्रों में ऐसी बातें लिखूं जो मणिभाई के विचारों के प्रतिकूल हो तो दोनों के लिये आक्षेपकर होगा। हमारा सम्बन्ध इसी तरह स्थायी रह सकता है कि प्रेमपूर्वक जहां अलग रहना चाहिए अलग रहें, जहां शामिल रहना हो शामिल रहें। इसके बाद मेरे ही अनुरोध से श्री हरिभाऊ जी का नाम मेरे बदले रखा गया और मैंने यह वायदा किया कि मैं पत्र को अपना ही समझूंगा और इसके सम्पादन और व्यवस्था में पहले से कुछ अधिक ही परिश्रम और प्रयास करूंगा। आशा है अब आपको स्थिति समझ में आ गई होगी।

जोधपुर के सम्बन्ध में मैं बड़ा निराश हो गया हूं। वहां ऐसा कोई भी व्यक्ति नजर नहीं आता जो चिट्ठी-पत्री भी बराबर करे। आप होते तो हिसाब-किताब में तो राम-राम रहता ही था पर चिट्ठी-पत्री तो लिख ही देते। अतः वहां स्कीम किस बूते पर बनावें ? अभी तो यही पूछा गया है कि हम जिला संघ बना सकेंगे या नहीं। जैसी संस्था बनावेंगे वैसी ही स्कीम देनी होगी।

राजस्थान के प्रति

व्यास जी की राजस्थान के प्रति जो भावना थी, उसमें वे कोई समझौता नहीं कर सकते थे। श्री मणिलाल कोठारी के साथ भी उन्होंने उसके सम्बन्ध में कभी कोई समझौता नहीं किया। इसका परिचय उनके ३० सितम्बर, १९३१ के पत्र से मिलता है। उसमें उन्होंने लिखा था कि "मणिभाई का तार तो मिला था, जिसमें टाइप भेजने का ज़िक्र था पर बाद में वही चुप्पी। सच तो यह है कि चाहे वे लाखों रुपये कांग्रेस के लिये मांग लावें, उनमें राजस्थान के लिये विशेषतः राजस्थानी कार्यकर्त्ताओं के लिये बिल्कुल प्रेम नहीं है। जो उनका भरोसा करेगा दुःख पावेगा, यह मेरा कटु अनुभव है। अतः जब तक पूरा प्रबन्ध न हो जावे मैं आपको कभी भी टस से मस होने की राय नहीं दूंगा। मैं राय दे सकता हूं कि जब तक वे आपको आश्वासन दें तब तक तो आप भरोसा न करें। जब आप स्वयं यह देख लें कि

मामला ठीक है तो आप 'सैनिक' से अलग हो जावें। ऋषिदत्त मणिभाई के शब्दों के महत्त्व को आप उतना नहीं जानते जितना कि मैं जानता हूं। अत: डटे रहें।"

सभी राज्यों के लिये समान चिन्तित

मैं 'तरुण राजस्थान' का कार्य छोड़कर आगरा के 'सैनिक' में चला गया था। तब भी उनका मेरे प्रति वैसा ही स्नेह और विश्वास बना रहा। समय-समय पर वे जो पत्र मुझे लिखा करते थे, उनमें अधिकतर राजस्थान के विभिन्न देशी राज्यों के समाचार ही रहा करते थे। उन्हें वे 'सैनिक' में प्रकाशन के लिये भेजा करते थे। मारवाड़ अथवा जोधपुर के अलावा मेवाड़, कोटा, बूंदी, करौली तथा बीकानेर आदि सभी राज्यों के समाचारों का उल्लेख रहता था। १९३१ में भी इस व्यापक दृष्टि से काम करने वाले वह पहले राजस्थानी कार्यकर्त्ता, नेता और पत्रकार थे।

'प्रजा सेवक' का जन्म

मारवाड़ प्रजा मण्डल, मारवाड़ लोक परिषद् तथा जागीरी अत्याचारों के उन्मूलन और उत्तरदायी शासन के लिये संघर्षों की लम्बी कहानी प्राय: सर्वविदित है। मैं यहां केवल अपने साप्ताहिक 'प्रजा सेवक' के जन्म का ही उल्लेख करना चाहता हूं। १९४० में व्यास जी की ही प्रेरणा पर 'प्रजा सेवक' का प्रकाशन आरंभ किया गया था। तब मारवाड़ राज्य लोक परिषद् का आन्दोलन भी अपने पूर्ण यौवन पर था। व्यास जी अपने नाम से प्रति सप्ताह उसके लिये मुख्य लेख लिखा करते थे और 'काका जी कहते थे' शीर्षक से गम्भीर मजाक का स्तम्भ भी लिखा करते थे। उस स्तम्भ में लेखक का नाम लिखा जाता था 'भोंदू भतीजा'। इस प्रकार व्यास जी ने मुझे पत्रकार जीवन में स्वतन्त्र पत्रकार के रूप में खड़ा होने के योग्य बनाया। इसी कारण मैं उनको अपना 'पत्रकारगुरु' मानता हूं। इसी रूप में उनको स्मरण कर उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूं।

पत्रकार पितामह

व्यास जी ने १९२० से १९६३ तक चार साढ़े चार दशाब्दी पत्रकार के रूप में बिताई। अनेक प्रमुख पत्रों के वर्षों संवाददाता रहे। राजस्थान और मध्य-भारत को कितने ही लेखक, पत्रकार व संवाददाता प्रदान किये। लोगों में समाचार-पत्र पढ़ने की रुचि पैदा की। जन-जागृति के लिये उन्होंने समाचार-पत्रों के माध्यम को ही अपनाया। लगभग एक दर्जन पत्र स्वयं प्रकाशित किये और उनका सम्पादन किया। बीसियों पत्र 'प्रजा सेवक' की तरह उनकी प्रेरणा, प्रोत्साहन व सहयोग से निकाले गये। सब मिलाकर उनको आधुनिक राजस्थान का 'पत्रकार पितामह' ही कहना चाहिए। राजस्थान की पत्रकारिता सदा ही उनकी ऋणी रहेगी।

३

'अखण्ड भारत' का प्रकाशन और उसके बाद

ठाकुर राजबहादुरसिंह जी, संपादक, गांधी मार्ग, नई दिल्ली

लोकनायक श्री जयनाराण व्यास के साथ मेरा पहला परिचय तब हुआ, जब अजमेर में देशी राज्य प्रजा परिषद् का अधिवेशन हुआ। तब मैं भरतपुर के साप्ताहिक 'भारतवीर' का संपादक था। श्री विजयसिंह पथिक और श्री रामनारायण चौधरी के बाद राजस्थान की प्रजा के लिये निरंकुश शासकों से लड़ने वाले राष्ट्रकर्मियों में श्री जयनारायण व्यास आगे रहे थे। बाद में रियासतों के सम्बन्ध में तत्कालीन ब्रिटिश सरकार के अद्भुत रुख ने भरतपुर के अपेक्षाकृत निर्भीक शासक महाराजा कृष्णसिंह जी को नाभा नरेश की ही तरह शिमले में रोक कर उन्हें अपनी राज्य सीमा से १०० मील दूर रहने का हुक्म दिया और उनका तथा महारानी साहिबा का उसी निर्वासन में शरीरान्त हुआ; तो 'भारतवीर' भी तत्कालीन भारत सरकार के एडमिनिस्टेटर डी० जी० ज़ी० का कोपभाजन बना और मुझे अपना सारा सामान वहीं छोड़कर किसी तरह राज्य सीमा से बाहर आ जाना पड़ा।

बम्बई में

उसके बाद मैं बम्बई जाकर वहां के पुराने साप्ताहिक 'श्री वेंकटेश्वर समाचार' का संपादन करने लगा, तो व्यास जी जोधपुर की प्रजा के सेवक होने के नाते बम्बई प्राय: आया करते थे। पं० निरंजन शर्मा 'अजित' ने 'श्री वेंकटेश्वर समाचार' खेतवाड़ी स्थित कार्यालय में जिन तीन-चार राजस्थानी कार्यकर्त्ताओं से मेरा परिचय कराया, उनमें पं० जयनारायण व्यास मुख्य थे। सम्भवत: बूंदी तथा सिरोही के कुछ कार्यकर्त्ता और झाबुआ के श्री कन्हैलाल वैद्य भी उसके बाद मिले थे। उन दिनों राजस्थान और मध्यभारत के विशाल क्षेत्र पर देशी राजाओं का शासन था, जिनमें कुछ बड़े ही नृशंस और अविवेकी थे। उन दिनों उनके अत्याचार से पीड़ित देशी राज्यों की प्रजा त्राहि-त्राहि कर रही थी। व्यास जी देशी राज्य प्रजापरिषद् के उन नेताओं में थे, जिन्होंने अत्यन्त निर्भीक भाव से पत्रों में आन्दोलन किया और सार्वजनिक सभाओं में भी भाषण किये। जेल गये और कष्ट भोगे। यह बात १९३३ से १९४५ के बीच की है।

१९३९ में द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ जाने पर आन्दोलन का स्वरूप कुछ बदला और उसके पहले १९३५ में प्रान्तीय स्वायत्त शासन योजना आने पर देश में नई जागृति हुई; किन्तु देशी राज्यों की प्रजा न जागृत हुई और न उसके लिये काम करने वालों में अभीष्ट चेतना ही उत्पन्न हुई थी।

पत्रकार का रूप : 'अखंड भारत' का प्रकाशन

व्यास जी में देशी राज्य की प्रजा के हित में आन्दोलनात्मक लेख लिखते-लिखते पत्रकारिता का शौक पैदा हो गया था। व्यासजी ऐसे उत्साही थे कि पूरी तैयारी करने के पहले ही उन्होंने 'अखंड भारत' के नाम से हिन्दी दैनिक निकालने का साहस कर दिखाया। पत्र सीमित साधनों से ही निकला, पर उसमें हम सभी मसिजीवियों का अवैतनिक सहयोग और व्यास जी की अपनी तपस्या का बल था, जिससे वह लगभग डेढ़ वर्ष ज़ोर-शोर से निकलता रहा। पीछे वह धनाभाव के कारण बन्द हो गया। इतना लाभ अवश्य हुआ कि उसके नाते सभी देशी राज्यों के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं का बम्बई में एक बड़ा केन्द्र बन गया। वहां वे सब एकत्र हो चर्चा में भाग लेते, आन्दोलन को उग्र बनाने के उपाय सोचते और प्रचार के साधनों को अधिकाधिक पुष्ट करते। उस पत्र के प्रकाशन के कारण हम पत्रकार व्यास जी के अधिक निकट आये। हमने देखा कि उनमें काम करने की कैसी धुन है। कभी-कभी वे खाना-पीना तक भूल जाते थे।

फाकेमस्ती

व्यास जी का जीवन नियमित नहीं था। कभी कहीं खा-पी लेते, कभी फाका करके भी रह जाते; पर किसी से उसकी चर्चा न करते। उनके बोलने-चालने, हँसी-मज़ाक और नाचने-गाने से कोई यह भांप नहीं सकता था कि उनके मन की क्या गति है और उन्होंने खाना भी खाया है या नहीं...कभी वे बैठे-बैठे अचानक ही बड़े ज़ोर की ऐसी रागिनी छेड़ देते कि सुनने वाला भौचक्का रह जाता और उन्हें विक्षिप्त समझने की भूल कर बैठता।

राजस्थान के मुख्यमन्त्री

जब देश में नये युग का प्रारम्भ हुआ, तो व्यास जी पहले जोधपुर राज्य के प्रधानमन्त्री बनाये गये और बाद में राजस्थान संघ का निर्माण हो जाने पर उसके मुख्यमन्त्री बने।

पहली बार बम्बई आने पर हम सब ने देखा कि वे बिना किसी दिखावे और पद गौरव प्रदर्शन के पुराने साथियों से मिलने उनके स्थानों पर एक-एक करके गये। मैं उन दिनों 'नवभारत टाइम्स' का प्रधान संपादक था। मुझसे मिलने वे टाइम्स आफ इण्डिया बिल्डिंग स्थित मेरे कार्यालय में आये तो उनके साथ बम्बई सरकार की ओर से सुरक्षा स्टाफ का एक व्यक्ति लगा था। उसे उन्होंने बिल्डिंग के बाहर ही रहने का आदेश दिया और स्वयं श्री मथुरादास माथुर तथा सेठ चिरंजीलाल लोयलका के साथ अन्दर आये। मैंने जनरल मैनेजर श्री जी० सी० जैन से कहकर उनके स्वागत सत्कार से चाय पार्टी आदि का आयोजन किया, तो वे हँसकर बोले, "भई, यह सब करने की क्या जरूरत है। मैं तुम्हारा पुराना मित्र व्यास हूं। राजस्थान का मुख्यमन्त्री नहीं।" मेरे अनुरोध पर उन्होंने मेरे साथ अपना ग्रुप फोटो

खिंचवाया, जिसकी प्रतिलिपि मेरे पास उनकी स्मृति के रूप में सुरक्षित है।

मुख्यमन्त्रित्व के दिनों में वे एक वार तो वहुत बीमार होकर जयपुर से वाहर स्वास्थ्य लाभ के लिये चले गये और वहां उन्हें वहुत तेज बुखार आने लगा। गले की खरावी उनकी पुरानी वीमारी थी। पत्रों में पढ़ा तो मैंने ट्रंक टेलीफोन पर उनसे वातचीत की। वे कहने लगे, "भई, तवीयत ठीक नहीं है, पर आप तो जानते हैं, मेरा गला अक्सर खराब रहता है। मैं वात भी करूं तो कैसे। आपने व्यर्थ पैसे खर्च किये। पत्र लिखकर पूछ लेते।" स्वस्थ होने पर उन्होंने अपने पुत्र देवनारायण को मेरे पास पत्रकारिता के प्रशिक्षण के लिये भेजा। प्रसन्नता की वात है कि श्री देवनारायण व्यास अपने पिता के आदर्शानुकूल पत्रकार जीवन में काफी गहरे हैं और आजकल राजस्थान के विख्यात पत्रकारों में गिने जाने लगे हैं।

इंदौर में

व्यास जी का संस्मरण लिखते हुए मैं उनकी इन्दौर कांग्रेस की वात नहीं भूल सकता। इंदौर कांग्रेस के समय वे पाटनी-भवन में मेहमान थे। मैं भी संयोगवश 'नवभारत टाइम्स' के प्रधान संपादक की हैसियत से वहां पहुंचा था। इसलिये आमंत्रित होकर पाटनी-भवन में पहुंचा। वहां चाय-पार्टी के कारण देर तक वैठना हुआ। उस समय भी व्यास जी राजस्थान के मुख्यमन्त्री के रूप में गुरु-गम्भीर वन कर नहीं वैठे। किसी के प्याले में चीनी डाल रहे थे, तो किसी के में दूध। अद्भुत था उनका व्यक्तित्व। दर्प या वनावट का नाम नहीं। सदैव हँसमुख और सीधे-सादे सच्चे मित्र की तरह व्यवहार करना उनका स्वभाव था। वे जिन लोगों के सम्पर्क में आये, राजा, रंक, फकीर सभी उनकी प्रशंसा दिल खोलकर करते हैं। उस पार्टी में उन्होंने हँसते-हँसते मुझे कहा, "अव आप पत्रकारिता को अधिक उग्र बनाइये।" मैंने कहा, "मैंने उग्र वनाने का प्रयत्न कर लिया, पर उस उग्रता का परिणाम भी भोगने जा रहा हूं। मैंने 'नवभारत टाइम्स' के संपादक-पद से इस्तीफा दे दिया है।" इस पर उन्होंने ऐसा न करने के लिये कहा और समझाया कि इस्तीफा वापस ले लो, पर मैंने उन्हें ज़रा अलग ले जाकर जब सारी परिस्थिति वताई, तव उन्होंने मेरे कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा, "भई, यह तो तुमने सच्चे ठाकुर का काम किया। आत्मसम्मान खोकर संपादक तो क्या भगवान् के पद पर वैठे रहना भी पाप है।"

इन थोड़े से शब्दों में उन्होंने केवल पत्रकारिता के पुराने आदर्शों को ही नहीं सराहा, वल्कि उस गौरव को भी प्रोत्साहन दिया जिसके वल पर ही मसिजीवी को जीवित रहने का अधिकार है।

४

जागरूक पत्रकार

श्री गोपीवल्लभ उपाध्याय, उज्जैन (म० प्र०)

व्यास जी से प्रथम परिचय सन् १९२८ या २९ में अजमेर में हुआ था। उन दिनों मैं सस्ता साहित्य प्रेस का मैनेजर था। व्यास जी उन्हीं दिनों जैन गुरुकुल व्यावर की कुछ पाठ्य-पुस्तकें छपाने के लिये प्रेस में आते थे। पुस्तकें सम्भवतः व्यास जी की ही लिखी हुई थीं। उन दिनों वे जोधपुर से निर्वासित होने के कारण गुरुकुल में रहते हुए भी मारवाड़ प्रजा-परिषद् की गतिविधि का सूत्र-संचालन करते थे। उनके आदेशानुसार काम करने वाली एक उत्साही युवक-मण्डली भी थी। इस प्रकार वे अन्त तक अपने ध्येय की पूर्ति में लगे रहे।

उन्हीं दिनों 'चांद' का मारवाड़ी-अंक निकला था। उसमें प्रकाशित सामग्री सामाजिक क्रान्तिकारी थी। वह अंक लगभग सारा ही व्यास जी के परिश्रम का फल था। उसके लिये व्यास जी ने महीनों पहले से सामग्री संग्रह करके स्वयं इलाहाबाद जाकर सम्पूर्ण अंक छपाने की रूपरेखा तैयार की थी। उस अंक के कारण मारवाड़ी समाज में जो हलचल मची और जिस प्रकार मुकदमेबाजी एवं सम्पादक श्री सहगल पर जूते फेंकने के अप्रिय प्रसंग उपस्थित हुए, उन सबको पाठक भूले नहीं होंगे। व्यास जी के सामाजिक क्रान्ति-सम्बन्धी प्रयत्न इतने प्रबल होते थे कि युवक-समाज क्षुब्ध होकर अन्धी परम्पराओं को मिटाने के लिये प्राणपण से कटिबद्ध हो जाता था। सामाजिक क्रान्ति के ही साथ-साथ धार्मिक श्रद्धा के रूप में प्रभावित कुरीतियों की कठोर आलोचना कर उनका नग्न रूप उपस्थित कर देते थे। इससे जहां पुरातनता के उपासक क्षुब्ध हो आप पर जाति-बहिष्कार रूपी शस्त्र का प्रहार करने को उतारू होते थे, वहां उत्साही नवयुवक दल को उनका साथ देता देख उनका साहस शिथिल हो जाता और विवश होकर उन्हें सुधार की बात माननी पड़ती थी।

१९२९ में पत्नी का देहान्त हो जाने के बाद मैं अजमेर से उज्जैन चला आया और दो वर्ष यहां रहकर १९३१ से हिन्दी 'स्वराज्य' की सेवा के लिये खंडवा चला गया। चार-पांच वर्ष व्यास जी के साथ मेरा कोई सम्पर्क नहीं रह सका। १९३५ में अचानक ही बम्बई से 'अखंड भारत' नाम का दैनिक निकालने की योजना बनाई गई। मैं भी बम्बई जा पहुंचा, और व्यास जी तथा श्री कन्हैयालाल वैद्य आदि से मिला, तो उन्होंने सहर्ष सम्पादकीय विभाग में मेरी सेवाएं स्वीकार कर लीं। डाक से प्राप्त होने वाले संवादों का शीर्षक स्वयं व्यास जी ने 'प्यारा वतन हमारा' निश्चित किया था। उसके दोनों ओर महाराणा प्रताप और लक्ष्मीबाई के

चित्र दिये जाते थे। रियासतों में पत्र की धाक जम गई और लोग रुचि के साथ पत्र पढ़ने लगे।

'अखंड भारत' का प्रकाशन करने के लिये एक लिमिटेड सोसायटी का गठन किया गया था। उसके चेयरमैन थे राजा बहादुर सेठ गोविन्दलाल जी पित्ती। पत्र पांच-छह महीने ही चला होगा कि सोसायटी के डायरेक्टरों में कुछ असन्तोष पैदा हो गया। उनमें से दो ने त्यागपत्र दे दिया और अपने हिस्से के पांच-पांच हज़ार रुपये भी देने से इनकार कर दिया। छपाई आदि की कुछ असुविधाएं ऐसी थीं कि अन्य दैनिक पत्रों के मुकाबले में 'अखंड भारत' बाज़ार में देरी से पहुंचता। बम्बई में पत्र आवश्यक रूप में लोकप्रिय नहीं बन सका। प्रबन्ध विभाग के लिये व्यास जी कुछ अच्छे साथी नहीं जुटा सके। कुछ साथी तो अत्यधिक अविश्वसनीय सिद्ध हुए और उनसे व्यास जी को अधिकतर धोखा ही उठाना पड़ा। ऐसी कुछ कठिनाइयों के कारण पांच-छह मास बाद ही पत्र का प्रकाशन बन्द हो गया। व्यास जी के दिल पर उसकी बड़ी चोट लगी।

लगभग एक महीने तक यही स्थिति रही। अन्त में सेठ रामदेव जी पोद्दार आदि की सहायता से दुबारा सोसायटी का गठन किया गया। फिर से 'अखंड भारत' प्रकाशित होने लगा। इस बार पत्र के उत्साही मैनेजर नवयुवक श्री ब्रजमोहन जी गोइनका ने भी पूरा प्रयास किया। किन्तु एक बार नींव डगमगा जाने से वह भली-भांति फिर से न जम सकी। फिर भी पत्र लगभग एक वर्ष तक चलता रहा। उस समय सबसे अधिक त्याग का परिचय व्यास जी ने ही दिया। यहां तक कि वे नाममात्र का व्यय लेकर ही पत्र का संपादन करते रहे। ठाकुर काशी-प्रसाद सिंह भी अलग हो गये। मुझे भी अपनी पुत्री की बीमारी के कारण कार्य मुक्त होकर मालवा लौट आना पड़ा। उस समय अकेले व्यास जी पर ही पत्र का सारा भार आ पड़ा था। फिर भी वे अपनी मस्त और विनोदी वृत्ति के कारण हँसते-खेलते सब काम करते रहे।

बाद में श्री कन्हैयालाल वैद्य के झाबुआ राज्य की प्रवेश निषेध आज्ञा तोड़कर राज्य की सीमा में प्रवेश करने और गिरफ्तार हो जाने पर झाबुआ की अदालत में राजद्रोह का मुकदमा चला। वैद्य जी के साथ और भी छह-सात युवकों पर मुक-दमा चलाया गया। उसकी पैरवी के लिये 'स्वराज्य' के सम्पादक श्री आगरकर जी की प्रेरणा से खंडवा के प्रसिद्ध वकील श्री देवधर साहब के साथ स्वराज्य के सहयोगी पं० शुकदेव प्रसाद जी तिवारी भी वहां गये। उनके मुहर्रिर के रूप में नियुक्त होकर मुझे भी अदालत में जाने का मौका मिला। उस समय वहां संवाददाता के लिये प्रवेशाज्ञा नहीं थी। अतएव मैं मुहर्रिर के रूप में दिन-भर की कार्रवाई के संक्षिप्त नोट तैयार कर साढ़े चार बजे मोटर बस से एक कार्यकर्त्ता को मेघनगर स्टेशन भेज देता जो शाम की एक्सप्रेस में बैठकर दोहद पहुंच जाता। वहां पं०

कृष्णकान्त व्यास तैयार मिलते। वे उस पर से संवाद पत्र बनाकर रात को दस बजे फ्रंटियर मेल से बम्बई के चार दैनिकों को भेज देते। तीसरे ही दिन सवेरे 'अखंड भारत' झाबुआ में बिकने आ जाता था, जिसमें वे सब संवाद रहते थे। बम्बई में तो वह उसी दिन शाम को प्रचलित हो जाता था।

अधिकारीगण तथा पुलिस परेशान थी कि इतनी शीघ्रता से मुकदमे के संवाद कैसे छप जाते हैं। उन सबका सन्देह मुझ पर था। किन्तु वकील के मुहर्रिर होने से मुझे वे रोक नहीं सकते थे। इस प्रकार लगभग दो महीने यही क्रम चला। तब 'अखंड भारत' और 'जन्मभूमि' के द्वारा जो प्रचार कार्य हुआ, उसका श्रेय व्यास जी को ही था। एकाध प्रकरण में मान-हानि के प्रसंग में अदालत में भी जाना पड़ा। उसे भी जैसे तैसे निपटाया गया। इस प्रकार संघर्ष करते हुए भी परिस्थिति की प्रतिकूलता के कारण अन्त में 'अखंड भारत' की जीवन यात्रा खंडित हो गई। व्यास जी को सब प्रकार से शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक हानियों का सामना करना पड़ा। फिर भी वे अपनी विनोदी एवं मस्त प्रकृति के कारण उन सबको झेलकर भी निराश नहीं हुए।

सारांशत: व्यास जी में जहां अन्य कई गुण थे, वहां सबसे बड़ी विशेषता थी उनकी सहृदयता, शुद्ध प्रेम एवं स्नेहभावना और समता की वृत्ति। अपने सभी साथियों के प्रति समानता और बन्धुभाव रखकर ही बरतते थे। कभी यह प्रकट नहीं होने देते थे कि मैं बड़ा हूं और दूसरे मेरे अधीनस्थ हैं। वे सबके साथ बराबरी से बैठकर काम करते। आवश्यकता पड़ने पर अपने साथियों का काम भी स्वयं विशेष परिश्रम उठाकर कर देते थे। कभी उनके चेहरे पर थकावट या निराशा के चिह्न नहीं दिखाई देते थे। मुझे याद नहीं पड़ता कि मैंने कभी उनको किसी पर क्रुद्ध होते देखा हो। क्षण-भर के लिये वह किसी व्यक्ति को आंख उठाकर देख लेते और यह कहकर उसके प्रति उपेक्षा का भाव प्रकट कर देते 'क्या यार तुम भी कुछ नहीं हो। जाओ काम करो।' यही कारण था कि सब लोग आत्मीयता के साथ काम करते थे और उनको अत्यन्त श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे। सबसे अधिक आकर्षण करने वाला गुण था, उनका विनोदप्रिय स्वभाव। वे जब काम करते-करते थक जाते, तो परिहास के लिये सब साथियों को बिठाकर अपने कमरे के किवाड़ बन्द कर लेते और सिनेमा में जो नृत्य देख आते थे, उसकी नकल कर सबको हँसाते और स्वयं भी हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाते थे। कभी साधु नामधारियों की विविध चेष्टाओं की नकल करके भी सबका मनोरंजन करते।

वे ऐसे लेखक और पत्रकार थे कि 'अखंड भारत' में उनके सम्पादकीय लेख अत्यन्त प्रामाणिक एवं प्रभावशाली होते थे। ठीक मार्मिक स्थान पर प्रहार करते थे। इसलिए शासकों को अत्यन्त सावधान रहना पड़ता था। व्यंग्य-विनोद लिखने में भी बड़े कुशल थे। वे सभी सामयिक घटनाओं पर विनोदपूर्ण टिप्पणियां लिखते

थे। वे तुकबन्दी करने में भी अत्यन्त कुशल थे। खासकर, तद्रूप-व्यंग्य (पैरोडी) लिखने में उनकी विशेष रुचि थी। 'मर्दानी झांसी' का जो तद्रूप-व्यंग्य (पैरोडी) लिखा था, वह बड़ा ही विनोदपूर्ण था। व्यास जी सरीखे सहृदय बन्धु की स्मृति चिरकाल तक बनी रहेगी। मैं उनके साथ बिताये गये दिनों की स्मृतियां कभी भूल नहीं सकता।

उनके निधन से राजस्थान ही नहीं, वरन् सभी रियासती जनता का एक सच्चा निर्भीक एवं अत्यन्त तेजस्वी लोकप्रिय नेता व पत्रकार उठ गया। जिसकी पूर्ति हो सकना लगभग असम्भव है। वे लोकनायक ही नहीं 'मारवाड़ केसरी' और 'राजस्थान केसरी' भी कहे जाते थे।

प्रकरण १०

लोकभाषा और लोककला

१

राजस्थानी कला के उन्नायक

श्री देवीलाल सामर, संचालक, भारतीय लोक कला मंडल, उदयपुर (राजस्थान)

सन् १९५२ की जुलाई की बात है, जब भारतीय लोक कला मंडल की स्थापना हुई और प्रथम बार संस्था के सम्बन्ध में लोकनायक जयनारायण व्यास से, जो कि उस समय राजस्थान के मुख्यमंत्री थे, मिलने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ था। मैंने संस्था की समस्त योजना उनके समक्ष रक्खी, जिसे उन्होंने बहुत पसन्द किया और पूर्ण सहयोग और संरक्षण का आश्वासन दिया। मेरी प्रार्थना पर वे संस्था के संस्थापक सदस्य भी बन गये। व्यास जी स्वयं कला मर्मज्ञ होने के नाते मंडल के कार्य में न केवल रुचि लेने लगे, बल्कि उसकी प्रत्येक प्रवृत्ति के लिये वे हमारे सहयोगी बन गये। व्यास जी को मंडल की स्थापना से पूर्व ही मेरी गतिविधियों और अभिरुचि से पूर्ण परिचय था। संस्था में जब सर्वप्रथम ध्वनि यन्त्र (साउंड रिकार्डिंग मशीन) की व्यवस्था हुई, तब व्यास जी ने उसके प्रयोग और उपयोग आदि में महत्त्वपूर्ण भाग अदा किया। भारतीय लोक कला मंडल के माध्यम से लोकगीतों के ध्वनि संकलन का शुभारम्भ लोकनायक व्यास की वाणी द्वारा ही हुआ, जो आज भी हमारे संकलन में मूल्यवान निधि के रूप में विद्यमान् है। सच पूछिये तो राजस्थानी लोकगीतों का विधिवत् ध्वनि संकलन कार्य सर्वप्रथम व्यास जी की प्रेरणा से भारतीय लोककला मंडल के माध्यम से ही प्रारम्भ हुआ। इस कार्य के आरम्भ मात्र से ही व्यास जी ने अपने कर्तृत्व की इतिश्री नहीं समझ ली, बल्कि उन्होंने लोकगीतों के संग्रह, ध्वनि संकलन तथा अध्ययन की सम्पूर्ण योजना का सूत्रपात किया और पूरे तीन वर्ष तक वे हमारा इस दिशा में मार्ग दर्शन करते रहे।

व्यास जी के बनाये हुए राजस्थान के काल्पनिक नक्शे में सामाजिक और

आर्थिक पहलुओं के साथ समाज के सांस्कृतिक पहलू भी गहरे रंगों में अंकित रहते थे और उनके विकास, प्रसार तथा पुनर्जीवन के कार्य में वे सदा ही संलग्न रहते थे। भारतीय लोक कला मंडल को वे अपनी सांस्कृतिक योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिये बहुत बड़ा माध्यम मानते थे। अपने शासकीय दौरे के दौरान में वे इस बात का पूरा ध्यान रखते कि कहां-कहां कैसी कलात्मक सामग्री है, जहां मंडल के कार्यकर्त्ताओं को खोज, सर्वेक्षण तथा अध्ययन के कार्य के लिये पहुंच जाना चाहिए। पत्र लिखने की उनको फुर्सत नहीं थी, परन्तु जब भी उनके मस्तिष्क में कोई सांस्कृतिक महत्त्व जैसी बात आती, जिसमें कला मंडल को अपना भाग अदा करना होता; वे तुरन्त ही टेलीफोन उठाकर अपना मन्तव्य मुझ तक पहुंचा देते। कुछ अवसर मुझे ऐसे भी प्राप्त हुए थे, जब कि व्यास जी के शासकीय दौरे के दौरान ही में मुझे तार या टेलीफोन द्वारा आदेश मिलता और मैं तुरन्त अपने फोटो, फिल्म तथा रेकार्डिंग युनिट के साथ नियत समय और स्थान पर पहुंच जाता। दिन-भर के शासकीय कार्य के उपरान्त व्यास जी का आराम, विश्राम, वल्कि कभी-कभी तो सारी रात ही सांस्कृतिक कार्यों में प्रयुक्त हो जाती।

◇ ◇ ◇

व्यास जी को यह भली प्रकार ज्ञात था कि राजस्थान के सर्वांगीण विकास में लोककला के पुनर्जीवन, विकास और प्रसार का भी वहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। फलोदी के पास एक गांव की बात है, जब कि हम व्यास जी के सान्निध्य में ध्वनि संकलन का कार्य कर रहे थे। गांव के अनेक लोकगायक एक जगह जमा थे। सारी रात गीतों की गम्मत जमी रही। व्यासजी आनन्द विभोर ही नहीं हो रहे थे, वल्कि वे स्वयं भी लोकगायकों के साथ गा रहे थे तथा उनकी भूली हुई पंक्तियों को खुद पूरी करके उस गीत गोष्ठी में अपनी प्रतिभा से रंग भर रहे थे। ऐसे प्रसंग 'भारतीय लोक कला मण्डल' के जीवन में अनेक वार आये।

◇ ◇ ◇

श्रद्धेय व्यास जी की कलात्मक अभिरुचि केवल आनन्दोनुभूति तथा कलाप्रियता तक ही सीमित नहीं थी, उसके पीछे गहरी और व्यापक सामाजिक चेतना थी। राजस्थान के अनेक ऐसे उपेक्षित परन्तु प्रतिभाशाली कलाकार भी थे, जो सर्वदा ही व्यास जी द्वारा आश्रय और संवेदना प्राप्त करते थे। कई वार ऐसे प्रसंग आये जब व्यास जी ने केवल इसके लिये मुझे जयपुर वुलाया कि मैं इन कलाकारों की प्रतिभा की जांच करूं और उन्हें प्रतिष्ठापन के सम्वन्ध में उन्हें अपनी विनम्र राय दूं। कलाकारों का सर्वप्रथम व्यास जी अपने निवास स्थान पर आतिथ्य करते। ऐसे कार्यक्रमों को आयोजित करने की जिम्मेदारी एक-दो वार मेरे कन्धों पर रखी गई। सारी रात कार्यक्रम चलते, तव अतिथियों का भोजन तथा आतिथ्य व्यास जी के निजी खर्च से होता। एक वार व्यास जी ने टेलीफोन करके मुझे उदयपुर से जयपुर

बुलाया। दो कलाकारों को सुनने की बात थी। रात-भर उनका कार्यक्रम चला। जयपुर के अन्य कई कलाकारों को भी उन्हें सुनने के लिये बुलाया गया था। संगत करनेवाले तबलिये की कमजोरी देखकर व्यास जी कई बार स्वयं तबले पर बैठ जाते और नृत्यकारों के कला प्रदर्शन में चार चांद लगा देते। रात्रि को ८ बजे शुरू हुआ यह कार्यक्रम प्रातः ६ बजे तक चला। एक ही बैठक पर बैठे व्यास जी कार्यक्रम का आनन्द लेते रहे। सायंकाल सीधे दफ्तर से आकर बैठक में बैठ गये थे। बीच में सबके साथ भोजन के उपरान्त पुनः उसी जगह जम गये। सुबह शौचादि से निवृत्त होकर ८ बजे उन्हीं कपड़ों में दफ्तर जाने को तैतार हो गये। बाहर सरकारी कारिंदों तथा मिलनेवालों का तांता लगा हुआ था। मैंने कहा व्यास जी कुछ देर विश्राम कर लें। रात को एक क्षण भी आपकी आंखें नहीं झपी हैं। कहने लगे सामर जी मेरे व्यस्त तथा चिन्तायुक्त क्षणों की यही खुराक है। मैं आज जितना ताजा अपने-आपको महसूस कर रहा हूं, उतना मैंने कभी नहीं किया था। इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यह संगीत गोष्ठी केवल गोष्ठी तक ही सीमित नहीं रही। कुछ समय बाद पता लगा कि ये दोनों ही कलाकार किन्हीं दो अत्यन्त प्रतिष्ठित सार्वजनिक संस्थाओं में काम कर रहे हैं। जिसके लिये वे आज भी व्यास जी के गुण गाते हैं।

◇ ◇ ◇

व्यास जी की कलाप्रियता और उसके राष्ट्रीय उपयोग की एक अनोखी घटना के कुछ संस्मरण यहां प्रस्तुत किये बिना मैं नहीं रह सकता। १९५३ के मार्च महीने की बात है। मैं भारतीय लोक कला मण्डल के प्रदर्शन दल के साथ कलकत्ता के प्रमुख थियेटर 'इंडियन एम्पायर' में प्रदर्शन दे रहा था कि एकाएक ही व्यास जी का मुझे तार मिला, उसमें लिखा था कि आप सभी काम छोड़कर तारीख २२ मार्च को दल सहित जयपुर पहुंच जाइये। उस समय राक्सी थियेटर में भी हमारे कुछ प्रदर्शन तय हो चुके थे। मैंने श्रद्धेय व्यास जी को टेलीफोन लगाया और पूछा कि हमारी सेवाओं की आपको तत्काल आवश्यकता क्यों हुई? क्या मैं इस आकस्मिक बुलावे का कारण जान सकता हूं। उन्होंने तुरन्त यही कहा कि मुझे मालूम है कि तुम्हें कलकत्ता से बुलाने में काफी आर्थिक हानि उठानी होगी, परन्तु तुम्हें किसी भी हालत में इधर आना ही है। कार्य क्या हैं मैं अभी नहीं बताऊंगा। व्यास जी का यह प्रेमाग्रह किसी भी हालत में टाला नहीं जा सकता था। कलकत्ता के पूर्व निश्चित सभी प्रदर्शनों को त्यागकर, हम २२ मार्च को प्रातः जयपुर पहुंचे। स्टेशन पर व्यास जी स्वयं स्वागतार्थ मौजूद थे। मुझे अलग से बुलाकर अपनी ही कार में एक बंगले में ले गये और मेरे हाथ में एक बन्द लिफाफा थमाकर बोले कि जिस तरह यह लिफाफा बन्द है, उसी तरह आपको और आपके सारे दल को इस बंगले में सात दिन तक बन्द रहना पड़ेगा। मैं पुनः दो घंटे के बाद आता हूं, तब

तक इस लिफाफे में जो कागज रखा है, उसका ठीक से अध्ययन कर लेना।

मैंने लिफाफा खोलकर उस कागज को देखा तो उसमें चम्बल योजना पर आधारित एक नृत्य नाटिका का सारा स्क्रिप्ट तैयार था, जिसमें व्यास जी द्वारा रचित गीत भी थे तथा सारी नृत्य नाटिका की विस्तृत योजना भी। उसमें यह भी लिखा था कि राजस्थान दिवस पर अथवा ३० मार्च को यह नृत्य नाटिका हमारे कलाकारों द्वारा सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित होगी। मेरा सिर चक्कर खाने लगा। आठ दिनों में नृत्य नाटिका तैयार करना किसी जादूगर का ही काम हो सकता है। मैं इसी चक्कर में अपना माथा पकड़े बैठा ही था कि दो घंटे बाद स्वयं व्यास जी मेरे कमरे में आ गये और मुझे छाती से लगाकर कहा कि तुम घबराओ नहीं। यह नाटिका तैयार होकर ही रहेगी। मैं तुम्हारे साथ हूं और सरकार के साधन तुम्हारे पास हैं, तब तक मैंने देखा कि मेरे सब कलाकारों की सुविधा के लिये सभी साधन वहां उपलब्ध कर दिये गये थे। मैंने व्यास जी से निवेदन किया कि मुझे दो दिन कोई नहीं छेड़े और मैं अकेला अपने कमरे में छोड़ दिया जाऊं। मेरे कलाकारों की सारी जिम्मेदारी तत्कालीन सार्वजनिक सम्पर्क कार्यालय के संचालक श्री सर्वदानन्दजी पर छोड़ दी गई। ईश्वर कृपा से दो दिन में मैंने रात-दिन जगकर सारी नृत्य रचना तैयार कर ली। वह एक ईश्वरीय अनुभव था। पूज्य व्यास जी की प्रेरणा तथा उनका प्रगाढ़ स्नेह ही उस रचना में मेरे लिये सहायक सिद्ध हुए। रिहर्सल का तांता बंध गया। प्रतिदिन १८ घंटे रिहर्सल चलते रहे। स्वयं व्यास जी भी दो तीन घंटा प्रतिदिन अपने व्यस्त जीवन में से निकालकर हमें देते तथा सम्पूर्ण कृति को अपनी प्रतिभा और कलात्मक बुद्धि से सुशोभित करते। उस कृति में अनेक स्थल ऐसे थे, जिनमें श्रीयुत व्यास जी स्वयं नृत्य करके कलाकारों को तैयार करते थे। २९ मार्च, की रात्रि को राम निवास बाग के विशाल रंगमंच पर सारी रात रिहर्सल हुआ। व्यास जी ने स्वयं उस रिहर्सल का आयोजन-नियोजन किया। दूसरे दिन ३० मार्च को सायंकाल लगभग ५०,००० जनता के समक्ष चम्बल नृत्य नाटिका का प्रदर्शन हुआ, जिसकी मधुर स्मृतियां जयपुर निवासियों को आज भी ताजा हैं। दर्शकों का यह कहना है कि वैसी कृति जयपुर के इतिहास में न कभी प्रदर्शित हुई और न कभी होगी।

◇ ◇ ◇

उसकी सफलता के पीछे निश्चय ही व्यासजी की प्रेरणा और प्रतिभा काम कर रही थी। उस समय तक चम्बल योजना केवल कुछ ही लोगों के दिमाग में थी। उनमें व्यास जी उसके सबसे बड़े उन्नायक थे। यह किसको मालूम था कि कागज़ पर उतारी हुई यह योजना नृत्य नाटिका में परिवर्तित होगी और फिर वह चम्बल विद्युत् योजना के नाम से साकार रूप धारण कर लेगी। आज तो चम्बल की बिजली शहरों और गांवों में तेज़ी से फैल रही है। व्यास जी की प्रेरणा

से ही हमने राजस्थान और मध्यप्रदेश के सैकड़ों गांवों में चम्वल नृत्य नाटिका के लिए सफल प्रदर्शन दिये और चम्वल योजना के कोष में वहुत वड़ी राशि एकत्र करके हमने अपना राष्ट्रीय कर्त्तव्य निभाया।

◇ ◇ ◇

इस सम्वन्ध में एक दिलचस्प वात और है। चम्वल नृत्य नाटिका की ख्याति सर्वत्र फैल गई। व्यास जी के पास पत्रों और वधाइयों का तांता लग गया। हम लोग उस समय दल-वल सहित उदयपुर लौट आये थे। स्वर्गीय मेवाड़ाधीश श्रीमान् महाराणा भूपालसिंह जी ने, जो कि इस संस्था के कार्य में अत्यधिक रुचि रखते थे और राजस्थान के महाराज प्रमुख भी थे। यह इच्छा प्रकट की कि चम्वल नृत्य नाटिका का प्रदर्शन स्थानीय दरबार हाल में अवश्य होना चाहिए। मैंने सोचा कि चम्वल का प्रदर्शन उसके प्रणेता लोकनायक जयनारायण व्यास के विना शोभा नहीं देगा। मैंने उसी रात को श्रद्धेय व्यास जी को टेलीफोन किया कि आपको ८ जुलाई, १९५३ को उदयपुर पधारना है और प्रदर्शन की अध्यक्षता भी करनी है। इस निमंत्रण को स्वीकार करने में व्यास जी को एक क्षण भी नहीं लगा, परन्तु उन्होंने उसके साथ यही शर्त रखी कि वे मुख्यमंत्री की हैसियत से नहीं, एक कला-प्रेमी के नाते ही उदयपुर आवेंगे। दूसरे दिन से तैयारियां होने लगीं तथा निमंत्रण वंटने लने। मुख्यमंत्री वनने के वाद व्यास जी का उदयपुर पदार्पण पहली ही वार हो रहा था। अतः सर्वत्र उत्साह की लहर फैलना स्वाभाविक था। व्यास जी ने अपने आने की सूचना कलामंडल के अतिरिक्त न तो शासकीय अधिकारियों को ही दी और न कांग्रेस संगठन को ही। कालामंडल द्वारा प्रसारित समाचार ही से सर्वत्र तैयारियां शुरू हुईं। महाराज प्रमुख के अतिथि के रूप में उन्हें उदयपुर आना था। स्टेशन पर अपार जनता ने उनका स्वागत किया। सभी राजकीय अधिकारी वहां मौजूद थे। मैं कहीं भीड़ में दुवका खड़ा था। सोचा राजकीय स्वागत ही उनके लिये शोभनीय है। शासन की ओर से स्वागत के लिये वैंड द्वारा गार्ड आफ ऑनर की भी व्यवस्था थी। डिव्वे में से उतरते ही शासकीय अधिका-रियों ने उनकी देखभाल, सम्भाल आदि करना शुरू कर दिया। उनके पी० ए०, परि-चारक सामान आदि की खोज करने लगे, लेकिन सच पूछिये तो उनके साथ सिवाय उनके एक छोटे हैंडवैग के कुछ नहीं था, जिसे वे स्वयं डिव्वे में से लेकर उतरे। उतरते ही उन्होंने मेरी मांग की ओर कहने लगे कि मैं एक कलाकार के वुलावे पर एक कलासेवी के नाते उदयपुर आया हूं। उन्होंने गार्ड आफ ऑनर की योजना को भी रद्द कर दिया और लोक कला मंडल के अत्यन्त संक्षिप्त स्वागत को ही सर्वा-धिक मान्यता दी। व्यास जी के इस रुख से नगर के शासकीय अधिकारी तथा कांग्रेस संगठन के कार्यकर्त्ता कुछ अप्रसन्न थे।

सायंकाल लगभग ५०० नागरिकों की सभा में चम्बल प्रदर्शन का भव्य आयोजन महाराणा साहब के दरबार हाल में हुआ। व्यास जी अपनी अध्यक्षीय कुर्सी को छोड़कर रंगमंच पर आ बैठे और समस्त प्रदर्शन का आयोजन-नियोजन करने लगे। चम्बल नाटिका में वैसे तो व्यास जी की ही कल्पना ने साकार रूप लिया था, परन्तु उसमें जो इंजीनियर का पार्ट था, उनमें स्वयं व्यास जी ही झलक रहे थे। मैंने जयपुर में श्रद्धेय व्यास जी को कहा था कि आप स्वयं ही वह भूमिका अदा करें, परन्तु वे जानते थे कि चम्बल के सभी प्रदर्शनों में वे उपलब्ध नहीं हो सकेंगे, इसीलिए उन्होंने वह भूमिका कहीं भी अदा नहीं की परन्तु सच पूछिये तो उस भूमिका की अदायगी करने वाले को समस्त निर्देश हमने व्यास जी से ही प्राप्त किया था। मैं उस समय चम्बल नाटिका में इंजन चलाने वाले खलासी का काम करता था, जिसकी जानकारी मेरी पोशाक तथा मेरे विचित्र मुख विन्यास के कारण दर्शकों को कभी हो नहीं सकती थी। चम्बल का प्रदर्शन समाप्त होते ही श्रद्धेय व्यास जी रंगमंच पर लपक पड़े और मेरी मूंछ निकालकर मुझे समग्र जनता के समकक्ष खड़ा करके कहने लगे। "क्या आप शान्ति तथा लज्जाशील स्वभाव वाले सामर जी से इस प्रकार के अत्यन्त व्यंग्य प्रधान, हँसाकर लोट-पोट करने वाले तथा अत्यन्त लचकीले और यांत्रिक स्फूर्ति के काम की आशा रख सकते थे।"

◇ ◇ ◇

स्वर्गीय व्यास जी की कला और कलाकारों के प्रति प्रगाढ़ सद्भावना थी। भारतीय लोक कला मंडल के प्रारम्भिक जीवन में यदि व्यास जी का वरदहस्त नहीं होता तो शायद यह संस्था अपने जन्म के समय ही मर जाती और उसका चिह्न भी आज नहीं बचता। उन्होंने जो राजकीय संरक्षण की परम्परा अपने समय में इस संस्था के लिये डाली, वही आगे जाकर प्रस्फुटित और विकसित हुई। हमें उनके राज्यकाल के बाद भी सभी मुख्य मन्त्रियों तथा शासकीय वर्ग के संरक्षण, सद्भावना और आशीर्वाद प्राप्त होते रहे हैं। आज तो यह संस्था अखिल भारतीय स्तर की संस्था बन गई है।

२

एक निर्मल झांकी

श्री महेशदत्त जी भार्गव, एडवोकेट, ब्यावर तथा जोधपुर (राजस्थान)

व्यास जी के जीवन की विविध झांकियां हैं। उनमें से सिर्फ एक आपबीती यहां दे रहा हूं।

◇ ◇ ◇

सन् १९४७ से पूर्व व्यास जी के साथ ब्यावर में मेरा घनिष्ट सम्बन्ध रहा। मारवाड़ के तत्कालीन सभी कार्यकर्त्ताओं के लिये ब्यावर सुरक्षा स्थल था। उस काल में बहुधा एक साथ रहने, खाने-पीने व सोचने-विचारने का अवसर मिला। त्याग तथा सेवा से ओत-प्रोत जीवन का एक पहलू और भी था।

◇ ◇ ◇

१९३६ या ३७ की बात होगी। मैं हारमोनियम सीखने की कोशिश में था। पर ठीक-ठीक नहीं सीखा था और अब भी नहीं आता है। कचहरी का काम समाप्त करने के बाद रात को बारह बजे संगीत गुरु जी रमणलाल जी गुजराती आते थे। बाजे पर टुन-टुन शुरू किया ही था कि व्यास जी दलबल सहित पधार गये। बोले ठहरो घुंघरू मंगाओ। पांवों में घुंघरू बांधे और खड़े हो गये। कहा अब बजाओ। मुझे संकोच हुआ—कहने लगे तुम भी अनाड़ी—हम भी अनाड़ी—साथ अच्छा रहेगा। मैं हिम्मत कर कुछ बजाने लगा व्यास जी का नृत्य शुरू हुआ तांडव। रमणलाल जी के तबले के साथ ठीक ताल में बड़ा सुन्दर नाच नाचा। हारमोनियम की गति कैसे चली मैं नहीं जानता। पर एक बात तो मैंने जान ली। वह यह कि व्यास जी जिस निर्मल हृदय से नाचे थे, उसी निर्मल हृदय से वे राजनीति को भी नचाते थे।

३

कला और कलाकारों के प्रेमी

रंगमंच निर्देशक, मास्टर माणिकलाल डांगी, संस्थापक—राजस्थान नाट्य कला मंदिर,
झूमरलाल की बगीची, पोलोविक्ट्री के सामने जयपुर (राजस्थान)

व्यास जी लोकमंच के नेता और मैं रंगमंच का अभिनेता रहा। वैसे कुछ अंशों में व्यास जी भी अभिनेता थे और मैंने भी अभिनेता के समान नेता बनने का नाटक

ज़रूर किया। उनकी अभिनेता बनने की इच्छा पूरी न हो सकी और मैं राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा रखते हुए भी नेता न बन सका। यह कैसा सुयोग था कि हम दोनों का जन्म जोधपुर में हुआ और घर भी दोनों के पास-पास के मुहल्लों में ही थे। व्यास जी राजनीति में इस वेग से अग्रसर हुए कि मेरे सरीखे उनके साथी उनकी प्रगति को अचरज भरी आंखों से देखते रह गये। उनकी इस प्रगति को संस्कारी जीवन के चमत्कार के सिवाय कुछ और नहीं कहा जा सकता; क्योंकि 'नेता' बनने के लिये जिन गुणों की उन दिनों आवश्यकता थी, वे उनमें नहीं थे। सम्पन्न घराने में उनका जन्म न हुआ था और न वकालत अथवा वैरिस्टरी ही उन्होंने पास की थी। केवल एक 'आकांक्षा' उनके हृदय में अवश्य थी वह यह कि दलित, पीड़ित व शोषित की सेवा। उसी की साधना में उन्होंने अपने को खपा दिया। मैं रंगमंच में कुछ ऐसा लीन हुआ कि जोधपुर से कलकत्ता आकर रहने लगा। उन दिनों कलकत्ता नगरी रंगमंच का केन्द्र स्थल थी और रंगमंच का जैसा विकास वहां हुआ, वैसा दूसरे स्थानों पर नहीं हो सका। मारवाड़ राज्य लोकपरिषद् की स्थापना करके व्यास जी ने मारवाड़ राज्य व्यापी जिस संघर्ष में अपने को झोंक दिया था, मारवाड़ से दूर रहने वाले मारवाड़ी भी उससे प्रभावित हुए विना न रहे। मैंने भी दो बार 'जोधपुर की जनता से अपील' शीर्षक से पर्चे छपवाकर राज्य में बंटवाये थे। व्यास जी को संगीत, नृत्य व अभिनय आदि से कुछ ऐसा नैसर्गिक लगाव था कि जब कभी राजनीति अथवा राजनीतिक संघर्ष से उनका मन ऊब उठता था, तब वह इन ललित कलाओं में अपने को तल्लीन करने में कुछ अधिक सुख, सन्तोष व शान्ति अनुभव करते थे। इसीलिये मैं प्रायः उनसे यह कहा करता था कि आप नेता तो जबरदस्ती बनते हैं स्वभावतः आप अभिनेता ही हैं। मैं अपनी नाटक कम्पनी के साथ जहां भी कहीं जाता था, वहां यदि वे पधारते, तो विना बुलाये ही मिलने और नाटक में उपस्थित रहने की कृपा करते थे। यह उनके ललितकला और कलाकारों के प्रति प्रेम का सूचक था।

१६३८ में मेरी 'शाहजहां थियेट्रीकल कम्पनी' कलकत्ता में पांच धर्मतल्ला स्ट्रीट में खेल दिखा रही थी। मुझे मालूम हुआ कि व्यास जी कलकत्ता पधारे हैं। मैंने उनको शाम को 'भक्त नरसी मेहता' खेल देखने को निमंत्रित किया। वह विश्वमित्र संपादक श्री मूलचन्द जी अग्रवाल के साथ पधारे। पूरा नाटक बड़े चाव से देखा। कलाकारों को पदक देकर सम्मानित करते हुए कहा, "कलकत्ता के रंगमंच प्रेमियो! मैं देशसेवक होने के साथ-साथ छोटा कलाकार भी हूं या कला उपासक हूं, मुझे सदा कला से प्यार रहा है। मेरे नगर के मेरे साथी मेरे मुहल्ले के करीब के बाबू माणिकलाल, जो निर्देशक, लेखक व अभिनेता हैं; उन्होंने मुझे नाटक देखने को बुलाया है। मैं आया और आना था। मैं माणिकलाल जी की अभिनयकला और उनके देशभक्ति के कार्य को देखकर इतना ही कहूंगा कि यह हमारे प्रान्त के अभि-

नेता ही नहीं रंगमंच के नेता भी हैं। हमारा क्षेत्र 'लोकमंच' और इनका क्षेत्र 'रंग-मंच' है उसके द्वारा यह देश सेवा का कार्य करते हैं, मेरी शुभ कामना सदा इनके साथ है।"

उनके उद्‌गार मेरे प्रति व्यक्तिगत स्नेह की अपेक्षा कला और कलाकारों के प्रति उनके स्नेह के कहीं अधिक द्योतक थे। देहली में मेरी कम्पनी का महीनों मुकाम रहता था। यदि व्यास जी दिल्ली में रहते तो नाटक देखने अवश्य पधारते। रंगमंच पर से नाटक देखने में उनकी विशेष रुचि थी और कलाकारों से चर्चा-वार्ता करने का भी उनको विशेष शौक था। मेरा अनुभव यह है कि वे खेल देखने की अपेक्षा कलाकारों की कला का अध्ययन कुछ अधिक बारीकी से करते थे। कई बार ऐसे प्रसंग भी आये जब उन्होंने कलाकार को उसकी भूल सुझाई और गीतकार की लय ठीक करवाई। संगीत और अभिनय दोनों के वह मर्मज्ञ थे। इतनी गहराई से संगीत व अभिनय देखने व समझने वाला मुझे कोई दूसरा दर्शक दीख नहीं पड़ा। सचमुच ही वह कला और कलाकार दोनों के पारखी थे।

देहरादून का वह प्रसंग भी मैं नहीं भूलता, जब वह एकाएक भाई सत्यदेव जी विद्यालंकार के साथ मेरे निवास स्थान पर भरी दुपहरी में भयानक गरमी में आ पहुंचे। मैं रात के खेल से थका गहरी नींद सो रहा था। मेरे साथियों ने उठाने से इनकार किया तो उन्होंने मुझे जबरन सोते से उठा दिया। दो-तीन घंटे विनोद में बीते। रात को मेरे साथ भोजन करने के बाद नाटक में भी शामिल हुए। एक दिन न मालूम कैसे यह खबर फैल गई कि रात के खेल में व्यास जी का नृत्य प्रदर्शन होगा। उनका 'बेगार नृत्य, 'तांडव नृत्य' और 'हिटलर नृत्य' आदि उनकी मौलिक कलात्मक प्रतिभा के अत्यन्त उत्कृष्ट नमूने थे। दुर्भाग्यवश उस रात बिजली फेल हो गई और लोगों को निराश लौटना पड़ा। राजनीतिक सम्मेलनों के अवसर पर जब वातावरण नीरस हो जाता था, तब व्यास जी अपने नृत्य प्रदर्शन से उसमें नई जान फूंक देते थे।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद मैं सिनेमा जगत् की ओर कुछ अधिक आकर्षित हो गया और फिल्म व्यवसाय में लग गया। जोधपुर में मैं उनकी प्रेरणा और परामर्श से 'वीर दुर्गादास' फिल्म तैयार करने में संलग्न था। व्यास जी 'वीर दुर्गादास' के अन्यतम प्रशंसक थे। इस नाम से कभी उन्होंने एक पत्र भी जोधपुर से प्रकाशित करवाया था। उस फिल्म के तैयार करने में व्यास जी का परामर्श मेरे लिये बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ।

दिल्ली में जब पहला एशियाई सम्मेलन हुआ था, तब उसके प्रतिनिधि लौटते हुए जोधपुर भी पधारे थे। मैंने पहली जनवरी, १९४७ को उन्हें अपने बंगले पर निमंत्रित करके एक दावत दी और उनके सम्मान में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया था। स्वर्गीय जोधपुर नरेश महाराजा हणुवन्तसिंह जी को भी मैंने

निमंत्रित किया था। व्यास जी मुझसे बोले कि सांस्कृतिक कार्यक्रम में वह भी भाग लेंगे। उन्होंने अपने सुप्रसिद्ध 'वेगार' नृत्य का प्रदर्शन किया। अन्य कलाकारों के साथ खड़ताल बजाने में भी शामिल हुए। उस समय का उनका यह पत्र मेरे पास सुरक्षित है कि, "भाई माणिकलाल जी एशियाई डेलीगेट्स के स्वागत के अवसर पर मेरी खड़तालें, जो मैंने बजाई थीं वह आपके यहीं पर रह गई हैं। उन्हें आप श्री दुर्गासिंह एण्ड संस के यहां पहुंचा देवें।"

राजस्थान के मुख्यमंत्री बनने के बाद जब वह पहली बार जोधपुर पधारे और नं० ६ वार्ड में जब उनका स्वागत किया गया तब मैंने पांच सौ रुपये की थैली उन्हें भेंट की। भाई सत्यदेव जी विद्यालंकार ने व्यास जी के कला-प्रेम के सम्बन्ध में जो लिखा था, उसका कुछ अंश मैं यहां देना आवश्यक समझता हूं। विद्यालंकार जी ने बिल्कुल ठीक ही लिखा था कि :

"व्यास जी के राजनीतिक रूप और गतिविधि से भली-भांति परिचित लोगों को जब यह मालूम होता कि व्यास जी नेता की अपेक्षा अभिनेता, राजनीतिज्ञ की की अपेक्षा कलाकार और सार्वजनिक वक्ता की अपेक्षा नृत्यकार व संगीतज्ञ तथा विनोदप्रिय अधिक हैं, तब वे सहसा ही विस्मय में पड़े बिना न रहते। मेरा व्यक्तिगत अनुभव यह है कि उन्हें नेता, राजनीतिज्ञ अथवा सार्वजनिक वक्ता की अपेक्षा अभिनेता, कलाकार अथवा नृत्यकार बनने में कुछ अधिक सुख सन्तोष व शांति अनुभव होती थी। जोधपुर में प्रधानमंत्री के पद से हटने के बाद जब उन पर एक विशेष अदालत के सामने संगीन मुकदमा चला तब एक दिन मैंने उनसे पूछा कि यदि मुकदमे में सजा हो गई और राजनीति से पृथक् होना पड़ गया तो आप क्या करोगे। उन्होंने सहज मस्ती में उत्तर दिया कि अपने पुराने साथियों की मंडली जुटाकर नाटक कम्पनी खड़ी करूंगा और सारे देश का दौरा करके नाटकों के माध्यम से जनता को राजनीतिक प्रशिक्षण दूंगा। मेरे लिये यह काम राजनीति के शतरंज के खेल से कहीं अधिक मनोरंजक होगा। जोधपुर का मुकदमा जब वापस ले लिया गया, तब नई दिल्ली के फिरोजशाह रोड के अपने निवास-स्थान पर उन्होंने तांडव नृत्य का जो प्रदर्शन किया, उसको देखने वाले कभी भूल नहीं सकते। जोधपुर में कलाकार श्री पृथ्वीराज कपूर के स्वागत आयोजन में वहां के मुख्यमंत्री रहते हुए भी नृत्य द्वारा उनका जो कलात्मक अभिनन्दन उन्होंने किया, उस पर वे मुग्ध हुए बिना न रहे। एक आयोजन में पुलिस बैंड ने राष्ट्रगीत की धुन बजाते हुए कुछ भूल कर दी। उसको व्यास जी सहन नहीं कर सके। मुख्यमंत्री रहते हुए भी तुरन्त पुलिस की बैंड पार्टी के बीच जा खड़े हुए और उसकी धुन ठीक करवाई। संगीत, नृत्य और कला में वे पूर्णतः पारंगत थे। भरतपुर राज्य प्रजा परिषद् के वार्षिक अधिवेशन में हारमोनियम और खड़ताल की लय नहीं मिल रही थी, तो मंच पर बैठे-बैठे ही खड़ताल स्वयं सम्भाल ली और लय

मिला गाना शुरू कर दिया तब श्रोता अपने नेता को उस रूप में देखकर स्तब्ध रह गये। जोधपुर या जयपुर में शासकीय अथवा राजनीतिक कार्यों में भार अनुभव करने पर मुस्ताने के लिये वे सदा ही संगीत अथवा नृत्य का सहारा लेकर अपने को हल्का कर लेते थे। बीकानेर में राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं के सम्मेलन में उनका 'बेगार नृत्य' का प्रदर्शन ऐसा मनोरंजक हुआ था कि देखने वाले दांतों तले अंगुली दबा रह गये। तात्पर्य यह है कि सूखी राजनीति में डूबे न रहकर वे मानव हृदय की उन सहज भावनाओं की कद्र करना भी जानते थे, जो हर किसी के हृदय को स्पर्श कर लेती हैं। उनकी कलात्मक मानवता उनकी लोकप्रियता का मुख्य आधार थी। एक मामूली-सी घटना है। एक भिखारिन प्रतिदिन गाती और भीख मांगती इनके दरवाजे से गुज़रा करती थी। उसका गीत सुनकर व्यास जी के मन में यह विचार पैदा हुआ कि वह एक अच्छी संगीतज्ञ और कलाकार बन सकती है। उसको अपने पास बुलाया, गाना सिखाया और कहा कि भीख मांगते हुए भी गाना तो ठीक ढंग से ही गाना चाहिये। वह उनकी शिष्या बन गई। जोधपुर में एक संगीत सम्मेलन में व्यास जी ने उसको निमंत्रित किया। वह इतनी उत्साहित हुई कि राजस्थान के रेडियो कलाकारों में उसने अपना प्रमुख स्थान बना लिया। ऐसे कितने ही कलाकार हैं, जो व्यास जी के संगी-साथी अथवा शिष्य कहे जा सकते हैं? कला को ही मानव के लिये स्वभाव सिद्ध कहा जा सकता है, राजनीति को नहीं। व्यास जी में यह स्वभाव सिद्ध कला पूर्ण रूप में विकसित हुई थी। शिव की चोटी में उमा और गंगा की तरह व्यास जी के हृदय में कला और राजनीति दोनों ने स्थान पा लिया था। परन्तु कला उन्हें अधिक प्रिय थी और राजनीति को तो उन्होंने लोक-कल्याण के लिये वैसे ही अपनाया था जैसे शिव ने स्वर्गावतरण के समय लोको-पकार के लिये ही गंगा को अपनी जटा में स्थान दिया था। मानवता अथवा अपने कलात्मक रूप को खोकर बड़े-से-बड़ा राजनीतिज्ञ भी केवल राजनीति के सहारे महानता को न तो प्राप्त कर सकता है और न उसको सुरक्षित ही रख सकता है।"

अपने स्वर्गवास से कुछ दिन पहले जब वह जयपुर पधारे और भाई श्री केशो जी के पोलोविक्ट्री होटल में ठहरे थे तब मैं उनसे मिला। उन्होंने पूछा कि माणिक जी क्या कर रहे हो। मैंने कहा दर्जी का बेटा जियेगा तब तक सियेगा। समय की गतिविधि देखते हुए नया नाटक लिखने की फिक्र में हूं। हम दोनों ने भ्रष्टाचार दूर करने के सम्बन्ध में नाटक लिखने और उसके अभिनय करने का निश्चय किया। व्यास जी बड़े खुश हुए और बोले कि मैं भी उसमें पार्ट अदा करूंगा किसे मालूम था कि वह बातें स्वप्न ही बन रह जायंगी।

व्यास जी ने कलाकारों से सदा प्यार किया, चाहे वे किसी धर्म व जाति के क्यों न थे। वह अच्छे संगीतज्ञ थे। राजस्थानी लोकगीतों में 'गोरबन्द' उनका मनपसन्द गीत था। वह लेखक थे, नेता थे, अभिनेता थे, नृत्यकार थे। लोक-नृत्यों

में उनकी विशेष रुचि थी। अनेक लोकगीत उन्हें कण्ठस्थ थे। राजस्थान का ही नहीं, भारत का कलाकार, जो उनके सम्पर्क में आया, वह उन्हें सदा याद रखेगा।

४

राजस्थानी संस्कृति के उपासक

श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम० ए०, साहित्यरत्न, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

व्यास जी का सर्वप्रथस परिचय मुझे राजस्थानी भाषा के पाक्षिक पत्र 'आगीबाण' से प्राप्त हुआ। यह जानकर परम आनन्द और सन्तोष का अनुभव हुआ कि हमारा एक प्रमुख जननायक जनभाषा के माध्यम का महत्त्व स्वीकार कर उसके द्वारा जनता में जागृति पैदा करने का प्रयत्न कर रहा है। अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् के १९४५ के उदयपुर अधिवेशन में आयोजित स्वाधीनता संग्राम के इतिहास सम्बन्धी प्रदर्शनी के उप-संयोजक और जयपुर में १९४८ में कांग्रेस के अधिवेशन पर सर्वोदय प्रदर्शनी के अन्तर्गत राजस्थानी संस्कृति मण्डप के संयोजक के रूप में सेवा करने का मुझे अवसर मिला। दोनों अवसरों पर व्यास जी ने विशेष रुचि ली और आवश्यक मार्ग प्रदर्शन किया। उसके सुझावों पर राजस्थान मंडप की प्रदर्शनी ऐसी भव्य और आकर्षक बनी कि श्री जवाहरलाल जी नेहरू, सरदार पटेल और मौलाना आज़ाद आदि देश के प्रमुख नेताओं ने उसको देखने के लिये लगभग आध घंटे का समय दिया। उसके वारे में परस्पर विचार-विमर्ष भी किया। व्यास जी ने अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी राजस्थान के इतिहास, साहित्य, कला और शिल्प आदि प्रवृत्तियों के प्रदर्शन में विशेष रुचि ली।

व्यास जी राजस्थानी जनोन्नति के एकमात्र सशक्त माध्यम और राजस्थानी भाषा के प्रवल समर्थक थे। उन्होंने किसी दवाव की चिन्ता किये विना आजीवन राजस्थानी भाषा का समर्थन किया और वे इसके माध्यम से जन सम्पर्क बनाकर आत्माभिव्यक्ति करते रहे। उन्होंने राजस्थानी भाषा के समर्थन में एक पुस्तिका भी लिखकर प्रकाशित की थी, जिसमें अनेक अकाट्य तर्कों से बताया गया है कि राजस्थानी भाषा की मान्यता और प्रचार प्रसार से ही राजस्थान की सर्वांगीण उन्नति सम्भव है। उन्होंने अनेक प्रसंगों पर यह भी स्पष्ट किया कि राजस्थानी-प्रेम हिन्दी-प्रेम में किसी भी प्रकार वाधक नहीं है। उन्होंने राजस्थान के मुख्य-मंत्री बनने से पूर्व राजस्थान प्रदेश कांग्रेस के वीकानेर में आयोजित विशेष अधि-

वेशन के अवसर पर अपने एक वक्तव्य में कहा था कि यहां के समूचे लोकजीवन का विकास राजस्थानी से ही होना सम्भव है। वे सब कार्य अवश्य किये जाने चाहिये, जिन्हें हम राजस्थानी भाषा के विकास के लिये आवश्यक समझते हैं।

मुख्यमंत्री बनते ही व्यास जी ने राजस्थानी भाषा की उन्नति के लिये एक संस्था की स्थापना की, किन्तु दुर्भाग्यवश इसमें राजनीतिज्ञों की प्रधानता थी। उनमें मत मुटाव होते ही वह संस्था बिना कुछ किये ही समाप्त हो गई। व्यास जी राजस्थानी भाषा सम्बन्धी विभिन्न प्रवृत्तियों को निरन्तर प्रोत्साहित करते रहे।

राजस्थानी लोकगीतों, संगीत और नृत्य में व्यास जी की विशेष रुचि थी। अवसर होने पर व्यास जी स्वयं गाने, वाद्य बजाने और नृत्य करने में भी संकोच नहीं करते थे। इन कलाओं का उन्हें विशेष अध्ययन था और वे उनके सूक्ष्मतम सिद्धान्तों की ऐसी जानकारी रखते थे कि उन पर विचार-विमर्श भी किया करते थे। राजस्थान-दिवस के अवसर पर राजस्थान नृत्यों, गीतों और अभिनयों का भव्य प्रदर्शन वे अपने निरीक्षण में करवाते थे। राजस्थानी कलाओं के ऐसे अनूठे रूप व्यास जी ने प्रस्तुत किये, जो जल्दी ही विशेष लोकप्रिय हो गये।

राजस्थानी लोकगीतों में 'गोरबन्ध' और 'मूमल' व्यास जी को विशेष प्रिय थे। राजस्थान-दिवस के अवसर पर उन्होंने जोधपुर से धीरासेन को आमंत्रित कर उनके संगीत का विशेष आयोजन किया। राजकीय बैंड में उन्होंने राजस्थानी लोकगीतों की अनेक धुनें प्रचलित कीं।

राजनीति में अति व्यस्त रहते हुए भी व्यास जी ने प्रयत्नपूर्वक भावी कार्य-क्रम के लिये भूमिका तैयार कर दी। उन द्वारा प्रदत्त प्रोत्साहन के कारण राज-स्थान की विविध सांस्कृतिक प्रवृत्तियां निरन्तर विकसित हो रही हैं। उदयपुर के भारतीय लोक कला मंडल को इस समय जो अखिल भारतीय महत्त्व एवं आकर्षण प्राप्त है। उसका अधिकांश श्रेय व्यास जी को ही दिया जाना चाहिये। उसकी प्रवृत्तियां एवं प्रदर्शनों को व्यापक लोकप्रियता प्राप्त कराने में उनका विशेष योगदान रहा। राजस्थान की भावी पीढ़ी उनके सांस्कृतिक कलाकार रूप को भी सहज में भूल न सकेगी।

५

राजस्थानी और व्यास जी

प्रो० मोहनकृष्ण जी वोहरा, गवर्नमेंट कालेज, व्यावर (राजस्थान)

सहसा स्मरण हो आते हैं वे पुनीत दिन, जो मैंने व्यास जी के सम्पर्क में बिताये थे और सहसा कौंध जाते हैं वे क्षण, जिनसे उनकी दर्द-भरी स्मृति जुड़ी है। २५ मई, १९६२ की रात्रि। नागौर स्टेशन के पास एक सराय। हम व्यास जी को खोजते हुए छत के दूसरे सिरे पर जा पहुंचे। वहां वे सो रहे थे। उन दिनों देश-भर में रवीन्द्र शताब्दी समारोह चल रहा था। अन्तःप्रान्तीय कुमार साहित्य परिषद् की ओर से नागौर में समारोह का आयोजन किया गया था। साथ में कार्यकर्त्ता सम्मेलन भी था। व्यास जी को सम्मेलन का उद्घाटन करना था। हम लोगों को जोधपुर से पहुंचना था और व्यास जी दिल्ली से आने वाले थे। स्थानीय शाखा की ओर से कार्यकर्त्ताओं के ठहरने का प्रवन्ध स्टेशन के पास के एक सराय में किया गया था। व्यास जी को अपने साथ ले जाने के लिये अनेक अधिकारीगण और नगर के व्यापारी आदि तत्पर थे। व्यास जी हम लोगों से पहले ही पहुंच चुके थे। सभी आग्रह अनुरोध छोड़कर परिषद् के साथियों के साथ सराय में ही ठहरे। हम लोग जब पहुंचे तो पता चला कि व्यास जी आ गये हैं। एक सुखद आश्चर्य हुआ। हम लोग अधिक चिन्तित तो नहीं थे, पर आशंकाग्रस्त अवश्य थे कि ठीक समय पर व्यास जी को याद नहीं दिला सके हैं। कहीं वे भूल ही न जायं, यों जब कभी भी हमने उन्हें आमंत्रित किया वे आये, और आये भी समय से पूर्व ही। न जाने क्यों परिषद् पर आरम्भ से ही उनका बहुत स्नेह रहा। नारलाई अधिवेशन पर भी आये और राजस्थानी के सिम्पोजियम के अवसर पर भी। इतना अस्वस्थ होते हुए भी उनके आने की बात सुनकर प्रीतिकर विस्मय ही हुआ। हृदय कृतज्ञता से भर आया। कितना आह्लाद हुआ, इसे वही जान सकता है, जिसने समारोह संचालक के रूप में इस स्थिति का अनुभव किया हो, जो श्रोताओं के उठकर जाते वक्त मुख्य वक्ता के आ जाने से होती है।

हम व्यास जी के पास पहुंचे। काफी रात बीत चुकी थी। सोच रहे थे कि अब तो वे सो गये होंगे। जाकर जगाना तो ठीक नहीं, पर एक बार चलकर देख आने में ही कौन हानि है। पास पहुंचे तो वे सो रहे थे। हमारे साथ डा० देवराज उपाध्याय थे। उपाध्याय जी को देखते ही उठ खड़े हुए। दिल खोलकर मिले। इधर-उधर की बातें होने लगीं। परिषद् की प्रवृत्तियों की जानकारी देते रहे। साथ के लोग सोने चले गये। काफी रात बीत गई थी। हम भी उन्हें परेशान करना नहीं चाह रहे थे। अगले दिन के कार्यक्रम के बारे में थोड़ा विचार-विमर्श हुआ। पूछने लगे कार्यकर्त्ता सम्मेलन के अलावा क्या कार्यक्रम है। 'टैगोर पर साहित्यिक चर्चा' सुन-

कर बंगला की कुछ पंक्तियां गुनगुनाने लगे। शायद टैगोर की ही। हम सोने चले गये। दूसरे दिन जब टैगोर की बात चल पड़ी तो प्रसंगवश कहने लगे कि "राजस्थान में भी कोई टैगोर होता तो जाने कितनी समृद्धि हो जाती। टैगोर से पहले था भी क्या बंगला में? राजस्थानी की तो अपनी परम्परा भी कितनी समृद्ध है।"

"पर टैगोर को कितने लोग जानते थे, नोबल प्राइज से पहले।" मैंने प्रश्न किया तो कुशल हाज़िर जवाब के तौर पर बोले, "राजस्थानी का महत्त्व भी तो टैसीटोरी से ही सीखा है हमने। और ठहाका लगाकर हँस दिये। मैं सारी बातचीत डा० देवराज उपाध्याय को लिखकर बताता रहा। उन्होंने सन्देह के स्वर में व्यास जी से, "पूछा क्या सचमुच आप विश्वास करते हैं कि राजस्थानी को पुनर्जीवित किया जा सकता है, और क्या वैसा करना उचित भी होगा?" तो असंदिग्ध स्वर में बोले "हमें अपना विकास करने के लिये मातृभाषा का विकास करना होगा।" मैंने स्वाभाविक प्रश्न किया, "आप तो आयोग के सदस्य थे, राजस्थानी को कैसे भूल गये।" तो एकाएक गंभीर हो गये। मानो एक ऐसा भाव चेहरे पर छा गया, जो कह रहा था 'क्या उस नाजुक समय में प्रान्तीयता की प्रवृत्ति दिखाना उचित होता।' रुककर बोले, "दरअसल मैं राजस्थानी के सम्बन्ध में एक-एक बिल भी पेश करने वाला था, पर संयोग से नहीं हो सका। वह कार्य मैंने जोधपुर के संसद सदस्य श्री जसवन्त राज जी को सौंप दिया। फिर ऐन वक्त पर मालूम हुआ कि वे उसे भूल ही गये। फिर क्या हो सकता था?" पर क्षण-भर में वह भाव तिरोहित हो गया। मानो वे इस बात से आश्वस्त हों, कि भाषाएं कब कानून से पनपी हैं? कुछ ठहरकर बोले, "असल मैं जानता हूं राजस्थानी के कतिपय लोग इसी बात को लेकर मुझसे नाराज़ हैं। पर क्या किया जाय? लोगों ने मुझे समझा ही कब है?" एक निःश्वास छोड़कर शान्त हो गये। वह सेवा समर्पित व्यक्तित्व मानो इस तथ्य का अहसास कर आहत महसूस कर रहा था, कि जो कुछ उसने किया उसको संकीर्ण प्रान्तीय और क्षेत्रीय दृष्टि से ही देखा गया है। व्यापक आधार पर उसका मूल्यांकन हुआ ही कहां है? जनता की सेवा में जीवन समर्पित करने वाला जीवन की अन्तिम मंज़िल पर पहुंचकर पीछे मुड़कर देखे कि उसकी सेवाओं को सामूहिक कल्याण की दृष्टि से नहीं व्यक्तिगत हानि-लाभ के हिसाब से देखा जा रहा है, तो कितना आघात पहुंचेगा? उसकी कल्पना करने वाला ही व्यास जी के इस वाक्य का मर्म पहचान सकता है।

यह वाक्य मेरे मर्मस्थल को ऐसा बेध गया कि बस; कलेजे में चुभ जाये उसे ही तीर कहते हैं। यह वाग्बाण मेरे हृदय में चुभ गया। आज भी सोचता हूं तो लगता है, कितना दर्द भरा था, उस आह में कि, 'लोगों ने मुझे समझा ही कब है?' अपना सर्वस्व जनता की सेवा में समर्पित करने वाले का इससे बड़ा शिकवा और क्या होगा? वास्तव में यह बात सत्य है, कि व्यास जी के जीवन काल में कम लोग ही उनका सही महत्त्व आंक पाये थे।

प्रकरण ११

लिखरी स्मृतियाँ

१

गीता का आदर्श जीवन

पूज्य श्री १०८ स्वामी हरिहर जी महाराज, अध्यक्ष—गीता आश्रम, दिल्ली छावनी

श्री जयनारायण व्यास के साथ मेरा सम्पर्क बहुत पुराना और बहुत निकट का रहा है। उनके कर्मठ संघर्षमय जीवन को मैंने बहुत समीप से देखा और समझा है। संन्यास आश्रम में प्रवेश से पहले राजनीतिक संघर्षों में वह मेरे साथी रहे और हमने बहुत से मोर्चों पर साथी सैनिक के रूप में काम किया। यह बहुत कम लोग जानते हैं कि उनके जीवन की पृष्ठभूमि कैसी अध्यात्मवादी थी। गीता का यह आदर्श उनके जीवन पर अक्षरशः पूरा उतरता था कि :

"यश्यनाहं कृत्तो भावो बुद्धिर्यश्य न लिप्यते।
हत्वापि स इमाल्लोकान्न न हन्ति न हन्यते॥"

अर्थात् जिसमें कर्त्ता होने का अहंकार पैदा नहीं होता और जिसकी बुद्धि कर्मों में लिप्त नहीं होती, वह इस संसार में दूसरों को मारते हुए भी न तो किसी को मारता है और न किसी से मारा जा सकता है। गीता की यह अनासक्त भावना व्यास जी के जीवन में ओत-प्रोत थी। बड़े-से-बड़े राजनीतिक संघर्ष में न तो वह किसी के साथ व्यक्तिगत विरोध भाव या द्वेष भाव रखते थे और न उसमें उनका कोई निजी स्वार्थ ही रहता था। इस कारण जय-पराजय की भावना भी उनमें नहीं रहती थी। बड़े-से-बड़े कष्ट भोगते हुए भी वह कभी विषाद करते नहीं देखे गये और बड़ी-से-बड़ी सफलता पर भी हर्ष मनाते नहीं पाये गये। पद-प्रतिष्ठा और पैसा उनको अपने आदर्श से कभी डिगा नहीं सके। गीता के अनुरूप उनका आदर्श जीवन भारतीय जनता के लिये अनुकरणीय है।

२

पुष्करणा वीर

श्री ए० टी० वोहरा, आर्ई० एल० ओ० एक्सपोर्ट, स्माल इंडस्ट्री सर्विस इंस्टीट्यूट,
यू० एन० स्पेशल फंड प्रोजेक्ट, मोरातुवा, सीलौन (श्रीलंका)

श्रद्धेय व्यास जी के प्रति कुछ भी कहना या लिखना मेरे लिये प्राय: असम्भव है। मैं उनकी गोद में बच्चों की तरह पला और उनके चरणों में विनयशील विद्यार्थी की तरह बड़ा हुआ। उनके साथ मेरे जो पारिवारिक सम्बन्ध हैं, उनके कारण मैं उनके ऋण को कभी भूला नहीं सकता। पुष्करणा समाज पर उनके जो उपकार हैं, वे असाधारण हैं। सोते हुए समाज को उन्होंने जगाया, विठाया और प्रगति के मैदान में लाकर खड़ा कर दिया। उसमें उन्होंने स्वभिमान तथा स्वावलम्वन की जो भावना भरी, उससे उसकी दीनता व हीनता ऐसी दूर हुई कि प्रगतिशील समाजों में उसकी भी गणना की जाने लगी है। अन्य अनेक समाजों की तरह पुष्करणा समाज भी अनेक क्षेत्रों और अनेक सामाजिक भेदों में वटा था। सव भेद-भाव को दूर कर समस्त समाज में उन्होंने एकता व वन्धु भाव पैदा किया। उनके उपकारों को पुष्करणा समाज कभी भूल नहीं सकता। वह सच्चे अर्थों में 'पुष्करणा वीर' थे।

३

मेरी श्रद्धा भावना

श्री राजवहादुर जी, केन्द्रीय जहाजरानी मंत्री, ९ अकवर रोड, नई दिल्ली

लोकनायक श्री जयनारायण व्यास को मैं सदा पिता व गुरु की श्रद्धा दृष्टि से देखता रहा हूं। मेरा उनके प्रति यही व्यवहार रहा। १९३९-४० में भरतपुर के जन-आन्दोलन के सिलसिले में मैं उनके सम्पर्क में पहली वार आया। तव से लगभग चौथाई सदी तक मेरा उनके प्रति यह श्रद्धाभाव निरन्तर वैसा ही वना रहा। वह भी मेरे प्रति अटूट व अपार वात्सल्य भाव रखते थे। मेरी कमियों, कमजोरियों और भूलों के लिये सदा क्षमा ही करते रहे। उनकी अन्तिम वीमारी में मुझे उनकी सेवा करने का जो अलभ्य अवसर मिला, उसमें मैंने देखा कि उन्होंने घातक वीमारी के साथ भी वैसी ही वहादुरी से संघर्षमय जीवन में काम लेते रहे। उनके प्रति मैं श्रद्धाभाव से आज भी नतमस्तक हूं।

४

जोधपुर और शेखावाटी : दुर्वासा का रूप

सरदार हरलालसिंह जी, अस्पताल मार्ग, जयपुर (राजस्थान)

'समानशीलव्यसनेषु सख्यम्' संस्कृत की यह उक्ति व्यास जी के साथ मेरे संबंध पर बिलकुल ठीक बैठती है और इसी कारण उनके साथ कायम हुआ मेरा सम्बन्ध उत्तरोत्तर घनिष्ट ही होता गया। उनके अनेक निकटस्थ साथियों की अपेक्षा मेरा और उनका परिचय इतना अधिक पुराना न था। फिर भी मैं अपने को उनकी अपेक्षा उनके अधिक नज़दीक अनुभव करता था। वे जब जोधपुर राज्य में घोर संघर्ष में लीन थे, तब मैं शेखावाटी में उसी प्रकार के संघर्ष में लगा था। शेखावाटी की उन दिनों की परिस्थितिया जोधपुर राज्य से भी कहीं अधिक निराशापूर्ण थीं। उनको जिन परिस्थितियां ने 'विद्रोही' बनाया था, उन्हीं से मैंने भी विद्रोह का पहला पाठ पढ़ा था। यह भी एक सुयोग ही है कि शेखावाटी और जोधपुर दोनों में जन-जागृति का शुभ श्रीगणेश समाज-सुधार के आंदोलन से हुआ।

एक सरीखा वातावरण

शेखावाटी की स्थिति राजस्थान में कुछ ऐसी थी, जैसे कि एक बड़े मकान के एक कमरे को चारों ओर से ऐसा बन्द कर दिया जाय कि उसमें बाहर से हवा और रोशनी आना भी बन्द हो जाय। शेखावाटी का सारा क्षेत्र जागीरों में बंटा था और जोधपुर राज्य का ८२ प्रतिशत क्षेत्र जागीरदारी था। जागीरदारों का घोर आतंक चारों ओर छाया हुआ था। ऐसे दमघोटू वातावरण में जन-जागृति का जो शुभ श्रीगणेश हुआ, वह जोधपुर की जन-जागृति के इतिहास से भी अधिक रोचक और रोमांचक है।

स्वर्गीय देवीबख्श जी सराफ

मंडावा के सेठ देवीबख्श की सराफ को शेखावाटी की जन-जागृति का पितामह कहना चाहिए। उन्होंने १९२४-२५ के लगभग तिलक सेवा समिति की स्थापना की और अनेक स्थानों पर उसकी शाखाएं कायम हो गईं। समिति की ओर से अधिकतर समाज-सेवा और समाज-सुधार का ही काम किया जाता था। फिर भी जागीरदारों के कान खड़े हो गये और वे उसके मार्ग में भी रोड़े अटकाने लगे। छोटी-मोटी बातों को लेकर उनके साथ संघर्ष शुरू हो गया। उनमें इतनी सफलता मिली कि लोगों में उनकी ज़्यादातियों के विरुद्ध मुंह खोलने का साहस पैदा हो गया और काम करनेवालों की हिम्मत बढ़ गई। १९२५ में पुष्कर में भरतपुर के महाराजा कृष्णसिंह जी की अध्यक्षता में जाट महासभा का जो अधिवेशन हुआ, उसकी प्रतिक्रिया शेखावाटी में बहुत शुभ हुई। वहां हमारा जो जत्था गया, वह एक ही वेशभूषा पहने था। वहां से जनेऊ पहनने का जो आंदोलन शुरू हुआ, उसका

भी जागीरदारों ने विरोध किया। मैंने तो अपनी स्त्री को भी जनेऊ पहना दिया था। उनपर जागीरदार इस बुरी तरह बौखला उठे कि उन्होंने जनेऊ पहनने के भी विरोध में लोगों को भयभीत करना शुरू कर दिया। हम दबे नहीं। निडर हो समाज-सुधार के काम में लगे रहे। पुष्कर में महाराजा कृष्णसिंहजी का भाषण बड़ा ही जोरदार हुआ। उनकी दो बातों का मुझपर बड़ा गहरा असर पड़ा। एक तो यह कि महाराजाओं की कोई जाति नहीं होती और दूसरी यह कि अब भारत में विदेशी शासन नहीं रह सकता। वहां महामना पंडित मदनमोहनजी मालवीय के भी भाषण का मुझपर विशेष असर पड़ा। उन्होंने कहा था कि भारत का भविष्य मेहनत-मजदूरी करनेवालों पर निर्भर है; परन्तु उनमें शिक्षा का जो अभाव है, वह प्रगति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है। हमने वहां से लौटकर शिक्षा का काम हाथ में लिया और शेखावाटी में कितने ही छोटे-बड़े स्कूल खोल दिये। मैंने अपने गांव हनुमानपुरा में भी एक स्कूल खोल दिया। इसके लिये भी हमको बड़ा संघर्ष करना पड़ा।

एक ओर समाज-सुधार का यह काम चल रहा था, तो दूसरी ओर राजनीतिक जागृति भी अपने तरीके से पैदा हो रही थी। हमने यह तय किया कि अपने को जागीरदारों के विरुद्ध जयपुर राज्य के यहां दरखास्त देकर जागीरदारों को आरोपी बनाना चाहिए। इसी आधार पर एक 'बड़ी मिशल' आंदोलन शुरू हुआ और उस पर हजारों किसानों के हस्ताक्षर लिये गये। उग्र स्वभाव के कुछ लोगों ने बम तक बनाने के परीक्षण किये। उसके लिये बड़े-से-बड़े खतरे उठाये। मैं भी उनमें शामिल था। एक दिन एक बम फट गया और एक लड़का घायल हो गया। उसके बाद हमने वह काम बन्द कर दिया।

शेखावाटी में बाहर की दुनिया की कोई खबर न आती थी। अखबार पढ़ना लोग जानते ही न थे। फिर भी थोड़ी बहुत जानकारी इधर-उधर से आती रहती थी। यह सिलसिला १९३५-३६ तक इसी तरह चलता रहा। १९३७ में देशभक्त सेठ जमनालालजी बजाज ने जयपुर राज्य प्रजामण्डल की स्थापना की। उसका पहला अधिवेशन जयपुर में किया गया। उसमें शेखावाटी के लोग काफी बड़ी संख्या में उपस्थित हुए और यहां से खुले रूप में राजनीतिक जागृति तथा संगठन का श्रीगणेश हुआ समझना चाहिए।

पहली मुलाकात

श्री जयनारायण व्यास का नाम तो मैंने बहुत पहले सुन रखा था। लेकिन देसी राज्यों का जन-आन्दोलन अलग-अलग राज्यों में इस तरह सीमित था कि एक राज्य वाले दूसरे राज्य के संगठन, आन्दोलन, कार्यकर्त्ताओं तथा नेताओं से कुछ अधिक परिचित नहीं थे। इसी कारण व्यास जी से हम लोगों का परिचय न हुआ था। सम्भवतः १९३७ की बात है, मैं श्रीयुत श्रीनिवास जी बगड़का के निमंत्रण

पर वम्वई गया था, तब व्यास जी भी वम्वई पधारे थे। हम दोनों को सीताराम वालिका विद्यालय में ठहराया गया था। वहां पहली बार हम दोनों एक-दूसरे से मिले। संघर्षशील विद्रोही स्वभाव के कारण हम दोनों एक-दूसरे के साथ कुछ ऐसे घुलमिल गये, जैसे कि वर्षों का पुराना परिचय या सम्बन्ध हो।

व्यास जी ने उन्हीं दिनों में अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् का काम उसके प्रधानमंत्री के नाते संभाला हुआ था। तब तक उनका काम अधिकतर दक्षिण भारत और कुछ गुजरात व सौराष्ट्र तक सीमित था। व्यास जी को ही इसका श्रेय दिया जाना चाहिए कि उन्होंने उसके कार्यक्षेत्र का विस्तार राजस्थान, मध्यभारत, पंजाव तथा कश्मीर तक कर दिया और इन सबके कार्यकर्त्ताओं में भाईचारे की भावना पैदा कर दी। सब एक-दूसरे के आंदोलन में दिलचस्पी लेने लग गये।

दुर्वासा का रूप

व्यासजी के साथ वीती घटनाओं की चर्चा विस्तार में क्या की जाय। उनका स्वभाव विल्कुल वच्चों का-सा था। नाचने-गाने में खूव मस्त रहते थे। गंभीर-से-गंभीर परिस्थिति में भी नाच-गाकर वे अपने को हलका कर लेते थे। इस सम्वन्ध में एक प्रसंग का उल्लेख मैं अवश्य करना चाहता हूं। जोधपुर के प्राइम मिनिस्टर के पद से हटने के वाद उन पर विशेष अदालत के सामने जव मुकदमा चलाया गया तव मेरे विचार से उनके जीवन में सवसे अधिक विषम परिस्थिति पैदा हुई होगी। हम कुछ साथी उससे वड़े वेचैन थे। हमने वीच-वचाव करने का घोर प्रयत्न किया। एक बार व्यास जी को लेकर हम कुछ साथी सरदार पटेल से मिलने के लिये देहरा-दून इस विचार से गये कि उसका कोई हल ढूंढ़ा जाय। सरदार पटेल से मिले, तो उन्होंने क्रोध और आवेश में कुछ अपमानास्पद व्यवहार किया। हम बुरी तरह निराश होकर लौटे। कुछ दिन की वात है कि मैं दिल्ली में व्यास जी के यहां फिरोजशाह रोड पर ठहरा हुआ था। व्यास जी मुकदमे की पेशी के लिये जोधपुर गये। तो मैंने श्री माणिक्लाल जी वर्मा से चर्चा की कि मुकदमे के सम्वन्ध में एक वार हमें फिर प्रयत्न करना चाहिए। तय हुआ कि सरदार पटेल को एक पत्र लिखा जाय। वर्मा जी, मा० आदित्येन्द जी और मैंने मिलकर वह पत्र लिखा। उत्तर के लिये पता व्यास जी का ही दे दिया गया। सरदार ने हम सवको व्यास जी के साथ मिलने को वुलाया। इसी वीच मैं वर्माजी के यहां रहने को चला गया।

व्यास जी के जोधपुर से लौटने पर मैं उनसे मिलने और सरदार को लिखे पत्र के जवाव के वारे में जानकारी लेने गया। सवेरे का समय था। व्यास जी चाय पी रहे थे। मुझे देखते ही उनका पारा चढ़ गया। गुस्से की आवाज़ में धमकाते हुए मुझे वोले, तुम मेरे विरुद्ध षड्यंत्र रचते हो और अपना सामान लेकर वर्मा जी के यहां चले गये हो। जाओ यहां से। मैं तुमसे वात नहीं करता।

मैंने हंसते हुए कहा कि, ऐसी क्या बात हो गई। आज आप अच्छी चाय पिला रहे हैं।

उनका गुस्सा और अधिक तेज़ हो गया और बोले कि सरदार के सामने मुझे नीचा दिखाने के लिये तुम लोगों ने मेरी अनुपस्थिति में पत्र लिख डाला।

मैं बोला कि यदि कोई षड्यंत्र होता, तो हम आपके पते पर जवाब क्यों मंगाते ?

वे बुरी तरह झुंझलाकर बोले तुम जाओ सरदार से मिलो। मैं नहीं जाऊंगा। जब लड़ना ही है, तो अखिर तक लड़ा जायगा।

व्यास जी का दुर्वासा रूप देख मैं घबरा गया। मैंने देखा कि सारा मामला बिगड़ रहा है और हमारा दाव विफल हो रहा है। परन्तु ऊपर से मैं हंसता ही रहा। व्यास जी के गुस्से को शान्त करने का प्रयत्न करता रहा। थोड़ी देर में वे शान्त हुए और मुझे अपने पास बिठाकर चाय पिलाई। घंटों की मेहनत के बाद मैंने उनको सरदार के यहां चलने को सहमत कर लिया।

हम सरदार से मिले। उस समय की बातचीत और सरदार के बदले रुख की चर्चा यहां क्या की जाय। उनका भाव यह था कि मैंने स्थानीय स्थिति को समझ लिया और राजस्थान को तो किसी प्रकार संभालना ही होगा। हम पूरी तरह सन्तुष्ट होकर लौटे। नाटकीय ढंग से सारी परिस्थिति एकाएक बदल गई। व्यास जी भी पूरी तरह सन्तुष्ट हो लौटे और फिरोजशाह रोड में अपने निवास स्थान पर आकर बोले कि आज रात को तांडव नृत्य होगा। रात को शिवजी का पूरा साज-शृंगार हुआ। व्यास जी ने तांडव नृत्य करके अपने को और हम सबको ऐसा हलका कर दिया, जैसे कि कुछ था ही नहीं। यदि कोई दूसरा होता, तो जोधपुर के मुकदमे के भार से वह सदा के लिये ऐसा दब गया होता कि उसका फिर से उभरना सम्भव ही न रहता। यह तो व्यास जी का ही साहस और स्वाभिमान था कि वे उस भीषण संकट का डट कर सामना कर गये।

आत्मीय व्यवहार

एक बात उनकी आत्मीयता की मैं भी यहां लिख दूं। जयपुर में अस्पताल मार्ग पर कुछ मित्रों ने किसी तरह मेरे लड़के के नाम से मेरे लिये भी एक प्लाट की व्यवस्था कर दी और अहमदाबाद में जहां वह नौकरी पर था, वहां से पेशगी रुपया लेकर उसकी पहली क़िस्त भर दी। मैंने सवा सौ रुपये महीने की किराये की बचत करने के लिये वहां कच्ची-पक्की व्यवस्था करके रहना शुरू कर दिया। उस समय वह स्थान प्रायः उजाड़-सा था और रात को गीदड़ों की आवाज़ भी सुनने में आती थी। व्यास जी का स्वभाव यह था कि जब किसी के यहां जाते, तो बाहर से ही बच्चों को पुकारते और उनके साथ खेलते हुए घर में प्रवेश करते। मेरे यहां एक दिन मेरी लड़की ने कह दिया कि मैंने उनको ऐसी जगह लाकर ठहरा दिया

है, जहां किसी दिन उसके बच्चे को गीदड़ उठा ले जायेंगे। उन्होंने इस बात को लेकर मित्रों में मुझे हँसी-मज़ाक का ऐसा मोहरा बना लिया कि मुझे देखते ही गीदड़ की आवाज़ कर मेरा मज़ाक उड़ाना शुरू कर देते। इस प्रकार मेरा मज़ाक करते हुए वे अपने मुख्यमन्त्री के रूप और उसकी गम्भीरता को भी भूल जाते थे। यह था उनका अपना विशुद्ध रूप, जिसको वे कभी न भूले थे। ऐसे कितने ही प्रसंग उनके हर मित्र के साथ उपस्थित हुए होंगे और मेरे साथ तो उनका यह मजाक हमेशा ही चलता था।

एक बार हम लोग अहमदाबाद में कांग्रेस महासमिति के अधिवेशन से उनके साथ लौटकर नई दिल्ली में उनके यहां ठहरे। हमारा तांगा आगे था और उनका पीछे-पीछे। घर लौटकर बड़ी गम्भीरता से बोले कि तांगे पर तुम दोनों को बैठा देख यह जानना व पहचानना मुश्किल था कि तुम दोनों में सरदार कौन है और सरदारनी कौन। यह था उनका खुला आत्मीय भाव और व्यवहार। इसको भी उन्होंने कई दिनों तक मजाक का विषय बनाये रखा।

मेरे साथ उनका आजीवन ऐसा ही आत्मीय व्यवहार बना रहा। आज जब उनकी याद आती है, तब ऐसा प्रतीत होता है, जैसे कि मेरा अपना ही कोई निकट-सम्बन्धी बिछुड़ गया हो।

५

व्यास जी और जोबनेर कृषि कालेज

श्री जीवनमल जी जैन, जैन भवन, जोबनेर बाग, जोधपुर (राजस्थान)

सन् १९५५ की बात है। एकाएक राजस्थान सरकार ने जोबनेर के जागीरदार रावल नरेन्द्रसिंह द्वारा संचालित 'कृषि कालेज' को उदयपुर स्थानान्तरित करने की न केवल घोषणा कर दी; अपितु उसके आचार्य श्री ए० एस० राठौड़ को उदयपुर के लिये नियुक्त कर दिया। वह निर्णय राज्य सरकार ने जोबनेर की जागीर ग्रहण के वक्त किया, क्योंकि जागीर के साथ-ही-साथ सरकार को उनके द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाएं भी सम्भाल कर अपने नियंत्रण में चलानी थीं। ऐसी स्थिति में जोबनेर के नागरिक एवं क्षेत्र की जनता बेसहारा होकर भटक रही थी।

एक संघर्ष समिति का गठन किया गया, जिसका लेखक मंत्री था और संघर्ष को बलशाली बनाने के लिये प्रान्त के प्रमुख नेताओं से मिलकर सहयोग प्राप्त भी

मुझे ही करना था। हमारा कालेज चलता रहा और संघर्ष भी। एक दिन सम्भवतः ७ जुलाई, १९५९ को जोबनेर से कालेज के समस्त छात्रों और अध्यापकों को बसों से और साज-समान को ट्रकों में भरकर उदयपुर रवाना कर दिया गया। जोश के साथ चल रहा संघर्ष समाप्त हो गया। संघर्ष के नेता हौसला खो बैठे। मेरे स्वयं के हाथ-पांव निर्जीव और दिमाग शून्य हो गया। मैं जयपुर में जोबनेर बाग में रावल साहब के यहां बैठा था। मुझे कुछ नहीं सूझा तो भागकर अशोक होटल के पास वाले व्यास जी के निवास स्थान पर गया। सौभाग्य था कि व्यास जी मूढ़े पर बैठे एक पुस्तक पढ़ रहे थे। मुझे देखते ही कहा, "इस वक्त कैसे आया है नेता ?" वे प्रायः मुझको 'नेता' या 'जोबनेर का शुभाप' कहा करते थे। रात के दस बज रहे थे। इस कारण उस समय पहुंचने पर आश्चर्य करना स्वाभाविक था। मेरे से कुछ कहा नहीं गया और रोते-रोते हिचकियां बंध गईं, तो उन्होंने गम्भीर होकर कहा, "इसी भरोसे नेता बने फिरते हो। इसी भरोसे कालेज सरकार की इच्छा के खिलाफ रखने का ख्वाब देख रहे हो।"

जब मैं कुछ शान्त हो सका, तब मैंने सारी बात कह दी। व्यास जी गंभीर हो गये। मुझे उन्होंने कुछ नहीं कहा और तुरन्त फोन पर गये। किसी से उन्होंने बात-चीत की। बातचीत मैं नहीं सुन पाया। मगर यह सही है कि व्यास जी फोन करके आये तब वह तेज गुस्से में थे। मुझसे बात भी नहीं की और कह दिया जोबनेर चले जाओ। देखो सवेरे तक लड़के व सामान वापस आता है या नहीं।

मैं सवेरे जोबनेर पहुंचा तो वहां लड़के वापस आ चुके थे और सामान ट्रकों से उतारा जा रहा था। सभी को आश्चर्य था, अपने शुभचिन्तक नेता की करनी पर। वापस जयपुर पहुंचकर व्यास जी के सामने खड़ा हो गया, जब कुछ नहीं बोल सका, तब उन्होंने पूछा भाई बोलो तो सही लड़के व सामान वापस पहुंचा या नहीं। मैं केवल यह कह सका "पहुंचता कैसे नहीं ?"

इसके बाद उन्होंने सारे संघर्ष की रूपरेखा बनाई। मुझे उस समय के कांग्रेस अध्यक्ष ढेबर भाई से मिलाया। सारा केस उनको समझाया और श्रद्धेय व्यास जी के प्रयत्नों से अढ़ाई वर्ष में संघर्ष सफलता के साथ समाप्त हुआ। जोबनेर की जनता उनके इस उपकार को कभी भूल नहीं सकती।

६

उनकी स्मृति

श्री कन्हैयालाल जी खादीवाला, इन्दौर (म० प्र०)

मुझे अजमेर जेल में उनके साथ रहने और अजमेर प्रान्तीय कांग्रेस तथा देशी-राज्य लोकपरिषद् में कार्य करने का अवसर मिला था। उन दिनों के निकट निवास के कारण हम दोनों में बड़ा स्नेह पैदा हो गया था। वे बड़े ही विनोदी, हँसमुख और मिलनसार थे। उन्होंने फाकेमस्ती में अपना जीवन विताया। संगीत-नृत्य में वे काफी प्रवीण थे। उनकी एक विशेषता यह थी कि वे जब कभी कोई कार्य करने का निश्चय कर लेते तब उसको पूरा किये विना दम नहीं लेते थे।

संसद के सदस्य के नाते जब भी कभी वे संसद भवन में मिलते तब उनके साथ बैठकर खूब चर्चा होती थी, तब वे प्रायः यही कहा करते थे कि खादीवाला जी जो काम हमने उस मुफलिस और फाकेमस्ती में किया, उसका जो आनन्द व मजा मिला, उसको आपके नये कार्यकर्त्ता अनुभव नहीं कर सकते। आज वे हमारे बीच नहीं रहे, किन्तु जब भी उनकी याद आती है तो उनका चित्र हमारे समक्ष आकर हमें उत्साह और प्रेरणा देता रहता है।

७

वज्रादपि कठोराणि

श्री ज्वालाप्रसाद जी शर्मा, एम० एल० ए०, अजमेर (राजस्थान)

सन् १९३१ से ३४ के बीच का समय होगा। श्रद्धेय जयनारायण जी व्यास का कार्यक्षेत्र तब राजस्थान का मुख्य नगर अजमेर था। जहां तक मुझे स्मरण है शायद ही कोई राजस्थान का ऐसा नेता मैंने उन दिनों देखा होगा जो व्यास जी की बराबरी कर सकता। व्यास जी की यह विशेषता थी कि वे सार्वजनिक जीवन में छोटे-से-छोटा और बड़े-से-बड़ा साहसपूर्ण कार्य करने में कभी नहीं झिझके। एक ओर वे अपने कन्धे पर तिरंगा झण्डा लेकर चलने में गौरव अनुभव करते थे, तो दूसरी ओर बच्चों को गोलियां बांटकर खुले आम ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध नारे लगवाते थे। सच कहा जाये तो यह गुण मेरे जीवन-निर्माण में काफी सहायक हुआ।

१९४६ के फरवरी माह की बात होगी। मैं अजमेर जेल से छूटकर आया ही था। उन्हीं दिनों जोधपुर से भाई अचलेश्वर प्रसाद शर्मा किसी कार्यवश अजमेर

आये। उनसे मेरा पारिवारिक सम्बन्ध होने के कारण हर मामले में खुलकर चर्चा होती थी। उन्होंने विस्तृत चर्चा के दौरान में दुःख-भरे शब्दों में बताया कि जोधपुर रियासत की अन्तरिम सरकार में व्यास जी का मंत्री पद सम्भालना जनता ने अच्छा नहीं समझा।

संयोगवश थोड़े दिन बाद मज़दूर आन्दोलन के सिलसिले में मैं उज्जैन गया। व्यास जी का कन्हैयालाल वैद्य के साथ गहरा सम्बन्ध था और मेरा भी अच्छा परिचय था। मैंने बातों ही बातों में वैद्य जी से कह डाला कि व्यास जी मंत्री पद सम्भालने की प्रतिक्रिया जनता में कुछ अच्छी नहीं हुई है। मेरा उल्लेख करते हुए वैद्य जी ने वह बात व्यास जी से कह दी। कुछ समय बाद राजस्थान के उग्रपंथी नेता स्व० बाबा नृसिंहदास जी और व्यास जी किसी कार्यवश एक साथ अजमेर आये। उन्होंने अजमेर की सराय (एडवर्ड मेमोरिया) में डेरा डाला। पहले व्यास जी जब भी अजमेर आते तो प्रायः मेरे ही यहां ठहरा करते थे। ज्यों ही मुझे पता चला मैं मेमोरियल पहुंचा, लेकिन व्यास जी ने मुझसे बात भी न की। जो व्यास जी सदा आत्मीयता और स्नेह से मिलते थे वे ही इतने रुष्ट हो जायंगे, इसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। फिर भी मैं यों हार मानने वाला नहीं था। मैंने वहां खड़े एक मजदूर को आवाज़ दी और दोनों नेताओं का सामान उठवा कर अपने घर ले चलने को कहा।

फिर क्या था, व्यास जी और बाबा जी भी साथ हो गये। घर पहुंचने पर मैंने व्यास जी, से पूछा, आखिर आप मुझ से इतने नाराज़ क्यों हैं? व्यास जी ने स्नेह-भरे शब्दों में उत्तर दिया कि यदि तुमको कुछ कहना ही था, तो सीधा मुझसे क्यों नहीं कहा। मैं तुरन्त समझ गया कि मैंने उज्जैन में वैद्य जी को कुछ कहा उसी की यह प्रतिक्रिया है। मैंने पाया कि व्यास जी ऊपर से जितने कठोर हैं, उतने ही अन्दर से कोमल हैं। उनके सार्वजनिक जीवन में भी ऐसे कितने ही प्रसंग उपस्थित किये जा सकते हैं, जब उनके रोष को दूर कर उन्हें सन्तुष्ट करने में ज़रा भी समय न लगता था।

८

उनके अभाव की पूर्ति सम्भव नहीं

श्री रावतमल जी कोचर ऐडवोकेट, बीकानेर (राजस्थान)

व्यास जी के साथ मेरा बहुत निकट सम्पर्क रहा है। अपने साथ घटी केवल एक घटना को लिखना श्रेयस्कर समझता हूं।

जीवन में अनेक आदमियों से मिलने, उनके साथ रहने का अवसर आया। लेकिन आचरणवान आदमी कठिनता से ही जन्म लेता है। सन् १९५४ के सितम्बर माह की बात है, श्रद्धेय व्यास जी ने एक निर्भीक पुरुषसिंह की भांति, इस बात को भली-भांति जानते हुए कि विश्वास का प्रस्ताव विधान-सभा में इस समय रखना उनके लिये अनिवार्य नहीं है। अपनी शक्ति को पूरे तौर पर लाने के पश्चात् अनुकूल वातावरण में रखा जा सकता है। फिर भी एक सिद्धान्तवादी की भांति विश्वास का प्रस्ताव विधान-सभा में रखा और उनकी यह शीघ्रता ही उनकी पराजय का कारण बनी। विश्वास का प्रस्ताव स्वीकृत न हो सका और व्यास जी को मुख्यमंत्री पद त्यागना पड़ा। उसी दिन रात्रि को दस बजे उनके निवासस्थान पर मुझे जाने का अवसर मिला। उससे पहले बीकानेर में अनाज निकासी आंदोलन व्यास जी के मुख्यमंत्री काल में हो चुका था। वह एक बहुत बड़ा जन-आन्दोलन था और बीकानेर की सारी जनता राज्य सरकार के विरुद्ध बगावत कर चुकी थी। २१ दिन की पूर्ण हड़ताल इस बात की द्योतक थी कि बीकानेर की जनता राज्य सरकार के अन्न निकासी के कारण सर्वथा विरुद्ध हो चुकी थी। इस आन्दोलन को चलाने के लिये जन-संघर्ष समिति बनी थी, मैं उसका अध्यक्ष था। उसके कारण मेरे प्रति व्यास जी का रुष्ट होना स्वाभाविक था। लेकिन उस महापुरुष के लिये वह बात बहुत छोटी थी। ज्यों ही मैं उनसे मिला वे गले लगाकर मिले। विगत बातों को भुलाकर उन्होंने मुझे उसी प्रकार गले लगाया, जिस प्रकार कि इस आन्दोलन से पहले मेरे साथ बर्ताव किया करते। मुझसे अपने एक बहुत ही आवश्यक कार्य हेतु कई महानुभावों के साथ दिल्ली जाने को कहा। मेरा क्या साहस हो सकता था कि मैं उनका आदेश न मानता। मैंने दिल्ली जाना स्वीकार किया। उन्होंने अपने बहुत ही गुप्त पत्र मेरे हवाले किये।

रात के ग्यारह बज चुके थे। गाड़ी बारह बजे रवाना होकर सुबह दिल्ली पहुंचने वाली थी। उस समय अर्थाभाव के कारण मैं एकाएक असमंजस में पड़ गया। मेरे पास सिर्फ पचास से पचहत्तर रुपये तक की ही राशि थी, जो अपर्याप्त थी। इस राशि से रेलवे के टिकट लेने भी सम्भव नहीं थे और समयाभाव के कारण कहीं से लाना भी सम्भव नहीं था। सिवाय इसके और कोई रास्ता न था कि मैं व्यास जी से ही याचना करता।

मैंने बहुत धीरे से शंकित अवस्था में दो सौ रुपये उनसे यह कहकर मांगे कि कुछ समय पश्चात् बीकानेर जाकर भेज दूंगा। व्यास जी भी संकोच में पड़ गये और इधर-उधर की बातें कर टालने की इच्छा में रहे ताकि मुझे इस बात का ज्ञान न हो सके कि व्यास जी के घर में जो राजस्थान राज्य के मुख्यमंत्री हैं, दो सौ रुपये का अभाव है। उनकी स्थिति छिपी न रह सकी। उस विषम स्थिति में अपने एक मित्र को बुलाकर मेरे सम्मुख दो सौ रुपये की उससे याचना की।

मैं एकदम चकित-सा मूर्तिवत् होकर उनकी ओर देखता रह गया। मेरे मन पर उस आचरण की एक अमिट छाप पड़ी कि क्या राजस्थान जैसे प्रान्त के मुख्य-मंत्री होते हुए उनके पास दो सौ रुपये तक का अभाव है? इस छोटी-सी घटना से ही यह स्पष्ट प्रकट है कि व्यास जी कैसे निर्लेप और अपरिग्रही थे। उनको अर्थ का लोभ छू तक न सका था। गृहस्थ जीवन में रहने वाले पुरुषों के लिये त्याग की चरम सीमा थी। मुझे उसी वक्त यह भान हुआ कि ऐसे महापुरुष का ऐसे समय में जब कि इस देश में भ्रष्टाचार ने अपने पूरे पंजे जमा रखे हैं, राजस्थान की राजनीति से दूर होना बहुत ही घातक होगा। होनहार की बात है जो होना था वह हुआ और राजस्थान उनके नेतृत्व से वंचित हो गया।

यह घटना उनकी महानता व मानवता की द्योतक है। ऐसे महापुरुषों का हमारे बीच से हमेशा के लिये उठ जाना एक ऐसी कमी है, जिसकी पूर्ति कभी नहीं हो सकती।

६

उनका स्वाभिमान

श्री नरसिंह दास जी लूकड़, जोधपुर (राजस्थान)

आज से ठीक ३६ वर्ष पूर्व की बात है, जब मैं १६ वर्ष का था, मेरा लोकनायक से राजनीतिक सम्पर्क हुआ। उसके पूर्व मैं उनको समाज-सुधारक के रूप में ही देखता था। वे पुष्करणा ब्राह्मण नवयुवक मंडल के प्रवर्त्तक थे। सब जातियों के योग्य कार्यकर्त्ताओं की व्यास जी की एक टोली थी। उसमें से ही कुछ समय बाद कुछ कार्यकर्त्ता राजनीतिक क्षेत्र में आये। उनमें सर्वश्री सेठ आनन्दराज जी सुराणा, भंवरलाल जी सराफ, हेमचन्द जी छांगाणी, गोपीकिशन मूंधड़ा, प्रयागराज भंडारी आदि थे।

आन्दोलन की तैयारी

व्यास जी जोधपुर राज्य के कुछ वेहूदा कानूनों, जैसे टाइपराइटर एक्ट, प्रेस एक्ट और राजद्रोहात्मक कानून के खिलाफ आन्दोलन का सूत्रपात करने की तैयारी में लीन थे। वे तव व्यावर से 'तरुण राजस्थान' साप्ताहिक का सम्पादन किया करते थे। जिसका राजस्थान को कई रियासतों में प्रवेश निषेध था। व्यास जी ने अपने कुछ साथियों के समक्ष उस आन्दोलन की रूपरेखा रखी। उनमें यह लेखक भी शामिल था। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में जो कुछ कहा था, वह आज भी मेरे कानों में गूंज रहा है। उन्होंने कहा था कि अगर आप लोग हिम्मत व साहस से आगे बढ़ें, तो कोई शक्ति ऐसी नहीं जो आपको अपने रास्ते से विचलित कर सके। एक तरफ व्यास जी व उनके साथी आन्दोलन की तैयारी कर रहे थे, दूसरी तरफ मिनिस्टर इनवेटिंगराव राजा नरपतसिंह जी थे, उसको जड़मूल से उखाड़ने की तैयारी में थे। उन्होंने सवसे प्रथम व्यास जी को गिरफ्तार कर अज्ञात स्थान में भेज दिया। साथ ही सेठ सुराणा जी और भंवरलाल जी सराफ को भी गिरफ्तार कर लिया। वड़ा लम्बा मुकदमा नागौर किले में चला। मुकदमे की पैरवी वकीलों के साथ व्यास जी स्वयं करते थे। मुझे खूब अच्छी तरह याद है कि एक जज महोदय ने कहा कि यह मुकदमा तो एक स्वांग मात्र है। किसी प्रकार सजा तो दिलवानी है। अतः हमको साधन बनाया गया, उस मुकदमे में व्यास जी और उनके साथियों को पांच-पांच वर्ष की सजाएं और जुर्माना किया गया। सजा के विरोध में जगह-जगह हड़तालें व विरोध सभाएं हुईं। जोधपुर स्टेट में १४ गिरफ्तारियां हुईं, जिनमें लेखक भी शामिल था।

जोधपुर का '४२ का आन्दोलन

'अंग्रेजो भारत छोड़ो' आन्दोलन जब शुरू हुआ, तब जोधपुर राज्य के कार्यकर्त्ता जेलों में वन्द थे। एक प्रभावशाली कार्यकर्त्ता ने राज्य के दीवान सर डोनाल्ड के इशारे पर माफी आन्दोलन का सूत्रपात किया। उस आन्दोलन से व्यास जी बड़े चिंतित हो गये और अपने साथियों को जेल में दृढ़ वने रहने का परामर्श देते रहे। कुछ साथियों को क्षमा मंगवाने के लिये पैरोल पर भी छोड़ा गया। परन्तु व्यास जी की दृढ़ता के कारण माफी आन्दोलन सफल न हो सका। राज्य के दीवान सर डोनाल्ड फील्ड यह कहा करते थे कि जब तक व्यास का प्रभाव वना रहेगा, ऐसे आन्दोलन असफल ही रहेंगे।

जोधपुर का ऐतिहासिक मुकदमा

राजस्थान संघ के निर्माण के वाद १९५० में व्यास जी और उनके साथियों पर सरदार पटेल के प्रकोप के कारण जो संगीन मुकदमा चलाया गया था. उसमें गुजरात के एक धनी-मानी प्रभावशाली सेठ ने मध्यस्थता करने की व्यास जी से इच्छा प्रकट की और उनको विश्वास दिलाया कि उनको सरदार के पास ले

जाकर मुकदमा वापस लिवा देंगे। परन्तु व्यास जी ने साहसपूर्ण शब्दों में कह दिया कि सरदार हो या भगवान्, व्यास किसी के भी सामने अपना स्वाभिमान खोना नहीं सीखा। मैं बड़ी से बड़ी आपत्ति के सामने भी सिर नहीं झुकाऊंगा। इस पर उनके मित्र ने उनसे कहा कि आप इस अग्नि परीक्षा में कुन्दन बनकर निकलेंगे और अन्त में सरदार के हृदय को भी आप जीत लेंगे।

व्यास जी का यह उत्कृष्ट चरित्र और चट्टान की-सी दृढ़ता उनके सारे जीवन में हीरे की तरह चमकती दीख पड़ती थी।

रिश्वत का एक अद्भुत मामला

सन् ५३ में वे गोड़वाड़ के एक नगर में किसी सेठ द्वारा बनाये गये अस्पताल का उद्घाटन करने गये तो कार्यकर्त्ताओं की बैठक में गोड़वाड़ जैन पंचायत के कुछ कार्यकर्त्ताओं ने यह शिकायत की कि व्यास जी आपके मुख्यमंत्री होते हुए इस पंचायत को अपने सम्मेलन का सामूहिक भोजन करने की आज्ञा प्राप्त करने के लिये हजारों रुपये खर्च करने पड़े हैं। इस बात की विस्तृत जानकारी व्यास जी ने उन कार्यकर्त्ताओं से चाही, मगर उन्होंने प्रभावशाली लोगों के डर से विस्तृत विवरण देने से इन्कार कर दिया। पर व्यास जी को सन्तोष नहीं हुआ, उन्होंने लेखक को, जो उस समय उनके साथ था कहा कि विस्तृत जांच करके सब जानकारी उन्हें दे दी जाय। लेखक ने सारा विवरण उनको दे दिया। उसको सुनकर वे अवाक् रह गये और उन्होंने उस धन को अपनी निजी कमाई से अदा करने का बहुत आग्रह किया, मगर पंचायत ने उनसे पैसा लेने से इनकार कर दिया। कुछ भी हो इस घटना की व्यास जी के मन पर बड़ी गहरी चोट लगी। और वे उस रात्रि को बिल्कुल सो नहीं पाये। परिणाम यह हुआ कि इस घटना के रहस्योद्घाटन से राजनीतिक तनाव पैदा हो गया, जो हमेशा उनके जीवन में बना रहा।

सुखदुःखे समे कृत्वा

सन् १९६१ में पाली में प्रदेश पार्लियामेन्टरी बोर्ड के सदस्यों का चुनाव करने के लिये राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी की एक बैठक हुई। व्यास जी भी उम्मीदवार थे। परन्तु वे चुने नहीं जा सके। कुछ मित्रों ने व्यास जी को अपना नाम वापस लेने की सलाह दी; उनको उन्होंने कहा कि हारने का मुझे कोई डर नहीं है। इनसे यह तो पता चल जायगा कि मेरी कोई पार्टी नहीं है मैं अकेला ही अपनी पार्टी हूं। प्रदेश कांग्रेस की बैठक के बाद एक मिनिस्टर के यहां भोजन हुआ और भोजन के बाद दो-तीन घंटे आमोद-प्रमोद की चर्चा-वार्त्ता में बीते। मैंने देखा कि उनकी जिस हार के लिये हम सब इतने दुखी थे। उसका उनको जरा भी रंज न था और उनके चेहरे पर विषाद की एक भी कोई रेखा न थी। अपनी हार को इस विनोद से लेना व्यास जी खूब जानते थे।

मेरे व्यक्तिगत जीवन पर लोकनायक का जो प्रभाव पड़ा है, उसको शब्दों

में व्यक्त कर सकना सम्भव ही नहीं है। हृदय की भावना और अनुभूति शब्दों में व्यक्त नहीं की जा सकती। परस्पर कभी कुछ मतभेद पैदा हो जाने पर भी उनके स्नेह व आत्मीयता से मैं कभी वंचित नहीं हुआ, इसको मैं अपना अहोभाग्य ही मानता हूं।

१०

वह दृश्य और वे शब्द

सेठ आनन्दसिंह जी कछवाहा, एम० एल० ए०, अध्यक्ष—जिला कांग्रेस कमेटी, जोधपुर

मैं व्यास जी का जब स्मरण करता हूं, तब मुझे सहसा ही १९२२-२३ का अपना विद्यार्थी जीवन याद आ जाता है। तब मैं जोधपुर के सुमेर मिडिल स्कूल में पढ़ता था और व्यास जी मेरे गुरु अथवा अध्यापक थे। उनकी उन दिनों की वेश-भूषा सफेद धोती, सफेद कोट और हरा साफा मैं नहीं भूलता। पगड़ी के नीचे दोनों कानों पर लम्बे-लम्बे बाल दीखते थे। उन दिनों में भी हमेशा वे गम्भीर विचार मुद्रा में ही मग्न दीख पड़ते थे। कुछ समझ न पड़ता था कि वे क्या सोचते रहते हैं।

१९३२ की वह घटना भी मुझे याद है, जब उन्होंने निजी तौर पर जोधपुर राज्य की औद्योगिक उन्नति के सम्बन्ध में कुछ सोचना और कुछ योजनाएं बनानी शुरू की थीं। मैं तो युवक ही था और उनकी बातों की गहराई में न जा सकता था। इतनी याद है कि वे मेरे पिता जी के पास किसी औद्योगिक योजना के सम्बन्ध में विचार-विनिमय करने आया करते थे। बिजली के बल्व का कारखाना खोलने के सम्बन्ध में तब बातचीत हुई थी। मंडोर में हम लोगों का काम-काज चलता था। जोधपुर राज्य में हर दूसरे-तीसरे वर्ष वर्षा न होने के कारण दुर्भिक्ष पड़ता था और अकालपीड़ित लोग नौकरी या काम-काज की खोज में राज्य से बाहर जाने को विवश होते थे। हजारों किसान अपने पशुओं व घर-बार के साथ अपने गांव छोड़कर मालवा की ओर निकल जाते थे। इस दुर्दशा को सहन न कर सकने के कारण व्यास जी के हृदय में उद्योग-धन्धे शुरू करने की भावना पैदा हुई थी। परन्तु उन दिनों में न तो उनके पास साधन थे और न धनी वर्ग व सरकारी अधिकारियों पर उनका ऐसा कोई विशेष प्रभाव था, जिससे उनकी वह भावना पूरी हो सकती। फिर भी उनका उत्साह और आशा देखते ही बनती थी।

१६४८-४६ में जब वे राज्य के प्रधानमंत्री नियुक्त हुए, तब मैं उनसे मिलने गया। उन्होंने जोधपुर शहर को एक नया और आधुनिक रूप देने की जो योजना बनाई उसके सम्बन्ध में मुझसे खुलकर बातचीत की। सोजती गेट के आस-पास के उपेक्षित और गन्दे इलाके को साफ करके वहां वे नई वस्ती बसाना चाहते थे। वहां टट्टियां बनी हुई थीं, जिनकी वजह से वह सारा इलाका गन्दा बना रहता था। उनकी योजना के अनुसार उसकी सफाई पर ६०-६५ हजार रुपया खर्च होना चाहिए था। उसके लिये उन्होंने मुझे प्रेरित किया और मैं उनसे सहमत हो गया। उस इलाके का उद्धार किया गया। उनकी ही प्रेरणा पर ३ मार्च, १६४६ को आनन्द सिनेमा की नींव रखी गई। सिनेमा भवन कलापूर्ण और आकर्षक बनाने में उनके सुझावों से बड़ी सहायता मिली। उन्होंने ही उसकी नींव रखी थी। उनके कला प्रेम और संगीत, नृत्य व नाटक में उनकी दिलचस्पी स्वाभावसिद्ध थी। आनन्द सिनेमा भी उसी का एक प्रतीक है।

राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करने के लिये उन्होंने ही मुझे प्रेरित किया था और १६४६ के बाद मैं राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करने के कारण ही उनके सम्पर्क में बराबर आता रहा। १६४६ में उनको दस हजार की थैली भेंट करके उनका जोधपुर के प्रधानमंत्री के नाते जो नागरिक अभिनन्दन किया गया था, उसमें मैंने विशेष भाग लिया था। उनकी प्रेरणा और आशीर्वाद से मुझे जिला कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष चुना गया और बाद में राजस्थान विधान सभा का सदस्य चुने जाने का भी गौरव प्राप्त हुआ।

व्यास जी से मेरी अन्तिम मुलाकात ४ मार्च, १६६३ को नई दिल्ली में हुई। मैं श्री राजबहादुर जी से मिलने गया, तो उनको बड़ा चिन्तित पाया। उनसे पूछा तो पता चला कि व्यास जी का स्वास्थ्य कुछ अच्छा नहीं है। मैं व्यास जी के यहां पहुंचा, तो उनका स्वास्थ्य ठीक न था। मुझे पता था कि तब उनकी आर्थिक स्थिति भी सन्तोषजनक नहीं थी। मैंने उनसे कहा कि आपकी शारीरिक हालत कुछ ठीक प्रतीत नहीं होती, तो वे एकाएक अपने स्वभावसिद्ध विनोद में बोल उठे कि मेरी क्या बात करते हो; सारे ही देश की हालत खराब है, कांग्रेस की भी हालत खराब है, चारों ओर पद लोलुपता छाई हुई है और स्वार्थी लोग जहां-तहां घुस गये हैं। मैंने तो भ्रष्टाचार के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया है और अन्तिम दम तक उसमें लगा रहूंगा। जब कि उनके सब साथी उनके स्वास्थ्य के लिये इतने अधिक चिन्तित थे, तब भी उनको अपनी अपेक्षा देश और कांग्रेस की ही अधिक चिन्ता थी। वे हमको उस हालत में भी हँसते हुए बाहर तक छोड़ने आये।

कुछ ही दिन बाद जब मैंने उनके निधन का दुःखपूर्ण समाचार सुना, तब मेरे सामने उस अन्तिम मिलन व विदाई का गम्भीर दृश्य उपस्थित हो गया और मेरे

कानों में उनके आशा व विश्वास भरे वे गम्भीर शब्द गूंज उठे, जो उन्होंने अपनी अन्तिम भेंट के समय मुझसे कहे थे। वे अब भी जब-तब मेरे कानों में गूंजते रहते हैं।

११
उनकी करुणा

डा० पुष्पेन्द्र झाला 'पथिक', रायपुर, (राजस्थान)

बात उस समय की है जब सन् १९४८ में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन जयपुर में हो रहा था। उसके स्वयं सेवकों के प्रबन्ध का दायित्व मारवाड़ के मुख्यमंत्री श्री जयनारायण जी व्यास को सौंपा गया। व्यास जी ऐसे कार्यरत थे कि उनको दम लेने की भी फुर्सत न थी।

अधिवेशन के दूसरे दिन १७ दिसम्बर ४८ को ठीक प्रात: आठ बजे मैं अपने साथियों सहित गांधी नगर के लिये रवाना हुआ। हमने स्टेशन जाकर बस पकड़ी। उस समय की भीड़ का तो कहना ही क्या। जैसे-तैसे हमने बस द्वारा पहुंचने का तय कर लिया। मिर्जा इस्माइल रोड की पांच बत्ती के पास हमारी बस एक अन्य गाड़ी से टकरा गई। कई व्यक्ति बुरी तरह घायल होकर सड़क पर गिर पड़े। सारी सड़क खून से रंग गई। उसमें मैं भी एक था।

मेरे साथी श्री मोहनलालजी एडवोकेट ने किसी तरह मुझे मानसिंह अस्पताल में दाखिल करवाया। अन्य घायलों की तरह अस्पताल के फर्श पर पड़े हुए मेरे नाक व मुंह से खून निकल रहा था। खबर पाते ही व्यास जी दौड़े आये। मेरी हालत देख पी० एम० ओ० को माकूल इलाज के लिये सख्त आदेश दिया। फ़ौरन ही बैड व बिस्तर आदि का प्रबन्ध हो गया और साथ ही अच्छे-से-अच्छे इलाज का भी। दिन में दो तीन बार समय निकाल कर वे हमें देखने आ ही जाते थे। यह क्रम अधिवेशन के अन्त तक करीब चार-पांच रोज बना रहा।

जोधपुर जाते हुए रास्ते में कुछ समय के लिये हमारे ग्राम में ठहरे और परिवार के लोगों को सान्त्वना दी। व्यास जी के सद्प्रयत्नों से मैं स्वस्थ होकर घर लौटा तो मेरे साथियों व बड़े भाई प्रेमराज जी ने उनके बारे में ये सब बातें बताईं। मैं उनकी करुणा पर गद्गद हो गया। मैंने उनकी सेवा में आभार पत्र लिखा। जिसका प्रत्युत्तर उन्होंने फौरन दिया। वह उनकी सहृदयता का ही सूचक था। न मालम मुझ सरीखे कितने ही अकिंचन सेवकों को व्यास जी सरीखे महान् नेता की

करुणामय सहानुभूति ऐसे संकटों में प्राप्त हुई होगी। सचमुच ही वे सहृदयता और आत्मीयता की मूर्ति थे।

◇ ◇ ◇

फाल्गुन का महीना था। व्यास जी दूसरे चुनाव के सिलसिले में सिरोही पधारे थे। भाषण के अन्त में चंग वाले आ धमके। आपने एक के हाथ से चंग अपने हाथ में ले ली और मजे से बढ़िया तान में बजाने लगे। लोग देखते ही रह गये। ऐसी थी मस्ती व्यास जी की।

१२
निःस्वार्थ जनसेवक

पग-यात्री श्री देवदत्त निडर, रामगढ़ (राजस्थान)

श्री जयनारायण जी व्यास जब राजस्थान के मुख्यमंत्री बने, तब एक बार रामगढ़ पधारे थे, कुछ कार्यकर्त्ताओं ने आपको चाय-पार्टी दी। उसमें आप शामिल नहीं हुए, और कहा कि कार्यकर्त्ताओं को तो सेवा का काम करना चाहिए। चाय-पार्टी वगैरह करना कार्यकर्त्ताओं का काम नहीं है। इसका जनता पर बुरा असर पड़ता है। कार्यकर्त्ता राज्य कर्मचारियों से अनुचित लाभ उठा लेते हैं। यह वृत्ति थी व्यास जी की।

सन् १९४७ में मैंने रींगस स्टेशन के पास एक कुटिया बनाकर सार्वजनिक कार्य चालू किया। उन दिनों रेलवे स्टेशन के कर्मचारी जनता को खूब परेशान करते थे। हम लोग कांग्रेस के कई नेताओं के पास गये। लेकिन व्यवस्था ठीक नहीं हुई। अन्त में मैं दिल्ली व्यास जी के पास गया। आप उस समय देशी राज्य लोक-परिषद् के प्रधानमंत्री थे। सब बातें आपसे कहीं, तब आपने एक पत्र रेलवे मिनिस्टर डाक्टर जानमथाई को लिखकर दिया। मैं वह पत्र उनके पास ले गया। डाक्टर जानमथाई ने इन्वेस्टिगेशन पार्टी रींगस भेजी, तब सारी व्यवस्था ठीक हो गई और रेलवे कर्मचारियों ने जनता को तंग करना बन्द कर दिया। यह थी व्यास जी की कार्यकुशलता और यह था उनका प्रभाव।

एक बार व्यास जी, चौधरी कुम्भाराम आर्य और सरदार हरलालसिंह के साथ गाड़ी से दौरे पर जा रहे थे। रींगस स्टेशन पर जब गाड़ी ठहरी तब कुछ कार्यकर्त्ता आप लोगों से मिलने आये। कार्यकर्त्ताओं के पास सूत की एक ही गुंडी थी। आपस में यह विवाद खड़ा हो गया कि तीनों नेताओं में से किसको गुंडी पहनाई जावे।

हम लोगों ने यह ही निर्णय किया कि जो नेता महात्मा गांधी के सिद्धांतों पर चलता हो, उसी को पहनाई जावे। सबकी राय से 'शेरे राजस्थान जिन्दाबाद' के नारों के साथ व्यास जी के गले में वह गुंडी पहनाई गई। यह थी व्यास जी के प्रति कार्यकर्त्ताओं की श्रद्धा-भावना।

सीकर से रेलवे लाइन फतेहपुर तक ही जाती थी। जनता यह चाहती थी कि फतेहपुर से चूरू तक रेल लाइन बननी चाहिए। इसके लिये मैं कई बार व्यास जी के पास गया। आपने रेलवे अधिकारियों के साथ लिखा-पढ़ी करके उस लाइन को बनवा दिया। इसी तत्परता से वे जनता की छोटी-से-छोटी मांग पर भी पूरा ध्यान दिया करते थे।

मैं करीब २२ वर्ष से सार्वजनिक कार्यकर्त्ता रहा हूं और राजस्थान की जन-जागृति के लिये काफी काम किया है। जहां तक मैंने देखा व्यास जी त्यागी, तपस्वी, ईमानदार और निर्भीक नेता थे। आपने अपने जीवन में हमेशा ही संकटों का सामना किया। लेकिन सत्य पथ को नहीं छोड़ा। सत्य बात पर आप अड़ जाते थे, फिर चाहे कितना ही नुकसान उठाना पड़ता हो।

१३

बरसात का पहला पानी

श्री देवीलाल माथुर 'कमलेश', जोधपुर (राजस्थान)

व्यास जी के सम्बन्ध में लोगों की तरह-तरह की धारणाएं बनती रही हैं। यह प्रायः माना जाने लगा है कि वे राजनीति के क्षेत्र के नहीं बन सके। जिस क्षेत्र के वे कहे जा सकते हैं वह था सामाजिक, साहित्यिक। समाज की प्रवृत्तियों और दुर्बलताओं को सही ढंग में पकड़ सकने की सूझ-बूझ उनकी प्रमुख विशेषता थी। अगर कहीं खराबी दीख पड़ी, तो उसे स्वीकार करने और उसके स्वाभाविक पहलू को समझने में हिचक महसूस नहीं की। कुछ ऐसा ही उस दिन हुआ, जब अन्तः-प्रान्तीय कुमार साहित्य परिषद् के नारलाई अधिवेशन की सब तैयारियां पूर्ण हो चुकी थीं। २४ जून, ५७ को उसका उद्घाटन करने के लिये व्यास जी को वहां पहुंचना था। वह उत्तरदायित्व मुझ पर डाला गया था कि नारलाई तक रास्ते में मैं उनके साथ रहूं ताकि कोई असुविधा उनको न हो। यह मेरा सौभाग्य था कि इस बहाने मैं एक महान् व्यक्ति के साथ कुछ समय रह सका।

मारवाड़ जंकशन पर थोड़े समय के लिये गाड़ी ठहरी। उसका सदुपयोग करने

के लिये हम व्यास जी के डिब्बे में चले गये। पहले परिषद् की गतिविधियों तथा उसकी आर्थिक स्थिति पर बातें उन्होंने कीं। मुस्कराते हुए बोले कि परिषद् में जब तक अनाप-शनाप पैसा नहीं आता तभी तक उसके सदस्य तन, मन और लगन से कार्य कर सकते हैं। उसके बाद भविष्य में यही भावना बनी रहे, तो बड़ी खुशी होगी।

बातों का सिलसिला बदला तो मैंने एक प्रमुख समस्या पर उनसे विचार प्रकट करने के लिये कहा। वह यह कि देश में राष्ट्रीय भावना का विकास क्यों नहीं हो रहा? क्यों सरकार के प्रति जनता में इतना रोष और असन्तोष है? वे थोड़ी देर चुप रहे, फिर गम्भीर वाणी में बोले कि यह बात सही है कि जनता में राष्ट्रीय भावना का विकास उतना नहीं हो पाया है, जितना होना चाहिये। इसके साथ कई बातों को देखना पड़ेगा। देश में चरित्र विकास के लिये जिस ढंग से कार्य किया जाना चाहिये वह नहीं हो रहा है। आज ज़रूरत है व्यक्ति की इकाई को लेकर उसे सुधारने की। समूह को साथ लेकर उठ जाने की कोशिश में हमें ज़्यादा कठिनाई होगी। जनता में शिक्षा का प्रसार बहुत थोड़ा है। मैं जानता था वे सही बात कहने में झिझकेंगे नहीं। इसीलिये यह जानना चाहा कि व्यासजी इस विचार से कहां तक सहमत थे कि देश में आजादी समय से पूर्व आ गई और जनता पूरी तरह इस बड़े उत्तरदायित्व को सम्भालने के लिये तैयार नहीं थी।

कुछ क्षण रुककर बोले यह बात अब अधिक सही मालूम देने लगी है कि पूरा देश इसके लिये तैयार नहीं हो पाया था। इसलिये खराबियां एकसाथ टूट पड़ीं, पर वैसे यह आज़ादी का एक स्वाभाविक परिणाम है। हर उस देश में ऐसा ही होना सम्भव है, जिसमें जनता का आर्थिक और शैक्षणिक स्तर बहुत नीचा होता है। एक उदाहरण दूं। हम लोग उन दिनों गुजरात में थे। एक गांव के पास बहुत से पशु मरे पड़े थे। हम उधर गये तो कारण पूछा कि सब एकसाथ कैसे मर गये। हमें बताया कि बरसात का मौसम शुरू होते ही इस नाले में जो पहला गन्दा पानी आया, उसको पीने से ऐसा हुआ। और यही हाल है आजादी का। यह आई बरसात के पहले पानी की तरह तो गन्दगी भी साथ आ गई। जब साफ पानी आने लगेगा तो गन्दगी भी दूर हो जायेगी। हो सकता है इसमें कुछ वर्ष लग जायें। कितना सुन्दर था यह दृष्टान्त आज की स्थिति के बारे में।

१४
बाल सहपाठी

श्री कमला प्रसाद जोशी, मंगलियावास, ब्यावर (राजस्थान)

श्री जयनारायण व्यास मेरे बचपन के साथी थे। बीते हुए दिनों को प्यार से याद करते हुए मुझे आज हर्ष भी होता है और रंज भी। हर्ष इसलिए कि राजस्थान स्वतन्त्रता संग्राम के वीर सेनानी श्री व्यास तथा मैंने ब्यावर की एक पाठशाला में अपनी पढ़ाई एक साथ प्रारम्भ की थी। उनके पिता वहां की कृष्णा मिल में काम करते थे। सन् १९०८-९ के बचपन की कुछेक घटनाएं मुझे आज भी वैसी ही याद आती है।

वे दयालु प्रकृति के थे। मैं उस समय आठ-नौ वर्ष का था। वे थे लगभग ११ के। मैं जागीरदार का पुत्र था। मेरी जेब खाली न रहती। एक रोज मैंने अपनी पूज्य माता जी से एक रुपया प्राप्त किया और अपने मित्र जयनारायण से इसका दुराव रखा। उस रुपये से मैंने शौक से अपने जूतों में कीलें, नाल व स्टार आदि ठुकवाये। जयनारायण जी के घर आया। पूज्य माता जी ने उस उम्र में इस प्रकार जूतों में कील आदि ठुकवाने को सर्वथा अनुचित बताया, तो मैं रोने लगा। मुझे रोता देख मेरे मित्र को बहुत दुःख हुआ। एकान्त में उस समय उसने जो उपदेश दिया वह आज भी हृदय पर अंकित है। कहा कि "इन कीलों आदि से छोटे-छोटे जीव कुचलकर मर जाते हैं। व्यर्थ में जीवहत्या का पाप लगता है।" मुझपर इतना असर पड़ा कि मैंने उनके साथ वापस लौटकर मोची को पैसे देकर कीलें उखड़वाईं। यह था उनका मेरे प्रति बन्धुभाव। कोई दूसरा मुझे स्नान कराता व मैल छुड़ाता, तो वे हँसते और स्वावलंबी होने को कहते।

सन् १९२०-२१ में हम दोनों मैट्रिक कर चुके थे। पी० डब्ल्यू० डी० में हम दोनों ने नौकरी शुरू की। वहीं से उनका उत्साही व लगनशील कार्यकर्त्ता का जीवन प्रारम्भ हुआ। समाज सेवा में वे सबसे आगे रहते थे। अश्लील गायन आदि को रोकने के लिये उन्होंने छोटी-छोटी पुस्तिकाएं निकालीं। अपनी मृत्यु के कुछ दिन पहले वे मेरे ग्राम मंगलियावास में मेरे यहां पधारे। उस समय कांग्रेस विरोधी दलों के कुछ नेताओं ने उन्हें कांग्रेस छोड़ने को बहुत कहा। उन्होंने यही उत्तर दिया कि मैं शुरू से अन्त तक कांग्रेसी रहा व रहूंगा। मैं तो कांग्रेस में जो भ्रष्टाचारी तत्त्व प्रवेश पा गया है, केवल उसके खिलाफ हूं, कांग्रेस के नहीं।

उनके ये शब्द मैं कभी नहीं भूलता, जो उनकी दृढ़ता के द्योतक हैं। मेरे हृदय पर वे एक अमिट छाप अपनी सहृदयता व प्रेम की छोड़ गये हैं।

१५

साकार सच्चाई

श्री स्वरूपनारायण जी पुरोहित, एम० एल० ए०, पुरोहितों का बाग, जयपुर (राजस्थान)

लोकनायक श्री जयनारायण व्यास के व्यक्तित्व और कर्तृत्व से मैं तभी से परिचित था, जब मुझमें समाचार-पत्र पढ़ने की रुचि पैदा हुई थी। परन्तु व्यक्तिगत परिचय तब हुआ, जब जयपुर राज्य में सर मिर्जा इस्माइल के कार्यकाल में विधान-सभा का गठन किया गया। वे शासन सुधार कैसे भी अधूरे क्यों न थे; किन्तु उनको वैधानिक प्रगति की दिशा में एक ठोस कदम माना गया था और इस रूप में उसकी चारों ही ओर विशेष चर्चा हुई थी।

१९४८ में जयपुर को कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन अपने यहां करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह यद्यपि राजस्थान संघ का निर्माण तो न हुआ था; फिर भी राजस्थान के सभी राज्यों और उनके नेताओं व कार्यकर्त्ताओं ने उसको सफल बनाने में पूरा हाथ बंटाया था। प्रायः सभी राज्यों में लोकप्रिय मंत्रिमण्डल बन चुके थे। और व्यास जी जोधपुर के प्रधानमन्त्री पद पर आसीन थे। मुझे उस अवसर पर नेताओं के निवास स्थान की व्यवस्था सौंपी गई थी। उस व्यवस्था की देख-रेख के लिये व्यास जी भी प्रायः पधारा करते थे। मुझे आवश्यक परामर्श देने के साथ-साथ मेरी व्यवस्था की प्रशंसा कर मुझे प्रोत्साहित भी किया करते थे। दूसरों से काम लेने की कला में वे विशेष प्रवीण थे।

अधिवेशन के अवसर पर उन्होंने कांग्रेस सेवा दल का काम अपने सुपुर्द उसी भावना से किया था, जिस भावना से भगवान श्रीकृष्ण ने पांडवों के यहां राजसूय यज्ञ में अतिथियों के पैर धोने का काम अपने जिम्मे लिया था। तब मैंने देखा, वे अनुशासन तथा नियन्त्रण के कैसे कायल थे। हर समय सिपाही की तरह अपने कार्य पर स्वयं तैनात रहते और दूसरों को भी तैनात रखते थे। विश्राम करना वे जानते ही न थे। कष्टसहिष्णु तो ऐसे थे, जैसे कि 'कष्ट प्रूफ' ही बन गये हों। जोधपुर के प्रधानमंत्री को कांग्रेस सेवा दल के सेनापति के रूप में देखकर पता चलता था कि उनमें पद प्रतिष्ठा की अपेक्षा सेवा भावना कैसी व्यापी हुई थी।

राजस्थान के मुख्यमंत्री के पद पर आसीन होने के बाद वे सीकर तथा शेखावाटी के दौरों पर जब भी कभी जाते, तो मुझे अपने साथ चलने का निमंत्रण अवश्य देते और मैं भी उनके निमन्त्रण को स्वीकार करने का भरसक प्रयत्न करता। १९५२-५३ की बात होगी वे फतहपुर के दौरे में मेरे गांव तातसार भी पधारे और मुझे अपने आतिथ्य का सुअवसर प्रदान किया। किसानों की एक सभा में तब उनका जो भाषण हुआ, वह बड़ा ही सरल और मुख्यमन्त्री पद की बनावट से सर्वथा रहित था। उन्होंने किसानों को यह समझाने का प्रयत्न किया था कि अब हम आपके

मालिक व शासक नहीं रहे। आपके वोटों से चुने जाते हैं और आप जब चाहें, तब हमें अलग कर सकते हैं। इस प्रकार किसानों में उन्होंने स्वाभिमान और आत्मविश्वास का संचार किया। मैं उनका वह भाषण कभी नहीं भूल सकता। उनकी सरलता, सरसता, मिलन सारिता और सहृदयता का मुझ पर विशेष प्रभाव पड़ा था। हर किसी से अपनेपन से मिलते थे, जैसे कि उनके घर के ही बुजुर्ग या साथी हों।

मैं राजनीति की अपेक्षा सामाजिक क्षेत्र में उनके अधिक निकट सम्पर्क में रहा; क्योंकि राजस्थान की संकीर्ण व संकुचित क्षेत्रीय भावना से सर्वथा अलिप्त थे। सच्चे राष्ट्रवादी थे। भारतीय राष्ट्रीयता उनके रोम-रोम में व्यापी हुई थी। इसी कारण वे जब भी कहीं यात्रा आदि में अकस्मात भी मिल जाते तो दिल खोलकर मिला करते थे। उनको देखकर अनायास ही उनके प्रति आदर भाव पैदा होता है। खादी सम्बन्धी रचनात्मक कार्यों के विचार-विनिमय की सभाओं में उनसे प्रायः मिलना हो जाता था। तब उनकी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय पाकर मैं विस्मित रह जाता था; क्योंकि मेरी धारणा यह थी कि वे विशेष रूप में कोरे राजनीतिक नेता हैं। मैंने अपनी इस धारणा को बिल्कुल गलत पाया।

वे सच्चे साथी, सच्चे कार्यकर्त्ता, सच्चे नेता और सच्चे सिपाही थे। एक शब्द में वे साकार सच्चाई ही थे।

१६

कथनी और करनी

श्री अखिलेश मिश्र, संपादक 'नया जीवन', सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

उस दिन की वह घटना आज भी मुझे वैसे ही याद है, जैसे कि वह कल ही घटी हो। मेरे पूज्य पिता श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' के कारण हमारा घर कुछ बड़े लोगों के लिये आकर्षण का केन्द्र रहा है। जो भी ऐसे लोग कभी हमारे यहां पधारते, तो मैं सहज युवक स्वभाव से प्रेरित उनकी हर बात को बड़ी उत्सुकता से देखता और सुनता। श्रद्धेय श्री जयनारायण व्यास के सम्बन्ध में मेरी धारणा बहुत ऊंची बन चुकी थी। इसलिये उनके पधारने पर उनकी ओर मेरी उत्सुकता-भरी दृष्टि निरन्तर लगी ही रहती थी। उनके सम्बन्ध में अनेक छोटी-बड़ी घटनाएं लिखी जा सकती हैं, परन्तु यहां मैं उसी का उल्लेख कर रहा हूं, जिसने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया। व्यास जी को चाय का कुछ ऐसा चस्का था कि वे उसको दबा नहीं सकते थे। सहारनपुर स्टेशन पर उन्होंने चाय वाले को

बुलाकर उसे चाय देने को कहा। चाय वाले ने यह कहकर चाय देने से इनकार किया कि "आपको मैं चाय नहीं दे सकता। आप हिन्दू हैं और मैं मुसलमान।" वह आगे चल दिया। व्यास जी ने उसको फिर आवाज़ दी। उसको बोले कि "अब तो हम तुम्हारे ही हाथ से चाय पीयेंगे। जो वजह तुमने बताई है, वह हमें मंजूर नहीं है।" चायवाला देखता ही रह गया और बड़े ही संकोच से उसने चाय का प्याला व्यास जी के हाथ में थमा दिया। यह घटना काफी पुरानी है। तब तक देश में धर्मनिरपेक्ष किंवा सम्प्रदायातीत आदर्श की चर्चा शुरू न हुई थी। केवल हिन्दू-मुस्लिम एकता की ऐसी बातें सुन पड़ती थीं, जिन पर आचरण करना आवश्यक न समझा जाता था। व्यास जी के उस उदार व्यवहार को देख मुझे थोड़ा अचरज ज़रूर हुआ। परन्तु उनके उस व्यवहार से मैं कुछ ऐसा प्रभावित हुआ कि मेरे दिल व दिमाग में से संकीर्णता सदा के लिये काफूर हो गई। आज भी मैं यह अनुभव करता हूं कि व्यास जी सरीखे हमारे कितने ऐसे नेता हैं, जिनकी कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं है।

१७

राष्ट्रभिक्षुक

दानवीर, देशभक्त सेठ सोहनलाल जी दूगड़, ५ लार्ड सिन्हा रोड, कलकत्ता

श्री जयनारायण व्यास त्याग, तपस्या, सचाई व सादगी की प्रत्यक्ष मूर्ति थे। वह सच्चे अर्थों में राजनीतिक फक्कड़ थे। देश-सेवा और देश भक्ति की धुन उनमें कुछ ऐसी थी कि वह उसके पीछे अपने को भी भूल जाते थे। अपनी घर-गृहस्थी की उन्होंने कभी चिन्ता नहीं की। उनका जीवन उन त्यागी ब्राह्मणों तथा तपस्वी यती-मुनियों सरीखा था, जो परिग्रह करना जानते ही न थे। इसी कारण उनकी घर-गृहस्थी सदा अभावग्रस्त बनी रही और अपने सार्वजनिक जीवन में भी वह 'राष्ट्रभिक्षुक' ही बने रहे। उनमें मानवीय गुणों का विस्मयजनक विकास हुआ था। जैसलमेर के डाकूग्रस्त सांकड़ा क्षेत्र में उन्होंने जिस मानवता की अलख जगाई थी वह कैसी अद्भुत थी! जन्मजात डाकुओं को उन्होंने मानवता की दीक्षा देकर उनको स्वभाव सिद्ध सभ्य नागरिक बनाने का जो मनोवैज्ञानिक प्रयोग सफलता पूर्वक किया था उसका अनुकरण हमारे समस्त राष्ट्रीय जीवन में किया जाना चाहिए। उन सरीखे सच्चे नेता बहुत ही कम देखने में आते हैं। मैं उनके मानवीय

गुणों की सदा ही भूरि-भूरि प्रशंसा करता रहा हूं। आज भी मैं उनके प्रति नत-मस्तक हूं।

१८

सरल, सहृदय, निर्भय और स्पष्टवादी

कविराज पं० प्राणनाथ जी पुष्करणा, वैद्य वाचस्पति, उपाध्यक्ष—अखिल भारतीय आयुर्वेदिक कांग्रेस, ४७ लहनासिंह मार्केट, सब्जी मंडी, दिल्ली-६

लोकनायक श्री जयनारायण व्यास के साथ मेरा व्यक्तिगत परिचय उनके दुःखपूर्ण निधन से तीन वर्ष पहले ही हुआ था। वह भी ऐसे राजस्थानी मित्रों के माध्यम से हुआ था, जो दिल्ली आने पर मेरे यहां ठहरते और मुझसे मिलने आते। ऐसे मित्रों के कारण हम दोनों में एक-दूसरे से मिलने की आकांक्षा पैदा हुई। उनसे व्यक्तिगत परिचय प्राप्त करने के बाद मुझे यह अनुभव हुआ कि मैं उन सरीखे सरल, स्नेही, सहृदय, निर्भीक, निर्मोही, निःस्वार्थी और स्पष्टवादी विशिष्ट जन-नेता के परिचय में पहले क्यों न आया। चिकित्सा सम्बन्धी अपने कार्य के लिये मेरा राजस्थान जाना-आना प्रायः होता था। अनेक मित्रों ने व्यास जी से मिलने का अनेक बार प्रस्ताव किया। परन्तु मैं अपने स्वभाव के कारण मिलने का अवसर टालता रहा। ऐसे बड़े लोगों से मिलने की मुझे कभी आन्तरिक प्रेरणा नहीं हुई, जिनसे केवल शिष्टाचार के रूप में मिला जाता है और मिलने के बाद प्रायः एक-दूसरे को भुला दिया जाता है। मैंने अनुभव किया कि व्यास जी में ऐसा कोई औपचारिक दिखावा न था। वह सहृदय भाव से दिल खोलकर मिलते थे और सहसा ही आत्मीय सम्बन्ध बना लेते थे। पहली मुलाकात के बाद तो वह बिना किसी सूचना व संकोच के मेरे यहां चले आते थे। घंटों दिल खोलकर चर्चा-वार्ता होती थी।

सितम्बर, १९६२ की घटना होगी। दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के एक आयोजन में सम्मिलित होने के निमित्त वह मेरे यहां आ पहुंचे, जिसका आयोजन बिड़ला हाईस्कूल में किया गया था। उसमें एक घंटे का समय था। वह बोले कि सब्जी मंडी में मनहर टेलरिंग हाउस के भाई छोटेलाल जी से मिलना है। हम दोनों उनका स्थान ढूंढने निकल पड़े। कोई पौन घंटा इधर-उधर भटकने के बाद उनके यहां पहुंच सके। मैंने उस दिन देखा कि अपने सामान्य साथी के प्रति भी उनका कैसा स्नेह-भाव था और कैसी आत्मीयता से हर किसी से मिलते थे।

उनसे मिलने के लिये उस दिन पौन घंटा इधर-उधर भटकना उन्हें अखरा नहीं।

एक दिन मैं उनसे पूछ बैठा कि ग्राम तौर पर यह शिकायत है कि संसद सदस्यों का निर्वाह उनको मिलने वाले भत्ते में नहीं होता। इसलिये उनको ऊपरी 'हेरा-फेरी' करनी पड़ती है। आपका क्या अनुभव है? उन्होंने बड़ी सरलता और सहज भाव में अपने खर्च का सारा ब्यौरा मेरे सामने रख दिया। मुझे बताया कि मेरा निर्वाह तो बिना कठिनाई के हो जाता है। घर में न कोई नौकर है और न कोई फिजूलखर्ची। हम दोनों, मैं और मेरी पत्नी, मिल-जुलकर घर का सब काम चला लेते हैं। मेरा लड़का न मुझसे कुछ लेता है और न देता है। मैं अपनी बात कह सकता हूं कि मुझे कोई हेरा-फेरी करने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। यह स्पष्टीकरण उन्होंने जिस सरल भाव से दिया, उससे मैं बड़ा प्रभावित हुआ। मैंने अनुभव किया कि वह 'अर्थस्यपुरुषो दासः' के मानने वाले न थे।

एक बार चर्चा में पं० जवाहरलाल नेहरू के साथ उनके मतभेद की बात छिड़ गई। उन्होंने बताया कि उन्होंने पंडित जी को एक पत्र लिखकर अपनी छह शिकायतें उन पर प्रकट की थीं। पंडित जी ने उन पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। तब से उनका मन पंडित जी की ओर से फिर गया। पहली शिकायत राजस्थान से लोहारू नवाब सरीखे अवांछनीय व्यक्तियों को कांग्रेसी उम्मीदवार के रूप में खड़ा करने की थी। दूसरी शिकायत एक बड़े कांग्रेसी नेता के सम्बन्ध में यह थी कि उनको एक थैली भेंट की गई थी, जो कांग्रेस में जमा न करके इधर-उधर खर्च कर दी गई थी। नेहरू जी के प्रति उनके इस रोष से मुझ पर यह प्रभाव पड़ा कि वह कैसे निष्ठावान् नैतिक व्यक्ति हैं और चरित्र की शुद्धि के लिये उनका कैसा आग्रह है। नेहरू जी उनकी शिकायतों का कोई समाधान नहीं कर सके थे। इसी कारण उनके विरुद्ध कांग्रेस अनुशासन समिति की उनको, कांग्रेस से छह वर्ष के लिये निष्कासित करने की कार्रवाई केवल फाइलों में ही धरी रह गई।

मेरी जनसंघ में विशेष निष्ठा है। इसीलिये मैं उनसे एक दिन कह बैठा कि आप कांग्रेस से जब इतने रुष्ट हैं, तो जनसंघ में क्यों नहीं शामिल हो जाते। उन्होंने बड़ी दृढ़ता से कहा कि यह कैसे हो सकता है? अपनी युवावस्था में जिस कांग्रेस में मैं शामिल हुआ, जिसके लिये मैंने खून-पसीना एक किया, जिसने मुझे राजस्थान के मुख्यमंत्री बनने का सौभाग्य प्रदान किया और उसके बाद भी जिसके लिये मैंने दिन-रात तपस्या की, आज उसको कैसे छोड़ सकता हूं। मुझे कांग्रेस से शिकायत नहीं है। शिकायत भ्रष्टाचारी कांग्रेसियों से है। फिर मैंने उनसे कहा कि आप कांग्रेस के भीतर अपनी नई पार्टी क्यों नहीं बना लेते। उन्होंने कहा कि इस वृद्धावस्था में मेरे पास उसके लिये न तो साधन हैं और न सामर्थ्य ही। अपनी सीमा को जानने व समझने वाले बहुत ही कम मिलते हैं। प्रायः अहंकार और दम्भ में आकर

लम्बी-लम्बी डींगें हांकने वाले ही पाये जाते हैं। व्यास जी में दम्भ और अहंकार का सर्वथा अभाव था।

एक बार राजस्थान के मुख्यमंत्री के पद से अलग होने की चर्चा चल पड़ी। मैंने अनुभव किया कि व्यास जी गुटबाज नहीं थे और उनमें संकीर्ण जातिवाद, क्षेत्रवाद अथवा ऐसी कोई अन्य भावना भी नहीं थी। उन्होंने यदि पुष्करणा समाज को ही अपना लिया होता और उसको अपने साथ मिला लिया होता, तो वे एक बड़ी 'शक्ति' बन जाते। उन्होंने तो ऊंची पद प्रतिष्ठा प्राप्त करके अपने पुष्करणा भाइयों को कुछ ऐसा नाराज़ कर दिया था कि वे भी उनके विरोधी बन गये थे। एक बार किसी ने उनसे पूछा कि आप राष्ट्रवादी बनकर पुष्करणा सभा-सम्मेलनों में क्यों शामिल होते हैं। उन्होंने सहजभाव से उत्तर दिया कि पुष्करणा समाज मेरा घराना या परिवार है। कौन ऐसा व्यक्ति है, जो अपने घर और परिवार को सभी दृष्टियों से उन्नत नहीं देखना चाहता? पुष्करणा समाज का पिछड़ा रहना अपने देश व राष्ट्र के ही पिछड़ेपन की निशानी होगी। इसलिये मैं सभी समाजों की चहुंमुखी उन्नति, प्रगति और विकास का हामी हूं। फिर भी पुष्करणा समाज को लेकर उन्होंने कोई गुट, दल, या पार्टी खड़ी नहीं की।

व्यास जी की अन्तिम बीमारी का भी कुछ उल्लेख यहां कर दूं। व्यास जी की अन्तिम बीमारी की चिकित्सा को देखकर एक आयुर्वेद चिकित्सक के नाते मेरी यह धारणा और अधिक प्रबल हो गई कि विदेशी चिकित्सा पद्धति हमारे लिये यथेष्ट हितकर नहीं है। उनका जो निदान किया गया, मेरे विचार से वह ठीक न था। यदि आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के अनुसार ठीक निदान किया जाता, तो सम्भव है कि उनकी जीवन रक्षा हो जाती। उनके सुपुत्र श्री देवनारायण व्यास के शब्दों में एक चेतावनी को भी यहां उल्लेख कर दूं। मैंने उनसे पूछा कि व्यास जी को एकाएक यह क्या हो गया। उन्होंने शोकातुर शब्दों में कहा कि पुष्करणा भाइयों के भोजों ने यह उत्पात खड़ा कर दिया। उन दिनों जोधपुर और जैसलमेर आदि में साहे के दिन थे, जिनमें एक-एक दिन में पुष्करणों के कई भोजों में शामिल होना पड़ता है। व्यास जी वह घातक बीमारी उन भोजों से ही मोल लेकर आये थे। अपने समाज का जो महान् नेता आजीवन कट्टर समाज सुधारक रहा, वह भी अन्त में जातीय भोजों की सामाजिक रूढ़िगत परम्परा के मायाजाल से न बच सका। यह खेदपूर्ण दुर्घटना हम सबके लिये एक चेतावनी और चुनौती ही होनी चाहिये।

व्यास जी के संगीत प्रेम की एक घटना मैं कभी नहीं भूलता। मुझे उससे पता चला कि वह संगीत-कला के पहली श्रेणी के विशेषज्ञ भी थे। एक आयोजन में एक लड़की को संगीत के लिये पदक प्रदान किया गया, तो एक अन्य लड़की को भी कुछ पारितोषिक देने की बात कही गई। व्यास जी ने धीरे से मुझसे कहा कि दूसरी लड़की का संगीत तो शास्त्र की दृष्टि से भी कुछ ऐसा गलत था कि उसको सुनकर

मेरा तो रक्तचाप बढ़ गया। उनसे रहा न गया। उन्होंने खड़े होकर अपनी सम्मति प्रकट करने में कुछ संकोच नहीं किया। उन्होंने उस लड़की के गले के माधुर्य की तो प्रशंसा की और कहा कि उसको संगीत सीखने की अभी आवश्यकता है। ऐसे संगीत को प्रोत्साहन देना उसकी शास्त्रीय परम्परा के विपरीत होगा। तब श्रोता भी यह जानकर चकित रह गये कि व्यास जी की संगीत में कितनी और कैसी पहुंच थी।

१६

त्यागवीर व्यास जी

पं० विश्वनाथ जी सारस्वत, सम्पादक 'लोक सेवक,' यवतमाल (महाराष्ट्)

पं० जयनारायण जी व्यास का समस्त जीवन संघर्ष में ही बीता। राजस्थान में 'कांग्रेसी' के रूप में यदि किसी को याद किया जायगा तो वे व्यास जी ही हैं। राजस्थान में जो भी आंदोलन हुआ, उसका सारा श्रेय व्यास जी को ही था। उन्होंने जोधपुर में अगस्त क्रान्ति से पहले ही आन्दोलन का शंख फूंक दिया था।

राजस्थान संघ के निर्माण के बाद राजस्थान के बड़े सेठ जी ने उनको कहा कि सरदार पटेल के कहे मुताबिक चलो नहीं तो वे पटक देंगे। उसका उत्तर उसी समय उन्होंने बड़े कड़े शब्दों में यह दिया कि "जो ऊपर सोता है वह नीचे पटक दिया जाता है, व्यास तो ज़मीन पर सोने वाला है। ज़मीन पर सोने वाला कहीं भी कभी भी पटका नहीं जा सकता।"

श्री जयनारायण जी बड़े ही हँसमुख, मिलनसार और अपनी बातों के पक्के थे। वे झूठे वादे न करने वाले स्पष्ट वक्ता थे। वे जब राजस्थान के मुख्यमंत्री बने, तो आठ सौ रुपया मासिक लेते थे और वह सारी राशि उनके यहां आने वाले मित्रों के भोजन खर्च में ही पूरी हो जाती थी। ऐसे त्यागवीर मर्द को श्रद्धांजलि देना प्रत्येक राजस्थानी का कर्त्तव्य है।

२०

सफल मांझी

श्री ब्रजसुन्दर शर्मा, बी० ए०, एल-एल० बी०, एडवोकेट, अशोक मार्ग, जयपुर,(राजस्थान)

राजस्थान के अन्य देशी राज्यों की अपेक्षा कोटा, बूंदी, करौली तथा झालावाड़ आदि राज्य जन-जागृति की दृष्टि से पिछड़े समझे जाते रहे। राजस्थान के वर्तमान नेताओं में व्यास जी पहले थे, जिन्होंने इन राज्यों की स्थिति पर ध्यान दिया। १६२६-३० में 'तरुण राजस्थान', १६३५-३६ में 'अखण्ड भारत' और १६३६-३७ में 'आगीवाण' पत्रों में व्यास जी इन राज्यों के समाचार विशेष रूप से प्रकाशित किया करते थे। हिन्दी, गुजराती और अंग्रेज़ी के अनेक पत्रों के संवाद-दाता के रूप में भी वह इन राज्यों की सुधि लेते रहते थे। मुझसे उनका पहला प्रत्यक्ष परिचय १६४६ में उदयपुर में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद् के अधिवेशन पर हुआ था और वह परिचय उत्तरोत्तर कुछ ऐसा दृढ़ होता गया कि मुझे उनका अन्तरंग साथी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

देशी राज्यों में जब लोकप्रिय मंत्रिमण्डल कायम हुए, तब हमने अपने यहां लोकप्रिय सरकार कायम करने से इसलिए इनकार कर दिया कि हम महाराजा द्वारा नियुक्त दीवान के नीचे काम करने को तैयार न थे। व्यास जी तब बूंदी पधारे और हमारे विचार की उन्होंने सराहना की। अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद् की प्रादेशिक समिति में मुझे उदयपुर में शामिल किया था। उसमें जब देशी नरेशों की छत्रछाया में उत्तरदायी शासन कायम करने के सम्बन्ध में चर्चा हुई, तब मैंने 'छत्रछाया' का विरोध किया। व्यास जी यद्यपि मेरे विरोध से सहमत न थे। फिर भी उन्होंने मेरे विचार को सराहा और अपनी एक कविता सुनाकर मेरा समर्थन किया। रास्थान के मुख्यमंत्री बनने पर उन्होंने मुझे अपने मंत्रिमण्डल में लिया और मुझ पर अर्थमंत्री का कार्य-भार सौंपा। हमने जिन विषम आर्थिक परिस्थितियों में शासन का कार्य-भार संभाला, उसकी नौका को सफलता से पार पहुंचाने का सम्पूर्ण श्रेय व्यास जी को ही दिया जाना चाहिए। मैं अत्यन्त विनीत भाव से उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

२१

उनका स्वप्न

डा० युद्धवीर सिंह, अध्यक्ष-उद्योग सलाहकार समिति, दिल्ली

व्यास जी देशी राज्यों की आजादी के लिये तड़प रखने वाले नेता थे। देशी रियासतों के लोग उन दिनों में दोहरी गुलामी में जकड़े हुए थे। व्यास जी ने गुलामी के उस गढ़ को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। दिल्ली में जब भी वे आते तो मुझसे भेंट होती रहती थी। प्राय: किसी क्रान्तिकारी भाई की चिकित्सा या किसी मफरूर देशभक्त को आश्रय देने के सम्बन्ध में ही उनसे भेंट होती थी। जो कुछ भी सेवा इस संबंध में होती मैं करता। उन दिनों मैं देखता था कि दिल्ली में किसी को कहीं आश्रय दिलाने अथवा किसी का इलाज कराने आदि के लिये व्यास जी को मीलों पैदल चलना पड़ता था। उनके पास उतने पैसे नहीं होते थे कि खुले खर्च किये जा सकते। व्यास जी खर्च भी किफायत या कंजूसी से करते थे। कहा करते थे कि अन्य ज़रूरी खर्चों के लिये किफायत करनी आवश्यक है।

लगन के पक्के, धुन में मस्त, न खाने की चिन्ता न पीने की, जो जहां मिल गया, खा-पी लिया पर, लगे हैं अपनी धुन में, राजस्थान को भी शेष भारत का-सा दर्जा प्राप्त कराने में व्यास जी का प्रमुख हाथ रहा। व्यास जी का स्वप्न था, जो उनके जीवन में ही साकार हो गया।

२२

बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न

श्री गजराजसिंह, आई० ए० एस०, २९ गुरुद्वारा रकाबगंज रोड, नई दिल्ली

राजस्थान का अतीत शौर्य, वीर्य, पराक्रम एवं बलिदान का गौरव पूर्ण इतिहास है। भारत का शीश आज भी उन ज्वलन्त एवं उच्चादर्शों से उन्नत है और उनसे हम मात्र गौरवान्वित ही नहीं होते; प्रति क्षण, प्रति पल अनुप्राणित भी होते रहते हैं। राजस्थान की मिट्टी में कुछ ऐसा गुण है कि इस भूमि से अनेक नर रत्न उत्पन्न हुए और देश की गौरवगरिमा को संवारते निखारते रहे। उसी शृंखला की एक कड़ी लोकनायक श्री जयनारायण व्यास हैं। व्यास जी मूलत: जन नेता थे इसी-लिये उन्हें हम लोकनायक कहा करते थे। राजनीतिक और समाज में ऊंचे-से-ऊंचा

पद प्राप्त करने के बावजूद उनके मन में कभी अभिमान का लेशमात्र छू न पाया था। वे सादा जीवन और उच्च विचार के अनुपम उदाहरण थे।

जीवन में आदर्शों का बड़ा महत्त्व है और ईमानदारी के आदर्श को अपने जीवन में पूरे तौर पर उतार लेना बहुत बड़ी बात है। व्यास जी ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में बड़ी-बड़ी ज़िम्मेदारियां निभाईं और उन्होंने ईमानदारी के आदर्श को अक्षरशः निभाया। इस सांसारिक जीवन में बहुत से उलट-फेर हुआ करते हैं, किन्तु उत्थान पतन की घड़ियों में भी ईमानदारी और सच्चाई को बनाये रखने और कर्त्तव्य पर अडिग रहने की व्यास जी में अपूर्व क्षमता थी।

व्यास जी की प्रतिभा बहुमुखी थी। वे सफल वक्ता, अनुभवी शिक्षा-विद् और नृत्य-संगीत के विशेपज्ञ तथा यशस्वी कलाकार थे। उन्होंने अपना जीवन सामान्य शिक्षक के रूप में प्रारम्भ किया और अपने विशिष्ट गुणों के कारण जीवन की इतनी बड़ी ऊंचाई पर पहुंच गये। व्यास जी सच्चे देशभक्त और साहसी योद्धा थे। मुझे उनकी यह बात सबसे अधिक ज़ोरदार मालूम हुई कि अब के गुजरात में विलय के बाद उन्होंने सरदार पटेल के सम्मुख उसका विरोध किया। अन्त में उनकी जीत हुई। उनकी निर्भीकता के कारण ही उनको राजस्थान केशरी कहा जाता था।

व्यास जी के जीवन में जो कुछ भी था, जितनी भी शक्ति थी उसका एक-एक कण उन्होंने राजस्थान देश और जनता को अर्पित किया। उनके जीवन पर दृष्टि निक्षेप करने से ऐसा लगता है कि वे कर्मयोगी थे और गीता के 'कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचनः' के सिद्धान्त को उन्होंने सच्चे अर्थों में अपने जीवन में उतारा था। व्यास जी अपने त्याग, बलिदान एवं देश प्रेम के कारण मर कर भी अमर हैं और उनका नाम राजस्थान के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा।

२३

सच्चे व दृढ़प्रतिज्ञ

श्री प्रयागराज जी भण्डारी, जोधपुर (राजस्थान)

मेरा सन् १९१७ से १९६३ तक श्री जयनारायण जी व्यास के साथ घनिष्ट सम्बन्ध रहा। मेरे ध्यान में ऐसा सच्चा व दृढ़ प्रतिज्ञ राजस्थान में नहीं बल्कि राष्ट्रीय कांग्रेस में भी कभी नज़र नहीं आया। उनमें खास बात यही थी कि वह कभी भी सच्ची बात कहने में कभी कोई शंका नहीं करते थे। भ्रष्टाचार से वह

बहुत दूर थे। वह हर वक्त खुश तवियत रहते थे। उनके दिल में किसी के विरुद्ध दुरभाव न रहता था। सच्चाई पर डटे रहने के कारण ही राजनीति में जरूर कभी-कभी असफल रहे। हमेशा अपने असूल पर कायम रहे। उनकी माली हालत बहुत कमज़ोर थी मगर उसके लिये भी उन्होंने अपने सिद्धान्त व आदर्श को नहीं छोड़ा। कई मित्रों ने उनको धोखा भी दिया, मगर उन्होंने उस पर कोई कटुता प्रकट नहीं की। वह हमेशा अपनी धुन के पक्के थे और करते वही थे जो उनको ठीक जंचता था।

२४
भारत मा के तपस्वी सपूत

श्री रामविलास सोनी, चान्दरूण (राजस्थान)

२२ नवम्बर, १९५६ की घटना है कि माहेश्वरी महासभा के शिष्टमंडल की ओर से पूना के 'राजस्थानी वीर' के सम्पादक श्री नारायणदास जी धूत ने व्यास जी से मिलने का समय मांगा। उन्हें भय था कि १९५७ के चुनावों में व्यस्त होने के कारण व्यास जी शायद ही समय दे सकें। उन दिनों में आप प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के नाते कांग्रेसी उम्मीदवारों की छटनी करने में अत्यन्त व्यस्त थे। आपने दूसरे दिन सवेरे ८ बजे का समय दे दिया। धूत जी के साथ औरंगाबाद के समाज सेवी गुलाबचन्द जी नागौरी और लेखक आपकी सेवा में उपस्थित हुए। आपकी आत्मीयता से हम सब ऐसे प्रभावित हुए कि गद्‌गद हृदय आपके पास से लौटे।

संभवत: १९५८ की बात है। उनके नेतृत्व में संसद सदस्यों का एक दल देश का पर्यटन कर रहा था। कलकत्ता में टांटिया हाईस्कूल में दल के स्वागत का आयोजन किया गया। शाकाहार के सम्बन्ध में चर्चा चल पड़ी, तो व्यास जी ने अपने मांसाहार का एक प्रसंग उपस्थित करते हुए बताया कि कितनी भी सावधानी से क्यों न काम लिया जाय, कहीं-न-कहीं आदमी को धोखा खाना ही पड़ जाता है। अपनी कश्मीर यात्रा का उल्लेख करते हुए आपने कहा कि वहां चाय-पान के लिये पकौड़ी और समोसे आदि की व्यवस्था की गई थी। मुझे मालूम था कि कश्मीर में बिना मांस के पकोड़ी नहीं बनतीं। इसलिए मैंने पकौड़ी छोड़कर समोसों पर हाथ साफ किया। बाद में पता चला कि समोसों में भी आलू आदि न डालकर मांस ही डाला गया था। हम सब यह जानकर चकित से रह गये और मुझे तो उस

दिन मांसाहार के लिये प्रायश्चित्त भी करना पड़ा। यह थी व्यास जी की सरलता और स्पष्टवादिता। अपनी भूल को स्वीकार करने में उन्हें कभी कोई संकोच न होता था।

अप्रैल १९६१ की बात होगी। मैं उनके नई दिल्ली के साउथ एवेन्यू के निवास स्थान पर उनसे मिलने गया। डेढ़ घंटे तक उनसे विभिन्न विषयों पर बातचीत हुई। उनमें मुख्य विषय जयपुर महाराजा से उनकी मुलाकात था। उसके बारे में समाचार-पत्रों में यहां तक अफवाहें छप गई थीं कि महाराजा ने उनको स्वतन्त्र पार्टी में शामिल होने के लिये बहुत बड़ी रकम देने का वादा किया है। परन्तु वास्तविकता यह थी कि आपको कांग्रेस के कुछ बड़े लोगों ने जयपुर महाराजा साहब के पास इस उद्देश्य से भेजा था कि आप उनको स्वतन्त्र पार्टी में शामिल होने से रोकें। व्यास जी अपने मिशन में सफल हुए। मैंने देखा कि उन निराधार अफवाहों का आपके मन पर ज़रा-सा भी असर न हुआ था। निन्दा और स्तुति में समान भाव बनाये रखने में व्यास जी को कमाल हासिल था।

एक और छोटी-सी बात लिख दूं। वह छोटी होने पर भी व्यास जी की महानता की ही सूचक है। आप एक बार रेलवे बोर्ड के किसी काम से कलकत्ता पधारे मैं उनसे स्टेशन पर मिलने गया। सेठ राधाकृष्ण जी कानोडिया के वे मेहमान थे। उनकी गाड़ी पर जब आप बालीगंज के लिये रवाना हुए, तो मैं उनके साथ था। हावड़ा पुल पार करने पर उन्होंने सामने ही "भाभी की चूड़ियां" सिनेचित्र का पोस्टर लगा देखा। मुझसे सहसा ही पूछ बैठे कि क्या यह खेल चल रहा है? मैंने कहा, क्या आप खेल देखना चाहेंगे? आपने सहज भाव में उत्तर दिया कि देखने की बड़ी इच्छा है। इसमें जोधपुर का मेरा एक परिचित युवक मुख्य भूमिका अदा कर रहा है। मैं देखना चाहता हूं कि वह उसमें कहां तक सफल हुआ है। यह जिज्ञासा व्यास जी के कला-प्रेम की सूचक थी और उससे यह भी पता चला कि आप अपने परिचित युवकों को हर क्षेत्र में अग्रसर और सफल हुआ देखना चाहते थे। व्यास जी सरीखे कितने नेता हैं, जो नवयुवकों पर ऐसी कृपा-दृष्टि रखते हैं?

ऐसी कितनी ही आपबीती घटनाएं लिखी जा सकती हैं, परन्तु उनसे कुछ भी सीखना हम सबका परम कर्त्तव्य है। इसी रूप में हम भारत के एक तपस्वी सपूत को अपने बीच जीवित रख सकते हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि यशस्वी साहित्य-सेवी श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार की साधना के फलस्वरूप संकलित व सम्पादित 'धुन के धनी' ग्रंथ व्यास जी को सच्चे रूप में हम सबके सामने उपस्थित करने में सफल हो सकेगा। यह भी आपकी स्मृति रक्षा का एक पावन प्रयास है।

२५

व्यास जी और पुष्करणा समाज

श्री विष्णुदत्त पुरोहित संयुक्त मन्त्री, पुष्करणा समाज जोधपुर (राजस्थान)

व्यास जी पुष्करणा समाज में पैदा हुए। उसके गुणों से उनके जीवन का निर्माण हुआ, उन्हीं गुणों से प्रभावित हो उन्होंने पुष्करणा समाज की सेवा से अपने सार्वजनिक जीवन का शुभारम्भ किया। उन्होंने स्थानीय, प्रादेशिक और अखिल भारतीय आधार पर समाज की सेवा की। अखिल भारतीय पुष्करणा महा सम्मेलन को उन्होंने विशेष रूप से जीवन प्रदान किया और उसके माध्यम से समाज को प्रगति के पथ पर अग्रसर किया। पुष्करणा युवक मण्डल के भी उन्नायक व्यास जी ही थे। उन्होंने यह स्वीकार किया था कि मेरे राजनीतिक जीवन के विकास का आदि स्रोत पुष्करणा नवयुवक मण्डल ही था।

आपकी ही प्रेरणा से स्त्री शिक्षा के लिये 'जयकन्या पाठशाला' की स्थापना की गई थी, जिसका संचालन आपके पूज्य पिता पं० सेवाराम जी ने तैरूदा और आटा मांग कर किया था। आज भी उसमें समाज की सैकड़ों कन्याएं शिक्षा ग्रहण कर रही हैं।

पत्रकारिता के सार्वजनिक क्षेत्र में भी आपने 'पुष्करणा ब्राह्मण' तथा 'पुष्करणा ब्राह्मणोपकारक' आदि सामाजिक पत्रों के माध्यम से ही प्रवेश किया। आपने ब्यावर से 'आगीवाण' नाम का राजस्थानी भाषा में जो पाक्षिक पत्र निकालना शुरू किया था, उसका उद्देश्य निम्न पंक्तियों में दिया गया था—

"भूल्या भटका फिरे लोगड़ा, हित अनहित सूंवण अंजाण।
ह्याने मारग सुझावण आयो, झण्डो लेकर 'आगी वाण'॥"

पुष्करणा नवयुवक मण्डल के बाद आपने क्रमशः मारवाड़ हितकारिणी सभा, मारवाड़ राज्य लोकपरिषद्, देशी राज्य लोकपरिषद्, यूथ लीग और जोधपुर कांग्रेस का गठन करके जन-जागृति को बल प्रदान किया। अगस्त, १९६२ में दिल्ली में अखिल भारतीय पुष्करणा महा सम्मेलन का जो आयोजन हुआ, उसमें आपने राज्य सभा के कांग्रेसी सदस्य होते हुए भी पूर्ण भाग लिया। ये दिन वे थे जब व्यास जी के विरुद्ध अनुशासन की कार्रवाई करने के समाचार जोरों पर थे और समाचार-पत्रों में भी उनकी चर्चा थी। हमें भय हुआ कि कहीं व्यास जी महा सम्मेलन से उदासीन न हो जायं और उसका सारा खेल फीका न पड़ जाय। परन्तु व्यास जी पर उन समाचारों का कुछ भी प्रभाव न पड़ा और आपने आदि से अन्त तक पूरे उत्साह से उसमें भाग लिया। नई दिल्ली से निकलने वाले महा सम्मेलन के मुख पत्र 'पुष्करणा सन्देश' को भी आप अपने सहयोग से उन्नत बनाते रहे।

इस जातीय प्रेम व समाज प्रेम के रहते हुए भी अपने शासनकाल में न तो

जोधपुर में और न जयपुर में उन्होंने कोई ऐसा काम किया, जिसको पक्षपातपूर्ण भाई-भतीजावाद अथवा संकीर्ण जातिवाद कहा जा सके। इसी कारण समाज के अनेक व्यक्ति उनसे नाराज़ रहे। परन्तु व्यास जी ने 'निन्दतु नीतिनिपुणा यदि वास्तु-वन्तु' के नीति वाक्य को आदर्श के रूप में स्वीकार करके न्यायोचित मार्ग से कभी भी विचलित होना स्वीकार नहीं किया। उनका जाति प्रेम राष्ट्र प्रेम के लिये कभी बाधक नहीं हुआ। वे सच्चे अर्थों में ब्राह्मण थे और आजीवन ब्राह्मण की मर्यादा को उन्होंने निभाया। यह भी पुष्करणा समाज में जन्म लेने और उसके साथ सम्बन्धित रहने का ही शुभ परिणाम था। ब्राह्मणत्व का जो आदर्श वे अपने पीछे छोड़ गये, वह सबके लिये अनुकरणीय है।

२६

आदर्श समाजसेवी

श्री रामनारायण जी शर्मा (कल्ला), ६/१५ राजेन्द्रनगर, नई दिल्ली–५

"जिस जाति के साथ मेरे पारिवारिक सम्बन्ध हैं, बेटे-बेटियों के सम्बन्ध हैं, खून का रिश्ता है, उसके उत्थान और कल्याण का प्रयत्न करना मेरा पावन कर्त्तव्य है। इसमें ऐसी कोई बात नहीं जिसे साम्प्रदायिक अथवा राष्ट्र विरोधी माना जाय। मैंने देखा है कि कई जगह भूमिहारों, जाटों, अहीरों तथा अन्य जातियों ने संस्थाएं बनाकर काफी प्रगति की है, हम अपने सामूहिक प्रयत्नों से सब कुछ कर सकते हैं।" ये थे वे शब्द जो पूज्य व्यास जी ने अखिल भारतीय पुष्करणा ब्राह्मण सम्मेलन में १५ अगस्त, १९६२ को दिल्ली में कहे थे और हम सबको समाज-सेवा के लिये प्रेरित किया था। उनकी ही प्रेरणा का यह शुभ परिणाम है कि मैं यत्किं-चित समाज-सेवा के काम में संलग्न हूं।

मेरा व्यास जी से उनके निधन के तीन-चार वर्ष पहले ही परिचय हुआ। वे राजसभा के सदस्य थे और मैं राज्यसभा के कार्यालय में काम करता हूं। इसलिए दो-तीन दिन में एक बार मिलना-जुलना हो ही जाता था। मैं वह दिन नहीं भूलता, जब वे मेरी बीमारी का समाचार पाकर राजेन्द्रनगर में मेरा मकान ढूंढ़ते हुए आये। उनको मेरे मकान का ठीक-ठीक पता न था। इसलिए पहले दिन वापस लौट गये और दूसरे दिन फ़िर पूरा पता लेकर पधारे। सन्देह यह था कि मुझे हृदय रोग का दौरा था। मैं समझता था कि दो-एक दिन के आराम से मैं स्वस्थ हो जाऊंगा। परन्तु व्यास जी को सन्तोष न हुआ। वह मुझे आग्रह करके अस्पताल ले गये।

वहां मेरा मेडिकल चैकअप कराया और पूरी तरह सन्तोष करके वापस लौटे। यह थी उनकी उदारता, आत्मीयता और बड़प्पन, जिसका परिचय पाकर मैं गद्गद हो गया। उनके प्रति मेरा आकर्षण और सम्बन्ध बिल्कुल घर का-सा हो गया।

मेरा जितना सम्पर्क बढ़ता गया, उतना ही मैं उनके प्रति आकर्षित होता गया। मैंने देखा कि वे एक महान् विभूति थे और किसी प्रकार के गुणों से सम्पन्न थे। वह बड़े ही सभ्य, शिष्ट, आचारवान, दयालु, सरल, सहृदय और सिद्धान्त-वादी थे। अपने पुष्करणा समाज की प्रगति सम्बन्धी गतिविधि में उनकी विशेष रुचि थी और उसी रुचि के कारण मैं उनको आदर्श समाजसेवी कह सकता हूं। दिल्ली में सम्मेलन के आयोजन के बाद तो वह अहोरात्र समाज की प्रगति के लिये चिन्तित रहते थे। कभी-कभी तो ऐसा प्रतीत होता था, जैसे कि वह सम्मेलन के ही रंग में रंग गये थे और हम सबको भी उसी के रंग में रंगा देखना चाहते थे। उनकी अन्तिम बीमारी के दिनों में मैं जब भी कभी अस्पताल में उनको देखने जाता, तब वह सदा पुष्करणा सम्मेलन, पुष्करणा सन्देश तथा पुष्करणा समाज की ही चर्चा शुरू कर देते। मैं उनसे कहता कि बीमारी में आपको आराम करना चाहिए, काम की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। वे यह कह देते कि मेरा जीवन तो संघर्ष में ही बीता है और काम करना मेरे लिये एक संघर्ष ही है। उसी में मुझे सुख, शान्ति व सन्तोष अनुभव होता है। यही मेरा आराम है। कर्म के प्रति उनकी यह निष्ठा अनुकरणीय थी।

अपने निधन से कुछ ही समय पहले व्यास जी ने राजधानी में पुष्करणा समाज की प्रगति, विकास तथा उन्नति के सम्बन्ध में एक योजना तैयार की थी। उनकी आकांक्षा यह थी कि एक पुष्टिकर भवन का निर्माण किया जाय और समाज की समस्त गतिविधियों का उसको केन्द्र बनाया जाय। पुष्करणा सम्मेलन और 'पुष्करणा सन्देश' के कार्यालयों के अतिरिक्त उसमें विद्यार्थियों तथा अतिथियों के निवास की भी व्यवस्था की जाय। उनके ही आग्रह पर अखिल भारतीय पुष्करणा सम्मेलन का केन्द्रीय कार्यालय दिल्ली में रखा गया था और 'पुष्करणा सन्देश' को उन्नत बनाने के लिये उनका परामर्श और पथ-प्रदर्शन हमेशा मिलता रहता था। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि भवन की योजना को अब उनकी स्मृति में ही पूरा किया जाना चाहिए और समाज के शुभचिन्तकों को राजधानी में 'व्यास पुष्टिकर भवन' निर्माण के लिये कुछ ठोस प्रयत्न अवश्य ही करना चाहिए। मेरी प्रार्थना यह भी है कि उनकी स्मृति में एक 'पुष्टिकर एजुकेशन ट्रस्ट' भी कायम किया जाना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में भी व्यास जी की देन कुछ कम नहीं है। इसी कारण उनको आजीवन 'मास्टर जी' कहा जाता रहा। शिक्षक के रूप में उनके जीवन का काफी समय बीता और उन्होंने एक आदर्श शिक्षक बनकर

दिखाया। अपने समाज में उन्होंने सबसे अधिक ऊंचा पद तथा प्रतिष्ठा प्राप्त की। उनकी प्रतिष्ठा समाज में वैसी ही थी, जैसी कि रामायणकाल में वशिष्ठ तथा विश्वमित्र की थी।

वह हम सबको छोड़कर तब विदा हो गये, जब हमें उनके पथ-प्रदर्शन की सबसे अधिक आवश्यकता थी। उनके अभाव की पूर्ति इसी रूप में की जा सकती है कि हम सब समाज-सेवा के उनके आदर्श को अपनाकर उसकी प्रगति, विकास और उन्नति में सहयोग दें, उसके प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करें और अपने नेता के महान् असिद्ध स्वप्न को पूरा करें।

२७

'भृगुसंहिता' की मनोरंजक कथा और व्यास जी

संसद सदस्य श्री जसवंतराय जी मेहता से एक भेंट के आधार पर

श्री जसवन्तराय जी मेहता जोधपुर से लोक-सभा के सदस्य हैं। कभी दिल्ली में एक पहुंचे हुए ज्योतिषी आये हुए थे। वह करौलबाग में जोशी रोड पर ठहरे हुए थे। उनके पास 'भृगुसंहिता' की एक प्रति थी। उसके आधार पर वह लोगों की जन्मकुण्डलियां देखा करते थे और उनके अतीत तथा भविष्य की आपबीती-जगबीती बताया करते थे। मेहता जी को उन्हें अपने साथियों की कुण्डलियां दिखाने की कभी कुछ जिज्ञासा पैदा हुई। एक दिन मेहता जी व्यास जी से बोले कि आपकी जन्मकुण्डली हो, तो दीजिये। एक पहुंचे हुए ज्योतिषी आये हुए हैं, उनको दिखाऊंगा। उन्होंने उन संसद सदस्यों की भी चर्चा की, जिनकी कुण्डलियां वे उन्हें दिखा चुके थे। व्यास जी के पास कोई साफ-सुथरी कुण्डली न थी। फटे-सटे कागज़ पर पुराने समय की लिखी जो कुण्डली थी, वही उन्होंने उनको दे दी। मेहता जी उसको लेकर ज्योतिषी के यहां पहुंचे। ज्योतिषी ने उनसे कहा कि यह कुण्डली तो ऐसे व्यक्ति की है, जो दो बार राजपुरुष रह चुका है; परन्तु जिसके भाग्य का सितारा पूर्ण रूप में नहीं चमक सका।

मेहता जी ने वहां से ही व्यास जी को फोन पर सूचित किया कि आपकी कुण्डली बिल्कुल ठीक निकली। आप यहां आ जायं, तो बहुत अच्छा रहेगा। व्यास जी वहां पहुंच गये।

ज्योतिषी जी ने 'भृगुसंहिता' के आधार पर कुण्डली की एक कथा कह सुनाई।

कथा यह थी कि राजघराने का एक युवक घर से निकला और एक ऋषि के आश्रम में जा पहुंचा। कुछ दिन बाद ऋषि उस पर कुपित हो गये और वह आश्रम छोड़ने को बाध्य हो गया। वहां से वह युवक प्रयागराज में एक-दूसरे बड़े ऋषि के आश्रम में पहुंच गया। थोड़े दिन बाद वह भी उस पर कुपित हो गये। उन्होंने क्रुद्ध होकर युवक को एक शाप दे दिया। शाप यह था कि उसको सात जन्म सर्पयोनि में बिताने होंगे।

इस भयानक शाप पर आश्रम में खलबली मच गई। युवक के साथी उसको साथ ले गुरु जी की सेवा में उपस्थित हुए और क्षमा प्रदान करने के लिये अनुनय विनय करने लगे।

गुरु जी ने बड़ी गम्भीरता में कहा कि शाप वापस नहीं लिया जा सकता। बहुत अनुनय विनय करने पर वह उसको कुछ हलका करने के लिये सहमत हो गये और कहा कि तीन जन्म तो सर्पयोनि में बिताने ही होंगे। उसके बाद चार योनि मनुष्य जन्म पाने पर भी सर्पगति बनी ही रहेगी।

गुरु जी का अभिशाप यह था कि स्वभाव में चंचलता रहेगी। किसी भी स्थान पर टिककर रहना सम्भव न होगा। ऐसे लोगों पर विश्वास किया जायगा, जो विश्वास योग्य न होंगे और जो विश्वास योग्य होंगे, उन पर क्रोध किया जायगा। मित्र सहज में शत्रु बन जायंगे। निर्भर करने योग्य साथी नहीं मिलेंगे।

व्यास जी सारी कथा सुनकर चकित से रह गये। उन्होंने उस कथा को वहां बैठे-बैठे ही डायरी में लिख लिया और अपने सम्बन्ध में अनेक प्रश्न पूछकर उनका समाधान भी अपनी डायरी में लिखा। व्यास जी का कौतुक कुछ इतना बढ़ा कि जब कभी उधर जाते-आते, तब उन ज्योतिषी के साथ विनोद व मनोरंजन में कुछ समय अवश्य बिताते।

'भृगुसंहिता' की कथा के जानकार व्यास जी के मित्र प्रायः यह कहते सुने जाते थे कि सम्भवतः उस शाप का ही यह परिणाम था कि लिखने के समय व्यास जी की जिह्वा का अग्रभाग सांप की जिह्वा की तरह निरन्तर चलता ही रहता था। जब तक उनकी कलम चलती थी, तब तक दोनों होंठों के बीच जिह्वा का अगला हिस्सा बड़ी चंचलता से निरन्तर गतिशील रहता था। उनकी यह आदत आजीवन बनी रही। साथियों के टोकने पर भी उसको व्यास जी बदल नहीं सके। चंचलता और चपलता उनमें बच्चों की तरह स्वभावसिद्ध थी। ऊंचे-से-ऊंचे पद पर प्रतिष्ठित हो जाने पर भी वह वैसी ही बनी रही। किसी एक स्थान पर अधिक वर्ष वह टिक नहीं सके और कोई भी काम उन्होंने जमकर नहीं किया। राजनीतिक आन्दोलन में वर्षों संलग्न रहने पर वहां भी वे प्रायः भ्रमण में ही रहे। उनका एक बिस्तर भ्रमण के लिये सदा बंधा रहता था। सांप की ही तरह दूसरों की कोप

दृष्टि उन पर बनी रही। अपने सार्वजनिक जीवन में कितने ही प्रहार और विश्वासघात उनको लगातार सहन करने पड़े। जेल यातनाएं भोगीं, मित्रों का विश्वासघात सहन किया और बड़े-से-बड़े राजपुरुषों के कोपभाजन बने।

उनके मित्र और साथी 'भृगुसंहिता' की कथा पर उनके साथ प्रायः हास-परिहास करते रहते थे।

प्रकरण १२

श्रद्धा सुमन

शुद्ध राष्ट्रीय वृत्ति

श्री जयनारायण व्यास से काफी वर्षों तक घनिष्ट सम्वन्ध रहा। जव मैं अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का प्रधानमंत्री था, तव वे कई वर्षों तक राजस्थान के मुख्य-मंत्री रहे। इस सिलसिले में मुझे कई वार जयपुर जाना पड़ता था। कांग्रेस व शासन सम्बन्धी गम्भीर विषयों पर वे अपने मत पर अडिग रहते थे और अपने सार्वजनिक जीवन में एक स्तर से कभी नीचे नहीं गये। वे सच्चे अर्थ में शुद्ध राष्ट्रीय वृत्ति से सार्वजनिक कार्य करते थे। उनका जीवन कसा हुआ व त्यागमय था। हम उनके जीवन से वहुत वर्षों तक प्रेरणा लेते रहें, यही भगवान् से प्रार्थना है।

—श्रीमन्नारायण, सदस्य योजना आयोग, नई दिल्ली

सच्ची श्रद्धांजलि

उनके निधन से स्वतन्त्रता संग्राम का एक वीर योद्धा और सच्चे अर्थों में प्रजातन्त्र का एक हामी उठ गया। उनका व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावशाली और शक्तिशाली था। वे महान् देशभक्त, महान सुधारक, यशस्वी लेखक, प्रतिभासम्पन्न कवि, सुयोग्य शासक, अच्छाई के निर्भीक समर्थक और असहायों के सच्चे सेवक थे। मनुष्य-मनुष्य में किसी भी प्रकार का ऊंच-नीच का भेद या अन्तर उन्हें स्वीकार न था। पिछड़े हुए वर्ग ने तो अपना एक वहुत ही वड़ा शुभ चिन्तक खो दिया। पिछड़े वर्गों में हरिजन-समाज को सवसे अधिक धार्मिक पक्षपात, सामाजिक अन्याय तथा सामन्ती शोषण का शिकार होना पड़ता था। उन्होंने इस पक्षपात, अन्याय और शोषण का अन्त करने के लिये पुरानी समस्त धार्मिक मान्यताओं,

सामाजिक धारणाओं तथा सामन्ती परम्पराओं को जड़मूल से नष्ट करने का बीड़ा उठा लिया था। धार्मिक अन्ध मान्यताओं के विरुद्ध उन्होंने जोरदार आवाज़ उठाई। सामाजिक रूढ़ मान्यताओं को मिटाने के लिये उन्होंने बड़े-से-बड़ा संघर्ष छेड़ा और सामन्ती परम्पराओं को नष्ट करने के लिये तो वे वीर सेनानी की तरह जूझते रहे। इसीलिये मैं उनको पिछड़े वर्ग, विशेषत: हरिजन समाज का ऐसा उद्धार करने वाला मानता हूं, जिसने उनका कायाकल्प करने के लिये कुछ उठा न रखा। सामन्ती परम्पराओं से हमें छुटकारा मिल चुका है; किन्तु धार्मिक पक्षपात तथा सामाजिक अन्याय पुरानी बीमारी की तरह भारतीय जीवन से चिपटा हुआ है। उसको दूर करके ही अपने महान् दिवंगत नेता के प्रति हमें अपनी सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करनी चाहिये।

—भीखाभाई, श्रममंत्री, जयपुर (राजस्थान)

श्री जयनारायण व्यास राजस्थान की महान् विभूतियों में से थे। उन्होंने अपना जीवन राजस्थान के विकास में व्यतीत किया और मृत्यु पर्यन्त करते रहे। राजस्थान के मुख्यमंत्री के रूप में भी जो उन्होंने सेवाएं कीं, वे भूली नहीं जा सकती हैं। व्यास जी उच्च नैतिक आचरण के मनुष्य थे और नाना प्रकार के प्रलोभनों के बीच भी उन्होंने अपना व्रत कायम रखा। यद्यपि मुझे उनके साथ मिलने के अधिक अवसर नहीं मिले तथापि जितने अवसर भी प्राप्त हुए उन्होंने अपने व्यक्तित्व की मुझ पर छाप छोड़ी।

—ईश्वरदास जालान, कानून मंत्री, बंगाल शासन, कलकत्ता

प्रेरणाप्रद व्यक्तित्व

लोकनायक श्री जयनारायण व्यास राजस्थान की रियासतों के स्वाधीनता संग्राम के अग्रगण्य सेनानी थे। हमारी राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस जिस समय ब्रिटिश भारत में स्वाधीनता का संग्राम चला रही थी उस समय देशी रियासतों में आन्दोलन को चलाने के लिये अलग संस्था देशी राज्य लोक परिषद् का प्रादुर्भाव हुआ। ब्रिटिश भारत की अपेक्षा रियासतों में आन्दोलन चलाने में वहां के कार्यकर्त्ताओं को कहीं अधिक कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता था। उनकी संस्था भी कुछ अधिक न थी। व्यास जी ने इन्हीं कठिन परिस्थितियों में देशी राज्यों के स्वतन्त्रता संग्राम में प्रमुख भाग लिया। व्यास जी ने अपने त्याग एवं बलिदान से

देश सेवा का एक ज्वलन्त आदर्श जनता के सामने रखा। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद का इतिहास तो इतना नज़दीक का है कि उस अर्से में श्री व्यास जी ने जिस निर्भीकता के साथ अपने सिद्धान्तों पर अटल रहते हुए कठिनाइयों का सामना किया वह सर्वविदित होना चाहिए।

व्यास जी सदा ही जनता की विविध क्षेत्रों में सेवा के लिये तत्पर रहा करते थे। उच्च विचार और सादा जीवन के सिद्धान्त को पालने वाले वे आदर्श व्यक्ति थे। राजनीति के साथ साहित्य, पत्रकारिता तथा कला आदि क्षेत्रों में भी उनकी विशेष रुचि थी। उन्होंने अपना सारा जीवन देश और समाज की सेवा की सतत साधना में समर्पित कर दिया। अपने इस संघर्षमय जीवन में उन्होंने कभी भी अपने सिद्धान्तों के सामने कोई समझौता नहीं किया। उनके इस उज्ज्वल जीवन से राजस्थानियों को ही नहीं, देश के सभी लोगों को महान् प्रेरणा मिलती रहेगी। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि के रूप में यह ग्रन्थ प्रकाशित किया गया है। इसमें उनके जीवन की विविध प्रवृत्तियों पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। लोगों को सदा ही त्याग एवं तपस्यामय जीवन व्यतीत करने का प्रेरणाप्रद सन्देश मिलता रहेगा।

—गजाधर जी सोमानी, अध्यक्ष अ० भा० मारवाड़ी सम्मेलन, श्री निवास हाउस, बम्बई

हार-जीत से निर्लिप्त

लोकनायक श्री जयनारायण जी व्यास राजस्थान के विशिष्ट सेवक एवं कार्यकर्त्ता थे। वे बहुत छोटी उम्र में ही सार्वजनिक क्षेत्र में आ गये थे और अन्तिम सांस तक देश और समाज की सेवा करते रहे। साहित्य और कला के प्रति उनकी अभिरुचि सराहनीय थी। उन्होंने राजनीति के साथ-साथ साहित्य और कला का सम्वर्द्धन करने में पूरा योग दिया। वे बड़े ही हँसमुख और विनोदी स्वभाव के थे। अभिमान तो उन्हें छू भी नहीं गया था। मैं अपने जीवन में उनसे अनेक बार मिला हूं और जब-जब भी मैं उनसे मिला, तब-तब मेरी श्रद्धा उनके ऊपर अधिकाधिक बढ़ती गई। वे अपने साथियों के प्रति बहुत स्नेहशील तो थे ही साथ ही उनकी भावनाओं को और विचारों को बहुत आदर भी देते थे। अपने सिद्धान्त के इतने पक्के थे कि कोई भी कष्ट उन्हें विचलित नहीं कर सकता था।

देशी राज्यों में राजाओं और जागीरदारों का जो आतंक और जुल्म था उसका व्यास जी ने वीरतापूर्वक डटकर मुकाबला किया। एक तरफ जहां वे इतने बड़े वीर और योद्धा थे, दूसरी तरह वे उतने ही विनयशील, नम्र, मिलनसार और मृदुल स्वभाव के थे। जीवन में उन्होंने हार-जीत की कभी कोई परवाह नहीं

की। वे पूरी फक्कड़ वृत्ति के थे। इसकी एक मिसाल यहां देता हूं। जब वे मुख्य-मंत्री थे, तब उन पर अविश्वास का प्रस्ताव लाया जा रहा था। उसी दिन सवेरे मैं और भाई सीताराम जी सेक्सरिया उनसे मिलने गये। कुछ और भी लोग बैठे थे। वे हमें कहीं से इकट्ठे किये हुए कुछ विशेष प्रकार के पत्थर दिखलाने लगे और उन पत्थरों की विशेपता तथा इतिहास हमें बताने लगे। हम लोगों ने उस अविश्वास के प्रस्ताव के बारे में बात चलाई तो उन्होंने कहा कि उसको छोड़ो। मेरे लिये राजनीति की अपेक्षा यह चर्चा अधिक दिलचस्प और महत्त्वपूर्ण है। जो हार-जीत होनी होगी वह हो जायगी। मुझे उसके लिये न किसी से कुछ कहना है और न कुछ करना है; न मुझे उसकी कोई चिन्ता ही है। दरअसल उन्हें उसकी कोई चिन्ता नहीं थी। वे हार-जीत से बिल्कुल निर्लिप्त थे। उनके निधन से यों तो सारे भारतवर्ष की ही, पर विशेषत: राजस्थान की जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति असम्भव है। उन्हें मेरा श्रद्धापूर्वक प्रणाम।

—भागीरथ जी कानोडिया, कलकत्ता

विरले राजनीतिज्ञ

व्यास जी मेरे घनिष्ट मित्र थे। राजनीतिक क्षेत्र में देश सेवा के लिये उन्होंने जो कुछ किया, वह तो सर्व विदित ही है। उन्होंने बराबर बापू का साथ दिया और बापू उनको अपने खास साथियों में गिनते थे। उनका सामाजिक व व्यक्तिगत जीवन जैसी सादगी, आत्मीयता एवं सरलता से परिपूर्ण था, वैसी विरले ही राजनीतिज्ञों में मिलेगी। सत्ता का मद अहं की भावना को जगाता है और उससे सत्ताधारी स्वयं को सामान्य जन से ऊंचा समझने लगता है। किन्तु व्यास जी इससे निश्चित रूप से ऊपर रहे। राजस्थान के मुख्यमंत्री के रूप में अथवा उसके बाद भी जब भी जहां भी मिले एक ही तरह का व्यवहार मैंने उनमें पाया, वही उन्मुक्तता, वही ईमानदारी और वही निर्भीकता। यह भी एक कारण था, जिससे उनको अपने राजनीतिक साथियों के साथ निरन्तर संघर्षरत रहना पड़ा।

आपके इस प्रयास के साथ मेरी हार्दिक सहानुभूति है। व्यास जी मर कर भी अमर हैं और सदा अमर रहेंगे।

—राधाकृष्ण जी कानोडिया, ९ ब्रेबोर्न रोड कलकत्ता

आदर्शों के लिये उत्सर्ग

लोकनायक श्री जयनारायण व्यास राजस्थान के उन महान् सपूतों में से थे जिन पर सारे देश को अभिमान है। सार्वजनिक जीवन के आरम्भ से लेकर अन्तिम क्षणों तक उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन एक तपस्वी की भांति व्यतीत किया। निर्वासन, तरह-तरह के प्रतिबन्ध, कारावास और सतत संघर्षों की ज्वाला में तप-तप कर वे कुन्दन की तरह निखरे और खरेपन के बूते पर ही वे अपने विरोधियों के भी सम्मान एवं श्रद्धा के भाजन बने।

अनेक बार मुझे उनके संपर्क में आने का सौभाग्य मिला। उनकी वाणी में गजब का जादू था। उनकी कलम में बेजोड़ खानगी थी। विचारों में अद्भुत ताजगी और समूचे व्यक्तित्व में एक अजीब आकर्षण था। वे एक मंजे हुए पत्रकार, सशक्त कवि, सबल कहानीकार, सफल अभिनेता, सुयोग्य शिक्षक, समर्थ संगठन-कर्त्ता और प्रतिभाशाली राजनीतिज्ञ थे।

राज्यसभा में मुझे अक्सर उनका संपर्क प्राप्त होता था। वे बोलते कभी-कभी थे। कम बोलते थे। लेकिन, जब जो बोलते थे वे सूक्तियों के समान स्पष्ट, संक्षिप्त और सारपूर्ण होता था। यही कारण था कि राज्यसभा में उनकी बात बड़े ध्यान से सुनी जाती थी।

राजनीति उनके लिये साध्य न होकर केवल साधन मात्र थी, कतिपय उच्च आदर्शों और पवित्र लक्ष्यों की प्राप्ति का। आदर्शों के साथ व्यास जी ने कभी किसी से कोई समझौता नहीं किया। बड़ी-से-बड़ी शक्ति के सामने भी वे कभी झुके नहीं, उन्हीं के लिये वे एक सच्चे क्रान्तिकारी की तरह जीवन-भर संघर्षरत रहे और उन्हीं के लिये उन्होंने अपना उत्सर्ग किया।

—सीताराम जी जयपुरिया, सदस्य राज्य सभा, स्वदेशी हाउस, कानपुर

उनका पवित्र जीवन

लोकनायक श्री जयनारायण जी व्यास के साथ व्यक्तिगत परिचय में आने का पहला अवसर मुझे १९५०-५१ में प्राप्त हुआ। मेरे मन पर उनके सम्बन्ध में पहला प्रभाव यह पड़ा कि वे पवित्र जीवन, शुद्ध आचार-विचार और उदार व्यक्तित्व के धनी हैं। अपने व्यक्तिगत व्यवहार में मैंने उनको सदा इसी रूप में पाया। मैंने यह भी अनुभव किया कि राजनीति विशेषतः शासकीय क्षेत्र उनके इतना अनुकूल नहीं था अथवा वे उनके अनुकूल नहीं थे। राजनीतिक संघर्ष के अखाड़े के वे कुशल

योद्धा अथवा सेनापति इसलिए सिद्ध हो सके कि उसमें दाव-पेंच की उतनी आवश्यकता नहीं थी, जितनी कि शासन-सम्बन्धी राजनीति में होती है। इसी कारण शासकीय राजनीति के मोर्चे पर वे मात खा गये। भले ही इसको उनके जीवन की असफलता कहा जा सकता है। परन्तु मुझे तो इसमें भी उनकी सरलता व पवित्रता की ही झलक दीख पड़ी। ऐसे विचारवान और पवित्र लोकनेता को पाकर राजस्थान धन्य हो गया था। उनके अभाव की सहज में पूर्ति नहीं हो सकती। मैं उनके प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करत हूं।

—राधेश्याम जी मोरारका, संसद सदस्य, वम्बई

उनका श्रेष्ठ व्यक्तित्व

स्वर्गीय श्री जयनारायण जी व्यास स्वतन्त्रता संग्राम के अपूर्व सेनानी थे। राष्ट्र के शीर्षस्थ नेताओं में इने-गिने व्यक्तियों को छोड़कर सभी व्रिटिश राज्य से जूझने में लगे थे और अधिकांश व्यक्तियों का ध्यान भारत में ही भारतीयों द्वारा शासित एवं शोषित जनता की ओर न था। ऐसे समय में श्री व्यास जी ने उन्हें स्वतन्त्रता दिलाने का आह्वान किया। इसके लिये उन्होंने कष्ट भी उठाये। वे समग्र भारत की राष्ट्रीय एकता के प्रतीक थे। वे बड़े ही सिद्धान्तवादी व्यक्ति थे। किसी प्रकार की अनैतिकता के लिये उन्हें राजी नहीं किया जा सकता था। यही कारण था कि श्री व्यास जी को राजस्थान का मुख्यमन्त्रित्व त्यागना पड़ा। निकट भविष्य में राजस्थान की राजनीति में श्री व्यास जी जैसा श्रेष्ठ व्यक्तितव सम्भव नहीं।

—रामेश्वर टांटिया, संसद सदस्य, नई दिल्ली

सिद्धान्त के पक्के व्यवहार के कच्चे

व्यास जी का मुझ पर अपार स्नेह था। वह आदर्शवादी थे, व्यवहार निपुण नहीं थे। वह अपने सिद्धान्त के पक्के और व्यवहार के कच्चे थे। फिर भी उनको आधुनिक राजस्थान का कुशल शिल्पी अथवा निर्माता कहना चाहिए। उन्होंने पिछड़े हुए देशी राज्यों में जीवन-जागृति की ज्योति जगाकर जो प्रकाश फैलाया, उसके लिये वर्तमान पीढ़ी उनके ऋण से उऋण नहीं हो सकेगी। वह संघर्ष काल के एक महान् सेनानी थे। मेरा उनको शत-शत प्रणाम है।

—गौरीशंकर आचार्य, गांधी विद्यापीठ, सरदार शहर

राजनीतिक सन्त

व्यास जी अत्यन्त शुद्ध विचारों के निष्ठावान् साहित्यिक महापुरुष थे। सामन्तवाद और विदेशी शासन के 'अजेय' गढ़ देशी राज्यों में उन्होंने राष्ट्रवाद का बीजारोपण करके उसके पौधे को अपने खून-पसीने से सींचा और उसका संवर्द्धन किया। उनको राजनीतिज्ञ की अपेक्षा संत कहना अधिक उचित है। वस्तुतः एक सन्त के रूप में उनका निधन हुआ। मुझे दुःख है कि मैं उनके कुछ अधिक निकट-सम्पर्क में नहीं आ सका, फिर भी जितना सम्पर्क में आ सका उतनी ही मेरी श्रद्धा उनपर बढ़ती चली गई। ऐसे महान् राजस्थानी की स्मृति रक्षा के लिये जो कुछ भी किया जा सके वह स्तुत्य और सराहनीय है।

—शांतिलाल कोठारी, संसद सदस्य, नई दिल्ली

सच्चे साथी

मेरा व्यास जी के साथ चालीस-पैंतालीस वर्ष पुराना परिचय है। कूचामन जोधपुर राज्य के ही अन्तर्गत था। इसलिये वहां की राजनीतिक हलचलों का प्रभाव कूचामन पर भी पड़ता था और कूचामन के एक जागीर होने के कारण उसका उनसे प्रभावित होना और भी अधिक सहज था। जोधपुर के राजनीतिक आंदोलनों में प्रत्यक्ष भाग न लेने पर भी मेरी उनमें पूरी दिलचस्पी थी और मारवाड़ लोक-परिषद् की समय-समय पर आर्थिक सहायता भी करता रहता था। इसी कारण मेरा उनसे बड़ा गहरा व्यक्तिगत स्नेह सम्बन्ध था। जोधपुर में मैं कई बार उनके घर जाकर उनसे मिला करता था। वे जब भी कभी कूचामन आते थे, तो हमारे यहां अवश्य ही आते थे और दस-पन्द्रह मिनट रुककर हम सबसे बड़े स्नेह से मिलते थे।

जोधपुर राज्य के जब वे दीवान नियुक्त किये गये, तब भी उन्होंने मेरे साथ अपना स्नेह सम्बन्ध निरन्तर निभाया। मेरी यह मान्यता है कि व्यास जी सरीखा स्नेही, साथी व धुन का कार्यकर्त्ता और सच्चा व ईमानदार शासक मिलना सहज नहीं है।

राजस्थान के मुख्यमन्त्री बन जाने पर भी उन्होंने मेरे साथ अपने व्यक्तिगत स्नेह सम्बन्ध में कोई कमी नहीं आने दी। वैसे ही सरल स्नेह भाव से वे अपनेपन से मिलते-जुलते थे। उनमें सरलता, सहृदयता, आत्मीयता और काम की लगन व धुन अपार थी। उनके निधन से राजस्थान और देश की तो स्पष्ट ही अपार क्षति

हुई है, परन्तु मुझ सरीखे कितने ही साथियों की जो क्षति हुई है, वह भी कुछ कम नहीं है। हमने अपना सच्चा साथी और विश्वसनीय नेता खो दिया।

—सदासुख जी कावरा, कूचामन (राजस्थान)

संघर्षशील जीवन के धनी

संघर्ष ही जीवन है और संघर्षों से जूझते आगे बढ़ना जीवन का सार्थकता। व्यास जी का जीवन ऐसा ही था। पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष एवं विरोधों का विभीषिका भरी प्रचंड ज्वालाओं से हाथ मिलाना तथा जीवन के भयंकर झंझावातों में तुंग हिम श्रृंग से डटे रहना उन्हीं के बूते का था। उनकी स्नेह-स्निग्ध कर्मठता शान्तिभरी विद्रोहात्मकता एवं त्वराभरी गम्भीर आध्यात्मिकता देश के कण-कण को एक दिव्य सन्देश देती है, प्रेरणा देती है और देती है जीवन का एक चिरनवीन सम्बल। ऐसे ही व्यक्तियों का जीवन इतिहास का अमिट अध्याय वन जाता है जो एक अमूल्य निधि होता है।

वीरभूमि राजस्थान का कण-कण उनकी सेवा, धीरता एवं कर्त्तव्यनिष्ठा का साक्षी है। उन्होंने जन जीवन को नई दिशा दी, नई जागृति दी। ऐसे लोकनायक युग स्रष्टा का स्मरण कर सभी का हृदय गौरव से फूल उठता है।

आज वे हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु उनके आदर्श, उनके आगे बढ़े हुये चरण-चिह्न, उनका संघर्षमय जीवन तथा परमार्थ की वेदी पर स्वार्थ का उत्सर्ग अविस्मरणीय है। हमारा यह परम धर्म है कि उनके आदर्शों का अनुसरण करें और उनको दैदीप्यमान वनावें।

अपनी विनीत श्रद्धांजलि उनके चरणों में अर्पित करता हूं। अन्तर के स्वभाव-सुमनों को भेंट चढ़ाता हूं।

—अम्बिकाप्रसाद जी केड़िया, डिब्रूगढ़ (असम)

विनीत श्रद्धांजलि

व्यास जी सदृश पुण्यश्लोक महापुरुषों का समादरस्तवन तथा स्मृति रक्षण वर्तमान पीढ़ी का वरेण्य कर्त्तव्य है। पूर्व पुरुषों की त्याग व तपस्या का लाभ शत-शत रूपों में उसे प्राप्त हुआ है। ऐसे पवित्र यज्ञ के आयोजक धन्यवाद के पात्र हैं

और हैं भाग्यशाली। मैं भी अपनी श्रद्धा विनयांजलि व्यास जी को समर्पित करता हूं।

भारतीय स्वातन्त्र्य युद्ध की ज्वाला को प्रज्वलित रखने के लिए देश को अनेक बलिदान देने पड़े। स्वतन्त्र राष्ट्र में जिस सृजनात्मक प्रतिभा का उपयोग समाज निर्माण की दिशा में होता है, पराधीन देश में उस अमूल्य सर्जनाशक्ति का अधिकांश पारतन्त्र्य पाश काटने में लग जाता है। फलतः अनेक नव नवोन्मेषी व्यक्तियों की प्रभा राजनीति विद्या में ही दर्पित हो पाती है। अन्य क्षेत्रों में केवल उसकी कतिपय किरणें ही विकसित हो पाती हैं। श्रद्धेय व्यास जी ऐसे ही प्रकाश पुंज थे जो बहुमुखी प्रतिभा का वरदान लेकर धराधाम पर अवतीर्ण हुए थे। यदि तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों की दुरूहता एवं दुर्निवारिता ने उस सबल व्यक्तित्व के संजीवन रस को इतनी मात्रा में सोख न लिया होता तो निश्चय ही स्वस्थ एवं सर्वोदयी समाज के संगठन में उनका अवदान और अधिक महत्वपूर्ण हुआ होता।

असत्य और अन्याय के विरुद्ध निरन्तर संघर्ष करने में जो थका नहीं और विषम परिस्थितियों के झंझावात में जो कभी डिगा नहीं, उस कर्मठ जीवन के ज्वलंत आदर्श हमारे समाज को अधिकाधिक अनुप्राणित करें यह कामना ही स्वर्गीय व्यास जी के प्रति मेरी विनीत श्रद्धांजलि है।

—प्रो० प्रेमचन्द जैन, अध्यक्ष वाणिज्य विभाग,
कनोई कालेज, डिब्रूगढ़ (असम)

निष्कपट चरित्र

श्री जयनारायण जी व्यास के लिए कुछ भी कहना मेरे लिए सूर्य को दिया दिखाने के समान है। उनके बड़प्पन के अलावा मैं उनके व्यक्तित्व से निकट संपर्क होने के कारण विशेष प्रभावित हूं। उनका व्यक्तिगत व्यवहार कुछ ऐसा निष्कपट और चरित्र कुछ ऐसा निष्कलंक था कि वे जिस किसी को अपना लेते थे, उससे कुछ भी छिपा रखना उनके लिए संभव ही न होता, इसीलिए मैं उनके सम्बन्ध में जब कुछ सोचने बैठता हूं, तब विचारों में ऐसा मग्न हो जाता हूं कि अपने को भुलाकर अपने चारों ओर उनके स्नेह व महानता को ही व्यापक पाता हूं। उनके जीवन व्यवहार की पवित्रता और सत्यनिष्ठा ऐसी ऊंची थी कि उनके विचार और आचार में कुछ भी अन्तर मुझे कभी दीख नहीं पड़ा और आज तो वह पवित्रता तथा निष्ठा बहुत ही कम दीख पड़ती है। यह कहा जाता है कि वे अपने साथी को

पहचानने में प्रायः भूल कर जाते थे और इसी कारण उनसे धोखा खा जाते थे। मेरा अनुभव यह है कि वे ऐसी कोई भूल नहीं करते थे, परन्तु उनका स्वभाव ऐसा सरल और सज्जन था कि वे किसी को हानि पहुंचाने की अपेक्षा स्वयं उसको वैसे ही पी जाते थे, जैसे कि शिव ने विषपान किया था। अपनी पवित्रता और निष्ठा से वे जान बूझकर कभी तिलमात्र भी विचलित नहीं हुए। ऐसे पवित्र एवं सत्यनिष्ठ महान व्यक्तितव को मैं क्या श्रद्धांजलि दूं, सिवाय इसके कि हम सब उनके आदर्शों पर चलने का दृढ़ संकल्प करें।

—रामजी भाई काक, दुर्गापुरा, (जयपुर)

विशिष्ट राजस्थानी

श्रद्धेय व्यास जी को मैंने तव अति निकट से देखा, जब उन्होंने अपने प्रति कांग्रेस दल का विश्वास प्राप्त करने का निश्चय किया। केवल आठ मतों की पराजय को बहुत ही सरलता से विजय में परिणत किया जा सकता था। उन पर वैसा करने के लिए काफी दबाव डाला गया। लेकिन, वे अपने निश्चय पर अटल रहे। 'मुख्यमंत्री जयनारायण व्यास' और 'लोकनायक जयनारायण व्यास' में यही अन्तर था, जिससे मैं उनका भक्त बन गया। वे उन विरले लोगों में से थे, जिनको निन्दा या स्तुति, गरीबी या अमीरी और मृत्यु या जीवन में कोई अन्तर दीख न पड़ता था। इन सबके प्रति समभाव रखकर अपने व्यवहार में लगे रहना उनकी बहुत बड़ी विशेषता थी। ऐसे विशिष्ट महान राजस्थानी के प्रति मेरे शत्-शत् प्रणाम हैं।

—सम्पतराम अशोक मार्ग, जयपुर (राजस्थान)

हार्दिक श्रद्धांजलि

आदरणीय व्यास जी के अति निकट सम्पर्क में आने का अवसर मुझे राजस्थान संघ के निर्माण के बाद प्राप्त हुआ। मैंने अनुभव किया कि व्यक्तिगत जीवन में उन सरीखा निर्मल, स्नेही साथी मिलना दुर्लभ है और राजनीति में उन सरीखा आदर्शवादी भी मिलना सहज नहीं। राजस्थान के मुख्यमंत्री के पद से जब वे अलग हुए तब भी अपने आदर्शवाद पर अविचल भाव से स्थिर रहे। उनका जीवन हमें अपने सिद्धान्त तथा आदर्शवाद पर दृढ़ रहने की प्रेरणा देता है, इस कामना से मैं उनके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता एवं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

—रामकिशोरजी व्यास, चार दरवाजा, जयपुर (राजस्थान)

सच्चे साथी

राजस्थान की जन जागृति अपने प्रारम्भिक काल में भिन्न-भिन्न रियासतों की सीमाओं में बंटी थी। इसी कारण उनके सामान्य कार्यकर्त्ताओं को एक दूसरे के निकट सम्पर्क में आने का यथेच्छ अवसर नहीं मिलता था। जयपुर राज्य में जन जागृति का श्रीगणेश वस्तुतः १९३६ में तब हुआ, जब जयपुर राज्य प्रजामंडल का गठन किया गया और उसको बल तब मिला, जब १९३९ में देशभक्त सेठ जमनालाल जी बजाज ने सत्याग्रह का शंख फूंखा। मेरी राजनीतिक गतिविधि तब जयपुर तक ही सीमित थी। इस कारण स्वर्गीय श्री जयनारायण जी व्यास के अत्यन्त निकट सम्पर्क में आने का लाभ मुझे १९४७ से पहले नहीं मिल सका। उनके सम्पर्क में आने के बाद मुझ पर कांग्रेस के प्रति उनकी निष्ठा का सबसे अधिक प्रभाव पड़ा। उन्होंने कांग्रेस में व्याप्त भ्रष्टाचार के विरोध में जो आवाज उठाई थी, वह भी उस निष्ठा का ही परिणाम था; क्योंकि वे उसकी मान-प्रतिष्ठा को अक्षुण्ण बनाये रखना चाहते थे। कुछ लोग यह कहते हैं कि वे राजनीतिज्ञ नहीं थे; किन्तु ऐसे साथी अवश्य थे, जो अन्त तक साथ निभाना जानते थे। अपने ऐसे साथी के प्रति मैं अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

—दामोदरलाल जी व्यास, अशोक मार्ग, जयपुर

सिद्धान्तवादी

श्री जयनारायण जी व्यास का निधन हम सबके लिए बहुत ही दुःख की बात है। विशेष तौर पर राजनीतिक क्षेत्र में जो भी काम करते हैं उन सबके लिये व्यास जी का जीवन प्रेरणादायक है। जब से उन्होंने राजनीतिक क्षेत्र में काम किया, तब से अब तक जितने संघर्ष उन्होंने मोल लिये, उतने किसी दूसरे व्यक्ति ने नहीं लिये। वे इस प्रकार के व्यक्ति थे जिन्होंने साधनों की चिन्ता किये बिना संघर्ष करने में किसी प्रकार की कमी नहीं छोड़ी। राजनीतिज्ञों के समक्ष उनके जीवन का हर पहलू, जिसमें सच्चाई, निर्भीकता और सिद्धान्तवादिता मिलती है, मार्गदर्शक है।

किसी भी सही बात को कहने में उन्हें किसी प्रकार का संकोच नहीं होता था। वे सिद्धान्तवादी थे और उस सिद्धान्तवाद को अच्छी तरह से लागू करने में उनके सामने किसी भी प्रकार की कोई बाधा उपस्थित हो, उस पर विजय पाने के संघर्ष के लिये वे हर समय तैयार रहते थे। मैं ऐसा समझता हूं कि यदि हम उनके जीवन से स्फूर्ति लें तो हम चाहे किसी भी राजनैतिक क्षेत्र में कार्य करते हों, निश्चित

रूप से ईमानदारी से कार्य करने में आगे बढ़ सकेंगे। उनकी जीवित मूर्ति अब हमारे बीच नहीं है; फिर भी उनका जीवन किसी भी रूप में जीवित पूर्ति से कम नहीं। मैं उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

—भैरोंसिंह जी, नेता जनसंघ दल, राजस्थान विधान सभा, जयपुर

जन्मसिद्ध सम्पादक

व्यास जी को लोगों ने अनेक रूपों में देखा है। कलकत्ता आने पर वह जिस स्नेह भाव और आत्मीयता से हर किसी से मिलते थे, वह उनकी अपनी ही विशेषता थी। मैं उनको जन्मसिद्ध पत्रकार के रूप में देखता व जानता और इसी रूप में उनका सम्मान करता रहा। १९२० से १९६३ तक अपने जीवन के ४३ वर्ष उन्होंने पत्रकार के ही रूप में बिताये और लगभग एक दर्जन समाचार-पत्रों का संचालन व संपादन किया। पत्रकारिता का जो ऊँचा धरातल उन्होंने कायम किया वह अनुकरणीय है। ऐसे जन्मसिद्ध पत्रकार के प्रति मैं 'विश्वमित्र' परिवार की श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

—कृष्णचंद्र अग्रवाल, संचालक-सम्पादक 'दैनिक विश्वमित्र' कलकत्ता

अद्भुत साहसी

व्यास जी को मैं अद्भुत साहसी के रूप में देखता रहा हूं। सामाजिक क्षेत्र में जिस साहस से उन्होंने प्रवेश किया था, उससे कहीं अधिक साहस का परिचय उन्होंने राजनीतिक संघर्षों में दिया। जीवन के अन्तिम दिनों में कांग्रेस में व्याप्त भ्रष्टाचार के विरोध में आवाज उठाना उनके ही बूते का काम था। मैं स्वर्णकारों के आन्दोलन के सम्बन्ध में जब कभी उनसे मिला, वह निःसंकोच भाव से सरकार की स्वर्ण नीति की निन्दा करते देखे गये। कितने कांग्रेसी हैं, जो अनुशासन तथा नियंत्रण के भय से अपनी आत्मा की पुकार को दबा लेते हैं। वह ऐसा 'राजस्थान केसरी' ही नहीं, प्रत्युत 'नर केसरी' था, जिसने अपनी आत्मा की पुकार को कभी नहीं दबाया।

—श्यामलाल वर्मा, संपादक, 'राजस्थान समाचार' जयपुर

श्री जयनारायण व्यास मेरे लिये मारवाड़ लोक परिषद के नेता, अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद के मंत्री तथा टिहरी गढ़वाल के श्रीदेव सुमन, जोधपुर के श्री बालमुकुन्द बिस्सा और जैसलमेर के श्री सागरमल जी गोपा आदि शहीदों के हमदर्द और एक स्वतंत्र पत्रकार के नाते सदा ही श्रद्धेय बने रहेंगे। उनकी स्फूर्ति और जिन्दादिली हमें आज भी प्रेरणा दे रही है।

—कनक मधुकर, संपादक, 'नवजीवन', उदयपुर

उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि

मुझे ऐसा लग रहा है कि व्यास जी के चले जाने से राजस्थान की आत्मा मर गई। वे ऐसी खूबियों वाले इंसान थे जो बहुत कम नेताओं को नसीब होंगी। वे जिन्दादिल हँसमुख तबीयत के चरित्रवान और ईमानदार इंसान थे। मज़ाक के पुट के साथ हाज़िरजवाबी उनकी विशेपता थी। एक बार का जिक्र है, मैंने उनका अच्छा मूड देख यह कह दिया, "व्यास जी, अब तो आप सिपाही मार सेनापति हो गये हैं।" इस पर तपाक से हँसकर बोल उठे, लेकिन चन्द्रेश, मैं सेनापति मार सिपाही तो नहीं हूं और आगे कहने लगे तुम्हीं बताओ अब कौन-सा कसूर ज़्यादा है, मैं हँस पड़ा।

—श्री चंद्रेश व्यास, सम्पादक 'पन्द्रह अगस्त' उदयपुर

राजनीतिक विरोधियों के प्रति उदार भावना

राजस्थान का इतिहास तप, त्याग और बलिदान से भरा है। ठाकुर केशरीसिंह बारहठ, पं० अर्जुनलाल सेठी, श्री विजयसिंह पथिक, बाबा नृसिंहदास एवं श्री जयनारायण व्यास आदि ने आधुनिक राजस्थान के निर्माण हेतु जितने कष्ट उठाये, यातनाएं सहीं और त्याग किया उसकी आज हम सहज ही कल्पना तक नहीं कर सकते।

कोटा के बारहठ परिवार के बलिदान की जहां तक अजोड़ कहानी है, वहां जोधपुर को इस बात का नाज है और होना चाहिए कि उसने राजस्थान को एक ऐसा कर्मठ कार्यकर्त्ता, नेता, पत्रकार, वक्ता तथा पथ-प्रदर्शक दिया, जिसे राजस्थान

कभी नहीं भूल सकता। व्यास जी जोधपुर के ही नहीं रहे, वे थोड़े ही समय में समस्त राजस्थान के जाने-माने सर्वमान्य लोकनायक वन गये।

सन् संवत् तो स्मरण नहीं। घटना उस समय की है। जब राजस्थान के केन्द्र नगर अजमेर, गांधी भवन में, श्री मुकुट बिहारीलाल जी भार्गव संसद सदस्य की अध्यक्षता में प्रथम बार राजस्थान केशरी श्री विलयसिंह पथिक की जयन्ती का आयोजन किया गया था। संयोगवश उस दिन श्री जयनारायण जी व्यास अजमेर किसी अन्य कार्य से आये हुए थे। तत्कालीन अजमेर राज्य के मुख्यमन्त्री तथा राजस्थान के वर्तमान शिक्षा मन्त्री पं० हरिभाऊ जी उपाध्याय को तो सभा में सम्मिलित होना ही था, लेकिन उनके साथ राजस्थान के मुख्यमन्त्री भी सहृदयता पूर्वक बिना निमंत्रण के ही चले आये।

व्यास जी ने राजनीति के दलदल से ऊपर उठकर पथिक जी की सेवाओं पर जो प्रकाश डाला उससे श्रोताओं को उनको समझने की नई दिशा मिली। निश्चय ही व्यास जी की यह विशेषता थी कि वे राजनीतिक विरोधियों के प्रति भी वदले की किसी भावना को कभी प्रश्रय नहीं देते थे, और वह कभी आपसी दुश्मनी का रूप धारण नहीं करती थी।

उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में भ्रष्टाचार के विरुद्ध जो संघर्ष मोल लिया वह उनके साहस और कर्त्तव्य पालन की एक ऐसी कहानी है जो भावी इतिहासकार ही लिख सकेगा।

—मोहनराज भंडारी, उपाध्यक्ष जिला पत्रकार संघ, अजमेर

परम स्नेही साथी

व्यास जी के साथ मेरी जान-पहचान १९२४ में हो गई थी। तब वे वगड़ी सजन-पुर में मास्टर थे। १९३२ में उनको जोधपुर से निर्वासित कर दिया गया और वे व्यावर आ गये। 'तरुण राजस्थान' अखबार निकालना आरम्भ किया। जब मेरा उनसे पूरा परिचय हो गया तब छः-सात दिन के लिये उनको व्यावर से वलून्दा ले आया। सेठ साहब श्री छगनमल जी मूथा और मैंने गुप्त रूप से इधर-उधर प्रचार करना शुरू किया। उस समय राजाओं का राज्य था। अतः मेरे घर पर व्यास जी की गुप्त रूप से निगरानी शुरू कर दी गई और उनके साथ मेरा नाम राजनीतिक षड्यंत्र रचने के संदेह में आनन्दपुर थाने में दर्ज हो गया। व्यास जी के साथ मैंने नमक सत्याग्रह, विदेशी वस्त्र वहिष्कार के आन्दोलनों में पन्द्रह दिन की जेल यात्रा की।

व्यास जी ने समाज सुधारआन्दोलन के सिलसिले में यह शपथ ली कि वे नाबालिग शादी में शरीक नहीं होंगे। उसके अनुसार वे अपनी लड़की की शादी में भी शरीक नहीं हुए। उस समय उनकी लड़की की शादी में सहायता करने के लिये सेठ साहब श्री छगनमल जी साहब और मैं जोधपुर गये थे। सेठ साहब श्री छगनमल जी साहब, जो आजकल बंगलौर में रहते हैं, मुझे बीच में रखकर एक बार तो उन्होंने मेरी मार्फत दस हज़ार रुपया भिजवाया था। अपनी ओर से सौ रुपया माहवार पांच साल तक उनको देता रहा। एक बार जब वे जोधपुर के प्रधानमन्त्री थे, जोधपुर के महाराजा के साथ कुछ अनबन हो गई। तब व्यास जी ने सत्याग्रह शुरू करने का इरादा किया। तब मैं भी बलून्दा से पचास सत्याग्रही लेकर जोधपुर गया। महाराज ने व्यास जी की शर्तें मंजूर कर ली और सत्याग्रह टल गया।

मैंने उनके समान ईमानदार, नेकनियत व सच्चा कोई दूसरा नहीं देखा। जो कोई भी उनको जिस कार्य के लिये रुपया देता, वह उसको उसी में लगाते थे। इतनी बड़ी ईमानदारी थी उनकी। जब भी कभी व्यास जी जोधपुर से जयपुर जाते या जयपुर से जोधपुर आते तो पांच मिनट के लिये भी बलून्दा आकर चाय-नाश्ता करके ही जाते। इतना बड़ा प्रेम उनको बलून्दा ग्राम से था। यह प्रेम उन्होंने अन्त तक निभाया। राजस्थान के मुख्यमन्त्री बनने के बाद वे स्वास्थ्य लाभ के लिये जवाई बांध गये, तो उन्होंने मुझे समाचार भेजकर अपने पास बुलाया। मैं वहां गया। वहां से वे अपने साथ मुझे जयपुर ले गये। उस समय जयपुर में उन्होंने मुझे बताया था कि श्री सत्यदेव विद्यालंकार भी जवाई आने वाले थे परन्तु विद्यालंकार जी वहां नहीं आ सके।

उनके निधन से राजस्थान और मारवाड़ की तो अपार क्षति हुई, परन्तु बलून्दा तो बिलकुल ही अनाथ हो गया।

—सेठ भीकमचंद जी छालाणी, बलून्दा, जोधपुर (राजस्थान),

राजस्थान व राजस्थानी के लिये स्वाभिमान की मूर्ति

लोकनायक श्री जयनारायण व्यास उन विशिष्ट राजस्थानी नेताओं में अन्यतम थे, जिनको मारवाड़ी अथवा राजस्थानी होने का स्वाभिमान था और जो मारवाड़ी तथा राजस्थानी भाषा के भी अन्यतम समर्थक थे। वे वर्षो व्यावर से मारवाड़ी भाषा में 'आगीवाण' नाम का पाक्षिक पत्र अपने परिश्रम से चलाते रहे और उसका योग्यतापूर्वक संपादन करते रहे। मारवाड़ी अथवा राजस्थानी भाषा में लिखे गये उनके दर्जनों भजन, कविताएं, छोटे-बड़े नाटक तथा उपन्यास और

कहानी साहित्य में विशेष स्थान रखती हैं। व्यक्तिगत बातचीत में और सार्वजनिक भाषणों में भी बहुधा मारवाड़ी अथवा राजस्थानी भाषा का ही प्रयोग किया करते थे। पुष्करणा समाज में उन्होंने समाज सुधार का और मारवाड़ राज्य में राजनीतिक सुधारों का जो आन्दोलन उन्होंने शुरू किया था, उसका माध्यम भी राजस्थानी अथवा मारवाड़ी भाषा को ही बनाया था। उन पर यह कथन बिलकुल ठीक बैठता है कि :

"परिवर्तित संसारे मृतः को वा जायते
स जातो येन यातेन जाति वंशः समुन्नतिम्।"

राजस्थान की ऐसी स्वाभिमानी दिवंगत आत्मा के प्रति शतशः प्रणाम है।

—श्री मोहनलाल बड़जात्या, राज्यश्री पिक्चर्स, जयपुर

श्रद्धांजलि

इस तथ्य से कोई इनकार नहीं कर सकता कि प्रातः स्मरणीय व्यास जी ने जितनी पुष्करणा समाज की सेवा की, उतनी कोई नहीं कर पाया। मुझे जब ज्ञात हुआ कि आप द्वारा व्यास जी का 'स्मृति ग्रन्थ' संपादित हो रहा है, बड़ी प्रसन्नता हुई। पितृ चरणों में बैठकर जब कभी कुछ सुनने को मिलता था, तब 'मारवाड़ी' संपादक के नाते आपके बारे में बहुत कुछ सुनने को मिलता था। व्यास जी के जीवन स्मृति ग्रंथ को लिखने के आप सर्वथा उपयुक्त अधिकारी हैं। व्यास जी और आप में बहुत बड़ी समानता यह है कि आप उनके ही समान अपने जीवन में आदर्शवादी व सिद्धान्तवादी पत्रकार रहे हैं। जैसे कोई पद या प्रतिष्ठ व्यास जी की शोभा न बढ़ाकर वह ही उसकी शोभा बढ़ाने के निमित्त होते थे और जैसे उसको त्यागकर भी उनकी शोभा व यश फीका नहीं पड़ा, ठीक वही रूप आपका है। आप कितने ही पत्र-पत्रिकाओं को जन्म देने के बाद छोड़ने और आंखों की दृष्टि खोने के बाद भी वैसे ही लेखक व पत्रकार बने हैं। इसका एक नया प्रशंसनीय उदाहरण आपने 'धुन के धनी' नाम से लोकनायक का जीवन स्मृति ग्रंथ संपादित करके उपस्थित कर दिया है। व्यास जी की स्मृतिरक्षा हेतु मैं आपके प्रयत्न में सदा साथ हूं। उनके प्रति मेरी श्रद्धांजलि स्वीकार करें।

आयुर्वेदाचार्य शिवकरण जी शर्मा, छांगाणी
प्रधान सम्पादक 'आयुर्वेद', सीताबर्डी, नागपुर

आभार सहित

'लोकनायक श्री जयनारायण व्यास श्रद्धांजलि स्मृति ग्रन्थ' के व्यय की व्यवस्था के लिए यह संकल्प किया गया था कि लोक-नायक के प्रशंसकों, स्नेहियों, संगियों तथा सहकर्मियों से 'ग्रन्थ के संरक्षक' के रूप में कम से कम ५१ और अधिक से अधिक १०१ रुपया प्रदान करने की प्रार्थना की जाय। अनेक महानुभावों ने स्वेच्छा से अधिक धनराशि प्रदान करने की भी कृपा की है। संरक्षक महानुभावों की नामा-वलि यहां साभार प्रकाशित की जा रही है। ग्रन्थ की बिक्री से प्राप्त धनराशि का विनियोग लोकनायक की उस स्थायी साहित्यिक स्मृति रक्षा के निमित्त किया जाएगा, जिसका उल्लेख 'आत्मनिवेदन' में किया गया है।

१. श्री दौलतमल जी भंडारी, न्यायमूर्ति, जोधपुर।
२. श्री लक्ष्मीनारायण जी छांगाणी, न्यायमूर्ति, जोधपुर।
३. श्री वेदपाल जी त्यागी, न्यायमूर्ति, जोधपुर।
४. श्री रामनिवास जी मिरधा, अध्यक्ष : राजस्थान विधान सभा, जयपुर।
५. रावसाहब श्री नारायणसिंह जी मसूदा, उपाध्यक्ष : राजस्थान विधान सभा, जयपुर।
६. श्री मोहनलाल जी सुखाड़िया, मुख्यमंत्री, जयपुर।
७. श्री हरिभाऊ जी उपाध्याय, शिक्षामंत्री, जयपुर।
८. श्री मथुरादास जी माथुर, योजना मंत्री, जयपुर।
९. महाराजा हरिश्चन्द्र जी, उद्योग-विद्युत मंत्री, जयपुर।
१०. श्री बालकृष्ण जी कौल, अर्थ मंत्री, जयपुर।
११. जनाब बरकतउल्ला खां, स्वास्थ्य मंत्री, जयपुर।
१२. श्री भीखाभाई जी, श्रममंत्री, जयपुर।

१३. श्री नाथूराम जी गिरधा, कृषि मंत्री, जयपुर।
१४. श्री चन्दनमल जी वैद उपमंत्री, जयपुर।
१५. श्री दौलतमल जी सारण, उपमंत्री जयपुर।
१६. श्री रामेश्वर जी अग्रवाल, खादी ग्रामोद्योग संस्था संघ, जयपुर।
१७. श्री चिरंजीलाल जी शर्मा, खादी बोर्ड जयपुर।
१८. श्री दामोदरलाल जी व्यास, जयपुर।
१९. श्री रामकिशोर जी व्यास, जयपुर।
२०. श्री रामजी भाई काक, जयपुर।
२१. श्री केशोराम जी भाई, पोलोविक्ट्री होटल व सिनेमा, जयपुर।
२२. सेठ हरिश्चन्द्र जी गोलछा, जयपुर।
२३. सेठ रतनलाल जी बांगड़ (फर्म श्री रामनारायण जी रामप्रसाद जी), जयपुर।
२४. आचार्य चैनसुखदास जी न्यायतीर्थ, जयपुर।
२५. सेठ केशरलाल जी बख्शी, अध्यक्ष : राजस्थान जैन सभा, जयपुर।
२६. एक बन्धु।
२७. श्री सम्पतराम जी, जयपुर।
२८. सेठ राजरूप जी टोंक, जयपुर।
२९. सेठ तुलसी नारायण जी मेहता, जयपुर।
३०. सेठ खेलशंकर जी दुर्लभ जी भाई, जयपुर।
३१. सेठ शान्तिलाल जी दुर्लभ जी भाई, जयपुर।
३२. श्री रावतमल जी पारिक, जयपुर।
३३. सेठ मोहनलाल जी बड़जात्या, जयपुर।
३४. श्री चिरंजीलाल जी अग्रवाल एडवोकेट, जयपुर-जोधपुर।
३५. शाह जी गोवर्धनलाल जी कावरा, जोधपुर।
३६. श्री मुरली मनोहर जी व्यास एडवोकेट, जोधपुर।
३७. श्रीमती कृष्णा भाटिया, जोधपुर।
३८. सेठ आनन्दसिंह जी कछवाहा, एम० एल० ए०, जोधपुर।
३९. सेठ लक्ष्मीचन्द जी सुराणा, जोधपुर।
४०. सेठ केवलचन्द जी मोदी, जोधपुर।
४१. सेठ नरेन्द्रकुमार जी सांगी, जोधपुर।
४२. श्री महेशदत्त जी भार्गव एडवोकेट, जोधपुर-ब्यावर।
४३. मनीषी सेठ रामगोपाल जी मोहता, बीकानेर।
४४. श्री प्रभुदयाल जी हिम्मतसिंहका संसद सदस्य, कलकत्ता।
४५. श्री ब्रिजलाल जी बियाणी, इन्दौर।

४६. सेठ शाहू शान्ति प्रसाद जी जैन, नई दिल्ली।
४७. सेठ मोहनलाल जी काठोतिया, दिल्ली।
४८. सेठ भागीरथ जी कानोडिया, कलकत्ता।
४६. सेठ रामकुमार जी भुवालका, संसद सदस्य, कलकत्ता।
५०. सेठ कमलनयन जी बजाज, संसद सदस्य, बम्बई।
५१. सेठ पन्नालाल जी सरावगी, कलकत्ता।
५२. सेठ राधेश्याम जी मोरार का, संसद सदस्य, बम्बई।
५३. देशभक्त सेठ सोहनलाल जी दूगड़, कलकत्ता।
५४. बाबू तख्तमल जी जैन, विदिसा।
५५. बाबू रामसहाय जी, संसद सदस्य, विदिसा।
५६. स्वामी केशवानन्द जी, संगरिया।
५७. सेठ सीताराम जी जयपुरिया, संसद सदस्य, कानपुर
५८. सेठ आनन्दराज जी सुराणा, दिल्ली।
५६. सेठ रामकृष्ण जी बजाज, बम्बई।
६०. सेठ मुकन्ददास जी राठी, कृष्णा मिल्स ब्यावर।
६१. सेठ जवाहरलाल जी मुनोत, अमरावती।
६२. सेठ रामगोपाल जी गाडोदिया, दिल्ली।
६३. सेठ राधाकृष्ण जी कानोडिया, कलकत्ता।
६४. चौधरी कुम्भाराम जी आर्य, जयपुर।
६५. लाला काशीराम जी गुप्त, संसद सदस्य, अलवर।
६६. सेठ अमरचन्द जी जालान, दिल्ली।
६७. सेठ परशराम जी भरतिया, दिल्ली।
६८. सेठ धरमचन्द जी सरावगी, कलकत्ता।
६६. श्री गिरधरलाल जी मोहता, कलकत्ता।
७०. श्री श्यामसुन्दर जी पोद्दार, नई दिल्ली।
७१. सेठ केदारनाथ जी हेड़ा, ब्यावर।
७२. बाबू अजितराज जी सुराणा, दिल्ली।
७३. सेठ गिरधारीलाल जी सराफ, नई दिल्ली।
७४. चौधरी ब्रह्मप्रकाश जी, संसद सदस्य, नई दिल्ली।
७५. सेठ शंकरलाल जी बगड़िया, डिब्रूगढ़।
७६. सेठ महावीर प्रसाद जी जालान, डिब्रूगढ़।
७७. सेठ रामनाथ जी पोद्दार, बम्बई।
७८. सेठ गजाधर जी सोमानी, बम्बई।
७६. सेठ अम्बिका प्रसाद जी केड़िया, डिब्रूगढ़।

८०. बाबू बजरंगलाल जी लाठ, कलकत्ता।
८१. बाबू राधाकृष्ण जी नेवटिया, कलकत्ता।
८२. सेठ चुन्नीलाल जी जयपुरिया, नई दिल्ली।
८३. श्री हरदेव जी जोशी, अध्यक्ष : राजस्थान प्रदेश कांग्रेल कमेटी, जयपुर।
८४. सेठ हनुमानमल जी बेंगानी, लाडनूं।
८५. सेठ कुन्दनमल जी सेठिया, सुजानगढ़।
८६. सेठ गनपतराय जी धानुका, गोहाटी।
८७. श्री केदारमल जी ब्राह्मण एडवोकेट, गोहाटी।
८८. सेठ लालचन्द जी भुतोड़िया, लाडनूं।
८९. सेठ बद्री प्रसाद जी पोद्दार एम० एल० ए०, कलकत्ता।
९०. सेठ नेमचन्द जी गवैया, सरदार शहर।
९१. श्री रावतमल जी कोचर एडवोकेट, बीकानेर।
९२. श्री भंवरमल जी सिंघी, कलकत्ता।
९३. श्री रामनिवास जी शर्मा, ब्यावर।
९४. श्री गोपीकृष्ण जी विजयवर्गीय, संसद सदस्य, इन्दौर।
९५. सेठ मामराज जी अग्रवाल, दिल्ली।
९६. सेठ मदनलाल जी माहेश्वरी, दिल्ली।
९७. सेठ रामकुमार जी विश्वनाथ जी जालान, दिल्ली।
९८. सेठ मुकुटविहारीलाल जी कानोडिया, दिल्ली।
९९. पद्मश्री सेठ सीताराम जी सेकसरिया, कलकत्ता।
१००. श्री रामगोपाल जी माहेश्वरी, सम्पादक-संचालक 'नवभारत' नागपुर।
१०१. सेठ कैलाशचन्द्र जी सेकसरिया, बीसवां (उत्तर प्रदेश)।
१०२. सेठ गनपतराय जी सरावगी (सेठी) लाडनूं।
१०३. सेठ धनसुखदास जी महालचन्द जी बोथरा, लाडनूं।
१०४. मास्टर भोलानाथ जी, अलवर।
१०५. श्री वेणीशंकर जी शर्मा एडवोकेट, कलकत्ता।
१०६. सेठ सदासुख जी कावरा, कूचामन, (राजस्थान)।
१०७. सेठ भीकमचन्द जी सूरजमल जी छालाणी, वलून्दा, (राजस्थान)।
१०८. श्री हरिकृष्णदास जी भूता, भिंड।
१०९. सेठ अचलमल जी मोदी, सिरोही।
११०. सेठ सत्यनारायण जी नाथानी, दूदूवाला एंड कम्पनी, भीलवाड़ा।
१११. सेठ शिवकुमार जी मानसिंहका, भीलवाड़ा।
११२. सेठ एफ० बी० इलाविया, उदयपुर।
११३. श्री कनक जी मधुकर, सम्पादक-संचालक : 'नवजीवन', उदयपुर।

११४. सेठ पी० पी० सिंघल, उदयपुर।
११५. श्री विष्णुदत्त जी शर्मा, जोधपुर।
११६. सेठ नवरत्न कुंवर जी, मद्रास।
११७. सेठ मिश्रीलाल जी गोरधनलाल जी अरोड़ा, व्यावर।
११८. पुरोहित श्री स्वरूपनारायण जी एम० एल० ए०, सीकर, जयपुर।
११९. सेठ मेहतावचन्द जी गोलछा, जयपुर।
१२०. श्री भूरेलाल जी वया, उदयपुर।
१२१. सेठ विजयभादूका, भीलवाड़ा।
१२२. पं० दुर्गाप्रसाद जी शर्मा, वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन, पटना।
१२३. सेठ गौरीशंकर जी डालमिया, एम० एल० सी०, देवघर, विहार।
१२४. वावू श्रीनिवास जी कावरा, पटना सीटी।
१२५. श्री जगन्नाथ जी पुरोहित, जोधपुर।
१२६. सेठ गणेशमल जी खाटेड, सोजतरोड।
१२७. पूज्य श्री १०८ स्वामी हरिहर जी महाराज, गीताश्रम, दिल्ली छावनी।
१२८. श्री अचलदास जी वोहरा, सीलोन, (श्री लंका)।
१२९. प्रो० ए० के० पुरोहित, ग्वालियर।
१३०. श्री राजवहादुर जी, केन्द्रीय जहाजरानी मन्त्री, नई दिल्ली।
१३१. श्री शान्तिलाल जी कोठारी, संसद सदस्य, सिरोही।
१३२. सेठ नागरमल जी जयपुरिया, दिल्ली।
१३३. सेठ छगनलाल जी मूथा, वंगलोर।
१३४. सेठ पीताम्वरलाल जी अग्रवाल, नई दिल्ली।
१३५. आयुर्वेद वृहस्पति पं० सीताराम जी मिश्र, जयपुर।
१३६. श्री श्रीनारायण जी चतुर्वेदी, सम्पादक 'अमरज्योति', जयपुर।
१३७. श्री ज्ञानमल जी कोठारी, भीलवाड़ा।
१३८. श्री ज्ञानचन्द जी मोदी एम० एल० ए० नीम का थाना, राजस्थान।
१३९. श्री तारकप्रसाद जी व्यास, जोधपुर।
१४०. श्री रतनलाल जी वोहरा, जोधपुर।
१४१. श्री शिवलाल जी पोरवाल, वैरिस्टर, जोधपुर।
१४२. सेठ रामदेव जी पित्ती, (नागोर वाले) जोधपुर।
१४३. सेठ मानमल जी कोठारी, वीकानेर।
१४४. आयुर्वेदाचार्य पं० शिवकरण जी शर्मा, छांगाणी सम्पादक 'आयुर्वेद', नागपुर।
१४५. श्री कृष्णगोपाल जी गर्ग, अजमेर।
१४६. मारवाड़ी सम्मेलन वम्वई।
१४७. ईस्टर्न चेम्वर आफ कामर्स, डिव्रूगढ़।

१४८. श्री महालक्ष्मी मिल्स, ब्यावर।
१४९. मेवाड़ टैक्सटाइल मिल्स, भीलवाड़ा।
१५०. राजस्थान स्पीनिंग एंड वीविंग मिल्स, भीलवाड़ा।
१५१. आयुर्वेद सेवाश्रम, उदयपुर।
१५२. जिला कांग्रेस कमेटी, भीलवाड़ा।
१५३. अखिल भारतीय पुष्करणा महासम्मेलन, नई दिल्ली।
१५४. रोटरी क्लब, भीलवाड़ा।
१५५. नगरपालिका नांवा (राजस्थान)।
१५६. पुष्करणा ब्राह्मण सभा, दिल्ली।

●

लोकनायक श्री जयनारायण व्यास की पुनीत स्मृति में

'मारवाड़ी प्रकाशन' का एक और प्रकाशन

राजस्थान ज्ञानमन्दिर साहित्य माला की दूसरी मणि

दीदी सुशीला मोहन

पृष्ठ ३००—दो दर्जन से अधिक चित्र—मूल्य ३·००

लेखक : श्री सत्यदेव विद्यालंकार

अमरशहीद भगतसिंह और अमर सेनानी चन्द्रशेखर आजाद के साथ क्रांतिकारी आन्दोलन में खून की होली खेलने वाली 'दीदी सुशीला' की जीवनी की पृष्ठभूमि में क्रांतिकारी आन्दोलन के भगतसिंह काल १६२१ से १६३१ का रोमांचकारी इतिहास।

◇

१६२८ में कलकत्ता कांग्रेस में देश के महान नेता जब नेहरू रिपोर्ट की औपनिवेशिक स्वराज्य की मांग के झूले में झूल रहे थे, तब सरदार भगतसिंह लाहौर में सांडर्स की हत्या के बाद नाटकीय ढंग से कलकत्ता पहुंचकर वहां कार्नवालिस स्ट्रीट में आर्यसमाज मन्दिर में अपने वीर युवा साथियों शहीद श्री जतीन्द्रनाथ दास आदि के साथ अपनी आगरा बम फैक्ट्री के लिए गन काटन तथा असेम्बली बम कांड की भूमिका तैयार करने में संलग्न थे।

◇

असेम्बली-बमकांड-विस्फोट इतना भीषण सिद्ध हुआ कि पं० मोतीलालजी नेहरू ने चेतावनी देते हुए कहा था कि देश को हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के कमांडर इंचीफ बलराज और गांधी में से किसी एक को चुनना है, गांधीजी ने स्वयं स्वीकार किया था कि कांग्रेस के पैरों तले जमीन खिसकती जा रही है और अंग्रेज इस बुरी तरह बौखला उठे थे कि उन्होंने अपना विवेक व सन्तुलन खो दिया था।

◇

दीदी सुशीला ने लाहौर और दिल्ली के षड्यंत्र के मुकदमों में गिरफ्तारी के दो वारंटों की नंगी तलवार सिर पर लटकी होने पर भी इन्दुमती के नाम से लार्ड विलिंग्डन की कांग्रेस को कुचल देने की चुनौती को उनकी नाक तले राजधानी दिल्ली में ही स्वीकार किया था और दो बार सत्याग्रह कर जेल गई थीं; फिर भी पुलिस उन पर हाथ न डाल सकी। इस प्रकार उन्होंने झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के अतुल साहस का अनोखा दृश्य उपस्थित किया था।

◇

सरदार भगतसिंह तथा बटुकेश्वर दत्त को पुलिस के सिकंजे से भगाने की योजना, बहावलपुर कोठी बम विस्फोट, शहीद भगवतीचरण की वीरतापूर्ण शहादत, सांडर्स की दिन-दहाड़े हत्या और भगतसिंह—आजाद—राजगुरु आदि का लाहौर से खुफिया पुलिस की छाया में से नाटकीय ढंग से बच निकलना आदि की ऐतिहासिक घटनाओं के रोमांचक विवरणों के साथ-साथ

पढ़िये

क्रांतिकारी युवकों बटुकेश्वर दत्त, विजयकुमार सिन्हा, योगेश चटर्जी, विश्वनाथ वैशम्पायन, भगवानदास माहौर, कमलनाथ तिवारी और भाभी दुर्गा आदि के दिल व दिमाग को झकझोर देने वाले खून की स्याही में लिखे गये संस्मरण।

अपनी प्रति के लिए तुरन्त लिखिये :

मारवाड़ी प्रकाशन
४० ए हनुमान लेन, नई दिल्ली–१

इसी दिसम्बर मास में इसका प्रकाशन हो रहा है।

मारवाड़ी प्रकाशन के भावी प्रकाशन

लोकनायक श्री जयनारायण व्यास की पुनीत स्मृति में तीन और ग्रन्थ प्रकाशित करने की योजना।

१. क्रांतिवीर बारहठ परिवार

जिसकी तीन पीढ़ियां और चार क्रांति उपासक देश के लिए बलि हो गए। बुजुर्ग ठाकुर कृष्णसिंहजी क्रांतिदर्शी स्वामी दयानन्द को उदयपुर लाये, जहां उन्होंने 'सत्यार्थप्रकाश' का निर्माण किया और देशी राज्यों में अपने क्रांतिकारी कार्यक्रम को मूर्तरूप देने के प्रयत्नों में अपना उत्सर्ग कर दिया। ठाकुर केशरीसिंहजी बारहठ और उनके सुपुत्र युवा प्रताप की आयु का बड़ा भाग जेलों में बीता और प्रताप बरेली जेल में गोली का निशाना बना दिये गये। ठाकुर जोरावरसिंह १९१२ के हार्डिंग बम कांड के एक कर्णधार थे, जिसके कारण उन्हें २५ वर्ष फरार रहना पड़ा। लाखों की जायदाद और राजमहल सरीखा गढ़ सरकार द्वारा जब्त कर लिये जाने के बाद बारहठ परिवार ने जो कठिनाइयां झेलीं, वे दिल दहला देने वाली हैं।

२. आधुनिक राजस्थान के निर्माता

दयानन्द काल, तिलक-अरविन्द काल और गांधी काल में सर हथेली पर रख राजस्थान के नव-निर्माण की नींव अपने खून-पसीने से भरने वाले हुतात्माओं की प्रेरणाप्रद संस्मरणात्मक कहानी।

३. भारत को राजस्थान की देन

पौराणिक काल से वर्तमान गांधी काल तक राजस्थान की वीर सन्तान ने देश के कोने-कोने में फैलकर अपने त्याग-तपस्या व साधना से देश के निर्माण में जो गर्वीला योगदान दिया, उसकी गौरवशाली गाथा।

इसी ग्रंथ के आत्मनिवेदन में इनके सम्बन्ध में अधिक जानकारी पढ़िये।

हमारे नए संरक्षक:—संसद सदस्य श्री पन्नालालजी बारुपाल, इन्दौर मालवा मिल के श्री नथमलजी व्यास, कलकत्ता के आचार्य हरिगोपालजी, श्री वेदमित्रजी व्यास, श्री सत्यनारायणजी पुरोहित, श्री हीरालालजी पन्नालालजी सेठी।

राजस्थान को स्मरण रखिए

प्राचीन किले—राजप्रासाद—सुरम्य झीलें—वन्य-जीवन-आवास-तीर्थस्थान —चित्रकला—मूर्तिकला—सब प्रकार का हस्त उद्योग—छपाई और बंधाई का काम—केलिको की छपाई—लाख की चूड़ियां—पीतल, हाथीदांत तथा चन्दन के सामान—जस्ते के बने प्रसिद्ध जोधपुरी बादले—जोधपुरी मोजरियां—कलापूर्ण सामान—

देश का सबसे बड़ा सूरतगढ़ यांत्रिक कृषि फार्म

विश्व की सबसे लम्बी राजस्थान नहर (निर्माण कार्य चालू है)

सांभर का स्थलीय नमक उत्पादन क्षेत्र

देश का सबसे बड़ा ऊन उत्पादन करने वाला प्रान्त

संगमरमर, चांदी तथा पन्ना की भारत प्रसिद्ध खानें

राजस्थान प्रथम पंचवर्षीय योजना में खाद्य स्वावलम्बी बन गया। द्वितीय योजना काल में १०·८६ लाख टन अतिरिक्त खाद्यान्न का उत्पादन किया। तीसरी पंचवर्षीय योजना में २३ करोड़ रुपये खर्च करने व १६ लाख टन अतिरिक्त खाद्य उत्पादन का लक्ष्य

राजस्थान में सहकारिता का व्यापक प्रचार—आज राज्य में १६१२८ सहकारी समितियां काम कर रही हैं। उनकी संख्या तृतीय पंचवर्षीय योजना में २९६६३ हो जाएगी। सहकारिता और सामुदायिक विकास योजना पर २२·५५ करोड़ रुपये खर्च करने का तृतीय पंचवर्षीय योजना में लक्ष्य

राजस्थान में उद्योगों को प्रोत्साहन के लिए ९९ वर्ष की लीज पर भूमि—डेढ़ आना प्रति यूनिट बिजली—बाहर से व राज्य से खरीदी जाने वाली मशीनों पर बिक्री कर व चुंगी की माफी व उद्योगों के लिए ऋण की सुविधाएं।

राजस्थान ७३९४ पंचायतों और १३६९ न्याय पंचायतों का राज्य

जब कभी आप राजस्थान के गुलाबी नगर जयपुर में पधारें तो डीलक्स बस द्वारा जयपुर के दर्शनीय स्थानों—उद्योग केन्द्रों व मुख्य नगर का अवलोकन कीजिए और राजस्थान स्टेट होटल के वातानुकूलित कमरों में ठहरकर आनन्द लीजिए।